New Approach to

History of HIMACHAL PRADESH

1815-1972

Compulsory Course For B.A. Students

Kundra & Prashar

New Approach to

History of Himachal Pradesh

(1815-1972)

Strictly according to the latest Syllabus by H. P. University, Shimla

B.A. Semester - II

Compulsory Course

by :-

D. N. Kundra
Author of Many Books
on History

Dr. A.S. Prashar
MA., B.Ed., M.Phil., Ph. D in History
Govt. P.G. College Dharamshala (HP)

2015-16

NEELAM PUBLISHERS

PRODUCERS OF QUALITY BOOKS

1680, Nai Sarak, Delhi-6.
Phones : Off. : 011-23273160
Resi. : 011-27028123

Adda Tanda, Jalandhar-8
Ph. : (O) : 0181-2456899, (R) : 0181-2457170
Mob. : 099155-09359, 098144-44677

Published by
Sh. Mela Ram Bhambri
Partner, Neelam Publishers
Adda Tanda, Jalandhar City.

PRICE Rs. 340.00

Laser Typesetting by
A-One Computer Shoppee
Tanda Road, Jalandhar.
94171-13517
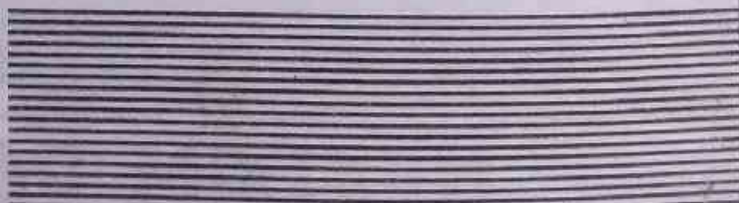
Printed by :
Dolphin Printers
Sodal Road
Jalandhar City.
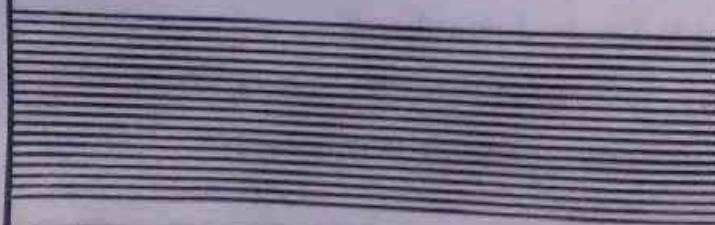
भूमिका

यह पुस्तक हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला द्वारा निर्धारित बी.ए. के Second Semester (द्वितीय सत्र) (CBCS) Choice Base Credit System) के Compulsory Course के नवीन पाठ्यक्रम (History of Himachal Pardesh 1815-1972) के अनुसार संपादित करके प्रस्तुत की जा रही है। इस पुस्तक के लेखन के लिए हिमाचल प्रदेश के इतिहास और संस्कृति सम्बन्धित पुस्तकों से सहायता ली गई है। इस पुस्तक को सरल तथा विद्यार्थियों के स्तर के दृष्टिगत तैयार करने का प्रयत्न किया गया है।

इस पुस्तक में विषय का प्रतिवादन बड़ी सरल, सुगम एवं आकर्षित भाषा में किया गया है। एतिहासिक पहलू के साथ-साथ सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक घटनाओं को भी समुचित महत्व दिया गया है। अनेक महत्वपूर्ण घटनाओं, जिन्होंने हिमाचल प्रदेश के इतिहास के निर्माण में विशेष भाग लिया है, के महत्व को देखते हुए उनके आकर्षक चित्रों सहित देने का प्रयत्न किया गया है।

इस पुस्तक को अधिक रोचक और उत्कृष्ट बनाने के लिए हमने अनेक लेखकों और इतिहासकारों के विचारों को उनके स्वयं के शब्दों में प्रस्तुत किया है। हम हृदय से उन लेखकों और इतिहासकारों के भी आभारी हूँ। हमने पुस्तक के लिखने में विभिन्न अधिकृत ग्रन्थों का भी पूरा-पूरा लाभ उठाया गया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तक शिक्षकों और विद्यार्थियों के लिए समान रूप से उपयोगी सिद्ध होगी।

इस पुस्तक को अधिकाधिक उपयोगी एवं लाभप्रद बनाने के लिए सहयोगियों-सम्मतियों को साभार सहित ग्रहण किया जाएगा।

इस पुस्तक को छापने में हम मैसर्ज नीलम पब्लिशर्ज के सहयोग के लिए उनके बहुत आभारी हैं जिनके अनथक परिश्रम के बिना इस पुस्तक को छापना सम्भव नहीं था।

लेखक

डी॰ एन॰ कुंद्रा

डॉ॰ ए॰ एस॰ पराशर

हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला से संबंधित विद्यार्थियों के लिए अति आवश्यक निर्देश

1. बी.ए. द्वितीय सत्र (Second Semester) में Compulsory Course में History of Himachal Pardesh 1815-1972 चुनने वाले विद्यार्थीयों के लिए नवीन पाठ्यक्रम में एक अलग पेपर देना होगा।

2. हिमाचल प्रदेश का इतिहास चुनने वाले विद्यार्थियों का प्रत्येक प्रश्न पत्र 50 अंक का होगा और समय 3 घण्टे होगा।

3. कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर देने होंगें।

4. प्रथम प्रश्न अनिवार्य होगा जिसमें 10 प्रश्न अतिलघु उत्तर प्रश्न (MCQ/True/False/Fill in the Blanks) 10×1=10 अंक के होंगे तथा 4 प्रश्न लघु उत्तर–प्रश्न (4×2=8 अंक) सभी यूनिट में से आयेंगे।

5. शेष प्रश्न पत्र की A, B, C, D, Units में विद्यार्थियों को कुल चार प्रश्नों के उत्तर देने होंगे तथा प्रत्येक Unit में से एक प्रश्न का उत्तर देना अनिवार्य होगा जिसके कुल 4×8=32 अंक होंगे।

SYLLABUS

B.A. SECOND YEAR SEMESTER II

COMPULSORY COURSE

CODE-EC/CompC: BA/HIST0620

History of Himachal Pradesh, 1815-1972

CAN BE OFFERED IN SEMESTER-II,
COMMON WITH CORE/ELECTIVE COURSE (ADDITIONAL) IN SEMESTER VI

Course Code	CODE-EC/CompC: BA/HIST0620
Credits-3	L-2, T-1 (L=Lecture; T=Tutorial)
Name of the Course	Core Elective Course Compulsory
Lectures to be Delivered	(1 Hr Each) (L=48, T=12)

Maximum Marks Allotted	Minimum pass Marks	Time Allowed
50	23	3 Hours

Minor Test Marks	Class Test/ Tutorial/Home Assignment (Marks)	Quiz Seminars (Marks)	Attendance	Total Marks
Test 1*=15	15	0	5	
Test 2*=15				
Total =30	15	0	5	50

Unit I

Political conditions of the region on the eve of Gorkh Invasion

1.1. Early Himachal: Tribalism to State FormationEmergence of Chamba (Champaka), Kangra (Trigarta) and Kulu (Kuluta)

1.2. Relations and Confrontations with medieval States of North India

1.3. Himachal Hill States in the early Nineteenth Century

1.4. The Gorkha invasion: Process of repulsion; British and the Gorkhas; Treaty of Segauli

1.5. Consequences of the Anglo-Gorkha War of 1814-15

Unit II

The establishment of the British Paramountcy

II.1. Himachal under the British: reorganization of the 'Hill States'

II.2. Grant of sanads and territorial aggression

II.3. British political and administrative policies

II.4. Penetration and mechanisms of control

II.5. Network of communication: The Hindustan-Tibet Road and Kalka-Simla Railway Line

Unit III

The beginning of the uneasy calm

III.1. 1857 and Himachal

III.2. Popular protest and social reform movements in Himachal Pradesh from 1839-1948, agitations against the British and the hill rajas,

III.3 The questions of begar and reet

III.4. Praja Mandal, Freedom movements and peasant protests

III.5. Pajhota Andolan

Unit IV

The Idea of Himachal Pradesh

IV.1. The birth of modern Himachal: 1947-71: party politics and re-organization

IV.2. Socio-economic change in modern Himachal

IV.3. H. P. Ceiling of Land Holding Bill, 1972

IV.4. Tribes of Himachal Pradesh with special reference to Gaddi, Gujjar, Kinnaura, Lahaula, and Pangwal

IV.5. Art and architecture in the 19th and 20th centuries with special reference to colonial architecture (Simla and main cantonments in Himachal Pradesh)

विषय सूची

UNIT-I

UNIT-II

UNIT-III

UNIT-IV

UNIT I

Political conditions of the region on the eve of Gorkha Invasion

I.1. Early Himachal: Tribalism to State FormationEmergence of Chamba (Champaka), Kangra (Trigarta) and Kulu (Kuluta)

I.2. Relations and Confrontations with medieval States of North India

I.3. Himachal Hill States in the early Nineteenth Century

I.4. The Gorkha invasion: Process of repulsion; British and the Gorkhas; Treaty of Segauli

I.5. Consequences of the Anglo-Gorkha War of 1814-15

हिमाचल का भूगोल
(GEOLOGY OF HIMACHAL)

भूमिका (Introduction)

हिमाचल प्रदेश भारत के उत्तर में स्थित एक पर्वतीय राज्य है, जो अपने सौंदर्य के लिए विश्व-प्रसिद्ध है। शिमला हिमाचल प्रदेश की राजधानी है। कुल्लू, कांगड़ा, हमीरपुर, सोलन, ऊना इसके प्रमुख ज़िले हैं। हिमाचल प्रदेश के धरातल को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है- (1) बृहद् हिमालय (2) मध्य हिमालय तथा (3) बाह्य हिमालय। हिमाचल प्रदेश का चम्बा जिला इन तीनों श्रृंखलाओं को छूता है। सतलुज, ब्यास, रावी, चिनाब नदियां हिमाचल प्रदेश की प्रमुख नदियां हैं। हिमाचल प्रदेश में अनेक झीलें भी देखने को मिलती हैं। झीलों के अतिरिक्त हिमाचल में बहुत से गर्म पानी के चश्मे भी हैं, जिनमें अनेक प्रकार के रासायनिक तत्व पाये जाते हैं, जो अपने औषधीय गुणों के लिए प्रसिद्ध हैं।

हिमाचल की भौगोलिक स्थिति एवं क्षेत्रफल
(Geological Location and Area of Himachal)

हिमालय पर्वत के पश्चिम की ओर भूमध्य रेखा से 30° 22' 40" उत्तर से 33° 12' 40" उत्तरी अक्षांश तथा 75° 47' 55" पूर्व से 79° 04' 20" पूर्वी रेखांश के मध्य हिमाचल प्रदेश स्थित है। इस पर्वतीय राज्य का क्षेत्रफल 55,673 वर्ग किलोमीटर (अर्थात् 37,03,286 हैक्टेयर) है। यहाँ लगभग 67 प्रतिशत भूमि पर वन पाए जाते हैं। हिमाचल प्रदेश क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का 17वां बड़ा राज्य है। इसका क्षेत्रफल सीमावर्ती राज्य पंजाब, हरियाणा व उत्तराखण्ड से अधिक है, जबकि जम्मू-कश्मीर से कम है।

हिमाचल प्रदेश में सर्वाधिक क्षेत्रफल लाहौल-स्पीति का 13,835 वर्ग कि.मी. तथा सबसे कम क्षेत्रफल हमीरपुर का 1,118 वर्ग कि.मी. है।

हिमाचल के अन्य जिलों का क्षेत्रफल (वर्ग कि.मी. में) इस प्रकार है:-

चम्बा-6528	किन्नौर-6401	कांगड़ा-5739	कुल्लू-5503
शिमला-5131	मण्डी-3950	सिरमौर-2825	सोलन-1936
ऊना-1540	बिलासपुर-1167		

हिमाचल प्रदेश में लाहौल-स्पीति, चम्बा और किन्नौर जिलों में ग्रामीण क्षेत्रफल सबसे अधिक है जबकि हमीरपुर, ऊना और शिमला जिलों में शहरी क्षेत्र सबसे अधिक है।

पड़ौसी देश एवं राज्य/सीमाएं
(Neighbouring Countries and States/Boundaries)

हिमाचल प्रदेश के पूर्व में सीमावर्ती राष्ट्र तिब्बत पड़ता है। जिसकी पर्वत श्रृंखला हिमाचल को तिब्बत से अलग करती है। हिमाचल के पूर्वी छोर पर किन्नौर तथा उत्तर में लाहौल-स्पीति जिलों की सीमाएँ तिब्बत के साथ लगती है। राज्य का किन्नौर जिला **अन्तर्राष्ट्रीय** सीमा पर है। हिमाचल के स्पीति की उत्तरी तथा चम्बा जिला की उत्तर-पूर्व की सीमाएं जम्मू कश्मीर के लद्दाख के साथ लगती हैं। हिमाचल के पश्चिम में **पंजाब** की सीमाएं चम्बा, कांगड़ा, ऊना, बिलासपुर और सोलन जिलों से लगती हैं। हिमाचल के दक्षिण में **हरियाणा** की सीमाएं सिरमौर से और पूर्व-दक्षिण में **उत्तराखण्ड** की सीमाएं शिमला, सिरमौर तथा किन्नौर जिलों के साथ लगती हैं।

हिमाचल के जिलों की सीमाएं परस्पर इस प्रकार लगती हैं :-

(1) **कांगड़ा**-ऊना, हमीरपुर, मण्डी, कुल्लू, लाहौल-स्पीति और चम्बा।

(2) **शिमला**-जिला कुल्लू, मण्डी, सोलन, सिरमौर और किन्नौर।

(3) **मण्डी**-कुल्लू, कांगड़ा, हमीरपुर, बिलासपुर और शिमला।

(4) **कुल्लू**-लाहौल-स्पीति, कांगड़ा, मण्डी, शिमला और किन्नौर।

(5) **हमीरपुर**-कांगड़ा, ऊना, बिलासपुर और मण्डी।

(6) **बिलासपुर-चम्बा, कांगड़ा, कुल्लू और किन्नौर।**

(7) **सोलन**-बिलासपुर, मण्डी, शिमला और सिरमौर।

(8) **ऊना**-बिलासपुर, कांगड़ा और हमीरपुर।

(9) **किन्नौर**-लाहौल-स्पीति और कांगड़ा।

(10) **सिरमौर**-शिमला और सोलन।

हिमाचल का भौगोलिक अथवा भौतिक विभाजन
(Geological or Physical Division of Himachal)

हिमालय पर्वतमालाओं के आंचल में बसे हिमाचल प्रदेश को भौगोलिक दृष्टि से तीन भागों में बांटा जा सकता है- (1) बृहद् हिमालय (2) मध्य हिमालय (3) बाह्य हिमालय।

(1) बृहद् हिमालय (Greater Himalayas)- यह पर्वत श्रृंखला एल्पाईन खण्ड में आती है। इस पर्वत श्रेणी की सबसे बड़ी पर्वतमाला **जस्कर (Zanskar)** पर्वत श्रृंखला है। यह श्रृंखला सिन्धु और चिनाब नदी तटों के मध्य स्थित है। इस पर्वत श्रेणी की चोटियां समुद्रतल से लगभग 5400 मी. से 6300 मी. तक की ऊंचाई पर हैं। **जंस्कर** (Zanskar) और ऊपरी हिमालय में अनेक हिमनद पाये जाते हैं, जिन्हें स्थानीय भाषा में शिगड़ी (Shigri) कहा जाता है। यह पर्वत श्रृंखला **तिब्बत, कश्मीर** और **लद्दाख** को हिमाचल से अलग करती है। यह पर्वत श्रृंखला लद्दाख को लाहौल-स्पीति से अलग करती है। यही पर्वत श्रृंखला उत्तर दिशा में चम्बा और कश्मीर की सीमा विभाजक रेखा है। इस पर्वत श्रृंखला के प्रमुख शिखरों व दर्रों में **शिला, लियोपरजियल, शिप्पकी-ला, मनीरंग, मुक्किला, रानी सो दर्रा, शिमदंग दर्रा, गुमरंग (खिमोकुल) दर्रा, घुनसरंग दर्रा, परांग-ला-दर्रा, तंगलंग दर्रा, हंगरंग दर्रा** आदि शामिल हैं। इस पर्वत क्षेत्र में चम्बा, कुल्लू, शिमला, किन्नौर तथा लाहौल-स्पीति जिले शामिल हैं। इस पर्वत श्रेणी की तलहटी में गेटे, किब्बर, हिक्किम, तंगयुड, बंगथंग, चांगो आदि कम जनसंख्या के गांव बसे हैं। इन कबायली क्षेत्रों में अधिक बर्फबारी होती है। इसकी पर्वत

शृंखलाएं लगभग छह से नौ माह तक बर्फ से ढकी रहती हैं। स्पीति के **काजा** खण्ड के अधिकतर भूमि रेतीली और निर्जन है। काजा को **शीत मरुस्थल** (Cold Desert) अर्थात् **बर्फानी रेगिस्तान** भी कहा जाता है। इस पर्वत श्रेणी की भूमि कृषि योग्य नहीं है। फिर भी यहाँ **सूखे मेवे-बादाम, अखरोट, नेवजा** (चिलगोजा), **चूली** के साथ-साथ **अंगूर, कुठ, हॉप्स, काला ज़ीरा, केसर** आदि की पैदावार होती है। कुछ-कुछ क्षेत्रों में तो आलू और सेब की फसलें भी होती हैं। इन क्षेत्रों में आयुर्वेदिक जड़ी-**बूटियों** के अपार भण्डार हैं। यहां वर्षा ऋतु में भी वर्षा नहीं के बराबर होती है। कबायली क्षेत्रों का मुख्य पशु **सुरा गाय, कियांग** और **याक** है। इन क्षेत्रों में भेड़-बकरियां, घोड़ा-खच्चर आदि पशु भी पाले जाते हैं। हिमाचल प्रदेश में जंस्कर पर्वत शृंखला जनजातीय ज़िलों लाहौल-स्पीति व किन्नौर के अतिरिक्त चम्बा, कुल्लू और शिमला ज़िला को भी छूती है।

(2) **मध्य हिमालय** (Central Himalayas)– इस पर्वत शृंखला को **पांगी पर्वत श्रेणी** के नाम से भी जाना जाता है। भूवैज्ञानिक इसे **पीर पंजाल** के नाम से भी पुकारते हैं। इस पर्वत श्रेणी की चोटियां समुद्रतल से लगभग 5100 मी. से 5700 मी. की ऊंचाई तक हैं। यह पर्वत श्रेणी कुल्लू को लाहौल-स्पीति से अलग करने के बाद चम्बा ज़िला में बड़ा भंगाल की पश्चिमी सीमा पर प्रवेश करती है। यह पर्वत श्रेणी चम्बा ज़िला को दो असमान भागों में बांटती है, जिसमें इसका छोटा भाग पांगी उपमण्डल है। यह सर्दियों में भारी बर्फबारी के कारण देश के अन्य भागों से कट जाता है। इस भू. क्षेत्र में **चम्बा, कांगड़ा, मण्डी, हमीरपुर, बिलासपुर, शिमला, सोलन, सिरमौर** आदि ज़िले शामिल हैं।

पांगी पर्वत श्रेणी जहां सर्वप्रथम चम्बा ज़िला को छूती है, वहीं से मणिमहेश पर्वत चोटियाँ दक्षिण से चम्बा को बड़ा भंगाल से अलग करती हैं। यही सीमा रेखा धौलाधार पर्वत श्रेणी की चोटियों तक जा पहुँचती है। पांगी पर्वत श्रेणी की दागनी धार की चोटियाँ चम्बा को भद्रवाह कश्मीर से अलग करने वाली सीमा विभाजक रेखाएँ हैं। धौलाधार के पश्चिम से डलहौज़ी के समीप दयानकुण्ड से पीर पंजाल पर्वत श्रेणी का मनमोहक दृश्य देखने को मिलता है। मध्य हिमालय पर्वत के मुख्य शिखरों व दर्रों में **मणिमहेश, दागनीधार, बड़ा कंडा, सुरल, हुडन, सैचू, पदरी दर्रा, चतर दर्रा, चेनी दर्रा, मरहू दर्रा, दराटी दर्रा, छेबिया दर्रा** इत्यादि प्रमुख हैं।

इस पर्वत श्रेणी की तराई में समुद्रतल से लगभग दस हज़ार फुट (3000 मी.) की ऊंचाई तक जनजीवन बसता है। इस पर्वत श्रेणी में रावी और चिनाब नदी घाटियों की उपजाऊ भूमि कृषि योग्य है। यहाँ **गेहूँ, मक्की** तथा **दलहनी फसलों** की पैदावार होती है। इनके अतिरिक्त **आलू, बादाम, अखरोट, खुमानी, आड़ू, पलम, नाशपाती** आदि नगदी फसलें भी होती हैं। पांगी पर्वत श्रेणी की घाटियों में विभिन्न प्रकार की बहुमूल्य वन्य औषधियां पैदा होती हैं। यहाँ हरे-भरे चरागाहों में भेड़पालक गर्मियों के मौसम में डेरा डालकर भेड़-बकरियों को चारा चराने के लिए लाते हैं। इन वादियों में **देवदार, रई, कायल, बान, बुरांश, मौरू, खरेऊ** आदि वृक्षों के घने वन पाए जाते हैं।

(3) **बाह्य हिमालय** (Outer Himalyas)– यह पर्वत श्रेणी **धौलाधार** के नाम से प्रसिद्ध है। धौलाधार का अर्थ **'सफेद चोटी'** (White Peak) होता है। धौलाधार पर्वत श्रेणी ब्यास नदी के बाएँ तट से शुरू होकर उत्तर-पश्चिम की ओर बढ़ती हुई कुल्लू और मण्डी के मध्य उस स्थान पर सीमा निर्धारित करती है, जहाँ से यह पर्वत श्रेणी बड़ा भंगाल को छोड़कर मध्य हिमालय के साथ मिल जाती है। यह पर्वत श्रेणी पश्चिम की ओर मुड़ कर सबसे पहले बड़ा भंगाल की पश्चिमी सीमा पर चम्बा को छूती है। धौलाधार पर्वत श्रेणी भंगाल को दो घाटियों (1) बड़ा भंगाल और (2) छोटा भंगाल में बांटती है। धौलाधार का उत्तरी भाग बड़ा भंगाल तथा दक्षिणी भाग छोटा भंगाल कहलाता है। धौलाधार पर्वत श्रेणी की चोटियाँ समुद्रतल से लगभग 4200 मी. से 5100 मी. की ऊँचाई (औसतन 4550 मी.) तक हैं। इस पर्वत श्रेणी के प्रमुख दर्रे **कुण्डली दर्रा, तलंग दर्रा, भीमघसूत्री दर्रा,** जालसू दर्रा, **चौरी दर्रा, ब्लेणी दर्रा,** बारू दर्रा, **मनकियानी दर्रा, इन्द्रहार दर्रा, तमशार दर्रा, चोलांग दर्रा** आदि आते हैं।

धौलाधार पर्वत श्रेणी का एक शिखर **हाथीधार** के नाम से प्रसिद्ध है। इस पर्वत शिखर की सबसे ऊंची चोटी समुद्रतल से 1565 मी. की ऊँचाई पर है। हाथीधार भीतरी **शिवालिक पर्वतमाला** का मूल क्षेत्र है। यह कांगड़ा के **रिहलू** से रावी नदी तक लगभग एक क्रमिक पर्वतमाला है। हाथीधार पूर्वी दिशा में धौलाधार के साथ मिलने पर चम्बा और रिहलू के मध्य सीमा रेखा निर्धारित करती है। यही पर्वत शृंखला रावी के बाएं तट तक चम्बा को कांगड़ा से पृथक् करती है। हाथीधार

रेतीली मिट्टी और पत्थरों का-सा मिश्रण है। यह पर्वतमाला विभिन्न प्रकार के हरे पत्तीदार पौधों, जैसे-नाटे बान, चीड़ आदि के सघन वनों से ढकी रहती है।

आर्य ग्रन्थों में शिवालिक पर्वत श्रृंखला को **मानद** (मैनक) पर्वत के नाम से जाना जाता है। शिवालिक का तात्पर्य संगिनी अर्थात् शिव जटाओं से गुत्थी वसुन्धरा से भी लिया जाता है। यही पर्वत श्रृंखला हिमाचल प्रदेश को मैदानी से पृथक् करती है। शिवालिक पर्वत श्रृंखला को तीन श्रेणियों (1) उच्च (2) मध्यम तथा (3) निम्न पर्वत श्रेणी में बांटा है। शिवालिक पर्वत श्रृंखला रावी के पश्चिम से यमुना के पूर्वी भाग तक फैली हुई है। शिवालिक पहाड़ियों तथा उत्तर में हिमा पर्वत की दक्षिणी ढालों पर दून घाटिया हैं। इस पर्वत श्रेणी में **चम्बा** ज़िला व **डलहौज़ी व भटियात, कांगड़ा ज़िला** के **नूरपुर, धर्मशाला, पालमपुर, कांगड़ा, ज्वाली** तथा **ऊना** व हमीरपुर ज़िला का पूर्वी तट तथा **सिरमौर** ज़िला के **पांवटा** साहिब, **नाहन, काला अम्ब, बिलासपुर** का नयनादेवी, **मण्डी** ज़िला का जोगिन्दर नगर, मण्डी, सरकाघाट, सुन्दरनगर, **सोलन** के नालागढ़, अर्की तथा **शिमला** जिला के ठियोग, बालूगंज आदि शामिल हैं। इस पर्वत श्रेणी की चोटियां व पहाड़ियां समुद्र से लगभग 600 मी. तक स्थित है जिनमें से 300 मी. तक उपजाऊ तथा कृषि योग्य हैं। इस प्रकार की भूमि पर **धान**, **जौ, मक्की, दलहन, तिलहन** आदि की अच्छी फसलें होती हैं। इन क्षेत्रों में आम व नींबू प्रजाति के फलों की पैदावार भी होती है। शिवालिक पर्वत श्रेणी के इस भूभाग पर चूने का पत्थर भी बड़ी मात्रा में पाया जाता है।

हिमाचल प्रदेश की प्रमुख नदियाँ
(Main Rivers of Himachal Pradesh)

हिमाचल प्रदेश में सतलुज-**शतुदु**, ब्यास-**अर्जीकिया**, रावी-**परूषणी**, चिनाब-**असकिनी** तथा **यमुना** पाँच प्रमुख नदियां बहती हैं। हिमाचल के **पूर्व** से सतलुज, **पश्चिम** से रावी, **उत्तर** से चन्द्रभागा (चिनाब) और ब्यास तथा **दक्षिण** में यमुना नदी बहती है। सतलुज नदी **मानसरोवर (तिब्बत)** के **रॉकसताल** से 320 किलोमीटर की यात्रा तय करने के बाद **शिपकी** दर्रा पर हिमाचल में प्रवेश करती है। चिनाब **गनौर** (संसारी नाला) के पास चम्बा को छोड़कर जम्मू में प्रवेश करने के बाद पाकिस्तान में बहती है। पाकिस्तान में चिनाब पहले जेहलम के साथ मिलती है और फिर दोनों नदियाँ सिन्धु नदी में मिल जाती हैं। सतलुज और ब्यास पंजाब में **हरि-का-पतन** नामक स्थान में मिलती हैं। यहाँ से आगे ब्यास अपना नाम खोकर सतलुज के साथ बहती हैं। चिनाब, रावी, सतलुज, सिन्धु और जेहलम **पंचनद** बनाकर अरब सागर में गिरती हैं। यमुना नदी प्रयाग में गंगा और सरस्वती के साथ मिलकर पूर्ववर्ती दिशा में बहती हुई गंगा सागर अर्थात् बंगाल की खाड़ी में मिल जाती है।

हिमाचल प्रदेश की पाँच नदियों का वर्णन निम्नलिखित है:-

(1) सतलुज (Satluj)- सतलुज का वैदिक नाम शतुद्रु दिया गया है। शतुद्रु नदी का उल्लेख महाभारत में भी मिलता है। सतलुज के अन्य नाम मुकसंग, सम्पू, जुगंटी, सुमुद्रंग, सुतूद्रा आदि हैं। सतलुज नदी कैलाश पर्वत के दक्षिणी में **मानसरोवर** अर्थात् **मानतलाई झील** (तिब्बत) से निकलती है। यहां से यह नदी हिमालय पर्वत की उच्च श्रृंखलाओं में बहती हुई शिपकी दर्रा पर हिमाचल में प्रवेश करती है। यह नदी **किन्नौर** ज़िले को दो भागों में बांटने के बाद लगभग 130 किलोमीटर बहने के बाद बदला (ज्यूरी) नामक स्थान पर **शिमला** ज़िले में प्रवेश करती है। सतलुज नदी **हुईधार (मण्डी)** तथा कसोल **(बिलासपुर)** जिले में प्रवेश करती है। यह नदी ऊना के समीप हिमाचल को छोड़ कर **नंगल** पंजाब में बहती है।

सतलुज की सहायक नदियाँ (Tributaries of Satluj)– किन्नौर जिले में सतलुज के **दाईं** ओर **स्पीति**, रोपा, पेजुर (तेती), काशंग मुलगून, वांगर, शोरंग और रूपी तथा सतलुज के **बाईं** ओर तिरंग, ज्ञांथिंग, **बास्पा**, दुलिंग, सोलडंग आदि खड्डें सतलुज की सहायक नदियां हैं। किन्नौर में सतलुज की सबसे बड़ी सहायक नदी **स्पीति** है, जो खाब नामक स्थान पर सतलुज में मिलती है और उसके बाद बास्पा कड़छम में सतलुज के साथ मिलती है। **मुलगून** नदी किन्नौर और लाहौल-स्पीति की सीमा विभाजक रेखा भी है। **शिमला** ज़िला में सतलुज की पोषक खड्डें **पशाद, मुगंलद**, नोगली, बछदा, भैंरा, सदरी, किंगल, शोवान, **पन्दोआ**, मालगी, **सैंज** आदि हैं। **बिलासपुर** जिले में **अली, गम्भरोला**, मोनी, सीर आदि खड्डें सतलुज में मिलती हैं। कुल्लू जिले के आँउटर सिराज में श्री खण्ड के दक्षिण-पश्चिमी भाग से निकल कर **कूपन** नदी सतलुज में मिलती है।

हिमाचल प्रदेश में बहने वाली पाँच नदियों में सतलुज सबसे लम्बी नदी है। हिमाचल प्रदेश में सतलुज नदी घाटी सर्वाधिक पनविद्युत् उत्पादन क्षमता 10445 मैगावाट की है। इस नदी पर राज्य की सबसे बड़ी मानव निर्मित झील **गोविन्द सागर** (बिलासपुर) भाखड़ा बांध के निर्माण के कारण बनी है। सतलुज नदी पर एशिया का सबसे ऊंचा **कन्दरौर पुल** बना है। सतलुज नदी तट पर **तत्तापानी, रामपुर** तथा **बिलासपुर** शहर बसे हैं।

(2) व्यास अथवा ब्यास (Beas)- ऋग्वेद में ब्यास नदी को **आर्जीकिया** कहा गया है। ग्रीक इतिहासकार इसे हिफेसिस (Hyphasis) पुकारते हैं। व्यास कुण्ड पर ऋषि व्यास की आश्रम स्थली होने पर इसका नाम ब्यास पड़ा। ब्यास नदी का वर्तमान संस्कृत सम्मत नाम **बिपाशा** है। ब्यास नदी ब्यास कुण्ड से निकलती है। यह कुण्ड पीरपंजाल पर्वत शृंखला के **रोहतांग दर्रे** पर समुद्रतल से 3,960 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। इस नदी में सोलंग (सहायक नदी) का वेगवान जल मिलने के बाद ब्यास कुल्लू घाटी के दक्षिण में बहती हुई **लारजी** तक 120 किलोमीटर का मार्ग तय करती है। ब्यास नदी बजौरा के समीप फेरनू (चवारसीगढ़) नामक स्थान पर मण्डी ज़िले में प्रवेश करती है। यह नदी मण्डी ज़िले को दो असमान भागों में बांटती है। मण्डी शहर ब्यास नदी के बाएं किनारे पर बसा है। मण्डी ज़िले में बहने के बाद ब्यास समुद्रतल से लगभग 1800 फुट की ऊँचाई पर संधोल नामक स्थान पर कांगड़ा में प्रवेश करती है। कांगड़ा ज़िले में बहने के बाद ब्यास नदी **नादौन** और **हमीरपुर** ज़िला की सीमाओं को स्पर्श करती हुई **मीरथल** नामक स्थान पर पंजाब में चली जाती है। ब्यास संधोल (मण्डी) से मीरथल (मूरथल) तक लगभग 195 किलोमीटर बहती है। बाद में यह हरि का पतन के पास सतलुज नदी से मिल जाती है।

ब्यास की सहायक नदियां (Tributaries of Beas)- कुल्लू के पूर्व की ओर से **पार्वती, पिन, मलाणा, हुरला, सैंज** और **तीर्थन** आदि ब्यास की सहायक नदियां हैं। ब्यास की सबसे बड़ी सहायक नदी **पार्वती** है। यह भूईन में ब्यास के साथ मिल जाती है। स्पीति और कुल्लू की सीमा रेखा निर्धारित करने वाली शृंखला शुपाकुणी के पश्चिमी भाग से सैंज खड्ड निकल कर लारजी में ब्यास के साथ मिलती है। इस स्थान से कुछ दूरी पर पहले सैंज और तीर्थन इकट्ठी मिलती हैं और बाद में ब्यास में समा जाती हैं। तीर्थन भी शुपाकुणी पर्वत शृंखला के दक्षिणी भाग से निकलती है। पश्चिम में ब्यास की प्रमुख सहायक नदियां **सोलंग, मनालसू, सुजन, फोजल** और **सरदरी खड्ड** हैं।

मण्डी के उत्तरी भाग की ओर **ऊहल, लूणी, रान** और **बीनू** तथा दक्षिण की ओर **हंसा, बाखली, जीऊणी, सुकेती, पनोडी, सोन** और **बढेड़** खड्ड हैं। ऊहल, बड़ा भंगाल और लूणी छोटा भंगाल पर्वत श्रेणी से निकलती हैं। जीऊणी खड्ड नाचन क्षेत्र की कामरू नाग पहाड़ियों से निकलती है। मण्डी और हमीरपुर के मध्य सीमा निर्धारित करने वाली **बकर खड्ड** है, जो अवाह देवी की पहाड़ियों से निकल कर संधोल में ब्यास नदी के साथ मिल जाती है। इस क्षेत्र में बकर को **खड्डों की रानी** कहा जाता है।

कांगड़ा ज़िले में ब्यास की सहायक नदियों में **बिनवा, न्योगल, वाण गंगा, गज, डेहर** और **चक्की** नदियां प्रमुख हैं। इनमें बिनवा बैजनाथ के शिखर से निकल कर प्रवाहित होती है। बाणगंगा कांगड़ा के मूल से बहती है। चक्की कांगड़ा और पंजाब के गुरदासपुर ज़िले के बीच सीमा बनाती है। हमीरपुर ज़िले की दो खड्डें **कणाह** और **मान** नादौन के समीप ब्यास नदी में मिलती हैं।

ब्यास नदी घाटी पनविद्युत् उत्पादन क्षमता 5339 मैगावाट रखी गई है। ब्यास नदी का पानी सुरंगों और नहरों के द्वारा **मण्डी** से 14 किलोमीटर दूर **पण्डोह** में बांध बनाकर सलापड़ में विद्युत् उत्पादन के लक्ष्य से सतलुज में मिला दिया गया है। देहरा गोपीपुर से 35 कि.मी. पश्चिम उत्तरी की ओर ब्यास नदी पर पौंग बांध बनाया गया है। ब्यास नदी के किनारे **मनाली, कुल्लू, बजौरा, नगवाई, मण्डी, सुजानपुर, नादौन** आदि शहर बसे हैं।

(3) चिनाब (Chenab)- यह नदी **चन्द्रा** और **भागा** दो नदियों के मिलाप से बनी है। ये दोनों नदियां लाहौल उपमण्डल में **बारालाचा** दर्रे से निकलती हैं। चन्द्रा नदी बारालाचा दर्रे की पूर्वी-दक्षिणी ढलान पर समुद्र तल से 4866 मी. की ऊँचाई पर **चन्द्रताल झील** से निकलती है। भागा नदी बारालाचा दर्रे के दक्षिणी-पश्चिमी भाग में समुद्रतल से 4800 मी. की ऊँचाई पर सूरजताल झील से निकलती है। ये दोनों नदियां बारालाचा दर्रे से विपरीत दिशा में बहती हैं। लगभग

65 किलोमीटर का मार्ग तय करने के बाद **तांडी** नामक स्थान पर दोनों नदियां मिलकर **चन्द्रभागा नदी** को जन्म देती। लाहौल के तांडी से प्रवाहित होने के बाद चन्द्रभागा **थिरोट के जोलंग (भुजंद)** नामक स्थान पर **चम्बा ज़िले** में प्रवेश कर है। यहाँ से चन्द्रभागा का नाम बदल कर **चिनाब** हो जाता है। चिनाब चम्बा के गनौर के समीप **संसारी नाला** नामक पर जम्मू में प्रवेश करती है। यह नदी चम्बा और जम्मू की सीमा विभाजक रेखा भी है।

चन्द्रभागा का वैदिक नाम **असिक्नी** है। ग्रीक इतिहासकार चन्द्रभागा के ऋग्वैदिक नाम को **अकेसीनीज** (Akesine पुकारते हैं। लाहौल की स्थानीय बोली में चन्द्रा को **रंगोली** तथा भागा को **गारा** (पुत्र) कहा जाता है। चिनाब हिमा प्रदेश की सभी नदियों में सर्वाधिक सघन जल की नदी है।

चिनाब की सहायक नदियां (Tributaries of Chinab)- चिनाब नदी की सहायक नदियां **सोनापानी, सेशू** हिमखण्डों से निकलती हैं। भागा की सहायक नदियां **योच नाला, जस्कर चु, मीलंग, ब्यूलंग** आदि हैं। चन्द्रभागा की सहायक नदियों में **मियार नाला** भी प्रमुख है, जो उदपुर में चन्द्रभागा के साथ मिल जाता है। **छेबिया और कालि** नाले त्रिलोकीनाथ में चन्द्रभागा के साथ शामिल होते हैं। चम्बा के दाईं ओर **पारमार, हुडन** और **सुरल** खड्डें हैं, जबकि बा ओर **हडसर, दराटी** और **महरू** हैं। ये खड्डें चन्द्रभागा में चैनी (मिन्हाड) नामक स्थान पर मिलती हैं।

चन्द्रभागा नदी घाटी की पनविद्युत् उत्पादन क्षमता 3453 मैगावाट है। पनविद्युत् उत्पादन के क्षेत्र में चन्द्रभागा न का हिमाचल में तीसरा स्थान है।

(4) रावी (Ravi)- ऋग्वैदिक ऋचाओं में रावी को **परूषणी** कहा गया है। इसका संस्कृत शास्त्रीय नाम **ईराव** है। यूनानी इतिहासकार एलैग्जैंडर ने रावी को **हाईड्रायोट्स** (Hydraotes) के नाम से पुकारा है। रावी शब्द रौदी, रौ ईरौती, रावा आदि शब्दों का वर्णित रूप है। यह नदी धौलाधार पर्वत शृंखला के बड़ा भंगाल में **भादल** और **टंट** हिमखण्डों से निकलती है। रावी धौलाधार को पीरपंजाल से अलग करती हुई बजोल नामक स्थान में चम्बा ज़िले में प्रवे करती है। चम्बा में प्रमुख नदी के रूप में प्रवाहित होने के बाद **खेरी** नामक स्थान तक हिमाचल में लगभग 158 किलोमी का सफर पूरा करने पर पंजाब राज्य में प्रवेश करती है।

रावी नदी की सहायक नदियां (Tributaries of Ravi)- चम्बा के बाईं ओर मध्य हिमालय की ढलान पर कुगत दर्रे से निकलने वाली सहायक नदी **बुड्डल** है, जो हड़सर में रावी के साथ मिल जाती है। **मणिमहेश** से निकलने वाल जलधारा रावी में उलान्स के समीप मिलती है। मध्य हिमालय पर्वत शृंखला के कालिछो दर्रे से दूसरी बड़ी सहायक नदी टुण्डा निकलती है। यह नदी टुण्डा घाटी में बहने के बाद उलान्स में रावी के साथ मिलती है। बुड्डल और टुण्डा दोनों सहायक नदियां लगभग साठ-साठ किलोमीटर का मार्ग तय करने के बाद रावी में मिलती हैं। रावी की सहायक ख **बेलजेड़ी चौरी** नामक स्थान पर तथा साहू पर्वत श्रेणी से निकलने वाली **साल खड्ड** चम्बा के समीप रावी में मिलती है। रावी के बाएँ किनारे पर बहने वाली खड्डों और नालों में **चिड़चिण्डी नाला** प्रमुख है। यह छतराड़ी के समीप रावी में मिलक चम्बा और भरमौर तहसीलों के बीच सीमा रेखा स्थापित करता है।

रावी नदी की सबसे सहायक नदी **सिऊल** है। यह भलेई के समीप तलेरू नामक स्थान पर रावी नदी में मिलत है। सिऊल नदी चम्बा और जम्मू की सीमा विभाजक रेखा है। पांगी पर्वत शृंखला से प्रवाहित होने वाली खड्डों और नालों में **अलवास, भैरा, तीसा** तथा **चांजू** नाला भी सिऊल में मिलता है। दागनीधार का बरनोटा नाला भी सिऊल में मिलता है। चम्बा ज़िला में बाईं ओर रावी की अन्तिम सहायक नदी **सिओवा** है। यह चम्बा और जम्मू के मध्य प्राकृतिक सीमा रेखा का काम करती है।

हिमाचल में विद्युत् उत्पादन क्षमता की दृष्टि से रावी घाटी चौथे स्थान पर है। रावी नदी घाटी की विद्युत् उत्पादन क्षमता 2952 मैगावाट आंकी गई है। रावी नदी के दाएँ किनारे तथा साहू खड्ड के बाईं ओर एक टापू पर **चम्बा** शहर बसा है।

(5) यमुना (Yamuna)- इस नदी का वैदिक नाम यमुना तथा संस्कृत शास्त्रीय नाम **कालिंदी** है। यमुना सूर्य पुत्री होने पर यम की बहन है। यमुना को स्थानीय बोली में **जमना** भी कहा जाता है। यह नदी **उत्तराखण्ड के कलिन्द** पर्वत से **यमुनौत्री** नामक स्थान से निकलती है। यह नदी गढ़वाल जनपद से प्रवाहित होकर **जौनसार-बाबर** को पोषित करती

हुई सिरमौर ज़िला के खोदर माजरी में हिमाचल प्रदेश में प्रवेश करती है। यह नदी हिमाचल प्रदेश और उत्तराखण्ड के मध्य पूर्वी-दक्षिणी छोर पर सीमा विभाजक रेखा है। यमुना हिमाचल में 22 किलोमीटर बहने के बाद **कौंच ताजेवाला** नामक स्थान पर उत्तराखण्ड में चली जाती है।

यमुना की सहायक नदियां (Tributaries of Yamuna)- यमुना की सबसे बड़ी सहायक नदी **तौंस** यमुनौत्री पर्वत शृंखला की विपरीत घाटी से निकलती है। तौंस की दो प्रमुख सहायक खड्डें **रूपीण** और **शुपीण** जौनसार-बाबर के **नौटवाड़** में मिलती हैं। तौंस नदी जुब्बल और चौपाल की सीमाओं पर बहती हुई मीनस नामक स्थान पर सिरमौर में प्रवेश करती हैं। तौंस की प्रमुख सहायक नदी पब्बर रोहड़ू जांगलिक के बुरान-चांसल दर्रे से निकलकर तौंस के साथ त्युणी में मिलती है। तौंस की एक अन्य सहायक **खड्ड नेड़ा (टिम्बी), खड्ड शिलाई** (चमयारा) के समीप तौंस में मिलती है। यमुना की सहायक नदी तौंस सिरमौर ज़िला के पूर्ववर्ती नालों और खड्डों को साथ लेकर **खोदर माजरी** में तेज वेग के साथ यमुना में मिल जाती है।

यमुना की दूसरी सहायक नदी **गिरिगंगा** जुब्बल तहसील के **चाम्बी-कुपड़धार** से निकलती है। गिरि जुब्बल में **बहने के** बाद कोटखाई, ठियोग, सोलन और शिमला जिला को छूती हुई मरयोग के समीप मंदोप्सला नामक स्थान में सिरमौर ज़िला में प्रवेश करती है। यह सहायक नदी दो ज़िलों **शिमला** और **सिरमौर** की सीमा विभाजक रेखा भी है। सिरमौर ज़िला में लगभग 88 किलोमीटर बहने के बाद **गिरि रामपुरी घाट** में यमुना के साथ मिल जाती है। गिरिगंगा की सहायक खड्डों और नालों में **बसारी, चैती, घैरली, चन्दगांवटी, कोकू नाला, कियारी खड्ड, देवरी खड्ड, दसण नाला, पराला नाला, बसलन खड्ड, माईपुल नाला**, चूड़ाधार से निकलने वाली **नौइट-पालर खड्ड, बझेतू खड्ड** आदि शामिल हैं।

यमुना की एक अन्य सहायक नदी **बात्ता** है। यह सहायक नदी नाहन तहसील की धारठीधार के सियोरी स्त्रोत से निकलती है। यह बागना गांव की तलहटी से बहती हुई क्यारदादून को दो भागों में बांटती है। यह बरसाती खड्ड बात्ता मण्डी के पास यमुना में शामिल हो जाती है।

यमुना नदी घाटी की जल विद्युत् उत्पादन क्षमता 1811 मैगावाट रखी गई है। यह लक्ष्य यमुना की सहायक नदियों गिरि, बात्ता और तौंस के दोहन से पूरा किया जा सकेगा। यमुना नदी के किनारे **पांवटा** शहर बसा है। गिरि गंगा के तटीय भाग पर श्री रेणुका जी और विष्णु का छठा अवतार भगवान परशुराम धाम भी पड़ता है।

हिमाचल की प्रमुख झीलें
(Main Lakes of Himachal)

हिमाचल प्रदेश में प्राकृतिक और मानव निर्मित दोनों प्रकार की झीलें विद्यमान हैं। यहाँ की प्रमुख झीलें इस प्रकार हैं-

(1) मणिमहेश झील भरमौर (Manimahesh Lake)- यह झील चम्बा से 100 कि॰मी॰ की दूरी पर भरमौर उपमण्डल में स्थित है। इस झील की समुद्रतल से ऊँचाई 4200 मीटर है। इस झील का अनुमानित व्यास एक कि॰ मी॰ है। यहाँ हर वर्ष कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर श्रद्धालु मणिमहेश यात्रा पर आते हैं।

(2) खजियार झील डलहौजी (Khajjiar Lake)- यह झील चम्बा से 27 कि॰मी॰ दूर डलहौजी उपमण्डल में स्थित है। यहाँ खजीनगर का मन्दिर है। यह झील समुद्रतल से 1920 मीटर की ऊँचाई पर है। इस झील के अनुपम सौन्दर्य के कारण खजियार को हिमाचल का **मिनी स्विट्ज़रलैंड** के नाम से भी जाना जाता है। इस झील का क्षेत्रफल 5 हैक्टेयर है।

(3) लामा डल झील (Lama Dal Lake)- यह झील भरमौर उपमण्डल में है। यह समुद्रतल से 3640 मीटर की ऊँचाई पर है। लामा डल झील आठ झीलों का समूह है। इस झील समूह का कुल क्षेत्रफल लगभग 32 हैक्टेयर है। यह झील समूह **नाग डल** और **नाग छतरी डल** के नाम से जाना जाता है। इस समूह में लामा डल झील का व्यास 2 किलोमीटर है। यह झील धौलाधार पर्वत शृंखला में पड़ती है। यहाँ एक छोटा-सा शिव मन्दिर है।

(4) खुण्डी मराल झील चुराह (Khundi Mral Lake)- यह झील चुराह घाटी के खुण्डी मराल चांजू पंचायत में है। यह झील समुद्रतल से 4355 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। यह झील **भगवती काली** के नाम से विख्यात है। यह झील 3 हैक्टेयर क्षेत्र में फैली है।

(5) गुडासरू महादेव झील चुराह (Gudasaru Lake)- यह झील समुद्रतल से लगभग 4280 मीटर की ऊँचाई पर है। इस झील की परिधि लगभग एक कि॰मी॰ अर्थात् दो हैक्टेयर है।

(6) मैहलनाग डल झील चुराह (Mahalnaag Dal Lake)- यह झील **चम्बा** जिला की चुराह घाटी के मैहलवार धार पर स्थित है। यह झील नाग देवता के नाम से विख्यात् है।

(7) बैसाखी चामुण्डा डल झील, चुराह (Baisakhi Chamunda Lake)- यह झील **चम्बा** जिला की एंथली जोत पर चुराह घाटी में पड़ती है।

(8) कालीका डल झील (Kalika Dal Lake)- यह झील नोसराधार पर चुराह घाटी में पड़ती है।

(9) चन्द्रताल झील लाहौल (Chandral tal Lake)- यह झील चन्द्र नदी के चन्द्रताल में मिलने पर बनती है। लाहौल और स्पीति को जोड़ने वाले कुंजम दर्रे से चन्द्रताल झील 13 किलोमीटर दूर है। बारालाचा उद्गम स्त्रोत से लगभग 80 कि.मी. का सफर तय करने के बाद चन्द्रा नदी चन्द्र डल झील में मिलती है। यह झील समुद्रतल से 4280 मीटर की ऊँचाई पर है। इस झील का व्यास 49 हैक्टेयर है।

(10) सूरजताल झील लाहौल (Suraj Tal)- बारालाचा से निकलने के बाद भागा नदी सूरजताल झील का निर्माण करती है। यह समुद्रतल से 4800 मीटर की ऊँचाई पर है। यह झील 3 हैक्टयर में फैली हुई है। यह झील लाहौल उपमण्डल में बारालाचा दर्रे से नीचे पर्वतीय तट पर पड़ती है। बारालाचा दर्रा मनाली-लाहौल-लेह-लद्दाख सड़क को जोड़ता है। इस सड़क पर से सूरजताल झील का रमणीय नज़ारा देखने को मिलता।

(11) डंखर झील, स्पीति (Dankhar Lake)- यह झील लाहौल-स्पीति के स्पीति उपमण्डल में स्थित है।

(12) नीलकंठ झील, लाहौल-स्पीति (Neel Kanth Lake)- यह मनाली से लगभग 140 कि॰मी॰ की दूरी पर स्थित है। यह समुद्र तल से 3900 मी. की ऊँचाई पर स्थित है। लाहौल घाटी की यह झील 6 मास तक बर्फ में ढकी रहती है।

(13) चन्द्रनाहन झील, रोहड़ू (Chandranahan Lake)- यह झील रोहड़ू उपमण्डल की **चांसल** नामक घाटी में समुद्रतल से 3960 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। यह झील **पब्बर** नदी का उद्गम स्त्रोत भी है। इस स्थान को **चारमाई** ताल भी कहते हैं। इस झील का व्यास एक हैक्टेयर है।

(14) तानु जुब्बल झील, नारकण्डा, शिमला (Tanu Jubbal Lake)- यह झील शिमला से 68 कि॰मी॰ की दूरी पर स्थित है। यह झील प्रमुख पर्यटक स्थल **हाटू** के समीप है। यह झील समुद्रतल से 2708 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है।

(15) रिवालसर झील, मण्डी (Rewalsar Lake)- यह झील बौद्ध, हिन्दू और सिक्ख तीन धर्मों की त्रिवेणी के नाम से प्रसिद्ध है। यह झील समुद्रतल से 1320 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। यहाँ प्रसिद्ध बौद्ध मेला छेश्रू मनाया जाता है। रिवालसर झील को तिब्बती समुदाय में "छो पद्मा" के नाम से जाना जाता है। सन् 1685 ई. को गुरु गोबिन्द सिंह रिवालसर झील देखने गए थे। इस झील को **तैरते** टापू की झील भी कहा जाता है। इस झील का व्यास 3 हैक्टेयर है।

(16) पराशर झील, मण्डी (Parashar Lake)- महर्षि पराशर के नाम से प्रसिद्ध यह झील समुद्रतल से 2600 मीटर की ऊँचाई पर है। यह झील मण्डी से 40 कि॰मी॰ की दूरी पर है। इस झील के साथ पराशर ऋषि का पैगोडा शैली में बना भव्य मन्दिर है। इस झील की परिधि लगभग आधा कि॰मी॰ अर्थात् एक हैक्टेयर है।

(17) कुमरवाह झील, मण्डी (Kumarwah Lake)- कुमरवाह झील कामरू देवता के नाम से प्रसिद्ध है। यह झील मण्डी से 40 कि॰मी॰ की दूरी पर है। कामरू देवता का मण्डी के चच्योट में अधिराज्य स्थापित है। यह झील मण्डी जिला की चच्योट तहसील में है। यह झील समुद्रतल से 3150 मीटर की ऊँचाई पर है।

(18) सुखसरझील, मण्डी (Sukhsar Lake)- यह झील रिवालसर कस्बे की चोटियों पर समुद्रतल से 1760 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है।

(19) डल झील, कांगड़ा (Dal Lake)- यह झील **धर्मशाला** से 11 कि॰मी॰ की दूरी पर धौलाधार पर्वत श्रृंखला में स्थित है। यह समुद्रतल से 1840 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। इसका व्यास 2 हैक्टेयर है। इस झील के उत्तरी तट पर एक शिव मन्दिर है।

(20) कारेरी झील, कांगड़ा (Kareri Lake)- यह झील **धर्मशाला** से 28 कि०मी० की दूरी पर स्थित है। यह झील समुद्रतल से 2960 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। इसका व्यास 3.5 हैक्टेयर है। इस झील के किनारे पर भी शिव मन्दिर है।

(21) भृगु झील, कुल्लू (Brigm Lake)- यह झील विशिष्ट गांव के समीप समुद्रतल से 4240 मीटर की ऊँचाई पर मनाली से 13 कि०मी० की दूरी पर स्थित है। इस झील का ब्यास 3 हैक्टेयर है। यह एक भव्य पर्यटक स्थल है। यह झील शुक्र के पिता महर्षि भृगु के नाम से प्रसिद्ध है। ऐसा माना जाता कि इस झील में हर वर्ष 20 भादों को देवी-देवता स्नान के लिए आते हैं।

(22) दशहर झील (Dusher Lake)- यह झील भी **मनाली** के समीप रोहतांग दर्रे पर स्थित है। यह झील समुद्रतल से 4200 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। पर्यटन की दृष्टि से भृगु तथा दशहर दोनों झीलें महत्त्वपूर्ण हैं। दशहर झील का व्यास 4 हैक्टेयर है।

(23) नैनसर झील, कुल्लू (Nansar Lake)- यह झील ऑऊटर सिराज में भीम द्वार और श्रीखण्ड पर्वत के बीच स्थित है। इस झील की समुद्रतल से 4000 मीटर की ऊँचाई है।

(24) मानतलाई झील, कुल्लू (Mantilai Lake)- यह झील पिन पार्वती घाटी में समुद्रतल से 4160 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। इसका व्यास 3 हैक्टेयर है। इस झील से पार्वती नदी का उद्‌गम होता है।

(25) सरवालसर झील, कुल्लू (Servalsar Lake)- यह झील जलोड़ी जोत से लगभग 5 कि.मी. की दूरी पर समुद्रतल से 3100 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। इस झील की परिधि लगभग 0.5 हैक्टेयर है। यह झील बंजार उपमण्डल में पड़ती है।

(26) सुन्दरनगर झील, मण्डी (Sundernagar Lake or Pandoh Lake)- यह कृत्रिम झील पण्डोह नामक स्थान पर ब्यास नदी पर बांध बनने के कारण अस्तित्व में आई है। ब्यास नदी के जल प्रवाह को नहरों व सुरंगों द्वारा पण्डोह के समीप सलापड़ नामक स्थान पर सतलुज नदी के साथ मिलाया गया है। यह हिमाचल की सबसे छोटी कृत्रिम झील है। इसकी लम्बाई 14 कि० मी० है।
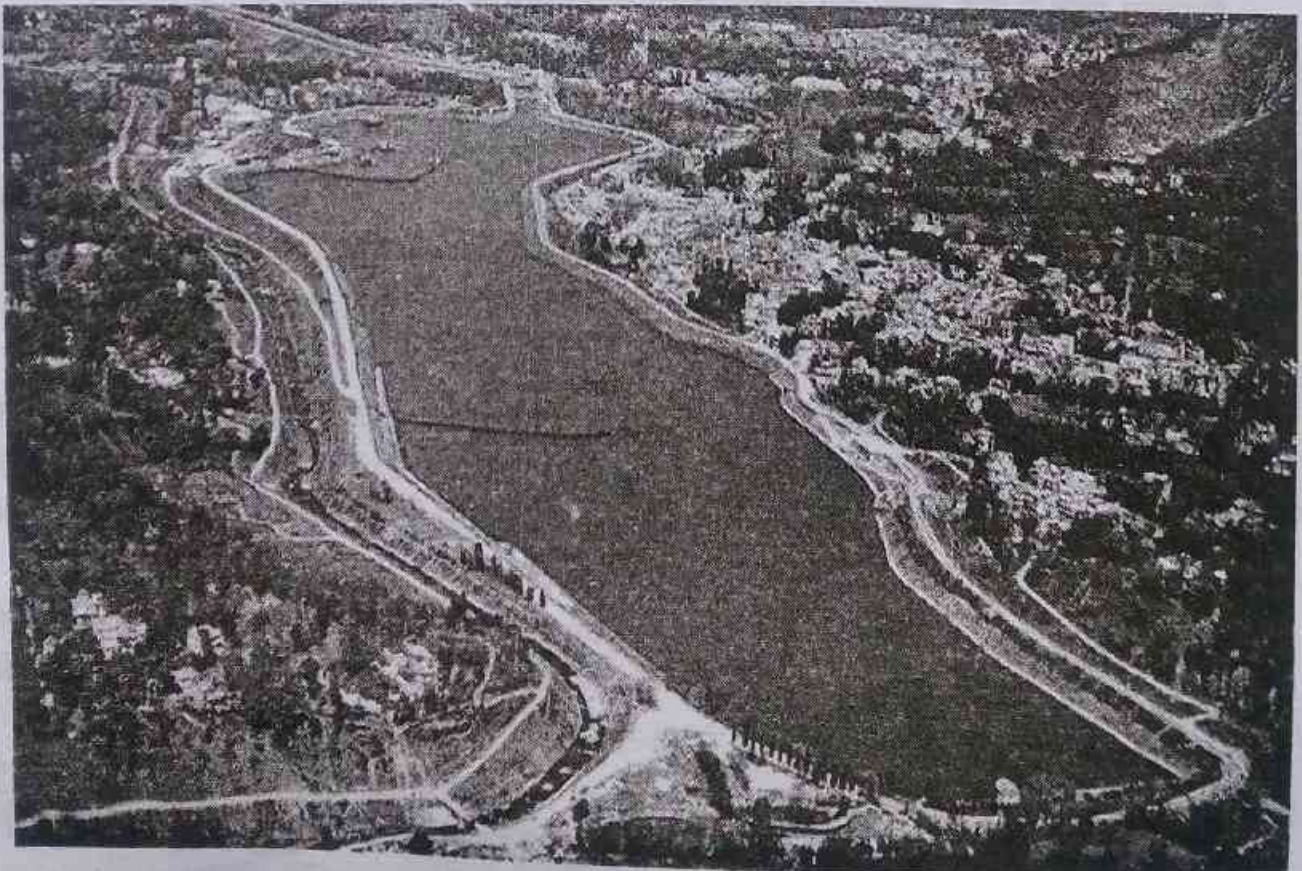
सुन्दरनगर झील, मण्डी

(27) नाको झील, पूह (Nako Lake)- यह झील पूह उपमण्डल में हंगरंग घाटी में स्थित है। यह झील समुद्रतल से 3,604 मीटर की ऊंचाई पर है। इस का व्यास एक हैक्टेयर है। नाको झील भाइस्पीन (तिब्बत) की सीमा विभाजक पर्वत शृंखला रियो पराजियल (6816 मीटर) की पश्चिमी ढलान पर है। इसी उच्च शिखर को भगवान पराजियल का वास भी बताया जाता है।

(28) श्री रेणुका जी झील, सिरमौर (Ranuka Lake)- यह झील समुद्रतल से 660 मीटर की ऊंचाई पर नाहन उपमण्डल से 37 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। यह हिमाचल की **सबसे बड़ी प्राकृतिक झील** है। विश्व की प्राकृतिक झीलों की गणना में रेणुका झील तेरहवें स्थान पर है। इस झील का व्यास लगभग 5 हैक्टेयर है। यह झील हिमाचल प्रदेश का एकमात्र ऐसा देवस्थल है, जहां देवोत्थान एकादशी (कार्तिक मास) से पांच दिन तक अन्तर्राष्ट्रीय श्री रेणुका जी मेला मनाया जाता है।

(29) चमेरा झील, चम्बा (Chamera Lake)- यह झील रावी नदी पर चमेरा बांध के बनने पर अस्तित्व में आई है। यह कृत्रिम झील समुद्रतल से 890 मीटर की ऊँचाई पर है।

(30) पौंग झील, कांगड़ा (Pong Lake)- यह झील समुद्रतल से 430 मीटर की ऊंचाई पर है। यह झील ब्यास नदी पर महाराणा प्रताप सागर बांध बनने के कारण अस्तित्व में आई है। यह झील 42 कि॰मी॰ लम्बी है। इस कृत्रिम झील का व्यास 21721 हैक्टेयर है।

(31) गोविन्द सागर झील, बिलासपुर (Govind Sagar Lake)- यह हिमाचल के बिलासपुर ज़िले से सबसे बड़ी मानव निर्मित झील है। यह झील भाखड़ा बांध निर्माण के कारण अस्तित्व में आई है। यह झील लगभग 1687 हैक्टेयर भूमि पर फैली हुई है। इस झील की अनुमानित लम्बाई 168 कि॰ मी॰ है। यह कृत्रिम झील समुद्रतल से 673 मीटर की ऊँचाई पर है। इस झील का नाम सिखों के दसवें गुरु गोविन्द सिंह जी के नाम पर रखा गया है।

हिमाचल प्रदेश में गर्म पानी के चश्मे
(Hot Springs of Himachal Pradesh)

हिमाचल प्रदेश में कुल्लू, मण्डी और शिमला जिलों में गर्म पानी के चश्मे पाए जाते हैं। ये गर्म पानी के चश्मे अनेक प्रकार के औषधीय गुणों से युक्त हैं। इन चश्मों के गर्म पानी में कार्बन डाईऑक्साइड, हाइड्रोजन, क्लोरीन, हाईड्रोजन कार्बोनेट जैसे प्राकृतिक गैसीय अवयव तथा सोडियम, कैल्शियम, सल्फर, पोटाशियम, मैग्नीशियम जैसे यौगिक तत्व पाए जाते हैं। हिमाचल प्रदेश में निम्नलिखित स्थानों पर गर्म पानी के चश्मे हैं-

(1) विशिष्ट गर्मपानी के चश्मे (Hot spring of Vashisht)- ये गर्म पानी के चश्मे ब्यास नदी के बाएँ तट पर हैं। यहाँ गर्म पानी के दो चश्मे हैं। एक चश्मे का (क्रथनांक) ऊबालांक 123°(F) तथा दूसरे का 109° (F) आंका गया है। विशिष्ट गर्म पानी के चश्मों की कुल कठोरता 3.7 तथा स्थायी कठोरता 2.3 अंकित की गई है। ये गर्म पानी के चश्मे मनाली से 4 किलोमीटर तथा सुलतानपुर (कुल्लू) से 36 किलोमीटर की दूरी पर स्थित हैं।

(2) मणिकर्ण गर्म पानी के चश्मे (Hot spring of Manikaran)- यह गर्म पानी के चश्मे पार्वती नदी के दाएँ तट पर हैं। इन चश्मों का (क्वथनांक) ऊबालांक 45° (C) से 97° (C) तक है। इन चश्मों में गर्म पानी की कुल कठोरता 7.7 तथा स्थायी 5.7 आंकी गई है। मणिकर्ण गर्म पानी के चश्मे कुल्लू से 45 किलोमीटर तथा भुन्तर से 32 किलोमीटर की दूरी पर हैं।

(3) कसोल और खीरगंगा गर्म पानी के चश्मे (Hot spring of Kasol and Khirtganga)- ये गर्म पानी के चश्मे पार्वती नदी के दाएँ तट पर समुद्रतल से 1640 मीटर की ऊंचाई पर हैं। मणिकरण से लगभग चार किलोमीटर की दूरी पर कसोल में गर्म पानी के चश्मे हैं। यहाँ से खीरगंगा गर्म पानी के चश्मे कुछ दूरी पर हैं।

(4) कलथ गर्म पानी के चश्मे (Hot spring of Kalatha)- यह गर्म पानी का चश्मा सुलतानपुर से 32 किलोमीटर की दूरी पर उत्तर की ओर स्थित है। इस चश्मे का (क्रथनांक) ऊबालांक 100° (F) मापा गया है।

(5) तत्तापानी गर्म पानी के चश्मे (Hot spring of Tattapani)- ये गर्म पानी के चश्मे मण्डी ज़िला के करसोग उपमण्डल में और शिमला ज़िला के सुन्नी तहसील के समीप तत्तापानी में पड़ते हैं। ये चश्मे सतलुज नदी के दाएँ तट पर समुद्रतल से 656 मीटर की ऊँचाई पर हैं। इन गर्म पानी के चश्मों की कठोरता 5.7 मापी गई है। तत्तापानी गर्म पानी के चश्मे शिमला से 51 किलोमीटर तथा नालदेहरा से 30 किलोमीटर दूर हैं।

उपरोक्त गर्म पानी के चश्मों के अतिरिक्त शिमला ज़िला के रामपुर उपमण्डल में ज्यूरी के समीप अन्नु नाला के दाएँ किनारे पर भी गर्म पानी के चश्मे हैं। इसी भांति कुल्लू ज़िला के कलथ के इर्द-गिर्द भी गर्म पानी के छुटपुट चश्मे पाए जाते हैं।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न
(Important Questions)

1. हिमाचल प्रदेश की भौगोलिक विशेषताओं का वर्णन करें।
   Discuss the Geological features of Himachal Pradesh
2. हिमाचल प्रदेश की प्रमुख नदियों का वर्णन करो।
   Explain the main Rivers of Himachal Pradesh
3. हिमाचल प्रदेश की प्रमुख झीलें कौन-कौन सी है, वर्णन करें।
   Explain the main lakes of Himachal Pradesh.
4. गर्म पानी के चश्मों से आप का क्या अभिप्राय है। हिमाचल प्रदेश के प्रमुख चश्मों का वर्णन करें।
   What do you mean by hot springs? Explain the major hot springs of Himachal Pradesh.

2 हिमाचल प्रदेश का प्राचीन इतिहास (जनजातियों से जनपद की स्थापना तक)

HISTORY OF ANCIENT HIMACHAL PRADESH (TRIBALISM TO JANAPADAS FORMATION)

भूमिका (Introduction)

हिमाचल का इतिहास बहुत ही प्राचीन है। इसका वर्णन वैदिक काल के ग्रंथों में मिलता है। इसकी प्रमुख नदियाँ सतलुज, ब्यास, रावी, चिनाव आदि तथा अनेक जनपदों का वर्णन भी प्राचीन इतिहास में मिलता है। त्रिगर्त, कुनिन्द, शतद्रुज आदि जनपदों का उल्लेख महाभारत में भी मिलता है।

चन्द्रगुप्त मौर्य ने 322 ई. पू. में पहाड़ी गणराज्यों को अपने अधीन किया। उसके पश्चात् सम्राट् अशोक ने पर्वतीय गणराज्यों में बौद्ध धर्म का प्रचार करवाया और बौद्ध भिक्षुओं के नेता मज्झिम थे। कस्पगोता भिक्षु ने पर्वतीय क्षेत्रों का रह कर बुद्ध के उपदेशों का प्रचार किया। अशोक ने कुल्लू, कांगड़ा और सिरमौर में बौद्ध-स्तूपों तथा बौद्ध विहारों का निर्माण करवाया। बाद में यही गणराज्य 230 ई. पू.-130 ई. पू. यूनानी शासकों के प्रभुत्व में रहे। इसके पश्चात् मौर्य साम्राज्य के पतन और यूनानी शासकों के वापस जाने पर क़बायली गणराज्यों को पुन: विकसित होने का अवसर मिला। ये गणराज्य लगभग 200 वर्षों तक स्वतन्त्र रहे। पौराणिक आख्यानों में उल्लेखित है कि कुनिन्द महाराज अमोघभूति के बाद महाराजा बलि और महाराजा विराट भी पर्वतीय क्षेत्र के प्रतापी शासक हुए। कुलूत के राजा वीरयश, विजय मित्र और सत्यमित्र तथा औटुम्बर के शिवदास, रुद्रदास, धरघोष और महादेव आदि थे। इसका प्रमाण कुनिन्द, कुलूत, यौधेय, त्रिगर्त और औदुम्बर गणराज्यों से प्राप्त चाँदी के सिक्कों पर लक्ष्मी, सर्प, नाग, त्रिशूल और स्वास्तिक के चिन्ह अंकित हैं।

प्रथम शताब्दी ईस्वी के अन्त में ये गणराज्य कुषाण साम्राज्य के अधीन आ गए। सम्राट् कनिष्क ने भी पर्वतीय गणराज्यों में बौद्ध धर्म का प्रचार किया। दूसरी शताब्दी ईस्वी में कुनिन्दों ने इन गणराज्यों से कुषाणों का एकाधिकार समाप्त कर दिया। इसके पश्चात् पर्वतीय गणराज्य लगभग 300 ई. तक स्वतन्त्र शासन हिमाचल प्रदेश के यह प्राचीन कबायली गणराज्य 320 ई. में विलुप्त हो गए। इसी अवधि में पर्वतीय राज्यों में गुप्तकाल (320 ई. से) आरम्भ होता है। यहाँ मैदानी क्षेत्रों के क्षेत्रीय शासकों ने आकर नए लघु राज्य स्थापित किए। प्रयाग के राजकुमार बिहंगमणिपाल ने कुलूत पर विजय पाकर पालवंश की नींव रखी। चन्द्रवंशी प्रद्युमन ने किन्नौर सहित रामपुर बुशैहर पर राज्य स्थापित किया। अयोध्या के शासक मारू ने ऊपरी रावी घाटी के भरमौर को राजधानी बनाकर चम्बा को अपने अधीन किया। स्पीति घाटी में सेन वंश के राजाओं ने राज्य स्थापित किया। कांगड़ा पर जम्मू के राजा प्रवरसेन प्रथम ने आधिपत्य जमाया। इन पर्वतीय राज्यों में 500 ई. के आसपास हूणों ने प्रवेश किया। हूण शासक तोरमाण ने उत्तरी भारत में हिमाचल सहित जनजीवन को अस्त-व्यस्त कर दिया था। इसी काल में कबायली राज्यों के शासकों का राणा, ठाकुर, सामन्त व छोटे-छोटे शासकों के रूप में उदय हुआ। राजपूतकाल (650 ई. से 1200 ई. तक) में हिमाचल अनेक छोटी-छोटी रियासतों में बंटा हुआ था। इस अवधि में यहाँ के शासकों ने स्वतन्त्र शासन किया।

हिमाचल की प्राचीन जनजातियाँ

(The Earliest Tribes of Himachal)

हिमाचल का इतिहास भारत के अन्य भागों की तरह बहुत ही प्राचीन है। हिमाचल का वर्णन वेदों, महाकाव्यों, पुराणों आदि में मिलता है। प्राचीन काल में हिमाचल में सर्वप्रथम जिन जनजातियों का उदय हुआ, उनका वर्णन इस प्रकार है।

1. कोल अथवा मुण्डा (Kola or Munda)- हिमाचल का प्राचीनतम इतिहास लगभग 2250 ई. पू. से 1750 ई. पू. का माना जाता है। उस समय भारत में सिन्धु घाटी सभ्यता के लोग निवास करते थे। तभी गंगा के मैदान के मूल निवासी वहाँ से निकल कर हिमाचल प्रदेश के पहाड़ी क्षेत्रों में जाकर बस गए। इन लोगों के आने से पूर्व यहां कोल जनजाति

के लोग रहते थे, जिन्हें **मुण्डा** (Munda) कहा जाता था। सम्भवत: हिमाचल के सबसे प्राचीनतम निवासी यही लोग थे। इस प्रकार सम्भवत: हिमाचल की सभ्यता का आरम्भ सिन्धु घाटी सभ्यता के काल से ही आरम्भ माना जाता है।

2. वैदिक कालीन जनजातियां (Tribes of Vedic Period)- वैदिक ग्रंथों में भी हिमाचल की आदिम जातियों का वर्णन मिलता है। वैदिक ग्रंथों में सर्वप्रथम **दास, दस्यु** तथा **निषाद** जातियों का उल्लेख मिलता है। ऋग्वेद में भी लिखा है कि **दास, दस्यु, पिशाच, किरात, असुर, आर्जीक, गन्धर्व, गन्धार** आदि हिमालय के पर्वतीय क्षेत्रों में आदिम कबीले थे। पूर्व वैदिक काल में दास, असुर, व्रत्य आदि शिवालिक की पहाड़ियों में बस गए थे, जिन्हें आर्यों के साथ सामना करना पड़ा था, क्योंकि ये अनार्य जनपदों के कबीले थे। कलान्तर में ऋषि विश्वामित्र तथा ऋषि वशिष्ट के प्रयत्नों से इन अनार्यों को भी आर्यों की श्रेणी में शामिल कर लिया गया।

दास, दस्यु तथा निषाद अनार्यों के बाद सम्भवत: **मंगोल** पहाड़ी क्षेत्रों में आकर बस गए, जिन्हें **भोत** तथा **किराट** कहा जाता है। इन कबायली जनपदों के सबसे शक्तिशाली किराट जनपति **शम्बर** हुए हैं। यह राजा बिपाशा (ब्यास), शतुद्र (सतलुज) और परूषाणी (रावी) नदियों के आसपास के पर्वतीय जनपदों में शासन करता था। आर्यों ने **भरत** जनपद के अदिपति **दिवोदास** के नेतृत्व में अनार्य जनपदों के राजा शम्बर के साथ युद्ध आरम्भ किया। शम्बर और दिवोदास के मध्य हुए युद्ध में आर्य राजा इन्द्र ने अनार्यों के एक सौ दुर्गों को नष्ट कर आर्यो को विजय दिलाई। इस जीत के साथ हिमाचल के इन क्षेत्रों में आर्यों के शासन और संस्कृति के विकास का युग आरम्भ हुआ है। इस युग में दस राजाओं के मध्य **"दसराज"** युद्ध में राजा सूरदास को विजय हासिल हुई।

3. खस और किन्नर (Khasa and Kinners)— पुराणों तथा महाकाव्यों में **'खस'** (Khasa) जनजाति का उल्लेख भी मिलता है। इन लोगों का मूल स्थान **खसदेश** (Khasdesh) था, जो उत्तर-पश्चिम राज्यों तथा नेपाल के बीच स्थित था। वराहमिहिर की ब्रहत संहिता में कुलुतों को खस कहा गया है जो कुल्लु क्षेत्र के निवासी थे। वर्तमान हिमाचल में खस जनजाति के लोग **शिमला, सिरमौर, किन्नौर** आदि में निवास करते हैं। एक अन्य जनजाति **किन्नर** (Kinners) का उल्लेख भी महाभारत में आता है। ऐसा माना जाता है कि इस जाति के लोग महाभारत काल से गुप्त काल तक हिमालय क्षेत्र में आकर बसते रहे। हिमाचल प्रदेश में किन्नर जनजाति के लोग किन्नौर जिले में ही बसे हुए हैं।

हिमाचल में जनपदों की स्थापना
(Formation of Janapadas in Himachal)

जन एवं जनपद का अर्थ (Meaning of Jana and Janpadas)- वैदिक युग में सर्वप्रथम ऐसे परिवारों का उदय हुआ, जो स्वयं को किसी पूर्वज विशेष की सन्तान मानते थे। प्रत्येक जन में अनेक कुटुम्ब होते थे। अत: एक ही जाति पुरुष से उत्पन्न विभिन्न कुटुम्बों के समुदाय का नाम जन था। शुरू-शुरू में इन जनों का कोई निश्चित तथा स्थायी स्थान नहीं था और वे एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमा करते थे। ऋग्वेद में जनों का उल्लेख आता है परन्तु जनपदों (स्थायी राज्यों) का नहीं। इस प्रकार वैदिक संहिताओं में भी जनपदों का कोई उल्लेख नहीं मिलता। लगता है कि उस समय तक जनों ने अपने स्थायी राज्य स्थापित नहीं किये होंगे। ब्राह्मण ग्रन्थों में भी कहीं-कहीं जनपद का उल्लेख नहीं मिलता है। इस दार्शनिक काल को राजनैतिक दृष्टि से जनपद काल कहा जाता है। इसी काल में जनपदों का उदय हुआ, जिनकी स्थापना धीरे-धीरे सारे देश में हुई। ये जनपद राजनैतिक, सांस्कृतिक और आर्थिक आदि प्रत्येक दृष्टिकोण से एक इकाई के रूप में खड़े हुये। शुरू शुरू में जनपदों में किसी एक वर्ग विशेष के मनुष्य ही रहते थे। अत: उनका जीवन एक सजातीय, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक परम्परा के अनुकूल संगठित था। इन जनपदों में शान्ति, सुव्यवस्था और धर्म नीति की स्थापना राजतन्त्र से कहीं अधिक विकसित और सदृढ़ थी। जनपद के लोगों का उस भूमि के साथ जिस पर वे वास करते थे, एक प्रकार का मोह तथा मातृभाव था। इसलिए प्रत्येक जनपद की भूमि वहां के निवासियों की मातृभूमि बन गई। भाषा, धर्म, अर्थ व्यवस्था और संस्कृति सभी दृष्टियों से जनपद स्थानीय जीवन की दृढ़ इकाई बन गये। इन जनपदों की बुनियादें इतनी पक्की थीं कि सहस्रों वर्ष तक भी उनके नैतिक ढांचे सुदृढ़ बने रहे। कालान्तर में इन जनपदों में अन्य वर्गों और जातियों

के लोग भी आ कर बसने लगे। इससे सांस्कृतिक आदान-प्रदान तो आरम्भ हुआ परन्तु राजसत्ता बहुत समय तक एकमात्र आदि जन के प्रतिनिधियों के हाथ में रही।

जनपदों के प्रकार (Kinds of Janapadas)-जनपद दो प्रकार के होते थे, एक राजतंत्रीय और दूसरा गणाधीन अथवा गणतंत्रीय। अधिकांश जनपदों की सत्ता क्षत्रियों के हाथों में थी। राजतंत्रीय जनपद में क्षत्रिय का नाम तथा निवासियों का नाम भी जनपद के ही नाम पर होता था। जनपदों में अन्य जातियों तथा वर्णों के लोग भी रहते थे परन्तु राजसत्ता क्षत्रियों के हाथ में ही रहती थी। जनपदों में काम्बोज, गान्धार, मद्र आदि प्रमुख थे। गणाधीन संघ राज्य इस काल में जनपदों से अधिक थे। जनपद में जहां प्रभुसत्ता एक व्यक्ति में केन्द्रित रहती थी, वहां गणाधीन संघ में वह सम्पूर्ण गण में निहित थी। देश के उत्तरी भू-भाग में संघाधीन राज्य अधिक थे। पहाड़ों के छोटे-छोटे जनपदों में तो जन साधारण का ज़ोर रहा परन्तु मैदानी राज्यों में राजा स्वेच्छाचारी बन गये। यद्यपि जनपदों की राजनैतिक सीमायें बदलती रहती थीं किन्तु उनके सांस्कृतिक जीवन का प्रवाह नहीं टूटता था। एक जनपद से दूसरे जनपद को अलग करने वाली प्राकृतिक सीमायें नदी-नाले, पर्वत, शिखर आदि हुआ करते थे। जो जनपद विस्तार में बड़े थे, उनके कई हिस्सों के अलग-अलग नाम भी होते थे। ये जनपद एक प्रकार से छोटे-छोटे स्वतन्त्र राज्य थे, जो एक जैसे देवताओं को मानते थे और एक ही भाषा बोलते थे। इनमें परस्पर विवाद भी हुआ करते थे। एक जनपद दूसरे को परास्त कर देता था परन्तु उसे नष्ट नहीं करता था।

पौराणिक कालीन पहाड़ी जनपद (Janapadas during Pauranik Period)- पौराणिक काल में जनपदों की संख्या लगभग 175 तक थी। पुराणों के भुवन कोषों में **मध्य, प्राच्य, उदीच्ये, दक्षिणपथ, अपरान्त, विध्यपृष्ठ** और **पर्वत** आदि सात विभागों के जनपदों का उल्लेख मिलता है। पाणिनि काल तक ये जनपद अपने पूर्ण विकास पर पहुंच गये थे। पाणिन का काल 5वीं सदी ई०पू० से पहले माना जाता है, जिसने पश्चिमी हिमालय के जनपदों का स्पष्ट रूप से उल्लेख किया है। इन जनपदों का वर्णन उसने **उदीच्य** नाम से किया है। यह पहाड़ी जनपद अपना विशेष स्थान रखते थे। इनके दो समूह थे, एक **त्रिगर्त (कांगड़ा) से दार्वाभिसार** तक और दूसरा **सिन्ध से कापिशी-कम्पोज** तक का विस्तृत भू-भाग। त्रिगर्त से दार्वाभिसार तक के प्रदेश में **त्रिगर्त, गव्दिका, युगन्धर, कालकूट, भरद्वाज, कुलूत** और **कुलिन्द** आदि जनपद थे। पहाड़ी जनपदों का दूसरा लम्बा चौड़ा प्रदेश भारत के उत्तर पश्चिमी भाग में सिन्धु नदी से लेकर बाहलीक कपिश-कम्बोज तक फैला हुआ था। राजनैतिक व्यवस्था की दृष्टि से यह पर्वतीय राज्य अधिकांश में **आयुधजीवी संघ** शासन के मानने वाले थे।

इन जनपदों ने अपने समुद्र काल में तांबे और चाँदी की मुद्रायें भी चलाई थीं। पहले तो ये मुद्रायें चाँदी में चलाई गईं परन्तु जब कुषाणों ने अपने काल में सोने के सिक्के चलाये तो इन गणराज्यों के लिये सोना चलाना कठिन था। इस समय विदेशों से चाँदी का आना प्राय: बन्द हो गया था। इस कारण उन्होंने तांबे को ही सिक्कों की धातु के लिये प्रयोग किया। मुद्राओं का क्रय-मूल्य इतना था कि सर्व साधारण का काम चल जाता था। तांबे का सिक्का जीवन की उपयोगी वस्तुएं खरीदने के लिये पर्याप्त था।

हिमाचल के प्राचीन जनपद
(Ancient Janapadas of Himachal)

हिमाचल के प्राचीन प्रमुख जनपदों का वर्णन इस प्रकार है :-

1. **मद्र** (Madra)–मद्र जनपद का उल्लेख उत्तर वैदिक साहित्य में आता है। ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार उत्तर मद्र दूर हिमालय में उत्तर कुरु का पड़ौसी देश था। सम्भवत : दक्षिणी मद की सीमायें स्यालकोट के आस-पास कहीं रही हों। इसे गुरु गोविन्द सिंह के समय तक मद्र देश ही कहते थे। मद्रों की राजधानी साकल (स्यालकोट) थी, जो आपगा (वर्तमान अयक) नदी के किनारे स्थित है। यह नदी जम्मू की पहाड़ियों से निकल कर स्यालकोट के पास से होती हुई वर्षा ऋतु में चिनाव के साथ मिलती है। पाणिनि के समय मद्र के दो भाग थे-**पूर्व मद्र** और **उत्तर मद्र**। पूर्व मद्र के बारे में लिखा है कि यह देश वाहिका के उत्तरी भाग में साकल (स्यालकोट) के पूर्व से लेकर त्रिगर्त (कांगड़ा) तक फैला हुआ है, जब कि उत्तरी मद्र का सम्बन्ध कश्मीर या जम्मू क्षेत्र से था।

उत्तर वैदिक साहित्य से पता चलता है कि मद्रों में वैद्य राजतन्त्र की व्यवस्था थी। प्राचीन ग्रन्थों में यहां के लोगों को बड़ा शूरवीर बताया गया है। उपनिषदों में इन्हें क्षत्रिय कहा गया है। ब्राह्मण काल में ये विद्या तथा पाण्डित्य के लिये बहुत प्रसिद्ध थे। अभी तक इस जनपद की कोई भी मुद्रा प्राप्त नहीं हुई। समुद्र गुप्त के इलाहाबाद के स्तम्भ लेख में मद्रों का नाम आता है। सम्भव है कि गुप्तराजाओं ने ही इन्हें अपने राज्य में मिला लिया हो।

2. त्रिगर्त (Trigarta)–पाणिनि ने त्रिगर्त देश के आयुजीवी संघों का उल्लेख किया है। रावी, ब्यास और सतलुज इन तीन नदी दूनों के बीच का प्रदेश त्रिगर्त या त्रिगाढ़ कहलाता था, जिसे आजकल कांगड़ा कहा जाता है। यह दक्षिण के मैदानी भाग में जालन्धर तक जाता था। इसलिए इसका पुराना नाम **जलंधरायण** भी था। महाभारत में भी त्रिगर्त का उल्लेख आता है। महाभारत के द्रोणपर्व अध्याय 282 में त्रिगर्त के राजा **सुशर्मचन्द** और उस के भ्राताओं का वर्णन है। वे सब पाँच-भाई थे- सुशर्मा, सुरभि, सुधमी, औस और सुबाहु। त्रिगर्त का प्रथम राजा अर्थात् संस्थापक **भूमि चन्द्र** था। वंशावली के अनुसार 234वां राजा सुशर्म था। उसने कौरवों के पक्ष में लड़कर महाभारत के युद्ध में भाग लिया था। महाभारत के युद्ध में कौरवों की हार के बाद सुशर्म चन्द्र ने कांगड़ा के **नगरकोट** में अपनी राजधानी स्थापित की और वहां एक किले का निर्माण करवाया। पाणिनी ने त्रिगर्त नामक 6 संघ राज्यों का उल्लेख किया है। 1. **कोण्डोपरथ**, 2. **दाण्डकि**, 3. **क्रोष्टकि**, 4. **जालनि**, 5. **ब्राह्मगुप्त**, 6. **जानकि**, जिन्हें उसने **त्रिगर्त षष्ठ** कहा है।

त्रिगर्त के लोग वीरता के लिये प्रसिद्ध थे। त्रिगर्त ने ईसा पूर्व दूसरी शताब्दि में अपनी मुद्रायें भी चलाईं, जिससे पता चलता है कि उस समय यह एक स्वतंत्र जनपद था। मुद्राओं पर त्रिगर्त जनपद देश ब्रह्मी लिपि में लिखा मिलता है। दूसरी ओर की लिपि खरोष्ठी है। ये मुद्रायें चौकोर हैं। सन् 606 के लगभग थानेश्वर के मुखरी वंश के **हर्षवर्धन** नामक राजा ने गुप्त साम्राज्य के अवशेषों में एक राजतन्त्र राज्य स्थापित किया। चीनी यात्री ह्वेनत्सांग के अनुसार हर्ष अपने राज्य काल के शुरू के छः वर्षों तक युद्ध करता रहा। इसी काल में उसने हिमालय में कुमाऊं से लेकर जम्मू तक के उन छोटे-छोटे राज्यों को भी अपने आधिपत्य में कर लिया। सम्भवतः हर्ष ने किसी तुषार शैल पर्वतीय प्रदेश से कर ग्रहण किया। तुषारशैल पर्वतीय प्रदेश का तात्पर्य कश्मीर, नेपाल अथवा शिवालिक श्रेणी या कांगड़ा प्रदेश के अनेक छोटे-छोटे पर्वतीय प्रदेशों में से किसी का भी हो सकता है।

हर्षवर्धन के काल (606-47 ई०) में चीनी यात्री हवेनत्सांग या ह्यूनसांग भारत भ्रमण के लिये आया। उसने अपने समकालीन हिमालय में कश्मीर से लेकर ब्रह्मपुर, (गढ़वाल, कुमाऊं) तथा नेपाल के मध्य भू-भाग में स्थित छोटे-छोटे राज्यों का थोड़ा बहुत वर्णन किया है। वह कश्मीर होता हुआ आया। कश्मीर में वह दो वर्ष तक ठहरा। वहां से पुँछ और फिर राजौरी गया। ये राज्य कश्मीर के अधीन थे। ये राज्य आज के जम्मू प्रान्त के पश्चिमी भाग में स्थित थे। राजौरी से ह्वेनत्सांग तक देश तथा मद्रों की प्राचीन राजधानी साकल (स्यालकोट) होता हुआ चिनमुक्ति (कसूर) से 27 मील उत्तर पूर्व और ब्यास नदी से 10 मील पश्चिम की ओर फिर **जालन्धर** (ह्वेनत्सांग का शे-लन-तलो) पहुंचा। **जालन्धर** त्रिगर्त राज्य का दूसरा नाम तथा उस की **राजधानी** थी। उसके मतानुसार इस राज्य की पूर्व से पश्चिम की 167 मील लम्बाई और उत्तर से दक्षिण को 133 मील चौड़ाई थी तो जालन्धर राज्य में चीनी यात्री के अनुसार उत्तर की ओर से चम्बा, पूर्व की ओर से मण्डी तथा सुकेत और दक्षिण पूर्व की ओर से शतद्रु नामक राज्य भी शामिल रहे होंगे। ह्वेनत्सांग ने जालन्धर के नगरधन विहार में चन्द्रवर्मा नामक एक विद्वान के पास चार मास तक अध्ययन किया।

सातवीं शताब्दी में जालन्धर राज्य के उत्तर में चम्बा, पूर्व की ओर से मण्डी, सुकेत तथा दक्षिण पूर्व की ओर से शतद्रु आदि क्षेत्र भी शामिल थे। इस काल में रावी नदी से पूर्व की ओर के राज्य कश्मीर से स्वतन्त्र थे, क्योंकि कश्मीर के इतिहास में त्रिगर्त (जालन्धर) का एक स्वतन्त्र राज्य के रूप में बार-बार वर्णन आता है। ह्वेनत्सांग ने जालन्धर राजा का नाम **उदिलतो** लिखा है, जो वंशावली का **उदीम** हो सकता है। वह बौद्ध धर्म का अनुयायी था। ह्वेनत्सांग जब भारत से वापस जाने लगा तो वह सन् 643 में दोबारा जालन्धर आया। हर्ष ने जालन्धर के राजा को ह्वेनत्सांग को सीमा तक सुरक्षित पहुंचाने तथा आवश्यक प्रबन्ध कराने का आदेश दिया था। ऐसा माना जाता है कि जालन्धर के राजा ने ह्वेनत्सांग के रक्षा दल का नेतृत्व करके उसे सीमा तक सुरक्षित पहुंचाया था।

हर्ष की मृत्यु के पश्चात् कन्नौज में कोई शक्तिशाली राजा नहीं हुआ। परिणामस्वरूप सभी अधीनस्थ राजा स्वतंत्र हो गये। इस प्रकार त्रिगर्त-जालन्धर राज्य भी स्वतंत्र हो गया और वह लगभग एक शताब्दी तक बिना किसी रोक-टोक के चलता रहा। परन्तु सन् 725 ई. में कन्नौज की गद्दी पर **यशोवर्मन** नामक राजा आसीन हुआ, जिसने अपने बाहुबल से अपनी सीमा पूर्व में बंगाल तक और पश्चिम में पंजाब तक बढ़ा ली। उसने अपना **बुद्धसेन** नामक दूत भी चीन के सम्राट् के दरबार में भेजा था। ऐसी स्थिति में यशोवर्मन का प्रभाव **त्रिगर्त-जालन्धर** पर भी अवश्य रहा होगा। यशोवर्मन ने कश्मीर के सम्राट् ललितादित्य (724-760) से मैत्री करके उसकी सहायता से तिब्बत पर भी आक्रमण किया परन्तु सफलता न मिली। अन्त में ललितादित्य ने मैत्री भंग करके सन् 740 ई. में यशोवर्मन को युद्ध में परास्त कर दिया और बिहार-बंगाल तक बढ़ता चला गया। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि जालन्धर-त्रिगर्त भी ललितादित्य के आधिपत्य में रहा होगा। ललितादित्य की मृत्यु के बाद जालन्धर की स्वाधीनता अधिक देर तक नहीं रही, क्योंकि बंगाल के पास वंश के शासक धर्म पाल (770-810) ने छोटे-छोटे राज्यों को जीत कर अपनी सीमा पश्चिम तक बढ़ा ली। इस विजय के पश्चात् उसने कन्नौज के शासक इन्द्र युद्ध को हरा कर उसके स्थान पर चक्रयुद्ध को बिठाया और इस खुशी में उसने कन्नौज में एक दरबार किया, जिसमें अन्य राजाओं के अतिरिक्त कीरा, **कुरू** और **मद्र** आदि देशों के राजा भी थे। कीरा को उस समय कांगड़ा (त्रिगर्त) का ही भाग कहा जाता था।

यशोवर्मन के काल में **हुईंच** नामक कोरिया का एक अन्य यात्री 727 ईस्वी में जालन्धर आया। उसने लिखा है कि राजा के पास 300 हाथी थे। वह पहाड़ की तराई में बने एक शहर में रहता था, जहां से उत्तर की ओर पहाड़ियां शुरु होती हैं। इसकी सैनिक शक्ति सीमित थी और मध्य भारत के सम्राटों तथा कश्मीर की ओर से कभी-कभी आक्रमण होते रहते। इसी कारण राजा पहाड़ियों के निकटवर्ती शहर में रहता था। इस प्रदेश के रीति-रिवाज, वेशभूषा तथा भाषा मध्य भारत से भिन्न न थी। वहां न तो पाला पड़ता था और न ही बर्फ केवल ठण्डी हवा चलती थी। प्रदेश का पश्चिमी भाग समतल और पूर्वी भाग बर्फीली पहाड़ियों के निकट। वहां कई मन्दिर थे, जिसमें भिक्षु रहते थे। महायान तथा हीनयान दोनों मतों का वहां प्रचलन था। इस यात्री के जालन्धर आने के समय **यशोवर्मन** मध्य भारत अर्थात् कन्नौज का राजा और ललितादित्य कश्मीर का राजा था। यात्री ने जो कुछ कहा और लिखा है उससे सिद्ध होता है कि उत्तरी भारत पर प्रभुत्व जमाने के लिये इन दो शक्तिशाली प्रतियोगी राजाओं के लिये **जालन्धर** झगड़े की बुनियाद था। कश्मीर के प्रसिद्ध इतिहासकार कल्हण (12वीं शताब्दी) ने राजतंरगिणी में लिखा है कि कश्मीर के राजा ललितादित्य मुक्तापीठ ने मध्यप्रदेश के सम्राट् यशोवर्मन को परास्त कर जालन्धर राज्य पर अधिकार कर लिया था लेकिन यह ज्यादा देर तक न चल सका। सन् 809 के एक अभिलेख में जालन्धर के नरेश का नाम **जयचन्द** लिखा मिलता है, जो वंशावली में **जयमाला चन्द** हो सकता है। एक अथवा दो घटनाओं को छोड़ कर इस्लाम विजयों से पहले जालन्धर कई शताब्दियों तक स्वतन्त्र राज्य के रूप में विद्यमान रहा।

इसके बाद त्रिगर्त का वर्णन हमें राजतरंगिणी में मिलता है। कश्मीर के राजा **शंकरवर्मन** (883-903) ने अपने गुर्जर अभियान के समय त्रिगर्त के राजा **पृथ्वी चन्द्र** को भी अपने अधीन कर लिया। शंकरवर्मन के पश्चात् दसवीं शताब्दी के मध्य तक कश्मीर का इतिहास झगड़े, दुर्दशा तथा कठिनाईयों से पूर्ण रहा। राजा शक्तिहीन हो गये और उनका आधिपत्य त्रिगर्त पर भी समाप्त हो गया।

चम्बा में दो ताम्रपत्र मिले हैं जिन्हें चम्बा के राजा **सोम वर्मन** (1060-1080) ने सन् 1066 ई. में लिखा था। ताम्रपत्रों में चम्बा के राजा साहिलवर्मन (920-940) के काल का वर्णन है। इसके अनुसार साहिलवर्मन, त्रिगर्त और कुलूत के राजाओं ने मिल कर किरा (कश्मीर), दुर्गर (जम्मू) और समातट: (बैलोर) की आक्रमणकारी सेनाओं को परास्त किया था। इसी समय पश्चिमी हिमालय के इन राज्यों ने अपने-आप को कश्मीर के प्रभुत्व से स्वतंत्र करा लिया। अत: पुरालिपि के आधार पर त्रिगर्त (कांगड़ा) का पता हमें इन्हीं दो ताम्रपत्रों से मिलता है। इस से स्पष्ट है कि उस समय में यह भाग त्रिगर्त कहलाता था।

राजतंरगिणी में भी त्रिगर्त के विषय में एक और उल्लेख मिलता है। उस में लिखा है कि कश्मीर के राजा अनन्त (1028-63) ने त्रिगर्त के कटोच वंश के राजा इन्दुचन्द की पुत्री सूर्यमती से (1030-40) विवाह किया था। इसकी एक और पुत्री का विवाह शाही वंश के राजकुमार रूद्रपाल से भी हुआ था, जिसका नाम आसमती था।

3. औटुम्बरगण (Autumbars)- पाणिनी के गण पाठ में औटुम्बर का भी नाम आता है, जिसे उन्होंने जालंधर के निकटवर्ती कहा है। महाभारत में औटुम्बरों का वर्णन मद्रों के साथ आता है। औटुम्बर देश कहीं रावी और ब्यास नदियों की ऊपरी दूनों में रहा होगा, जिसकी पुष्टि बौद्ध ग्रन्थों तथा वहां पर मिली औटुम्बर मुद्राओं से होती है। **पठानकोट** व **नूरपुर** आदि भाग भी औटुम्बर देश में ही शामिल थे। मद्र भी शालव-जाति में से थे। औटुम्बर स्वयं ऋग्वेद के तीसरे सूक्त के रचयिता विश्वामित्र के वंशज मानते थे। पतंजलि ने औटुम्बरावती नदी का उल्लेख किया है, जिसके तट पर औटुम्बरों की राजधानी रही होगी। सम्भवत: यह नदी वही हो सकती है, जो गुरदासपुर के पास ब्यास में मिलती है। औटुम्बरों की राजधानी और **अगलपुर** को बौद्ध धर्म का गढ़ बताया गया है। औटुम्बरों ने अपने समृद्ध काल में मुद्रायें भी चलाईं। **पठानकोट, ज्वालामुखी, हमीरपुर** आदि स्थानों पर इस गणराज्य की कुछेक मुद्रायें मिली हैं। ये मुद्रायें तीन प्रकार की हैं। पहली प्रकार की मुद्रा तांबे की चौकोर हैं, जो सब से पहले इस गण ने तैयार कराई थीं। ये मुद्रायें सर्वथा भारतीय ढंग की हैं। मुद्राओं पर ब्रह्मी तथा खरोष्ठी दोनों लिपियों में राजा के नाम के साथ-साथ गण (औटुम्बर) का नाम भी मिलता है। लिपि से अनुमान लगाया जा सकता है कि ये मुद्रायें ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी से पहले की हैं। वस्तुत: ये अधिक पुरानी होंगी तथा पल्लव और कुषाण राजाओं के आने से पूर्व तैयार की गई होंगी। इन पर **शिवदास, रुद्रदास, महादेव** और **धराघोष** चार राजाओं के नाम मिलते हैं। इन राजाओं में महादेव बड़ा शक्तिशाली राजा था, जिसने **मथुरा** के **उत्तमदत्त** नामक राजा पर विजय पाई थी। मुद्राओं के आगे वाले भाग के घेरे में वृक्ष तथा हाथी का चित्र खरोष्ठी लिपि में महादेव रानो उपाधि के साथ ऊपर लिखे राजाओं के नाम मिलते हैं। पृष्ठ भाग में दो मंजिल की इमारत, त्रिशूल, ब्राह्मी में भी उपाधि सहित इन राजाओं के नाम मिलते हैं।

दूसरी प्रकार की मुद्रायें चाँदी की हैं, जो कम संख्या में मिलती हैं। इस पर अंकित चिन्हों तथा **धराघोष** की आकृति से पता चलता है कि ये औटुम्बर गण की मुद्रा है। राजा के नाम के अतिरिक्त निचले भाग के घेरे में वृक्ष तथा त्रिशूल बना है, जो औटुम्बर गण के तांम्बे की मुद्राओं पर भी मिलता है। ब्राह्मी अक्षरों में राजा का नाम लिखा हुआ है। कुछ मुद्रायें विश्वामित्र शैली की भी कही जाती हैं, क्योंकि उस पर बनी मनुष्य की आकृति को विश्वामित्र (गण का देवता) कहा जाता है। धराघोष महादेव का उपासक था और महादेव औटुम्बर जाति के उपास्य देव थे। एक अन्य प्रकार की चाँदी की मुद्रा भी मिली है, जो महादेव की आकृति वाली मुद्रा के ढंग की है। हाथी तथा त्रिशूल भी इस मुद्रा पर दिखाई देता है। इसी कारण इसे औटुम्बर गण की मुद्रा मानते हैं।

तीसरे प्रकार की गोल तांबे की मुद्रायें मिली हैं, जो चिन्हों के आधार पर औटुम्बर गण की मानी जाती हैं। इन मुद्राओं पर घेरे में वृक्ष, हाथी, त्रिशूल आदि के चिन्ह अंकित हैं जो औटुम्बर मुद्राओं से मिलते हैं। इन मुद्राओं पर दो मंजिली मन्दिर की आकृति भी दिखाई पड़ती है। खरोष्ठी तथा ब्राह्मी लिपियों में राजाओं के नाम भी इन मुद्राओं पर लिखे हैं। ब्रिटिश संग्रहालय में **राज्ञों, अजमितस** तथा तीन अन्य शासकों-**महीमित्र, भानुमित्र** और **महाभूतिमित्र** की मद्राएं सुरक्षित हैं। ये **होशियारपुर** (पंजाब) से मिली हैं, जो पहली सदी में वहां प्रचलित थीं। ऐसा विश्वास किया जाता है कि ईसा पूर्व की पहली शताब्दी के अन्त में नए वंश के राजाओं ने जोर पकड़ा जिन में **रुद्रवर्मन, अभिमित्र, महामित्र** और **भानु मित्र** उल्लेखनीय हैं।

औटुम्बरों की समृद्धि का पता उनकी बड़ी संख्या में पाई गई मुद्राओं से चलता है। औटुम्बरों का देश गंगा के मैदान से मध्य -एशिया को जाने वाले व्यापार मार्ग पर स्थित था। स्थानीय उद्योगों से देश को काफी धन की आय होती थी। भेड़ पालन एक बहुत बड़ा व्यवसाय था। यहां की ऊन बहुत उच्च कोटि की समझी जाती थी। यहां पर बढ़िया प्रकार का ऊन का सामान तैयार किया जाता था। इस से औटुम्बर लोग बहुत समृद्ध हो गये थे। उनकी इस समृद्धि का पता बौद्ध ग्रंथ विनय से भी लगता है। इन के द्वारा चलाई चाँदी की मुद्रायें भी इस बात की द्योतक हैं। औटुम्बर मुद्राओं से भारतीय वास्तुकला पर प्रकाश पड़ता है। उन पर मन्दिर की आकृति अंकित है, जिसके ऊपरी भाग में छत्र पर इन राजाओं के नाम मिलते हैं।

4. कुलूत् (Kulutas)–त्रिगर्त जनपद के पड़ौस में कुलूत् नामक जनपद था। इस जनपद के एक ओर औटुम्बर देश था और दूसरी ओर कुलिन्द जनपद था। यह जनपद ब्यास नदी की ऊपरी घाटी में फैला हुआ था। कुलूत् जनपद का

वर्णन रामायण, महाभारत, बृहतसंहिता, मार्कण्डेयपुराण और विष्णुपुराण में मिलता है। ऐतिहासिक तथ्यों से सिद्ध होता है कि कश्मीर और त्रिगर्त को छोड़ कर कुलूत् सब से प्राचीन राज्य था । मुद्राराक्षस से पता चलता है कि कुलूत के राजा चित्रवर्मा उन पांच राजाओं में से एक था, जिसने अन्य राजाओं के साथ मिल कर चन्द्रगुप्त का विरोध किया था।

कुलूत् के बारे में सब से प्राचीन प्रमाण एक मुद्रा पर ''राजन: कुलूतस्य वीरयश'' के उल्लेख का है। प्राचीन लिपियों के आधार पर इसे ईसा पश्चात् पहली और दूसरी शताब्दी का कहा जा सकता है। राजा **वीरयश** के मुद्राओं पर संस्कृत भाषा का ब्राह्मी लिपि में लेख मिलता है। अनुसंधानकर्त्ताओं के अनुसार ये मुद्रायें **ईसा** के **पहली शताब्दी** की हैं। राजा का नाम **विरायस** लिखा है परन्तु कुल्लू की वंशावली में इस प्रकार का कोई नाम नहीं मिलता।

कुल्लू की वंशावली के आधार पर कुल्लू राज्य के संस्थापक का नाम **बिहंगमणी पाल** (Bihangmani Pal) था। इसके पूर्वज पहले प्रयाग में रहते थे। यहां से वे कुमाऊं आए और **कुमाऊं से मायापुरी** (हरिद्वार)। परंतु स्थानीय सामंतों के विरोध के कारण उन्हें वह स्थान भी छोड़ना पड़ा। विहंगमणी पाल अपने भाइयों से विदाई ले कर अपनी पत्नी, पुत्र **पछपाल** और कुल पुरोहित **उदायराम** के साथ कुल्लू घाटी की ओर आ गया। सबसे पहले वह मनीकर्ण गया। उस समय कुल्लू छोटे-छोटे गढ़ों में विभाजित था। इन गढ़ों पर छोटे-छोटे सामंत शासन करते थे। ये सामन्त **राणा और ठाकुर** कहलाते थे। उसने पार्वती घाटी के कुछ सामन्तों से युद्ध कर के उन्हें अपने अधीन कर लिया, परन्तु उसकी यह विजय स्थायी न रह सकी। सामंतों ने फिर संगठित होकर उससे विजित भाग छीन लिये और उसे वहां से भागने पर विवश कर दिया। उस ने **जगत सुख** में आकर **चपराई राम** नामक व्यक्ति के घर में जा कर शरण ली तथा इस प्रकार अज्ञातवास में चला गया। इसी समय जगत सुख के जन साधारण सामंतों से बहुत दु:खी थे, क्योंकि सामंत लोगों से मनमाने कर वसूल कर रहे थे। उन्होंने इन सामंतों के विरुद्ध एक संघ बनाया और यह निश्चय कर लिया था कि वह एक नये राजा का चुनाव करेंगे। अत: वहां पर सामंतों के विरुद्ध विद्रोह उठ खड़ा हुआ। परिणामस्वरूप कई सामंत मारे गये और विहंगमणी को राजा बना दिया गया। इस प्रकार कुल्लू राज्य का संस्थापक विहंगमणी एक राजकुल से था।

विहंगमणी के बाद उसके पुत्र **पछ पाल** ने भी अपने पिता के ही पद चिन्हों का अनुगमन किया। उसने मनाली घाटी में स्थित **गोजरा** और **भवारा** के सामंतों को जीत कर अपने अधीन कर लिया तथा उन्हें राज कर देने के लिये बाध्य किया। पछ पाल के बाद **विहंग पाल, हिन पाल, स्वर्ग पाल, शक्ति पाल, महेश्वर पाल** और **ओम पाल** राजा हुये। इन सभी के राज्यकाल में कोई विशेष घटना नहीं घटी।

ओम पाल के पश्चात् उस का पुत्र **राजेन्द्रपाल** शासक बना। उस समय जगत सुख और नगर के मध्य भाग कोठी बरसाई में गजां के सामंत सूरत चंद का राज्य था। उसका कोई पुत्र नहीं था। अत: उस की मृत्यु के पश्चात् गद्दी पर उस की एकमात्र पुत्री रूपसुंदरी वहां की रानी बनी। अत: राजेन्द्र पाल ने रानी से राज कर मांगा। उसने कर देने से इंकार कर दिया। फलत: राजेन्द्र पाल ने सेना ले कर उस पर आक्रमण कर दिया परंतु उसे मुंह की खानी पड़ी। उस के ग्यारह पुत्र भी युद्ध में मारे गये। केवल दो पुत्र किसी प्रकार बच निकले। राजा ने संधि करने के उद्देश्य से अपने एक पुत्र को रानी के पास सन्धि पत्र देकर भेजा। रानी को जब पता चला कि पत्रवाहक उसी राजेन्द्र पाल का पुत्र है, जिसके ग्यारह पुत्र युद्ध में मारे गये तो रानी ने सजग होकर सन्धि की बात मान ली। साथ ही उसने राजा के पत्रवाहक पुत्र के साथ **विवाह** सम्बन्ध स्थापित करने की इच्छा भी व्यक्त की। राजा को जब इस प्रकार के विवाह प्रस्ताव की सूचना मिली तो उस ने शीघ्र ही उन दोनों का विवाह कर दिया। इस प्रकार **कोठी बरसाई** का क्षेत्र राजा राजेन्द्र पाल के अधिकार में आ गया।

राजेन्द्र पाल की मृत्यु के बाद उसका पुत्र **विशाल पाल** (Vishal Pal) राजा बना। उसने नगर के कर्मचन्द के साथ युद्ध छेड़ दिया। फलत: सामन्त रणक्षेत्र में मारा गया। उस के बाद जब उस का पुत्र राणा बना तो उस ने विशाल पाल की अधीनता स्वीकार कर के राज कर देना स्वीकार कर लिया।

विशुद्ध पाल के समय तक कुल्लू की राजधानी **जगतसुख** थी परन्तु उसने नगर पर अधिकार कर के अपनी राजधानी जगतसुख से ला कर नगर में स्थापित कर दी। विशुद्ध पाल के पश्चात् उत्तरोत्तर में **उत्तम पाल** (Uttam Pal), **द्विज पाल** (Dawij Pal), **चक्र पाल** (Chakra Pal), **कर्ण पाल** (Karan Pal), **सूरज पाल** (Suraj Pal), **रक्ष पाल** (Raksh Pal), **रुद्र पाल** (Ruddra Pal) आदि राजा हुए।

रुद्र पाल के समय में स्पीति के हिन्दू राजा राजेन्द्र सेन ने कुल्लू पर आक्रमण कर दिया और उस पर अधिकार कर लिया। उसने रुद्र पाल को राजकर देने पर भी बाध्य किया। ऐसा लगता है कि लाहौल का ऊपरी भाग जिस में चन्द्र और भागा की घाटियां आती हैं, कुल्लू के अधीन थीं। इसी समय चम्बा राज्य ने भी कुल्लू की स्थिति से लाभ उठा कर लाहौल को उस से छीन लिया। रुद्र पाल के बाद उस का पुत्र **हमीर पाल** (Hamir Pal) स्पीति को कर देता रहा परन्तु जब हमीर पाल के बाद उस का पुत्र **प्रसिद्ध पाल** राजा बना तो उसने कर देने से इन्कार कर दिया और स्पीति के राजा चेतसेन से रोहतांग घाटी के निकट युद्ध कर के उसे परास्त कर दिया। इसके पश्चात् उसने लाहौल को भी चम्बा के चंगुल से छुड़ा लिया। रुद्रपाल के बाद **हरिचन्द पाल** (Hari Chand Pal), **सुबत पाल** (Subat Pal), **सोम पाल** (Som Pal), **संसार पाल** (Sansar Pal) राजा हुए।

संसार पाल के समय (600–650 ई.) में लद्दाख के ग्यामूरोर नामक एक भोट शासक ने स्पीति के शासक चेतसेन को युद्ध में पराजित किया, जिसमें चेतसेन मारा गया। उसने चेतसेन के पुत्र को स्पीति में तीन गांव की जागीर दी और तीन गांव कुल्लू के राजा संसार पाल को दिये। इसी के साथ ही स्पीति में हिन्दू राजवंश का अन्त हो गया। चीनी यात्री ह्वेन्तसांग (629–643) सन् 635 ई० में जालन्धर होता हुआ कुल्लू और लाहौल भी गया था, उसने कुलूत प्रदेश को जालन्धर से 177 मील उत्तर पूर्व की ओर कहा है, जो निश्चय ही आज का कुल्लू हो सकता है। ह्वेनत्सांग ने कुल्लू का घेरा 500 मील बताया है। घाटी के बीच में अशोक द्वारा स्थापित स्तूप का भी ह्वेनत्सांग ने जिक्र किया है। उसने आगे कहा कि उस समय वहां पर 20 के लगभग बौद्धों के संघ विहार थे, जिसमें एक हजार के लगभग महायानी भिक्षु रहते थे। विभिन्न जातियों तथा सम्प्रदायों के वहां पन्द्रह के लगभग देव मन्दिर भी थे। इस के अतिरिक्त वहां कई गुफायें भी थीं, जिन में ऋषि आदि रहते थे। सुलतानपुर से कुछ मील उत्तर की ओर **केलात** नामक स्थान पर स्थित कपिल मुनि के मन्दिर में बुद्ध धर्म के निशान के रूप में अब तक भी अवलोकितेश्वर की पाषाण मूर्ति मौजूद है, जिसकी अब तक भी पूजा होती है। यात्री ने कुलूत के औषध पौधों, सोने, चाँदी तथा तांबे का जिक्र भी किया है।

संसार पाल के बाद उसका बड़ा पुत्र **भोग पाल** (Bhog Pal) फिर उसकी मृत्यु के पश्चात् उसी का छोटा भाई विभय पाल तथा **विभय पाल** के बाद **ब्रह्म पाल** राजा बने। विभय पाल और ब्रह्म पाल दोनों संतानहीन थे। अतः उस के निधन पर चम्बा (उस समय ब्रह्मपुर), लद्दाख, सुकेत, बुशहर, कांगड़ा (तत्कालीन जालन्धर) के राजाओं ने विभय पाल की एक रखैल के पुत्र **गणेश पाल** को ही उस का उत्तराधिकारी बनाया। तदोपरान्त **गम्भीर पाल** (Gambhir Pal) तथा **भूमि पाल** (Bhoomi Pal) राजा बने।

भूमि पाल की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र **दत्तेश्वर पाल** (Dateshwar Pal) राजा बना। उसके समय (700 ई.) में भरमौर (चम्बा) के राजा **मेरु वर्मन** (680–700 ई.) ने लाहौल की ओर से कुल्लू पर आक्रमण किया। दत्तेश्वर पाल भी अपनी सेना लेकर रोहतांग की ओर बढ़ा। दोनों सेनाओं में घमासान युद्ध हुआ। दत्तेश्वर पाल लड़ाई में मारा गया। उसके पश्चात् उसके पुत्र **अमर पाल** ने सेना का नेतृत्व किया परन्तु भरमौर की बढ़ती हुई सेनाओं के सामने उसकी कोई पेश न चली और वह तथा उस का पुत्र दोनों लड़ाई में मारे गये। अमर पाल के दूसरे पुत्र **सीतल पाल** ने भाग कर बुशैहर में शरण ली। इस के बाद उस के वंशज पांच पीढ़ियों तक बुशहर में रहे। इस प्रकार 780 ई. तक कुल्लू पर चम्बा का ही अधिकार बना रहा।

सीतल पाल के बाद उसकी पीढ़ी का **जरेश्वर पाल** (Jareshwar Pal) (780–800 ई०) राजा बना। उस समय चम्बा का राजा **लक्ष्मी वर्मन** (800 ई०) था। लक्ष्मी वर्मन के समय किरों अर्थात् भोटों का उत्तर की ओर से भरमौर पर आक्रमण हुआ। राजा लड़ाई में मारा गया और भरमौर पर भोटों का लगभग 20 वर्ष तक अधिकार रहा। जरेश्वर पाल ने इन सभी परिस्थितियों का

लाभ उठा कर बुशैहर की सहायता से भरमौर की सेनाओं को कुल्लू से मार भगाया। इस प्रकार जरेश्वर पाल ने फिर से कुल्लू को अपने अधिकार में ले लिया। जरेश्वर पाल के पश्चात् **प्रकाश पाल** (Parkash Pal), **अचम्भा पाल** (Achambha Pal), **तपनेश्वर पाल** (Tapneshwar), **परम पाल** (Param Pal), **नगेन्द्र पाल** (Nagendara Pal) राजा बने।

नगेन्द्र पाल के बाद नारदपाल (Nared Pal) कुल्लू का राजा बना। उस समय भरमौर में **साहिल वर्मन** (920-940) राजा था। साहिल वर्मन सेना ने कुल्लू पर आक्रमण किया और मनाली के निकट **मजनाकोट** गांव तक पहुंच गया। वहां पर उस की सेनाओं ने एक दुर्ग भी बनाया। यह संघर्ष चम्बा और कुल्लू में लगभग 12 वर्ष तक चलता रहा। अन्त में दोनों में सन्धि हो गई परन्तु कुल्लू वालों के मन साफ नहीं थे। उन्होंने आक्रमणकारियों को खदेड़ने की एक योजना बनाई। उन्होंने एक रात कोठी नामक गांव में एक उत्सव का आयोजन किया। इस स्थान पर ब्यास नदी बहुत गहरी घाटी से हो कर बहती है। यहां पर नदी पार करने के लिये दो शहतीर लगा कर एक पुल बना रखा था। कुल्लू वालों ने छल से पुल को वहां से हटा दिया। अन्धेरी रात में उत्सव में भाग लेने के लिये जब चम्बा के सैनिक नदी की दूसरी ओर से आये तो उनमें से अधिकांश अपनी असावधानी के कारण नदी में गिर कर मर गये और जो कुछ बच गए, वे स्थिति को भांपते ही भाग निकले। इस प्रकार धोखा दे कर कुल्लू वालों ने गद्दी सेना को कुल्लू से मार भगाया।

इस के पश्चात् कुल्लू राजगद्दी पर **नरोत्तम पाल** (Marotam Pal), **शीश पाल** (Sheesh Pal), **भूप पाल** (Bhupa Pal) बैठे। **भूप पाल** (लगभग 900 ई०) के समय सुकेत ने कुल्लू पर आक्रमण किया। सुकेत के इतिहास के अनुसार सुकेत के राजा का नाम **बीर सेन** (Bir Sen) था। जनश्रुति के अनुसार आज के मण्डी और सुकेत कहलाये जाने वाले भाग किसी समय कुल्लू राज्य के भाग थे। सुकेत के राजा ने सेना लेकर परौल, लाग, रूपी, सारी और धुमरी पर आक्रमण किया। भूप पाल ने इस का विरोध किया परन्तु लड़ाई में हार गया और बन्दी बना दिया गया। बाद में उसे इस शर्त पर छोड़ दिया गया कि वह सुकेत को राज-कर देगा।

भूप पाल के बाद उस का पुत्र **अनिरुद्ध पाल** (Anirudh Pal) भी सुकेत को कर देता रहा परन्तु अनिरुद्ध पाल के पुत्र **हस्त पाल** (Hasth Pal) के समय में सुकेत का राजा **विक्रम सेन** था। वह राजा धार्मिक प्रवृत्ति का था। गद्दी पर बैठने के कुछ समय बाद वह तीर्थ यात्रा के लिये हरिद्वार चला गया और राज काल का भार अपने छोटे भाई **त्रिविक्रम सेन** (Tribikram Sen) को दे गया। विक्रम सेन दो वर्ष तक तीर्थ यात्रा पर रहा। इसी अवधि में त्रिविक्रम सेन के मन में अपने भाई के राज्य पर अधिकार करने की इच्छा जाग गई। इसके लिये उस ने कुल्लू के राजा हस्त पाल की सहायता ली। उस ने हस्त पाल को राज कर देने वाली शर्त से मुक्त कर दिया। दो वर्ष के पश्चात् जब विक्रम सेन वापस आया तो उसे रास्ते में मालूम हुआ कि उस के छोटे भाई ने कुल्लू के राजा की सहायता से उस के राज्य पर अधिकार कर लिया है। इस पर विक्रम सेन सीधा अपने संबंधी **क्योंठल** के राजा के पास गया। राजा क्योंठल ने उसे सेना देकर सहायता की। सतलुज के किनारे ज्यूरी (Jiuri) के पास एक ओर से क्योंठल की सेना विक्रम सेन के नेतृत्व में और दूसरी ओर से त्रिविक्रम सेन और उसके सहयोगी कुल्लू के राजा पाल की सेनाओं में घोर युद्ध हुआ। इस युद्ध में त्रिविक्रम सेन और हस्त पाल दोनों मारे गये। इस के पश्चात् विक्रम सेन ने कुल्लू पर आक्रमण करके उस पर अपना अधिकार जमा लिया। उस ने हस्त पाल के पुत्र को जागीर दे दी और हेत पाल के वंशज **धनी राम, गोपाल दास** और **लक्ष्मी दास** तीन पीढ़ी तक जागीरदार बन कर रहे। इस प्रकार तीन पीढ़ियों तक कुल्लू पर **सुकेत** का अधिकार रहा।

सुकेत के राजा विक्रम सेन के बाद उस का पौत्र **लक्ष्मण सेन** दो वर्ष की आयु में राजा बना, क्योंकि उस के दोनों पुत्र उस के सामने ही मर गये थे। अत: कुल्लू के राजा, **सूरत पाल**, ने अपने स्वयं को स्वतंत्र घोषित कर के पूर्वजों के राज्य को सुकेत के बन्धन से मुक्त करा दिया। चार वर्ष के बाद जब लक्ष्मण सेन बड़ा हुआ तो उस ने कुल्लू के **बजीरी रूपी, लागसारी** और **परोल** के कुछ भाग पर आक्रमण कर के उसे अपने अधीन कर लिया।

सन्तोष पाल (Santosh Pal) जब राजा बना तो उस ने लद्दाख के ग्यमूर और दूसरे भाग पर अधिकार कर लिया। उस के बाद उसके पुत्र **तेग पाल** ने बलतीस्तान के शासक को मार कर उसके पुत्र को राज कर देने पर बाध्य किया। **उचित पाल** जब राजा बना तो उसने तिब्बत पर आक्रमण किया। उस की मृत्यु पर **सिकन्दर पाल** राजा हुआ। उस

के समय में तिब्बत के ग्यामूरोर और बलतीस्तान के शासकों ने मिलकर कुल्लू पर आक्रमण किया और सिकन्दर पाल को उस समय पकड़ा लिया। जब वह अपने पिता का अग्निदाह संस्कार कर रहा था। उसे पकड़ कर **कोठी चपाड़सा** में बन्दी के तौर पर रख दिया गया और कुछ समय तक उनका कुल्लू पर अधिकार रहा। इस आक्रमण का उल्लेख लद्दाख के इतिहास में भी मिलता है। सम्भवत: यह आक्रमण **लह-चन उत्पाल** (Lha-Chen Utpala) (1125-50) के समय में हुआ।

5. चम्बा (Chamba)–हिमाचल प्रदेश के प्राचीन राज्यों में त्रिगर्त और कुल्लू के बाद चम्बा का स्थान आता है, इसका प्राचीन नाम **चम्पा** या **चम्पक** था। पुरा लेखों तथा वंशावली के आधार पर इस की स्थापना **छठी शताब्दी** के मध्य में हुई मानी जाती है। परन्तु ऐसा माना जाता है कि कभी चम्बा मौर्य, कुषाण और गुप्त साम्राज्यों के अधीन अवश्य रहा होगा। एक चीनी यात्री ह्वेन्तसांग 630 ई. में भारत आया। वह 635 ई. में जालन्धर भी गया। उसने लिखा है कि जालन्धर राज्य की लम्बाई 1,000 ली अर्थात् 167 मील और चौड़ाई 800 ली अर्थात् 133 मील है। इस लम्बाई और चौड़ाई को ध्यान में रखा जाये तो चम्बा, मण्डी और सुकेत के क्षेत्र भी जालन्धर राज्य के अन्तर्गत आते थे। इस प्रकार से हो सकता है कि उस समय चम्बा (आदि नाम ब्रह्मपुर भरमौर) जालन्धर राज्य का भाग ही रहा हो।

इस राज्य की नींव **छठी शताब्दी** के मध्य में सूर्य वंशी राजा **मरू** ने 540-550 ई. बीच रखी। वंशावली के अनुसार इस राजा के पूर्वज स्वयं को अयोध्या के राजा रामचन्द्र के वंशज का बताते हैं। प्राचीन काल में इस वंश के लोग अयोध्या से आ कर गंगा की भीतरी घाटी में चले गये और **कालापा** नामक स्थान में रहना आरम्भ किया। शताब्दियों के बाद इस वंश में मरू नाम का एक राजा हुआ। उस के तीन पुत्र थे। राजा मरू बड़ा भक्त था। जब उस के पुत्र युवा हुये तो उस ने कालापा का राजपाट अपने बड़े पुत्र को दे दिया और अपने दूसरे दो पुत्रों को साथ ले कर कश्मीर की ओर तीर्थ यात्रा की भावना से चल पड़ा। जब वह कश्मीर पहुंचा तो दूसरे पुत्र को वहीं छोड़ दिया और तीसरे पुत्र **जय स्तम्भ** को साथ लेकर रावी नदी की ऊपरी घाटी में पहुंचा। वहां पर उस ने स्थानीय **राणाओं** और **ठाकुरों** को अधीन कर के **ब्रह्मपुर** नगर की नींव रखी और ब्रह्मपुर राज्य की स्थापना की।

आरम्भ में ब्रह्मपुर या **भरमौर** एक छोटा सा राज्य था, जो केवल रावी घाटी में बड़ा भंगाल से छतराड़ी तक सीमित था। मरू ने जब इस राज्य को ठीक से स्थापित कर दिया तो वह राज्य को अपने पुत्र जय स्तम्भ को संभाल कर स्वयं वापिस कालापा लौट आया। मरू के बाद **जय स्तम्भ** (Jai Satambha), **जल स्तम्भ** (Jal Satamabha) तथा **महा स्तम्भ** (Maha Satambha) गद्दी पर बैठे।

चम्बा के राजा आदित्य वर्मन (लगभग 620 ई०) राजा का नाम वंशावली में **आदि वर्मन** के नाम से मिलता है। भरमौर के प्राचीन लेखों में इस का नाम दो बार आया है। इन शिला लेखों को उस के परपौत्र **मेरू वर्मन** ने खुदवाया था। आदित्य वर्मन ब्रह्मपुर का पहला राजा था, जिसने पहले-पहल अपने नाम के साथ वर्मन का उपनाम जोड़ा था।

कुल्लू के इतिहास में चम्बा के बारे में भी कई उल्लेख मिलते हैं। सब से पुराना उल्लेख सम्भवत: आदित्य वर्मन के बारे में है। कुल्लू के राजा ब्रह्म पाल (लगभग 600 ई०) की कोई सन्तान नहीं थी। अत: उसके सामने कुल्लू की गद्दी पर योग्य सम्बन्धी को बैठाने का प्रश्न उठ खड़ा हुआ। अन्त में चम्बा (ब्रह्मपुर), लदाख, बुशैहर, कांगड़ा आदि राजाओं ने **गणेश पाल** को उत्तराधिकारी बनाया। इस से स्पष्ट है कि उस समय पहाड़ी राज्यों में ब्रह्मपुर का भी एक महत्त्वपूर्ण स्थान था।

अगले राजा **बाला वर्मन** (लगभग 640 ई०) और **दिवाकर वर्मन** (लगभग 660 ई०) हुये। इनमें बाला वर्मन का नाम वंशावली में तो नहीं मिलता, जब कि इस का पता भरमौर के दो ताम्र लेखों से मिलता है। दिवाकर वर्मन का नाम भरमौर लेख में पूरा मिलता है परन्तु वंशावली तथा छतराड़ी के लेख में इस का नाम देव वर्मन मिलता है।

मेरू वर्मन (लगभग 680-700 ई.) चम्बा का एक बहुत ही योग्य राजा था। उसने ब्रह्मपुर राज्य की सीमा अपने बाहुबल से दूर-दूर तक फैला दी। उस ने **छतराड़ी** के क्षेत्र को जीत कर अपने अधीन किया। इस स्मृति में उस ने वहां पर शक्ति देवी का एक मन्दिर बनवाया और वहां पर देवी की पीतल की मूर्ति की भी स्थापना की। मूर्ति की पीठिका में एक लेख भी मिला है। यह लेख वहां के एक सामंत राणा **अस्था देव** का है, जिसे राजा मेरू वर्मन का सामंत माना जाता

है। इस लेख से यह सिद्ध हो जाता है कि राजा मेरू वर्मन का राज्य रावी नदी की घाटी में बहुत नीचे तक अर्थात् वर्तमान चम्बा नगर तक फैला हुआ था। मेरू वर्मन ने बहुत से मन्दिर भी बनाये। ये मन्दिर आज भी भरमौर में विद्यमान हैं। इनमें उल्लेखनीय **मणिमहेश, लक्षणादेवी, गणेश** और **नरसिंह** के हैं। उसने सूर्य मुखा मन्दिर भी बनाया था। उसने इन मन्दिरों के कुशल संचालन के लिये भूमि भी दान में दी थी। मेरू वर्मन के बाद के नाम इस प्रकार हैं-मन्दर वर्मन, कन्तर वर्मन, प्रगल्भ वर्मन आदि राजा हुए जिनके बारे में कोई प्रमाण नहीं मिलते।

अजय वर्मन (लगभग 760 ई.) भरमौर के गद्दियों का विश्वास है कि इस राजा के समय दिल्ली से आकर वहां बसे थे। यह राजा बड़ा व्रतधारी था। जब इसका पुत्र बड़ा हुआ तो उसने राज काज उसे सम्भाल कर स्वयं संयास ले लिया और रावी और बुधील नदियों के संगम पर अलांसा के निकट रहने लगा।

लक्ष्मी वर्मन (लगभग 800 ई.) ने थोड़े ही समय तक शासन किया। इसके राज्य काल में हैज़ा और महामारी फैल गई। इससे बहुत से लोग मर गये और जनसंख्या बहुत घट गई। इस बर्बादी का लाभ उठाकर उत्तर की ओर से एक **किर** नामक जाति ने ब्रह्मपुर पर आक्रमण कर दिया। उन लोगों ने राजा को मार दिया और राज्य पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया। ओरिल स्टायन का मत है कि ये किर कश्मीर से पूर्व की ओर बसने वाले पर्वतीय **तिब्बती** या **यारकन्दी** हो सकते हैं। उस समय उन्होंने अपना विस्तार कांगड़ा में **किरग्राम** अर्थात् **बैजनाथ** तक बढ़ा लिया था।

ब्रह्मपुर में यह उथल-पुथल देखकर कुल्लू के शरणार्थी राजा **श्री जरेश्वर पाल** ने बुशैहर से सहायता ले कर ब्रह्मपुर की सेनाओं को कुल्लू से खदेड़ दिया और अपने राज्य को उनसे वापिस ले लिया। लक्ष्मी वर्मन की मृत्यु के बाद उसका पुत्र मूशन वर्मन (820 ई.) में बड़ी कठिनाइयों के बाद चम्बा का राजा बना। उसका विवाह सुकेत की राजकुमारी से हुआ। राजा ने उसे बहुत सा धन तथा पांगणा परगना उसे दहेज स्वरूप दिया। उसे एक बड़ी सेना भी दी, जिसकी सहायता से उसने अपने राज्य ब्रह्मपुर से आक्रमणकारियों को मार भगाया और अपने राज्य को फिर से ब्रह्मपुर में स्थापित किया। तत्पश्चात् हंस वर्मन्, सेन वर्मन्, सार वर्मन्, सजन वर्मन् तथा मृत्युंजन वर्मन गद्दी पर बैठे।

चम्बा के राजाओं में सबसे प्रसिद्ध और प्रतापी राजा **साहिल वर्मन** (Sahil Varman) (920 ई.) माना जाता है। उसने रावी की निचली घाटी को जीत कर अपने राज्य में मिला लिया और अपनी राजधानी को ब्रह्मपुर से बदलकर आज के **चम्बा** नगर में स्थापित कर लिया। इस राजा को गद्दी पर बैठने के पश्चात् ही ब्रह्मपुर की सेनाओं ने फिर से कुल्लू पर आक्रमण किया। कुल्लू के लोगों ने आक्रमणकारियों को रात के एक भोज के लिये आमंत्रित किया परन्तु रात के अन्धेरे में उन्हें राहला के निकट ब्यास नदी के किनारे मार भगाया। बाद में दोनों में सन्धि हो गई।

साहिल वर्मन के राजा बनने के थोड़े समय के बाद ब्रह्मपुर में 84 योगियों की एक टोली आई। उन के भक्ति भाव से राजा बड़ा प्रभावित हुआ और उन का बड़ा आदर सत्कार किया। उस समय राजा के कोई सन्तान नहीं थी। उन्होंने राजा को वरदान दिया कि तेरे दस पुत्र होंगे। समय बीतने के साथ उस के दस पुत्र और एक पुत्री हुई। सब से बड़े पुत्र का नाम **युगाकर** और पुत्री का नाम **चम्पावती** था। एक बार राजा साहिल वर्मन् निचली रावी घाटी में विजय अभियान पर था। रानी, उसकी पुत्री चम्पावती और एक योगी **चरपट नाथ** भी राजा के साथ थे। जब वे वहां पहुंचे, जहां आज का चम्बा नगर है तो चम्पावती वहां के प्राकृतिक सौंदर्य से बहुत प्रभावित हुई। उस ने अपने पिता साहिल वर्मन से वहां पर एक नगर बसाने का अनुरोध किया। राजा को भी यह स्थान बहुत पसन्द आया। राजा ने अपनी बेटी चम्पावती के नाम से इस नगर को बसाया और इस का नाम चम्पा रखा। समय बीतने के साथ इसे **चम्पा से चम्बा** कहा जाने लगा। प्रसिद्ध इतिहासकार कवि कल्हण की पुस्तक में राजतरंगिणी में इस का नाम **चम्पापुरी** मिलता है।

साहिल वर्मन ने चम्बा में बहुत से मन्दिर बनवाये। इनमें चन्द्रगुप्त (शिव) और कामेश्वर पहले बनाये गये थे। इस के पश्चात् राजा ने **लक्ष्मी-नारायण** का मन्दिर भी बनाया। कहते हैं कि साहिल वर्मन ने साहू के पास **चन्द्रशेखर मन्दिर** भी बनवाया था। इन मन्दिरों को चलाने के लिये राजा ने बहुत सी ज़मीन भी इन मन्दिरों को प्रदान की। चम्बा में प्राचीन काल से अपनी मुद्रा चलती थी। इसे चकली कहते थे और यह मुद्रा तांबे की थी।

साहिल वर्मन के बारे में जानकारी चम्बा के दो ताम्र पत्र लेखों से भी मिलती है। ये लेख चम्बा के राजा सोम वर्मन और अस्त वर्मन के हैं। इन्हीं दोनों राजाओं ने अपने ताम्र पत्र लेखों में राजा साहिल वर्मन के बारे में लिखा है कि इस प्रतापी राजा ने किर सेना और उस के सहयोगी दूगर राज एवं सुमाटिक को लड़ाई में परास्त किया। इस के पश्चात् त्रिगर्त जालन्धर के राजा ने भी साहिल वर्मन् से अपने मैत्री-सम्बन्ध जोड़े और कुल्लू के राजा ने भी उसके प्रभुत्व को स्वीकार किया।

अन्त में उस ने राजपाट अपने पुत्र **युगाकर** को सम्भाल दिया और स्वयं चड़पत नाथ योगी के साथ वापिस ब्रह्मपुर चला गया एवं साधु बन कर दूसरे योगियों के साथ रहने लगा। वहां पर उस ने 84 साधुओं के लिये मठ बनवाये, जिन्हें अब चौरासी कहते हैं। **युगाकर वर्मन** (940) राजा के काल के ताम्रपत्र मिलते हैं, जो सब से पुराने माने जाते हैं। इनमें उस ने ब्रह्मपुर में स्थित नरसिंह मन्दिर को भूमि दान दी थी। कहते हैं कि इस राजा ने चम्बा में लक्ष्मी नारायण के मन्दिर के साथ गौरी शंकर का मन्दिर भी बनाया था। युगाकर वर्मन के बाद **दूदका वर्मन** (980) ई०, **विचित्र वर्मन** (लगभग 1000 ई०), **धेरय वर्मन्** (लगभग 1020) ई० चम्बा के सिंहासन पर बैठे।

6. कुलिन्द (Kulindas)– कुलिन्द जनपद ब्यास नदी के ऊपरी भाग से लेकर यमुना नदी तक हिमालय के पर्वतीय प्रदेश में फैला हुआ था। इसके पश्चिम में त्रिगर्त तथा कुलूत जनपद थे। सम्भवतः इनकी सीमा शतद्रु (सतलुज) रही होगी। एलेग्जैंडर कलिन्द प्रदेश में आते थे। दक्षिण में इनकी सीमा **अम्बाला, सहारनपुर** और **सूगह** तक थी। कनिंघम के अनुसार सूगह इन की राजधानी थी। पूर्व में गढ़वाल का कुछ भाग भी इसी जनपद में आता था। कुलिन्द जनपद का वर्णन **महाभारत, बृहत्संहिता, विष्णुपुराण** ओर **मार्कण्डेय** पुराण में आता है। महाभारत युद्ध में कुलिन्द कौरवों की ओर से लड़े थे परन्तु कुछ कुलिन्द पुत्र पाण्डव पक्ष में भी लड़े थे। पाणिनि को भी इस जनपद का भली प्रकार ज्ञान था। इन्हें क्षत्रिय कहा गया और पाणिनि के अनुसार यह पेशेवर लड़ाकू थे। कुलिन्द सदा पर्वतवासी थे और उनका देश पर्वतीय था। मनेन्द्र और उस के उत्तराधिकारियों का मथुरा पर लगभग 100 ई० पू० तक अधिकार रहा। इस समय शकों ने यूनानियों को मथुरा से खदेड़ दिया। इस स्थिति से लाभ उठा कर कुलिन्दों ने मैदानी भाग की ओर फैलना आरम्भ किया। उन लोगों ने इस समतल भूमि को सर्दियों में चरागाह के तौर पर प्रयोग किया। आज भी इस परम्परा के अनुसार पहाड़ी लोग अपने पशुओं को शरद् ऋतु में चराने के लिये साथ में लगते मैदानी भागों में ले जाते हैं। जब कुषाणों ने मैदानी भाग पर अधिकार कर लिया तो कुलिन्द पीछे पहाड़ों में चले गए।

कुलिन्दों की मुद्रायें दो प्रकार की थीं। इन्हें दो अधिकारियों ने चलाया। **पहली मुद्रा** पर मृग की आकृति है और साथ ही **अमोघभूति** का नाम लिखा है। इसने चाँदी और तांबे की मुद्रायें चलाईं जिन की तोल यूनानी तोल (चाँदी 32 रत्ती और तांबा 144 ग्रेन) के बराबर है परन्तु शैली भारतीय है। कुलिन्दों की ये मुद्रायें कई स्थानों से प्राप्त हुई हैं। कुछ मुद्रायें कांगड़ा में तपा मेवा (हमीरपुर) एवं ज्वालामुखी से और कुछ अम्बाला और सहारनपुर के बीच वाले भाग से मिली है। **गढ़वाल** में भी कुलिन्दों की मुद्रायें मिली हैं। ऐसी हजार मुद्राओं की निधि **सुमाड़ी गांव** में हल चलाते मिली। अम्बाला, सहारनपुर, देहरादून तथा उस के उत्तर पहाड़ी प्रदेश में कुलिन्द या कुनिन्द नाम का एक बहुत ही प्रसिद्ध और शक्तिशाली गणराज्य स्थापित था। अतः ब्यास से लेकर यमुना की उत्तर पश्चिमी धारा तौंस नदी तक समूचा प्रदेश कुलिन्दों का देश कहलाता था। **दूसरी प्रकार की मुद्रा** छतेश्वर वाली मुद्रा तीसरी शताब्दी की है। कुलिन्दों की ये दो प्रकार की मुद्रायें ईसा पूर्व 150 से सन् 200 तक प्रचलित थीं। मृग वाली मुद्राओं के अग्रिम भाग में कमल सहित लक्ष्मी की मूर्ति, एक मृग, छत्र सहित चौकोर स्तूप तथा एक चक्र बना है तथा ब्राह्मी में " अमोघमृतस महरजस राज्ञकुणदस" लिखा है। कुणिन्द शासकों ने कुछ समय पूर्व भारतीय यूनानी राजाओं द्वारा प्रचलित चाँदी की मुद्राओं के स्थान पर देशी ढंग से चाँदी की मुद्रायें तैयार करवाईं। चाँदी की मुद्राओं से अनुमान लगाया जा सकता है कि इस जनसमूह की आर्थिक स्थिति बहुत सुदृढ़ थी। अमोघभूति की इसी तरह की तांबे की मुद्रायें मिली हैं, जिन पर ब्राह्मी तथा खरोष्ठी में लेख दोनों ओर मिलते हैं। अमोघ के अतिरिक्त कुणिन्द जाति के छतेश्वर-नामक राजा की तांबे की मुद्रा मिलती है। उसके अग्रभाग में त्रिशूल लिये शिव की मूर्ति खड़ी है। पृष्ठ भाग में मृग, नन्दिपाद, वृक्ष तथा समेरू पर्वत आदि की आकृति पायी गयी है। छत्रेश्वर की मुद्राओं पर एक ओर शिव त्रिशूल लिये खड़े अंकित हैं। उन पर शिव और कार्तिकेय की आकृतियां हैं।

इस से ऐसा आभास होता है कि कुलिन्द जन दूसरी शताब्दी में शैव थे। इनकी ताम्र मुद्रा साधारणतः जनपद के भीतर ही चलती थी। इन पर लिखे ब्राह्मी लेखों में पता चलता है कि वह राज्य की मान्य लिपि रही होगी। चाँदी की मुद्राओं पर, जो अधिकांश जनपद से बाहर चलती थीं, खरोष्ठी लिपि में लिखा मिलता है।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न
(Important Questions)

v. [illegible]

What is meant by ancient Janapadas of Himachal? Explain the Kulute Janapada.

2. हिमाचल की प्राचीन जन-जातियों का वर्णन करें।

Explain the early tribes of Himachal.

3. जन तथा जनपद से क्या तात्पर्य है? प्राचीन चम्पा अर्थात् चम्बा जनपद का वर्णन करें।

What is meant by Jana and Janapada? Explain Champa or Chamba Janapada.

4. प्राचीन त्रिगुत जनपद का विस्तार से वर्णन करें।

Discuss in expansion of the earliest Triguta Janapada.

5. हिमाचल के प्राचीन जनपदों का संक्षेप में वर्णन करें।

Discuss in brief the early Janapadas of Himachal.

3 मध्यकालीन हिमाचल रियासतें
(HIMACHAL STATES OF MEDIEVAL PERIOD)

भूमिका (Introduction)

सम्राट् हर्षवर्धन की 643 ई. में मृत्यु हो गई। उसकी मृत्यु के पश्चात् थानेश्वर का कोई भी शक्तिशाली शासक नहीं हुआ। परिणामस्वरूप भारत में उथल-पुथल का दौर शुरू हो गया और भारत छोटी-छोटी रियासतों में बंटने लगा। लगभग आठवीं शताब्दी तक उथल-पुथल का दौर चलता रहा। तत्पश्चात् राजपूतों की उत्पत्ति हुई तथा उन्होंने भारत में एक स्वतंत्र साम्राज्य की नींव रखी। उनका शासन बारहवीं शताब्दी तक चलता रहा। उनका काल पूर्व मध्यकाल कहलाता है। उनके पतन के बाद भारत में मुस्लिम शासन की स्थापना हुई, जो मुगल साम्राज्य तक चलता रहा। इस काल को उत्तर मध्य काल कहा जाता है।

हिमाचल प्रदेश की रियासतें ग्यारहवीं शताब्दी के पहले दशक से मुस्लिम आक्रमणकारियों के आक्रमणों से प्रभावित होती गईं। गज़नी के शासक सुलतान महमूद गज़नवी ने अपने चौथे भारत आक्रमण में सन् 1009 ई. को **कांगड़ा** के नगरकोट को निशाना बनाया। यह नगरकोट प्राचीन काल से सुशर्मपुर, त्रिगर्तपुर, भीमकोट, कोट-कांगड़ा, कांगड़ा किला आदि नामों से विख्यात रहा। यह किला लगभग 625 ई. से 1009 तक कटोच वंश की असीम शक्ति का प्रतीक रहा। सन् 1059 ई. को गजनी के इब्राहिम ने त्रिर्गत के शासकों का जालन्धर खण्ड से सदा के लिए अधिकार समाप्त कर दिया। तेरहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तक हिमाचल की धमेड़ी (नूरपुर), त्रिगर्त, सिरमौर, चम्बा आदि रियासतों को मुस्लिम ताकतों का सामना करना पड़ा। खलजी वंश (1290-1320 ई.) के समय में हिमाचल प्रदेश मुस्लिम हमलावरों से बचा रहा। तुग़लक वंश (1390-1441 ई.) के शासक मुहम्मद-बिन-तुग़लक ने सन् 1337 ई. को नगरकोट पर आक्रमण कर राजा पृथ्वी चन्द को पराजित किया। कांगड़ा के राजा रूप चन्द के शासनकाल में फिरोज़शाह तुग़लक ने सन् 1365 ई. को कांगड़ा किला पर छह मास तक कब्ज़ा जमाए रखा। मुस्लिम सुलतानों के साथ-साथ मध्य एशिया के मंगोलों तैमूरलंग आदि तथा समरकन्द और काबुल के मुग़ल शासकों बाबर, हुमायूं, अकबर आदि ने भी पहाड़ी राज्यों पर विनाशकारी आक्रमण किए। हिमाचल की सभी रियासतों पर मुग़लों का शासन था। इनके देशी शासक मुग़लों को वार्षिक नज़राना देते थे। सन् 1556 ई., 1572 ई. 1588 ई., 1595 ई. तथा 1604 ई. को मुग़ल सम्राट् अकबर ने पहाड़ी राज्यों को मुग़ल साम्राज्य के अधीन करने के लिए अथक प्रयास किए लेकिन कांगड़ा किला पर अकबर विजय हासिल नहीं कर पाया। मुस्लिम आक्रमणों का अधिकतर प्रभाव नूरपुर, गुलेर, जसवां, कांगड़ा, कुल्लू, बिलासपुर, मण्डी पर पड़ा। इन रियासतों के शासक मुग़लों को नज़राना भी देते रहे।

मध्यकाल में राजपूतों का उदय
(Rise of Rajputs in Medieval Period)

सम्राट् हर्षवर्द्धन की मृत्यु के पश्चात् उत्तरी भारत में ऐसा कोई भी शक्तिशाली राज्य नहीं रहा जो हिमालय सहित समस्त भारत की एकता को बनाये रखता। फलस्वरूप भारत में अव्यवस्था और अराजकता फैलने लगी। इसका तत्कालीन राजनैतिक और सामाजिक परिस्थितियों पर गहरा प्रभाव पड़ा। इस उथल-पुथल के कारण अनेक राजवंशों ने जन्म लिया। इन नये राजवंशों का संबंध राजपूत जाति से माना जाता था।

राजपूत लोग कौन थे तथा कहां से आये और किस प्रकार उन्होंने क्षत्रियों का स्थान ग्रहण किया, इस सम्बन्ध में ठीक प्रकार से कुछ भी नहीं कहा जा सकता। सबसे अद्भुत बात यह है कि यह सभी राजपूत स्वयं को राम और कृष्ण

का वंशज मानते रहे तथा अपने वंश के साथ सूर्य, चन्द्र तथा अग्नि का सम्बन्ध जोड़ते रहे। राजपूतों की उत्पति के बारे में विद्वानों का विचार है कि ये प्राचीनकाल के सूर्य और चन्द्र वंशों के ही वंशज हैं। यह विचारधारा राजस्थान के इतिहास के प्रसिद्ध लेखक डा० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा की है, जो परम्पराओं पर आधारित है। वासुदेव उपाध्याय का भी यही मत है कि राजपूत प्राचीन आर्य क्षत्रिय वंश से थे। एक अन्य विचारधारा के अनुसार राजपूत मूल रूप से क्षत्रिय नहीं थे परन्तु सैनिक कार्यों में संलग्न रहते थे और शासनाधिकार प्राप्त कर रहे थे, धर्मरक्षक समझ कर ब्राह्मणों ने उन्हें क्षत्रिय वर्ण प्रदान कर दिया। साथ ही उन्हें ''राजपूत'' की उपाधि से भी विभूषित कर दिया गया।

कुछ इतिहासकार राजपूतों को विभिन्न विदेशी जातियों का सम्मिश्रण समझते हैं। उनका कथन है कि छठी शताब्दी से पूर्व **शक, कुषाण, हूण, गुर्जर** आदि विदेशी जातियां पश्चिमोत्तर प्रदेशों में मार्ग से भारत के उत्तर-पश्चिमी भाग, पंजाब और वर्तमान राजपूताना में आकर बसने लगी थीं। धीरे-धीरे उन पर भारतीय संस्कृति की छाप पड़ने लगी और अन्त में हिन्दू समाज में घुल मिल गई। इन विदेशी जातियों के लोगों को, जो उच्च वर्ग के थे और जिनका व्यवसाय एकमात्र युद्ध ही था, क्षत्रिय वर्ण प्रदान कर दिया गया और ये लोग राजपूत के नाम से पुकारे जाने लगे।

राजपूत तथा हिमाचल
(Rajputs and Himachal)

सब से पहले राजपूत राजपूताना में बसे। उसके बाद वे पंजाब, उत्तर प्रदेश और आगे बिहार तक फैल गये और अन्त में कश्मीर, उत्तर-पश्चिमी हिमालय तथा मध्य हिमालय की भीतरी घाटियों में बढ़कर वहां के स्वामी बन गये। आठवीं शताब्दी से लेकर बारहवीं शताब्दी तक के इन चार सौ वर्षों के काल में भारत की राजसत्ता इन के हाथों में रही। इसी कारण भारतीय इतिहास का यह काल **''राजपूत काल''** के नाम से जाना जाता है।

बहुत समय से उत्तरी भारत की राजनीति का केन्द्र **कन्नौज** बना रहा और राजपूतों में कन्नौज पर अपना अधिकार जमाने की होड़ लगी रही क्योंकि यहां से वे हर्ष जैसे सम्राटों की तरह अपना अधिकार उत्तरी भारत पर ही नहीं अपितु समस्त मध्य तथा उत्तर-पश्चिमी हिमालय पर भी रख सकते थे। अत: सब से पहले कन्नौज पर बंगाल-बिहार के **पाल** राजाओं का अधिकार हुआ। पाल राजाओं में सब से प्रसिद्ध **धर्मपाल** सन् 770-810 और उस का पुत्र **देव पाल** सन् (810-850) हुये। धर्मपाल ने कन्नौज के इन्द्रयुद्ध, जो प्रतिहार राज वत्सराज का समर्थक था, को हटा कर कन्नौज की गद्दी पर उसी वंश के चक्रयुद्ध को बिठाया।

राजा धर्म पाल के काल में सन् (770-810) पश्चिमी हिमालय पर बहुत से छोटे-छोटे राजाओं का आधिपत्य था। भले ही उस काल में पूर्ण रूप से पश्चिमी हिमालय पर राजा धर्मपाल का आधिपत्य नहीं रहा होगा परन्तु वहां के छोटे-छोटे राजा उसे अपना महाराजाधिराज स्वीकार कर चुके थे। स्वम्मू पुराण में वर्णित एक पारम्पारिक परम्परा के अनुसार नेपाल पर भी राजा धर्मपाल का आधिपत्य रहा। इसके अतिरिक्त उसने **कुरु, मद्रा** और **कीरा** तथा अन्य पड़ोसी राज्यों पर भी विजय प्राप्त की।

पाल वंश के पश्चात् कन्नौज पर गुजर प्रतिहार वंश के राजाओं का अधिकार हुआ। इन राजाओं में सब से प्रतिभाशाली राजा **नागभट्ट द्वितीय** (805-33) और **राजा भोज** (836-62) हुए। नाग भट्ट द्वितीय के ग्वालियर अभिलेख से पता चलता है कि राजा ने किरातों (हिमालय के सीमावर्ती भाग में बसने वाली जाति) के प्रदेश पर भी विजय पाई थी।

गुर्जर प्रतिहार वंश के पतन के पश्चात् कन्नौज पर कुछ काल के लिये **गहड़वाड़** (कइयों के अनुसार ये राठौर थे) वंश का अधिकार रहा परन्तु स्थाई तौर से कोई भी अपना अधिकार न जमा सका। अन्य राजपूत वंशों में **चन्देल, कलचूरी, परमार, तोमर, चौहान** तथा **चालुक्य** थे, जिन के राज्य बुन्देलखण्ड, चेदी, मालवा, दिल्ली, अजमेर आदि स्थानों में रहे।

इस प्रकार जब 8वीं शताब्दी से लेकर 12वीं शताब्दी तक जहां इन राजपूतों में अपने राज्य स्थापित करने की होड़ लगी थी वहां दूसरी ओर पश्चिमी तथा मध्य हिमालय के प्राचीन राज्यों में भी एक बड़ा परिवर्तन और उथल-पुथल हो

रही थी। ठीक इसी समय भारत में केन्द्रस्थ शक्तिशाली राज्य न होने के कारण तथा विदेशियों के आक्रमण और लूट-खसोट के फलस्वरूप एक राजनैतिक परिवर्तन आने लगा। राज्य परिवार के राजकुमारों में स्वतंत्र और पृथक् राज्य बनाने की लालसा भी पनपने लगी। इन सभी कारणों से केन्द्रीय राज्य की सत्ता छिन्न-भिन्न होने लगी। इसी उथल-पुथल के दौर में कई राजकुमार अपने साथ कुछ सैनिकों को लेकर नये राज्य, नये स्थान की खोज में निकल पड़े। कई राजवंशों में सत्ता का आपस में भी बंटवारा हो गया और इस प्रकार बड़े-बड़े राज्यों के स्थान पर छोटे तथा स्वतन्त्र शासक शासन करने लगे। इस तथ्य की पुष्टि **जालन्धर-त्रिगर्त** राज्य के बंटवारे में भली भान्ति हो जाती है। इस आपसी बंटवारे के कारण आगे चल कर कई छोटे-छोटे राज्य जैसे **गुलेर, जसवां, सिब्बा,** दातारपुर आदि राज्यों का जन्म हुआ। इसी प्रकार कुमाऊं-गढ़वाल का विशाल कत्यूरी राज्य भी बंटकर **काली कुमाऊं, डोटी, अस्कोट** आदि अनेकों ही छोटे-छोटे भागों में विभक्त हो गया। इस प्रकार जब बड़े-बड़े राज्यों की सीमाओं का खण्डन होने लगा तो राजपूतों ने इन निर्बल और शक्तिहीन राजाओं को अपने अधिकार में लेकर बल पकड़ना शुरू किया। इस प्रकार **आठवीं शताब्दी** से लेकर **12वीं शताब्दी** तक पहाड़ों के आंचल में छुपे छोटे-छोटे राज्यों और पूर्व मध्यकालीन हिमाचल की राजनीति में एक बहुत बड़ा परिवर्तन आया। जिससे राजपूतों का उदय हुआ।

यह छोटे-छोटे राज्य रजवाड़े कैसे अस्तित्व में आये, यह भी एक विचारणीय विषय है। ईसा की तीसरी शताब्दी तक हिमाचल के इस भूखण्ड में **औदम्बुरों, कुलूतों, त्रिगर्तों** और **कुलिन्दों** के जनपद थे। इसी काल में उत्तर पश्चिम की ओर से आये कुषाणों ने कश्मीर से लेकर बनारस तक और मालवा से लेकर सिनकयान तक अपना अधिकार जमा रखा था। इस से अनुमान लगाया जा सकता है कि बाद के वर्षों में औदुम्बर, कुलूत, त्रिगर्त और कुलिन्द जैसे जनपद भी उनके आधिपत्य में रहे होंगे। कुषाणों ने इन्हें शक्तिहीन बना दिया। कुषाणों के बाद गुप्त सम्राटों ने इस प्रदेश पर अधिकार करके उन्हें समाप्त कर दिया। गुप्त साम्राज्य के पश्चात् जब मगध से राजनैतिक गतिविधियों का केन्द्र कन्नौज में आया तो वहां के शासक यशोधर्मन और बाद में हर्ष वर्धन ने इस भाग पर अधिकार करके इसे सीधे अपने आधिपत्य में रखा परन्तु हर्ष की मृत्यु के पश्चात् जिसका भी अधिकार कन्नौज पर रहा, उसी ने हिमाचल के इस भू-भाग पर अधिकार जमाये रखने का प्रयत्न किया, फिर भी स्थाई तौर पर यहां कोई नहीं टिक सका क्योंकि कन्नौज पर अधिकार करने के लिये उनमें आपस में बराबर लड़ाई-झगड़े होते रहे।

हिमाचल प्रदेश के इतिहास में इस काल में दो प्रकार के राज्यों का उल्लेख मिलता है। इन राज्यों में एक वे राज्य थे जो प्राचीन काल से चले आ रहे थे और जिनके शासक प्राचीन क्षत्रिय कुलों में से थे। इन राज्यों में मुख्य राज्य **त्रिगर्त** (आज का कांगड़ा) और **कूलूत** (आज का कुल्लू) थे। ऐसा लगता है कि **चम्बा, बुशहर** और **जुब्बल** भी इन्हीं प्राचीन क्षत्रिय वंशों से थे, क्योंकि इन राज्यों के अपने इतिहास कम से कम पांचवीं-छठी शताब्दी तक पीछे चले जाते हैं। दूसरे राज्य वे थे, जिनके शासक आठवीं शताब्दी से लेकर पंद्रहवीं शताब्दी तक के काल में भारत के मैदानी भाग से इस पर्वतीय भूखण्ड में आये थे। ये लोग ऐसे राजपूत कुलों से थे, जिन्हें विभिन्न परिस्थितियों के कारण अपनी जन्म-भूमि को छोड़ने पर विवश होना पड़ा था।

राजपूत रियासतों के उदय के कारण
(Causes of the origin of Rajput States)

आठवीं शताब्दी के बाद ये छोटे-छोटे राजपूत राज्य किस प्रकार अस्तित्व में आये। इनमें मुख्य कारण इस प्रकार थे :-

1. **केन्द्रीय शक्ति का कमज़ोर होना** (Weakness of Central Power)– जब कभी भी कोई केन्द्रीय शक्तिशाली शासक इस भू-भाग पर अपना अधिकार जमा लेता था तो वह यहां के शासन को चलाने के लिये अपने या अपने वंशज के किसी राजकुमार को यहां पर भेज कर राज्यपाल के तौर पर नियुक्त कर देता था। केन्द्रीय शक्ति जब कमज़ोर हो जाती थी तो यह स्थानीय शासक स्वयं को स्वतन्त्र घोषित करके वहां का राजा बन बैठता था और इस प्रकार एक नये राज्य की नींव पड़ जाती थी।

2. प्राकृतिक सौंदर्य का आकर्षण (Attraction of Natural Beauty)– जब कभी भी कोई राजा अपने परिवार तथा साथियों सहित हिमालय के इस पर्वतीय भाग में तीर्थ यात्रा के लिये या यहां के प्राकृतिक सौन्दर्य से आकर्षित होकर इस ओर आया तो यहां पर किसी घाटी को शून्य शान्तिमय देखकर और यहां के छोटे-छोटे राणाओं और ठाकुरों को दबा कर स्वयं को या अपने पुत्र-पौत्र को यहां पर शासनाध्यक्ष बना गया। इस प्रकार धीरे-धीरे नये राज्यों की स्थापना होती रही। बिलासपुर और सिरमौर राज्य ऐसे ही उदाहरण हैं।

3. राजकुमारों की प्रबल इच्छा (Strong Desise of Prcinces)– ऐसे भी उदाहरण मिलते हैं कि जब एक राजा का बड़ा पुत्र राजा बन जाता था तो उसके अन्य पुत्रों में भी राजा बनने की इच्छा पैदा हो जाती थी और वे इसी भावना को लेकर अपने कुछ सहयोगियों के साथ इन पहाड़ों की ओर आ जाते थे। उपयुक्त अवसर पाकर वे स्थानीय ठाकुर या राणा को दबा कर उसके छोटे से राज्य पर अधिकार जमा लेते थे। कई बार ऐसा भी देखा गया है कि छोटे भाई का अपने बड़े भाई-राजा से किसी बात पर जब झगड़ा हो जाता था, तो वह भी छोटे-मोटे दल के साथ इस ओर आ जाता था और किसी पहाड़ी या घाटी में बस जाता था।

4. विदेशी यात्रियों के आक्रमण (Attacks of foreign invaders)–अन्त में एक वह कारण है जिसे सभी इतिहासकार मानते हैं-विदेशी जातियों के आक्रमण भी नये राज्यों की स्थापना का एक कारण था। यह आक्रमण पांचवीं-छठी शताब्दी में हूणों के और आठवीं शताब्दी से लेकर पंद्रहवीं शताब्दी तक मुसलमानों के रहे। इन विदेशी आक्रमणों के कारण अपने धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिये राजपूत लोग अपने अनुयायियों के साथ मैदानी भागों से भाग कर इस प्रदेश में आये और यहां उन्होंने छोटे-छोटे राजपूत राज्य स्थापित किये।

मध्यकालीन कांगड़ा
(Kangra in Medieval Period)

मध्यकाल में कांगड़ा पर अनेक मुसलमान आक्रमणकारियों ने आधिपत्य स्थापित करने का प्रयास किया। इनमें तुर्क, तुग़लक, तैमूर, सूर आदि प्रमुख थे। इनके अतिरिक्त भारत में मुग़ल साम्राज्य स्थापित होने के बाद मुग़ल सम्राटों ने भी कांगड़ा को अपने अधीन करने के प्रयास जारी रखे। मध्यकालीन कांगड़ा तथा इन आक्रमणकारियों के सम्बन्धों का वर्णन इस प्रकार है।

तुर्क तथा कांगड़ा
(Truks and Kangra)

1. महमूद गज़नवी और कांगड़ा (Mahmud Gaznavi and Kangra)- दसवीं शताब्दी के अन्त से उत्तर-पश्चिम की ओर से मुसलमानों के भयंकर आक्रमण आरम्भ हुए और ग्याहरवीं शताब्दी के आरम्भ से और भी बढ़ते गये। सन् 1001 ई० से **महमूद गज़नवी** के आक्रमण पंजाब पर प्रति वर्ष बढ़ते ही गये। उसने 1009 ई० में पंजाब पर चौथी बार आक्रमण किया। इस बार पंजाब से **आनन्दपाल** की महती सेना को परास्त करके वह पहाड़ों में आ घुसा तथा नगरकोट पर घेरा डाल लिया।

"तारीख-ए यामिनी" के लेखक उतबी ने इस चढ़ाई का विशद वर्णन किया है। उतबी का कहना है कि नगरकोट दुर्ग **भीमनगर** के नाम से प्रसिद्ध था। किले की दौलत की खबर जब महमूद गजनवी के कानों में पहुंची तो उसने सिन्ध नदी को पार करके पहाड़ों में प्रवेश किया और नगरकोट को घेर लिया। किले के सिपाही उन दिनों अपने-अपने गांवों में कृषि कार्य में लगे हुए थे, केवल देवी के पुजारी किले में बढ़ रहे थे। ऐसे समय में महमूद गजनवी अचानक वहां आ पहुंचा तथा सेना लेकर किले को चारों ओर से घेर लिया। किले के बचे-खुचे लोगों ने बड़ी वीरता से किले का बचाव किया परन्तु जब उन्होंने पहाड़ पर टिड्डियों की तरह फैली हुई महमूद की सेना देखी तो उनकी हिम्मत पस्त हो गई। उन्होंने दुर्ग के द्वार खोल दिये। सुलतान अपने विश्वासपात्र पदाधिकारियों के साथ अन्दर घुसा और सारी दौलत पर कब्जा

कर लिया। अपार धन को लेकर महमूद गज़नवी वापस लौट गया और किले में अपने एक पदाधिकारी को सेना सहित रख दिया। कांगड़ा के तत्कालीन शासक का नाम राजा **जगदीश चन्द** (Jagdish Chander) था जो इस वंश के आदि-पुरुष भूम चन्द्र की 136वीं पीढ़ी में से था।

मुसलमानों के बढ़ते आक्रमणों को रोकने तथा पंजाब से उन को खदेड़ने के उद्देश्य से कुछ राजाओं ने मिल कर एक संगठन बनाया। इस संगठन में **दिल्ली** के **तोमर** राजा, **मालवा** के **परमार** भोज, **त्रिपुरी** के कलचूरी कर्ण और **नदौल** के **अनाहिल चौहान** आदि शामिल हुये। **जालन्धर-त्रिगर्त** के **कटोच** राजा भी इस संगठन में अवश्य शामिल हुए होंगे क्योंकि एक तो उसके पर्वतीय दुर्ग **नगरकोट** पर गज़नवी की सेना का अधिकार था, दूसरे लाहौर की ओर से भी मुसलमानों के आक्रमण का हर समय डर रहता था। इस तोमर राजा के नाम का कहीं उल्लेख नहीं मिलता। कनिंघम के कथानानुसार उस समय **कुमारपाल देव** (1019-49) दिल्ली का राजा था। पी० सरन ने उस तोमर राजा का नाम **महिपाल** लिखा है, जिसने उस संगठन में भाग लिया।

इस संगठन के बन जाने के पश्चात् लोगों में उत्साह पैदा करने के उद्देश्य से 1043 ई० में दिल्ली के तोमर वंशीय राजा ने घोषणा की कि उसने एक स्वप्न देखा है जिसमें नगरकोट की देवी ने उसे आदेश दिया है कि वह महमूद गज़नवी से बदला ले तभी वह स्वयं उनके तोड़े हुये मन्दिर में वापस आयेंगी। इस स्वप्न की बात सुनकर चारों ओर सनसनी फैल गई। बड़ी संख्या में लोग सेना में भर्ती हो गये। तब उसने सेना लेकर **हांसी, थानेश्वर** आदि पर चढ़ाई कर दी और हर स्थान से महमूद के पौत्र मदूद की सेना को निकाल बाहर किया। फिर वह पहाड़ों पर आया और नगरकोट के दुर्ग पर उसने घेरा डाल दिया। चार मास तक गजनवी की सेना ने मुकाबला किया पर अन्त में खाद्यान्न की कमी से भूखे मरने की जब नौबत आ पहुंची तो उसने विवश होकर हथियार डाल दिये और उसे दुर्ग को छोड़ कर भागना पड़ा। मन्दिर में पुनः देवी की स्वयंमागत प्रतिमा प्रतिष्ठित हुई। गज़नवी की सेना को नगरकोट से भगाने के पश्चात् तोमर राजा दिल्ली को लौट गया। इस प्रकार 1043 में नगरकोट को गज़नवी के आधिपत्य से मुक्त करवा लिया गया।

1059 ई० में गज़नवी की गद्दी पर महमूद के ही वंश का "**इब्राहीम**" सुलतान बना, जिसने 1099 ई० तक शासन किया। उसने अपना रुख फिर भारत की ओर किया। वह आक्रमण करता हुआ यमुना के निकट बुरिया तक बढ़ गया। 1070 ई० में उसने **जालन्धर** पर भी आक्रमण किया और उस पर अधिकार कर लिया। ऐसा लगता है कि 1070 ई० में ही कटोच राजाओं के हाथ से जालन्धर सहित मैदानी भाग निकल गया। उस समय त्रिगर्त का राजा **जगदेव चन्द** था। इस के बाद सुरक्षा के कारणों से वह अपनी राजधानी को जालन्धर से बदल कर पर्वतीय नगर **नगरकोट** ले गया।

2. मुहम्मद गौरी और कांगड़ा (Mohammad Gauri and Kangra)- जब से त्रिगर्त के कटोच वंशी राजा अपनी राजधानी जालन्धर से नगरकोट ले गये तब से पूरी एक शताब्दी तक अर्थात् 1170 ई० तक वे बेखटके राज्य करते रहे। 1170 ई० के आस-पास त्रिगर्त राजवंश दो भागों में बंट गया। उस समय त्रिगर्त का राजा **पद्मचन्द** था। उसके छोटे भाई **पूर्वचन्द** ने अपने बड़े भाई से रुष्ट हो कर होशियारपुर की जसवां दून में **जसवां** नामक राज्य की स्थापना की। जसवां राज्य अपने इतिहास के प्रथम चरण में त्रिगर्त के ही अधीन रहा परन्तु पंजाब पर मुसलमानों के आक्रमणों के बाद वह स्वतन्त्र हो गया।

1171 ई० में **पृथ्वीराज चौहान** ने दिल्ली के तोमर राज्य पर अधिकार कर लिया। उधर 1173 में मुहम्मद गौरी ने गज़नवी के राज्य पर अधिकार कर लिया और 1175 ई० से उसने भी भारत पर अपने आंक्रमण आरम्भ किये। 1191 से **1192 ई०** तक के काल में उसके युद्ध पृथ्वीराज चौहान के साथ भी हुए। 1191 की तराईन की लड़ाई में पृथ्वी राज की विजय हुई, यहां तक कि एक बार तो मुहम्मद गौरी को अपनी जान के लाले पड़ गये परन्तु **1192 ई०** में तराईन की लड़ाई में पासा ही पलट गया और पृथ्वी राज लड़ाई में मारा गया। ऐसा माना जाता है कि घग्गर नदी के तट पर जो लड़ाई मुहम्मद गौरी के साथ हुई, उसमें कटोच राजा ने भी प्रतिष्ठा से अपना उत्तरदायित्व निभाया।

इसके पश्चात् 12वीं शताब्दी के उतरार्द्ध और 13वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध के कुछ इतिहास का पता हमें कांगड़ा घाटी के **बैजनाथ** (प्राचीन वैद्यनाथ) में स्थित शिव मन्दिर के दो शिला-लेखों से लगता है। यह शिलालेख शारदा लिपि में हैं। इन शिलालेखों पर 1126 शक संवत् अंकित है, जो ईसा की 1204 है। जिस समय का यह लेख है, उस समय बैजनाथ

नगर को **कीर ग्राम** कहते थे। लेख के अनुसार उस समय वहां के स्थानीय शासक का नाम राणा **लक्ष्मण चन्द** था। इ के पूर्वजों का आठ पीढ़ियों से कीर ग्राम पर अधिकार रहा और वे आठ पीढ़ियों से त्रिगर्त राजाओं के सामंत चले आ र थे। लेख में लिखा है कि राणा लक्ष्मण चन्द्र की मां लक्षणा त्रिगर्त के राजा **हृदयचन्द** की पुत्री थी। इन वैवाहिक सम्बन्ध से पता चलता है कि पर्वतीय राजनैतिक क्षेत्र में इन सामंतों का महत्त्वपूर्ण हाथ था। राणा लक्ष्मण चन्द्र का समकालीन रा **जयचन्द** था, जो वंशावली का जयसिंह चन्द्र है जिसका राज्य-काल लगभग 1200 से 1220 ई० तक रहा है। लेख इस राजा को जालन्धर का सर्वोपरि राजा और उस के पूर्वज राजाओं को त्रिगर्त सम्राट् लिखा है। अनुमान लगाया जाता कि लम्बागांव के निकट ब्यास तट पर **जयसिंहपुर** नामक नगर इसी राजा जयसिंह चन्द्र ने बसाया था। यह नगर कांगड़ के राजाओं का भी निवास स्थान रहा है।

तुग़लक तथा कांगड़ा
(Tuglaq and Kangra)

1. मुहम्मद तुग़लक (Mohammad Tuglaq)- नगरकोट से महमूद गजनवी की सेना को 1043 ई० में खदेड़ने के बाद लगभग तीन सौ वर्षों तक त्रिगर्त के शासक स्वतंत्रतापूर्वक शासन करते रहे। बैजनाथ मंदिर के शिलालेख में कांगड़ा के राजा का नाम जयचन्द (जय सिंह चन्द्र 1200-1220) मिलता है। उस से लगभग चार-पाँच पीढ़ी के बाद राजा **पृथ्वी चन्द** त्रिगर्त का राजा हुआ, जो 1330 ई० में गद्दी पर बैठा और 1345 ई० तक शासन करता रहा। उसके शासन काल में 1337 ई० में फिर **नगरकोट** पर दिल्ली के मुस्लिम शासक **मुहम्मद तुग़लक** (1325-51) ने आक्रमण किया। सम्भवत: उसे आशंका थी कि हिमालय के इस ओर चीनी प्रभाव न बढ़ जाए। यह प्रदेश प्राय: स्वतंत्र रहा। इसमें **कांगड़ा, कुमाऊं, कामरूप** आदि राज्य शामिल थे। ये राज्य हिमालय की तलहटी में स्थित होने के कारण न विशेष समृद्ध थे और न ही सुगमतापूर्वक इन पर विजय प्राप्त हो सकती थी परन्तु वे चीन के प्रभाव में आ सकते थे। क्योंकि चीन के मंगोलों के लिये भारत की उत्तरी सीमा पर से दबाव डालना सम्भव था। अत: साम्राज्य की सुरक्षा की दृष्टि से इस क्षेत्र पर अधिकार करना आवश्यक समझा जाता था। अत: मुहम्मद तुग़लक ने नगरकोट पर आक्रमण कर दिया। पृथ्वी चन्द्र की पराजय हुई और उसने मुहम्मद तुग़लक की अधीनता स्वीकार कर ली। सुलतान ने उसको संतुष्ट रखने के उद्देश्य से गढ़ उसी को ही लौटा दिया और वहां के सुविख्यात ज्वालामुखी मन्दिर को यथापूर्ण सुरक्षित रहने दिया। इसके बाद उस की सेना आगे बढ़ी और दूसरे हिमालय प्रदेशीय राज्य पर आक्रमण किया। इसे इब्नबतूता ने **कराचल** और अन्य लेखकों ने **हिमाचल** का नाम दिया है। उन का यह कराचल या हिमाचल कांगड़ा घाटी से आगे था या इस के इधर-उधर कहा जा सकता है। यह प्रदेश दिल्ली से दस पड़ावों की दूरी पर था। दिल्ली की विशाल सेना ने हिन्दुओं के इस गढ़ पर धावा बोला किन्तु पर्वतीय भूमि तथा अत्यधिक वर्षों के कारण उसे भीषण क्षति उठानी पड़ी। बाध्य हो कर सुलतान की सेना को लौटना पड़ा। स्थानीय सेना ने सुलतान की सेना का मार्ग रोक कर उस पर आक्रमण कर दिया और उसे लगभग पूरी तरह से नष्ट कर दिया।

पृथ्वी चन्द्र तथा उसके बाद के कांगड़ा के राजाओं की बहुत सी मुद्रायें प्राप्त हुई हैं। उन मुद्राओं के आधार पर पृथ्वी चन्द्र के बाद **पूर्व चन्द्र** (Purav Chander) (1345-1360) तथा **रूप चन्द** (Rup Chander) (1360-75) नाम के राजा हुये। पूर्व चन्द्र के राज्य काल में कोई विशेष घटना नहीं घटी।

समय और काल की स्थिति को देख कर और मुसलमानों के व्यवहार से तंग आकर हिन्दू राजाओं ने भी सेना लेकर छापे मारने आरम्भ कर दिये। पर्वतीय राजा भी पहाड़ों से उतर कर समतल क्षेत्र पर आते और पुन: छापा मार कर पहाड़ों में लौट आते थे। कहते हैं कि **राजा रूपचन्द** ने भी इस तरीके को अपनाया तथा एक बार वह दिल्ली के फाटक पर लूटमार करता हुआ पहुंच गया। लौटते समय मार्ग में कश्मीर के तत्कालीन शासक **शहाबुद्दीन** जो स्वयं भी लूटमार के लिये प्रसिद्ध था, के साथ सतलुज नदी के तट पर मुठभेड़ हो गई। शहाबुद्दीन की सेना संख्या में अधिक थी अतएव रूपचन्द्र ने लूट के माल में से कुछ भाग शहाबुद्दीन को दे दिया। उस समय दिल्ली का सुलतान **फिरोज़शाह तुग़लक** (1351-88) था। रूप चन्द के इस व्यवहार से रुष्ट होकर तथा ज्वालामुखी मन्दिर के धन को प्राप्त करने की लालसा

ले कर उसने 1361 ई. में **नगरकोट** पर आक्रमण कर दिया। नगरकोट के राजा ने किले का दरवाजा बन्द कर लिया और एक सुरक्षित स्थान से वह लड़ता रहा। लगभग छ: महीने तक यह लड़ाई चलती रही। इसी बीच सुलतान ने ज्वालामुखी के मन्दिर को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया और वहां से लगभग 1300 संस्कृत के ग्रन्थों को वह साथ ले गया और उसमें से कुछ का फ़ारसी में अनुवाद भी कराया। नगरकोट के बहुत समय से किए जा रहे घेराव से सुलतान का मन ऊब उठा था और वह घेराव तोड़ कर दिल्ली लौटना चाहता था। इस विषय में उक्त कालीन ग्रंथ **''मुआसिर-अल-उपरा''** में लिखा है कि सुलतान फिरोज़शाह ने अपने महान साधनों की सहायता से इसे (नगरकोट दुर्ग में) जीतने का प्रयत्न किया। बहुत दिनों तक घेरा डालने पर भी अन्त में उसने अनुभव किया कि इसे जीतना कठिन है। इसलिये उसने राजा से केवल भेंट करके ही संतोष प्राप्त कर लिया। कहते हैं कि इसके बाद राजा ने सुलतान को किले के भीतर आमंत्रित किया। सुलतान ने कहा, मुझे किले के भीतर बुलाना एक प्रकार की धृष्टता है साथ ही खतरनाक भी है चूंकि मेरे साथ के लोग यदि राजा पर आक्रमण कर दें तो इसका परिणाम बुरा होगा। इसे सुन कर राजा ने एक इशारा किया। फिर तो छिपे हुये स्थानों से तुरन्त झुंड के झुंड सिपाही बाहर निकल आये। सुलतान भयभीत हो उठा। राजा ने फिर बड़े आदर से कहा कि मेरा उद्देश्य सिवाय सुरक्षा के और कुछ नहीं था। फिरोज़ का बर्ताव राजा के साथ अच्छा रहा। राजा ने उसे भेंट में बहुत सा धन दे दिया और इसके बाद फिरोज़शाह दिल्ली लौट गया। अंततः वह नगरकोट के दुर्ग पर अधिकार करने में असमर्थ रहा।

3. नसीरूद्दीन मुहम्मद शाह (Nasiruddin Mohammad Shah)- रूप चन्द्र के बाद उस का पुत्र **संगर चन्द** (Sangara Chand) 1375 ई० में गद्दी पर बैठा। संगर चन्द के शासनकाल से संबंधित कोई सरकारी कागज़ प्राप्त नहीं है पर मुसलमान इतिहासकारों ने एक घटना का वर्णन किया है जो उसके अंतिम दिनों में घटी थी। इसके अनुसार फिरोज़शाह के पश्चात् उसका पौत्र **नसीरूद्दीन** 1388 ई० में दिल्ली की गद्दी पर बैठा परन्तु उसके चचेरे भाईयां ने षड्यन्त्र रच कर उसे दिल्ली से भागने पर बाध्य किया। पहले उसने सिरमौर में फिर नगरकोट में शरण ली। नगरकोट तक उसके भाईयों ने उसका पीछा किया। नगरकोट के राजा ने उसे किले में शरण दी। उसके भाइयों ने भी जो कि सेना सहित उसका पीछा कर रहे थे, किले को जीतना कठिन समझ कर सेना को दिल्ली लौट जाने का आदेश दिया। 1389 ई० तक नसीरूद्दीन नगरकोट में रहा। 1390 ई० में उसे दिल्ली बुलाया गया और अन्त में मुहम्मद शाह के नाम से वह फिर दिल्ली का सुलतान बना।

तैमूर और कांगड़ा
(Taimur and Kangra)

1390 ई० में संगर चन्द के पश्चात् **मेघ चन्द** गद्दी पर बैठा और वह 1405 ई० तक शासन करता रहा। 1398 ई० में तैमूर ने भारत पर अपना क्रूर आक्रमण किया। वह बढ़ता हुआ दिल्ली तक आ पहुंचा। वह पन्द्रह दिन तक दिल्ली में ठहरा। 1 जनवरी 1399 ई० को उसने दिल्ली से प्रस्थान किया और **मेरठ, हरिद्वार** तथा **सिरमौर** की निचली पहाड़ियों से होता हुआ वह वापस लौट गया। तैमूरलंग ने अपने संस्मरण ग्रंथ **''मालफूजत-ए-तिमूरी''** (Malfuzat-i-Timuri) में नगरकोट का वर्णन करते हुए लिखा है कि ''शिवालिक की घाटी में जब पहुंचा तो मुझे नगरकोट के सम्बन्ध में खबर दी गयी जो हिन्दुस्तान का एक बड़ा और प्रसिद्ध नगर है तथा इन्हीं पहाड़ों में है। दूरी तीस कोस की थी पर रास्ता वनों तथा ऊंचे पहाड़ों से होकर जाता था। इन पहाड़ों में बसने वाले हर एक राज्य या राजा के पास काफी सैनिक थे। अभी मुझे इन बातों का पता लगा, मेरा हृदय इन विधर्मी हिन्दुओं से लड़ने को और इस इलाके पर विजय-प्राप्त करने को उत्तेजित हो उठा।''

मेघ चन्द की मृत्यु के पश्चात् 1405 ई० में कांगड़ा की गद्दी पर **हरी चन्द** बैठा। इसके राज्य काल में एक ऐसी घटना घटी, जिस के कारण कांगड़ा राज्य दो भागों में विभक्त हो गया। एक दिन राजा हरी चन्द **हरसर** (Harsar) जंगल की ओर आखेट के लिए गया। वह आखेट खेलते समय किसी प्रकार अपने साथियों से बिछुड़ कर कुएं में जा गिरा। बहुत खोज की गई, पर उसका कहीं पता न चला। अन्त में उस के परिवार के लोगों ने यह समझकर कि उस की मृत्यु हो गई, उसका श्राद्ध तथा अन्त्येष्टि तक कर दिये। उसकी रानियां भी सती हो गईं। उसका कोई पुत्र नहीं था। अतः

राजगद्दी पर उस के छोटे भाई **करम चन्द** को बिठा दिया गया। पर हरी चन्द मरा नहीं, जीवित था। बाईस दिनों के बाद कोई व्यापारी उस रास्ते द्वारा जा रहा था, प्यास से व्याकुल होकर वह कुएं के पास रुका। उसने हरी चन्द को कुएं से बाहर निकाल दिया। ऊपर आकर जब पूर्वोक्त बातों का पता चला तो उसने करम चन्द के हाथों से राज्य छीनने की अपेक्षा यह निश्चय किया कि वह अब कांगड़ा नहीं लौटेगा। उसने बाण गंगा के किनारे पर एक दुर्ग और नगर हरीपुर का निर्माण किया तथा एक नये राज्य की स्थापना की जो आगे चल कर **गुलेर** राज्य के नाम से प्रसिद्ध हुआ। अतः करम चन्द पैतृक गद्दी पर ही रहा। वह 1415 ई० से 1429-30 तक शासन करता रहा।

करम चन्द के बाद उसका पुत्र **संसार चन्द प्रथम** 1430 ई. में नगरकोट (कांगड़ा) की गद्दी पर बैठा। उसने 1450 ई. तक शासन किया। उसके बाद 1450 ई. में **दिवंग चन्द** (Divange Chand) तथा 1465 ई. में **नरेन्द्र चन्द** (Narender Chand) गद्दी पर बैठे। इन राजाओं के बारे में कोई विशेष घटना नहीं घटी। 1480 ई. में नरेन्द्र चन्द की मृत्यु हो गई। उसकी कोई संतान नहीं थी, परन्तु उसकी मृत्यु के समय रानी गर्भवती थी। इन परिस्थितियों में अनेक गद्दी का दावा करने लगे। रानी डर कर अपने मायके पूना चली गई। रास्ते में एक कुम्हार की झोंपड़ी के घर रानी ने पुत्र को जन्म दिया, जिसका नाम **सुवीरा** (Suvira) रखा गया। बाद में उसने नाना की सहायता से कांगड़ा पर पुनः अधिकार कर लिया। उसने उस कुम्हार को भी एक जागीर दी, जिसकी झोंपड़ी में उसका जन्म हुआ था। सुवीरा चन्द के बाद 1490 ई. में **प्रयाग चन्द** (Prayag Chand) कांगड़ा का शासक बना, जिसने 1510 ई. तक शासन किया। तत्पश्चात् राम चन्द 1510 में शासक बना। 1528 ई. धर्म चन्द राजा बना।

सूरी और कांगड़ा
(Suri and Kangra)

धर्म चन्द के शासन काल में **शेरशाह सूरी** ने 1540 ई० में दिल्ली पर अधिकार किया। इसके बाद उसने अपने सेना अध्यक्ष **ख्वास खां** (Khwas Khan) को नगरकोट पर आक्रमण करने के लिये भेजा। कहते हैं कि उसने किले पर अधिकार कर लिया और मन्दिरों और मूर्तियों को तोड़ डाला परन्तु वहां अधिक दिन तक उसका अधिकार नहीं रहा और कटोच राजा का किले पर पुनः प्रभुत्व स्थापित हो गया।

धर्म चन्द के ही शासन काल में दिल्ली के सूर वंशीय सुलतान शासकों का पतन हो गया। उस समय पंजाब पर शेरशाह सूरी के भतीजे **सिकन्दरशाह सूर** का अधिकार था। हुमायूं, जिस ने शेरशाह सूरी से परास्त हो कर काबुल में शरण ली थी, 12 नवम्बर 1554 को एक भारी सेना लेकर भारत की ओर बढ़ा। वह 24 फरवरी 1555 को लाहौर पहुंचा। वहां से हुमायूं ने बैरम खां और अपने पुत्र अकबर को सिकन्दर शाह के विरुद्ध सेना दे कर भेजा। सिकन्दर की सरहिन्द के किनारे हार हुई और वह नूरपुर और कांगड़ा के साथ लगती हुई शिवालिक पहाड़ियों की ओर भाग गया। हुमायूं जब पंजाब से दिल्ली चला गया तो सिकन्दर ने दो बार पंजाब पर अधिकार करने का प्रयत्न किया। हुमायूं ने फिर अकबर को बैरम खां के साथ जनवरी 1556 में सरहिन्द की ओर भेजा। सिकन्दर फिर शिवालिक की पहाड़ियों में भाग गया। वह सेना लेकर फिल्लौर के पास सतलुज पार कर के **कांगड़ा** में स्थित सुलतानपुर की ओर बढ़ा। वहां से वह सिकन्दर का पीछा करता हुआ हरियाणा की तरफ बढ़ा। हरियाणा में अकबर को हुमायूं की मृत्यु की दुर्घटना का समाचार मिला। यहां से उसने सिकन्दर का पीछा करना छोड़ दिया और सीधा कलानौर (गुरदासपुर में स्थित) की ओर चल पड़ा। वहां पहुंच कर बैरम खां ने अकबर को सम्राट् घोषित कर दिया। उस समय अकबर केवल 14 वर्ष का था।

मुगल तथा कांगड़ा
(Mughal and Kangra)

बैरम खां ने 14 फरवरी 1556 को कलानौर में ही अकबर को गद्दी पर बैठा दिया। इसी समय कांगड़ा का राजा धर्म चन्द भी अकबर से अपनी सहानुभूति जताने नूरपुर पहुंचा।

अकबर और कांगड़ा (Akbar and Kangra)- 1557 ई० में सिकन्दर शाह सूर ने पहाड़ों से उतर कर पंजाब में छापे मारने आरम्भ कर दिए। अकबर ने फिर उस का पीछा किया, जिसके फलस्वरूप सिकन्दर ने स्वयं को नूरपुर और

पठानकोट के बीच स्थित मनकोट नामक दुर्ग में बन्द कर दिया। छः मास तक मनकोट दुर्ग का घेराव करने के बाद सिकन्दर शाह ने आत्मसमर्पण कर दिया और मनकोट का किला अकबर के हाथ आ गया। सम्भवतः कांगड़ा के राजा धर्म चन्द ने भी अकबर के इस अभियान में साथ दिया होगा।

1563 ई० में धर्म चन्द की मृत्यु हो गई और इसके बाद उस का पुत्र **माणिक चन्द** राजगद्दी पर बैठा। इस राजा ने केवल सात वर्ष शासन किया और 1570 ई० में इस की मृत्यु हो गई। उसके पश्चात् 1570 ई० में ही **जयचन्द** (Jai Chand) कांगड़ा का राजा बना। किसी कारण अकबर जयचन्द के व्यवहार से रुष्ट हो गया और उस की नेक नीयती पर सन्देह करने लगा। उस ने राजा को दिल्ली बुलाया। राजा ने शाही हुक्म की तामील करने में ही अपना भला समझ पर जाते समय अपने नाबालिग पुत्र विधि चन्द को जसवां के राजा गोविन्द चन्द, जो उन्हीं के वंश से था, की देख-रेख में रख गया और स्वयं अकबर से मिलने दिल्ली चला गया। अकबर ने उसे बन्दी बना लिया। जयचन्द के बन्दी बनाने के बारे में गुलेर राज्य के इतिहास में यह लिखा मिलता है कि अकबर ने गुलेर के राजा राम चन्द से जय चन्द को पकड़ने के लिये कहा था और उसी ने जय चन्द को बन्दी बना कर अकबर के पास भेजा था परन्तु यह सत्य नहीं जान पड़ता क्योंकि वह स्वयं दिल्ली गया था। जब बहुत समय तक राजा जय चन्द वापस नहीं लौटा तो उसके पुत्र विधि चन्द ने यह समझ कर कि पिता को मौत के घाट उतार दिया गया होगा, राज सिंहासन ग्रहण कर लिया। अभी उस की आयु कम थी, फिर भी उसने अकबर के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। इस विद्रोह को दबाने के लिये अकबर ने पंजाब के सूबेदार **खान जहान हुसैन कुली खां** (Khan Jahan Hussain Kuli Khan) को आदेश दिया कि नगरकोट के विधि चन्द से छीन कर राजा बीरबल को जागीर में दे दिया जाये। अतः कुली खां को नवम्बर 1572 ई० में पठानकोट की ओर से बढ़ते हुये **नूरपुर, कोटला** आदि के राजाओं को भी पराजित करना पड़ा और अन्त में कांगड़ा पहुंच कर उस के किले पर घेरा डाला जो तीन मास चलता तक रहा। कांगड़ा की सेना का नेतृत्व जसवां के राजा **गोविन्द चन्द** ने किया। पर इसके बाद ही समाचार मिला कि अकबर के दो रिश्तेदारों **इब्राहिम हुसैन मिर्ज़ा** (Ibrahim Hussain Mirza) और **मसूद मिर्ज़ा** (Masud Mirza) ने काबुल से आकर पंजाब पर धावा बोल दिया है। कुली खां को विवश हो कर सुलह की बात चलानी पड़ी। विधि चन्द की ओर से सुलह की सारी बातचीत जसवां के राजा गोविन्द चन्द ने की। सुलह की चार शर्तें थीं- (1) राजा अपनी एक लड़की अकबर को ब्याह दे, (2) संतोषजनक कर प्रस्तुत करे, (3) अपने किसी विशिष्ट सम्बन्धी को भेजे ताकि यदि शर्तें बादशाह को पसन्द न हों तो वह बादशाह के पास बतौर बन्धक तब तक रहेगा, जब तक कि किला खाली न कर दिया जाये और (4) यह प्रान्त राजा बीरबल को जागीर में दिया जा चुका है और राजा गोविन्द चन्द उन्हें काफी धन प्रदान करें, जिससे उन्हें इसे छोड़ देने के लिये राजी किया जा सकें।

राजा ने उपरोक्त सभी शर्तों को मान लिया और उसने कुली खां को पांच मन सोना और कुछ अन्य बहुमूल्य वस्तुएं दीं। तत्पश्चात् मिर्ज़ा के साथ लड़ने को मुग़ल सेना पंजाब की ओर बढ़ी। इस प्रकार अकबर की सेना किले को न जीत सकी। ऐसा लगता है कि घेराबन्दी के उठ जाने के बाद जयचन्द को छोड़ दिया गया और उसने वापस कांगड़ा आकर अपने राजपाठ को सम्भाल लिया। उसके बाद से वह अकबर को बराबर कर भेजता रहा।

चूंकि अकबर ने बीरबल को कांगड़ा की जागीर देने के लिये कह दिया था। इसलिये उसने टोडरमल को इस उद्देश्य से कांगड़ा भेजा कि वह वहां पहाड़ी राजाओं से कुछ इलाका ले कर बीरबल के लिये जागीर का प्रबन्ध करे। इस के लिये टोडरमल ने साठ गांव कांगड़ा से लिये और रिहलू का इलाका चम्बा से लिया।

1581 ई० में अकबर स्वयं अपने सौतेले भाई **मुहम्मद हकीम** के विद्रोह को दबाने के लिये सेना ले कर काबुल की ओर बढ़ा। रास्ते में जाते समय वह होशियारपुर के निकट **दसूहा** (Dasuha) नामक स्थान पर भी ठहरा। वहां उसे पता चला कि कांगड़ा के देवी मन्दिर में भक्तजन अपनी जिह्वा काट कर चढ़ाते हैं और इसे देखने हेतु वह नगरकोट की ओर चल पड़ा किन्तु रास्ते से ही लौट आया क्योंकि रात में जब वह बिस्तर पर लेटा हुआ था, तो एक प्रेतात्मा ने उपस्थित हो कर उसे वहां जाने से मना कर दिया। यहां कांगड़ा का राजा जयचन्द्र अकबर को मिलने आया था। यहीं अकबर को पता चला कि कांगड़ा चार बातों के लिये प्रसिद्ध है-

1. नये नाकों को बनाना, 2. नेत्र चिकित्सा 3. सुगंधित बासमती चावल और 4. मज़बूत किला।

कहते हैं कि अकबर ज्वालामुखी मन्दिर में दुर्गा के दर्शन के लिये गया था। देवी की परीक्षा लेने के लिये अकबर ने अग्नि को शान्त करने के लिये एक कूहल बनवाई पर उसे इस काम में सफलता नहीं मिली तथा ज्योति ज्यों-की-त्यों जलती रहीं। यह देख कर सम्राट् अकबर देवी का उपासक बन गया और उसने सोने का एक छत्र के नमित्त चढ़ाया।

राजा जय चन्द की मृत्यु 1585 ई० में हो गई और उसके पश्चात् **विधि चन्द** कांगड़ा की गद्दी पर बैठा। मुग़ल के आधिपत्य से पहाड़ी राजाओं के भीतर एक असन्तोष की लहर बहुत दिनों से चली आ रही थी। विधि चन्द ने इस लाभ उठाया तथा उन को संगठित करके और उनका नेतृत्व करके मुग़ल शासन के विरुद्ध 1588-89 ई० में विद्रोह दिया। अकबर ने इस विद्रोह को दबाने के लिये अपने दूध-भाई **जैन खां कोका** (Zian Khan Koka) को एक सेना दे कर कांगड़ा की ओर भेजा। वह पठानकोट की ओर से कांगड़ा की ओर बढ़ा और सतलुज तक बढ़ता गया। पठानकोट और सतलुज के बीच वाले भाग के सभी राजाओं ने अकबर की प्रभुसत्ता को मान लिया तथा तेरह राजाओं मुग़ल दरबार में जा कर सम्राट् के प्रति अपनी वफादारी व्यक्त की। इन राजाओं में कांगड़ा के विधि चन्द, जसवां अनिरुद्ध तथा बिलासपुर के राजा भी थे। अकबर ने इन सभी राजाओं का मान रखा और उन के राज्य उन को लौटा परन्तु विधि चन्द ने अपने पुत्र त्रिलोक चन्द को अकबर के दरबार में ही रखा। मुग़ल दरबार में राजाओं के पुत्रों को र की प्रथा अकबर ने ही चलाई थी, ताकि वे विद्रोह न कर सकें।

1594-95 ई० में पहाड़ी राजाओं ने अकबर के विरुद्ध पुनः विद्रोह किया। इस बार इस विद्रोह का नेतृ **जसरोटा** (Jasrota) के राजा ने किया। इसमें कांगड़ा के राजा **विधि चन्द** तथा नूरपुर के राजा **बासु** (Beasu) ने नहीं लिया। सम्भवतः वह उस समय दिल्ली में था। कांगड़ा की रानी ने, जिसका पुत्र दिल्ली के मुग़ल दरबार में अपने दो दूतों को उपहार सहित सेनाध्यक्ष के पास भेजा था।

जहांगीर और कांगड़ा (Jahangir and Kangra)- राजा विधि चन्द के बाद उस का सुपुत्र **त्रिलोक चन्द** 16 ई० में गद्दी पर बैठा। राजा त्रिलोक चन्द ने अपने नाम से सिक्के निकालने शुरू कर दिए। जहांगीर जो स्वयं भी 16 ई० में दिल्ली की गद्दी पर बैठा था, त्रिलोक चन्द के इस व्यवहार से क्रोधित हो उठा। उसे दण्डित करने के बहाने ढूं लगा। बादशाह ने सेना भेजी।

कहते हैं कि जब जहांगीर गद्दी पर बैठा तो पर्वतीय राजा उस को बधाई देने के लिये दिल्ली गये। इन में कां का राजा त्रिलोक चन्द भी था। जहांगीर ने सभी राजाओं का मान किया परन्तु उस ने गुप्त रूप से आदेश दिया कि त्रि चन्द को पकड़ कर बन्दी बना लिया जाए। जब राजा को पता चला तो वह अपने दो-तीन साथियों सहित वहां से निकला, जब वे बहुत दूर निकल गये तो जहांगीर को उनके भागने का पता चला। उस ने एक टोली को राजा का करने के लिये भेजा। सैनिक टोली की उनसे आनन्दपुर के निकट कीरतपुर में मुठभेड़ हो गई, जिसमें राजा त्रिलोक लड़ते-लड़ते मारा गया। सम्भवतः यह घटना 1612 ई० में घटी थी।

1612 ई० में हरि चन्द द्वितीय राजा बना। उस समय उसकी आयु 4 वर्ष थी। नगरकोट का दुर्ग, जिसे दिल्ली सम्राट अकबर महान भी नहीं जीत सका था, जहांगीर की आंखों में खटकता रहा और वह उसे जीत कर इस महान का सेहरा अपने सिर पर बांधना चाहता था। 1615 ई० में जब हरिचन्द की आयु सात वर्ष की थी, जहांगीर ने पंजाब निज़ाम मुर्तजा खां को कांगड़ा पर अधिकार करने का आदेश दिया और माउ (नूरपूर) के राजा वासु के पुत्र सूरजमल को उस की सहायता के लिये भेजा। सूरजमल दिल से कांगड़ा की पराजय नहीं चाहता था। वह चाहता था मुग़ल कांगड़ा तथा नूरपूर की सीमा से बाहर रहें। मुर्तजा खां के नेतृत्व में जब शाही सेनाओं ने कांगड़ा दुर्ग को घेरा विजय नज़दीक थी तो सूरजमल ने मुर्तजा खां से झगड़ा कर लिया तथा उसने दूसरी ओर गुप्त रूप से मिल कर इस को असफल करवा दिया। सूरजमल के इस व्यवहार से रुष्ट होकर सूरजमल को वापिस बुला लिया गया। उसने जाकर मार्च 1616 में राजकुमार खुर्रम से भेंट की और स्वयं को निर्दोष सिद्ध करने में सफल हुआ। इसी वर्ष मुर्तजा की मृत्यु हो गई, जिससे किले पर मुग़लों का अधिकार न हो सका।

सितम्बर 1617 में राजकुमार खुर्रम (शाहजहां) की सिफारिश पर जहांगीर ने पुन: सूरजमल को कांगड़ा किला पर अधिकार करने के लिए भेजा। उस की सहायता के लिये साथ में **मुहम्मद तकी** को भेजा गया। जब वह सेना ले कर वापस पहाड़ों में पहुंचा, उस ने मुहम्मद तकी के साथ झगड़ा कर लिया और उस के विरुद्ध खुर्रम (शाहजहां) को लिखा जिसके फलस्वरूप तकी को वापस बुला लिया गया। इसके पश्चात् सूरजमल ने कुछ सैनिकों को सेना से निकाल दिया और स्वयं सम्राट् के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। साथ ही उसने तलहटियों में मुगल इलाके पर छापे मार कर लूट-मार करनी आरम्भ कर दी। इस विद्रोह का पता जहांगीर को अहमदाबाद में लगा तो उस ने वहीं से राजा **विक्रमजीत** (सुन्दर दास) के नेतृत्व में एक भारी सेना दे कर सूरजमल का विद्रोह दबाने तथा कांगड़ा के दुर्ग पर अधिकार करने के लिये भेजा। सूरजमल की हार हुई और वह वहां से चम्बा की ओर भाग गया, जहां उस की 1619 में मृत्यु हो गई। इस के बाद मुगल सेनाओं ने **5 सितम्बर 1619** में कांगड़ा दुर्ग पर घेरा डाल लिया। घिरी हुई सेनाओं ने बड़ी वीरता से मुकाबला किया परन्तु खाद्य साम्रगी के न रहने और भूखमरी के कारण उन को एक वर्ष दो मास के पश्चात् 16 नवम्बर 1620 को भारी सेना के आगे झुकना पड़ा। इस प्रकार किला मुग़लों के हाथ में आ गया। विक्रमजीत ने किले में प्रवेश कर वहां की धन-दौलत पर अधिकार कर के उसे सम्राट् के पास भेज दिया और किले में नवाब अली खां को किलेदार के तौर पर नियुक्त कर दिया। जब यह समाचार लाहौर में जहांगीर को मिला तो वह बहुत प्रसन्न हुआ।

1622 के आरम्भ में जहांगीर स्वयं कांगड़ा आया और प्रान्त के प्राकृतिक सौन्दर्य से मुग्ध हो कर उसने एक राजप्रासाद के निर्माण के लिये आदेश दिया। उस प्रासाद की नींव तो रख दी गई परन्तु यह पूर्ण न हो सका। जहांगीर ने किले में एक द्वार भी बनवाया था और उस पर किला-विजय की तिथि भी अंकित करवाई थी। इसी द्वार का नाम **जहांगीरी दरवाज़ा** रखा गया। 1786 में जब महाराजा संसार चन्द ने इस पर पुन: अधिकार कर लिया तो उस ने पत्थर पर खुदे इस लेख को निकलवा दिया और उस पत्थर को किल के गोदाम में रखवा दिया। वहां से 1837 में इसे राजकुमार नौनिहाल सिंह लाहौर ले गया।

दुर्ग पर अधिकार करने के पश्चात् मुग़लों ने कांगड़ा क्षेत्र को अपने राज्य में मिला लिया और केवल राजगीर तालुका हरि चन्द को परवरिश के रूप में दे दी। इस प्रकार बचे-खुचे कांगड़ा राज्य की राजधानी 1620 के बाद **राजगीर** में ही स्थापित हो गई। मुग़लों से हार कर भी हरि चन्द ने उनके आधिपत्य को नहीं स्वीकार किया। छापामार युद्ध से स्वतन्त्रता की लड़ाई लड़ते हुए अन्त में उसने अपने प्राणों की आहुति दे दी। कहते हैं कि जहांगीर ने उसे अपने जीते जी ही मरवा दिया था। इस प्रकार राजा हरि चन्द की मृत्यु 1627 से पहले ही हो गई होगी।

शाहजहां, औरंगज़ेब और कांगड़ा (Shah Jahan, Aurangzeb and Kangra)- हरि चन्द की कोई सन्तान नहीं थी। अत: उसके बाद राजा धर्मचन्द के छोटे भाई कल्याण चन्द के वंश में कोई पांचवीं छठी पीढ़ी का एक राजकुमार **चन्द्रभान चन्द** 1627 में गद्दी पर बैठा। उस समय शाहजहां भी मुग़ल सम्राट् बन चुका था। चन्द्रभान चन्द ने मुग़लों के विरुद्ध युद्ध-अभियान जारी रखा। महाराणा प्रताप की भांति वह वन-वन भटकता रहा पर उसने हिम्मत न हारी और डट कर लड़ता रहा। उस ने छापे मार कर नगरकोट में स्थित मुग़ल सेनाओं को परेशान कर दिया और मुग़ल क्षेत्र में लूट-मार करता रहा। बरसों के छापामार युद्ध के बाद औरंगज़ेब के राज्यकाल में दिल्ली से इस विद्रोह को दबाने के लिये एक भारी सेना भेजी गई। 1660 में चन्द्र भान चन्द पकड़ा गया और दिल्ली में उसे बन्दी बना कर रख लिया। चन्द्र भान चन्द की मृत्यु दिल्ली में ही हुई। स्वतंत्रता के लिए लड़ते हुये उसने बार-बार मुग़ल सेना के छक्के छुड़ाये। कांगड़ा के लोग आज भी बड़े गर्व के साथ उसे याद करते हैं।

चन्द्र भान चन्द के बाद उसका पुत्र **विजय राम चन्द** 1660 ई० में रा[illegible] बना। उसने ब्यास नदी के दायें किनारे पर विजयपुर (बीजापुर) नामक नगर बसाया, जो कई पीढ़ियों तक इसके राजाओं की राजधानी बनी रही। कहते हैं कि चन्द्र भान की मृत्यु के बाद औरंगजेब ने विजय राम चन्द को दिल्ली बुलाया था परन्तु वह नहीं गया। इस पर औरंगज़ेब ने उसके छोटे भाई **उदयराम चन्द** को राजा बना दिया। उसे राजगीर की जागीर भी दे दी और साथ ही उसे **नादौन, पालम, माहाल सराय, जयसुख** और **मालहार** के तालुके वापिस कर दिए। विजय राम चन्द की 1687 ई० में मृत्यु हो गई। उस की कोई संतान नहीं थी। अत: उसके पश्चात् उसका भाई **उदय राम चन्द** राजा बना, जो केवल 3 वर्ष ही शासन कर सका क्योंकि 1690 ई० में उसकी मृत्यु हो गई।

1690 ई० में उदय राम चन्द का पुत्र **भीम चन्द** राजा बना। उसके समय में जम्मू के राजा ने उस पर आक्रमण किया। उसने गुरु गोबिन्द सिंह से मिल कर आक्रमणकारियों को मार भगाया। उदय राम चन्द के औरंगजेब से अच्छे संबंध रहे और वह कई बार मुग़ल दरबार में भी जाता रहा। इससे प्रसन्न हो कर बादशाह ने उसे दीवान की पदवी दी। उस ने बीजापुर में एक मन्दिर भी बनवाया। उस के भाई कृपाल चन्द ने 1660 ई० में भवारना नामक एक बहुत लम्बी कूहल बनवाई, जिससे वह लोगों में बहुत लोकप्रिय हुआ। 1697 ई० में भीम चन्द की मृत्यु हो गई।

भीम चन्द की मृत्यु के बाद उसका बेटा **आलम चन्द** गद्दी पर बैठा। उसने सुजानपुर के समीप **आलमपुर** (Alampur) नामक नगर की स्थापना की, जहाँ पर वह स्वयं रहने लगा। 1700 ई० में उसकी मृत्यु हो गई। आलम चन्द की मृत्यु के बाद उसका बेटा **हमीर चन्द** गद्दी पर बैठा। उसने वर्तमान हमीरपुर के समीप एक किले का निर्माण करवाया। औरंगज़ेब के काल में कांगड़ा का किला मुग़लों के अधिकार में था तथा वहाँ मुग़ल गवर्नर नियुक्त थे। हमीर चन्द ने लगभग 47 वर्ष तक शासन किया। इस लम्बे काल में कांगड़ा पर **सैय्यद हुसैन खां, हुसन अब्दुला खान पठान, नवाब सैय्यद खालिल उल्लाह खां** तथा **नवाब सैफ अली खां** गवर्नर नियुक्त रहे। 1740 ई० में हमीर चन्द की मृत्यु हो गई। उसकी मृत्यु के बाद उसका बेटा **अभय चन्द** गद्दी पर बैठा। उसने आलमपुर में एक ठाकुरवाड़ा तथा सुजानपुर की पहाड़ी पर **अभयमनपुर** नामक किला बनवाया। 1750 ई० में उसकी मृत्यु हो गई।

अभय चन्द का कोई पुत्र नहीं था। अत: 1750 ई० में उस का चाचा **गंभीर चन्द** गद्दी पर बैठा। वह केवल एक वर्ष तक ही शासन कर सका, क्योंकि 1751 में उसकी मृत्यु हो गई। उसके ग्यारह पुत्र थे। वे सभी बड़े उद्दंड तथा क्रूर स्वभाव के थे। राज्य के अफसर तथा प्रजा दोनों ही उनसे असन्तुष्ट थे। इसलिये लोग हमीर चन्द और गंभीर चन्द के सब से छोटे भाई **शंकर चन्द के पुत्र घमंड चन्द** को गद्दी पर बैठा देखना चाहते थे। बुद्धिमान होने के कारण वह फौज की सदारत करने के योग्य रहा और पर्याप्त लोकप्रियता और ख्याति प्राप्त कर चुका था। उचित अवसर देख कर उसने सेना के बड़े-बड़े अधिकारियों को अपने साथ मिला लिया और जब गंभीर चन्द के पुत्र ब्यास नदी के तट पर अपने पिता के अंतिम संस्कार में लगे हुए थे तब वह कुछ सिपाहियों को साथ लेकर वहां आ धमका और उन्हें बन्दी बना लिया। यह घटना 1751 ई० की है। इसके पश्चात् वह कांगड़ा का राजा बना।

अहमदशाह और कांगड़ा
(Ahmad Shah and Kangra)

अठारहवीं शताब्दी के मध्य में जब घमंड चन्द ने गद्दी सम्भाली तो भारतीय इतिहास में एक बड़ा भारी राजनैतिक परिवर्तन देखने में आ रहा था। औरंगज़ेब के बाद के सभी मुग़ल शासक विलासिता में पड़ गये थे। अत: वे विशाल मुग़ल साम्राज्य को सम्भालने में असमर्थ नज़र आने लगे। दूसरी ओर दक्षिण की ओर से मराठे अपना राज्य विस्तार कर रहे थे। उत्तर पश्चिम की ओर से नादिरशाह और उसके बाद अहमद शाह अब्दाली ने आक्रमण आरम्भ कर दिये थे। पंजाब में एक नई शक्ति गुरु गोबिन्द सिंह के नेतृत्व में उभर रही थी, जिसने पंजाब के आने वाले इतिहास में एक सौ वर्ष तक बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी। गुरु गोबिन्द सिंह सिखों के दसवें तथा अन्तिम गुरु थे, जिन्होंने 1699 ई० में बिलासपुर में स्थित आनन्दपुर में 80,000 व्यक्तियों की एक सभा बुलाकर खालसा पंथ की स्थापना की थी। यह संगठन अठारहवीं शताब्दी के मध्य तक कई दलों में बंट गया था। परन्तु 1748 ई. में सरबत खालसा की सभा में सिखों के 11 दलों की सेना को मिलाकर दल खालसा की स्थापना की गई जिसका मुखिया जस्सा सिंह आहलूवालिया को बनाया गया। इस दल ने पंजाब के मुग़ल सूबेदारों तथा अहमद शाह अब्दाली के विरुद्ध अपनी छापामार गतिविधियां बहुत तेज कर दीं। इस प्रकार पंजाब में अराजकता सी फैली हुई थी।

पहाड़ी राजाओं ने भी इस स्थिति से लाभ उठाने का प्रयत्न किया। 1752 में जब **अहमद शाह अब्दाली** ने तीसरी बार पंजाब पर आक्रमण किया तो उसने तत्कालीन मुग़ल सम्राट् अहमद शाह से पंजाब तथा पहाड़ी इलाके अपने आधिपत्य में ले कर वहां पर अपने सूबेदार नियुक्त कर दिये। उसके भारत से वापिस जाने के बाद सिक्ख उसके प्रतिनिधियों के विरुद्ध उठ खड़े हुये।

घमंड चन्द ने भी इस का लाभ उठाया और गद्दी पर बैठते ही उस ने एक शक्तिशाली सैन्य दल का निर्माण किया। इस दल में उसने राजपूत, अफगान और रूहेलों को भर्ती किया। इस दल की सहायता से उस ने कटोच राज्य के समस्त पुराने इलाकों पर अधिकार कर लिया केवल कांगड़ा का किला बचा रहा जो मुग़ल नवाब सईफ अली खां के अधिकार में रहा। इसके पशचात् उसने पहाड़ी राजाओं के साथ युद्ध छेड़ कर **गुलेर, जसवां, सिब्बा** और दातारपुर के राजाओं को हरा कर अपने अधीन कर लिया। उसने **कुटलैहड़** पर आक्रमण करके उसके आधे भाग को अपने राज्य में मिला लिया। फिर कुल्लू के राजा **टेढ़ी सिंह** के विरुद्ध, 1755 ई० में युद्ध की घोषणा करके उस पर भी अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया। इस प्रकार कुछ ही दिनों में वह काफी शक्तिशाली हो गया और चारों ओर उस की विजय का डंका बज उठा।

अहमद शाह अब्दाली जब दिसम्बर 1757 ई० में चौथी बार सिक्खों से पंजाब छीनने के लिये आया तो बल के द्वारा उद्देश्य-की प्राप्ति न होते देख उसने मेल-मिलाप का रास्ता अपनाया। घमंड चन्द की वीरता एवं बुद्धिमानी की प्रसिद्धि उस के कानों तक भी पहुंची थी। अतएव उसने आते ही 1759 ई० में **घमंड चन्द** को जालन्धर दोआब तथा सतलुज तथा रावी के बीच वाले पहाड़ी इलाके का अपना प्रतिनिधि नियुक्त किया और उसके कन्धों पर शासन भार देकर 1758 ई० में ही वापिस चला गया।

अब्दाली का प्रतिनिधि बनने का लाभ उठा कर घमण्ड चन्द ने जालन्धर के ग्यारह पहाड़ी राजाओं पर अपनी प्रभुता स्थापित कर ली और वह उनसे कर वसूल करने लगा। इसी बीच चम्बा के राजा की मृत्यु हो गयी। उसका पुत्र छोटी आयु का था। अत: घमंड चन्द ने **पठियार** के किले तथा **पालम** के तालुके पर धावा बोलकर उसे अपने अधिकार में कर लिया। चम्बा की राजमाता जम्मू के राजा की पुत्री थी। अत: हार न मानकर उसने राजा रणजीत देव की सेना की सहायता से पुन: अपने खोये हुये इलाके को प्राप्त कर लिया। इस प्रकार राजा घमंड चन्द को एक विधवा रानी के हाथों पहली पराजय हुई।

अहमद शाह अब्दाली ने 1769 ई० में अपना नौवां अर्थात् अंतिम आक्रमण किया। जब वह वापिस लौटा तो सिक्खों की विभिन्न मिसलों या सैन्य दलों ने अपने गुप्त स्थानों से बाहर निकल कर छापा मार कर पंजाब के विभिन्न स्थानों पर अधिकार जमाना आरम्भ कर दिया। **जस्सा सिंह रामगढ़िया** ने उत्तर की ओर छापे मारने आरम्भ किये। उसने रामरोउनी के किले पर अधिकार कर लिया और वहां एक बहुत बड़ा बाज़ार बनवाया। घमंड चन्द तथा दूसरे पहाड़ी राजाओं ने भी उसकी बढ़ती शक्ति को देख कर उसकी प्रभुसत्ता को मान लिया और उसने **कांगड़ा, नूरपूर, चम्बा, बसौली** तथा **मण्डी** से कर वसूल करना शुरू किया परन्तु जयसिंह की यह प्रभुसत्ता बहुत दिनों तक न रह सकी, क्योंकि उसका जयसिंह कन्हैया से बटाला से प्राप्त हुये कर के बंटवारे पर झगड़ा हो गया। इस लड़ाई में जस्सा सिंह की हार हुई और उसे हिसार में जा कर शरण लेनी पड़ी। इस झगड़े की स्थिति से लाभ उठा कर पहाड़ी राजाओं ने पुन: अपनी-अपनी स्वतन्त्रता प्राप्त कर ली।

घमंड चन्द ने 1761 ई० में ब्यास नदी के किनारे पर **टीहरा सुजानपुर** नामक नगर बसाया और इसे अपनी राजधानी बनाया। यहां पर उसने कई सुन्दर भवन बनवाए। इससे पहले उस के पूर्वज राजा अभय चन्द ने यहां पर सन् 1748 में एक दुर्ग बनवाया था। अपनी प्रजा में भी बहुत लोकप्रिय था। अत: प्रजा ने दिल खोल कर उसका समर्थन किया। शासन कार्य में वह पूरा दक्ष था। 24 वर्षों में राज्य को पूरी तरह संगठित करके उस ने कई मज़बूत दुर्गों का निर्माण करवाया। कांगड़ा की विभिन्न कलाओं-खासकर चित्रकला को उस से काफी संरक्षण मिला।

मध्यकाल में कांगड़ा का विभाजन

(Partition of Kangra in Medieval Period)

मध्यकाल में प्राचीन त्रिगर्त (वर्तमान कांगड़ा) जनपद का विभाजन हो गया तथा यह राज्य कई छोटी-छोटी रियासतों में बंट गया जिनमें जसवां, सिब्बा, दातारपुर, नूरपुर, बंगाहल आदि प्रमुख हैं। कांगड़ा या त्रिगर्त से निकली इन रियासतों का वर्णन इस प्रकार है :-

1. जसवां (Jaswan)—1070 ई. में सुरक्षा के कारणों से त्रिगर्त के राजा अपनी राजधानी को जालन्धर से बदल कर नगरकोट ले गये और पूरी एक शताब्दी तक संगठित रूप से शासन करते रहे। 1170 ई. में कांगड़ा के राजा पद्म

चन्द के छोटे भाई पूर्व चन्द ने अपने भाई से अलग होकर होशियारपुर की जसवां दून में अपने लिये एक पृथक् राज्य की स्थापना की। होशियारपुर का जिला प्राचीन काल में त्रिगर्त राज्य का एक ही भाग था। उसने अपनी राजधानी राजपुर में स्थापित की और कटोच से बदल कर वे जसवाल कहलाने लगे। पूर्व चन्द से ले कर अन्तिम राजा उमेद सिंह (1854) ई. तक 26 राजा हुये।

जसवां राज्य के प्रारम्भिक इतिहास पर कोई सन्तोषजनक जानकारी नहीं मिलती। ऐसा लगता है कि चौदहवीं शताब्दी से पूर्व तक तो यह कांगड़ा राज्य का सामंत रहा होगा। उस के पश्चात् जब-जब मुग़लों ने कांगड़ा पर अधिकार किया तो जसवां भी उन के अधीन रहा।

1588-89 ई. में जब कांगड़ा के राजा विधि चन्द ने मुगल सम्राट् अकबर के विरुद्ध विद्रोह किया तो जसवां के राजा **अनिरुद्ध चन्द** ने भी विधि चन्द का साथ दिया था परन्तु इस विद्रोह को दबा दिया गया और विद्रोहियों को क्षमा कर दिया गया। 1594-95 ई. में पुनः विद्रोह हुआ। जब विद्रोहियों को मुग़ल सेना के आने के समाचार मिले तो उन्होंने अधीनता स्वीकार कर ली और 1759 ई. तक शान्तिपूर्वक राज्य करते रहे। इस समय तक मुग़ल साम्राज्य क्षीण हो चुका था। उधर पंजाब में सिक्ख ज़ोर पकड़ रहे थे और जसवां भी उन के आधिपत्य में आ गया। 1786 ई. में कांगड़ा के राजा संसार चन्द ने नगरकोट के किले पर अधिकार कर के स्वयं को पहाड़ों का एक शक्तिशाली राजा बनने में सफलता प्राप्त की। संसार चन्द जसवां और दातारपुर पर भी अपना प्रभुत्व जमाने लगा। अतः मजबूर हो कर जसवां ने भी अन्य पहाड़ी राजाओं के साथ मिल कर संसार चन्द को कांगड़ा के किले में शरण लेने के लिये बाध्य किया। इस समय जसवां का राजा **उमेद सिंह** था। रणजीत सिंह ने जब 1809 ई. में कांगड़ा से गोरखों को भगाया तो जसवां भी उसके आधिपत्य में आया। 1815 ई. की शरद ऋतु में रणजीत सिंह ने स्यालकोट में अपनी सभी सेनाओं, अधिकारियों तथा अपने अधीन सभी राजाओं को बुलाया। इस बुलावे में नूरपुर और जसवां के राजा नहीं आ सके। अतः रणजीत सिंह ने उन पर भारी जुर्माना लगाया। यह दण्ड इतना भारी था कि जिसे देने में राजा उमेद सिंह असमर्थ था। इसलिये उसने अपने राज्य को छोड़ दिया और 12,000 रुपये की जागीर स्वीकार की। इस प्रकार से साढ़े छः सौ वर्ष पुराने राज्य का अन्त हुआ।

2. गुलेर (Guler)—गुलेर भी कांगड़ा राज्य से निकली एक मुख्य रियासत है। इसकी स्थापना के बारे में एक कथा चर्चित है। कहते हैं कि एक दिन कांगड़ा का राजा **हरि चन्द** हरसर की ओर शिकार करने गया। जंगल में एक जंगली सूअर का पीछा करते हुए वह अपने साथियों से अलग हो कर बहुत दूर निकल गया और अपने घोड़े सहित एक कुएं में गिर गया। एक राहगीर ने कुएं के पास जा कर राजा को बाहर निकाल दिया। दूसरी तरफ राजा के गायब हो जाने पर उस की तलाश की गई लेकिन उस का कोई पता न चला। अन्त में उस के छोटे भाई धर्म चन्द ने कांगड़ा के सिंहासन को सम्भाल लिया और हरि चन्द की रानियां सती हो गईं। कई दिनों के बाद जब राजा हरि चन्द सही सलामत घर लौट आया तो उसके भाई कर्म चन्द ने राज गद्दी छोड़नी चाही परन्तु इस पर राजा सहमत न हुआ। इसलिये छोटा भाई कांगड़ा की गद्दी पर बना रहा और बड़े भाई हरि चन्द ने गुलेर में जा कर नये राज्य की स्थापना **1405** ई. में की। हरी चन्द ने बाण गंगा के किनारे पहाड़ी पर उस ने **हरिपुर** नाम से एक किला बनवाया। बाद में उसने हरिपुर नाम से नगर बसाया, जिसे उस ने अपनी राजधानी बनाया। उस समय गुलेर को **ग्वालेर** कहते थे। इस प्रकार 1405 ई. में गुलेर कांगड़ा की ही एक शाखा के रूप में स्थापित हुआ था। परिवार में हरि चन्द सब से बड़ा था। इसलिए कटोच राजपूतों की नज़रों में गुलेर को अधिक सम्मान प्राप्त हुआ। कांगड़ा राज्य के मुकाबले गुलेर एक छोटा राज्य होने पर भी यह एक प्रतिष्ठावान राज्य रहा।

हरि चन्द के बाद गुलेर के 1540 ई. तक लगभग 14 राजा हुए। 1540 ई. में **राम चन्द गुलेर** की गद्दी पर बैठा। इसके शासन काल में भी कोई विशेष घटना नहीं घटी। केवल इतना उल्लेख अवश्य मिलता है कि शेरशाह सूरी के छोटे पुत्र **इस्लाम शाह सूरी** (1545-53) ने शिवालिक की पहाड़ियों में प्रवेश करके वहां के बहुत से छोटे-छोटे राज्यों को अपने अधीन किया। इनमें एक नाम गुलेर के राजा **परस राम** का भी आता है, जो सम्भवतः राम चन्द्र ही था।

चम्बा के इतिहास से पता चलता है कि चम्बा के राजा **प्रताप सिंह वर्मा** (1559-86) और कांगड़ा के राजा के बीच युद्ध हुआ था। कांगड़ा के राजा का नाम **चन्द्र पाल** था। इस अभियान में चम्बा की सेनाओं ने गुलेर राज्य की राजधानी पर भी अधिकार जमा लिया। स्पष्ट है कि यह लड़ाई गुलेर के कटोच वंशीय राजा राम चन्द के राज्य काल में हुई होगी।

राम चन्द के बाद उस का पुत्र **जगदीश चन्द** 1570 ई. में गद्दी पर बैठा। 1572 ई. में पहाड़ी राजाओं ने अकबर के विरुद्ध विद्रोह किया। इस विद्रोह को दबाने के लिये मुग़ल सेनाओं ने नूरपुर में प्रवेश किया। इस विद्रोह का नेतृत्व कांगड़ा का राजा **विधि चन्द** कर रहा था। उस के पिता जय चन्द को मुग़लों ने गुलेर के राजा राम चन्द की सहायता से पकड़ कर दिल्ली में बन्दी बना रखा था। कांगड़ा और गुलेर के बीच बहुत दिनों से इसी बात पर झगड़ा चला आ रहा था। इसके अतिरिक्त कांगड़ा के राजा धर्म चन्द तथा उस के पुत्र जय चन्द ने गुलेर के राजा राम चन्द के एक प्रसिद्ध कोटला किले पर अधिकार कर रखा था। सम्भवत: इसी बदले की भावना से गुलेर के राजा जगदीश चन्द ने कांगड़ा के राजा जय चन्द को पकड़वा कर मुग़लों के हवाले कर दिया था। जब 1572 ई. में मुग़ल सेना हुसैन कुली खां के नेतृत्व में नूरपुर से कोटला की ओर बढ़ी तो उस ने कोटला किले पर अधिकार कर के गुलेर के राजा जगदीश चन्द को वापस कर दिया। पहाड़ी राजाओं ने 1588 ई. और 1594-95 ई. में दो बार और मुग़ल साम्राज्य के विरुद्ध विद्रोह किये। विद्रोहियों के नामों में गुलेर का नाम नहीं मिलता है, क्योंकि वे मुग़लों के निष्ठावान रहे।

जगदीश चन्द के पश्चात् उस का पुत्र **विजय चन्द** (Vijay Chand) 1605 ई. में गुलेर का राजा बना। वह केवल पाँच वर्ष तक ही राज्य कर सका। इसके शासन काल में कोई विशेष घटना नहीं घटी। विजय चन्द के बाद उस का पुत्र राजा बना। वह कुछ ही दिनों तक राज्य कर सका और उसकी भी मृत्यु हो गई। अत: उसके पश्चात् विजय चन्द के भाई **रूप चन्द** ने गद्दी संभाली। यह राजा गुलेर के सभी राजाओं में बहुत योग्य और प्रसिद्ध हुआ। इसने मुग़लों के साथ बहुत अच्छे संबंध स्थापित किए। मुग़ल सम्राट् जहांगीर ने जब 1620 ई. में दोबारा नगरकोट पर आक्रमण किया था तो रूप चन्द ने भी मुग़ल सेना की कांगड़ा अभियान पर सहायता की। 16 नवम्बर 1620 ई. को उन्होंने कांगड़ा के किले पर अधिकार कर लिया। जहांगीर ने प्रसन्न होकर रूप चन्द को 1621 ई. में एक हाथी तथा एक घोड़ा उपहार स्वरूप भेंट किया। 1623-24 ई. में भी रूप चन्द ने नूरपुर के राजा जगत सिंह के विद्रोह को दबाने में मुग़ल सेना की सहायता की। मुग़ल सम्राट जहांगीर का समर्थन प्राप्त होने के कारण उस ने पड़ौसी राजाओं के साथ बाईस लड़ाइयाँ लड़ीं। जहांगीर ने उसे दक्षिण की ओर एक सैनिक अभियान में भी भेजा जहां उसने बड़ी कुशलता से उस कार्य को निभाया। इससे प्रसन्न हो कर जहांगीर ने उसे अच्छी खिल्लत तथा '**बहादुर**' की उपाधि से सम्मानित किया।

जहांगीर के पश्चात् शाहजहां ने रूप चन्द को 1634 ई. में गढ़वाल पर चढ़ाई करने के लिए भेजा। उसने गढ़वाल तक का आधा रास्ता भी तय कर लिया था। इस सेना में राजपूत और मुग़ल दोनों थे। मुग़ल सेना का संचालन **निज़ाबत** खां के हाथ में था और राजपूत सेना का नेतृत्व राजा रूप चन्द के हाथ में था। निजाबत खां लड़ाई से भाग गया और उसके साथ ही मुग़ल सेना भाग गई। लेकिन रूप चन्द इस लड़ाई में मारा गया। बहुत से मुग़ल सिपाहियों को फतेहशाह की सेना ने पकड़ लिया और उनके नाक काट कर दिल्ली वापिस भेज दिया।

रूप चन्द के बाद **मान सिंह** (1635-61) राजा बना। राजा मान सिंह के भी मुग़ल सम्राटों के साथ मित्रतापूर्ण संबंध रहे। इसके समय से गुलेर के राजाओं के नाम के साथ चन्द्र के नाम पर '**सिंह**' लिखना आरम्भ किया। कहा जाता है कि शाहजहां ने मान चन्द को **शेरे अफगान** की उपाधि दी और '**सिंह**' कह कर सम्बोधित किया और एक घोड़ा उपहार स्वरूप दिया।

शाहजहां ने मान सिंह को पहले अफगानिस्तान की ओर सेना देकर भेजा फिर वहां से बुलाकर (1641-42) ई. में उसे और शाहज़ादा मुराद बख़्श को नूरपुर के राजा जगत सिंह के विद्रोह को दबाने के लिये भेजा। मानसिंह भी यह चाहता ही था क्योंकि उन की आपस में भी अनबन थी। जब जगत सिंह ने आत्म समर्पण कर दिया तो शाहजहां ने उसे दिल्ली बुलाया, परन्तु वह यह कह कर नहीं आया कि उसे पहाड़ी रियासतों का फौजदार बनाया जाये। कहते हैं कि मान सिंह ने **मण्डी, सुकेत, बुशैहर और कुल्लू** पर भी आक्रमण करके अपना प्रभुत्व जमाया। मानसिंह के नूरपुर और कांगड़ा के राजाओं के साथ भी झगड़े रहे। औरंगज़ेब के साथ मिल कर उसने 1647 में कंधार पर आक्रमण किया था, जिससे प्रसन्न होकर बादशाह ने उसे शेरे अफगान की उपाधि दी थी। 1661 ई. में उसने अपने पुत्र के हक में राजपाठ छोड़ दिया और स्वयं बनारस में रहने लगा और वहीं उसकी मृत्यु हो गई।

मान सिंह के बाद उसके पुत्र **बिक्रम सिंह** (Bikram Singh) ने 1661 ई. में शासन की बागडोर सम्भाली। वह बड़ा हृष्ट-पुष्ट था। औरंगज़ेब ने उसके शौर्य से प्रभावित होकर उसे मुग़ल सेना में अढ़ाई हज़ार का मनसब प्रदान किया और बहुमूल्य खिल्लतें प्रदान कीं। साथ ही उसे कांगड़ा के पर्वतीय भाग का सूबेदार बनाया। वह औरंगज़ेब के लिए उत्तर-पश्चिमी प्रान्त में लड़ा। पेशावर के समीप एक लड़ाई में वह घायल हो गया और चौंतड़ा नामक स्थान पर उसकी 1675 ई. में मृत्यु हो गई।

1675 ई. में विक्रम सिंह के पुत्र **राज सिंह** ने गद्दी सम्भाली। उस समय लाहौर में **ख्वाज़ा रिज़ा बेग** (Khwaja Riza Beg) सूबेदार था। वह कभी-कभी पहाड़ों में भीतर घुस कर छापे मारा करता था। इससे तंग आकर गुलेर के राजा राज सिंह ने अपने साथ चम्बा के राजा **चतर सिंह**, बसौली के **धीरज पाल** और जम्मू के **कृपाल सिंह** को साथ मिलाकर उसे परास्त किया ओर अपने-अपने इलाकों को उससे वापस छुड़ा लिया। राज सिंह ने कांगड़ा के किलेदार हुसैन खां, अलफ खां और मियां खां के विरुद्ध मण्डी और कहलूर की सहायता की थी।

1695 ई. में राज सिंह की मृत्यु हो गई और उस का पुत्र **दलीप सिंह** (Dalip Singh) राजा बना। उस समय उस की आयु केवल सात वर्ष की थी। अतः चम्बा के राजा **उदय सिंह** ने उसके संरक्षण का भार अपने ऊपर लिया। राजा को बच्चा समझ कर जम्मू और बसौली के राजाओं ने गुलेर पर आक्रमण किया। चम्बा के राजा उदय सिंह ने सिब्बा, कहलूर और मण्डी की सहायता से आक्रमणकारियों को मार भगाया। कांगड़ा के किलेदार हुसैन खां ने भी गुलेर पर आक्रमण किया परन्तु उसे भी भगा दिया गया।

गोवर्धन सिंह 1730 ई. में राजा बना। गद्दी पर बैठते ही उसका जालन्धर के सूबेदार **अदीना** बेग से एक घोड़े के कारण झगड़ा हो गया। दोनों में युद्ध हुआ। अदीना बेग की हार हुई और घोड़ा गोवर्धन सिंह के पास ही रहा। उसके राज्य काल में अन्य कोई विशेष घटना नहीं घटी। तीस वर्ष राज्य करने के पश्चात् उसकी 1760 ई. में मृत्यु हो गई।

गोवर्धन सिंह के बाद राजा **प्रकाश सिंह** 1760 ई. में गुलेर सिंहासन पर बैठा। जब वह राजा बना तो मुग़ल साम्राज्य की शक्ति नादिरशाह और अहमद शाह अब्दाली के आक्रमणों से क्षीण होती जा रही थी। पंजाब तथा कांगड़ा के पहाड़ी इलाके मुग़लों के हाथों से निकल अहमदशाह अब्दाली के हाथों में 1751 ई. में आ गये थे। 1758 ई. में अहमद शाह अब्दाली ने कांगड़ा के राजा घमंड चन्द को जालन्धर दोआब तथा कांगड़ा के पहाड़ी इलाके का सूबेदार नियुक्त किया, जिसके फलस्वरूप गुलेर भी उसके अधीन हो गया। कुछ काल के लिये सिक्खों ने भी अधिकार जमाया परन्तु 1786 ई. में जब कांगड़ा के राजा संसार चन्द ने सारे पहाड़ी प्रदेश पर अपना प्रभुत्व जमा लिया तो गुलेर भी उसके आधिपत्य में आ गया। इन सभी परिस्थितियों के बावजूद भी गुलेर अपनी अखंडता बनाए रखने में सफल रहा। एक घटना ज़रूर घटी। घटना इस प्रकार थी कि राजा प्रकाश सिंह के मन्त्री **ध्यान सिंह** ने सन् 1785 ई. में राजा से कुछ मत-भेद हो जाने के कारण गुलेर छोड़ दिया और कोटला के दुर्ग पर अपना अधिकार कर लिया और स्वतंत्र होकर शासन करने लगा। ध्यान सिंह इतना शक्तिशाली हो गया कि संसार चन्द अपने चरमोत्कर्ष में भी कोटला के किले को जीत न सका तथा कई वर्षों तक ध्यान सिंह का ही इस पर आधिपत्य रहा।

भूप सिंह 1790 ई. में गुलेर का राजा बना। वह गुलेर का अन्तिम राजा था। इस समय तक कांगड़ा के राजा संसार चन्द ने अपना प्रभुत्व जमा लिया था, जिसके फलस्वरूप गुलेर भी उसके आधिपत्य में आ गया। संसार चन्द की यह नीति सब राजाओं को अखरने लगी। अतः उन्होंने एक संघ बनाया, जिसमें भूप सिंह ने भी सक्रिय रूप से भाग लिया। इस संघ ने **कहलूर** के गोरखों को कांगड़ा पर आक्रमण करने के लिए आमंत्रित किया। 1806 ई. में गोरखों ने कांगड़ा में प्रवेश किया और 1809 ई. तक उन्होंने कांगड़ा के राजाओं तथा प्रजा को खूब लूटा और अपने घर-बार छोड़ने पर बाध्य किया। उनके अत्याचारों से तंग आकर संसार चन्द ने गोरखों को भगाने के लिए रणजीत सिंह से सहायता मांगी। रणजीत सिंह ने भारी सेना लेकर कांगड़ा में प्रवेश किया और गोरखों को नगरकोट से खदेड़ कर सतलुज के दूसरी ओर भगा दिया तथा स्वयं नगरकोट के किले पर अधिकार कर लिया। इसके साथ ही रणजीत सिंह ने कांगड़ा की पहाड़ी रियासतों पर भी धीरे-धीरे अधिकार कर लिया और गुलेर भी उसके नियन्त्रण में आ गया।

कुछ समय तक तो भूप सिंह तथा रणजीत सिंह के संबंध अच्छे रहे और रणजीत सिंह भूप सिंह को '**बाबा**' कह कर पुकारता रहा। परन्तु 1811 ई. में रणजीत सिंह की नीयत बदल गई और उसी वर्ष उसने देसा सिंह को सेना देकर कोटला के किले पर आक्रमण करने के लिये भेजा। उसने केवल एक सप्ताह के घेराव के बाद ही उसे अपने अधिकार में कर लिया। सन् 1813 ई. में रणजीत सिंह ने पुन: गुलेर पर अधिकार करने के लिए एक और योजना बनाई। उसने राजा भूप सिंह से पठानों के विरुद्ध सहायता मांगी और कहा कि वह एक बड़ी भारी सेना भर्ती करके भेज दें। जब गुलेर खाली हो गया, तब उस ने भूप सिंह को लाहौर बुला लिया। लाहौर में कुछ दिन ठहरने के पश्चात् जब वह वापस आने की तैयारी करने लगा तो उसे रणजीत सिंह के संकेत पर बन्दी बना लिया गया। उस से कहा गया कि उसे तभी वापस जाने दिया जायेगा, जब वह अपने राज्य को छोड़ने के लिये सहमत हो जाये और अपने पालन-पोषण के लिये जागीर स्वीकार करे। इसके साथ साथ भूप सिंह को उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना रणजीत सिंह ने देसा सिंह को दस हज़ार सिख सेना के साथ गुलेर पर अधिकार करने के लिऐ भेज दिया। उसने राजा की अनुपस्थिति में गुलेर को निर्विरोध खालसा राज्य में मिला दिया। उसके बाद रणजीत सिंह ने भूप सिंह को छोड़ दिया और जागीर के अतिरिक्त बीस हज़ार रुपया वार्षिक उसके जीवन यापन के लिये लगा दिया। 1820 ई. में भूप सिंह की मृत्यु हो गई। इसी के साथ ही गुलेर राज्य का भी अन्त हो गया। भूप सिंह के बाद उस का पुत्र शमशेर सिंह उस का उत्तराधिकारी बना।

3. सिब्बा (Sibba)—सिब्बा राज्य की नींव गुलेर के संस्थापक राजा **हरि चन्द** से चार पीढ़ी बाद के राजा के छोटे भाई **सिवर्ण चन्द** या **स्वर्ण चन्द** ने 1450 ई. में रखी थी। उसने हरिपुर से आकर ब्यास नदी को पार करके दक्षिणी तट पर सिब्बा नाम से एक नगर बसाया और इसी नाम से स्वतंत्र राज्य की स्थापना की। सिब्बा राज्य के इतिहास के बारे में बहुत कम जानकारी मिलती है। सम्भवत: उस की राजनीतिक स्थिति ऐसी ही रही होगी जैसी कि कांगड़ा के अन्य राज्यों की। सिवर्ण चन्द (1450-60) से लेकर सिब्बा के अन्तिम राजा तक कुल 26 राजा हुये।

सिब्बा का उल्लेख जहांगीर ने अपने संस्मरण में किया है। जनवरी 1622 ई. में जब वह कांगड़ा के किले को देखने जा रहा था तो उसके साथ नूरजहां बेगम और बेगम का पिता इतिमाद-ओद-दौला भी थे। मार्ग में वह सिब्बा के **बहलून** नामक गांव में ठहरे। ऐसा प्रतीत होता है कि मुग़ल काल में सिब्बा के राजा अपने राज्य की राजनीतिक लड़ाई को पृथक् रूप से सुरक्षित रखने में सफल रहे थे। परन्तु संसार चन्द और बाद में सिक्खों के आक्रमण से वह भी न बच सके। 1758 ई. में अहमद शाह अब्दाली ने कांगड़ा के राजा घमंड चन्द को जालन्धर दोआब तथा कांगड़ा की पहाड़ी रियासतों का सूबेदार बना दिया। इसके फलस्वरूप सिब्बा राज्य भी उसके आधिपत्य में ज़रूर आया होगा। **1774 ई.** में घमंड चन्द की मृत्यु हो गई तब से लेकर 1786 ई. के समय में अन्य पहाड़ी राज्यों की भान्ति सिब्बा राज्य भी जस्सा सिंह रामगढ़िया और जय सिंह कन्हैया की लूट-खसूट से न बच सका। 1786 ई. में लेकर 1806 ई. तक कांगड़ा के राजा संसार चन्द ने भी इसे दबाये रखा। गोरखों ने जब 1806 ई. में कांगड़ा पर आक्रमण किया तो वहां एक प्रकार से अराजकता फैली हुई थी और इसी का लाभ उठाकर गुलेर के राजा भूप सिंह ने सिब्बा पर 1808 ई. में चढ़ाई कर के इसे अपने राज्य में मिला दिया परन्तु 1809 ई. में जब रणजीत सिंह ने कांगड़ा से गोरखों को भगा दिया तो अन्य पहाड़ी राज्यों के साथ-साथ सिब्बा पर भी उस का अधिकार हो गया और दस वर्ष बाद उस ने इसे गुलेर से अलग कर दिया। 1830 ई. में रणजीत सिंह ने इसे पूर्ण रूप से राजा गोबिन्द सिंह को लौटा दिया। बाद में रियासत को दो जागीरों में बांट दिया। राजा गोबिन्द सिंह को 20,000 रुपये की जागीर और दैवी सिंह को 5,000 रुपये की जागीर दी गई। राजा गोविन्द सिंह की मृत्यु 1845 ई. में हो गई।

4. दातारपुर (Datarpur)—दातारपुर की स्थापना सिब्बा राज्य के वंशज एक राजकुमार ने की थी। सिब्बा के संस्थापक सिवर्ण चन्द से सात पीढ़ी बाद राजा **मानक चन्द** हुये। उसके तीन पुत्र **नरमूधा चन्द, राम चन्द** और **लखूघ चन्द** थे। तीसरे पुत्र लखूघ चन्द ने राज प्रासाद से निकल कर सिब्बा के डाडा नामक स्थान पर रहना आरम्भ किया। उसी के वंश में तीसरी पीढ़ी में **एक दातार** चन्द हुआ, जिसने दातारपुर राज्य की स्थापना **1550 ई.** के लगभग की। कहते हैं कि उस समय दातारपुर का क्षेत्र जिसे आजकल दूसहा तहसील से मानते हैं, एक स्थानीय राणा के अधीन था। उक्त राणा ने अपने एक विरोधी के विरुद्ध दातारचन्द से सहायता मांगी। दातार चन्द ने उसके शत्रु को हरा कर बाद में स्वयं ही राणा

के राज्य पर अधिकार कर लिया और वहां का राजा बन बैठा। उसने एक नया नगर बसा कर उसे अपनी राजधानी बनाया। उसी के नाम पर उसके स्थापित किये राज्य का नाम भी दातारपुर पड़ा।

इस राज्य के कुल ग्यारह राजा हुये।

1. दातार चन्द, 2. गणेश चन्द, 3. चतर चन्द, 4. उदय चन्द, 5. पृथ्वी चन्द, 6. जय चन्द, 7. दलेल चन्द, 8. उगर चन्द, 9. नन्द चन्द, 10. गोविन्द चन्द और 11. जगत चन्द 1818

दातारपुर के बारे में बहुत कम ऐतिहासिक जानकारी मिलती है। इसकी राजनीतिक स्थिति कांगड़ा के अन्य राज्यों जैसी थी अर्थात् दातारपुर भी मुग़लों, अहमदशाह अब्दाली, घमंड चन्द और 1786 ई. से 1806 ई. तक संसार चन्द के अधीन रहा होगा। 1806 ई. में राजा गोविन्द चन्द ने भी गोरखों को बुलाने में साथ दिया था। 1809 ई. में जब रणजीत सिंह ने गोरखों को कांगड़ा से भगा दिया तो यह राज्य भी उस के आधिपत्य में आ गया। 1818 ई. में गोविन्द चन्द की मृत्यु हो गई और जगत चन्द राजा बना। रणजीत सिंह ने उसे तब तक बन्दी बनाये रखा, जब तक वह अपने राज्य को छोड़ने के लिये सहमत न हुआ। बाद में इस के बदले में उसे जागीर दे दी गई। 1848 ई. में उसने भी कटोच राजाओं के साथ अंग्रेज़ों के विरुद्ध भाग लिया। अत: उसे भी उन के ही साथ कुमाऊं भेज दिया गया और दातारपुर को अंग्रेज़ी राज्य में मिला दिया गया।

5. नूरपुर (Nurpur)–कांगड़ा घाटी के **कटोच** राज्य से निकली नूरपुर एक प्रमुख शाखा थी। प्राचीन काल में यह क्षेत्र **औदुम्बर-गण-राज्य** का एक भाग था। दक्षिण में पठानकोट तथा गुरदासपुर के इलाके इस गणराज्य के अन्तर्गत आते थे। नूरपुर का प्राचीन नाम **धमेड़ी** (Dhameri) था। इस क्षेत्र में औदुम्बरों की मुद्रायें भी मिली हैं। ऐसा लगता है कि ये क्षेत्र ईसा पूर्व की दूसरी शताब्दी में मलिन्द (भारतीय यूनानी मनीन्द्र) लगभग 115-90 ई. पू. के अधीन रहे और ईसा की पहली शताब्दी में कुषाणों के आधिपत्य में रहे होंगे। बाद में गुप्त सम्राटों ने चौथी शताब्दी में इस गण राज्य को अपने विशाल साम्राज्य में मिला दिया। इस के पश्चात् यह क्षेत्र पहले गुप्त राज्य के और फिर सातवीं-8वीं शताब्दी के अन्त तक कन्नौज और यशोवर्मन के अधीन रहा। जब कन्नौज की शक्ति क्षीण हो गई तो यह भाग जालन्धर त्रिगर्त के आधिपत्य में आ गया। मुसलमान यात्री आबू रिहान (अलब्रूनी (1017-31) ने इस क्षेत्र के बारे में उल्लेख किया है। उस ने लिखा है कि ''दाहमला'' जालन्धर राज्य की राजधानी है। ग्यारहवीं शताब्दी के आरम्भ में जब महमूद गजनवी के आक्रमण शुरू हुये तो उस का प्रकोप जालन्धर पर भी पड़ा। 1070 ई. में जब महमूद गज़नवी के वंशज इब्राहिम (1058-89) ने जालन्धर पर आक्रमण किया और वहां के राजा को जालन्धर छोड़कर अपनी राजधानी नगरकोट ले जानी पड़ी। उसी समय इब्राहिम ने दुर्गम जंगलों को पार करके धमेड़ी में पहाड़ी पर स्थित दामल या धमेड़ी दुर्ग पर अधिकार कर लिया। इस अवधि में धमेड़ी का क्षेत्र जालन्धर-त्रिगर्त के हाथ से भी निकल गया होगा परन्तु जब स्वयं इब्राहिम का अधिकार धमेड़ी पर से समाप्त हो गया तो वहां के एक स्थानीय राजा ने स्वयं को वहां का राजा घोषित कर दिया और वहां लम्बे समय तक शासन करता रहा।

एलैग्जेंडर कनिंघम नूरपुर राज्य की स्थापना का काल सन् 1095 ई. को ही मानता है। वंशावली के आधार पर नूरपुर में कुल 30 राजाओं ने राज्य किया। नूरपुर के सिंहासन पर अन्तिम राजा **वीर सिंह** बैठा और उसकी मृत्यु सन् **1846 ई.** में हुई।

दिल्ली के तोमर वंश के राजा के छोटे भाई **जेठपाल** (Jhetpal) ने सन् 1095 ई. नूरपुर की स्थापना की। जीत पाल ने उत्तर की ओर प्रस्थान करके अपने लिये नये स्थान की खोज में अपना अभियान आरम्भ किया और भेंट नामक स्थान पर ब्यास नदी को पार कर वह पहाड़ों की तलहटी की ओर आगे बढ़ता गया। उस समय पठानकोट पर वहां के किसी स्थानीय राजा का प्रभुत्व रहा होगा और जीत पाल ने उसे परास्त करके वहां पर अपना अधिकार जमा लिया तथा नूरपुर राज्य की नींव डाली। ऐसा अनुमान किया जाता है कि पहले पहल इस राज्य का नाम **पठानकोट** था और इसी लिये वहां के शासक पठानिया कहलाये। कालान्तर में इसी राजा के उत्तराधिकारी अपनी राजधानी को पठानकोट से बदल कर पहाड़ों में ले गये।

जश पाल 1313 ई. में राजा बना तथा उसने 1353 ई. तक शासन किया। इस प्रकार वहां दिल्ली के सुलतान अलाऊद्दीन खलजी (1295-1316) और मुहम्मद बिन तुग़लक (1325-51) का समकालीन था। 1337-38 ई. में मुहम्मद बिन तुग़लक ने नगरकोट पर आक्रमण किया। इस आक्रमण के प्रकोप से यह राज्य भी अछूता नहीं रहा और कांगड़ा की तरह दिल्ली के सुलतान मुहम्मद बिन तुग़लक के अधीन आ गया। जश पाल के बाद उसका पुत्र **कैलाश पाल** 1353 ई. में राजा बना और 1397 ई. तक शासन करता रहा। कैलाश पाल ने एक तातार खां नामक मुसलमान योद्धा को बुरी तरह परास्त किया जो सम्भवतः मुहम्मद तुग़लक का पंजाब का सूबेदार था। यह घटना 1342 ई. से पहले घटी होगी क्योंकि तातार खां की मृत्यु 1342 ई. में गरवड़ों के साथ लड़ते हुए हुई थी।

कैलाश पाल के बाद **नाग पाल** (1397-1438) राजा बना। नाग पाल के काल में भारत पर तैमूर का आक्रमण 1398-99 ई. में हुआ। उसने 10 दिसम्बर 1398 को दिल्ली नगर में प्रवेश किया और पहली जनवरी 1399 को वहां से हरिद्वार और फिर शिवालिक की पहाड़ियों के आंचल से होता हुआ वापस लौट गया। नगरकोट तक तो वह प्रवेश न कर सका परन्तु वह **बजवाड़ा, दसूआ, पठानकोट, नूरपुर** होता हुआ और **शाहपुर-कण्डी** के पास रावी को पार कर के **लखनपुर, जसरोटा, साम्बा** होता हुआ **जम्मू** की ओर चला गया। नागपाल के बाद पृथ्वी पाल 1438 ई. से 1473 ई. तक राजा रहा। इसके शासन काल में कोई विशेष घटना नहीं हुई। उसके बाद **भील पाल** 1473 ई. में राजा बना। वह दिल्ली के सुलतान सिकन्दर लोधी (1488-1516 ई.) का समकालीन था। भील पाल ने सुलतान सिकन्दर लोधी की कई लड़ाईयों में सहायता की, जिससे प्रसन्न होकर सुलतान ने खिल्लत के तौर पर कुछ इलाका उसे दे दिया।

भक्त मल ने 1513 ई. से लेकर 1558 ई. तक शासन किया। उसने भी अपने पिता के समान पहले लोधी सुलतानों से अच्छे सम्बन्ध बनाये रखे। परन्तु जब पंजाब पर बाबर का 1526 ई. में अधिकार हो गया तो यह राज्य भी उस के प्रभुत्व में आ गया। 1540 ई. में शेरशाह सूरी ने हुमायूँ को भगा कर दिल्ली पर अधिकार कर लिया। भक्त मल ने फिर से अपनी निष्ठा सूर सुलतानों से जोड़ दी। शेरशाह सूरी के बाद जब उस का पुत्र इस्लाम शाह (1545-53) जिसे सलीम शाह भी कहते हैं, सिंहासन पर बैठा तो उसने **कोट** तथा **नूरपूर** के बीच में **मनकोट** नामक स्थान पर एक किला बनवाया, जो राजा भक्त मल के शासन काल में बनाया गया।

1555 ई. में जब हुमायूँ एक भारी सेना लेकर ईरान से वापस लौटा तो उस की लड़ाई सरहिन्द के स्थान पर पंजाब के विद्रोही सूबेदार सिकन्दर सूर से हुई। सिकन्दर सूर की पराजय हुई और वह नूरपूर की शिवालिक पहाड़ियों की ओर भाग गया। अकबर ने उस का पीछा नूरपुर धमेड़ी तक किया परन्तु उसने भीतरी पहाड़ियों में जा कर शरण ली। 1557 में सिकन्दर सूर ने इन पहाड़ियों से निकल कर पंजाब के मैदानी भाग पर छापे मारने आरम्भ किये। अकबर ने उसका पीछा किया परन्तु उसने पठानकोट और नूरपुर के बीच स्थित मनकोट के किले में जा पर शरण ली। नूरपुर के राजा भक्त मल ने भी उसकी सहायता की। मुग़ल सेना ने आठ मास तक किले का घेराव किया। अन्त में सिकन्दर सूर ने हथियार डाल दिये और वह बंगाल की ओर चला गया। भक्त मल पकड़ा गया और लाहौर लाया गया। वहां पर बैरम खां ने उसका वध कर दिया।

भक्त मल के बाद उस का **भाई तख्त मल** 1558-80, जिसे **पहाड़ी मल या बिहारी मल** भी कहते थे, गद्दी पर बैठा। अपने भाई की हालत को देख कर उस ने मुग़लों से संबंध अच्छे बनाये रखना ही उचित समझा। उसने यह अनुभव कर लिया कि पठानकोट में राजधानी रखने से सदा आक्रमण का भय रहता था। इसलिये उसने अपनी राजधानी को पठानकोट से धमेड़ी, जिस का बाद में नूरपुर नाम पड़ा ले जाने का निश्चय किया परन्तु अपनी इस योजना को कार्यान्वित करने से पूर्व ही उसकी मृत्यु 1580 ई. में हो गई।

अपने पिता तख्त चन्द की मृत्यु के बाद 1580 ई. में **वसु देव** गद्दी पर बैठा। अकबरनामा में इस राजा का उल्लेख राजा वासु के नाम से मिलता है। उसमें राजा वासु को माओ तथा पठानकोट का ज़मींदार कहा गया है। उसने राजा बनते ही अपने पिता की योजना को पूरा किया और वह अपनी राजधानी को पठानकोट से उठाकर धमेड़ी ले गया। बाद में इस धमेड़ी का नाम उसके पुत्र जगत सिंह ने 1622 ई. में जहांगीर जिस का नाम नूर-उ-दीन था, के सम्मान में **नूरपुर** रख दिया। राजा वसु

ने अपने राज्य काल में माओ कोट में एक दुर्ग भी बनवाया था। प्रारम्भ में तो राजा वसु ने मुगल सम्राट् अकबर से अच्छे संबंध बनाये रखे परन्तु 1585 ई. में उसके संबंध अकबर से बिगड़ गये। अत: सन् 1585 ई. में राजा वसु ने विद्रोह कर दिया। इस विद्रोह को दबाने के लिये अकबर ने 1585 ई. में **हसन बेग शेख उमेरी** को सेना देकर उसे दबाने के लिये भेजा। जब मुगल सेना पठानकोट पहुंची तो राजा वसु चौंक पड़ा। राजा टोडर मल ने कठिन स्थिति देख कर उसे पत्र लिखा, जिसे पाकर वह क्षमा याचना के लिये मुगल दरबार में पहुंचा। 1589-90 में पहाड़ के तेरह राजाओं ने मिलकर मुग़ल साम्राज्य के विरुद्ध विद्रोह खड़ा किया। इस विद्रोह का नेतृत्व कांगड़ा के राजा **विधि चन्द** (1585-1605) ने किया और राजा वसु ने भी इस विद्रोह में प्रमुख भाग निभाया। अकबर ने एक भारी सेना लेकर **जैन खां कोका** को इस विद्रोह को दबाने के लिये भेजा, जिस ने बड़ी सख्ती से विद्रोह को दबा दिया और इन पहाड़ी राजाओं को अपने साथ मुग़ल दरबार तक चलने के लिये विवश किया।

1594-95 ई. में राजा वसु फिर स्थानीय राजाओं के साथ मिल कर अकबर के आदेशों का उल्लंघन करने लगा। अकबर ने उसके इस व्यवहार से रुष्ट होकर पठानकोट और उसके निकटवर्ती भाग लेकर **मिर्ज़ा रुस्तम कन्धारी** को दे दिया और **मिर्ज़ा रुस्तम कन्धारी** तथा **आसफ खां** को उसे दबाने के लिये भेजा परन्तु ये दोनों मिल कर यह काम नहीं कर सकते थे। इसलिये मिर्ज़ा रुस्तम को वापस बुला लिया गया और अजमेर के राजा मान सिंह के पुत्र जगत सिंह को उसके स्थान पर भेज दिया। उसने माओकोट के गढ़, जिस में राजा वसु ने शरण ले रखी थी, को घेर लिया। दो मास के घेराव के बाद राजा वसु ने हार मान ली और उसे क्षमा कर दिया गया, पठानकोट का भाग उससे लेकर मुगल क्षेत्र में मिला दिया गया। राजा वसु ने 1602-03 ई. में फिर विद्रोह किया। अकबर ने पुन: इस विद्रोह को दबाने के लिए सेना भेजी। सम्भवत: इस बार भी राजा वसु ने माओकोट के दुर्ग में शरण ली। जहांगीर की वसु पर कृपादृष्टि होने के कारण अकबर ने विद्रोह को दबाने के बाद उसे क्षमा कर दिया।

दो वर्ष के बाद ही 1603-04 ई. में राजा वसु ने फिर उचित अवसर देखकर और विद्रोह का झंडा खड़ा कर दिया। इस बार भी पहले की भान्ति उसे दबा दिया गया। अपने बचाव का कोई मार्ग न देखकर वह जहांगीर के लाग लश्कर के साथ सम्राट् से क्षमा लेकर चला आया। इससे पूर्व कि जहांगीर सम्राट् से वसु को क्षमा करने हेतु प्रार्थना करता, अकबर ने वसु को पकड़ने का आदेश दे दिया। जैसे ही इसकी सूचना वसु को मिली वह उचित अवसर पा कर वहां से भाग निकला।

जब राजा वसु के सम्बन्ध अकबर से अच्छे थे तो अकबर ने उस को 1500 का मनसब बनाकर सम्मानित किया। जब जहांगीर सम्राट् बना तो उसने वसु का मनसब 1500 से बढ़ा कर 3500 का कर दिया। वसु के और जहांगीर के सम्बन्ध आपस में अच्छे रहे बल्कि जब जहांगीर के पुत्र खुसरो ने अपने पिता के विरुद्ध विद्रोह किया तो जहांगीर ने खुसरो को पकड़ने के लिये वसु को भी कहा था। खुसरो चिनाव नदी के किनारे सोधरा नामक स्थान पर पकड़ा गया। राजा वसु की विद्रोही प्रवृत्ति को देखकर अकबर ने उसे किसी भी सैनिक अभियान में शामिल नहीं किया परन्तु जब जहांगीर सम्राट् बना तो उसने 1611 ई. में राजा वसु को एक भारी सेना की कमान दे कर मेवाड़ विजय के लिये भेजा और उसका मनसब 4000 का कर दिया। जब वह 1613 ई. में इस अभियान में व्यस्त था तो उसकी राजस्थान स्थित **शाहबाद** के थाना में मृत्यु हो गई।

राजा वसु की मृत्यु के पश्चात् उस का पुत्र **सूरज मल** (1613-18) राजा बना। उसके उपद्रवी स्वभाव के कारण जहांगीर नहीं चाहता था कि वह राजा बने परन्तु राजा वसु के दूसरे पुत्रों में ऐसा योग्य कोई नहीं था, जिसे राजा बनाया जा सके। अत: जहांगीर ने फिर सूरज मल को ही मान्यता दे दी और उसे राजा की उपाधि देकर 2000 का मनसब प्रदान किया।

जहांगीर की आंखों में कांगड़ा का प्रसिद्ध किला कई वर्षों से खटक रहा था। उस समय कांगड़ा का राजा **हरि चन्द द्वितीय** (1612-1626) था। जहांगीर ने 1615 ई. में पंजाब के सूबेदार **शेख फरीद मुर्तज़ा खां** को एक भारी सेना दे कर कांगड़ा के किले पर अधिकार करने के लिये भेजा। साथ में सूरज मल को भी इस अभियान में सेना सहित मुर्तजा खां की सहायता के लिए भेजा। सूरजमल यह नहीं चाहता था कि कांगड़ा गढ़ पर मुग़लों का अधिकार हो जाये। अत: उसने सैनिक योजना में बाधा डालनी आरम्भ की। इसी बीच 1616 ई. में मुर्तजा खां की मृत्यु हो गई और इसके बाद कांगड़ा

का अभियान स्थगित करना पड़ा। इसके पश्चात् सूरज मल को शाहजहां के साथ दक्षिण के अभियान में भेज दिया गया। 1617 ई. में दक्षिण अभियान समाप्त हो गया। जब वह दिल्ली आया तो उसने शाहजहां से बात की कि यदि उसे अनुमति मिले तो वह कांगड़ा के किले पर अधिकार करने के लिए फिर से अभियान करना चाहता है। शाहजहां ने यह बात जहांगीर के सामने रखी। बादशाह ने इसे अपनी अनुमति दे दी। सूरज मल और शाहकुली खां महमूद तकी को सेना देकर कांगड़ा पर आक्रमण के लिये भेज दिया गया। जब सूरज मल कांगड़ा पहुंचा तो उस ने शाह कुली खां महूमद तकी से झगड़ा कर लिया और शाहजहां को लिखा कि महमूद तकी अभियान में बाधा डाल रहा है। इस पर शाहजहां ने तकी को वापस बुला लिया। अब सूरज मल ने सारी कमान अपने हाथ में सम्भाल ली और मुग़लों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। साथ ही तलहटियों के मुग़ल इलाकों पर छापे मार कर लूट मार आरम्भ कर दी। मुग़ल सेना की एक टुकड़ी ने **सय्यद सफी** के नेतृत्व में इसे रोकने का प्रयास किया परन्तु उसे मार भगाया गया। इस बात का पता जब जहांगीर को चला जो उस समय अहमदाबाद में था तो उसने सूरज मल के विद्रोह को दबाने के लिये **सुन्दर दास** राय राईयां (बाद में राजा विक्रमाजीत) को भारी सेना सहित भेजा। जहांगीर ने सूरज मल के भाई जगत सिंह को, जो उस समय बंगाल में था सुन्दर दास की सहायता के लिये भेजा। जब मुग़ल सेना वहां पहुंची तो सूरज मल ने सुन्दर दास को खुश करने का प्रयास किया परन्तु उस की यह चाल न चली। तब उसने माओकोट के किले में शरण ले ली। यहां पर मुग़ल सेना ने किले को घेरा डाल दिया। सूरजमल चुपके से वहां से भाग गया और धौलाधार को पार कर के चम्बा चला गया। कुछ समय के बाद उसकी वहां मृत्यु हो गई।

सूरज मल का भाई जगत सिंह 1619 ई. में गद्दी पर बैठा तथा उसने 1646 तक शासन किया। उस समय वह बंगाल में था। जहांगीर ने उसे वहां से बुलाया और नूरपूर का राजा बना दिया। उसे 1000 पैदल और 500 घुड़सवार रखने के मनसब से सम्मानित किया गया और उपहार में 20,000 रुपये नकद, एक रत्न जड़ित तलवार, एक घोड़ा और एक हाथी भेंट किये। फिर उसे कांगड़ा के किले के अभियान के लिये भेजी हुई सेना की सहायता करने के लिये भेजा। नवम्बर 1620 ई. में किला मुग़ल सेना के हाथ में आ गया। इसके बाद से जगत सिंह ने नूरपुर में ही रहना शुरू कर दिया। 1622 ई. में जहांगीर कांगड़ा गया। वहां से लौटते समय वह धमेड़ी होता हुआ आया। साथ में नूरजहां बेगम भी थी। जब बादशाह वहां पहुंचा तो जगत सिंह ने उसे खुश करने के लिये धमेड़ी नाम को बदल कर नूरुद्दीन जहांगीर के नाम पर नूरपुर रख दिया, जो अब तक चला आ रहा है।

1623 ई. में शाहजहां ने अपने पिता जहांगीर के विरुद्ध विद्रोह किया। शाहजहां के जगत सिंह के साथ अच्छे संबंध थे। अतः शाहजहां ने जगत सिंह से कहा कि वह पहाड़ी रियासतों में गड़बड़ी फैला दे। इसे दबाने के लिए जहांगीर ने सेना भेजी तो जगत सिंह ने माओकोट में शरण ली परन्तु शीघ्र ही हार मान ली। उसके नूरजहां बेगम से भी अच्छे संबंध थे। इसलिये बेगम के कहने पर जहांगीर ने उसे क्षमा कर दिया।

आरम्भ में जगत सिंह के मुग़ल सम्राट् जहांगीर से अच्छे संबंध थे। इससे लाभ उठा कर उसने पहाड़ी रियासतों को दबा कर उन पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर दिया। सब से पहले उस ने बसौली पर अपने डोरे डालने आरम्भ किये। उसने मुग़ल दरबार को बसौली के विरुद्ध उकसाया। इस पर जहांगीर ने बसौली के राजा भूप सिंह को 1614-15 ई. में पकड़ कर दिल्ली में बन्दी रखा। यह देख कर जगत सिंह ने बसौली पर अधिकार कर के वहां अपने अधिकारियों को नियुक्त कर दिया। भूप सिंह लगभग 14 वर्ष तक दिल्ली में रहा। 1626 ई. में जब वह कैद से छूटा तो वह भेष बदल कर आ गया। जगत सिंह ने उचित अवसर देख कर उसे वहां पर मार दिया।

जगत सिंह 12 वर्ष तक चम्बा से भी लड़ता रहा और चम्बा के राजा जनार्दन को हरा कर तथा बाद में धोखे से उसे उसी के महल में 1623 ई. में मार दिया। फिर वह बीस वर्ष तक चम्बा पर भी शासन करता रहा। जगत सिंह के झूठे आरोप लगाने पर शाहजहां ने गुलेर के राजा मानसिंह और सुकेत के राजा श्याम सेन को बन्दी बना दिया। इसके बाद उस का उद्देश्य गुलेर, सुकेत तथा मण्डी के राज्यों को अपने कब्ज़े में करके अपने राज्य को बढ़ाने का था।

1640 ई. में जगत सिंह ने शाहजहां के विरुद्ध बगावत कर दी और जगत सिंह और उसके पुत्र राजरूप तारागढ़ के

किले में जाकर डट गये। मुगल सेनाओं ने जगत सिंह का यहां भी पीछा किया। बड़ा घमासान युद्ध हुआ और आक्रमणकारियों में से बहुत से मारे गये। नूरपुर और तारागढ़ के दुर्ग मुग़लों ने तोड़-फोड़ दिये। अन्त में जगत सिंह और उस के पुत्रों ने शाहजहां से क्षमा मांग ली और बादशाह ने अपने विशाल हृदय का प्रमाण देते हुये जगत सिंह को फिर वहां का राजा बना दिया। मुग़ल सम्राट् ने कई बार जगत सिंह को उत्तर पश्चिम के अभियानों पर भेजा, जिस में उसने कई महत्त्वपूर्ण कार्य कर दिखाये। 1645 ई. में जगत सिंह को बदखशां में उज्बेकों के विरुद्ध एक अभियान में भेजा गया।

इस अभियान से जब वह 1646 ई. में जनवरी मास में वापस आ रहा था तो पेशावर में उसकी मृत्यु हो गई।

शाहजहां को जब जगत सिंह की मृत्यु का पता चला तो उसने जगत सिंह के पुत्र राज **रूप सिंह** को, जो उस समय बदखशां में था, तुरन्त खिल्लत भेजी और उसे 1500 पैदल और 1000 घुड़सवार के मनसब से सम्मानित किया गया। उसे राजा की पदवी प्रदान भी की। उसके सम्बन्ध मुग़ल सम्राटों से अच्छे बने रहे। शाहजहां ने जगत सिंह की मृत्यु के बाद उसे बदखशां के अभियान में भेजी सेना का अध्यक्ष बनाया। दो वर्ष के भीतर ही उस का मनसब 1,500 पैदल और 1000 सवार से 3,000 पैदल और सवार तक बढ़ा लिया। वह मुग़लों के लिये वर्षों तक कन्धार और इरान में लड़ता रहा। 1656 ई. में वह वहां से वापिस दिल्ली आया और शाहजहां ने उसे नूरपूर लौटने की आज्ञा दे दी।

जब शाहजहां के चारों पुत्रों में गद्दी के लिये युद्ध चल रहा था तो राजरूप सिंह ने दारा शिकोह का साथ छोड़ कर औरंगजेब का साथ दिया। जब औरंगजेब बादशाह बना तो उस ने राज रूप को 3,500 हजारी का मनसब प्रदान किया, और दारा शिकोह के पुत्र सुलेमान शिकोह का पीछा करने के लिये सेना देकर गढ़वाल भेजा। 1659 ई. में दारा शिकोह में अजमेर के पास कोकिला पहाड़ी युद्ध में भी राजरूप ने भाग लिया। 1661 ई. में औरंगजेब ने उसे गजनी भेजा, जहां पहुंचने के थोड़े समय बाद ही उसकी मृत्यु हो गई। इस के बाद नूरपुर में राजा **मानधाता** (1661-1700) और **दयाधाता** (1700-1735) राजा रहे।

अपने पिता दयाधाता की मृत्यु के बाद पृथ्वी सिंह गद्दी पर बैठा। इस का दीर्घ शासन इस समय पड़ता है, जब मुग़ल सल्तनत के पतन के समय चारों ओर गड़बड़ी फैली हुई थी। 1752 ई. में मुग़लों ने पंजाब और उसके उत्तरी पहाड़ी इलाके अहमद शाह दुर्रानी के हाथ में दे दिये, परन्तु दुर्रानियों की सत्ता पूरी तरह न जम पाई। जस्सा सिंह रामगढ़िया ने 1770 ई. में बहुत सी पहाड़ी रियासतों को अपने अधिकार में ले लिया था, जिसमें सम्भवत: नूरपुर को अक्सर उन के आक्रमणों का शिकार होना पड़ता था। मुग़ल साम्राज्य के निर्बल पड़ने पर कोटला फिर नूरपुर को मिल गया। 1785 ई. में गुलेर के वज़ीर ध्यान सिंह ने इस पर अधिकार कर स्वयं को स्वतन्त्र घोषत किया और वह तब तक वहां शासन करता रहा, जब तक 1811 ई. में रणजीत सिंह के सेनापति दस्सा सिंह मजीठिया ने अधिकार कर उसे जागीर के रूप में पाया।

(6) बंगाहल (Bangahal)— यह छोटा सा पहाड़ी राज्य ब्यास-रावी नदी जल ग्रहण क्षेत्र में कुल्लू और कांगड़ा के मध्य की घाटी में बसा हुआ था। पर्वतों की भीतरी परत में स्थित इस राज्य की राजधानी वीर बंगाहल में एक बीड़ नामक स्थान पर थी। कहते हैं कि इस राज्य की आधारशिला एक ब्राह्मण ने लगभग 1300 ई. में रखी थी और राज्य का भार सम्भालने पर वह भी राजपूत कहलाया। उसके पश्चात् 20 पीढ़ियों तक उसके उत्तराधिकारी वहां पर शासन करते रहे। यहां का अन्तिम राजा पृथ्वी पाल सिंह था, जिसे कि सन् 1720 ई. में मण्डी के राजा सिद्ध सेन (1684-1727) ने वीर बंगाहल पर अधिकार करने के लिये उसे मरवा दिया।

बंगाहल सीमायें कुल्लू, मण्डी तथा कांगड़ा जैसे शक्तिशाली पड़ौसी राज्यों से लगती थीं। प्रत्येक बलवान पड़ौसी राजा इस छोटे से स्वतन्त्र राज्य को अपने अधिकार में लेना चाहता था। मण्डी के राजा **साहिब सेन** (1534-60) ने द्रंग और **गुमा** पर अधिकार किया। चौहार तथा कोक्सवार पर लाग के राणा ने अधिकार कर लिया परन्तु बाद में कुल्लू के राजा **जगत सिंह** (1607-72) ने उससे छीन कर इस भाग को अपने अधिकार में कर लिया। इस राज्य को सब से अधिक हानि राजा **पृथ्वी पाल** (1710-20) के समय में हुई। **पृथ्वी पाल** मण्डी के राजा **सिद्ध सेन** (1684-1727) का दामाद था परन्तु उसने अपने दामाद पृथ्वी पाल को भी नहीं छोड़ा। राजा सिद्ध सेन ने पृथ्वी पाल को धोखे से मण्डी बुला लिया और उसका यथा योग्य सत्कार करने के पश्चात् उसे दमदमा महल में बन्दी बना दिया और कुछ समय के पश्चात् उसकी

वध करवा दिया। इसके बाद बंगाहल पर अधिकार करने के लिये सेना भेजी गई। पृथ्वी पाल की मां ने कुल्लू के राजा मान सिंह से सहायता मांगी। राजा मान सिंह ने सहायता दी और मण्डी की सेना को पीछे हटना पड़ा परन्तु इसके बदले में राजा मान सिंह ने बंगाहल के एक बड़े इलाके पर अपना अधिकार जमा लिया

पृथ्वी पाल की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र **रघुनाथ पाल** 1720 ई. में गद्दी पर बैठा। रघुनाथ पाल के समय में भी मण्डी के राजा सिद्ध सेन तथा उसके उत्तराधिकारी पुत्र **शमशेर सेन** ने दो बार उस पर आक्रमण किया परन्तु उन्हें दोनों बार पराजय का ही मुंह देखना पड़ा। कुछ समय के पश्चात् जब रघुनाथ पाल किसी कारणवश दिल्ली गया हुआ था तो शमशेर सेन ने उसकी अनुपस्थिति में करनपुर के भाग पर अधिकार कर लिया।

रघुनाथ पाल की 1735 ई. मृत्यु में हो गई और उसके पश्चात् उसका पुत्र **दलेल** पाल राजा बना। उसे भी अपने पुराने शत्रुओं से सीमाओं की रक्षा करनी पड़ी। उसके काल में मण्डी, कहलूर, नालागढ़, गुलेर तथा जसवां की सेनाओं ने बंगाहल पर आक्रमण किया परन्तु उन्हें भी बुरी तरह मुंह की खानी पड़ी। सन् 1749 ई. में दलेल पाल की मृत्यु हो गई। इस के पश्चात् मण्डी तथा कुल्लू ने कुछ भागों पर अपना अधिकार जमा लिया।

सन् 1749 ई. में **मान पाल** गद्दी पर बैठा। वह बंगाहल का अन्तिम राजा था। उस के पास केवल **लन्दोह, पपरोला,** और **राजेर** के क्षेत्र ही रह गये थे। उसकी मृत्यु दिल्ली जाते समय मार्ग में हुई। उसकी मृत्यु का समाचार सुन कर कांगड़ा और गुलेर के राजाओं ने मिल कर बंगाहल पर आक्रमण कर के उस पर अधिकार जमा लिया। इस प्रकार इस राज्य का अन्त सन् 1750 ई. में हो गया।

(7) कुटलैहड़–कुटलैहड़ की रियासत जसवां की पहाड़ियों में फैली हई थी। चौकी और कुटलैहड़ इरा के मुख्य भाग थे। यह रियासत कांगड़ा क्षेत्र की सबसे छोटी रियासत थी। इस राज्य की स्थापना दसवीं या ग्यारवीं शताब्दी में **जस पाल** ने की। उसने कुटलैहड़ और तलहटी के कुछ क्षेत्रों को अपने अधीन करके कोट कुटलैहड़ में रहना आरम्भ किया और बाद में इसे अपनी राजधानी बनाया। जार्ज कारनेक बारनेस के अनुसार जस पाल मुरादाबाद के निकट सबल से आया था परन्तु कुटलैहड़ राज परिवार के निजी कागज़ पत्रों से पता चलता है कि कुटलैहड़ का संस्थापक जस पाल पूना के राजा का पुत्र था और वह अपने लिये नई भूमि की खोज में इस क्षेत्र में आया था। इस वंश ने चालीस पीढ़ियों तक शासन किया। अन्य कांगड़ा क्षेत्र की पहाड़ी रियासतों की तुलना में यहां शान्ति रही।

1758 ई. में अहमद शाह दुर्रानी ने कांगड़ा के राजा घमण्ड चन्द को पहाड़ी क्षेत्र का सूबेदार बनाया तो उसने कुटलैहड़ के चक्की इलाके पर अधिकार कर लिया। संसार चन्द ने सारे कुटलैहड़ क्षेत्र पर कब्ज़ा कर लिया परन्तु जब गोरखों ने कांगड़ा पर आक्रमण किया तो वह क्षेत्र कुटलैहड़ के राजा को वापस मिल गया।

1809 ई. में सिक्खों ने इसे अपने अधीन कर लिया। 1825 ई. में सिक्ख सेना ने कोटवालवाह किले का घेराव किया। राजा नारायण पाल अन्त तक मुकाबला करता रहा। 1845 ई. के पहले सिक्ख युद्ध के समय राजा ने सिक्खों को वहां से निकाल दिया। युद्ध के पश्चात् राजा को जागीर प्रदान की गई।

मध्यकालीन चम्बा
(Chamba of Medieval Period)

1040 ई. में सालवाहन वर्मन् चम्बा का राजा बना। उस समय कश्मीर का शासक **अनन्त देव** था। कश्मीर प्राचीन काल से ही रावी के पार के छोटे-छोटे पहाड़ी राज्यों पर अपना प्रभुत्त्व जताता रहा था। अनन्त देव ने भी पहाड़ी राज्यों पर अपने प्रभुत्व को दोहराया। सालवाहन वर्मन् ने झुकने से इन्कार कर दिया। अनन्त देव ने आक्रमण किया। सालवाहन वर्मन् पकड़ा गया और मार दिया गया। उस के स्थान पर उस के पुत्र **सोम वर्मन्** को राजा बनाया गया।

सोम वर्मन् जो 1060 ई. में राजा बना। इस राजा के दो ताम्रपत्र लेख मिलते हैं। इनमें से एक लेख तो केवल उसी का है, जो उसने सूर्य ग्रहण के समय सम्भवत: 1066 सितम्बर मास में भूमि दान के साथ दिया था। इसमें उसके पिता सालवाहन के भी हस्ताक्षर मिलते हैं। एक दूसरा ताम्रपत्र लेख शिव और विष्णु के मन्दिरों को भूमि दान के साथ दिया

गया है। इसमें सोम वर्मन् तथा उस के भाई अस्तु वर्मन् दोनों के हस्ताक्षर हैं। इस से अस्तु वर्मन् के शासन के पहले तक ग्यारहवें वर्ष अंकित हैं।

अस्तु वर्मन् (लगभग 1080) सोम वर्मन् का भाई था। इस राजा ने अपने राज्य के पांचवें वर्ष में एक और ताम्र पत्र भूमि दान के रूप में दिया था। इस में भी उसने अपने पिता सालवाहन वर्मन का उल्लेख किया है। राजतरंगिणी में लिखा मिलता है कि चम्बा का राजा अस्तु वर्मन् सन 1087-88 ई० में कश्मीर के राजा **कलश** (1063-89) को अपनी वफ़ादारी जताने के लिये गया हुआ था। कश्मीर का राजा अनन्त देव तथा उसका पुत्र कलश चम्बा तथा अन्य पहाड़ी राज्यों पर अपना प्रभुत्व जताते थे। इससे स्पष्ट है कि अनन्त देव के आक्रमण के समय से लेकर चम्बा कश्मीर के अधीन चलता आ रहा था। राजा अस्तु वर्मन् की बहन वापिका का विवाह कलश से हुआ था और बाद में वापिका का पुत्र **हर्ष** कश्मीर का राजा बना।

राजतरंगिणी से पता चलता है कि 1101 ई० में चम्बा के राजा **जयष्ट वर्मन्** ने कश्मीर के राजा हर्ष की लोहार के सुस्सल के विरुद्ध सहायता की थी परन्तु वह हार गया और सुस्सल ने उसे विजयेश्वर मन्दिर में बन्दी बना दिया। उस समय जयष्ट वर्मन चम्बा राज गद्दी का उत्तराधिकारी ही था।

सुस्सल ने हर्ष के पौत्र भिक्षाचर को कश्मीर से खदेड़ दिया और उस ने चम्बा में आकर शरण ली परन्तु उसे वहां पर रोटी कपड़े को प्राप्त करने में भी बड़ा कष्ट उठाना पड़ा। वह चम्बा में लगभग चार-पांच वर्ष तक रहा।

जयष्ट वर्मन् के भाई छला वर्मन ने थोड़े ही समय तक शासन किया। राजतरंगिणी से पता चलता है कि उदय वर्मन् ने अपने सम्बन्धी भिक्षाचर का साथ छोड़कर तत्कालीन कश्मीर के राजा सुस्सल का साथ दिया और वह 1122 ई० में उसके पक्ष में भिक्षाचर से लड़ा। उसने अपनी दो पुत्रियों देवलेखा और तरललेखा का विवाह सुस्सल से किया। सुस्सल की जब 1128 ई० में मृत्यु हुई तो वे दोनों उसी के साथ सती हो गईं। इसके बाद कश्मीर में अव्यवस्था फैल गई और चम्बा ने अपने-आपको कश्मीर के प्रभुत्त्व से मुक्त करवा लिया।

ललित वर्मन् (1143 ई०) नामक राजा के काल के दो शिलालेख मिलते हैं। एक तो देवी-री-कोठी का शिलालेख है दूसरा लेख पांगी के पास सालही में है। इन दोनों लेखों में ललित वर्मन् को महराजधिराज लिखा है। इस से अनुमान लगाया जा सकता है कि बहुत पहले से पांगी आदि के क्षेत्र चम्बा के अधीन हो चुके थे।

विजय वर्मन् (1175 ई०) को वंशावली में बड़ा वीर योद्धा और प्रजा में बड़ा लोकप्रिय लिखा है। इस राजा ने कश्मीर और लद्दाख पर आक्रमण कर के वहां से बहुत सा माल लूट लिया। 1191 में मुहम्मद गौरी ने भारत पर आक्रमण किया। दिल्ली सम्राट् पृथ्वी राज चौहान ने राजपूत सेना का नेतृत्व कर के उसे परास्त किया। वह फिर 1192 ई० में सेना ले कर आया और घग्घर नदी के किनारे उस का पृथ्वी राज से युद्ध हुआ। इस बार मैदान मुहम्मद गौरी के हाथ आया। उसी वर्ष उस ने कन्नौज पर भी अधिकार कर लिया।

विजय वर्मन् के पश्चात् राज वर्मन् ,जीमूत वर्मन्, सारा वर्मन्, वैरासी वर्मन् (1330 ई०), कीर्ति वर्मन्, माणिक्य वर्मन् (1370 ई०), अजीत वर्मन्, भोट वर्मन् (139ई०), मदन वर्मन् , संग्राम वर्मन् (1442 ई०), नरा कन्जर वर्मन् , आनन्द वर्मन् (1475 ई०) राजा हुए। आनन्द वर्मन का विवाह कांगड़ा के राजा की पुत्री से हुआ था। 1512 ई. में उसकी मृत्यु हो गई।

गणेश वर्मन (1512 ई०) नामक राजा ने 1512 ई० से 1559 ई० तक बहुत लम्बे समय तक शासन किया। उस के अन्य लेखों में उस के छः पुत्रों के नाम अंकित मिलते हैं। उन में बड़े पुत्र का नाम प्रताप सिंह लिखा मिलता है और उसे युवराज तथा महाराज पुत्र बताया गया है। यहां चम्बा के राजाओं के इतिहास में 'वर्मन्' के स्थान पर 'सिंह' पहली बार लिखा मिलता है।

गणेश वर्मन् ने परगना मौथीला में एक **गणेशगढ़** नामक किला बनाया, जहां से वह अपने राज्य की सीमाओं की रक्षा कर सके। सम्भवतः उस ने कांगड़ा में मुग़लों के विस्तार को देख कर ऐसा किया होगा। चार सौ वर्षों तक चम्बा मुसलमानों के क्रूर आक्रमण से बचा रहा, परन्तु जब अकबर सिकन्दर शाह सूरी का पीछा करने के लिये पहाड़ों में बहुत भीतर तक प्रवेश कर गया तो 1558 ई० में सिकन्दर शाह ने माओ कोट के किले में शरण ली। नूरपुर के राजा ने उस की सहायता की। मुग़ल सेना ने सिकन्दर शाह को तो परास्त किया ही नूरपुर के राजा को भी पकड़ कर लाहौर ले गये और

उसे वहां मार दिया। इस से चम्बा आदि के राजाओं के मन में भी भय होने लगा। सम्भवत: गणेश वर्मन् ने इस उद्देश्य से गणेश गढ़ का किला बनवाया हो।

चम्बा में एक ताम्रपत्र लेख के अनुसार कुल्लू के राजा बहादुर सिंह ने चम्बा के राजगुरु रामपति को कुल्लू में कुछ भूमि दान के साथ प्रदान किया था। रामपति चम्बा के राजा गणेश वर्मन्, उस के पुत्र राजा प्रताप सिंह और पौत्रों का राज गुरु था। इस ताम्र पत्र लेख से पता चलता है कि इन दो राज्यों के बीच यह वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करने में रामपति का बड़ा सहयोग था, जिससे प्रसन्न होकर बहादुर सिंह ने रामपति को कुल्लू में भूमि दान दी। गणेश वर्मन् की मृत्यु 1559 में हुई परन्तु गणेश वर्मन् ने वृद्ध अवस्था में ही मुग़लों के भय के कारण उसने राजपाठ का कार्य अपने पुत्र प्रताप सिंह को सौंप दिया था। उस प्रकार **प्रताप सिंह** 1559 ई० में राजा बना। वह बड़ा दयालु और धर्म परायण था। वह लक्ष्मी नारायण मन्दिर की मरम्मत तथा कुछ नये मन्दिरों का निर्माण करवाना चाहता था परन्तु धन के अभाव के कारण वह इस कार्य को करने में असमर्थ था। मंत्रियों ने कर लगाने को कहा परन्तु उस ने ऐसा नहीं किया परन्तु हालू गांव के पास तांबे की एक खान निकली, जिससे राजा को बहुत धन लाभ हुआ। राजा के आदेश पर प्राप्त धन से पुराने मन्दिरों की मरम्मत और नये मन्दिरों का निर्माण कराया गया। इस के पश्चात् प्रताप सिंह और कांगड़ा के राजा के बीच लड़ाई छिड़ गई। इस में कांगड़ा के कटोच राजा की पराजय हुई और उस का छोटा भाई **जीत चन्द** लड़ाई में मारा गया। बहुत सा धन, हाथी और घोड़े चम्बा के राजा के हाथ आये और चम्बा के साथ के लगते क्षेत्र चड़ी और घरोह पर चम्बा ने अधिकार कर लिया।

प्रताप सिंह मुग़ल सम्राट् अकबर (1556-1605 ई०) का समकालीन था। उसने अपने राज्य के आरम्भिक काल में ही छोटे-छोटे पहाड़ी राज्यों को अपने अधीन कर लिया था। चम्बा भी इस से अछूता न रह सका। बाद में अकबर ने अपने वित्त मंत्री टोडरमल को इन पहाड़ी राजाओं के पास शाही भू-सम्पत्ति के लिये ज़मीन प्राप्त करने के लिये भेजा। टोडरमल ने चम्बा से रेहलू का क्षेत्र तथा कांगड़ा का चड़ी और घरोह का भाग जो उस ने कांगड़ा से हथिया लिया था, लेकर शाही जागीर में ले लिया। इस प्रकार से चम्बा के नरेश प्रताप सिंह वर्मन् से लेकर चम्बा दो सौ वर्ष तक मुग़ल सम्राटों के अधीन रहा। यह आधिपत्य नाममात्र का था। मुग़ल सम्राट इन पहाड़ी राज्यों के आन्तरिक प्रशासन में कभी भी हस्तक्षेप नहीं करते थे बल्कि मुग़ल दरबारों में उन्हें मान और प्रतिष्ठा मिली।

प्रताप सिंह के बाद उसका पुत्र वीर वाहन राजा था। 1575 ई० में चम्बा के राजगुरु **रामपति** कुछ विरोधी तत्वों के कारण चम्बा छोड़ कर चले गये। इन के कारण प्रताप सिंह का नियंत्रण बड़े-बड़े भू-स्वामियों पर कम हो गया। 1579 ई० में **बलभद्र वर्मन्** ने रामपति को वापिस बुलाया, जिस के कारण उस के हाथ पक्के हो गये और राज्य का कार्यभार उसने अपने हाथों में ले लिया। राज्य की मान मर्यादा को बनाए रखने के लिये उस ने अपने पितामह प्रताप सिंह और पिता वीरवाहन को गद्दी पर रहने दिया तथा शासन का काम अपने हाथों में ले लिया। वीरवाहन की 1589 ई० में मृत्यु हो गई। वह केवल नाममात्र का राजा था। राजसत्ता बलभद्र के हाथ में ही थी।

वीरवाहन की मृत्यु के बाद बल भद्र राजा बना। यह राजा बड़ा उदार और दानी था। इस ने बहुत भूमि और धन ब्राह्मणों को दान में दिया। इस राजा के चम्बा, कांगड़ा और नूरपुर में 42 ताम्रपत्र लेख मिले हैं, जो उस ने ब्राह्मणों को भूमिदान के साथ दिये थे। कहते हैं कि वह रोज़ भूमि दान करता था। राजकोष से धन और अमूल्य रत्न भी मन्दिरों और ब्राह्मणों में बांटता रहा, जिस के कारण कोष खाली हो गया। बलभद्र के बाद उसका पुत्र जनार्दन राजा बना।

जनार्दन के राजा बनने के थोड़े ही समय बाद चम्बा और नूरपुर में लड़ाई छिड़ गई। यह युद्ध बारह वर्ष तक चलता रहा परन्तु यह छुटपुट झड़पों तक ही सीमित रहा। कभी-कभी इन में आपसी सम्बन्ध सामान्य भी होते रहे। किसी बात पर नूरपुर के राजा सूरज मल ने 1618 ई. में मुग़ल सम्राट् के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। मुग़ल सेना विद्रोह को दबाने के लिये नूरपुर पहुंची तो सूरजमल ने पीछे हट कर चम्बा के एक दुर्ग में जा कर शरण ली और वहां से वह चम्बा चला गया। बाद में उस का छोटा भाई माधो सिंह कोटला दुर्ग को छोड़ कर अपने भाई सूरजमल के पास चम्बा चला गया। मुग़ल सेना उन का पीछा करने के लिये चम्बा की ओर चल पड़ी परन्तु मार्ग में ही पता चला कि सूरजमल की मृत्यु हो

गई। अत: सेना का जाना रुक गया और चम्बा के राजा को सन्देश भेजा कि सूरजमल की सारी सम्पत्ति सेना को सौंप दी जाए। जनार्दन ने ऐसा ही किया और माधो सिंह को भी सेना के हवाले कर दिया।

नूरपुर के राजा सूरजमल की मृत्यु के बाद जहांगीर ने **जगत सिंह** को मनसब और राजा की पदवी देकर सम्मानित किया। 1622 ई. में जब जहांगीर सिब्बा होता हुआ कांगड़ा गया और नूरपुर होता हुआ वापिस लौटा तो चम्बा का राजा भी आया था और उस ने भी सम्राट् को उपहार भेंट किये थे। सम्राट् ने राजा चम्बा और उस के भाई दोनों का बड़ा सम्मान किया।

इस के तुरन्त पश्चात् 1623 ई. में नूरपुर और चम्बा के बीच दोबारा युद्ध आरम्भ हो गया। मुग़ल सूबेदार ने जगत सिंह की सहायता की। यह युद्ध ढलोग में हुआ। चम्बा की सेना हार गई। राजा का भाई विशंभर लड़ाई में मारा गया। जगत सिंह ने चम्बा नगर में प्रवेश किया और उसे खूब लूटा तथा महल में घुस गया। उस समय जनार्दन युद्ध मैदान में था। उस ने जनार्दन को संदेश भेजा कि वह महल में वापस आ जाये और शान्ति की संधि कर ले। जनार्दन ने विश्वास कर लिया और उसके पुत्र पृथ्वी सिंह वह जगत सिंह से बात करने महल में आ गया। जगत सिंह ने अवसर पाकर उस पर कटार चलाई और उस की वहीं पर मृत्यु हो गई। यह घटना 1623 ई. की मानी जाती है। जनार्दन की मृत्यु के पश्चात् चम्बा लगभग 20 वर्ष तक नूरपुर के अधीन रहा। जगत सिंह ने इन दिनों चम्बा के क्षेत्र में तारागढ़ का एक दुर्ग भी बनाया था।

जर्नादन का पुत्र पृथ्वी सिंह उस समय चार वर्ष का था जब नुरपूर के राजा जगत सिंह ने 1623 ई० में चंबा पर आक्रमण किया और **जनार्दन** को छल से मार दिया। उस की दासी पृथ्वी सिंह को राजा जगत सिंह और उस के सैनिकों की दृष्टि से बचा कर राजप्रासाद से निकाल कर मण्डी ले गई। उस समय मण्डी में राजा हरिसेन (1604-1636) का शासन था।

1641 ई० में जगत सिंह तथा उस के पुत्र राजरूप ने मुग़ल बादशाह शाहजहाँ के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। शाहजहाँ ने अपने पुत्र मुराद बख्श को सेना लेकर इस विद्रोह को दबाने के लिए भेजा तथा साथ में और भी योग्य व्यक्ति भेजे। ये सभी पठानकोट में एकत्रित हुए। यह अवसर देखकर पृथ्वी सिंह ने मण्डी और सुकेत के राजाओं से धन और सैनिक सहायता मांगी। उस समय मण्डी में राजा **सूरज सेन** (1637-64) था। पृथ्वी सिंह सेना लेकर कुल्लू होता हुआ रोहतांग को पार कर के लाहौल पांगी की ओर बढ़ा। पहले दुराह को अपने अधीन किया। इस के पश्चात् उस ने चम्बा नगर पर आक्रमण कर के राजा जगत सिंह के अधिकारियों को मार भगाया और इस प्रकार 1641 ई० के ग्रीष्मकाल में सत्तारूढ़ हुआ। 1641 ई० के दिसम्बर मास के आरंभिक दिनों में वह पठानकोट गया और वहाँ उसने मुरादबख्श से भेंट की। मुरादबख्श ने शाही आदेशानुसार उसे 16 दिसम्बर 1641 को शाहजहाँ के पास मुग़ल दरबार दिल्ली में उपस्थित किया। मुग़ल दरबार में पृथ्वी सिंह का बहुत मान सम्मान हुआ। उसे खिल्लत में एक जड़ाऊ तलवार, एक हज़ारी का मनसब, राजा की उपाधि और एक घोड़ा मिला।

दूसरी ओर नूरपुर के राजा जगत सिंह ने मुग़ल सम्राट् शाहजहाँ के विरुद्ध विद्रोह कर रखा था और अपने ही राज्य के नूरपुर और तारागढ़ के दुर्गों में बैठकर अपनी सैनिक शक्ति को सुदृढ़ कर रहा था। जगत सिंह स्वयं तो माओ दुर्ग में था और नुरपूर दुर्ग में उस के अधिकारी थे। जब शाही सेना का दबाव माओ दुर्ग पर बढ़ा तो जगत सिंह ने उसको छोड़ कर चम्बा में स्थित तारागढ़ किले में शरण ली। इन्हीं दिनों पृथ्वी सिंह मुग़ल दरबार में था। अत: मुग़ल सम्राट् ने उसे वापस चम्बा जा कर सैनिक तैयारी करने तथा तारागढ़ पर चढ़ाई करने के लिए कहा। जब पृथ्वी सिंह वापिस चम्बा आया तो उस ने बसौली को भलाई का परगना दे दिया। इस के पश्चात् वे दोनों कलानौर में मुग़ल सूबेदार के पास गये और सहायता मांगी। अत: एक ओर से मुग़ल सेना ने तारागढ़ दुर्ग पर घेरा डाल दिया। गुलेर का राजा मानसिंह भी जगत सिंह का बड़ा विरोधी था। तीन मास के घेरे के पश्चात् जगत सिंह ने मार्च 1642 ई० में हार मान ली। जगत सिंह को मुगल दरबार में उपस्थित किया गया। सम्राट् ने उसे क्षमा कर दिया और तारागढ़ के दुर्ग में मुग़ल सेना को रख दिया।

जब जगत सिंह ने आत्मसमर्पण कर दिया और तारागढ़ किले की लड़ाई समाप्त हो गई तो पृथ्वी सिंह का झगड़ा बसौली के राजा संग्राम पाल के साथ भलाई के परगने के बारे में उठ खड़ा हुआ। कहते हैं कि पृथ्वी सिंह ने भलाई और

जून्ड का भाग बसौली के राजा संग्राम पाल को जगत सिंह के विरुद्ध सहायता पाने के उद्देश्य से दिया था। अतः झगड़ा मुग़ल दरबार तक पहुँचा। 1648 ई० में मुगल अधिकारी ने इस का निर्णय चम्बा के पक्ष में दिया। पृथ्वी सिंह नौ बार मुग़ल दरबार में गया था और उसकी स्वामीभक्ति से प्रसन्न होकर बादशाह ने उसे 16000 रुपये आय की जागीर जसवाँ दान में दी और कई मूल्यवान वस्तुएं भी प्रदान कीं।

पृथ्वी सिंह के बाद एक ताम्र पत्र के अनुसार चतुर सिंह का नाम आता है, जिसने 1660 से 1690 तक चम्बा में शासन किया। उसने अपने छोटे भाई **जयसिंह** को अपना मंत्री बनाया। उस ने जय सिंह को बसौली के राजा संग्रामपाल (1635-1673 ई०) के पास भेजा कि वह उस के परगना भलाई का भाग उसे वापिस कर दे परंतु उसने देने से इंकार कर दिया। अतः चतुर सिंह ने बसौली पर आक्रमण कर के भलाई का परगना संग्राम पाल से वापिस ले लिया। पांगी घाटी का कुछ भाग अभी तक भी राणाओं के अधीन था। उस ने स्वयं जा कर वह क्षेत्र अपने अधिकार में कर लिया और वहाँ पर अपने अधिकारियों को नियुक्त किया। पाडुर में **चतुर गढ़** नाम से एक किला भी बनवाया। डोगरों ने 1836 ई० में इस पर अधिकार कर के इस का नाम **गुलाबगढ़** रखा।

1678 ई० में औरंगज़ेब ने चतुर सिंह को आदेश दिया कि वह चम्बा के सभी मंदिरों को गिरा दे। चतुर सिंह ने इन आदेशों को अनसुना कर दिया। जब इस बात का पता औरंगज़ेब को लगा तो उस ने चतुर सिंह को दिल्ली बुलाया। चतुर सिंह स्वयं तो नहीं गया उसने छोटे भाई **शकत सिंह** को भेजा। गुलेर का राजा राजसिंह भी उस के साथ गया। वे दोनों दिल्ली न जाकर बजवाड़ा से ही वापिस लौट आये। बाद में किसी तरह चतुर सिंह ने औरंगज़ेब के क्रोध को शांत कर दिया।

चतुर सिंह के समय में **मिर्ज़ा रज़िया बेग** पंजाब का सूबेदार था। वह कलानौर में रहता था। वह समय-समय पर पहाड़ी राजाओं के इलाकों पर छापे मारा करता था। इस से ये पहाड़ी राजा बहुत दुःखी हो गए थे। अतः उन लोगों ने मिल कर सूबेदार के विरुद्ध एक संघ बनाया। इस संघ में चम्बा का **चतुर सिंह**, गुलेर का **राज सिंह**, बसौली का **धीरज पाल** और जम्मू का **कृपाल देव** सम्मिलित हुए। कृपाल देव ने पठान सैनिकों को भेज कर संघ का साथ दिया। इन सब ने मिल कर सूबेदार को परास्त किया और अपने क्षेत्र भी उसके चंगुल से वापिस ले लिए।

चतुर सिंह के समय तक लाहौर का चंद्र-भागा नदी तक का भाग चम्बा के आधिपत्य में था और शेष भाग कुल्लू के अधिकार में था, जबकि कुल्लू पर लद्दाख का प्रभाव था। 1646-47 ई० में जब तिब्बत ने लद्दाख पर आक्रमण किया तो वह शक्तिहीन हो गया। कुल्लू के राजा **विधि सिंह** (1672) ने इस से लाभ उठाकर लाहौर से लद्दाखियों को भगा कर लाहौर पर अपना पूर्ण प्रभुत्त्व जमा लिया। इसी काल में चम्बा के हाथ से भी लाहौर का कुछ भाग निकल गया।

चतुर सिंह के दो पुत्र थे-उदय सिंह और लक्ष्मण सिंह। 1690 ई० में जब चतुर सिंह की मृत्यु हुई तो उस का बड़ा पुत्र **उदय सिंह** राजा बना। जय सिंह जो उस के पिता चतुर सिंह के समय मंत्री था, उसी प्रकार कार्यभार चलाता रहा। जब तक जयसिंह जीवित रहा राज्य का काम काज ठीक ढंग से चलता रहा और राज्य सभी प्रकार से समृद्ध रहा। उसके काल में गुलेर के राजा राज सिंह की मृत्यु हो गई। उस का पुत्र दलीप सिंह राजगद्दी पर बैठा। उस समय वह छोटी आयु का था। इसलिये उदय सिंह को उस का सरपरस्त बनाया गया। दलीप सिंह की बाल्यावस्था से लाभ उठाने के उद्देश्य से जम्मू और बसौली के राजाओं ने गुलेर पर आक्रमण कर दिया। अतः उदय सिंह ने सिब्बा, कहलूर और मण्डी से सहायता प्राप्त कर के जम्मू और बसौली की सेनाओं को गुलेर से खदेड़ दिया।

उदय सिंह के चाचा और मंत्री जय सिंह की मृत्यु के बाद प्रशासन कुछ ढीला पड़ने लगा। राजा विलासग्रस्त हो गया। उस का प्रेम एक नाई की लड़की से हो गया और उस ने उस लड़की के पिता को मंत्री नियुक्त कर दिया। इस से राज्य के बड़े-बड़े अधिकारी रुष्ट हो गये। उन्होंने उसे गद्दी पर से हटा दिया और उसी के चाचा **महीपत सिंह** के पुत्र **उगर सिंह** को गद्दी पर बैठा दिया। एक मास के पश्चात् उदय सिंह को फिर राजा बना दिया गया। उगर सिंह डर कर जम्मू भाग गया। अधिकारियों ने जब देखा कि उदय सिंह का स्वभाव नहीं बदला तो उन्होंने उसको मारने की योजना बनाई और उस के स्थान पर उस के छोटे भाई लक्ष्मण सिंह को राजा बनाने का लालच दिया परन्तु कुछ दिनों के बाद लक्ष्मण सिंह ने षड्यंत्रकारियों का साथ छोड़ कर अपने भाई के साथ रहने का निश्चय कर लिया। यह देख कर

अधिकारियों ने लक्ष्मण सिंह को मारने का आदेश दिया। अत: लक्ष्मण सिंह मारा गया और उदय सिंह भी घायल हो गया। कुछ ही दिनों में उदय सिंह की भी मृत्यु हो गई।

उदय सिंह की कोई संतान नहीं थी। जब राजा उदय सिंह को दूसरी बार गद्दी पर बैठाया गया था, तब उगर सिंह उस के भय से जम्मू भाग गया था। जम्मू के राजा ध्रुव देव को उगर सिंह के बारे में जब पता चला तो राजा ने उगर सिंह को अपने पास बुलाया। इसी बीच चम्बा के राजा उदय सिंह की मृत्यु हो गई। अत: ध्रुव देव की सहायता से उगर सिंह वापिस चम्बा आ गया, जहाँ उसे गद्दी पर बैठा दिया गया। गद्दी पर बैठने के कुछ समय पश्चात् उगर सिंह के मन में भय हो गया कि कहीं किसी समय उसका चचेरा भाई दलेल सिंह उस के मार्ग में रोड़ा न बन जाए। इस लिये उस ने दलेल सिंह को बन्दी बनाने की सोची। अत: उगर सिंह ने लाहौर के सूबेदार से सांठ-गांठ कर के उसे लाहौर में कैद करवा दिया।

आरंभ में तो उगर सिंह का शासन लोकप्रिय रहा परंतु बाद में लोग उस के शासन से असंतुष्ट होते गये। अत: अधिकारियों ने दलेल सिंह को राजा बनाने की योजना बनाई। उन्होंने एक लाख रुपया ले कर लाहौर के सूबेदार को दे दिया और अपने साथ मिला लिया। सूबेदार ने दलेल सिंह को कैद से मुक्त कर दिया और एक सनद भी दे दी, उसे चम्बा का राजा मान लिया गया। उस की मृत्यु कांगड़ा के **मसलमानी** नामक गांव में 1735 ई० में हुई।

उगर सिंह की मृत्यु के बाद उसका चचेरा भाई दलेल सिंह गद्दी पर बैठा तो उसे भी उगर सिंह के दो पुत्रों उमेद **सिंह और शेर सिंह** का डर सताने लगा। अत: उस ने लाहौर के सूबेदार से मिलकर उन्हें पकड़वा दिया और लाहौर में बन्दी बनवा दिया। उस ने उन लोगों को भी इनाम दिया, जिन लोगों ने उस की राजा बनने में सहायता की थी। उस ने कई कर भी लेने बन्द कर दिये। उमेद सिंह को लाहौर कैद में रहते-रहते 13 वर्ष हो गये थे परन्तु चम्बा में उस के भी कई चाहने वाले थे। इन में उस का सेवक भी था, जिसने एक दिन उमेद सिंह को अपने वस्त्र पहना कर किसी प्रकार कैद से बाहर निकाल दिया। स्वयं उस ने उमेद सिंह के वस्त्र पहन लिये। जब यह पता दारोगा को लगा तो उस ने उस सेवक को पकड़ कर सूबेदार के सम्मुख पेश किया। सूबेदार ने उस से ऐसा करने का कारण पूछा। सेवक ने उत्तर दिया कि उमेद सिंह उस का स्वामी है। उसने जो कार्य किया, वह केवल अपने स्वामी को बचाने के उद्देश्य से किया है। सूबेदार उस की स्वामीभक्ति से प्रसन्न हुआ और उस ने सेवक को ईनाम दे कर कैद के बंधन से मुक्त कर दिया।

उमेद सिंह भागने में सफल नहीं हो सका और पकड़ कर सूबेदार के सामने लाया गया। नवाब ने सारी बातों की खोज करवाई। इस से उसे पता चला कि गद्दी का वास्तविक अधिकारी उमेद सिंह ही है। सूबेदार ने उसे चम्बा का राजा घोषित करके प्रमाण पत्र दे दिया और साथ में एक सेना की टुकड़ी भी दी, जिस की सहायता से उसने अपने राज्य को अपने हाथ में ले लिया।

जब उमेद सिंह गद्दी पर बैठा तो उस समय मुगल साम्राज्य पतन की ओर जा रहा था, जिस के कारण प्रांतीय सूबेदार स्वतंत्र होते जा रहे थे। इस स्थिति से लाभ उठा कर पहाड़ी राजाओं ने भी अपने क्षेत्रों को मुग़लों के चंगुल से वापिस छुड़ाना आरंभ कर दिया। ऐसा ही एक क्षेत्र चम्बा के धौलाधार से दक्षिण की ओर था, जिसे चम्बा से छीन लिया गया था। उमेद सिंह ने भी अपने इस क्षेत्र पर अधिकार तो किया ही साथ में बंगाहल पर भी अपना प्रभाव डाला। उस ने पालमपुर के निकट पठियार में अपनी सेना को रख दिया। यहां से उस ने बीड़ बहंगाल पर भी अपना प्रभाव डाला। इस से रुष्ट होकर दिल्ली के मुग़ल शासक अहमद शाह ने चड़ी पर अधिकार करने के विरोध में उमेद सिंह को एक पत्र लिखा। उमेद सिंह की 1764 ई० में मृत्यु हो गई। उस ने अपनी मृत्यु से पहले ही अपने भाई शेर सिंह को बंदी बना लिया था।

उमेद सिंह की मृत्यु के बाद उसका पुत्र 1764 ई. में गद्दी पर बैठा और उसने 1794 तक शासन किया। राज सिंह जब गद्दी पर बैठा तो उस समय उस की आयु केवल 9 वर्ष थी। उस समय कांगड़ा का राजा घमण्ड चंद था। इस स्थिति से लाभ उठाकर घमण्ड चंद ने पठियार दुर्ग पर अधिकार कर लिया और बीड़ बहंगाल से चम्बा की सेनाओं को मार भगाया। राज सिंह की माता ने अपने पिता जम्मू के राजा **रणजीत देव** से सहायता मांगी। उसने अपने बड़े पुत्र **वज्र राय देव** को सेना ले कर कांगड़ा की ओर भेजा। उस ने वहाँ से **घमण्ड चन्द की सेना को खदेड़ कर वह क्षेत्र चम्बा को** लौटा दिया।

कुछ समय के पश्चात् राज सिंह की माता की मृत्यु हो गई। राज सिंह और उस के नाना रणजीत देव में भी आपस में कुछ मतभेद हो गये। कारण यह था कि रणजीत देव ने अपने एक अकलू नामक अधिकारी को चम्बा का वज़ीर बना रखा था और चाहता था कि किसी प्रकार चम्बा को भी जम्मू के साथ मिलाया जाए। राज सिंह को इस से भय हो गया और उस ने अकलू को बन्दी बना दिया। इस बात का पता जब रणजीत देव को लगा तो उस ने इसे अपना अपमान समझा। उस ने बसौली के राजा अमृत पाल को सेना दे कर चम्बा पर अधिकार करने के लिए भेजा। उस समय राज सिंह चम्बा में नहीं था। वह पंजाब के सूबेदार **ख्वाज़ा औबेद** को मिलने कलानौर गया हुआ था। वापसी में जब वह नूरपुर में था तो उसे वहां चम्बा पर आक्रमण का समाचार मिला। उसने तत्काल सरदार रामगढ़िया से सम्बन्ध स्थापित किये। राज सिंह ने सरदार को एक लाख रुपया दे दिया। इसी की सहायता से उस ने तीन मास के पश्चात् अमृत पाल को चम्बा से निकाल दिया। यह घटना 1775 ई॰ की है। यह पहला अवसर था, जब चम्बा के इतिहास में पहली बार सिक्खों का उल्लेख मिलता है। 1775 ई॰ में ही इस के घर एक पुत्र हुआ, जिस का नाम **अजीत सिंह** रखा गया।

सन् 1782 ई॰ में राज सिंह ने बसौली पर आक्रमण कर के उस पर अधिकार कर लिया। राजा विजय पाल बसौली छोड़कर भाग गया परन्तु बाद में उस ने एक लाख रुपये राज सिंह को देकर उस से अपने राज्य को वापिस ले लिया। सन् 1786 ई॰ में अपने पुत्र अजीत सिंह को सेना लेकर किश्तवाड़ पर अधिकार करने भेजा। किश्तवाड़ पर विजय पाने के पश्चात् वहाँ के राजा को गद्दी से उतार कर उसी के परिवार के एक अन्य व्यक्ति कुंदन सिंह किश्तवाड़ी को राजा बनाया और अपने अधीन कर लिया परन्तु कुछ समय के पश्चात् उसने भी विद्रोह कर दिया। राज सिंह ने उसे पकड़वा कर चम्बा मंगवाया और उस के स्थान पर **तेग सिंह** को किश्तवाड़ का राजा बनाया। ऐसा जान पड़ता है कि चम्बा का यह अधिकार अधिक समय तक न रहा होगा क्योंकि राजा ने कश्मीर से सहायता प्राप्त कर के फिर से अपना राज्य चम्बा से वापिस ले लिया। इसी समय भद्रवाह का राजा दयापाल भी चम्बा को राज कर देता रहा।

1783 ई॰ में कांगड़ा किला के अंतिम मुग़ल सूबेदार सैफ अली खां की मृत्यु हो गई। उस समय कांगड़ा का राजा संसार चंद था। 1786 ई॰ में कांगड़ा का किला पुन: संसार चन्द के अधिकार में आ गया था।

जब कांगड़ा में मुग़लों का प्रभुत्त्व समाप्त हो गया तो सभी पहाड़ी राजाओं ने अपने-अपने उन क्षेत्रों को अपने अधिकार में ले लिया। मुग़ल सत्ता समाप्त होने पर चम्बा के राजा राज सिंह ने रेहलू पर दोबारा अपना अधिकार जमा लिया। संसार चंद ने राज सिंह को रेहलू के साथ लगते हुये गांव छोड़ देने के लिए लिखा परन्तु उस ने इंकार कर दिया और स्वयं रेहलू चला गया। कुछ समय के भीतर उस ने वहाँ पर एक किला बनवाया। इस पर संसार चंद ने गुलेर के एक वजीर ध्यान सिंह, जो उन दिनों कोटला में था, साँठ-गाँठ कर के रेहलू पर आक्रमण करने की योजना बनाई। संसार चंद चुपके से आगे बढ़ा और एक दम चम्बा की सेना पर टूट पड़ा। चम्बा की सहायता में आये नूरपुर के सैनिक इस हड़बड़ी में भाग खड़े हुये। वहां पर राजा केवल अपने 45 सैनिकों के साथ ही रह गया। राज सिंह के साथियों ने उस से अनुरोध किया कि लड़ाई टाल दी जाये परन्तु राजा ने एक न सुनी और वह बराबर लड़ता रहा। उधर राज सिंह ने भी नूरपुर से कुछ सहायता प्राप्त की। राज सिंह की सेना कर्नाद चड़ी, गहरदह और नठर में से आगे बढ़ी और एक दम चम्बा की सेना पर टूट पड़ी। इस समय पीछे से अजीत सिंह पूर्विया नामक व्यक्ति ने आ कर उस के सिर में तलवार से घाव कर दिया। जिससे राजा अचेत हो कर भूमि पर गिर पड़ा। राजा राज सिंह की 1794 ई॰ में मृत्यु हो गई।

मध्यकालीन कुल्लू
(Kullu of Medieval Age)

कुल्लु प्राचीन काल का एक हिमाचल जनपद था, जो कुलुत अथवा कुल्लु नाम से चलता आ रहा था। मध्य काल के आरम्भिक राजाओं में **सरस पाल, सहदेव पाल, महादेव पाल, नीरती पाल** तथा **बैन पाल** कुल्लू के प्रमुख राजा हुए। तत्पश्चात् **हस्त पाल** गद्दी पर बैठा। इस राजा के समय में **बुशैहर** के राजा ने कुल्लू पर आक्रमण किया और कुल्लू से राज कर वसूल कर-के वापस लौट गया। हस्त पाल के पश्चात् उस का पुत्र **शशि पाल** भी बुशैहर को कर देता रहा परन्तु जब

गम्भीर पाल राजा हुआ तो उस ने कुल्लू को इस कर को देने से मुक्ति ही नहीं दिलाई बल्कि अपने राज्य की सीमा को सतलुज के दाहिने किनारे तक बढ़ा लिया।

अगले राजा **निशुद्ध पाल** और **नरेन्द्र पाल** हुये। नरेन्द्र पाल के काल में बंगाहल राज्य ने आक्रमण किया और कुल्लू से कर वसूल किया, जो दस वर्ष तक चलता रहा। अगले राजा **संतोष पाल द्वितीय** और **नन्द पाल** हुये। नन्द पाल के समय में कांगड़ा ने कुल्लू को अपने अधीन कर लिया और **थत्री पाल** के समय में भी यही स्थिति रही परन्तु **इन्द पाल** ने कुल्लू को कांगड़ा के चंगुल से मुक्त करवा लिया। इस के पश्चात् **महीचक्र पाल**, **जयधर पाल** और **केरल पाल** राजा हुये। केरल पाल के समय में कुल्लू पर सुकेत ने फिर आक्रमण कर के अपने अधीन कर लिया। सुकेत के इतिहास के अनुसार राजा का नाम **मदन सेन** (लगभग 1240) था। उसने अपने राज्य की सीमा मनाली में स्थित कोठी वजीरी रूपी में पार्वती नदी तक बढ़ा ली। वापस लौटते समय मदनपुर में एक दुर्ग भी बनवाया। कुल्लू के इतिहास में एक उल्लेख मिलता है कि सुकेत के राजा ने कुल्लू के एक सामंत राणा भौंसल को ब्यास नदी के दाहिने किनारे पर मनाली और बजौरा के मध्य का भाग दे दिया और सुकेत की एक राजकुमारी रूपनी से उसका विवाह कर दिया। राणा भौंसल का मजबूत गढ़ नगर के निकट **बड़ाग्राम** में था। परन्तु बाद में सुकेत के राजा ने भौंसल द्वारा रानी का वध किए जाने पर उस पर आक्रमण करके उससे उसका राज्य छीन लिया।

केरल पाल के पश्चात् कुल्लू पर **हंस पाल, अगस्त पाल, मदन पाल** ने शासन किया। **उर्धन पाल** के राज्य की तिथि कुल्लू घाटी में स्थित हिडिम्बा देवी के मन्दिर के एक लेख और दूसरे सन्ध्या देवी के शिलालेख के अनुसार सन् 1418 ई० मिलती है।

उर्धन पाल के पश्चात् **कैलाश पाल** कुल्लू का राजा बना। वह लगभग 1428 ई० से 1450 ई० तक शासन करता रहा। कुल्लू के राजाओं में कैलाश पाल अन्तिम राजा था, जिस के नाम के साथ पाल उपनाम लगा था। इस के बाद के राजाओं के नाम के साथ किसी में भी पाल उपनाम नहीं मिलता।

सुकेत के इतिहास से पता लगता है कि सुकेत के राजा पर्वत सेन (1500 ई०) ने किसी झूठे आरोप पर अपने पुरोहित का अपमान कर दिया। इस अपमान को वह सहन न कर सका और उसने आत्महत्या कर ली। इस के बाद राजा का स्वास्थ्य बिगड़ने लगा। इस पाप से छुटकारा पाने के उद्देश्य से राजा ने कुल्लू का लाग और सारी का क्षेत्र जो उस समय सुकेत के आधिपत्य में था, पुरोहित के परिवार को दान स्वरूप दे दिया। कालान्तर में इस पुरोहित वंश ने सिराज और दूसरे क्षेत्रों को अपने कब्जे में कर के अपने-आप को स्वतंत्र घोषित कर लिया।

कैलाश पाल 1450 ई० तक शासन करता रहा। इस के पश्चात् लगभग 50 वर्ष तक कोई 'पाल' राजा नहीं हुआ और वहां की राजनीति में एक प्रकार की अव्यवस्था फैली रही। कुछ भाग पर सुकेत का अधिकार रहा। ऐसा भी अनुमान लगाया जा सकता है कि कुल्लू के छोटे-छोटे सामन्तों, **राणाओं** और **ठाकुरों** ने मिल कर कैलाश पाल के विरुद्ध विद्रोह कर के उसे कुल्लू घाटी से भागने पर बाध्य किया हो। इस वंश में जब **सिद्ध पाल सिंह** नामक एक साहसी व्यक्ति हुआ तो वह कुल्लू आया। उस ने बजौरा के पास हाट नामक गांव में डेरा डाला। सर्वप्रथम लोगों ने उसे **वजीरी परौल** का राजा बनाया। राजा होने के बाद उस ने अपने राज्य की सीमायें बढ़ानी आरम्भ कर दीं और देखते ही देखते वह सारी कुल्लू घाटी का स्वामी बन गया। हो सकता है कि लोगों ने स्थानीय राणाओं और ठाकुरों के अत्याचारों से तंग आ कर उसे अपना समर्थन दिया हो।

उस समय जगत सुख से ऊपर ब्यास नदी के दोनों ओर का भाग झीना नामक एक स्थानीय राणा के अधिकार में था। उस के मदनकोट और मनाली में पक्के गढ़ थे। अत: सिद्ध सिंह ने एक षड्यंत्र रचा और भीणा राणा के मुछियानी नामक सेवक से राणा का वध करवा दिया और उसके क्षेत्र पर अधिकार कर लिया। इस के पश्चात् सिद्ध पाल ने अपना ध्यान बड़ागढ़ की ओर किया। यह गढ़ नगर के सामने ब्यास नदी के उस पार स्थित था। यहां के राणा भौंसल को सुकेत के राजा मदन सेन ने पहले ही गद्दी पर से उतार कर उस के क्षेत्र पर अपना अधिकार कर लिया था और उस के किले बड़ागढ़ में अपनी सेना की एक टुकड़ी रख दी थी। उस किले में एक स्त्री भी रहती थी। सिद्ध सिंह ने किसी प्रकार उसे अपने वश में कर लिया और उसकी सहायता से सिद्ध सिंह को समझने में देर न लगी और संयोजन नाला की ओर से आगे बढ़ कर किले पर अधिकार कर लिया।

सिद्ध सिंह उत्तर की ओर से भोटों के प्रभाव को कम करना चाहता था। इन लोगों ने ऊपरी ब्यास नदी घाटी के दर्रों और समतल भूमि में उत्तर की ओर से आ कर अपनी बस्तियां बसा ली थीं और स्थान-स्थान पर अपनी चौकियां स्थापित कर दी थीं। इन बस्तियों का प्रशासन एक उच्चाधिकारी के हाथ में था। इन चौकियों का काम कुल्लू घाटी और स्पीति के मध्य व्यापार मार्ग की सुरक्षा का प्रबन्ध करना था और लद्दाख, तिब्बत तथा बुशैहर के बीच के व्यापार मार्ग की सुरक्षा का काम भी इन्हीं के अधिकार क्षेत्र में आता था। लद्दाख के तशेवांग नामगयाल (1533-65 ई०) के समय में लद्दाख ने कूल्लू पर आक्रमण किया, जिस से इन भोटों के हाथ और भी पक्के हो गये। सिद्ध सिंह ने इस खतरे को समझा और उसने तत्काल ही भोटों तथा छोटे-छोटे सामन्तों को मार भगाया। 1532 ई० में सिद्ध सिंह की मृत्यु हो गई।

बहादुर सिंह अपने पिता सिद्ध सिंह की मृत्यु के बाद 1532 ई० में गद्दी पर बैठा। राजा बनने पर उस ने अपने पिता के काम को आगे बढ़ाया। उस ने **वजीरी रूपी (Waziri Ruppi)** और **सराज** के राणाओं और ठाकुरों को जीत कर उन के इलाकों को अपने राज्य में मिलाया। इनमें **कनावर, चुंगा कोठी, ताण्डी, शंशर कोठी, सैंसर कोठी, बणोगी, रामगढ़** आदि प्रमुख थे।

बहादुर सिंह ने चम्बा के साथ अपने अच्छे संबंध बनाये और अपनी तीन पुत्रियों का विवाह चम्बा के राजा गणेश वर्मन् के पुत्र प्रताप सिंह से किया। 1559 ई०में बहादुर सिंह की मृत्यु हो गई। इस के बाद **प्रताप सिंह** (1559-1575), **पर्वत सिंह** (1575-1608), **पृथ्वी सिंह** (1608-1635) तथा **कल्याण सिंह** (1635-1637) राजा हुए। ये राजा अकबर, जहांगीर और शाहजहां के समकालीन थे।

1637 में **जगत सिंह** कुल्लु का राजा बना। उसने 1672 तक शासन किया। **जगत सिंह** कुल्लू के राजाओं में सब से प्रसिद्ध राजा था। उसने अपने राज्यकाल में कुल्लू की सीमायें दूर-दूर तक फैला लीं। इस के बाद जगत सिंह ने **लग** (Lag) तथा **सुलतानपुर** के इलाकों को अपने राज्य में मिला लिया। लग उस समय मुग़लों के आधिपत्य में था। जब उन्हें मालूम हुआ कि लग पर जगत सिंह ने अधिकार कर लिया है तो दाराशिकोह ने 1657 ई० में एक शाही फरमान जगत सिंह को भिजवाया, जिसमें लिखा गया था कि वह उस भाग को जोग चन्द के पौत्र को वापिस लौटा दे परन्तु जगत सिंह ने इस फरमान को अनसुना कर दिया। सम्भवत: इसलिये कि उसी समय दाराशिकोह तथा उस के भाइयों में झगड़ा उठ खड़ा हुआ। जगत सिंह ने उस पर चढ़ाई कर के नारायण गढ़, श्रीगढ़ एवं हीमरी के किलों को अपने कब्ज़े में कर लिया और बाहरी सिराज को अपने राज्य में मिला दिया। 1660 ई० में उसने अपनी राजधानी नगर से लाकर **सुलतानपुर** में बसाई। वहां पर अपने लिये नया महल बनवाया और रघुनाथ का एक मन्दिर भी बनवाया।

1672 ई. में जगत सिंह की मृत्यु के बाद उसका पुत्र **विधि सिंह** कुल्लु का राजा बना। **विधि सिंह** ने भी अपने पिता जगत सिंह की भान्ति अपने राज्य की सीमायें दूर-दूर तक बढ़ाईं। दक्षिण की ओर की कुछ छोटी-छोटी ठकुराइयों को अपने अधीन कर के सतलुज को अपने राज्य की सीमा बना लिया। विधि सिंह ने बाहरी सिराज की धौल, कोट और कण्डी की कोठियों को भी बुशैहर राज्य से जीत कर अपने राज्य में मिला लिया। 1688 ई० में इस की मृत्यु हो गई।

मान सिंह 1688 ई० में गद्दी पर बैठा। उस के काल में कुल्लू अत्यन्त शक्तिशाली हो गया था। मान सिंह ने सब से पहले मण्डी पर आक्रमण किया और **द्रंग** तक का भाग अपने अधिकार में ले लिया। इस के पश्चात् मान सिंह ने **बाहरी सराज का पन्द्रह-बीस** का भाग बुशैहर से जीत कर वहां पर तीन किले बनवाये। 1700 ई० के लगभग **मान सिंह** ने मण्डी के राजा **सिद्ध सेन** के विरुद्ध पुन: एक अभियान चलाया। मण्डी के राजा की दृष्टि बंगाहल के राज्य पर लगी हुई थी। बंगाहल के राजा **पृथ्वी पाल** की रानियों में से एक रानी मण्डी की राजकुमारी थी। पृथ्वी पाल शराबी और दुराचारी था। इस लिए सिद्धसेन बंगाहल को मण्डी में मिलाना चाहता था। अत: उस ने पृथ्वी पाल को छल से मण्डी बुलाया और दमदमा के महल के भीतर उसे मार दिया। उस के पश्चात् सिद्ध सेन ने अपनी सेनाओं को बंगाहल पर आक्रमण करने के लिये भेजा। पृथ्वी पाल की माता ने मण्डी से निपटने के लिए कुल्लू के राजा मान सिंह से सहायता की प्रार्थना की। वह तत्काल **सारी** की ओर से आगे बढ़ा और रत्नागीर दुर्ग पर अधिकार कर लिया। इस के बाद मान सिंह ने **बड़ा बंगाहल, छोटा बंगाहल और बीड़** का कुछ भाग अपने अधिकार में कर लिया। मण्डी को केवल नेर और चौहार

का ही भाग हाथ लगा। मान सिंह ने उत्तर में लींगटी में सीमारेखा स्थापित कर स्पीति पर आक्रमण कर के उसे राज को देने पर बाध्य किया, जो बहुत समय तक कुल्लू को राज कर देता रहा। दक्षिण दिशा में अभियान में उस ने सराज की ओर से आगे बढ़ कर सतलुज को पार किया और शांगरी के ठाकुर को पकड़ कर उसे जागीर देकर उस के इलाके को अपने राज्य में मिला दिया। उस की सीमा से लगने वाले क्षेत्र **कोटगढ़, कुम्हारसेन और बलसन** के राणाओं से राज का वसूल किया। उस ने **कालगढ़, श्रीकोट, सालाचानी, रातू, ररारना** और **पंगी** में किले बनवाये।

इस के पश्चात् मण्डी के राजा सिद्ध सेन ने कुल्लू की सरवरी घाटी में **गढ़चुला, मदनपुर, विस्तोरी** और **तारापुर** के भाग पर आक्रमण किया। मान सिंह जब सेना लेकर आगे बढ़ा तो मण्डी की सेना युद्ध स्थल छोड़ कर भाग गई। उस ने मण्डी की सेना का पीछा **गुम्मा, धगरी, द्रंग** तक किया। यहां पर सिद्ध सेन ने मान सिंह के साथ सन्धि कर ली और उसे एक भारी रकम दे कर वापस लौटने पर सहमत किया। राजा मान सिंह की मृत्यु 1719 ई० में हुई।

मान सिंह के बाद उस का पुत्र **राज सिंह** 1719 ई० में गद्दी पर बैठा। उस के शासन काल में कोई उल्लेखनीय घटना नहीं घटी। 1731 ई० में उस की मृत्यु हो गई। अगला राजा **जय** सिंह हुआ। जय सिंह के साथ ही कुल्लू राज्य का पतन आरम्भ हो गया। जय सिंह का कालू नामक एक वजीर था, जो दयार का [illegible] वाला था। जय सिंह ने उस से किसी बात पर रुष्ट होकर उसे कुल्लू से निकाल दिया। वह कोटगढ़ के इलाका के [illegible] गांव कीरटी में बस गया। वहां पर उसने लोगों को राजा के विरुद्ध बहका कर विद्रोह करवा दिया। जब इस विद्रोह की सूचना जय सिंह तक पहुंची तो वह लाहौर के मुगल सूबेदार से सहायता पाने के उद्देश्य से 500 आदमियों सहित लाहौर चला गया। जब मण्डी के राजा शमशेर सेन को इस सारी स्थिति की जानकारी हुई तो उसने कुल्लू पर आक्रमण कर के चाहौर इलाके पर अधिकार कर लिया। इसके बाद जय सिंह लाहौर चला गया। जय सिंह लाहौर से वापस कुल्लू नहीं आया अपितु वह सीधा अयोध्या चला गया और वहां रघुनाथ के मन्दिर में रहने लगा। वहां से उसने अपने चचेरे भाई टेढ़ी सिंह को लिखा कि वह कुल्लू चला जाए और कुल्लू का राज पाठ सम्भाले। **टेढ़ी सिंह** (1742) को जब राजा जयसिंह का पत्र मिला तो कुल्लू लौट आया और अपने भाई के राजपाठ को सम्भाला परन्तु कुछ लोगों ने उसे राजा मानने से इन्कार कर दिया कि एक न एक दिन राजा जय सिंह कुल्लू वापस आ जायेगा।

टेढ़ी सिंह कांगड़ा के राजा घमण्ड चन्द का समकालीन था। इस समय मुग़ल साम्राज्य पतन की ओर अग्रसर था और पंजाब उन के हाथों से निकल कर **अहमदशाह दुर्रानी** के आधिपत्य में आ गया था। दुर्रानी ने 1758 ई० में राजा **घमण्ड चन्द** को जालन्धर खण्ड का सूबेदार नियुक्त किया। अपनी इस स्थिति से लाभ उठाने के उद्देश्य से उस ने छोटे-छोटे पहाड़ी राज्यों पर भी अपना प्रभुत्व जमाने का प्रयत्न किया और इसी भावना से उस ने कूल्लू पर भी आक्रमण किया। 1767 ई० में टेढ़ी सिंह की मृत्यु हो गई।

टेढ़ी सिंह की विवाहिता रानी से कोई पुत्र नहीं था परन्तु उस की एक रखैल, जिसे कुल्लू में ख्वास या सरीत कहते हैं, से तीन पुत्र थे। उनमें सब से बड़े का नाम **प्रीतम सिंह** था। टेढ़ी सिंह की मृत्यु के बाद वह ही 1767 ई० में कुल्लू की गद्दी पर बैठा। सबसे पहले उस ने मण्डी पर चढ़ाई कर के उस से अपने गढ़ **देओगढ़, मस्तपुर, सारी** और **अमरगढ़** को वापस ले लिया। इसके पश्चात् कुल्लू की भीतरी स्थिति तो शांतिपूर्ण रही परन्तु पास पड़ोस के राजाओं द्वारा कुल्लू के विरुद्ध कई षड्यंत्र रचे गये परन्तु पूर्ण रूप से कोई भी सफल नहीं हुआ। **चम्बा** के संग्रहालय में 1778 ई. के कुछ ऐसे टांकरी में पुराने अभिलेख हैं, से पता चलता है कि **चम्बा** के राजा राज सिंह, मण्डी के राजा शमशेर सेन, कांगड़ा के राजा संसार चन्द ने मिल कर कुल्लू पर आक्रमण कर के उससे **बंगाहल** के इलाके को हथियाने की योजना बनाई थी। उस समय बंगाहल कुल्लू के पास था। सम्भवत: इसी अवधि में चम्बा के राजा राज सिंह ने बीड़ बंगाहल पर अधिकार कर लिया होगा।

कुछ समय पश्चात् चम्बा, मण्डी और कहलूर (बिलासपुर) ने एक और षड्यंत्र कुल्लू के विरुद्ध रचा। इन्होंने 1786 ई० में योजना बनाई कि कुल्लू पर आक्रमण किया जाये और फिर आपस में बराबर-बराबर बांट लिया जाये परन्तु उनकी यह योजना सफल नहीं हो पाई। 1792 ई० में संसार चन्द ने मण्डी से चौहार का भाग जीत लिया और उसे कुल्लू को दे दिया परन्तु बाद में उस से भी वापस ले लिया और फिर मण्डी को दे दिया। इस पर 1801 ई० में प्रीतम

सिंह ने चम्बा के राजा के पास संसार चन्द के विरुद्ध सहायता करने का प्रस्ताव रखा परन्तु एक दूसरे पर सन्देह होने के कारण यह योजना भी पूरी न हो सकी।

मध्यकालीन अन्य हिमाचल रियासतें
(Other Himachal States of Medieval Period)

1. सुकेत
(Suket)

सुकेत का नाम ब्यास के पुत्र शुकदेव के नाम पर पड़ा माना जाता है, जिसने यहां तपस्या की थी। सुकेत रियासत की स्थापना वीरसेन नामक राजा ने 765 ई. में की थी, जो बंगाल के राजा लक्ष्मण सेन के वंशज से था। उस समय यह क्षेत्र भी छोटी-छोटी ठकुराइयों में बँटा हुआ था। इन्हीं ठकुराइयों में से एक **कुन्नूधार** को वीरसेन ने अपनी राजधानी बनाया। बाद में उसने **पांगणा** को अपनी राजधानी बनाया। चम्बा के मुशनवर्मा को भी वीरसेन ने शरण दी थी और उसका राज्य उसे वापिस दिलाया था। इसी ने **चवासी (मगरा)** व **कजून** के किले बनवाए। इसी ने **सिराज, श्रीगढ़, माधोपुर, रायगढ़** आदि अठारह ठकुराइयों के किलों को अपने कब्जे में किया तथा **परोल, लग** व **रूपी बजीरियों** को जीतकर कुल्लू के भूपल या भूप पाल राजा को कैद कर लिया था। इसी ने श्रीखड्ड में काँगड़ा की सीमा पर 'वीर दुर्ग' का निर्माण किया था। सेमंत सेन (1140 ई.) ने 'रानी का कोट' नामक किला बनवाया। सेन के बाद **दिलावर सेन, बिलदार सेन, उग्रसेन** तथा **वीर सेन** शासक हुए। **मदन सेन** (1240 ई.) ने राजधानी पांगणा से **लोहारा** (बग्गी के पास) बदल दी। उसने गुम्मा की नमक की खानों को अपने अधीन किया। उसने सेरी **बटवाड़ा के राणा मांगल** को विद्रोह के कारण रियासत से बाहर निकाल दिया था और उसने एक विचारधारा के अनुसार वर्तमान अर्की के गांव **मांगल** में अलग रियासत की स्थापना की। एक अन्य विचारधारा के अनुसार मांगल की स्थापना बिलासपुर के राजा के नौकर ने की थी। इसी राजा के त्यून और सरयून के किलों को भी अपने अधिकार में ले लिया था। उसने पांगणा में **मदनकोट का किला**, कुल्लू में **खोखण कोठी** तथा डैहर आदि के किले बनवाये। इसी ने हटली (बलद्वाड़ा क्षेत्र) के भी राणा और हमीरपुर के महल-मोरियां के राजा को अपने अधीन किया था। लोहारा में राणा **शक्तिसेन** से रुष्ट होकर एक ब्राह्मण ने आत्महत्या कर ली थी। अत: उसके वंशज **करतार सेन** (1520 ई.) ने राजधानी लोहारा से **तारामाड़ी** नामक स्थान पर बदल कर **करतारपुर** नगर बसाया। यही सुन्दरनगर का अब पुराना नगर है। **श्यामसेन** (1620) के समय श्याम सेन और बिलासपुर के राजा कल्याण चंद जो श्याम सेन का दामाद था, छोटी सी बात को लेकर महादेव में लड़ाई हुई, जिसमें कल्याण चंद मारा गया। जहां उसकी मृत्यु हुई उस स्थान को **कल्याण चंद की देयोरी** के नाम से पुकारा जाता है। राजा श्याम सेन को, जम्मू में विद्रोह पर मुग़लों की सहायता न करने पर कुल्लू के राजा जगत सिंह द्वारा मुग़लों के दरबार में चुगली लगा कर धोखे से 1614 ई. में दिल्ली बुलाकर औरंगज़ेब ने कैद कर लिया था। कुल्लू के राजा जगत सिंह और मण्डी के राजा सूरज सेन ने उसकी गैरहाज़िरी में सुकेत रियासत के अधिकतर क्षेत्र पर अधिकार कर लिया। जीत सेन (1683 ई.) के समय मण्डी के श्याम सेन ने लोहारा की लड़ाई में इसे हराकर काफी क्षेत्र छीन लिया।

गरूर सेन (1721-1748 ई.) ने वर्तमान **सुन्दरनगर** कस्बे की नींव रखी। उसकी पत्नी ने **सूरज कुण्ड मन्दिर** का निर्माण करवाया। **रणजीत सेन** (1762-91 ई.) ने **नाचन** क्षेत्र को जीतने का प्रयास किया। उसके बड़े बेटे **विक्रम सेन** ने नरपत वज़ीर से झगड़ा कर लिया और वह रूठ कर महल मोरियां चला गया और रणजीत सेन की मृत्यु के बाद ही वापिस आया। विक्रम सेन (1791-1838 ई.) ने सत्ता संभालते ही नरपत बज़ीर को बटवाड़ा में कैद करवा दिया और बाद में उसकी हत्या कर दी। इसने मण्डी पर आक्रमण किये। इसे बिलासपुर (कहलूर) के राजा ने बिलासपुर **बुलाकर कैद कर** लिया। 1808 ई. में हटली और बल्ह के छ: दुर्ग छोड़ने पर विवश किया। लोगों ने इसे मुक्त करवा लिया।

मंडी
(Mandi)

मण्डी भारत की प्राचीन रियासतों में से एक थी, जो पंजाब के होशियारपुर आदि क्षेत्रों से कुल्लू-लाहौल के मार्ग पर पड़ती थी। व्यापारिक केन्द्र होने के कारण इसे मण्डी का नाम दिया गया। कुछ लोग मण्डी का सम्बन्ध माण्डव्य ऋषि से भी जोड़ते हैं, जिसने यहाँ तपस्या की थी। मण्डी हिमाचल की सुकेत रियासत की ही एक शाखा गिनी जाती थी क्योंकि इसके संस्थापक का सम्बन्ध सुकेत रियासत के साथ था। साहू सेन (Sahu Sen) का छोटा भाई था। वह [illegible] **मंगलां** (Manglan) नामक स्थान पर चला गया, जहां लगभग 1330 ई. में मण्डी का मुखिया बन गया। यहां पर उसकी ग्यारह पीढ़ियां निवास करती रहीं। बाहुसेन की ग्यारवीं पीढ़ी की परिवार के मुखिया **करंचन सेन** (Kranchan Sen) की कुल्लू के राजा ने हत्या कर दी। उस समय उसकी पत्नी गर्भवती थी। अत: वह अपने पिता मण्डी में सियाकोट (Seokot) के राणा के पास आने के लिए निकल पड़ी। रास्ते में ही एक बन वृक्ष (Ban tree) के नीचे उसने पुत्र को जन्म दिया। उसका नाम **बाण सेन** (Ban Sen) रखा गया। अगले दिन सियाकोट के कुछ लोगों ने उसे पुत्र सहित देखा और वे उसे राणा के पास ले आये। राणा का अपना कोई बेटा नहीं था। इसलिए उसने अपनी पुत्री के बेटे को ही अपना बेटा समझ कर उसका पालन-पोषण किया और उसे ही अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया। सियाकोट के राणा की मृत्यु के बाद **बाण सेन** सियाकोट का शासक बना। उसने अपने शासन काल में **खोखाश, कोटली, सागूर, पण्डोह** आदि के राजाओं को पराजित किया और उन्हें अपने नियंत्रण में किया।

बाण सेन की मृत्यु के बाद उसका बेटा **कल्याण सेन** (Kalian Sen) राजा बना। वह अपनी राजधानी **बताहु** (Batahu) ले गया। उसके बाद उसका बेटा **हीरा सेन, दरि श्री सेन** राजा बने। इन दोनों की कोई संतान नहीं थी, इसलिए कल्याण सेन का भाई **नरिन्द्र सेन** (Narinder Sen) राजा बना। तत्पश्चात् **प्रजर सेन** (Prajar Sen) तथा **दिलावर सेन** (Dilwar Sen) राजा बने। दिलावर सेन के काल में सिकन्दर लोधी ने मण्डी पर आक्रमण किया। उसने जहां से आक्रमण किया था, उस धार का नाम आज भी सिकन्दरा धार है।

बाहुसेन के वंशज के 19वें शासक **अजबर सेन** (Ajbar Sen) ने 1527 ई. में मण्डी नगर की स्थापना की तथा वहां किले का निर्माण करवाया। इसलिए ही माना जा सकता है कि उसने **मरातु** (Maratu), **सदियाना** (Sadiana), **कुन्हाल** (Kunhal) तथा **गंधर्ब** (Gandharaba) के राजाओं को पराजित किया। 1534 ई. में अजबर सेन की मृत्यु हो गई। उसके बाद **चत्तर सिंह** (Chatter Sen) मण्डी का शासक बना, जिसके बारे में अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं है। उसके बाद उसका बेटा **साहिब सेन** (Sahib Sen) राजा हुआ, जिसने कुल्लू के राजा **जगत सिंह** से मित्रता स्थापित की तथा दोनों मिलकर वज़ीरी **लक्सरी** (Waziri Laksari) के राजा को पराजित किया। इस विजय से उसे वर्तमान **सराज मंडी** (Saraj Mandi) का क्षेत्र प्राप्त हुआ। जय चन्द के विरुद्ध एक अन्य संयुक्त अभियान में मण्डी को **सनोर** (Sanor) और **बदई** (Badai) के क्षेत्र प्राप्त हुए। साहिब सेन के बाद राजा **नारायण सेन** (Raja Narayan Sen) अगला राजा बना। उसने **बन्दोह** (Bandoh) तथा **चुहार** (Chuhar) के राजाओं को अपने अधीन किया। उसके बाद केशब सेन तथा हरिसेन राणा हुए, जिनके बारे में बहुत-कुछ पता नहीं चलता। उनके बाद **सूरज सेन** (Suraj Sen) मण्डी का महत्त्वाकांक्षी राजा हुआ। वह नूरपुर के राजा जगत सिंह का दामाद था। उसने नबाट के राजा पर आक्रमण किया जो कुल्लू के राजा का सम्बन्धी था। कुल्लु के राजा ने अपने सम्बन्धी की सहायता की तथा मंडी के राजा को पराजित कर दिया। इसके पश्चात् मण्डी की **सीमा बर** (Ber) तथा **अपजु** (Apju) गांवों तक तय कर दी गई। राजा सूरज सेन ने दोबारा अपने क्षेत्र कुल्लू से प्राप्त करने हेतु कुल्लू के विरुद्ध अभियान छेड़ा, जिसमें वह पुन: पराजित हुआ और मण्डी का सम्पूर्ण क्षेत्र कुल्लू के अधीन हो गया। अत: राजा सूरज सेन ने कुल्लू के साथ शांति स्थापित की और दोनों रियासतों के बीच सीमा निश्चित कर दी गई। राजा सूरज सेन ने 1625 ई. में कमलगढ़ किले का निर्माण करवाया। 1653 ई. में उसने सुकेत रियासत से पतरी तथा सुलानी (Sulani) प्राप्त

किए। उसने दूसरा किला मण्डी के **दमदमा** (Damdama) में बनवाया। सूरज सेन ने अपनी इकलौती बेटी का विवाह जम्मू के राजा हरिदेव से किया।

सूरज सेन के बाद उसका भाई **श्याम सेन** (Shyam Sen) 1658 में शासक बना। उसने सुकेत के राजा जीत सेन को पराजित किया और उससे **लोहारा** (Lohara) प्राप्त किया। उसने 1659 में कुल्लू से **दुंजगढ़** (Dunjgarh) प्राप्त किया। उसने मण्डी नगर के ऊपर **धारतारण** पर **शामा काली मन्दिर** का निर्माण भी करवाया। श्याम सेन के बाद **गुर सेन** (Gur Sen) मण्डी का शासक बना। उसने कहलूर के साथ मैत्री-संधि की तथा कांगड़ा के कटोच राजा के साथ युद्ध किया। यह युद्ध **हटोली** (Hatoli) में लड़ा गया परन्तु कोई परिणाम न निकल पाया। 1675 में गुर सेन ने सुकेत से **घनयारा** तथा अगले वर्ष **बैरा** (Baira) और पतरी प्राप्त किए। सुकेत तथा मण्डी के बीच सदा शत्रुता बनी रही। 1678 ई. घनेश्रगढ़ पर अधिकार किया।

उसने 1695 में गुर सेन के बाद **सिद्ध सेन** (Sidh Sen) शासक बना। गुर सेन का नाजायज भाई जिप्पु (Jippu) **सिद्ध** सेन का मंत्री बना। उसके नियंत्रण में मण्डी शक्तिशाली बना रहा। उसने 1688 में **दलेल** (Dalel), हटाल (Hatal) पर विजय पाई तथा 1690 ई. में **सरकपुर** (Sarakhpur) में किले का निर्माण करवाया। सिद्ध सेन के काल में ही 1701 में गुरु गोबिन्द सिंह औरंगजेब के विरुद्ध सहायता प्राप्त करने के लिये मंडी आये थे। सिद्ध सेन ने गुरु जी की बहुत सेवा की तथा उनका आशीर्वाद प्राप्त किया। सिद्ध सेन ने मण्डी से दो मील की दूरी पर गणेश भगवान का मंदिर बनवाया, जिसे '**सिद्ध गणेश**' कहा जाता है। सिद्ध सेन ने लगभग 41 वर्ष तक शासन किया और 100 वर्ष की आयु में उसकी मृत्यु हो गई।

सिद्ध सेन की मृत्यु के बाद उसका पौत्र **शमशेर सेन** मण्डी का शासक बना। शमशेर सेन के अपने पड़ौसियों से लगातार युद्ध होते रहे। उसने कुल्लू से पुन: **माधोपुर** विजित किया तथा **रामगढ़, देओगढ़, हात्तपुर** और **सरनी** को भी विजित किया। शमशेर सेन के बाद **दुर्जत्य सेन** (Durjatuya Sen), **शिवमन सेन** (Shivman Sen) तथा **कलेश्वर सेन** (Kalashwar Sen) गद्दी पर बैठे, जिनकी उपलब्धियों के बारे में कुछ भी ज्ञात नहीं। तत्पश्चात् शिवमन सेन का बेटा ईश्वर सेन उत्तराधिकारी बना। वह अपने पिता की मृत्यु (1779 ई.) के समय केवल पांच वर्ष का था। इसका लाभ उठाकर कांगड़ा के शासक संसार चन्द ने मण्डी पर आक्रमण कर दिया तथा वहां खूब लूटमार की। वह ईश्वर सिंह को पकड़ कर नादौन ले गया, जहां उसे 12 वर्ष तक कैद में रखा गया। 1806 ई. में गोरखों ने उसे मुक्त करवाया। ईश्वर सेन ने कुल्लू तथा सुकेत राजाओं से उन क्षेत्रों को वापिस ले लिया, जो संसार चन्द ने उसे कैद करते समय कुल्लू तथा सुकेत को दे दिये थे।

बिलासपुर
(Bilaspur)

गणेश सिंह बेदी के अनुसार बिलासुपर, (जिसका रियासती नाम कहलूर था) की स्थापना चन्देल राजपूत परिवार से सम्बन्धित **हरिचंद के बेटे वीरचन्द** ने 697 ई. में की। हरिचन्द चन्देरी का शासक था तथा वह बुन्देलखंड से कहलूर आकर बस गया था, उसके पांच बेटे थे जिनमें से एक वीर चन्द था। कई इतिहासकार वीरचन्द को संस्थापक तो मानते हैं परन्तु रियासत की स्थापना 900 ई. के आस-पास मानते हैं। वीरचन्द ने कोट कहलूर का किला बनवाया और रियासत का नाम कहलूर रखा। पहले राजा ने अपनी राजधानी जन्दबड़ी या जंदेड़ी बनायी थी, जो इस समय पंजाब में है। उससे पूर्व यह क्षेत्र सांढा, बांढा, मलांढा व झण्डा नामक ठाकुरों में बँटा था जिन्हें हराकर वीरचन्द ने राज्य की नींव रखी थी। वीरचन्द ने बाघल (अर्की), बघाट (सोलन) कुठाड़ (सोलन, कुनिहार (सोलन), मांगल (सोलन) क्योंथल (जुंगा), बेजा, धामी, महलोग, भज्जी, बलसन व जुब्बल आदि की 12 कुराइयों को जीत कर अपनी करद बनाया था। उसने नैना देवी के मन्दिर का निर्माण भी करवाया।

राजा वीर चन्द के बाद उद्धरण चन्द, जसकरण चन्द, मदन ब्रह्म चन्द और आहल चन्द शासक हुए, जो लगभग महत्त्वहीन ही रहे। इनके बाद वीर चन्द की छठी पीढ़ी में राजा **काहन चन्द** हुआ। उसकी मृत्यु के बाद 11वीं सदी में राजा काहन चन्द के

बेटे अजयचन्द ने हाण्डू ब्राह्मण को मार कर हण्डूर (Hindur) रियासत की स्थापना की थी, जिसे बाद में नालागढ़ का नाम दिया गया। इसके बाद **गोकल चन्द, उदय चन्द, जैनचन्द** तथा **पृथ्वी चन्द, सांगर चन्द** राजा हुए। उसके बाद सात पुत्रों ने दरोल, संगवाल, घाल, नंगलू, मेधारी, दोखली तथा झंडवाल राजपूत परिवारों के मुखिया के रूप में शासन किया।

राजा **सांगर चन्द** (Sangar Chand) के बाद उसका सबसे बड़ा बेटा **मेघ चन्द** (Megh Chand) गद्दी पर बैठा। परन्तु निर्दयी होने के कारण लोगों ने उसे कुल्लू की तरफ धकेल दिया। अन्ततः दिल्ली के सुलतान इल्तुतमिश की सहायता से मेघ चन्द अपना राज्य पुनः पाने में सफल रहा। सिकन्दर लोधी के समय **अभिसंद चन्द** (Abhisand Chand) बिलासपुर का राजा था। उसने तातार खां अमीर से युद्ध लड़ा तथा विजयी रहा। बाद में अभिसंद चन्द तथा उसके पुत्र **सुन्दर चन्द** का तातार खां के बेटे ने वध कर दिया।

राजा ज्ञान चन्द (Gyan Chand) 1570 ई. में बिलासपुर का एक शासक बना। वह अकबर का समकालीन था। छोटी-छोटी रियासतों के साथ उसके दुर्व्यवहार से वे उसकी विरोधी हो गई। सरहिन्द के गवर्नर के प्रभाव में आकर उसने इस्लाम धर्म ग्रहण कर लिया। उसका मकबरा पंजाब के कीरतपुर में बना है। उसके तीन बेटों **बीक चन्द** (Bik Chand), **राम** और **भीम चन्द** में से छोटे दो बेटों ने भी इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया, जब कि बड़ा बेटा बीक हिन्दू ही रहा। अतः ज्ञान चन्द के बाद **बीक चन्द** शासक बना, जिसने लम्बे समय तक शासन किया। उसके बाद उसका बेटा **सुल्तान चन्द** 1620 में गद्दी पर बैठा, जिसने अपने जीवन काल में ही अपना राज्य कल्याण चन्द को सौंप दिया। कल्याण चन्द सुकेत के शासक राजा श्याम सेन का समकालीन था, जिसकी बेटी कल्याण चन्द की महारानी थी। उसने हिन्डूर की सीमा पर एक किला बनवाया, जिससे हिन्डूर तथा बिलासपुर के बीच संघर्ष छिड़ गया, जिसमें हिन्डूर का राजा मारा गया। बाद में कल्याण चन्द तथा सुकेत के राजा भी '**कल्याणचन्द दी-दवारी** (Kalayan Chand di dwari) में मृत्यु हो गई।

राजा दीप चन्द 1650 ई. में बिलासपुर का राजा बना तथा उसने 1656 तक शासन किया। वह अपनी राजधानी सुनहाणी (Sunhani) से **ब्यासगुफा** ले गया। नये महल का नाम **धोलरा** (Dholra) रखा गया। उसने ही **बिलासपुर** नामक नया नगर बसाया। अन्ततः कांगड़ा के राजा ने उसे विष दे दिया, जब वह नादौन में था। दीप चन्द की मृत्यु के समय इसका बेटा **भीम चन्द** अभी नाबालिग ही था, जिसका नाम दीपचन्द के भाई मानक चन्द ने उठाना चाहा। उसने कांगड़ा के राजा की सहायता से बिलासपुर पर धावा बोल दिया परन्तु भीम चन्द तथा मण्डी की मिश्रित फौजों ने **जबोथ** (Jaboth) के स्थान पर उन्हें पराजित कर दिया। 1682 ई. में गुरु गोबिन्द सिंह तथा बिलासपुर के शासक भीम चन्द के बीच संघर्ष छिड़ गया, जिसमें भीम चन्द की हार हुई। अतः भीम चन्द ने कांगड़ा, गुलेर आदि राज्यों से गठजोड़ करके पुनः सिक्खों से संघर्ष छेड़ दिया, जिसमें उसे पुनः हार हुई। 1712 ई. में भीम चन्द की मृत्यु हो गई। उसके बाद उसका बेटा **अजमेर चन्द** राजा बना। उसने हिण्डूर की सीमा पर **अजमेरगढ़** नामक किला बनवाया। 1741 ई. में उसकी मृत्यु हो गई तथा उसका बेटा **देवी चन्द** राजा बना। वह जालन्धर के नवाब अदीना बेग खां तथा नादिर शाह का समकालीन था। उसने मुग़लों से अपने क्षेत्र वापिस लिए। उसने **भमाईकोट** का किला बनवाया। उसका विवाह कांगड़ा की राजकुमारी से हुआ तथा उसकी वृद्धावस्था में उसके घर 1772 ई. में पुत्र पैदा हुआ। 1778 ई. में देवी चन्द की मृत्यु हो गई।

देवी चन्द की मृत्यु के समय उसका बेटा माहन चन्द केवल छः वर्ष का था। माहन चन्द के नाबालिग होने के कारण राज्य प्रबन्ध का काम रानी तथा उसके अधिकारी करने लगे। उनका वजीर रामू भी था। उसकी 1785 में मृत्यु हो गई। इसके बाद रानी ने मण्डी के वज़ीर **बैरागी राम** को वजीर बनाया, जो असफल रहा। तत्पश्चात् दीर चन्द के भाई जोरावर चन्द को वजीर बनाया गया, जो माहन चन्द के बालिग होने तक वजीर बना रहा। 1795 में कांगड़ा के राजा संसार चन्द ने बिलासपुर पर आक्रमण किया तथा चौंकी हटवाड़ (Chonki Hatwar) को अपने अधिकार में ले लिया। रानी ने सिरमौर के राजा धर्म प्रकाश से सहायता मांगी। वह सहायता के लिए आया परन्तु मारा गया। संसार चन्द ने बिलासपुर के धार **जंजरार** (Dhar Janjrar) में एक किला बनवाया, जिसे छत्तीपुर नाम दिया गया। अब

मोहन चन्द ने आनन्दपुर के सिख सरदारों **गुरदित्त सिंह** तथा **देसा सिंह** से सहायता मांगी। वे सहायता के लिए आये परन्तु हार गए तथा मारे गए। 1808 में महाराजा रणजीत सिंह ने **जहांबाड़ी, धरकोट** तथा **हथावत** (Hathawat) को अपने साम्राज्य में मिला लिया।

सिरमौर
(Sirmaur)

रियासतों में सिरमौर का छठा स्थान था। सिरमौर का पहला राजा राजस्थान से आने वाला राजा रसालु था, जो जैसलमेर के राजा सलवान का पुत्र था। इसी राजा ने पुराने सिरमौर राज्य की स्थापना की थी। सिरमौर रियासत का नाम रसालू के भाई बुलन्द के पुत्र सिरमौर के नाम पर पड़ा था। 11वीं शताब्दी के अन्त में सिरमौर की राजधानी **सिरमौरी ताल** थी तथा राजा **उग्रसेन** 1095 में वहां का राजा था। जो यदुवंशी शालिवाहन के वंशज से था। उसके बाद उसके बेटे राजा **शुभंश प्रकाश** (Shubhansh Parkash) (1195-1199 ई.) ने सिरमौर राज्य की स्थापना की। उसके **बेटे राजवन** में अपनी राजधानी बनायी। उसके बाद इस वंश के सभी राजाओं के नामों के साथ प्रकाश का प्रयोग किया गया। शुभंश प्रकाश की मृत्यु के बाद उसका बेटा **माहे प्रकाश** (Mahe Parkash) शासक बना। उसने प्राचीन सिरमौर के खोए हुए प्रदेशों को पुन: प्राप्त किया। माहे प्रकाश (1199-1217) ने गढ़वाल पर आक्रमण किया और **मालदा** किले पर अधिकार किया। 1217 में उसकी मृत्यु हो गई। राजा **उदित प्रकाश** (1217-1227 ई.) 1219 ई. में अपनी राजधानी राजवन से **कालसी** देहरादून ले गया। कौल प्रकाश (Kaul Parkash) (1227-1239) ने **जुब्बल, बलसन, थरोच** के शासकों को अपने अधीन किया और करद बनाया। राजा **सुमेर प्रकाश** राजधानी **रतेश** (क्योंथल का भाग) ले गया, जिसे बाद में राजा सूरज प्रकाश (1239-1248 ई.) दोबारा कालसी ले गया।

राजा सूरज प्रकाश ने जुब्बल, कुमारसेन, ठियोग, बलसन, सायरी, रावी और कोटगढ़ के राजाओं को अपना करद बनाया। इसी काल में महमूद शाह प्रथम ने सन्तूरगढ़ के किले पर आक्रमण किया तथा कई मुसलमान सरदार सिरमौर के सन्तूरगढ़ किले में शरण लेते रहे। 1259 ई. में सूरज प्रकाश की मृत्यु हो गई।

राजा **भक्त प्रकाश** (1374-1386 ई.) के समय **फिरोजशाह तुगलक** ने सिरमौर को अपना करद बनाया। राजा **वीर प्रकाश** (1387-98 ई.) 10 साल तक **हाटकोटी** रहा और उसे अपनी राजधानी बनाया। इसी ने **रावींगढ़ दुर्ग** का निर्माण करवाया। उसने रावीं व हाटकोटी की सीमा पर पब्बर नदी के किनारे **भगवती का मन्दिर** बनवाया। **नेकट प्रकाश** (1398-1414 ई.) ने राजधानी **गिरिगंगा के किनारे नेरी गांव** में बदली। इसी समय **तैमूरलंग** (मंगोल शासक) ने सिरमौर पर भी आक्रमण किया था। 1414 में राजा गर्म प्रकाश शासक बना। वह अपनी राजधानी नेरी से बदल कर जागरी किले पर ले गया। वहाँ से उसने 18 वर्षों तक शासन किया। **1432 में ब्रह्म प्रकाश** राजा बना, जो गर्म प्रकाश का बेटा था। वह अपनी राजधानी **कोट देवठल** (Kot Deothel) ले गया। 1446 ई. में उसकी मृत्यु हो गई। उसके बाद उसका बेटा हंस प्रकाश गद्दी पर बैठा, जिसने कोट देवठल में 25 वर्ष तक शासन किया। 1471 में उसकी मृत्यु के बाद **रतन प्रकाश** ने 1495 तक, **पृथ्वी प्रकाश** ने 1495 से 1522 तक तथा **बाहुबल प्रकाश** ने 1522 से 1538 तक कोट देवहल में शासन किया।

1538 ई. में राजा **धर्म प्रकाश** गद्दी पर बैठा जो अपनी राजधानी देवठल से पुन: **कालसी** (Kalsi) ले गया। उसने 32 वर्ष शासन किया। उसके बाद राजा **द्वीप प्रकाश** (1570-1585) तथा राजा **भक्त प्रकाश** (1585-1605) गद्दी पर बैठे 1605 में **बुद्धि प्रकाश** राजा बना। वह अपनी राजधानी कालसी से **राजपुर** ले गया। 1615 में उसकी मृत्यु हो गई। 1616 में राजा **कर्म प्रकाश** गद्दी पर बैठा। उसने 6 वर्षों तक कालसी से राज्य किया तथा 1621 में **नाहन** नगर की स्थापना की तथा वहां अपनी राजधानी बनाई। उसने नाहन में एक किले का निर्माण भी करवाया। कर्म प्रकाश ने 1630 ई. तक शासन किया। उसके बाद 1630 में **मानधाता प्रकाश** (Mandhata Parkash) गद्दी पर बैठा। वह मुग़ल सम्राट् शाहजहां का समकालीन था तथा शाहजहां का प्रिय था। उसके काल में शाहजहां ने अपने फौजदार **निजाबद खां** को

गढ़वाल के श्रीनगर पर आक्रमण करने के लिए भेजा। उसने **शेरगढ़, कालसी, बैरात** किलों को जीत कर सिरमौर के राजा मानधाता को दे दिये। 1647 में मानधाता की मृत्यु हो गई। उसके बाद **सोभाग प्रकाश** शासक बना। औरंगज़ेब ने उसे **कलंखर** (Kalankhar) का क्षेत्र प्रदान किया। इसी के काल में श्रीनगर (गढ़वाल) को जीता गया। इस लड़ाई में सोभाग प्रकाश ने औरंगजेब का साथ दिया जिससे प्रसन्न होकर राजा ने उसे सहारनपुर का **कलेसर** (Kalesar) क्षेत्र उसे दे दिया। सोभाग की नाहन में ही 1659 में मृत्यु हो गई।

सोभाग सिंह के दो पुत्र थे- **माही प्रकाश** तथा **हरि सिंह**। माही प्रकाश 1659 में विधि चन्द प्रकाश के नाम से शासक बना। उसने **पंजौर, साहबान, जगतगढ़** का किला तथा **मुज्जफ़रगढ़** को विजित किया। बाद में उसने बैरथ कालसी के किले को भी अपने अधीन किया। राजा माही प्रकाश क्योंथल के राजा रूप चन्द की बेटी से विवाह करना चाहता था। उसके इन्कार करने पर सिरमौर तथा क्योंठल के बीच **देशहिल** पर लड़ाई हुई, जिसमें सिरमौर के राजा माही प्रकाश की हार हुई। बाद में अपने ससुर गुलेर के राजा की सहायता से माही प्रकाश ने हटकोटी पर आक्रमण किया। रूप चन्द वहां से भाग गया तथा उसके बेटे ने अपनी बहन का विवाह माही प्रकाश से कर दिया। 1678 ई. में माही प्रकाश की मृत्यु हो गई।

1678 में माही प्रकाश का बेटा **जोगराज** शासक बना, जिसने मेदनी प्रकाश के नाम से शासन किया। औरंगज़ेब ने उसे **'सिरमौर के राजा'** (Raja of Sirmaur) की उपाधि से सम्मानित किया।

राजा मेदनी प्रकाश गुरु गोबिंद सिंह का समकालीन था। बिलासपुर के राजा से अनबन होने पर गुरु जी सिरमौर के टौंका गांव में रहे और बाद में पौंटा साहब चले गये थे। राजा मेदनी के निमंत्रण पर वे नाहन भी गये थे। इसी राजा के समय गुरु गोविन्द सिंह व बिलासपुर के राजा भीम चन्द के मध्य, पौंटा साहिब से थोड़ी दूर भंगाणी में 1686 ई. में युद्ध हुआ जिसमें भीम चन्द की हार हुई। मेदनी प्रकाश ने ही नाहन में जगन्नाथ मन्दिर का निर्माण करवाया था। 1694 ई. में 16 वर्ष तक शासन करने के बाद उसकी मृत्यु हो गई।

1694 ई. में मेदनी प्रकाश का चाचा **हरि सिंह** (Hari Singh) राजा बना। उसने 1703 ई. तक शासन किया। हरि सिंह के बाद **भीम प्रकाश** राजा बना। उसका विवाह कुमाऊं की राजकुमारी से हुआ। उसने **कालिस्तान** (Kalistan) में **काली माता** की मूर्ति की स्थापना करवाई तथा नाहन में पीने के पानी का एक विशाल टैंक बनवाया। 1749 में भीम प्रकाश की मृत्यु हो गई। उसके बाद **प्रताप सिंह** 1749 में तथा फिर 1757 में **कीरत सिंह** राजा हुए। उसके काल में सिख अपनी शक्ति बढ़ाने में लगे हुए थे। उन्होंने **सरहिन्द** तथा **रामगढ़** के किले पर अधिकार कर लिया था। बाद में कीरत प्रकाश ने **रामगढ़, थानाधार, पिंजौर, जगतगढ़, रामपुर** आदि को विजित किया। उसने भगवान जगन्नाथ को समर्पित एक मन्दिर का निर्माण भी करवाया। 1773 ई. में उसकी मृत्यु हो गई। उसकी मृत्यु के बाद उसका बेटा **जगत सिंह** राजा बना। उसके काल में कहलूर के राजा माहन चन्द ने हिण्डूर के कुछ क्षेत्रों पर अधिकार कर लिया। अत: हिण्डूर के राजा राम सिंह ने जगत सिंह की सहायता से उस क्षेत्र पर पुन: अधिकार कर लिया। जय प्रकाश की 1792 में मृत्यु हो गई।

किन्नौर
(Kinnaur)

किन्नौर का नाम प्राचीन हिमाचल के इतिहास से जुड़ा है। प्राचीन काल में इसके व्यापारिक तथा राजनीतिक सम्बन्ध तिब्बत से थे। किन्नौर पहले रामपुर बुशैहर का भाग था। रामपुर बुशैहर का संस्थापक **प्रदुमन** नामक व्यक्ति था, जिसका सम्बन्ध चन्द्रवंश से था। रामपुर बुशैहर के राजाओं में पहला महत्त्वपूर्ण नाम **चतर सिंह** (1512-74 ई.) का लिया जाता है। वह अपनी राजधानी कामरू से **सराहन** ले गया उसने और **बेलठ, करांगल** एवं **खनेटी** की ठकुराइयों को बुशैहर राज्य में मिलाया। यह घटना 1554 ई. की मानी जाती है।

बुशैहर का अगला महत्त्वपूर्ण व प्रसिद्ध राजा **केहरी सिंह** (1639-96 ई.) था। उसकी योग्यता व वीरता के कारण औरंगज़ेब ने छत्रपति की उपाधि दी थी। राजा केहरी सिंह तिब्बत के गेदन या गलदन (दलाई लामा-6) के साथ संधि

की थी। इस संधि के अनुसार दो राज्यों ने कैलाश पर्वत को पक्की सीमा मान लिया और एक दूसरे के ऊपर आक्रमण न करने का वायदा किया। दोनों राज्यों के बीच व्यापार खुल गया, जिसका दोनों को आर्थिक लाभ हुआ। उसने तिब्बत-लद्दाखी मुगल (Tibeto-Ladaki Mugal) में तिब्बत को विजय दिलाई। इस सहायता के बदले उसे हंगरंग (Hangran) घाटी जागीर के रूप में तिब्बत से प्राप्त हुई। राजा केहरी सिंह ने **सिरमौर, गढ़वाल, मण्डी** व **सुकेत** रियासतों को अपना करद बनाया तथा **क्योंथल, कोटखाई, कुमारसैन, बलसन, ठियोग** और **दरकोटी** को अपने नियंत्रण में ले लिया। इसी राजा ने सर्वप्रथम 1683 ई. में लवी मेले का आयोजन करवाया, जिसमें ऊन, पशम, पशु (घोड़ों), नमक व सुहागा आदि का व्यापार होता था।

राजा **राम सिंह** (1767-99 ई.) राजधानी सराहन से **रामपुर** ले गया। उसने 1776 ई. में स्पीति के **ढांखर किले** को अपने अधिकार में ले लिया। राजा राम सिंह के बाद राजा **रूद्रसिंह** तथा राजा **उग्र सिंह** बुशैहर के राजा हुए। 1810 ई. में **राजा उग्रसिंह** के समय गोरखा ने रामपुर पर कब्जा कर लिया, जो 1814 ई. तक रहा। जब अंग्रेजों ने गोरखों को पहाड़ों से निकाल कर बाहर कर दिया। 1810 ई. में गोरखों ने इस रियासत के सारे अभिलेख को जला दिया था। उग्र सिंह की 1811 ई. में मृत्यु हो गई। उसके बाद उसका आठ वर्षीय नाबालिग बेटा महेन्द्र सिंह शासक बना।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न
(Important Questions)

1. राजपूत कौन थे? उन्होंने क्यों तथा किस प्रकार स्वतंत्र राज्यों की स्थापना की?
   Who were Rajputas? Why and how did they establish free states?
2. मध्यकालीन कांगड़ा के इतिहास का संक्षेप में वर्णन करें।
   Explain the History of medieval Kangra.
3. सल्तनत कालीन कांगड़ा का दिल्ली के सुलतानों के साथ सम्बन्धों का वर्णन करें।
   Explain the relation between Kangra and the Sultans of Delhi during Sultanate Period.
4. मुगलों तथा कांगड़ा के सम्बन्धों का वर्णन करें।
   Discuss the relation between Mughals and Kangra.
5. मध्यकालीन कांगड़ा से किन-किन रियासतों की उत्पत्ति हुई? वर्णन करें।
   Which states were originated from medieval Kangra? Discuss.
6. नूरपुर रियासत की उत्पत्ति तथा विकास का वर्णन करें।
   Discuss the origin and rise of Nurpur state.
7. मध्यकालीन चम्बा राज्य के उत्थान का वर्णन करें।
   Discuss the rise of Chamba state during the medieval period.
8. 19वीं शताब्दी से पूर्व चम्बा के इतिहास का वर्णन करें।
   Explain the history of Chamba before 19th Century.
9. मध्यकालीन कुल्लू रियासत के इतिहास का संक्षेप में वर्णन करें।
   Discuss the history of medieval Kullu state.
10. सुकेत राज्य की उत्पत्ति तथा विकास का वर्णन करें।
    Explain the origin and rise of Suket state

11. मध्यकालीन सुकेत राज्य के इतिहास का वर्णन करें।

    Explain the history of Suket State of medieval period.

12. मण्डी राज्य की उत्पत्ति तथा विकास का वर्णन करें

    Explain the origin and rise of Mandi State.

13. मध्यकालीन मण्डी राज्य के इतिहास का वर्णन करें।

    Discuss the history of Mandi state of Medieval period.

14. निम्नलिखित में से किन्हीं दो मध्यकालीन राज्यों का संक्षेप में वर्णन करें-

    (क) बिलासपुर (ख) सिरमौर (ग) किन्नौर

15. 1000 ई. से 1707 ई. तक के कांगड़ा के इतिहास का वर्णन करें।

    Explain the history of Kangra from 1000 AD to 1707 AD.

19वीं शताब्दी में हिमाचल की पहाड़ी रियासतें
(HILL STATES OF HIMACHAL IN 19th CENTURY)

भूमिका (Introduction)

अठारहवीं शताब्दी के अन्तिम वर्णों तथा 19वीं शताब्दी के आरम्भ में देश में अनेक परिवर्तन देखने को मिलते हैं। इस समय मुगल साम्राज्य पतन की गहरी खाई में धंस चुका था, जिसके परिणामस्वरूप अनेक क्षेत्रीय रियासतें स्वतंत्र हो गई थीं। पंजाब में सिक्खों ने अपनी धांक जमानी आरम्भ कर दी थी तथा मैदानी भागों के अतिरिक्त पहाड़ी क्षेत्रों में भी अधिकार करने लगे थे। नेपाल के गोरखे भी पंजाब तक पहुंच चुके थे। अंग्रेज़ों ने अपनी साम्राज्यवादी नीति के कारण देश के भिन्न-भिन्न हिस्सों में अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया था तथा अपनी युद्ध नीति, हस्तक्षेप नीति आदि केबल पर अपने क्षेत्र का और भी अधिक विस्तार करने में व्यस्त थे। इस सब बातों का प्रभाव हिमाचल की पहाड़ी रियासतों पर भी पड़ना अनिवार्य था। अत: देश की भिन्न-भिन्न शक्तियां पहाड़ी रियासतों में भी हस्तक्षेप करने लगी थीं। परिणाम स्वरूप हिमाचल की अनेक रियासतें वहां के मूल शासकों के हाथों से निकलने लगी थीं। इस अध्याय में 19वीं शताब्दी की हिमचाल की पहाड़ी रियासतों की राजनीतिक स्थिति का वर्णन किया गया है।

कांगड़ा
(Kangra)

1774 ई० में घमण्ड चन्द की मृत्यु हो गई। उसके बाद उसका पुत्र तेग चन्द 1774 ई० में गद्दी पर बैठा। वह एक वष तक ही शासन कर सका और इस दौरान उसने अपने पिता की ही नीति को अपनाया। 1775 ई० में उसकी मृत्यु हो गई। उसके तीन पुत्र थे, जिनमें **संसार चन्द** सब से बड़ा था। उसका जन्म जनवरी 1765 ई० में व्यास नदी के तट पर विजयपुर नामक एक किला बन्द शहर में हुआ था। इस प्रकार 1775 ई० में अपने पिता की मृत्यु के समय वह केवल दस वर्ष का था। अपने भाईयों में सब से बड़ा होने के कारण 1775 ई० में वह गद्दी पर बैठा। जब वह राजा बना तो पहाड़ों तथा मैदानी दोनों ही भागों में राजनैतिक अराजकता फैली हुई थी। केन्द्र में मुगलों की शक्ति क्षीण होती जा रही थी। पंजाब में सिक्खों की शक्ति बड़ी तेज़ी से बढ़ रही थी और वे लोग लूट मार करने में लगे हुये थे। कांगड़ा का पहाड़ी प्रदेश भी उनकी इस लूटमार से बच नहीं पाया था।

कांगड़ा का किला अब भी मुग़ल सामन्त **सैफ अली खां** के अधिकार में था। संसार चन्द की यह सब से बड़ी इच्छा थी कि वह मुगलों के हाथ से अपने पूर्वजों की घरोहर कांगड़ा दुर्ग को स्वतंत्र करवाये। छोटी आयु का होने पर भी गद्दी पर बैठते ही उसने इसके लिए यत्न किये परन्तु वह सफल न हो सका तब उसने **जयसिंह कन्हैया** से सहायता मांगी। जयसिंह सिक्खों की बारह मिसलों में से एक था। वह संसार चन्द को सहायता देने के लिए तुरन्त तैयार हो गया। वह एक भारी सेना लेकर कांगड़ा की ओर चल पड़ा। राजा संसार चन्द तथा जयसिंह कन्हैया की सम्मिलित फौज ने किले पर 1781-82 में एक जबरदस्त घेरा डाला। उस समय किले का किलेदार सैफ अली खां था। स्वयं शत्रु को भगाने में असमर्थ हो कर उसने बिलासपुर की रानी से सहायता मांगी। उस समय बिलासपुर का राजा छोटी आयु का था। शासन काल की बागडोर मां के हाथों में थी। रानी ने उसकी सहायतार्थ 300 घुड़सवार और 8000 पैदल सिपाही भेजे। अपनी सेना का नेतृत्व स्वयं रानी ने किया। वह संसार चन्द से लड़ रही थी और किले के भीतर किलेदार की सेना से मिली हुई थी। इससे पहले ही कांगड़ा के प्राय: प्रत्येक गांव को लूट कर वह बर्बाद कर चुकी थी। संसार चन्द तथा जयसिंह कन्हैया की सेनाओं ने एक वर्ष तक घेरा डाले रखा। नवाब सैफ अली खां स्वयं मरण-शैया पर पड़ा हुआ था। उनकी सेना ने मुकाबला किया परन्तु अन्त में उसे हार खानी पड़ी तथा 1783 ई० में किला उस के हाथों से निकल गया। इस पराजय के एक वर्ष पश्चात् बूढ़े नवाब सैफ अली खां की मृत्यु हो गई। दफनाने के लिये उसका शव किले के बाहर इमामबाड़े में ले जाया जा रहा था, इसकी

खबर पहले से ही संसार चन्द तथा जयसिंह को पहुंच चुकी थी। अत: **जय सिंह** के सिपाहियों ने संसार चन्द को चकमा दे कर पहले ही किले में प्रवेश करके उस पर अधिकार कर लिया। संसार चन्द को इस से बहुत निराशा हुई परन्तु वह कुछ न कर सका और अनुकूल अवसर की प्रतीक्षा करने लगा।

चार वर्ष तक कांगड़ा के किले जयसिंह का अधिकार में रहा। इस काल में उस ने पहाड़ी राजाओं से कर वसूल किया। इसी समय **महा सिंह शुकरचकिया** और **जयसिंह** के बीच अमृतसर में जम्मू से लूटे हुए माल के बंटवारे पर झगड़ा हो गया। जय सिंह अपनी तटस्थता के लिये हिस्सा मांग रहा था। संसार चन्द ने इस स्थिति से लाभ उठाना चाहा। एक तो उसने जय सिंह के समतल क्षेत्र पर अधिकार कर लिया तथा दूसरे उसने महा सिंह से जय सिंह को कांगड़ा के किले से खदेड़ने के लिये सहायता मांगी। महा सिंह ने पहले तो जय सिंह के साथ पुन: झगड़ा मोल लेना न चाहा परन्तु राजा संसार चन्द के लिये उस के हृदय में प्रशंसा के भाव थे, अतएव उसने अपनी एक सेना दीवान **दयाराम** के नेतृत्व में कांगड़ा भेजी। राजा संसार चन्द ने कहा कि वह उसे सफल होने पर दो लाख रुपये देगा। छ: महीने तक जयसिंह लड़ता रहा पर अन्त में जब खाद्य सामग्री सामप्त हो गई तब उस ने विवश हो कर किला छोड़ दिया तथा पहाड़ी राज्यों पर से अपना प्रभुत्व हटा लिया। बदले में हाजीपुर और मुकेरियां के समतल क्षेत्रों, जिन पर संसार चन्द ने कब्जा कर लिया था, उसे लौटा दिये गए। इस प्रकार 1786 ई० में कांगड़ा का किला वापिस कटोच राजा के पास आ गया। महा सिंह के प्रतिनिधि ने जब संसार चन्द से दो लाख रुपये मांगे तो संसार चन्द आनाकानी करने लगा। महा सिंह क्रोधित हो उठा परन्तु वह लड़ाई में उलझना नहीं चाहता था। अत: वह शांत हो कर बैठ गया।

कांगड़ा के किले को अधिकार में लेने के पश्चात् संसार चन्द की महत्वाकांक्षाएं बढ़ने लगीं। किले के महत्त्व को ध्यान में रखते हुए उसने एक भारी सेना का गठन किया। इस सेना की सहायता से उसने मण्डी, सुकेत, बिलासपुर, नालागढ़ आदि पर आक्रमण कर के उन पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया तथा उन्हें अपने दरबार में आने और कर भेजने हेतु विवश किया। शीघ्र ही उसने उन राज्यों से भी कर लेना शुरू कर दिया, जो मुग़लों के अधिकार में थे। इस बात को लेकर चम्बा, मण्डी, कुटलैहड़ आदि में उसकी ख्याति दूर-दूर तक फैल गई। अत: वह **महाराजा** के नाम से पुकारा जाने लगा।

1788 ई. में मण्डी के राजा **सूरमा सेन** की मृत्यु हो गई। उस समय उसके पुत्र ईश्वरी सेन की आयु केवल 5 वर्ष की थी। संसार चन्द ने उचित अवसर देख कर 1792 ई. में मण्डी पर आक्रमण कर दिया तथा ईश्वरी सेन तथा उस के भाई जालम सिंह को बन्दी बना लिया और 12 वर्ष तक नादौन में कैद करके रखा। मण्डी के अनंतपुर के तीन क्षेत्रों को भी उसने को अपने राज्य में मिला दिया। चौहार का भाग कुल्लू को दिया गया परन्तु बाद में उससे भी वह भाग वापिस ले लिया गया। ऐसा लगता है कि जब गोरखों ने कांगड़ा पर आक्रमण किया तो उन्होंने ही ईश्वरी सेन कैद से मुक्ति दिलाई।

संसार चन्द ने चम्बा के राजा राज सिंह से भी रिहलू का इलाका मांगा जो कांगड़ा के किलेदार के आधिपत्य में था। राज सिंह ने उसे देने से इनकार किया। 1794 में राज सिंह ने सेना का संगठन कर स्वयं प्रस्थान किया। संसार चन्द ने एकदम राज सिंह पर आक्रमण कर दिया। इस युद्ध में राज सिंह जख्मी हो गया और लड़ते-लड़ते शहीद हो गया।

1795 ई. में संसार चन्द ने कहलूर-बिलासपुर के सतलुज नदी के दाहिनी ओर के भाग पर आक्रमण किया। **रानी नगरदेवी** तथा उस के पुत्र **महान चन्द** ने सिरमौर के राजा **धर्म प्रकाश** से सहायता मांगी। **धर्म प्रकाश** हिन्दूर (नालागढ़) के राजा रामसरन सिंह को साथ ले कर कहलूर पहुंचा। कांगड़ा और कहलूर तथा सिरमौर की संयुक्त सेनाओं के बीच युद्ध हुआ। धर्म प्रकाश लड़ाई में मारा गया और कहलूर की सेना को हार खानी पड़ी। संसार चन्द ने सतलुज नदी के दाहिने किनारे वाले क्षेत्र पर अधिकार कर लिया और झांझरधार पर एक किला बनवा दिया, जिसे उसने छातीपुर अर्थात् "**कहलूरियों की छाती**" का नाम दिया।

कांगड़ा का शासक संसार चन्द कटोच बड़ा महत्त्वाकांक्षी व्यक्ति था। वह केवल पहाड़ी राज्यों में ही नहीं बल्कि पंजाब के मैदानी क्षेत्रों में अपना राज्य फैलाना चाहता था। 1801 ई०में उसने **रानी सदा कौर** के राज्य के कुछ भागों को हड़पना चाहा परन्तु रणजीत सिंह ने फतेह सिंह आहलूवालिया को साथ लेकर उसको भागने पर विवश कर दिया। दूसरी बार 1802 ई० उसने होशियारपुर और बिजवाड़ा पर अधिकार कर लिया। रणजीत सिंह ने इस बार फिर से उसे वापिस भगा दिया। तीसरी बार 1804 ई. में उसने पुन: होशियारपुर और बिजवाड़ा पर अधिकार करने का प्रयत्न किया परन्तु उसका यह प्रयत्न भी विफल बना दिया गया।

निराश हो कर संसार चन्द ने एक बार पुनः बिलासपुर (कहलूर) की ओर अपना रुख किया। इस घटना से पहाड़ी राजा सचेत हो गये और वे संसार चन्द के आतंक से मुक्ति पाने का उपाय सोचने लगे। संयोगवश उन्हीं दिनों नेपाल के गोरखे भी साम्राज्य स्थापना के प्रयत्न में लगे हुये थे। गोगरा नदी से ले कर सतलुज तक उन्होंने अधिकार जमा लिया था। कुमाऊं, गढ़वाल, सिरमौर तथा शिमला के सारे पहाड़ी रजवाड़े उनके आधिपत्य में आ चुके थे। वे ऐसे अवसर की ताक में थे जब वे नेपाल से लेकर कश्मीर तक अपनी सीमा बढ़ा सकें। गोरखों ने कई बार आगे बढ़ने का प्रयत्न किया और इसी उद्देश्य से कांगड़ा पर भी चढ़ाई की लेकिन संसार चन्द से उन्हें मात खानी पड़ी। दोनों के बीच एक समझौता हुआ, जिसके अनुसार सतलुज नदी को सीमा मान लिया गया और यह तय हुआ कि इस के आगे कोई नहीं बढ़ेगा।

जब संसार चन्द ने बिलासपुर पर आक्रमण किया तो इस घटना से दूसरे पहाड़ी राजा सतर्क हो गये। उन्होंने अपने-आप को संगठित किया और बिलासपुर के राजा **महान चन्द** के द्वारा गोरखों को कांगड़ा पर आक्रमण करने के लिये आमंत्रित किया और हर प्रकार की सहायता देने को कहा। गोरखे भी ऐसे भी मौके की तलाश में थे। अतः उन्होंने संसार चन्द के साथ हुई संधि को ताक पर रख दिया और **1805 ई.** में **अमर सिंह थापा** ने 40,000 सैनिकों को ले कर बिलासपुर के पास सतलुज को पार किया। गोरखों और पहाड़ी राजाओं में इस बात पर आपस में समझौता हो गया कि गोरखे केवल कांगड़ा किले पर ही अधिकार रखेंगे तथा अन्य इलाकों पर उन का कोई अधिकार नहीं होगा।

गोरखों के आक्रमण से कुछ समय पूर्व संसार चन्द ने एक बड़ी भूल की। उन दिनों रामपुर की गद्दी से उतारा हुआ नवाब गुलाम मुहम्मद उसकी शरण में था। उसकी राय से संसार चन्द ने अपनी सेना के पुराने सिपाहियों को, जो राजा घमंड चन्द के समय से एक खास वेतन पर नौकरी करते आ रहे थे, बखास्त कर दिया। गुलाम मुहम्मद ने उसे कम वेतन पर रूहले सिपाही मंगा कर देने का वादा किया। इन निकाले हुये सिपाहियों में ऐसे रूहले, अफगान और राजपूत थे जिन्होंने दिल्ली में फौजी शिक्षा पाई थी। इन के एकदम सेना से हट जाने के परिणामस्वरूप संसार चन्द की सैनिक शक्ति कमज़ोर हो गई। गोरखों को जब इस परिस्थिति का पता लगा तो उन्होंने तुरन्त 1805 ई. में सुलह की शर्तें तोड़ कर कांगड़ा पर चढ़ाई कर दी।

गोरखों के साथ संसार चन्द की पहली मुठभेड़ 1806 ई. में **महल मोरियां** के स्थान पर हुई परन्तु गुलाम मुहम्मद के लाये हुये नये सिपाहियों के पहुंच जाने पर भी वह सफल न हो सका। गोरखे आगे बढ़े और नादौन पहुंच कर मण्डी के राजा ईश्वरीसेन को, जिसे संसार चन्द ने बारह वर्षों से बन्दी बना रखा था, कैद से मुक्त कर दिया। संसार चन्द को अन्त में विवश हो कर किले में शरण लेनी पड़ी। दूसरी तरफ गुलेर के राजा, जो कटोच वंश के संसार चन्द के निकट सम्बन्धियों में से थे, भी गोरखों से जा मिले। फिर भी चार वर्ष तक घेरा रखने के बावजूद गोरखे किले पर अधिकार न कर सके। परन्तु इन चार वर्षों में गोरखों ने कांगड़ा को तहस-नहस कर दिया। संसार चन्द तथा उसकी सेना बिना अन्न के लगभग चार महीनों तक घास पर गुजारा करती रही। अंत में निरुत्साहित हो कर उसे रणजीत सिंह से सहायता मांगनी पड़ी। कहते हैं दो बार रणजीत सिंह ने प्रस्थान किया पर कुछ सोच कर रास्ते से ही लौट आया। तब गोरखों के सिपाही फाटक से हटा दिये गये। संसार चन्द ने इसका लाभ उठाकर किसान के वेश में सपरिवार फाटक से बाहर निकल कर टीहरा-सुजानपुर चला आया। उसने महाराजा रणजीत सिंह से पुनः सहायता की याचना की। इस समय रणजीत सिंह ज्वालामुखी मन्दिर में दर्शन के लिये आया हुआ था। उसने इस बार भी संसार चन्द की सहायता नहीं की।

1809 ई. पुनः गोरखा कमांडर **अमर सिंह थापा** ने कांगड़ा के किले को घेर लिया। संसार चन्द ने अंग्रेजों से सहायता मांगी परन्तु अनेक कारणों से उन्होंने सहायता देने से इन्कार कर दिया। इसके बाद संसार चन्द ने मराठों के सरदार जसवंत राय होल्कर से सहायता की याचना की परन्तु अंग्रेजों के साथ उलझे हुए होने के कारण उसने भी सहायता देने से इन्कार कर दिया। इधर संसार चन्द गोरखों के घेरे से परेशान हो रहा था। अतः उसने रणजीत सिंह के पास अपने भाई फतेहचन्द को पुनः सहायता मांगने के लिए भेजा। 1805 ई. में तो रणजीत सिंह कांगड़ा के महत्त्व को बहुत नहीं समझता था। अतः एव वह केवल नज़राना लेकर सन्तुष्ट हो गया था परन्तु अब वह यह समझने लगा कि सतलुज से लेकर रावी नदी के पहाड़ी क्षेत्रों पर अपना राज्य कायम रखने के लिए कांगड़ा के किले को अपने अधिकार में लेना कितना आवश्यक है। अतः उसने सहायता के बदले में कांगड़ा के किले की मांग की। पहले तो संसार चन्द ने आनाकानी की परन्तु अन्त में कोई और रास्ता न देखते हुए वह इस शर्त को मानने के लिए तैयार हो गया। अतः रणजीत सिंह ने अपने सब से योग्य सेनापति **मोहकम चंद** (Mohkam

Chand) के अधीन एक बड़ी सेना कांगड़ा की रक्षा के लिए भेज दी और साथ ही मोहकम चंद को यह स्पष्ट आदेश भी दिया कि वह संसार चंद की कूटनीतिक चालों से भी सावधान रहे। मोहकम चंद ने कांगड़ा पहुंचते ही संसार चंद से कांगड़ा के किले की मांग की परन्तु उसने यह उत्तर दिया कि जब उसकी सेना गोरखों को भगा देगी तो वह किला दे देगा। वादा पूरा करने का आश्वासन दिलाने के लिए उसने अपने बेटे अनुरोध चन्द को बंधक के रूप में भेज दिया।

इसी दौरान जब अंग्रेज़ों और रणजीत सिंह के बीच सम्बन्धों में कुछ तनाव आने लगा तो रणजीत सिंह को मोहकम चन्द को वापिस लाहौर बुलाना पड़ा। इस बात से संसार चंद जब कुछ परेशान हुआ और उसने अमर सिंह थापा से प्रार्थना की कि यदि वह उसको तथा उसके परिवार को सुरक्षित बाहर जाने देगा तो वह उसको कांगड़ा का दुर्ग दे देगा। रणजीत सिंह को जब इस बात का पता चला तो उसको संसार चन्द की दोगली चाल पर बड़ा क्रोध आया। इसी बीच उसे गोरखा जनरल से एक प्रस्ताव मिला, जिसमें उसने उसकी सहायता के बदले में उसे काफी नज़राना देने का आश्वासन दिया। यह नज़राना मूल्य में कांगड़ा के किले से कहीं अधिक होना था। गोरखा जनरल द्वारा रणजीत सिंह की सहायता पाने का कारण यह था कि संसार चन्द अपने परिवार-सहित बच निकला था परन्तु वह अपने भाई के पास काफी सेना छोड़ गया था, जिसके पास चार मास की पूरी रसद थी। रणजीत सिंह ने अमर सिंह थापा को खुश करने के लिए संसार चन्द के पुत्र को कैद कर लिया। अमर सिंह थापा इसी भ्रम में रहा कि रणजीत सिंह उस की सेना का साथ देगा परन्तु रणजीत सिंह को जब इसका पूरी तरह आभास हो गया कि गोरखों के पास सेना एवं बारूद की बड़ी कमी हो गई है तो उसने अपनी सास **सदा कौर** को कांगड़ा की तरफ भेज दिया। सदा कौर ने जब यह देखा कि उसके कहने से दुर्ग के दरवाज़े की चाबियां नहीं दी जा रही हैं तो उसने एक चाल चली। सदा कौर संसार चंद के लड़के को हाथी पर बिठाकर उसे दुर्ग के दरवाजे तक ले गई तथा उस बालक से चाबियां मांगने को कहा। दुर्ग के सैनिकों ने उसके आदेश का पालन करते हुए चाबियां दे दीं। दुर्ग का दरवाज़ा खुलते ही 24 अगस्त, 1809 ई. को रणजीत सिंह की सेना दुर्ग में घुस गई। इस प्रकार कांगड़ा के किले पर रणजीत सिंह का अधिकार हो गया

कांगड़ा के किले को छोड़ कर गोरखों की भागती हुई सेनाओं का सामना अन्य पहाड़ी राजाओं की सेनाओं के साथ हुआ परन्तु रणजीत सिंह सेनाओं ने उन्हें सतलुज से पार भगा दिया। जब किले पर रणजीत सिंह का अधिकार हो गया तो उस ने देसा सिंह मजीठिया को किले का किलेदार तथा सूबेदार बना दिया और उस के अधीन वहां एक सेना की टुकड़ी भी रख दी। देसा सिंह को **कांगड़ा, चम्बा, नूरपुर, कोटला, शाहपुर, जसरोटा, बसौली, मनकोट, जसवां, सिब्बा, गुलेर, कहलूर, मण्डी, सुकेत, कुल्लू** और **दातारपुर** का सूबेदार बना दिया गया। इस के पश्चात् रणजीत सिंह ने ज्वालामुखी का पूजन किया और पुजारियों में बहुत धन बांटा। यहां पर पहाड़ी राजाओं ने भी रणजीत सिंह को नजराने भेंट किये। इसके पश्चात् वह जालन्धर दोआब लौट गया। किले पर रणजीत सिंह का अधिकार के बाद महाराजा संसार चन्द ने जीवन के शेष दिन टीहरा सुजानपुर में ही बिताये। थोड़े समय के लिए वह नादौन में भी रहा।

जब तक सिक्खों का कांगड़ा के किले पर अधिकार रहा, उन्होंने पहाड़ी प्रदेशों को खूब लूटा। इसके अतिरिक्त रणजीत सिंह के प्रभुत्व के कारण उनकी शक्ति दिनो-दिन कमज़ोर होने लगी। महाराजा संसार चन्द को लाहौर स्थित रणजीत सिंह के दरबार में एक बार सलामी देने के लिये उपस्थित होना पड़ता था जो उसके लिये बड़े भारी अपमान की बात थी परन्तु महाराजा रणजीत सिंह उन का बड़ा सम्मान करते थे।

जसवां
(Jaswan)

18वीं शताब्दी के अन्त में पंजाब में सिक्ख जोर पकड़ रहे थे और जसवां भी उन के आधिपत्य में आ गया था। 1786 ई. में कांगड़ा के राजा संसार चन्द ने नगरकोट के किले पर अधिकार कर के अपने-आप को पहाड़ी क्षेत्र का एक शक्तिशाली राजा बनने में सफलता प्राप्त की। संसार चन्द जसवां और दातारपुर पर भी अपना प्रभुत्व जमाने लगा। अतः मजबूर होकर जसवां ने भी अन्य पहाड़ी राजाओं के साथ मिल कर संसार चन्द को कांगड़ा के किले में शरण लेने के लिये बाध्य किया। इस समय जसवां का राजा **उमेद सिंह** था। रणजीत सिंह ने जब 1809 ई. में कांगड़ा से गोरखों को भगाया तो जसवां भी उस के आधिपत्य में आ गया। 1815 ई. के शरद ऋतु में रणजीत सिंह ने स्यालकोट में अपनी सभी सेनाओं, अधिकारियों तथा अपने अधीन सभी राजाओं को बुलाया। इस आमंत्रण में नूरपुर और जसवां के राजा नहीं आ सके। अतः रणजीत सिंह ने उन पर

भारी जुर्माना लगाया। यह दण्ड इतना भारी था कि जिसे देने में राजा उमेद सिंह असमर्थ था। इस लिये उस ने अपने राज्य को छोड़ दिया और 12,000 रुपये की जागीर स्वीकार की। इस प्रकार से साढ़े छः सौ वर्ष पुराने राज्य का अन्त हुआ। 1846 ई. के पहले सिक्ख युद्ध के पश्चात् जसवां राज्य अंग्रेज़ी राज्य के अधिपत्य में आ गया।

नूरपूर
(Nurpur)

पृथ्वी सिंह के मरने से पहले ही उसका पुत्र फतेह सिंह मर गया था, इसलिये उसके पुत्र वीर सिंह ने नाबालिग होते हुए भी दादा का स्थान 1789 ई. में लिया। राज्य की हालत गोरखा-आक्रमण तक अच्छी चलती रही। जब रणजीत सिंह ने कांगड़ा किले को लेकर पहाड़ी रियासतों पर अपना आधिपत्य जमाया तो नूरपुर का नियंत्रण भी रणजीत सिंह के हाथ में आ गया। 1812 ई. में दीनानगर में आकर रणजीत सिंह ने नूरपुर से 40 हज़ार रुपया कर मांगा।

1815 ई. में रणजीत सिंह ने स्यालकोट में अपने अधीन राजाओं और सरदारों का एक विशाल सैनिक सम्मेलन बुलाया। नूरपुर और जसवां के राजा किसी कारणवश वहां नहीं आये, जिस पर उनके ऊपर इतना जुर्माना किया गया कि वह दे न सके। जसवां के राजा ने जागीर लेकर अपनी रियासत को छोड़ दिया लेकिन वीर सिंह के पीछे अपने पूर्वजों की जबरदस्त परम्परा थी। उसने अपना सब कुछ गिरवी रख, वंश की मूर्तियों और सोने-चांदी के बर्तनों को बेच कर अन्यायपूर्ण जुर्माने को अदा करने की कोशिश की। जब उससे भी पूरा नहीं पड़ा तो लाहौर से राजा को एक सिक्ख सेना के साथ रियासत को हवाले करने के लिये भेजा गया। वीर सिंह ने जागीर लेने से इनकार कर दिया और मौका पाते ही सिक्खों के विरूद्ध विद्रोह कर दिया। जनता ने उसका साथ दिया लेकिन सिक्खों की सुशिक्षित सेना के सामने उनकी एक न चली। अन्त में भेष बदल कर वह पहाड़ी रास्ते से अंग्रेज़ी इलाके में चला गया।

1816 ई. के अन्तिम महीनों में वह रणजीत सिंह के विरुद्ध काबुल के निर्वासित अमीर शाहशुजा के साथ लुधियाना में रहते षड्यंत्र कर रहा था। सिक्खों ने इसकी शिकायत की तो अंग्रेज़ों ने उसे लुधियाना से अन्यत्र जाने के लिये कहा। वह फिर अर्की में जाकर दस वर्ष तक रहा। इस सारे समय में वह अपने पुराने अफ़सरों से गुप्त सम्बन्ध रखता रहा। 1826 ई. में भेष बदलकर वह फिर नूरपुर पहुंच गया। फिर अनुरक्त प्रजा उसके झण्डे के नीचे जमा होने लगी। उसने किले को घेर लिया लेकिन जब लाहौर से एक बड़ी सेना आयी, तो भाग कर अपनी ससुराल चम्बा चला गया। उसकी रानी चम्बा के राजा चढ़त सिंह की बहन थी। डर के मारे चम्बा के राजा ने उसे सिक्खों के हवाले कर दिया और उन्होंने उसे अमृतसर के गोविन्दगढ़ किले में सात वर्ष तक बन्दी रखा। वीर सिंह के बहनोई चम्बा के राजा के ज़ोर देने पर अन्त में 85 हज़ार रुपया देकर बीर सिंह को जुर्माने से मुक्ति मिली। रणजीत सिंह ने उसे रावी के किनारे कठलोट के उर्वर इलाके में 12 हजार रुपये की जागीर देनी चाही, लेकिन अभिमानी राजा ने उसे लेने से इनकार कर दिया। फिर रणजीत सिंह ने अपने प्रधानमन्त्री जम्मू के राजा ध्यान सिंह की मार्फत 25 हज़ार की जागीर देने की इच्छा की। लेकिन अब भी वीर सिंह ने इन्कार कर दिया। वीर सिंह ने डमटाल में अपना निवास स्थान बनाया, और उसकी रानी अपने शिशुपुत्र को लिए चम्बा में रहने लगी। जहां का राजा उन्हें 500 रुपया महीना देता। 1835 ई. से कुछ पहले वह चम्बा में था, जहां यूरोपियन यात्री वीने ने उस से मिल कर उसके मुंह से उस के दुर्भाग्य की कहानियां सुनीं।

1845 ई. के शरद ऋतु में सिक्ख सेना ने अंग्रेज़ी इलाके पर आक्रमण करने के लिए सतलुज नदी पार की परन्तु उसे हार खानी पड़ी। इसकी खबर सारे पहाड़ में फैल गयी और वीर सिंह ने फिर एक बार स्वतन्त्रता का झण्डा उठाया तथा अपनी प्रजा की सहायता से नूरपुर के किले को घेर लिया लेकिन शक्ति और आयु उसका साथ देने के लिए तैयार नहीं थी और वहां अपने पूर्वजों के किले की दीवारों के सामने उस ने अन्तिम सांस ली। उसे यह जानकर सन्तोष हुआ कि शत्रुओं को अंग्रेज़ों ने खत्म कर दिया।

पहली सिक्ख लड़ाई के पश्चात् सतलुज से ले कर सिन्ध तक सारा पहाड़ी प्रदेश अंग्रेज़ों के हाथ आ गया। इस में से सतलुज और रावी के मध्य फैले भू-भाग को अपने अधिकार में रखा और जम्मू और कश्मीर महाराजा गुलाब सिंह को बेच दिया। यह देख कर पहाड़ी राजाओं को बड़ा दुःख हुआ और 1848 ई. में उन्होंने विद्रोह किया, जिसमें वीर सिंह

के बाद पुत्र **जसवन्त सिंह** तथा उस के वज़ीर **राम सिंह** ने प्रमुख भूमिका अदा की। उनकी हार हुई। जसवन्त सिंह को 2,000 की जागीर दे दी गई और उस के वजीर सिंह को पकड़ कर सिंगापुर भेज दिया गया।

गुलेर
(Guler)

भूप सिंह 1790 ई. में गुलेर का राजा बना। वह गुलेर का अन्तिम राजा था। इस समय कांगड़ा के राजा संसार चन्द ने पहाड़ी राज्यों पर अपना प्रभुत्व जमा लिया, जिसके फलस्वरूप गुलेर भी उसके अधिपत्य में आ गया। इसकी यह नीति सब राजाओं को अखरने लगी। अत: उन्होंने एक संघ बनाया जिसमें भूप सिंह ने भी सक्रिय रूप से भाग लिया। इस संघ ने कहलूर के राजा द्वारा गोरखों को कांगड़ा पर आक्रमण करने के लिए आमंत्रित किया। 1806 ई. में गोरखों ने कांगड़ा में प्रवेश किया और 1809 ई. तक उन्होंने कांगड़ा के राजाओं तथा प्रजा को खूब लूटा। इन के अत्याचारों से तंग आकर संसार चन्द ने गोरखों को भगाने के लिए रणजीत सिंह से सहायता मांगी। रणजीत सिहं ने भारी सेना लेकर कांगड़ा में प्रवेश किया और गोरखों को नगरकोट से खदेड़ कर सतलुज के दूसरी ओर भगा दिया तथा स्वयं नगर कोट के किले पर अधिकार कर लिया। इसके साथ ही रणजीत सिंह ने कांगड़ा की पहाड़ी रियासतों पर भी धीरे-धीरे अधिकार कर लिया और गुलेर भी उसके नियन्त्रण में आ गया। कुछ समय तक तो भूप सिंह तथा रणजीत सिंह के संबंध अच्छे रहे और रणजीत सिंह भूप सिंह **को बाबा** कह कर पुकारता रहा परन्तु 1811 ई. में रणजीत सिंह की नीयत बदल गई और उसी वर्ष उस ने **देसा सिंह** को सेना लेकर कोटला के किले पर आक्रमण करने के लिये भेजा। उसने केवल एक सप्ताह के घेराव के बाद ही उसे अपने अधिकार में कर लिया। सन् 1813 ई. में रणजीत सिंह ने पुन: गुलेर पर अधिकार करने के लिए एक और योजना बनाई। उसने राजा भूप सिंह से पठानों के विरुद्ध सहायता मांगी और कहा कि वह एक बड़ी भारी सेना भर्ती कर के भेज दें। जब गुलेर खाली हो गया तब उसने भूप सिंह को लाहौर बुला लिया। लाहौर में कुछ दिन ठहरने के पश्चात् जब वह वापस आने की तैयारी करने लगा तो उसे रणजीत सिंह के संकेत पर उसे बन्दी बना दिया गया और उस से कहा गया कि उसे तभी वापस जाने दिया जायेगा जब वह अपने राज्य को छोड़ने के लिये सहमत हो जाये और अपने पालन-पोषण के लिये जागीर स्वीकार करे। इसके साथ साथ भूप सिंह के उत्तर की प्रतिक्षा किये बिना रणजीत सिंह ने देसा सिंह को दस हज़ार सिक्ख सेना के साथ गुलेर पर अधिकार करने के लिऐ भेज दिया। उसने राजा की अनुपस्थिति में गुलेर को बिना किसी विरोध के खालसा राज्य में मिला दिया। उसके बाद रणजीत सिंह ने भूप सिंह को छोड़ दिया और जागीर के अतिरिक्त बीस हज़ार रुपया वार्षिक उस के जीवन यापन के-लिये लगाया। 1820 ई. में भूप सिंह की मृत्यु हो गई। उसी के साथ ही गुलेर राज्य का भी अन्त हो गया। भूप सिंह के बाद उस का पुत्र शमशेर सिंह उस का उत्तराधिकारी बना।

सिब्बा
(Sibba)

19वीं शताब्दी में सिब्बा रियासत भी सिक्खों के हस्तक्षेप से बच न पाई। 1774 में कांगड़ा के शासक घमंड चन्द की मृत्यु हो गई तब से लेकर 1786 ई. तक अन्य पहाड़ी राज्यों की तरह सिब्बा राज्य भी जस्सा सिंह रामगढ़िया और जय सिंह कन्हैया के लूट खसूट से न बच सका। 1786 ई. में लेकर 1806 ई. तक कांगड़ा के राजा संसार चन्द ने भी इसे दबाये रखा। गोरखों ने जब 1806 ई. में कांगड़ा पर आक्रमण किया तो वहां अराजकता फैली हुई थी इसी का लाभ उठाकर गुलेर के राजा भूप सिंह ने सिब्बा पर 1808 ई. में चढ़ाई कर के इसे अपने राज्य में मिला लिया। परन्तु 1809 ई. में जब रणजीत सिंह ने कांगड़ा से गोरखों को भगा दिया तो अन्य पहाड़ी राज्यों के साथ-साथ सिब्बा पर भी उस का अधिकार हो गया और दस वर्ष बाद उस ने इसे गुलेर से जुदा कर दिया। 1830 ई. में रणजीत सिंह ने इसे पूर्ण रूप से राजा गोविन्द चन्द को लौटा दिया। कहते हैं कि रणजीत सिंह तो इसे भी समाप्त करना चाहता था परन्तु उसके मन्त्री राजा ध्यान सिंह के कहने पर रहने दिया। **इसका कारण यह था कि ध्यान सिंह ने अपने परिवार में सिब्बा की दो राजकुमारियों का विवाह करवा दिया था।**

बाद में रियासत को दो जागीरों में बांट दिया। राजा गोविन्द सिंह को 20,000 रुपये की जागीर और दैवी सिंह को 5,000 रुपये की जागीर दी गई। राजा गोविन्द सिंह की मृत्यु 1845 ई. में हो गई। सिब्बा का अन्तिम राजा राम सिंह 1845 ई. में सिंहासन पर बैठा। उस ने 1848 ई. के दूसरे सिक्ख युद्ध में सिक्खों को सिब्बा किले से भगा दिया। इसके साथ-साथ ही सिब्बा अंग्रेज़ी शासन के नीचे आ गया। राजा राम सिंह की 1874 ई. में नि:सन्तान मृत्यु हो गई।

चम्बा
(Chamba)

1794 में जीत सिंह 19 वर्ष की आयु में चम्बा की राजगद्दी पर बैठा। 1800 ई० में जीत सिंह ने बसौली पर चढ़ाई कर दी और उसे अपने अधीन कर लिया परन्तु युद्ध और लूट मार की क्षतिपूर्ति करने पर बसौली राज्य विजय पाल को लौटा दिया। इस के पश्चात् जीत सिंह ने बलौर में स्थित देवी मल की यात्रा के लिए प्रस्थान किया। राजा बसौली, भादू और राम नगर को भय हो गया कि कहीं वह उन पर आक्रमण न कर दे। इसलिये उन्होंने पचास हजार रुपये भेंट देकर अनुरोध किया कि वह आगे न बढ़े। जब कांगड़ा से मुगलों का प्रभुत्त्व समाप्त हो गया तो वहां का प्रसिद्ध किला पुन: संसार चंद के हाथ आ गया। संसार चंद अन्य राजाओं पर अपना प्रभुत्त्व जमाने लगा। अत: राजा गुलेर, मण्डी, सुकेत, कहलूर आदि के साथ मिल कर नेपाल के गोरखा सरदार अमर सिंह थापा ने कांगड़ा पर आक्रमण किया। चम्बा की ओर से नत्थू वजीर सहायता ले कर आया। कांगड़ा की सेना ने वीरता से मुकाबला किया परंतु वह बराबर युद्ध क्षेत्र में रहने के कारण थक चुकी थी। इसलिए वे गोरखा सेना को पीछे न मोड़ सकी। अंत में संसार चन्द ने अपने भाई फतह चन्द को 1809 ई. में रणजीत सिंह के पास भेजा। रणजीत सिंह की सहायता से गोरखों को भगा दिया गया। समझौते के अनुसार रणजीत सिंह ने किले पर अपना अधिकार कर लिया और उस के साथ 66 गांव भी ले लिये। उस के पतन के साथ दूसरी पहाड़ी रियासतों को भी बड़ी हानि हुई। अंत में 1809 ई० से सभी पहाड़ी रियासतें चम्बा सहित रणजीत सिंह के आधिपत्य में आ गई।

जीत सिंह की मृत्यु के बाद चढ़त सिंह 1808 ई. में 6 वर्ष की आयु में गद्दी पर बैठा। अत: राज काज का काम उस की माता **शारदा रानी** तथा **दीवान नत्थू** ने संभाला। नत्थू, चढ़त सिंह के गद्दी पर बैठने के एक वर्ष पश्चात् ही महाराजा रणजीत सिंह ने जम्मू पहाड़ियों की दो रियासतों **जसरोटा** और **बसौली** को अपने अधीन कर लिया और चम्बा की ओर बढ़ने का प्रयास किया परंतु इस संकट को टालने के लिये वे लोग उपहार ले कर पहले ही उस के पास चले गये। इस से रणजीत सिंह को थोड़ा बहुत संतोष हो गया। उस ने चम्बा पर आक्रमण तो नहीं किया परंतु चम्बा नरेश लाहौर दरबार के प्रभुत्त्व में अवश्य आ गया।

बहुत समय से भद्रवाह भी चम्बा को राज कर देता आ रहा था। 1810 ई० के अंतिम दिनों में वहाँ के राज परिवार में कुछ झगड़ा हो गया, इस के कारण दयापाल को भद्रवाह छोड़ कर भागना पड़ा। उस के पश्चात् गद्दी उसी के सम्बन्धी पहाड़ चंद के हाथ लगी। वह कुछ समय तक तो बराबर चम्बा को राज कर देता रहा परंतु 1820 ई० में उस ने यह कर देना बंद कर दिया। नत्थू वजीर सेना लेकर भद्रवाह गया परंतु हार गया। वह वहाँ से सीधा रणजीत सिंह के पास गया और उससे सहायता देकर दोबारा भद्रवाह पर चढ़ाई की। पहाड़ चंद वहाँ के अपने एक किले को नष्ट कर के वहाँ से भाग गया। भद्रवाह पर चम्बा का अधिकार हो गया। महाराजा रणजीत सिंह ने 1821 ई० में भद्रवाह का परवाना चम्बा को प्रदान किया कर दिया।

जब कांगड़ा रणजीत सिंह के हाथ आया तो उस ने **देसा सिंह** को कांगड़ा का नाजिम नियुक्त कर दिया। उस ने रणजीत की ओर से रेहलू पर अपना अधिकार जताया और सेना ले कर रेहलू किले का घेराव कर दिया। चम्बा की सैनिक टुकड़ी ने डट कर मुकाबला किया। उधर नत्थू ने भी सेना को आदेश भेजा कि वे किले को न छोड़ें। वह स्वयं महाराजा रणजीत सिंह के पास जा कर सिक्ख सेना को वापिस बुलाने का अनुरोध करने लगा। कुछ समय तक तो चम्बा की सेना मुकाबला करती रही परन्तु रानी ने जब स्थिति को बिगड़ते देखा तो किले को छोड़ देने का आदेश दे दिया। रेहलू पर सिक्ख सेना का अधिकार हो गया। नत्थू स्वयं रणजीत सिंह के पास गया और रेहलू के बारे में उससे प्रार्थना की। रणजीत सिंह ने रेहलू तो वापिस नहीं किया परंतु रेहलू के ही रानीताड़ वाले भाग को वापिस कर दिया। यह भाग रानी चम्बा की जागीर थी। नत्थू ने रेहलू के हाथ से निकलने के बदले में रणजीत सिंह से तीस हजार रुपये की वह राशि भी माफ करवा दी, जो चम्बा को प्रति वर्ष नजराने के तौर पर देनी पड़ती थी। महाराजा ने रेहलू के बदले में चम्बा को 1821 ई० में पट्टा दे कर भद्रवाह का भाग भी दे दिया

और भद्रवाह के पहाड़ चंद को तीन हजार की जागीर दे दी। 1820-25 ई० में पाडर में स्थित चम्बा के रत्नू नामक एक अधिकारी ने जस्कर पर आक्रमण कर के उसे चम्बा के आधिपत्य में ले लिया। उस समय यह लद्दाख के अधीन था। 1835 ई० में जम्मू के महाराज **गुलाब सिंह** ने अपने एक योग्य सेनानी **जोरावर सिंह कहलूरिया** को लद्दाख अभियान के लिये भेजा। लद्दाख विजय के पश्चात् जब उस की सेना वापिस लौट रही थी तो उस ने सेना की टुकड़ी को लखपत राय के नेतृत्व में जस्कर को भी अपने अधिकार में करने के लिये भेजा। अपना कार्य सम्पन्न करने के पश्चात् वह टुकड़ी उमासी घाटी को पार कर के पाडर होती हुई जम्मू की ओर चल पड़ी। कहते हैं कि उनकी चम्बा के क्षेत्र को हथियाने की कोई इच्छा नहीं थी परंतु पाडर के लोगों को उन पर संदेह हो गया और वे उन का विरोध करने लगे। चम्बा के अधिकारी रत्नू ने लोगों को भड़काया और फलस्वरूप डोगरा सैनिकों को पकड़ कर चम्बा भेज दिया। जोरावर सिंह 1836 ई० में इस अपमान का बदला लेने के लिये तीन मास तक नदी के उस पार रुका रहा। अंत में नदी में नीचे की ओर झूला लगा कर अपनी सेना को पार उतार दिया। रात के समय आगे बढ़ कर चतरगढ़ में प्रवेश किया। **चतरगढ़** को ध्वंस कर उस का नाम **गुलाबगढ़** रखा और उसे जम्मू के साथ मिला लिया। रत्नू को पकड़ कर जम्मू भेज दिया गया। 1836 ई० में ही जोरावर सिंह कहलूरिया ने भद्रवाह पर आक्रमण किया परंतु चम्बा की सेना ने किले को नहीं छोड़ा और मुकाबला करती रही। इतने में चम्बा से एक और टुकड़ी आ पहुंची और डोगरे वापिस हट गये। चढ़त सिंह की मृत्यु 1844 ई० में 36 वर्ष शासन करने के पश्चात् 42 वर्ष की आयु में हुई।

चढ़त सिंह की मृत्यु के बाद रियासत के अधिकारियों ने **श्री सिंह** को पांच वर्ष की आयु में गद्दी पर बैठा दिया। राज्य का कार्यभार श्री सिंह की माँ जो कटोच की राजकुमारी थी, अपने मंत्री **बाघा** की सहायता से चलाती रही। कुछ समय के पश्चात् श्री सिंह को चाचा जोरावर सिंह के बारे में कुछ संदेह हो गया और राज माता ने उसे बन्दी बनाने का प्रयास किया परंतु वह भाग कर भद्रवाह चला गया। उस के भाई राजा चढ़त सिंह ने उसे अपने ही जीवन काल में भद्रवाह का राजा बना दिया था। वहां से वह जम्मू चला गया, जहां उस की मृत्यु 1845 ई० में हो गई।

मण्डी
(Mandi)

1788 ई. से लेकर 1826 ई. तक ईश्वरी सेन मण्डी का शासक रहा। उसके काल में 1792 ई. में कांगड़ा के शासक संसार चन्द ने मण्डी पर चढ़ाई की और उस पर अधिकार कर लिया। उसने ईश्वर सेन को पकड़कर सुजानपुर टीहरा में 12 वर्ष तक बन्दी बना कर रखा। जिसे बाद में गोरखों ने जेल से मुक्त करवाया। ईश्वर सेन ने कहलूर की सहायता से सुकेत के शासक से अपने छ: दुर्गों तथा हटली के क्षेत्र को वापिस छीन लिया। जब रणजीत सिंह का पहाड़ी क्षेत्रों पर आधिपत्य स्थापित हो गया तो उसने मण्डी के शासक से 30 हजार रुपये राज कर लगाया। तत्पश्चात् कांगड़ा के रणजीत सिंह के सूबेदार देसा सिंह मजीठिया ने मण्डी के राजकर को बढ़ा कर एक लाख रुपया कर दिया। बाद में यह कर घटा कर 50 हजार रुपये कर दिया गया। इसी बीच ईश्वर सेन तथा उसके भाई जालिम सिंह के बीच अनबन हो गई। अत: ज़ालिम सिंह ने महाराजा रणजीत सिंह को मना लिया कि वह उसे मण्डी का राजा बना देगा जिसके बदले में ज़ालिम सिंह महाराजा रणजीत सिंह को एक लाख रुपये राज कर देगा परन्तु बाद में दोनों भाइयों में सुलह हो गई। 1826 में जालिम सेन मण्डी का शासक बना, जिसे लाहौर दरबार को एक लाख रुपये राजकर देना पड़ा। बाद में इसे घटाकर 75 हज़ार रुपये कर दिया गया।

कुल्लू
(Kullu)

प्रीतम सिंह की 1806 ई. में मृत्यु हो गई। तत्पश्चात् विक्रम सिंह 1806 ई. में गद्दी पर बैठा। उसके गद्दी पर बैठते ही मण्डी के राजा ईश्वरी सेन (1788-1826) ने कुल्लू से **देओगढ़, मस्तपुर** और सायी के किले जीत कर वापस ले लिये। इस अवधि में मध्य हिमाचल की नेपाल में एक नई शक्ति गोरखा के नाम से प्रसिद्ध हुई। गोरखों ने नेपाल से पश्चिम की ओर बढ़ने का प्रयास किया और इस अभियान में उन्होंने पहले कुमाऊं, फिर गढ़वाल और बढ़ते-बढ़ते 1803 ई० तक सतलुज तक के सभी पहाड़ी क्षेत्र पर अधिकार कर लिया और यहां के छोटे-छोटे पहाड़ी राजाओं को राज कर देने पर बाध्य किया।

गोरखों ने कुल्लू के राजा विक्रम सिंह से भी सांगरी के भाग के लिये कर वसूल किया। सम्भवत: यह कर उगाहन 1815 ई० तक चलता रहा, जब 1815 ई० के आंगल-गोरखा युद्ध के परिणामस्वरूप गोरखों को यह क्षेत्र खाली करना पड़ा और अंग्रेजी सरकार ने राजा को सांगरी का पट्टा प्रदान किया।

विक्रम सिंह कांगड़ा के राजा संसार चन्द का समकालीन था। संसार चन्द ने आस-पास के सभी राजाओं को दबा रखा था और उन से कर वसूल करता था। अत: विक्रम सिंह भी कूल्लू क्षेत्र के लिये संसार चन्द को कर देता था। दूसरी तरफ पंजाब की ओर से महाराज रणजीत सिंह (1780-1839 ई०) भी पहाड़ों की ओर अपने पांव फैला रहा था। उस ने संसार चन्द के कहने पर 1809 ई० में कांगड़ा के किले पर आक्रमण कर के गोरखों को वहां से भगा दिया और स्वयं उस पर अधिकार कर लिया। इस के पश्चात् सिक्खों ने पहाड़ी राजाओं से कर उगाहने के लिये वहां भेजा, जो 40,000 रुपये लेकर लाहौर लौट गया। तीन वर्ष के बाद रणजीत सिंह ने पुन: कुल्लू से 50,000 रुपये कर के रूप में मांगे, जिसे देने में कुल्लू ने अपनी असमर्थता प्रकट की वह कुल्लू छोड़ कर ऊपर पहाड़ों में चला गया। रणजीत सिंह ने **दीवान चन्द** को सेना लेकर भेजा। जब वह बजौरा के पास पहुंचा तो राजा ने सिक्खों से बातचीत करनी आरम्भ की। सिक्ख सेना ने सुलतानपुर नगर में प्रवेश किया और उन्होंने राजा के महलों तथा नगर को लूटा। अन्त में राजा ने जैसे तैसे कर के यह पूंजी जोड़ी और सिक्ख सेना को कुल्लू से वापस जाने को तैयार किया। 1816 ई० में राजा विक्रम सिंह की मृत्यु हो गई।

विक्रम सिंह की विवाहिता रानी से कोई सन्तान नहीं थी। अत: उसकी मृत्यु के बाद 1816 ई० में उस की रखैल (ख्वास) का पुत्र **अजीत सिंह** गद्दी पर बैठा। इस से कुल्लू के प्रभावशाली वजीर रुष्ट हो गये और उन्होंने राजा के चाचा **किशन सिंह** को उकसाया। कांगड़ा के राजा संसार चन्द को भी बड़ी ईर्ष्या हुई क्योंकि वह अपने-आप को पहाड़ी राजाओं में सर्वोत्तम मानता था। अत: उस ने भी किशन सिंह को अजीत सिंह के विरुद्ध भड़काया और कहा कि गद्दी का अधिकारी वही है। संसार चन्द ने किशन सिंह के लिये कांगड़ा में एक नई सेना इकट्ठी करने में सहायता की, जिससे वह कुल्लू पर आक्रमण कर सके। किशन सिंह ने कुल्लू पर चढ़ाई कर दी। अजीत सिंह की हार हुई और वह भाग कर मण्डी चला गया। वहां पर मण्डी की सहायता से शीघ्र ही एक और सेना लेकर वह लौट आया। किशन सिंह की पराजय हुई और उसे बन्दी बना लिया गया। कांगड़ा के सैनिकों की खूब पिटाई हुई और उन्होंने पहाड़ों पर भाग कर अपनी जान बचाई। इस कठिन समय में मण्डी ने कुल्लू की जो सहायता की, उस के बदले में मण्डी के राजा ईश्वरी सेन (1788-1826ई०) ने कुल्लू से दो किलों तथा चौहार के इलाके को, जिस पर कुल्लू ने कांगड़ा के राजा संसार चन्द की सहायता से 1792 ई० में अधिकार कर रखा था, वापस ले लिया। किशन सिंह की थोड़े समय के बाद मृत्यु हो गई।

काबुल का अमीर शाह शुजान बहुत समय से लाहौर में रणजीत सिंह का बन्दी था। 1815 ई० में वह वहां से भाग गया और किश्तवाड़ में छिप कर रहने लगा। दो वर्ष के पश्चात् जब रणजीत सिंह को उस का पता चला तो वह पुन: पकड़े जाने के भय से अंग्रेजी सत्ता से शरण मांगने की इच्छा से कुल्लू होता हुआ भारत आया। कुल्लू के लोगों ने उसका बड़ा आदर सत्कार किया। रणजीत सिंह को जब इस बात का पता चला तो उसने नाराज होकर कुल्लू पर 80,000 रुपये का दण्ड लगा दिया जो कुल्लु ने दे दिया गया।

1839 में महाराजा रणजीत सिंह की मृत्यु हो गई। 1840 ई० में सिक्खों की एक सेना जनरल बंचूरा के नेतृत्व में मण्डी पर आक्रमण करने के लिये भेजी गई। इस सेना का बहुत थोड़ा विरोध किया गया और राजा **बलवीर सेन** को बन्दी बना कर अमृतसर में गोविन्दगढ़ के किले में कैद कर दिया गया। उधर कुल्लू में राजा के **तुलसू नेगी** नामक विश्वासपात्र ने राजा को सराज के वजीर कपूरू या **कपूर सिंह** जो दयार परिवार से था, के विरुद्ध भड़काया और उसे मारने का यत्न भी किया गया परन्तु वह बच गया। इस से रुष्ट हो कर कपूरू ने मण्डी में आये सिक्खों को कुल्लू पर आक्रमण करने के लिये उकसाया। इधर सिक्ख पहाड़ों में पहले ही बहुत भीतर तक पहुंच चुके थे। वे भी इस अवसर से लाभ उठाना चाहते थे। अत: उन्होंने बहाना बनाया कि कुल्लू के राजा ने मण्डी की सहायता करनी चाही थी। इसलिये सरदार सिंधनवाला को सेना लेकर कूल्लू की ओर भेजा। सेना का कोई विरोध नहीं किया गया। सिक्ख सेना सुलतानपुर तक बढ़ती चली गई। राजा ने भी यह सोचकर कि पहले की भान्ति सिक्ख सेना सुलतानपुर को तहस-नहस न कर दे, उन से अच्छे सम्बन्ध बनाये रखना उचित समझा। कुछ समय पश्चात् सिक्खों ने राजा को अपने यहां आमंत्रित किया परन्तु वहां पर उसे बन्दी बना लिया। बाद में उसे बताया गया कि उसे तभी मुक्त किया जायेगा

यदि वह सारी कुल्लू रियासत सिक्खों के लिये छोड़ दे। बदले में उसे वजीरी परौल की जागीर भी दे दी जाएगी। इस के बाद सिक्ख नेता को सराज पर अधिकार करने के लिये भेजा गया। वे राजा को भी साथ ले गये। उन्होंने राजा के साथ दुर्व्यवहार किया। इसे कुल्लू के लोग सहन न कर सके। अत: उन्होंने राजा को सिक्खों के चंगुल से मुक्त करने की योजना बनाई, जिस में मुख्य भूमिका उसी के रुष्ट वजीर कपूरू ने निभाया। उस ने बहुत से आदमियों को इकट्ठा किया और उन्हें तुंग किले से नीचे जंगल में छिपा दिया। सिक्ख सेना जब तंग मार्ग से लौट रही थी तो ऊपर घने वृक्षों के बीच छिपे सराजियों ने एकदम सिक्ख सेना पर धावा बोल दिया। इस प्रकार राजा को छुड़ा लिया गया और उसे साथ लेकर शीघ्र ही पहाड़ पर चढ़ गये। बाद में ऊपर से उन्होंने बची-खुची सेना पर पत्थर गिराये और गोलियां चलाई। सिक्ख सेना घबरा कर वापस किला तुंग में चली गई और यहां दो दिन तक रही परन्तु खाद्य सामग्री समाप्त होने पर वह बाहर आई और नीचे घाटी की ओर बढ़ी। इस बार भी उन पर पहाड़ों पर से आक्रमण किया गया। भूख-प्यास के मारे, रास्ते का ठीक पता न होने तथा ऊपर पहाड़ों पर से बार-बार आक्रमण होने के कारण बहुत से सिपाही मर गये। कुछेक ही अपनी जान बचा कर वापस लौट सके। यह घटना 1840 के वसन्त ऋतु की है। इसी अवधि में राजा के शुभ-चिंतक उसे सतलुज नदी के पास सांगरी के इलाके में ले गये, जो 1815 के गोरखा युद्ध में अंग्रेज़ों के संरक्षण में आ गया था। यह क्षेत्र सिक्खों के प्रभाव से बाहर था। राजा अजीत सिंह की यहीं पर सितम्बर 1841 ई० में मृत्यु हो गई।

लोगों को जब सराजियों की विजय का पता चला तो वह सुलतानपुर के आस पास पहाड़ों में एकत्रित हो गये और अजीतसिंह की दो रानियों को जो सुलतानपुर के महलों में बन्दी थी, छुड़ाने का यत्न करने लगे। परन्तु सिक्ख सेना के आगे वह कुछ न कर सके। सराजियों से बदला लेने के उद्देश्य से सिक्खों ने एक सेना सराज भेजी। वहां के लोग गांव को छोड़कर पहाड़ों में भाग गये। सिक्ख सेना ने वहां पर लूट मार की और कुछ गांवों को जला कर वापिस चले आये। अन्त में सिराज के इलाके को उन्होंने राजा मण्डी को 32,000 रुपये वार्षिक राज कर पर दे दिया। कुल्लू के शेष भाग के प्रबन्ध और कर वसूल करने के लिये सिक्खों ने कारदार नियुक्त किया और उसकी सहायता के लिये वहां सिक्ख सेना की टुकड़ी रखी। 1841 ई० की शरद ऋतु में राजा अजीत सिंह की दो रानियों ने अपने महल के नीचे सुरंग खोद कर वहां से भाग कर पहाड़ों में शरण ली। जब वे राजा के पास शांगीरी जा रही थीं तो उन्हें मार्ग में राजा की मृत्यु का पता चला और वे वहां से ही वापस अपने महल सुलतानपुर लौट आईं।

19वीं शताब्दी में सिक्खों, गोरखों तथा अंग्रेज़ों के पहाड़ी रियासतों से सम्बन्ध
(Relations of the Sikhs, the Gorkhas and the British with the Hill States)

19वीं शताब्दी के आरम्भ में पहाड़ी रियासतों में तीन प्रमुख शक्तियां सिख, गोरखा तथा अंग्रेज उभर रही थीं तथा रियासतों पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने का प्रयास कर रही थीं। पंजाब में सिखों की विभिन्न मिसालों या सैन्य दलों ने पंजाब के विभिन्न स्थानों पर अधिकार जमाना आरम्भ कर दिया। नेपाल में गोरखे अपना राज्य स्थापित करने के बाद कश्मीर तक अपना राज्य स्थापित करने के स्वप्न लेने लगे। अंग्रेज़ समस्त भारत पर अधिकार करने के उद्देश्य से पंजाब के मैदानी तथा पहाड़ी क्षेत्रों पर अधिकार करना चाहते थे। इस प्रकार तीनों शक्तियां पहाड़ी रियासतों में हस्तक्षेप करने लगी थी।

सिख तथा पहाड़ी राज्य
(The Sikhs and the Hill States)

पंजाब के पहाड़ी राज्यों में सिखों का हस्तक्षेप उस समय दृष्टिगोचर होता है, जब जस्सा सिंह रामगढ़िया ने उत्तर की ओर छापे मारने शुरू कर दिये तथा **कांगड़ा, नूरपुर, चम्बा, बसौली** तथा **मण्डी** के शासकों से कर वसूल करना शुरू कर दिया। परन्तु जस्सा सिंह का यह प्रभुत्व बहुत समय तक स्थापित न रहा क्यों कि उसका जय सिंह कन्हैया से बटाला की लूट के बटवारे के प्रश्न पर झगड़ा हो गया। इस लड़ाई में जस्सा सिंह की हार हुई। इस झगड़े का लाभ उठा कर पहाड़ी रियासतों के शासक पुन: स्वतंत्र हो गए।

संसार चन्द के कांगड़ा की गद्दी पर बैठने के समय पहाड़ी तथा मैदानी दोनों ही भागों में अराजकता का वातावरण था,

जिसका लाभ उठाकर सिख पंजाब में लूटमार करने लगे थे। कांगड़ा रियासत भी उनकी लूटमार की गतिविधियों से बच नहीं गई थी। कांगड़ा का किला अभी भी मुग़ल सामन्त सैफ खां के अधिकार में था, जिसे संसार चन्द उसके चंगुल से छुड़ाना चाहता था। इस कार्य की पूर्ति के लिए संसार चन्द ने जय सिंह कन्हैया से सहायता माँगी। अत: संसार चन्द तथा जय सिंह कन्हैया की साझी सेनाओं ने 1781 में किले को घेर लिया तथा एक वर्ष तक किले को घेरे रखा। एक वर्ष के बाद सैफ अली खां की मृत्यु हो गई तथा किले पर संसार चन्द तथा जय सिंह की सेनाओं का कब्ज़ा हो गया। जय सिंह ने किला संसार चन्द को देने की अपेक्षा उस पर अपना अधिकार जमा लिया। चार वर्ष तक कांगड़ा के किले पर जय सिंह का अधिकार रहा।

संसार चन्द किसी भी प्रकार से कांगड़ा का किला प्राप्त करना चाहता था। इसी बीच शुकरचकिया मिसल के सरदार महा सिंह तथा जय सिंह के बीच जम्मू की लूट को लेकर झगड़ा हो गया। संसार चन्द इस मौके का लाभ उठाना चाहता था। अत: उसने महा सिंह तथा जस्सा सिंह रामगढ़िया को साथ मिलाकर जय सिंह से युद्ध छेड़ लिया। जय सिंह छ: महीने तक लड़ता रहा, परन्तु अन्त में उसने किला छोड़ दिया। इस प्रकार जय सिंह का पहाड़ी राज्यों से प्रभुत्व समाप्त हो गया और 1786 में कांगड़ा का किला कटोच राजा संसार चन्द को पुन: मिल गया।

कांगड़ा के किले पर अधिकार करने के बाद संसार चन्द अपने प्रभाव को बढ़ाने के लिए पहाड़ी राजाओं को आतंकित करने लगा और सम्राट बनने के स्वप्न देखने लगा, परन्तु रणजीत सिंह ने उसकी एक न चलने दी। असफल होकर उसने कहलूर (बिलासपुर) पर अपना अधिकार जमा लिया। डर के मारे पहाड़ी राजाओं ने एक संयुक्त संघ बना लिया। संसार चन्द ने 1804 ई. में होशियारपुर और फगवाड़ा को भी विजय करने का प्रयत्न किया था। केवल यही नहीं उसने बहुत से पहाड़ी राजाओं को भी तंग किया। तब बिलासपुर के राजा ने गोरखों से सहायता मांगी। जल्दी ही गोरखा सेनापति **अमर सिंह थापा** ने कांगड़ा को आ घेरा। मजबूर हो कर संसार चन्द को रणजीत सिंह से सहायता मांगनी पड़ी। इस सहायता के बदले में वह रणजीत सिंह को कांगड़े का किला भी सौंपने को तैयार हो गया। जल्दी ही 1809 ई. में महाराजा रणजीत सिंह ने संसार चंद की सहायता करने के लिए विशाल सेना अपने सेनापति मोहकम चंद के अधीन कांगड़ा भेजी। सिक्ख सेना को देखकर अमर सिंह थापा पीछे हट गया। इस प्रकार 1809 ई. में कांगड़ा के किले पर रणजीत सिंह का अधिकार हो गया। रणजीत सिंह को समझौते के अनुसार 66 गांव भी मिले।

1809 ई. में गोरखों की पराजय के बाद **कुटलैहड़** सिक्खों के अधीन आ गया। रणजीत सिंह ने कोटवालवाह किले को घेर लिया तथा राजा नारायण पाल ने डटकर किले की रक्षा की। अन्तत: कुटलैहड़ के राजा ने 10,000 रुपये की जागीर लेकर किले को रणजीत सिंह को दे दिया।

1811 ई. में सिखों ने **कोटला** का किला भी जीत लिया। रणजीत सिंह ने 1813 ई. में **हरिपुर** (गुलेर) का राज्य अपने अधीन कर लिया **नूरपुर** और **जसवाँ** के राजाओं को भी राज्य से हाथ धोना पड़ा। **सिब्बा** राज्य ने भी अपना किला सिखों को सौंप दिया और करदाता राज्य बन गया। रणजीत सिंह ने सिरमौर में नरैनगढ़ के घेरे की भी आज्ञा दी थी।

राजा गोविन्द चन्द ने भी कहलूर के राजा का समर्थन करते हुए 1806 ई. में गोरखों को कांगड़ा पर आक्रमण करने के लिए सहयोग दिया। गोरखों को रणजीत सिंह ने 1809 ई. में सतलुज पार भगाने के बाद दातारपुर पर नियन्त्रण कर लिया। 1818 ई. में गोविन्द चन्द की मृत्यु के बाद जगत चन्द राजा बना। रणजीत सिंह ने उसे कुछ समय बन्दी बनाकर रखा तथा उसे राज्य छोड़ने पर विवश किया। फिर उसे जागीर सौंप दी।

दस वर्ष के बाद उसने इसे गुलेर से अलग कर दिया। 1830 ई. रणजीत सिंह ने अपने मन्त्री **ध्यान सिंह** के कहने पर सिब्बा को गोविन्द चन्द को लौटा दिया। 1815 ई. में रणजीत सिंह ने स्यालकोट में अपने करद राजाओं और सरदारों का सम्मेलन बुलाया। नूरपुर तथा जसवां के शासक किसी कारण इस सम्मेलन में उपस्थित नहीं हो सके। इसके लिए इन पर इतना जुर्माना किया गया कि वह दे न सके। जसवां के राजा ने जागीर लेकर अपना राज्य छोड़ दिया। वीर सिंह अपनी वंशीय परम्परा को बचाने के लिए अपना सब कुछ गिरवी रखकर भी जुर्माने को नहीं दे सके। रणजीत सिंह ने नूरपुर के नियन्त्रण के लिए लाहौर से सेना भेज दी। नूरपुर पर सिक्खों का कब्ज़ा हो गया।

1840 ई. में जनरल वंचूरा के नेतृत्व में सिखों ने मण्डी पर आक्रमण के लिए सेना भेजी गई। वे राजा बलबीर सेन (मण्डी) को बन्दी बनाकर गोविन्दगढ़ (अमृतसर) ले गए। कुल्लू में भी सिक्खों के बढ़ते प्रभाव को देखते हुए कुल्लू के

राजा के विश्वासपात्र व्यक्ति **तुलसू नेगी** ने राजा को राज के वजीर **कपूर सिंह** के विरुद्ध भड़का दिया। कपूर सिंह ने मण्डी में सिक्खों के साथ मिलकर कुल्लू पर आक्रमण करने के लिए प्रेरित किया। कुल्लू के राजा अजीत सिंह के विरुद्ध मण्डी के राजा को सहायता देने का आरोप लगाकर सिक्खों ने सिंघनवाला के नेतृत्व में कुल्लू पर धावा बोल दिया। राजा सिंघनवाला की बातों में आ गया। अजीत सिंह की सिंघनवाला के साथ अच्छे सम्बन्ध बनाने की कोशिश असफल हुई। कुछ समय के बाद अजीत सिंह को सिक्ख सेना ने बन्दी बना लिया। राजा को कुल्लू राज्य सिक्खों को देने के लिए बाध्य किया गया। अजीत सिंह को बहुत अपमानित होना पड़ा। कुल्लू के लोग तथा वजीर कपूर इस अपमान को सहन नहीं कर सके।

इस प्रकार 1809 में सिक्खों तथा अंग्रेज़ों के बीच हुई अमृतसर की सन्धि से लेकर रणजीत सिंह की 1839 ई. में मृत्यु तक कोटला, गुलेर, जसवां, नूरपुर, दातारपुर, कुल्लू आदि रणजीत सिंह के आधिपत्य में रहे और वह उनसे राज कर लेता रहा। 1839 में रणजीत सिंह की मृत्यु के बाद सिक्खों की शक्ति कमज़ोर पड़ गई और उनमें आपसी झगड़े तथा संघर्ष होने लगे। इसका लाभ उठाकर अंग्रेज़ों ने 1845 ई. में सिक्खों के साथ युद्ध छेड़ लिया, जो 1846 ई. में अंग्रेज़ों की विजय के साथ समाप्त हुआ। इस युद्ध के बाद कांगड़ा की पहाड़ी रियासतें अंग्रेज़ों के अधिकार में आ गईं।

2. गोरखा और पहाड़ी राज्य
(Gorkhas and the Hill states)

नेपाल में गोरखों ने अपना राज्य स्थापित करने कें बाद अपना ध्यान उत्तर की ओर लगाया तथा नेपाल से कश्मीर तक को अपने अधिकार में लेने का प्रयास करने लगे। 1790 ई. में नेपाल के गोरखा राजा **रण बहादुर** ने **कुमाऊं** पर आक्रमण करने के लिए **अमर सिंह थापा** और **हर्क देव जोशी** के नेतृत्व में एक सेना भेजी जिन्होंने शीघ्र ही अल्मोड़ा को जीत लिया। 1792 ई. में गोरखों ने **गढ़वाल** को 25000 रुपये प्रतिवर्ष कर देने के लिए विवश किया।

सिरमौर में कुंवर किशन सिंह के विद्रोह के कारण राजा कर्म प्रकाश की स्थिति बहुत कमज़ोर हो गई थी। इस लिए उसने विद्रोह को दबाने के उद्देश्य से गोरखों से सहायता मांगी। अमर सिंह थापा ने भक्ति थापा को 700 सैनिकों के साथ कर्म प्रकाश की सहायता के लिए भेजा। जामटा के पास हिन्दूर के सैनिकों ने गोरखा सैनिकों को घेर लिया और आत्म-समर्पण करने के लिए मजबूर किया। कहलूर के राजा राम सरन सिंह ने 1804 ई. में कांगड़ा और हिन्दूर से अपने क्षेत्र वापिस दिलाने के लिए गोरखा सेनापति अमर सिंह थापा को आमन्त्रित किया। गोरखा सैनिकों ने अक्तूबर, 1804 ई. में यमुना को पार करके हिन्दूर सेना को **अजमेरगढ़** के किले में पराजित करके **रामगढ़** और **नालागढ़** किले को घेर लिया। राम सरन सिंह को गोरखा सेनाओं ने रामशहर के किले में तीन वर्ष तक घेरे रखा। गोरखों के प्रभाव के कारण राम सरन सिंह उनका मुकाबला करने में असफल रहा। अत: राम सरन सिंह होशियारपुर के पास बसालीतनी में चार मास तक रहा। उसके बाद वह मैदानी भाग में स्थित प्लासी किले में रहने लगा। गोरखों ने राम सरन सिंह से कहलूर के जीते हुए क्षेत्रों को वापिस कर दिया और कहलूर के राजा को बारह ठकुराईयों का आधिपत्य दे दिया।

बलासपुर के राजा ने अपना खोया राज्य वापिस लेने के उद्देश्य से गोरखा सेनापति को बुलाने के लिए अपने दूत **शिवदेव राम** को भेजा। गोरखा पहले से ही सिरमौर के राजा कर्म प्रकाश के निमन्त्रण पर नाहन में विद्यमान थे। बदलते राजनीतिक परिवेश का वे लाभ उठाना चाह रहे थे। अमर सिंह थापा की सेना **1805 ई.** में हिन्दूर के राजा **राम सिंह** को परास्त करते हुए आगे बढ़ी। राम सिंह ने प्लासी के किले में शरण ली। कांगड़ा के राजा संसार चन्द के साथ महलमोरी में 1806 ई. में युद्ध हुआ। संसार चन्द पराजित हो गया। उसने भागकर कांगड़ा किला में शरण ली। महलमोरी गोरखों ने महान चन्द को दे दिया। बारह ठकुराईयों में से महान चन्द को केवल **भज्जी, कोटी** और **धामी** ठकुराईयां दी गईं। शेष ठकुराईयों को गोरखों ने अपने अधीन कर लिया।

राजा विक्रम सिंह के काल में 1806-1816 कुल्लू को भी गोरखा शक्ति का सामना करना पड़ा। कुल्लू सांगरी इलाके के बदले गोरखों ने कर वसूल किया। यह स्थिति 1815 ई. चलती रही, जब गोरखों को अंग्रेज़ों ने पराजित किया तथा सांगरी का पट्टा अंग्रेज़ी सरकार ने वापिस कुल्लू को लौटा दिया।

जुब्बल के राजा परस चन्द की मृत्यु के बाद उसके सौतेले भाई खिंचरू ने राजगद्दी लेने का असफल प्रयास किया। पूर्ण चन्द नाबालिग था। उसका कार्यभार दांगी वज़ीर ने सम्भाला। 1807 ई. में जुब्बल चार भागों -**बढ़ाल, बिटोड़ी, चौपाल**

और बेता में विभक्त था। पूर्ण चन्द एक कमज़ोर शासक निकला। गोरखा आक्रमण के समय पूर्ण चन्द अपनी राजधानी देवरा में ही रहा। गोरखे राणा के वजीर दांगी को पकड़ कर ढाई सौ व्यक्तियों के साथ अर्की ले गए। दांगी ने गोरखों को 15,000 रुपये पुन्दर क्षेत्र के कर के रूप में देने स्वीकार किए। लगभग तीन वर्षों तक गोरखों ने अपने क्रूर, अन्यायपूर्ण तथा स्वार्थी शासन के कारण जुब्बल से पहले वर्ष 22,000 रुपये, दूसरे वर्ष 19,000 रुपये और तीसरे वर्ष 15,000 रुपये कर के रूप में वसूल किए। कर वसूली का कार्य उन्होंने दांगी वजीर को दिया हुआ था।

कांगड़ा के शासक संसार चन्द ने महाराजा रणजीत सिंह की सहायता से 1809 ई. में गोरखों को पराजित कर दिया। इस पराजय के बाद गोरखों ने पहाड़ों की ओर मुँह किया और **क्योंथल** पर अपना अधिकार जमा लिया। क्योंथल का राजा रघुनाथ सैन भाग कर सुकेत चला गया जहां बाद में उसकी मृत्यु हो गई। गोरखों के आक्रमण से पूर्व बुशैहर ने रावींगढ़ किले पर आक्रमण करके किले को अपने नियन्त्रण में कर लिया था। गोरखों ने 1810-1811 ई. में रावींगढ़ किले पर अधिकार कर लिया। किले पर कब्ज़ा करने के बाद गोरखों ने किले की ज़िम्मेदारी **रणसूर थापा** को दे दी तथा गोरखा सैनिकों को वहां तैनात किया। थापा ने हिम्मत सिंह के भाई राणा को **रावींगढ़** का राणा बनाया और अपने अधीन रखा। यह भी उल्लेख है कि रावींगढ़ पर पहले बुशैहर का तथा बाढ़ में गोरखों का नियन्त्रण रहा।

सेनापति **अमर सिंह थापा** के नेतृत्व में गोरखों का विजय अभियान चल रहा था। गोरखा सेना ने जब उत्तर पूर्व की ओर अपना मुँह मोड़ा तो **कोटखाई, बलसन** और **ठियोग** के ठाकुरों ने बुशैहर के राजा की सहायता मांगी। राजा ने अपने वजीर के नेतृत्व में 10,000 आदमियों को भेजा परन्तु सफलता नहीं मिली। राजा उग्र सिंह की 1810 ई. में मृत्यु हो गई। अमर सिंह थापा की सेना ने 1810 ई. में राजधानी **रामपुर** पर अधिकार कर लिया। बुशहर के वजीर, नाबालिग राजा **महेन्द्र सिंह** और राजमाता किन्नौर के गांव चगांव चले गए। गोरखों ने रामपुर में खूब तबाही मचाई और बुशैहर राज्य अभिलेखागार को जला दिया। कामरू स्थित खजाने को लूटने का प्रयास किया। गोरखा सेनाएं जब सतलुज नदी पर बने छोलटु पुल के पास पहुंचीं तो किन्नौर के लोगों ने रात के समय उन पर आक्रमण कर दिया। विपरीत स्थिति को देखकर गोरखा सेना ने वापिस लौटना उचित समझा।

1810-1814 ई. के बीच बुशैहर गोरखों के अधीन रहा। लोग भयभीत होकर कुल्लू और किन्नौर की ओर भाग गये। गोरखों ने हाव पर्वत श्रेणी में हाटू, कुराना, बाघी, नौगढ़, सांगरी और बाहली के किलों पर अधिकार कर लिया। यमुना और सतलुज नदियों के मध्य क्षेत्रों को गोरखों ने अपने अधिकार में ले लिया।

अंग्रेज़ों और गोरखों के बीच पहाड़ी रियासतों के लिए युद्ध (War between British and Gorkhas for Hill states)—1814-15 के आंग्ल-गोरखा युद्ध में अंग्रेज़ों से हार जाने के बाद गोरखों का शिमला के पहाड़ी राज्यों पर आधिपत्य समाप्त हो गया तथा गोरखों के अधिकार वाली सभी पहाड़ी रियासतें अंग्रेज़ों के अधिकार में आ गई।

3. अंग्रेज़ और पहाड़ी राज्य
(The British and the Hill States)

अंग्रेज़ों का पहाड़ी राज्यों में आगमन वहां पर गोरखों के बढ़ते हुए प्रभुत्व के कारण उस समय हुआ जब 1815 ई. में अंग्रेज़-गोरखा युद्ध में अंग्रेज़ों ने गोरखों को पराजित कर दिया और उन्हें पहाड़ी राज्यों से बाहर निकलने पर विवश कर दिया।

चार पाँच सौ सैनिकों की टुकड़ी 5 मार्च, 1815 को जुब्बल की ओर बढ़ी। दांगी वजीर और प्रेम सिंह अंग्रेज़ों के साथ जा मिले। गोरखों को रावींगढ़ किले से खदेड़ने के पश्चात् अंग्रेज़ सरकार के सैनिकों ने किले पर अधिकार कर लिया। गोरखा युद्ध के पश्चात् अंग्रेज़ों ने पुन्दर परगना को अपने पास रखा। बाद में इस क्षेत्र को शिमला के क्षेत्र के बदले क्योंथल के राणा संसार सेन को दे दिया।

सिरमौर नें विद्रोह होने के कारण राजा कर्म प्रकाश ने गोरखों से सहायता माँगी, जिसे उन्होंने स्वीकार कर लिया। गोरखों ने हण्डूर के राजा, विद्रोही सैनिकों और कुंवर किशन सिंह को हरा दिया। कर्म प्रकाश को नाममात्र का राजा बना दिया गया और गोरखों ने सभी अधिकार अपने पास ले लिए। गोरखों ने सिरमौर में अपना डेरा बनाये रखा और काँगड़ा दुर्ग से 1809 ई. में राजा संसार चन्द और सिक्ख सेना द्वारा भगाये जाने के बाद भी **नाहन** और **जयतक** किले को अपना गढ़ बनाये रखा। नालागढ़ के **मलौण** के किले में गोरखों को हराने के बाद अंग्रेज़ों ने सिरमौर तक उनका पीछा किया और अन्ततः अंग्रेज़ों ने 21 मई, 1815 ई. में **जैतक** (जयतक) का किला खाली करवा कर गोरखों को सिरमौर से भी बाहर कर दिया।

रावींगढ़ दुर्ग को बुशैहर के लोगों तथा सेना ने घेर लिया। इसमें गोरखा सेनापति रणसूर थापा था। फ्रेजर के अनुसार बुशैहर सेना में 3000 सैनिक थे। जून 1815 ई. में अमर सिंह थापा के सन्देश पर रावींगढ़ किले में रणसूर थापा ने हथियार डाल दिए और किला अंग्रेज सेना ने नियन्त्रण में ले लिया।

गोरखों को पराजित करने के बाद मड़ौली ठकुराई अंग्रेज़ों के अधीन आ गई, जिसे उन्होंने बिलासपुर का राजा सन सिंह को गोरखा युद्ध में सहायता करने के बदले में दे दिया। मड़ौली की जनता ने इसका विरोध किया। परिणामस्वरूप मड़ौली पुन: अंग्रेज़ों के अधीन हो गई।

ठियोग की ठकुराई पर 1810 ई. में गोरखों का नियंत्रण हो गया था। 1815 ई. में गोरखों की हार के बाद ठियोग भी अंग्रेज़ों के अधिकार में आ गया। गोरखों की पराजय के बाद अंग्रेज़ों को गोरखों के अधीनस्थ राज्य जैसे ब्याट, बलसन, तालागढ़, बाघल, क्योंथल आदि भी अंग्रेज़ों के अधिकार में आ गए।

1815 ई. में गोरखों को पराजित करने के बाद शिमला की बीस पहाड़ी रियासतें अंग्रेज़ों के अधिकार में आ गई, जिन्हें बाद में एक-एक करके सनद प्रदान की गई। गोरखा युद्ध के पश्चात् अंग्रेजों ने अपने अधिकार में आई इन रियासतों को भविष्य में उनकी स्वतंत्रता को बनाए रखने का आश्वासन इस शर्त पर देने का निर्णय लिया कि वे नेपालियों के साथ किसी भी संघर्ष में अंग्रेज़ों का साथ देंगे। अत: अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए जनरल आक्टरेलोनी प्लासी के स्थान पर सभी पहाड़ी रियासतों के शासकों की एक साथ बैठक बुलाई। जिसमें रियासतों के क्षेत्रों को निर्धारित किया जाना था। इसी बैठक के बाद 1815 से 1819 के बीच बिलासपुर, कोटखाई, बाघल और बुशैहर रियासतों को सनद प्रदान की गई और ये रियासतें अंग्रेज़ों के आधिपत्य में आ गईं।

सनद एक प्रकार का प्रमाम पत्र था, जिसमें अंग्रेज़ी सरकार द्वारा रियासतों की रक्षा का वादा किया जाता था तथा उसके बदले में रियासतों को कुछ शर्तों का पालन करना होता था। अंग्रेज़ों द्वारा सनद में प्राय: निम्नलिखित शर्तें लगाई जाती थीं -

1. रियासतों के शासक अंग्रेज़ों के व्यापारियों को व्यापार के लिए मार्ग उपलब्ध करवाएँगे।
2. वे अंग्रेज़ों का माल ढोने तथा अपने-अपने क्षेत्रों में सड़कें बनाने के लिए बेगार उपलब्ध करवायेंगे।
3. देशी रियासतें अंग्रेज़ी सरकार के प्रमुख के अधीन कार्य करेंगी तथा नकदी के रूप में अंग्रेज़ी सरकार को नज़राना देंगी।
4. यदि किसी भी रियासत का शासक सनद में दी गई शर्तों का पालन नहीं करेगा तो अंग्रेज़ी सरकार उसे उत्तराधिकारी को गद्दी से अपदस्थ कर देगी।
5. रियासतों के लिए अंग्रेज़ी सरकार से मान्यता प्राप्त करना अनिवार्य होगा।
6. रियासती राजाओं को यह भी कहा गया कि वे अपने क्षेत्र में जनता के लिए कल्याणकारी कार्य करेंगे। वे सड़कें बनवायेंगे तथा उनकी सुरक्षा का प्रबन्ध करेंगे। वे कृषि की प्रगति के लिए भी कदम उठाएंगे।
7. सभी रियासतें परस्पर मेल-मिलाप से रहेंगी तथा यदि किसी कारण उनमें परस्पर झगड़ा हो जायेगा तो वे अंग्रेज़ी अदालतों को मध्यस्थ बनायेंगी।

उपरोक्त शर्तों के आधार पर ही अंग्रेज़ों ने पहाड़ी रियासतों को सनदें प्रदान कीं। शिमला की बीस पहाड़ी रियासतों को निम्नलिखित तिथियों को सनदें दी गई:-

1. 6 मार्च 1815 को बिलासपुर के राजा महान चन्द को सनद दी गई।
2. 3 सितम्बर, 1815 को बाघल के राजा जगत सिंह को सनद दी गई।
3. 3 सितम्बर 1815 को हीं कुठार के शासक भूप सिंह को सनद दी गई।
4. 4 सितम्बर 1815 को बघाट के राणा महिन्द्र सिंह को सनद दी गई।
5. 4 सितम्बर 1815 को ही भज्जी के राणा रूद्र पाल को सनद दी गई।
6. 4 सितम्बर 1815 को ही धामी के राणा रूद्र पाल को सनद दी गई।
7. 4 सितम्बर 1815 को ही महलोग के ठाकुर संसार चन्द को सनद दी गई।
8. 4 सितम्बर को ही बेजा के ठाकुर मान चन्द को सनद दी गई।

9. क्योंथल के राजा संसार चन्द को 6 सितम्बर 1815 को सनद दी गई।
10. सिरमौर के राजा फतेह प्रकाश को 21 सितम्बर 1815 को सनद दी गई।
11. 21 सितम्बर 1815 को ही बलसन के ठाकुर जोग राज को सनद दी गई।
12. नालागढ़ के राजा राम सरन सिंह को 20 अक्तूबर 1815 को सनद दी गई।
13. जुब्बल के राणा पूर्ण चन्द को 18 नवम्बर 1815 को सनद की गई।
14. सांगरी के राणा बिक्रमजीत सिंह को 16 दिसम्बर 1815 को सनद दी गई।
15. मांगल के राणा बहादुर सिंह को 20 दिसम्बर 1815 को सनद दी गई।
16. डरकोटी के राणा सुरतेस राम को भी दिसम्बर 1815 को सनद दी गई।
17. कुनिहार के ठाकुर मग्न देव को भी दिसम्बर 1815 को सनद प्रदान की गई।
18. कुम्हारसेन के राणा केहर सिंह को 7 फरवरी, 1816 को सनद प्रदान की गई।
19. बुशहर के राजा महेन्द्र सिंह को 8 फरवरी 1816 को सनद दी गई।
20. थरोच के ठाकुर झोबू को 31 जनवरी 1819 को सनद दी गई।

इस प्रकार शिमला की पहाड़ी रियासतों को अंग्रेज़ों ने सनदें दे कर अपने संरक्षण में ले लिया। अंग्रेज़ों ने इन रियासतों पर नियंत्रण रखने के लिए वह सुपरिंटेंडेंटों, पौलीटिकल एजैंटों और रैज़ीडैंटों की नियुक्ति की। तत्पश्चात् 1815 से लेकर 1845 तक पहाड़ी रियासतों के अंग्रेज़ों के साथ सम्बन्ध मुख्यत: शिकायतों, उत्तराधिकार सम्बन्धी समस्याओं, क्षेत्रीय अवधारणा आदि पर ही केन्द्रित रहे। शिमला की इन पहाड़ी रियासतों पर अंग्रेज़ों का भारत के स्वतंत्र होने तक अधिपत्य स्थापित रहा।

1846 तक अंग्रेज़ों की पहाड़ी राज्यों के प्रति नीति (British Policy towards the Hill states up to 1846)— 1815 में शिमला की पहाड़ी रियासतों पर अधिपत्य स्थापित करने के बाद अंग्रेज़ों ने अपने वचनों का पालन नहीं किया तथा उनका रियासतों में हस्तक्षेप बढ़ता गया। वे अपनी इच्छानुसार रियासतों की सीमाओं को घटाते-बढ़ाते रहे।

अंग्रेज़ों द्वारा शिमला की पहाड़ी रियासतों पर नियंत्रण तथा उन्हें सनद देना (Control of the British over Shimla Hill States and give them Sanads)— आंग्ल-गोरखा युद्ध में गोरखों की पराजय से समस्त शिमला पहाड़ी रियासतें अंग्रेज़ों के अधिकार में आ गईं।

1827 ई. में गवर्नर जनरल **लार्ड एमरहट** शिमला आए। अंग्रेज़ों ने शिमला को उपयुक्त स्थान पाकर क्योंथल के राणा से 12 गांव लिए। इसके बदले में क्योंथल को हाटकोटी के पास रावींगढ़ क्षेत्र के **शराचली** और **गठासू** इलाके दिए। गोरखों के जाने के बाद यह क्षेत्र अंग्रेज़ों के अधीन ही थे। 1830 ई. को समझौते के द्वारा शिमला के 12 गांवों के बदले में इसे क्योंथल को दे दिया था।

1839 में महाराजा रणजीत सिंह की मृत्यु के पश्चात् पंजाब में बड़ी अव्यवस्था फैल गई, जिस के फलस्वरूप 1845 ई० में पहला सिक्ख युद्ध हुआ। सिक्खों को करारी हार हुई। बाद में संधि हुई, जिस के फलस्वरूप मैदानी भाग में जालंधर दोआब और पर्वतीय भाग में सतलुज और ब्यास नदियों के मध्य का पहाड़ी भाग अंग्रेज़ों को मिला। लड़ाई की क्षति पूर्ति के लिए सिक्खों की ओर से डेढ़ करोड़ रुपया अंग्रेजों को देना तय किया गया। सिक्ख दरबार को इतनी बड़ी राशि देनी कठिन हो गई। इसलिये उन्होंने नौ मार्च 1846 ई० को एक और संधि की, जिस के द्वारा ब्यास और सिंध नदियों के मध्य का सारा पहाड़ी भाग एक करोड़ में अंग्रेज़ों को दिया गया और शेष के पचास लाख का नकदी में देने का निर्णय हुआ। 16 मार्च को एक और सन्धि हुई। इस के द्वारा अंग्रेज़ों ने एक करोड़ रुपये के बदले में रावी और सिंध नदियों के मध्य का सारा पहाड़ी भाग जम्मू के गुलाब सिंह को सदा के लिए दे दिया। इसी क्षेत्र में चम्बा भी आता था। एक ओर की सीमा रावी नदी निश्चित की गई। इस समय चम्बा सिक्खों के अधीन था। परन्तु गुलाब सिंह के अधीन रहने को तैयार नहीं थे। बल्कि उन्होंने अजीत सिंह की महाराजा रणजीत सिंह के दिये हुये परवाने के आधार पर भद्रवाह पर भी अपना अधिकार जताया। उधर अंग्रेज लखनपुर पर अपना अधिकार जता रहे थे। ये

दोनों भाग सन्धि के अनुसार अंग्रेज़ों को दिये जाने थे। रावी नदी चम्बा के मध्य भाग से बहती है। इस से चम्बा राज्य दो भागों में बंट जाता है। उस समय यह प्रश्न उठ खड़ा हुआ कि क्या चम्बा का सारा राज्य अंग्रेज़ों द्वारा गुलाब सिंह को दे दिया जाये या उसका केवल रावी के पश्चिम ओर का ही भाग दिया जाए। इसी समय वाधा वजीर लाहौर चला गया और वहां पर **सर हेनरी लारेंस** से मिल कर सारी स्थिति उस को समझाई। अंत में सहमति हुई, जिस के अनुसार गुलाब सिंह को रावी के इस ओर के भाग के बदले में लखनपुर का भाग मिला। साथ में चम्बा ने भद्रवाह के भाग पर अपना अधिकार छोड़कर उसे भी गुलाब सिंह को दे दिया। इस प्रकार से चम्बा की प्राचीन काल से चली आ रही अखंडता को सुरक्षित रखा गया। अत: चम्बा अंग्रेज़ी शासन के आधिपत्य में आ गया। चम्बा पर 12,000 रुपये वार्षिक राज कर लगाया गया। 6 अप्रैल 1848 ई० में अंग्रेज़ी सरकार ने श्री सिंह को एक सनद प्रदान की, जिस के द्वारा चम्बा राज्य को उसे पीढ़ी दर पीढ़ी के लिये प्रदान किया। इस सनद में चम्बा के राजा को यह भी अधिकार दिया गया कि यदि राजा के कोई संतान न हो तो वह अपने भाई को अपना उत्तराधिकारी बना सकता है। 11 मार्च 1862 की सनद में उसे गोद लेने का भी अधिकार दे दिया।

राजा अजीत सिंह की मृत्यु 1841 ई० में सांगरी में हुई। शिमला की पहाड़ी रिसायतों के सुपरिंटेंडेंट **श्री अरसकीन** ने बहुत छानबीन के पश्चात् अजीत सिंह के चचेरे भाई रणबीर सिंह को सिक्खों तथा रानियों की सहमति से राजा बनाने की की सिफारिश की परन्तु उस की मृत्यु हो गई। इस के बाद सिक्खों ने अजीत सिंह के चाचा **ठाकुर सिंह** को नाममात्र का राजा बना दिया और उसे वजीरी रूपी की जागीर दे दी। कुछ समय के पश्चात् उसे भारी राजकर देने की शर्त पर कुल्लू का सारा भाग दिया जा रहा था परन्तु वह डरपोक प्रकृति का था, इसलिये उस ने इस उत्तरदायित्व को लेने से इन्कार कर दिया। केवल सांगरी का भाग ही अजीत सिंह के चाचा जागीर सिंह के हाथ में रहा।

1846 ई० में अंग्रेज़ों और सिक्खों में पहला युद्ध हुआ। इस के परिणामस्वरूप सिन्ध और सतलुज के मध्य का पहाड़ी क्षेत्र अंग्रेज़ों के हाथ आया। अंग्रेज़ों ने जम्मू-कश्मीर का भाग तो महाराजा गुलाब सिंह को बेच दिया परन्तु सतलुज और रावी के बीच का पहाड़ी क्षेत्र लाहौल स्पीति सहित अंग्रेज़ों ने अपने पास रखा। इस प्रकार से कुल्लू का सारा भाग 1846 ई० में अंग्रेज़ों के अधिकार में गया। ठाकुर सिंह को राजा मान लिया गया और उसे वज़ीरीरूपी की जागीर दे कर पूरे राजकीय अधिकार दे दिये।

1852 ई० में ठाकुर सिंह की मृत्यु हो गई और ज्ञान सिंह उस का उत्तराधिकारी बना। इस आधार पर कि वह रखैल का पुत्र था, अंग्रेज़ी सरकार ने उस की पदवी "राजा" से बदल कर "राय" कर दी और उस के राजनैतिक अधिकार समाप्त कर दिये।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न
(Important Questions)

1. उन्नीसवीं शताब्दी में कांगड़ा की राजनीतिक अवस्था का वर्णन करें।
   Discuss the Political condition of Kangra in the 19th century.
2. 19वीं शताब्दी के कांगड़ा के इतिहास का वर्णन करे।
   Explain the history of Kangra of 19th century.
3. संसार चन्द तथा सिक्खों के सम्बन्धों की चर्चा कीजिए।
   Discuss the relation between Sansar Chand and the Sikhs.
4. नूरपुर रियासत तथा सिखों के साथ सम्बन्धों का वर्णन करें।
   Explain the relations between Nurpur state and the Siks.

5. 19वीं शताब्दी के दौरान गुलेर तथा सिब्बा रियासतों की राजनीतिक दशा का वर्णन करें।
   Explain the Political condition of Guler and Sibba states during the 19th Century.
6. 19वीं शताब्दी में चम्बा की राजनीतिक दशा कैसी थी? वर्णन करें।
   What was the Political condition of Chamba during the 19th century? Explain.
7. निम्नलिखित में से किन्हीं दो रियासतों की 19वीं शताब्दी में राजनीतिक दशा का वर्णन करे।
   (क) जसवां (ख) गुलेर (ग) नूरपुर
   Explain the Political condition of any two of the following States in the 19th century:
   (a) Jaswan (b) Guler (c) Nurpur
8. 19वीं शताब्दी के कुल्लू की राजनीतिक अवस्था का वर्णन करें।
   Explain the Political condition of Kullu of 19th Century.
9. 19वीं शताब्दी में सिखों और पहाड़ी रियासतों के सम्बन्धों का वर्णन करें।
   Explain the relations of the Sikhs with the hill states in the 19th Century.
10. 19वीं शताब्दी में गोरखों तथा पहाड़ी रियासतों के सम्बन्धों पर चर्चा कीजिए।
    Discuss the relations of Hill States with the Gorkhas in the 19th Century.
11. 19वीं सदी में अंग्रेज़ों तथा पहाड़ी रियासतों के सम्बन्धों का उल्लेख करें।
    Discuss the relations of the British with the Hill States in the 19th Century.

5 आंग्ल-गोरखा युद्ध (1814-15 ई.)
(ANGLO-GORKHA WAR, 1814-15 AD)

भूमिका (Introduction)

1813 ई. में लॉर्ड हेस्टिंग्ज भारत का गवर्नर जनरल बन कर भारत आया। उसे सर्वप्रथम नेपाल के गोरखों से युद्ध करना पड़ा। नेपाल भारत के उत्तर में एक पहाड़ी भू-भाग पर फैला हुआ शक्तिशाली राज्य था। गोरखा जाति वीर तथा लड़ाकू थी। 1804 ई. में नेपाल के गोरखों ने हिमाचल की रियासतों जैसे कमाऊं, गढ़वाल, सिरमौर आदि पर अपना अधिकार जमा लिया था और गोरखा अमर सिंह थापा ने अपना राज्य गंगा से सतलुज तक फैला लिया था। अमर सिंह थापा की विस्तारवादी नीति से अंग्रेज चिन्तित थे। अत: अंग्रेज़ों और गोरखों के बीच 1814-15 ई. में एक युद्ध हुआ जिसमें अंग्रेज़ों की विजय हुई और उनका पहाड़ी राज्यों पर नियंत्रण हो गया।

आंग्ल-गोरखा युद्ध
(Angle Gorkhe War)

अंग्रेज़ 1814 ई. से पूर्व भी नेपाल के सम्पर्क में आ चुके थे। 1762 ई. में पहली बार बंगाल के नवाब **मीर कासिम** ने एक सेना नेपाल पर आक्रमण करने के लिए भेजी थी मगर उस सेना को पराजित होना पड़ा था। कुछ समय के पश्चात् बेटहा के अंग्रेज व्यापारिक रेजीडैन्ट ने पुन: नेपाल पर एक असफल आक्रमण किया। 1792 ई. में अंग्रेज़ों ने नेपाल-आंग्ल गोरखा युद्ध के कारण से एक व्यापारिक **सन्धि** की परन्तु यह सन्धि विशेष लाभकारी सिद्ध न हुई। 1802 ई. में **कैप्टन नौक्स** तथा **कर्नल कीरपैट्रिक** के नेतृत्व में एक प्रतिनिधि मण्डल भेजा गया। यह मण्डल भी असफल रहा।

लॉर्ड हेस्टिंग्ज के भारत आने के समय नेपाल एक शक्तिशाली राज्य था। इसलिए अंग्रेज़ों ने अपना ध्यान नेपाल के गोरखों की ओर देना शुरू किया।

युद्ध के कारण (Causes of the war)- अंग्रेजों और गोरखों दोनों में तनाव के कारणों का वर्णन इस प्रकार है:-

1. **सीमा का अनिश्चित होना** (No definate boundary)-1801 ई. में अंग्रेज़ों ने गोरखपुर पर जब अपना अधिकार कर लिया तो उन की राज्य की सीमा नेपाल से जा मिली थी परन्तु वह अभी अस्पष्ट और अनिश्चित थी। अत: अनिश्चित सीमा क्षेत्रों के होने से दोनों शक्तियों में संघर्ष होना अनिवार्य था।

2. **अमर सिंह थापा द्वारा पहाड़ी रियासतों पर अधिकार** (Occupation of Hill states by Amar singh Thapa)-अमरसिंह थापा ने 1810 ई. में **नालागढ़, जुब्बल, पुन्दर और धामी** को अपने अधीन कर लिया। मई, 1811 ई. में उसने बुशैहर की सेना को हराकर **ठियोग, बलसन, कोटगढ़, जुब्बल** और **रामपुर** को अपने अधिकार में ले लिया। इसी दौरान रामपुर-बुशैहर के राजा उग्रसिंह की अचानक मृत्यु हो गई और रानी अपने अल्पायु युवराज के साथ कामरू राजनिवास (किन्नौर) में रहने लगी। 1812 ई. में गोरखा सैनिक शासक अमर सिंह थापा ने रामपुर में रह कर आस-पास के अन्य राज्यों और ठकुराइयों को अपने अधीन कर लिया। गोरखों की इन कार्रवाइयों से अंग्रेज़ चिन्तित थे।

3. **थापा द्वारा पंजाब तथा पहाड़ी क्षेत्रों पर अधिकार करने के और अधिक प्रयास** (More efforts to capture Punjab and Hilly Area by Thapa)-अमर सिंह थापा 1813 ई. तक रामपुर के पास-पास रहा और उसके पश्चात् अर्की चला गया। मेजर **डेविड ऑक्टर लोनी** के नेतृत्व में ब्रिटिश सैनिकों के पहाड़ों पर आक्रमण तक कोई विशेष महत्त्वपूर्ण घटना घटित नहीं हुई। थापा ने सरहिन्द क्षेत्र में कुछ गाँवों पर यह कह कर कि यह क्षेत्र सिरमौर और हिण्डूर के अधीन थे, उन पर अपना अधिकार करना चाहा। डेविड ऑक्टर लोनी ने उनसे कहा कि पहाड़ों की तराई के सारे क्षेत्र वे पहले पहाड़ी राजाओं के अधीन थे अथवा नहीं, अब अंग्रेज़ों के संरक्षण में हैं।

उसने गोरखों से मैदानों में अधिकृत अपने नए प्रदेश का अधिकार छोड़ने और तराई की पहली पर्वत शृंखला में स्थित देहरादून और क्यारदा दून के प्रदेश गढ़वाल तथा सिरमौर के राजवंश को लौटा देने को कहा। गोरखों ने 1813 ई. में छह गांवों पर अधिकार कर लिया। अंग्रेज सेनापति ऑक्टर लोनी ने आश्रित पटियाला और हिण्डूर के राजाओं ने इन्हें अपना बताया। ऑक्टर लोनी ने अमर सिंह थापा का विरोध किया। इस प्रकार अंग्रेजों तथा गोरखों के बीच संघर्ष की सम्भावना बढ़ गई।

4. **अंग्रेजों के व्यापारिक हित** (Trade Interest of the British)-गोरखों की शक्ति के पश्चिम में विकास होने के कारण तिब्बत तक के प्राय: सभी दर्रे गोरखों के अधीन हो गए थे। गोरखों की विदेशी व्यापारियों को बाहर रखने की नीति से ईस्ट इण्डिया कम्पनी के व्यापारियों को पहाड़ी मण्डियों का शोषण करने का अवसर नहीं मिल रहा था। उनका प्रमुख लक्ष्य इन क्षेत्रों से लगान इकट्ठा करना नहीं था अपितु तिब्बत के साथ व्यापारिक आदान-प्रदान को बनाए रखने का था, जहां शॉलों के लिए प्रसिद्ध ऊन मिलती थी। तिब्बत में विश्व के बोरेक्स और कस्तूरी का सबसे बड़ा भण्डार था। पश्चिमी हिमालय के सतलुज नदी की घाटी एक खुले जलमार्ग का निर्माण करती है, जो पंजाब के मैदानों को पश्चिमी तिब्बत के पठारों से जोड़ता है। ईस्ट इण्डिया कम्पनी हिमालय क्षेत्रों से व्यापार करने में रुचि लेने लगी। इस प्रकार अंग्रेजों की 1814 ई. में हिमालय क्षेत्रों में मूल आर्थिक तथा व्यापारिक महत्त्व के कारण रुचि बढ़ गई।

5. **बटवाल और श्योराज पर गोरखों का अधिकार** (Gorkha's occupation of Batwal and Sheoraj)-जब गोरखों ने बटवाल और श्योराज के ज़िलों पर अधिकार कर लिया तो **लार्ड हेस्टिंग्ज** ने 1813 ई. में अपना ध्यान सबसे पहले गोरखों की ओर दिया। क्योंकि ये दोनों जिले पहले अंग्रेज़ों के संरक्षण में थे, इसलिए लार्ड हेस्टिंग्ज यह कैसे सहन कर सकता था कि उन के अधिकार में आये हुए प्रदेशों पर कोई और अधिकार कर ले।

युद्ध की घटनाएँ
(Events of War)

उपरोक्त कारणों के परिणामस्वरूप गोरखा सेनापति अमरसिंह थापा ने ब्रिटिश कम्पनी के मैनेजरों और सैनिक कमांडरों से विरोध लेकर यहां हिमाचल की भूमि पर ब्रिटिश शक्ति का पदार्पण कराया। ईस्ट इंडिया कम्पनी के मैनेजर और व्यापारी पहले से ही **रामपुर, लद्दाख** और **तिब्बत** के व्यापारिक मार्ग को प्राप्त करना चाहते थे। गोरखों की नीति ने उन्हें पहाड़ी राज्यों में प्रवेश का सुनहरी अवसर प्रदान किया।

1. **युद्ध का आरम्भ** (Beginning of the war)— **नवम्बर 1814 ई.** में अंग्रेज़ों ने गोरखों के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। शिमला के पहाड़ी राज्यों के शासकों और जन-साधारण ने गोरखों के दमन से तंग आकर अंग्रेज़ों को सहायता प्रदान की और अंग्रेज़ों ने इन शासकों को पुन: शासन प्रदान करने का आश्वासन दिया। मेजर जनरल रोल्लो **गिल्लेस्पी** के नेतृत्व में अंग्रेज़ी सेना ने सहारनपुर से आगे बढ़ना आरम्भ किया और **देहरादून, क्यारदा-दून** होते हुए **कालंगा** किले पर अधिकार कर लिया।

2. **नालागढ़ तथा तारागढ़ पर अधिकार** (Occupation of Nalagarh and Taragarh)—**कर्नल डेविड ऑक्टर लोनी** ने रोपड़ की ओर से हिमाचल प्रदेश में प्रवेश किया और नालागढ़ तक पहुँच गया। 5 नवम्बर, 1814 में नालागढ़ तथा तारागढ़ पर अधिकार कर लिया। तत्पश्चात् इसी समय अमर सिंह थापा ने अपनी पूरी सेना के साथ अपने मुख्यालय चल कर ऊँचे और दुर्गम पहाड़ की चोटी पर मोर्चा जमाया और रसद जमा कर ली, उसके दाहिनी ओर की सेना रामगढ़ के किले में थी। इस युद्ध में हिण्डूर के राजा रामशरण सिंह ने भी अंग्रेजों का साथ दिया और युद्ध के लिए अपने सैनिक भेजे। इस दौरान डेविड ऑक्टर लोनी ने **कहलूर** के राजा को भी अपने साथ मिला लिया।

3. **अंग्रेज़ों का रामगढ़ के किले पर अधिकार** (Occupation of Ramgarh Fort by the British)—16 जनवरी, 1815 में गोरखों के विरुद्ध बड़ा आक्रमण प्रारम्भ किया गया और तेज़ी से किए गए अभियान में डेविड ऑक्टर लोनी ने अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लिया। उसने पर्वत श्रेणी के पूर्वी, दक्षिणी और उत्तरी मार्गों को बन्द कर दिया। अमर सिंह थापा को **रामगढ़** का किला छोड़ कर अपनी सेनाओं पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए विवश किया गया। तब अट्ठारह

पौण्ड के गोले दागने वाली तोपें अत्यन्त परिश्रमपूर्वक पहाड़ पर लाई गईं और रामगढ़ के किले पर दागी गई, जिससे शीघ्र ही उन्होंने आत्मसमर्पण कर दिया।

4. सिरमौर में अंग्रेज़ी सेना (British Army in Sirmur)-सिरमौर में अंग्रेजी सेना के आगमन से पहले ही गोरखों ने नाहन को छोड़कर एक ऊँची पहाड़ी पर अपना मोर्चा लगा लिया। अमर सिंह थापा के पुत्र **रणजोर सिंह थापा** के हाथ में गोरखा सेना की कमान थी। अंग्रेज़ी सेना ने 19 दिसम्बर, 1814 को नहान में प्रवेश किया और 25 दिसम्बर, 1814 को उन्होंने जयथक के किले में रणजोर सिंह थापा को घेर लिया। इससे पहले कि अंग्रेज़ गोरखों पर आक्रमण करते। गोरखों ने एकाएक किले से बाहर आकर थकी और असंगठित अंग्रेज़ी सेनाओं पर धावा बोल दिया। परिणामस्वरूप अंग्रेजों को भारी हानि उठाकर पीछे लौटना पड़ा तथा डेढ़ महीने तक **मार्टिन डेल** ने गोरखों के विरुद्ध किसी प्रकार की सैनिक कार्यवाही नहीं की।

इसी समय अंग्रेज़ों को सूचना मिली कि दूरस्थ उत्तर में जुब्बल में बसे पहाड़ी लोग भी गोरखों के विरुद्ध जाग रहे थे। उन्हें गोरखों के विरुद्ध शस्त्रों और आदमियों की आवश्यकता थी। **विलियम फ्रेजर** के सुझाव और **मार्टिन लैण्ड** की सहमति तथा **मेजर जेम्स वेल** 400 से 500 अनियमित सैनिक लेकर वहां गया। 12 मार्च, 1815 को वे **बूड़ चोटी** को पार कर के चौपाल के निकट सराहन पहुँचे। जुब्बल के दो मुखिया **दाँगी वजीर** और **प्रिमू** रात को चुपके से उससे आकर मिल गए। तब उन्होंने चौपाल के छोटे-से किले को घेर लिया, जोकि जुब्बल का एक किला था और वहीं 100 गोरखों की फौज रहती थी। ब्रिटिश दल द्वारा किले के गोरखा सेनापति के द्वारा धमकियां देने के पश्चात् अन्ततः उसने अपने साथियों सहित समर्पण कर दिया। उन्हें ब्रिटिश सेना में सम्मिलित कर लिया गया।

5. रामपुर कोटगढ़ क्षेत्र में प्रवेश (Enter into Rampur Kotgarh Area)-रामपुर **कोटगढ़** क्षेत्र में गोरखा सेनाएं कीर्ति राणा के नेतृत्व में हाटू शृंखला पर कब्ज़ा कर चुकी थीं। बुशैहर में राणा की सेना का नेतृत्व वज़ीर **टीकमदान** और **बद्रीदास** कर रहे थे और 1815 ई. के प्रारम्भ में कुल्लू की सेनाएं भी उनसे आ मिलीं। कीर्ति राणा **नवागढ़** में ही घिर गया। बाद में अपने **बुशहर** के वज़ीर के आगे इस शर्त पर समर्पण कर दिया कि उसके सैनिकों को जीवनदान दिया जाएगा और उन्हें निकटतम अंग्रेज़ सेनापति के सुपुर्द कर दिया जाएगा।

6. युद्ध की समाप्ति और सैगोली की संधि (End of war and Treaty of Saguali)—1815 ई. में एकदम स्थिति में एकदम परिवर्तन हुआ। कर्नल **निकोल्स** तथा **गार्नर ने** अप्रैल 1815 ई. में **अल्मोड़ा** तथा **कुमायूं** पर अधिकार कर लिया था। ऑक्टर लोनी ने **मई 1815** ई. में अमर सिंह थापा ने **मालोन** (Malaon) का किला छीन लिया और साहस पा कर नेपाल की राजधानी काठमांडू तक जा पहुँचा क्योंकि उस समय तक अंग्रेज़ अपनी सेना में कुछ पहाड़ी जातियों को शामिल करने में सफल हो गये थे। अतः इस हार के पश्चात् गोरखों ने सन्धि वार्ता चलाई परन्तु अंग्रेज़ों की अत्यधिक कठिन मांगों के कारण सन्धि वार्ता सफल न हो सकी। अतः पुनः युद्ध शुरू हो गया। **डेविड ऑक्टर** लोनी साहसपूर्वक आगे बढ़ा और **28 फरवरी 1816 ई.** को **मकबनपुर** नामक स्थान पर गोरखों को करारी मात दी। इस के बाद शान्ति वार्ता पुनः चली और मार्च 1816 ई. **सैगोली** की शर्तों को स्वीकार कर लिया गया। अंग्रेज़ों ने संधि के अन्तर्गत अमर सिंह थापा, उसके पुत्र रणजोर सिंह तथा उनकी सम्पत्ति को व्यक्तिगत संपति सहित सुरक्षित नेपाल वापिस जाने दिया। इस विजय से शिमला क्षेत्र में गोरखा प्रभुत्व समाप्त हो गया और ब्रिटिश प्रभाव का शुभारम्भ हुआ।

7. सैगोली की सन्धि की शर्तें (Terms of Treaty of Saguali):- इस सन्धि के प्रमुख निर्णय निम्नलिखित थे:

1. अंग्रेज़ों को गढ़वाल और कुमाऊं के ज़िले तथा तराई का अधिकांश भाग प्राप्त हुआ।
2. दोनों राज्यों की सीमाओं को निश्चित कर दिया गया।
3. नेपाल के सिक्किम राज्य के समस्त अधिकार वापस ले लिए।
4. नेपाल की राजधानी काठमांडू में एक अंग्रेज़ रैजीडेण्ट रख दिया गया।
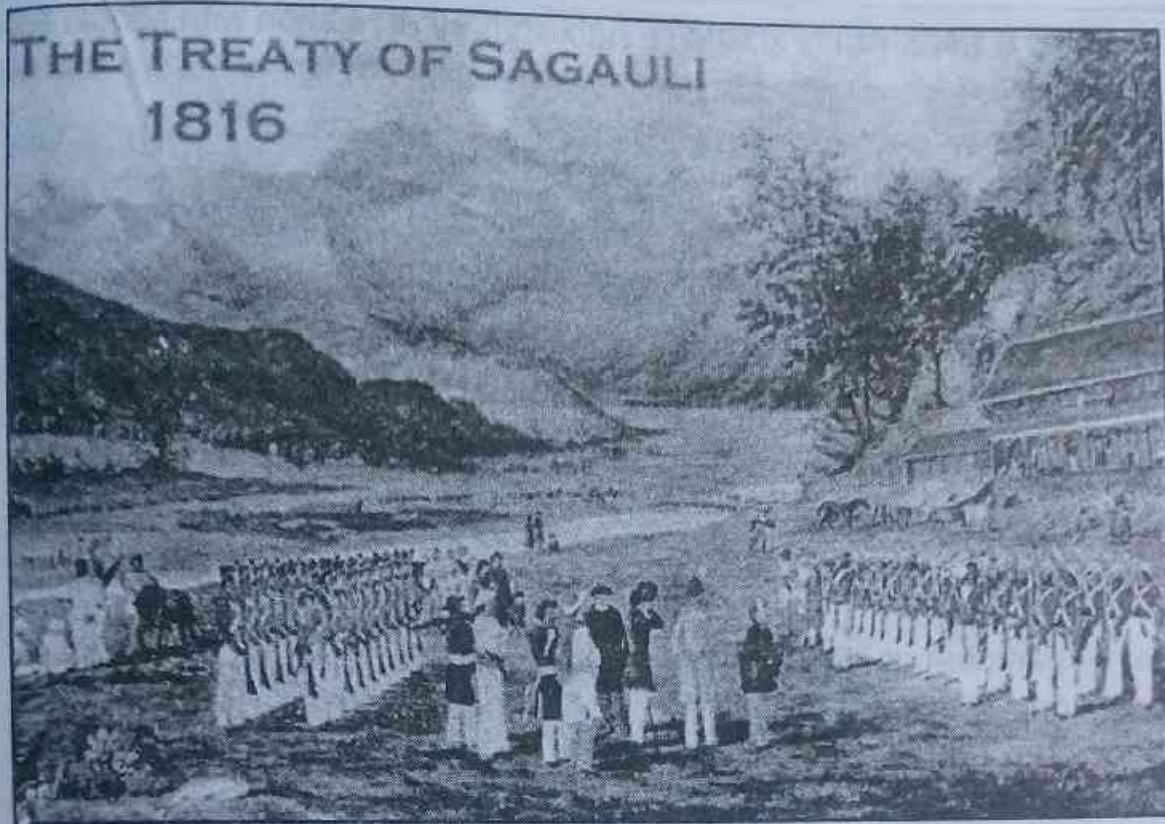
युद्ध का महत्त्व या परिणाम (Importance and Results of the War)

सैगोली की सन्धि के निम्नलिखित परिणाम निकले :-

1. **अंग्रेज़ों की स्थिति दृढ़ होना** (Strong Position of the British)—इस युद्ध से अंग्रेज़ों को गढ़वाल, कुमाऊं और तराई के अधिकांश भाग प्राप्त हो गए, जिस से अंग्रेजी साम्राज्य काफी विस्तृत और मजबूत हो गया।

2. **गोरखों और अंग्रेज़ों में मित्रता स्थापित हो जाना** (Foundation of friendship between the British and the Gorkhs):- इस युद्ध के पश्चात् तथा सैगोली की सन्धि के फलस्वरूप गोरखों और अंग्रेज़ों में मित्रता स्थापित हो गई और अंग्रेज़ों को नेपाल से हमेशा सैनिक प्राप्त होने लगे।

3. **दोनों की सीमाएं निश्चित हो जाना** (Boundries of both)–हिमालय का तराई भाग ऐसा क्षेत्र था, जहां अंग्रेज़ों और नेपाल की सीमा निश्चित नहीं हो पाई थी। इस युद्ध के पश्चात् दोनों राज्यों की सीमाओं को निश्चित कर दिया गया।

4. **गोरखों का कई क्षेत्रों से हाथ धोना** (Losing many areas by Gorkhas) :- इस युद्ध के पश्चात् गोरखों को अपने अनेक क्षेत्रों जैसे गढ़वाल, कुमाऊं तथा तराई के अधिकांश भागों से हाथ धोना पड़ा तथा सिक्किम से भी अपने समस्त अधिकार उठाने पड़े।

5. **सिक्खों और गोरखों के बीच दीवार खड़ी हो जाना** (Standing wall between the Sikhs and the Gorkhas):- इस युद्ध के पश्चात् महाराजा रणजीत सिंह और गोरखों के मध्य एक दीवार सी खड़ी हो गई, क्योंकि अब ये दोनों परस्पर संगठित नहीं हो सके।

6. **नेपाल में एक अंग्रेज़ी रैज़ीडेंट** (The English Resident in Nehal):- सैगोली की सन्धि के फलस्वरूप नेपाल में गोरखों ने अपने दरबार में एक अंग्रेज़ी रैज़ीडेंट रखना स्वीकार कर लिया। इस लिए नेपाल पर अंग्रेज़ों की नज़र पैनी हो गई, जो अंग्रेज़ों को बड़ा लाभप्रद सिद्ध हुआ।

7. **अंग्रेज़ों को अनेक ठंडे प्रदेश मिलना** (British Control over cold regions) :- इस युद्ध के पश्चात् अंग्रेज़ों को अनेक ठंडे प्रदेश जैसे–मसूरी, नैनीताल तथा शिमला आदि प्रदेश प्राप्त हुए। इस प्रकार अंग्रेज़ी कम्पनी की सीमा पूर्व-पश्चिमी पर्वतों तक पहुँच गई थी।

8. मध्य एशिया से सम्पर्क स्थापित हो जाना (Establishment of relation with Middle Asia):- आंग्ल-नेपाल युद्ध के पश्चात् अंग्रेज़ों के मध्य-एशिया के देशों से सम्बन्ध स्थापित करने के लिए नया मार्ग प्राप्त हो गया, जिस के फलस्वरूप इन देशों के साथ अंग्रेज़ों के सम्बन्ध स्थापित करना आसान हो गया।

इस प्रकार 1816 की सैगोली की सन्धि ने भारत और नेपाल के मध्य एक स्थाई मित्रता के सम्बन्धों को स्थापित किया।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न
(Important Questions)

1. 1814-15 ई. का आंग्ल-गोरखा युद्ध किन-किन परिस्थितियों में हुआ? इस युद्ध के परिणामों की व्याख्या कीजिए।

   What circumstances were responsible for Angla-Gorkha war? Explain the consequens of this war.

2. एंग्लो-गोरखा युद्ध के क्या कारण थे? विस्तार से वर्णन कीजिए।

   What were the causes of Anglo-Gorkha War ? Explain in detail.

3. सैगोली की सन्धि अंग्रेज़ों के लिए क्यों लाभकारी सिद्ध हुई? व्याख्या कीजिए।

   Why was the treaty of Sagulli beneficial for the British? Explain it.

4. आंग्ल-गोरखा युद्ध के कारण, घटनाओं तथा परिणामों का वर्णन करें।

   Explain the causes, events and results of Anglo-Gorkha war.

5. आंग्ल-गोरखा युद्ध के क्या कारण थे? विस्तार से वर्णन कीजिए।

   What were the causes of Anglo-Gorkha War ?

6. आंग्ल-गोरखा युद्ध की घटनाओं का विस्तार से वर्णन करें।

   Explain in detial the events of Anglo-Gorkha War.
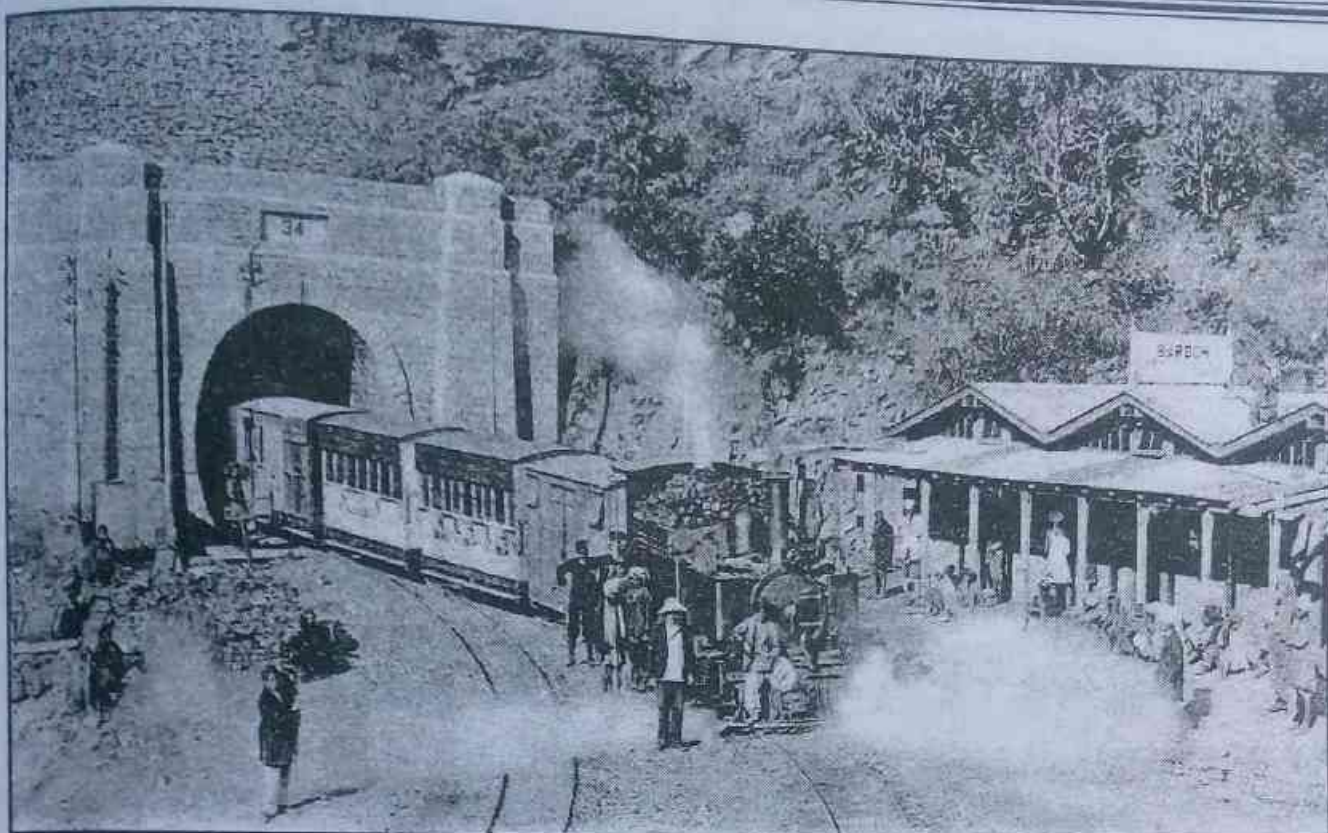
●●●

UNIT II

The Establishment of the British Paramountcy

II.1. Himachal under the British : reorganization of the 'Hill States'

II.2. Grant of sanads and territorial aggression

II.3. British Political and administrative policies

II.4. Penetration and mechanisms of control

II.5. Network of communication : The Hindustan-Tibet Road and Kalka-Simla Railway Line.

6 अंग्रेज़ों द्वारा पहाड़ी रिसायतों पर नियंत्रण तथा उनकी प्रशासनिक नीतियां

(CONTROL OF HILL STATES BY THE BRITISH AND THEIR ADMINISTERATIVE POLICIES)

भूमिका (Introduction)

कांगड़ा की पहाड़ी रियासतों में महाराजा रणजीत सिंह की साम्राज्यवादी शक्ति का बोलबाला था। रणजीत सिंह केवल नजराना लेकर सन्तुष्ट नहीं थे। उनका उद्देश्य पहाड़ी रियासतों को नष्ट करना और पूर्णतया अपने राज्य में मिलाना था। पहाड़ी रियासतें महाराजा की निरंकुश शक्ति और अनुशासनहीन सेना का आतंक सहन कर रही थीं। रणजीत सिंह ने कोटला, गुलेर, नूरपुर, जसवां, दातारपुर, कांगड़ा, कुल्लू एवं लाहौल-स्पीति तक की रियासतों को जीतकर अपने अधिकार में ले लिया तथा इनके शासकों को विस्थापित कर छोटी-छोटी जागीरें दे दीं। चम्बा, मण्डी, सुकेत से वह भारी धन राशि नज़राने के रूप में लेते रहे। कांगड़ा, जसवां, गुलेर, दातारपुर, नूरपुर, कुल्लू, लाहौल-स्पीति के शासकों को अपदस्थ करके उन्हें पैंशन और जागीरें देकर उनके राज्य छीन लिए।

1839 ई. में जब सिक्ख सेना के छोटे-छोटे दस्ते कुल्लू, मण्डी और सुकेत के गांवों में लूट-मार करने गए तो जन साधारण ने उनका कड़ा विरोध किया। इसमें असंख्य सिख सैनिक मारे गए या जान बचाकर भाग निकले। 1839 ई. में महाराजा रणजीत सिंह की मृत्यु हो गई। उसकी मृत्यु के पश्चात् सिक्खों की राजसत्ता क्षीण होने लगी। गृह युद्ध और अराजकता के वातावरण में 1845 ई. में सिखों का अंग्रेज़ों से युद्ध छिड़ गया। मण्डी, कुल्लू, सुकेत, कांगड़ा, जसवां, गुलेर, नूरपुर और चम्बा आदि रियासतों के शासकों ने सिखों के आतंक से तंग आकर अंग्रेजों का साथ दिया और अपने-अपने राज्यों में तैनात सिख सैनिक दस्तों और अधिकारियों को बलपूर्वक निष्कासित किया। 1846 ई. के इस एंग्लो-सिक्ख युद्ध में अंग्रेज विजयी हुए। मार्च 1846 ई. की लाहौर सन्धि के अन्तर्गत कांगड़ा की पहाड़ी रियासतें अंग्रेज़ों के अधिकार में आ गईं। कुल्लू, लाहौल-स्पीति भी अंग्रेज़ी सरकार के अधीन हो गए। इस प्रकार हिमाचल में सिख शासन का अन्त हो गया और समस्त हिमाचल ब्रिटिश कम्पनी सरकार के प्रभुत्व में आ गया। इस युद्ध के पश्चात् अंग्रेज़ों ने मण्डी, सुकेत और चम्बा के राजाओं को शिमला क्षेत्र के शासकों की भान्ति उनके राज्य लौटा दिये और शासन में आन्तरिक स्वायत्तता प्रदान की परन्तु लाहौल स्पीती, कुल्लू, कांगड़ा, जसवां, गुलेर, नूरपुर, दातारपुर, हरिपुर, कोटला आदि के शासकों के राज्य छीन तथा और अंग्रेज़ी साम्राज्य में मिला दिये।

अंग्रेज़ों और सिक्खों का पहला युद्ध
(First Anglo Sikh War)

महाराजा रणजीत सिंह की मृत्यु के शीघ्र ही पश्चात् 1845-46 ई. में सिक्खों और अंग्रेज़ों के मध्य एक भयंकर युद्ध हुआ, जो इतिहास में सिक्खों के पहले युद्ध के नाम से प्रसिद्ध है। इस समय भारत में अंग्रेज़ी साम्राज्य का गवर्नर जनरल लार्ड हार्डिंग-प्रथम था, जो इस पद पर 1844 से 1848 तक रहा।

(क) **युद्ध के कारण (Causes of the war)**–इसे युद्ध की ओर ले जाने वाली परिस्थितियां या कारण निम्नलिखित थे :

(1) **रणजीत सिंह के जीवनकाल में सिक्खों और अंग्रेज़ों में तनाव पैदा हो जाना (Beginning of Tension between the Sikhs and the English during Ranjit Singh's life)**–वास्तव में रणजीत सिंह के जीवनकाल में ही अंग्रेज़ों और सिक्खों में आपसी तनाव बढ़ गया था। अंग्रेज़ों ने हर स्थान पर रणजीत सिंह को नीचा दिखाने का प्रयत्न किया था। 1809 ई. की **अमृतसर की सन्धि** के अनुसार उन्होंने रणजीत सिंह के सतलुज नदी के पार के प्रदेशों को छीन लिया। सिन्ध के मामले में भी अंग्रेज़ों ने उसे अन्धकार में रखा। शिकारपुर के स्थान पर अंग्रेज़ों ने रणजीत सिंह को नीचा

दिखाया। फिरोजपुर को अपने अधिकार में लेकर तथा वहाँ छावनी बनाकर अंग्रेज़ों ने और अधिक तनाव का वातावरण कर दिया। त्रिदलीय सन्धि में भी भाग लेने के लिए रणजीत सिंह को मजबूर किया गया। इस प्रकार रणजीत सिंह के जीवनकाल में अंग्रेजों और सिक्खों में तनाव काफी बढ़ चुका था। केवल एक चिंगारी की आवश्यकता थी, युद्ध के लिये सारा सामान तैयार था।

(2) पंजाब में अराजकता तथा सिक्ख सेना का शक्तिशाली हो जाना (Archary in the Punjab and the Army becoming All powerful)–रणजीत सिंह के 1839 ई. में स्वर्ग सिधार जाते ही पंजाब में अराजकता फैल गई और शीघ्र ही 3-4 वर्षों में उसके कई पुत्र तथा अन्य नज़दीकी सम्बन्धी मार डाले गये। अब खालसा सेना ही सर्वोसर्वा थी और उसे नियन्त्रण में रखना लाहौर दरबार के लिए एक बड़ी समस्या बनी हुई थी। सेना के शक्तिशाली रहते हुए किसी का जीवन सुरक्षित नहीं था। सभी बड़े-बड़े सरदार तथा दरबारी खालसा सेना से बहुत भयभीत थे। उनकी बेहतरी इसी बात में थी कि खालसा सेना को अंग्रेजों से टकराकर उसकी शक्ति को कम कर दिया जाये अन्यथा उनकी अपनी मौत थी।

(3) अंग्रेज़ों की सैनिक गतिविधियां (Military Activities of the British)–पंजाब में फैली हुई अराजकता का लाभ उठाने के उद्देश्य से अंग्रेज़ों ने व्यापक स्तर पर सैनिक तैयारियां करनी आरम्भ कर दीं और अपनी फौजों को सतलुज नदी के आस पास एक बड़ी संख्या में इकट्ठा करना आरम्भ कर दिया। **कनिंघम (Cunningham)** के शब्दों में "सतलुज नदी की ओर सेनायें लाना 1809 की सन्धि के सरासर विरुद्ध था।" कहा जाता है कि सतलुज नदी की सीमा पर जहां 1836 ई. में केवल 25000 सैनिक थे, वहां 1843 ई. में उसकी संख्या बढ़कर 14,000 हो गई थी। इसके अतिरिक्त फिरोजपुर, लुधियाना और अम्बाला आदि स्थानों पर अंग्रेज़ों ने अन्य भारी टुकड़ियां भी एकत्रित कर रखी थीं। केवल यही नहीं, अंग्रेजों ने सतलुज नदी को पार करने के लिए किश्तियां एकत्रित करनी आरम्भ कर दी थीं। अंग्रेज़ों की इन सैनिक गतिविधियों ने सिक्खों के मन में यह सन्देह पैदा कर दिया कि वे पंजाब को हड़पना चाहते हैं।

(4) पहली अफ़ग़ान लड़ाई में अंग्रेज़ों का भारी विश्वास (Great Disaster of the British in the First Afghan War)–1839 ई. से लेकर 1842 ई. तक अंग्रेज़ों का जो अफगानिस्तान से पहला युद्ध हुआ। उसने भी सिक्खों और अंग्रेजों के आपसी सम्बन्धों पर काफी गहरा प्रभाव डाला। इस युद्ध में अंग्रेज़ों की हार हुई, उसने सिक्खों का साहस और भी बढ़ा दिया। वे सोचने लगे कि अंग्रेज़ अजेय नहीं हैं, यदि अफगान उन्हें सबक सिखा सकते हैं तो सिक्ख ऐसा क्यों नहीं कर सकते, जिन्होंने अफगानों को भी नीचा दिखाया था।

दूसरी ओर अंग्रेज भी अफगानिस्तान में खोई हुई अपनी हार की बदनामी को किसी अन्य स्थान पर भारी विजय प्राप्त करके दूर करना चाहते थे। वह प्रदेश पंजाब ही था जहां अशान्ति भी फैली हुई थी और जिसके विषय में अंग्रेज़ों ने अफगानिस्तान की पहली लड़ाई से अपनी वापसी के समय पंजाब में से होकर आने में काफी भौगोलिक जानकारी प्राप्त कर ली थी। इस प्रकार अफगानिस्तान के पहले युद्ध ने अंग्रेजों और सिक्खों को टकराव की ओर निकट लाने का कार्य किया।

(5) सिन्ध का अंग्रेज़ी साम्राज्य में मिलाया जाना, 1843 (Annexation of Sindh in the British Empire)– अंग्रेज़ों ने 1843 ई. में सिन्ध को अपने साम्राज्य में मिला लिया। इस घटना ने अंग्रेजों के साम्राज्यवादी विचारों को बिल्कुल नंगा कर दिया। अब स्पष्ट था कि सिन्ध की भांति अंग्रेज पंजाब को भी अपने अधिकार में करने का प्रयत्न करेंगे। पंजाब को विजयी किये बिना सिन्ध पर भी अधिकार बनाये रखना काफी कठिन था। अंग्रेज़ों के साम्राज्यवादी इरादों ने सिक्खों को और भी चौकन्ना कर दिया और उन्हें अंग्रेज़ों के साथ दो-दो हाथ करने के लिए मजबूर कर दिया।

वास्तव में महाराजा रणजीत सिंह के जीवन काल में ही अंग्रेज़ों ने पंजाब को हड़पने का इरादा बना लिया था। आसब्रोर्न (Osborne) ने 1838 ई. में ही गवर्नर जनरल को लिखा था– **"रणजीत सिंह की मृत्यु से लाभ उठाने का एक उपाय यह भी है कि बहुत बड़ी सेना द्वारा झटपट ही पंजाब पर अधिकार कर लिया जाये और हमारी पश्चिमोत्तर सीमा को सिन्ध पार स्थापित किया जाये। ईस्ट इण्डिया कम्पनी बड़े-बड़े ऊंट निगल चुकी है और अब इस छोटे-से मच्छर को निगलने के लिए उसे कष्ट नहीं उठाना पड़ेगा।"**

(6) मेजर ब्रॉडफुट का उत्तेजनापूर्ण कार्य (Proviaking Action of Major Broadroot)–**मिस्टर क्लार्क (Mr. Clark)** के स्थान पर अंग्रेज़ों ने जब मेयर ब्रॉडफुट को लुधियाना में ब्रिटिश रेजीडैण्ट नियुक्त किया, उसने जलती पर तेल का काम किया। वह बड़ा हठी और क्रोधी स्वभाव का व्यक्ति था। उसने अपना पद संभालते ही यह घोषणा कर दी कि महाराजा दलीपसिंह के सतलुज नदी के दक्षिण में स्थित सभी प्रदेश भविष्य में अंग्रेज़ों की अधीनता में समझे जायेंगे। इस घोषणा से सिक्ख सरदारों के क्रोध का कोई ठिकाना न रहा और उन्हें अब पक्का विश्वास हो गया कि अंग्रेज़ों के साथ युद्ध होना अनिवार्य है।

(7) रानी जिन्दां का उत्तरदायित्व (Responsibility of Rani Jindan)–अंग्रेज़ों और सिक्खों के मध्य युद्ध कराने में महाराजा रणजीत सिंह की माता रानी जिन्दां का भी पूरा हाथ था। लाहौर-दरबार के अन्य सदस्यों की भांति यह भी सिक्ख सेना से डरती थी, इसलिये अपनी सुरक्षा के लिए वह सिक्ख सेना को अंग्रेज़ों में उलझाकर उन्हें युद्ध में व्यस्त रखना चाहती थी। उसने सिक्ख सैनिकों की अंग्रेज़ों के प्रति पैदा होने वाली शंकाओं को और हवा दी और उन्हें अंग्रेज़ों से भिड़ा दिया।

(8) तात्कालिक कारण-सिक्खों द्वारा सतलुज नदी को पार करना (Immediate Cause-Crossing the Sutlej River)–इस प्रकार उकसाए जाने पर सिक्ख सेनाओं ने अंग्रेज़ों से दो-दो हाथ करने की ठान ली। फिर क्या था, कई बड़े-बड़े दस्तों में 11 से 14 दिसम्बर 1845 ई. के मध्य सिक्ख सैनिकों ने सतलुज नदी को पार करना प्रारम्भ कर दिया। अंग्रेज़ तो पहले ही इस बात की ताक में थे कि आक्रमण पहले सिक्खों की तरफ से हो। ज्योंहि गवर्नर जनरल लार्ड हार्डिंग प्रथम को इस बात का समाचार मिला कि सिक्ख सेनाओं ने सतलुज नदी को पार करना प्रारम्भ कर दिया है तो 13 सितम्बर 1845 ई. को उसने भी नियमित रूप से सिक्खों के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी।

(ख) अंग्रेज़ों और सिक्खों के पहले युद्ध की घटनायें (Events of the First Anglo-Sikh War)–अंग्रेज़ों और सिक्खों के मध्य लड़ा जाने वाला यह पहला युद्ध 13 दिसम्बर 1845 ई. को प्रारम्भ हुआ और लगभग तीन मास के पश्चात् 9 वर्ष 1846 ई. को लाहौर के सन्धि-पत्र से समाप्त हुआ। इस युद्ध की मुख्य घटनायें निम्न प्रकार से हैं :-

(1) मुदकी की लड़ाई, 18 दिसम्बर 1845 ई. (The Battle of Mudki)–सिक्ख सेना ने सतलुज नदी को पार करते ही फिरोज़पुर की ओर कूच किया। इस सेना का नेता लाल सिंह था। उधर अंग्रेज सेनायें **सर ह्यू गफ** (Sir Hugh Gough) के नेतृत्व में लुधियाना से फिरोज़पुर को बचाने के लिए चल पड़ीं। दोनों सेनाओं का टकराव मुदकी नामक

स्थान पर (जो फिरोजपुर से लगभग बीस मील की दूरी पर था) हुआ। सिक्ख सेना के बहाव के सामने अंग्रेज दबने लगे परन्तु जिस समय विजय होने ही वाली थी, सिक्ख सेनापति लाल सिंह ने विश्वासघात किया और वह ऐसे आड़े समय में सिक्ख सेना को अकेला छोड़कर युद्ध-क्षेत्र में पीछे हटने लगा। इस युद्ध में अंग्रेज़ चाहे विजयी रहे परन्तु उन्हें यह जीत बहुत महंगी पड़ी, क्योंकि इस युद्ध में उनके लगभग 215 सैनिक मारे गये और 657 के लगभग जख्मी हो गये। सिक्खों का भी काफ़ी जानी नुक्सान हुआ और उनकी 16 तोपें उनके हाथ से जाती रहीं।

(2) फिरोज़शाह की लड़ाई, 21 दिसम्बर 1845 ई. (Battle of Ferozeshah)–मुदकी की लड़ाई के पश्चात् अंग्रेज़ी सेनायें फिरोज़शाह नामक स्थान की ओर बढ़ीं, जो सतलुज से 12 मील की दूरी पर था। इसी स्थान पर सर जॉन **लिटल** (Sir John Little) के नेतृत्व में एक और अंग्रेज़ी टुकड़ी सर ह्यू गूउ की सेनाओं से आ मिली। 21 दिसम्बर के दिन दोनों पक्षों में फिरोज़शाह के स्थान पर एक भयंकर युद्ध हुआ। सिक्खों ने भी जान से अंग्रेज़ों का मुकाबला किया। अंग्रेज़ी सेना की स्थिति बड़ी गम्भीर हो गई।

परन्तु यहां पर भी **तेजा सिंह** (Teja Singh) जैसे सिक्ख जनरलों ने विश्वासघात किया और सिक्ख सेना को बिना किसी नेता के छोड़कर वे युद्ध-क्षेत्र से भाग गए। परिणामस्वरूप अंग्रेज़ों ने आगे बढ़कर 22 दिसम्बर को सिक्खों के मोर्चों पर अधिकार कर लिया। इस प्रकार सिक्ख सेनानायकों के धोखे के कारण यह जीत हार में बदल गई।

इस लड़ाई में 8000 सिक्ख सैनिक मारे गए और उनकी लगभग 73 तोपें हाथ से जाती रहीं। इस युद्ध में अंग्रेज़ों की भी कोई कम हानि नहीं हुई। उनके लगभग 694 व्यक्ति मारे गए और 1721 के लगभग घायल हुए।

(3) बुड्ढेवाल तथा अलीवाल की लड़ाइयां 21-28 जनवरी, 1846 ई. (Battles of Buddhewal and Aliwal)–अंग्रेज़ अभी संभल भी नहीं पाए थे, जब सिक्ख सेना ने **रणजीत सिंह मजीठिया** (Ranjit Singh Majithia) के नेतृत्व में सतलुज नदी को पार करके 21 दिसम्बर 1849 ई. को लुधियाना में अंग्रेज़ी सेना पर धावा बोल दिया। बुड्ढेवाल के स्थान पर जो लड़ाई हुई, उसमें अंग्रेज़ों की हार हुई परन्तु शीघ्र ही अंग्रेज़ों को और सहायता पहुंच गई और उन्होंने आगे बढ़कर 28 जनवरी 1846 ई. को अलीवाल के स्थान पर सिक्खों को परास्त कर दिया। सिक्खों ने सतलुज नदी को पार करके अपनी जान बचाई परन्तु उनमें से बहुत से नदी में ही डूब गए।

(4) सबराओं का युद्ध, 10 फरवरी 1846 ई. (Battle of Sabraon)–सिक्खों और अंग्रेज़ों में अन्तिम तथा निर्णयकारी लड़ाई 10 फरवरी, 1846 ई. को सबराओं के स्थान पर हुई। सिक्खों ने डटकर अंग्रेज़ों का मुकाबला किया और कुछ समय तक उनके होश उड़ा दिये। इस युद्ध में भी **शामसिंह अटारीवाला** (Shamsingh Atariwala) को छोड़कर काफी सिक्ख सेनानायक विश्वासघात पर उतर आए थे। वास्तव में ये सिक्ख सेना की हार से इतने नहीं डरते थे जितने कि वे उसकी जीत से डरते थे, सम्भवतः इसीलिए वे विश्वासघात किये जा रहे थे। ऐसी स्थिति में सिक्ख सैनिकों की बहुत हानि हुई और उनमें से 8 से 10 हजार तक मृत्यु के घाट उतार दिये गये। शामसिंह अटारीवाला भी इस युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुआ। अंग्रेज़ों के इस युद्ध में लगभग 320 व्यक्ति मरे और 2,083 घायल हुए। सबराओं की यह लड़ाई निर्णयकारी लड़ाई थी। इसमें विजयी होने के पश्चात् ब्रिटिश सेना ने एक बड़ी संख्या में सतलुज नदी को पार किया और आगे बढ़कर 20 फरवरी 1846 ई. को उसने लाहौर पर अधिकार कर लिया।

(5) युद्ध में पहाड़ी राजाओं की भूमिका (Role of Hilly Rajas in this war)—अधिकांश पहाड़ी राजा रणजीत सिंह की अधिग्रहण और विनाश की नीति से तंग आ चुके थे। इसलिए उनकी सहानुभूति अंग्रेज़ों के साथ थी। सिक्खों के साथ अंग्रेज़ों के युद्ध के समय में एक ओर तो पहाड़ी राजाओं ने सिक्खों को अपने राज्य से निकाला और उनसे पद छीन लिए, दूसरी ओर युद्ध में भी महत्त्वपूर्ण सहायता अंग्रेज़ों को प्रदान की। गुलेर के राजा शमशेर सिंह ने अपने नौकरों में से एक सेना संगठित की और सिक्खों को हरिपुर के किले से निकाल दिया। वीर सिंह ने नूरपुर के किले पर अधिकार कर लिया लेकिन वह किले की दीवारों के बाहर ही मारा गया। उसे एकमात्र यही सन्तोष हुआ कि उसने अपना बदला ले लिया। कुटलैहड़ के राजा ने भी अपने राज्य में सिक्ख सेनाओं को निकाल बाहर किया। कमलगढ़ के किले में

सिख अंग्रेज़ों से युद्ध की समाप्ति तक बने रहे। फरवरी, 1846 में युद्ध के दौरान बिलासपुर और सुकेत के राजा ने ईर्सकिन के पास एक गुप्त सन्देशवाहक भेजकर अंग्रेज़ सरकार के प्रति अपनी निष्ठा व्यक्त की।

(ग) युद्ध के परिणाम (Results of war)–सिक्ख बिल्कुल हार चुके थे। इसलिये बहुत से लोगों ने वायसराय लार्ड हार्डिंग को यह परामर्श दिया कि पंजाब को सीधा अंग्रेज़ी साम्राज्य में मिला लिया जाए, परन्तु अनेक कारणों से लार्ड हार्डिंग ने उनकी यह सलाह नहीं मानी। पंजाब को अंग्रेज़ी साम्राज्य में न मिलाने का पहला कारण यह था कि अफगानिस्तान और अंग्रेज़ भारत के बीच एक हिन्दू राज्य एक अच्छा मध्यवर्ती राज्य (Buffer State) सिद्ध हो सकता था। दूसरे, पंजाब को काबू में रखने के लिये बहुत सी सेना चाहिए थी, जिसकी अभी कमी थी। तीसरे, पंजाब आर्थिक दृष्टि से भी कभी इतना लाभकारी सिद्ध होने वाला नहीं था।

इस प्रकार पंजाब को अंग्रेज़ी साम्राज्य में न मिलाकर अंग्रेज़ों ने सिक्खों से पहली मार्च 1846 ई. में लाहौर की सन्धि की।

(I) लाहौर की सन्धि, 9 मार्च 1846 ई. (The Treaty of Lahore)–इस सन्धि की मुख्य शर्तें निम्नलिखित हैं:-

(1) महाराजा ने सतलुज नदी के दक्षिण में स्थित सभी प्रदेशों पर अपना दावा छोड़ दिया और वचन दिया कि वह उनसे किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं रखेगा।

(2) उसने ब्यास और सतलुज नदियों के बीच स्थित दोआबा के सभी प्रदेश और दुर्ग अंग्रेज़ी कम्पनी के हवाले कर दिये।

(3) सिक्खों की युद्धपूर्ति के लिए लगभग डेढ़ करोड़ रुपये देने पड़े। चूंकि खज़ाने में केवल 50 लाख रुपये थे, इसलिए महाराजा ने ब्यास तथा सिन्ध नदियों के बीच स्थित सभी पहाड़ी प्रदेश–जिसमें कश्मीर और हजारा सम्मिलित थे–एक करोड़ के बदले में कम्पनी को दे दिये।

(4) महाराजा ने अपनी विद्रोही सिक्ख सेना को तोड़ना तथा उससे हथियार वापिस लेना मान लिया। अब सिक्ख सेना की संख्या घटाकर केवल 25 बटालियन (या 20 हजार) पैदल और 12 हजार घुड़सवार कर दी गई।

(5) लाहौर राज्य में अंग्रेज़ी सेना को आने-जाने की अनुमति दे दी गई और साथ ही सिक्ख सरकार ने यह स्वीकार किया कि वह किसी अंग्रेज़ या किसी अन्य यूरोपीय नागरिक को ब्रिटिश सरकार की अनुमति के बिना अपने पास नौकर नहीं रखेगी।

(6) दलीप सिंह को महाराजा स्वीकार कर लिया गया। उसकी माता रानी जिन्दां उसकी संरक्षिका और सरदार लाल सिंह उसका प्रधानमन्त्री बनाया गया।

(7) एक अंग्रेज रैज़ीडैण्ट सर हैनरी लारेंस लाहौर-दरबार में रखा गया।

(8) महाराजा की रक्षा के लिए 1846 के अन्त तक लाहौर में एक अंग्रेज़ी सेना रखने का निर्णय हुआ।

(9) अंग्रेज़ गवर्नर-जनरल ने यह विश्वास दिलाया कि वह लाहौर सरकार के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेगा।

परन्तु लाहौर की सन्धि के अनुसार कार्य चलाना कोई इतना आसान सिद्ध न हुआ। अंग्रेज़ों ने एक अन्य सन्धि द्वारा जम्मू और कश्मीर का प्रदेश लाहौर दरबार के एक डोगरा सरदार राजा गुलाब सिंह को एक लाख रुपये के बदले में बेच दिया। यह बात सिक्खों, विशेषकर रानी जिन्दां और लालसिंह को अच्छी न लगी, इसलिए जब राजा गुलाबसिंह चार्ज लेने के लिए गया तो उन्होंने कश्मीर के गवर्नर शेख़ इमामुद्दीन को उकसा कर विद्रोह खड़ा करवा दिया। ब्रिटिश सेना की सहायता से यह विद्रोह दबा दिया गया। जांच करने पर इस विद्रोह के पीछे रानी जीन्दां और लालसिंह का हाथ पाया गया। इसलिए उन्हें प्रधान मंत्री के पद से हटाकर बनारस भेज दिया गया।

(II) लाहौर की सन्धि तथा पहाड़ी राज्य :-10 फरवरी, 1846 को सबराओं की लड़ाई में सिख अंग्रेज़ों से पराजित हुए। 1815 ई. में अंग्रेज़ों और गोरखों के बीच युद्ध के पश्चात् जैसा उदारतापूर्ण व्यवहार अंग्रेज़ों ने उन पहाड़ी राज्यों के

साथ किया था, वैसे ही व्यवहार की अपेक्षा पंजाब के पहाड़ी राज्यों के राजा भी कर रहे थे, लेकिन अंग्रेज़ों ने उस तरह का व्यवहार नहीं किया। 19 मार्च, 1846 में सिखों और अंग्रेज़ों के बीच लाहौर की सन्धि हुई, जिसकी शर्तों के अनुसार सतलुज और ब्यास नदियों के बीच स्थित जालन्धर दोआब का विस्तृत क्षेत्र भी शामिल था, अंग्रेज़ों को प्राप्त हो गया।

सिखों द्वारा डेढ करोड़ रुपये का युद्ध का खर्चा अंग्रेज़ों को दिया गया जिसमें से पचास लाख रुपये नकद दिए गए और शेष एक करोड़ के बदले सिन्ध और ब्यास के बीच के पहाड़ी प्रदेश जिनमें कश्मीर और हजारा भी शामिल थे, दे दिए गए। अंग्रेजों ने पहाड़ी राज्य उनके राजाओं को वापस करने की अपेक्षा सतलुज और रावी के बीच के क्षेत्र अपने अधीन रखे और शेष राज्य जम्मू के महाराजा गुलाब सिंह को बेच दिया, जिसके परिणामस्वरूप **कांगड़ा, गुलेर, जसवाँ, दातारपुर, नूरपुर, सुकेत मण्डी, कूल्लू** और **लाहौल** गुलाब सिंह के अधीन हो गए। बाद में लाहौल-स्पीति के बदले में गुलाब सिंह को अन्य क्षेत्र प्रदान किए गए।

सुकेत और **बिलासपुर** ने अपनी निष्ठा अंग्रेज सरकार से पहले ही व्यक्त कर दी थी और लाहौर सन्धि के अनुसार ये राज्य अंग्रेज़ों के अधीन आ गए थे, इसलिए पुनः 1846 ई. में प्रदान की गई सनदों द्वारा इन दोनों राजाओं को अपने स्थायी वंशानुगत अधिकार प्रदान किया गया लेकिन इसके बदले में राजाओं को अर्द्धवार्षिक किस्तों में कर देने, अपनी रियासतों में बारह फुट चौड़ी सड़कें बनाने और उनकी मरम्मत करने, किसी विद्रोह के समय अपने सैनिकों और पहाड़ी कुलियों सहित अंग्रेज़ी सेना का साथ देने, ब्रिटिश सरकार को बताए बिना अपनी सम्पत्ति के विक्रय अथवा रहन न रखने, अपने सरदारों के परस्पर झगड़ों को अंग्रेज़ी न्यायालयों में भेजने, दास प्रथा समाप्त करने, सती, कन्या वध बन्द करने, दूसरे राज्यों की भूमि पर जबरन अधिकार न जमाने और जनकल्याण के कार्य करने आदि की शर्तें लगाईं।

सरकार ने अयोग्य शासकों को गद्दी से उतारने और उनके स्थान पर योग्यतम निकटतम सम्बन्धी को गद्दी देने का अधिकार अपने पास रखा। मण्डी के राजा को कमलगढ़ और आनन्दपुर के किलों को गिराने के आदेश दिए और यह भी आदेश दिया गया कि अपने राज्य में स्थित नमक और लोहे की खानों पर लगने वाले करों के सम्बन्ध में अंग्रेज सरकार की आज्ञा का पालन करें। **अक्तूबर, 1847** में **बिलासपुर** के राजा को भी एक **सनद** प्रदान की गई, जिसके अनुसार राजा और उसके वंशजों को सतलुज के दाहिनी ओर स्थित उन क्षेत्रों पर राज्य करने का अधिकार दिया गया, जो 1809 ई. में उनके अधीन थे। अंग्रेज़ों ने कर की शर्त तो हटा दी परन्तु राजा से अपने राज्य में चुंगीकर समाप्त करने के लिए कहा।

(III) भैरोवाल की सन्धि, 16 सितम्बर 1846 ई. (Treaty of Bhairowal)–12 दिसम्बर 1846 ई. को सिक्खों से साथ एक अन्य सन्धि की गई, जिसमें लाहौर की सन्धि की अनेक शर्तों में सुधार किया गया। यह सन्धि लाहौर की दूसरी सन्धि या भैरोवाल की सन्धि कहलाती है।

लाहौर की सन्धि के अनुसार दिसम्बर 1846 ई. के अन्त में अंग्रेज़ी सेना को पंजाब में चले जाना था, परन्तु पंजाब की अशान्त स्थिति को देखकर तथा सिक्ख सेना से भयभीत होने के कारण बहुत से सिक्ख तथा अन्य वर्गों के लोग ऐसा नहीं चाहते थे। इसलिए 16 दिसम्बर 1846 ई. को सिक्खों और अंग्रेज़ों के मध्य एक अन्य सन्धि भैरोवाल की हुई, जिसमें लाहौर की सन्धि की अनेक शर्तों को दोहराया गया।

(1) लाहौर का प्रशासन अंग्रेज समर्थक आठ सिक्ख सरदारों की एक समिति को सौंप दिया गया, जो महाराजा दलीप सिंह के अवयस्क काल में कार्यभार संभालेगी। वह समिति लाहौर के रैजीडैण्ट के निर्देशानुसार कार्य करेगी।

(2) लाहौर में शान्ति व्यवस्था बनाए रखने के लिए स्थायी रूप से वहां एक अंग्रेज़ी सेना रखा जाना निश्चित हुआ, लाहौर सरकार ने इस सेना के व्यय के लिए 22 लाख रुपये वार्षिक देना स्वीकार किया।

(3) यह भी निश्चित हुआ कि यह प्रबन्ध 4 सितम्बर 1854 ई. तक चलता रहेगा और दलीप सिंह के व्यस्क होने पर वह स्वयं प्रशासन का कार्यभार संभाल लेगा।

इस प्रकार 'भैरोवाल की सन्धि' के फलस्वरूप पंजाब अंग्रेज़ों के नियन्त्रण में और भी अच्छी तरह से आ गया।

द्वितीय सिक्ख-युद्ध, 1848-49 ई.
(Second Anglo-Sikh War)

सिक्खों और अंग्रेज़ों के मध्य 1845-46 ई. में पहला युद्ध लड़ा गया। परिस्थितियां इतनी तेज़ी से बदलीं कि केवल दो वर्ष के पश्चात् ही 1848-49 ई. में इन दोनों पक्षों में एक अन्य युद्ध लड़ने की नौबत आ गई।

(क) द्वितीय सिक्ख युद्ध के कारण (Causes of Second Sikh War)–लार्ड डलहौज़ी के समय में 1848-49 ई. में अंग्रेज़ों और सिक्खों के मध्य जो द्वितीय युद्ध लड़ा गया, उसके मुख्य कारण निम्नलिखित थे:-

(1) सिक्ख सैनिकों में अपनी पहली हार के अपमान को धो डालने की इच्छा (Desire of the Sikh Soldiers to wipe of the Disgrace of first Defeat)–सिक्ख सैनिकों को पहले सिक्ख युद्ध में हार का मुंह देखना पड़ा था परन्तु वे भली भांति जानते थे कि उनकी पहली हार इसलिये नहीं हुई कि वे किसी प्रकार से अंग्रेज़ सैनिकों से कमज़ोर हैं वरन् इसलिए कि उनके तेजा सिंह और लालसिंह जैसे नेताओं ने विश्वासघात किया। अब वे अंग्रेज़ों से दो-दो हाथ करके अपनी पुरानी हार के अपमान को धो डालना चाहते थे।

(2) बड़े बड़े पदों पर अंग्रेज़ अफसरों का नियुक्त किया जाना (Appointment of British Officers on High Posts)–भैरोवाल की सन्धि के अनुसार पंजाब की वास्तविक शक्ति अंग्रेज़ों के हाथ में आ गई और अब उन्होंने धीरे-धीरे बड़े बड़े पदों पर अंग्रेज़ अफसरों को नियुक्त करना आरम्भ कर दिया। सिक्ख सरदारों ने अंग्रेज़ों की इस नीति को अपना अपमान समझा। वे अंग्रेज़ी राज्य से पंजाब को मुक्त कराना चाहते थे और फिर से वहां खालसा राज्य स्थापित करना चाहते थे।

(3) अंग्रेज़ों की तेज़ी से सुधार लाने की नीति (British Policy of speedy Reforms)–पंजाब पर अपना प्रभाव बढ़ाने के उद्देश्य से अंग्रेज़ों विशेषकर लाहौर के अंग्रेज़ रैज़ीडैण्ट **हैनरी लारेन्स** ने बड़ी तीव्र गति से अनेक सुधार करने का प्रयत्न किया। कभी सती प्रथा को रोकने के नियम बनाए गए, कभी कन्या वध के विरुद्ध, तो कभी जमींदारी प्रथा में परिवर्तन लाने का प्रयत्न किया गया। चाहे ये सुधार ठीक ही थे परन्तु वे इतनी तीव्र गति से किए गए कि लोगों ने उन्हें अपने धार्मिक तथा सामाजिक जीवन में अनुचित हस्तक्षेप समझा।

(4) सिक्ख सेना की संख्या में कमी और उनके वेतन में कटौती (Disbandment of the Khalsa Soldiers and Reduction in their Pay)–सिक्ख सेना की संख्या लाखों में थी परन्तु लाहौर की सन्धि के अनुसार उसकी संख्या घटाकर 10 हजार पैदल तथा 12 हजार घुड़सवार कर दी गई। इस प्रकार हज़ारों सैनिक जो बेकार हो गए वे अंग्रेज़ों के घोर विरोधी हो गये। केवल यही नहीं, जिन सैनिकों को नौकरी पर रखा भी गया, उनके वेतन भी बहुत कम कर दिये गए। इस प्रकार समस्त खालसा सेना में अंग्रेज़ों के विरुद्ध क्रोध की भावनाएं फैल गईं और वे अंग्रेज़ों के विरुद्ध एक अन्य युद्ध की तैयारियां करने लगे।

(5) अंग्रेज़ों का लाल सिंह और रानी जिन्दां के प्रति कठोर व्यवहार (Harsh Treatment of Lal Singh and Rani Jindan by the English)–अंग्रेज़ों ने जिस प्रकार से सिक्खों के प्रधानमंत्री लालसिंह से कठोर व्यवहार किया और उसे दोषी ठहराकर पंजाब से निर्वाचित करके बनारस भेज दिया, उससे सिक्ख बहुत रुष्ट हुए। इससे भी अधिक क्रोध तब आया, जब राजमाता रानी जिन्दां को षड्यंत्रकारिणी ठहराकर उसे निर्वासित करके पहले शेखूपुरा भेजा गया और बाद में उसे बनारस भेज दिया गया। केवल यहीं नहीं, रानी जिन्दां की पैंशन जो पहले 1.5 लाख नियत की गई थी, वह घटाकर 48 हज़ार कर दी गई और बाद में और घटाकर केवल 12 हज़ार प्रति वर्ष कर दी गई। रानी जिन्दां का यह अपमान सिक्खों के लिए असहनीय था, जो अपने अधिकारों की रक्षा के लिए एक बार फिर शस्त्र उठाने पर विवश हो गए।

(6) मुल्तान के दीवान मूलराज का विद्रोह, 20 अप्रैल 1848 ई. (Revolt by Diwan Moolraj with Multan)–'पंजाब में आग पकड़ने वाला मसाला तो तैयार था ही, उसे केवल चिंगारी की आवश्यकता थी, जो मुल्तान के गवर्नर मूलराज के विद्रोह से उसे मिल गई।' अपने पिता सावनमल की मृत्यु के पश्चात् मूलराज 1844 ई. में मुल्तान

का गवर्नर बना। इस पद के पहले वह 12 लाख रुपया वार्षिक लाहौर सरकार को दिया करता था, परन्तु जब दिसम्बर 18.. ई. में भैरोवाल की सन्धि के अनुसार अंग्रेज़ों ने लाहौर का कार्यभार सम्भाल लिया तो उन्होंने एक ओर तो मूलराज का वार्षिक कर 12 लाख से 18 लाख कर दिया और दूसरे, उसे अपने अधीन प्रदेशों का 1/3 भाग छोड़ने के लिए कहा गया। केवल यही नहीं, उस पर कुप्रबन्ध का भी आरोप लगाकर उसके आन्तरिक मामलों में अंग्रेज़ों ने दखल देने का प्रयास किया। मूलराज इस बार अन्याय को सहने वाला नहीं था इसलिए उसने त्यागपत्र देने की इच्छा प्रकट की। अंग्रेज़ों ने शीघ्र ही उसके स्थान पर सरदार काहन सिंह को मुल्तान का गवर्नर नियुक्त कर दिया और उसे चार्ज दिलाने के लिए 500 सैनिकों सहित दो बड़े अफ़सर एग्न्यू और एण्डरसन (Agnew and Anderson) को भेज दिया। 19 अप्रैल 1848 ई. को दीवान मूलराज ने मुल्तान का चार्ज नए गवर्नर और अंग्रेज़ अफ़सरों को सौंप दिया परन्तु अगले ही दिन किसी ने दोनों अंग्रेज़ अफसरों एग्न्यू और एण्डरसन का वध कर दिया। अंग्रेज़ों ने दीवान मूलराज पर ही इसका आरोप लगाया, जिससे भड़क कर उसने विद्रोह कर दिया और मुल्तान पर फिर से अधिकार कर दिया। उसकी देखादेखी यह विद्रोह सारे पंजाब में फैल गया।

(7) छतरसिंह और शेरसिंह का विद्रोहियों से मिल जाना (Joining of Chhattar Singh and Sher Singh with the Rebels)–छतरसिंह लाहौर सरकार की ओर से हजारा का गवर्नर था, अंग्रेज़ों ने उसे भी विद्रोह करने पर विवश कर दिया। एक अंग्रेज़ अफ़सर **कैप्टन एबट** (Caiptain Abbot) ने हजारा के अफ़गानों को सिक्ख राज्य के विरुद्ध भड़का कर यहां अशान्ति फैला दी। अंग्रेज़ों की इस षड्यन्त्रकारी नीति के विरुद्ध अगस्त 1848 ई. में छतरसिंह ने हथियार उठा लिये और वह मूलराज के साथ मिल गया। इतने में छतरसिंह का पुत्र शेरसिंह, जिसे लाहौर सरकार की ओर से मुल्तान का विद्रोह दबाने के लिए भेजा गया था, वह भी अपने पिता और दीवान मूलराज से सितम्बर 1848 ई. में आ मिला। इस प्रकार अंग्रेज़ों के विरुद्ध विद्रोह सारे पंजाब में फैल गया।

(8) लार्ड डलहौज़ी का उत्तरदायित्व (Responsibility of Lord Dalhousi)–सिक्खों से दूसरा युद्ध प्रारम्भ करने में लार्ड डलहौज़ी भी एक बड़ा कारण सिद्ध हुआ है। वह एक साम्राज्यवादी विचारों वाला गवर्नर जनरल था, इसलिए वह किसी-न-किसी बहाने सिक्खों से युद्ध छेड़कर पंजाब को अंग्रेज़ी साम्राज्य में मिलाना चाहता था। उसी की नीति के कारण मुल्तान के एक छोटे से विद्रोह को एक बड़े विद्रोह का रूप धारण करने दिया गया ताकि अंग्रेज़ों को पंजाब को अंग्रेज़ी साम्राज्य में मिलाने का अच्छा बहाना मिल सके। उसने जान-बूझकर पंजाब में ऐसी नीति अपनाई ताकि सिक्ख लोग भड़क उठें और अंग्रेज़ों के विरुद्ध युद्ध छेड़ दें।

(ख) युद्ध की घटनाएं (Events of war)–यह युद्ध नवम्बर 1848 ई. में प्रारम्भ हुआ और 29 मार्च 1849 ई. को पंजाब के अंग्रेज़ी साम्राज्य में विलय से समाप्त हुआ। अप्रैल 1848 ई. में मुल्तान के दीवान मूलराज के द्वारा प्रारम्भ किया गया विद्रोह जब सारे पंजाब में फैल गया, तब लार्ड डलहौज़ी ने कार्यवाही करना उचित समझा। इस युद्ध की मुख्य घटनाएं निम्नलिखित हैं :-

(1) रामनगर की लड़ाई, 22 नवम्बर 1848 ई. (Battle of Ram Nagar)–अंग्रेज़ी सेना के सेनापति लार्ड ह्यू गफ़ ने 16 नवम्बर 1848 ई. को रावी नदी को पार किया और 22 नवम्बर को वह चिनाब नदी के किनारे सरदार शेरसिंह के सामने खड़ा हुआ। रामनगर के स्थान पर दोनों सेनाओं में युद्ध हुआ परन्तु इसमें हार-जीत का कोई फैसला न हो सका।

(2) चिलियांवाला की लड़ाई, 13 जनवरी 1849 ई. (Battle of Chillianwala)–इस युद्ध की दूसरी महत्वपूर्ण लड़ाई 13 जनवरी 1849 को चिलियांवाला के स्थान पर हुई। यहां एक अत्यन्त भयानक युद्ध हुआ, जिसमें दोनों पक्षों को काफी हानि उठानी पड़ी परन्तु फिर भी फैसला कोई न हो सका। सिक्खों की इस लड़ाई में अनेक वीर व्यक्ति मारे गये और उन्हें लगभग 12 तोपों से हाथ धोना पड़ा। उनके लगभग 602 व्यक्ति इस युद्ध में मारे गये और 1651 ज़ख्मी हुये। इतनी बड़ी हानि की सूचना जब लन्दन पहुंची तो अंग्रेज़ों ने **लार्ड गफ** की तबदीली का आदेश दे दिया और उसके स्थान पर **चार्ल्स नेपियर** (Sir Charles Napier) को नया कमाण्डर बनाकर भेज दिया। लार्ड डलहौज़ी इस लड़ाई में होने वाली हानि को देखकर चिल्ला उठा-"**हमें एक बड़ी विजय प्राप्त हुई है परन्तु एक और ऐसी विजय हमारा नाश कर देगी।**"

(3) मुल्तान की लड़ाई, 22 जनवरी 1849 ई. (Battle of Multan)–मुल्तान अप्रैल के महीने से ही दोबारा दीवान मूलराज के अधीन हो गया था, परन्तु दिसम्बर 1849 ई. में एक **अंग्रेज़ विहश** (General Whish) ने मुल्तान शहर पर घेरा डाल दिया। कुछ समय तक दीवान मूलराज डटकर अंग्रेज़ों का मुकाबला करता रहा परन्तु एक दिन अचानक एक गोले ने उसके सारे बारूद को आग लगा दी। इस भारी हानि के कारण दीवान मूलराज और अधिक समय तक न लड़ सका और 22 जनवरी 1849 ई. को उसने हथियार डाल दिये। मुल्तान की विजय से चिलियाँवाला के स्थान पर अंग्रेज़ों की जो मान-हानि हुई थी उसकी काफी हद तक पूर्ति हो गई।

(4) गुजरात की लड़ाई 21 फरवरी 1849 ई. (Battle of Gujarat)–चिलियांवाला की लड़ाई के पश्चात् **लार्ड गफ़** को वापिस बुलाने और उसके स्थान पर **सर चार्ल्स नेपियर** को कमाण्डर नियुक्त करने का आदेश हुआ परन्तु उसके आने से पहले ही लार्ड गफ़ ने अपने नाम पर लगने वाले धब्बे को धो डाला। मुल्तान की विजय के पश्चात् जनरल व्हिश की सेनाएं भी लार्ड गफ़ से आ मिलीं और इस प्रकार उसके अधीन अब सैनिकों की संख्या 2,50,000 हो गई और तोपों की संख्या 100 तक पहुंच गई, जबकि सिक्खों की संख्या 61,500 थी और उनके पास लगभग 61 तोपें थीं। दोनों सेनाओं के मध्य 21 फरवरी 1849 ई. को चिनाब नदी के किनारे स्थित गुजरात के स्थान पर एक भयंकर युद्ध हुआ। अफ़गानिस्तान के शासक **दोस्त मुहम्मद** के लड़के अकरम खां ने भी सिक्खों का साथ दिया। क्योंकि इस युद्ध में दोनों ओर से तोपों का खूब प्रयोग हुआ, इसलिये कई इतिहासकार इस युद्ध को **'तोपों के युद्ध'** के नाम से पुकारते हैं। तीन घण्टे लगातार गोलाबारी होती रही परन्तु अन्त में सिक्खों को अपने मोर्चे छोड़कर भाग जाना पड़ा। फिर 13 मार्च 1849 ई. को सिक्ख सरदारों ने हथियार डाल दिये। अफ़गान सेनाओं को दर्रा खैबर से परे भगा दिया गया। गुजरात का यह युद्ध निर्णयकारी युद्ध था, जिसने लार्ड गफ़ के सम्मान को पुन: स्थापित कर दिया।

(ग) युद्ध के परिणाम (Results of war)–इस लड़ाई के अनेक महत्त्वपूर्ण परिणाम निकले, जो निम्नलिखित हैं :-

(1) इस युद्ध में सिक्खों की पूर्ण पराजय हो गई थी। इसलिए एक घोषणा द्वारा पंजाब को 29 मार्च 1849 ई. को अंग्रेजी साम्राज्य में मिला लिया गया।

(2) महाराजा दलीप सिंह की 50 हज़ार पौण्ड वार्षिक पैन्शन नियत कर दी गई। कुछ समय पश्चात् वह इंग्लैण्ड चला गया, जहां उसने ईसाई धर्म अपना लिया, परन्तु अपने जीवन के अन्तिम दिनों में वह फिर पंजाब आ गया और अपने पुराने धर्म को फिर से अपना लिया। उसकी माता रानी जिन्दां भी उसके साथ विदेश में रही, जहां 1853 ई. में उसकी मृत्यु हो गई। स्वयं दलीप सिंह काफी समय तक जीवित रहा और 1893 ई. में उसकी मृत्यु हो गई।

(3) दीवान मूलराज पर मुकद्दमा चलाया गया। उसे दोषी ठहराया पहले उसे मृत्यु दण्ड दिया परन्तु बाद में उसका दण्ड घटाकर उसे जीवनभर के लिए काले पानी भेज दिया गया।

(4) खालसा सेना को भंग कर दिया गया और विभिन्न सिक्ख सरदारों की ज़मीनें उनसे छीन ली गईं। स्वयं महाराजा दलीपसिंह को इंग्लैंड की महारानी विक्टोरिया के लिए सुप्रसिद्ध कोहेनूर हीरे से हाथ धोना पड़ा।

पहाड़ी राज्यों द्वारा अंग्रेज़ों के विरुद्ध विद्रोह
(Revolts of Hill States against the British)

सिक्खों की पहली लड़ाई के बाद अंग्रेज़ों ने **मण्डी, सुकेत,** चम्बा के राजाओं को शिमला क्षेत्र के राजाओं की भांति उनके राज्य लौटा दिये तथा शासन कार्यों में भी स्वयत्तता प्रदान की परन्तु लाहौल-स्पीति, कुल्लू, कांगड़ा, जलवां, गुलेर, नूरपुर, दातारपुर, हरिपुर, कोटला आदि के शासकों के राज्य छीन लिए और उन्हें अंग्रेज़ी साम्राज्य में मिला लिया गया। इनके शासकों को छोटी-छोटी जागीर देकर जागीरदार बना दिया गया। इससे इन रियासतों के शासक निराश हो गए। अत: अंग्रेज़ों की सिक्खों के साथ अनबन को देखते हुए 1848 ई. में कांगड़ा क्षेत्र के विस्थापित शासकों ने गुप्त मंत्रणा की। इन रियासतों के शासकों ने कम्पनी सरकार द्वारा उन के राज्य छीनने के फैसले का घोर विरोध किया। **नूरपुर** के उद्यमी एवं वीर वजीर **रामसिंह पठानिया** ने जम्मू क्षेत्र से सेना का प्रबन्ध किया और अंग्रेज़ों के विरुद्ध युद्ध की घोषणा

कर दी। रामसिंह ने रात के समय साहस के साथ आक्रमण करके रावी के तट पर स्थित शाहपुर कण्डी किले पर कब्जा कर लिया। यहां पर उसने नूरपुर के राजा **वीरसिंह** के नाबालिग पुत्र **जसवन्त सिंह** को राजा घोषित किया और स्वयं उसका मन्त्री बना। शाहपुर कण्डी के आसपास के क्षेत्र के 400 बहादुर नवयुवक वीर मंगल सिंह के नेतृत्व में रामसिंह पठानिया की सेना में आ मिले। इसी समय **कांगड़ा** के राजा **प्रमोद चन्द, जसवां** के राजा **उम्मेद सिंह, राजकुमार जयसिंह** और **दातारपुर** के राजा **जगत चन्द** आदि ने भी अंग्रेज़ी सरकार के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। अंग्रेज़ों ने जालन्धर के कमिश्नर **हैनरी लारेंस** के नेतृत्व में भारी सेना कांगड़ा भेजी। उन्होंने शाहपुर दुर्ग को घेर लिया। रामसिंह और उसके सिपाही खूब लड़े। अन्त में उन्होंने युद्ध सामग्री समाप्त होने पर किला छोड़ कर जंगल में **'राजा का डेरा'** नामक स्थान पर मोर्चा लगाया। यहां पर भी अंग्रेज़ी सेना से घमासान युद्ध हुआ। वहां से रामसिंह ने भी उनसे घमासान युद्ध किया। अन्त में राजा प्रमोद चन्द, जगत चन्द, उमेद सिंह और उसके पुत्र जयसिंह को पकड़ लिया गया और देश निकाला देकर अल्मोड़ा जेल में नज़रबन्द कर दिया गया।

1849 ई. में रामसिंह पाठनिया ने अंग्रेज़ों को फिर ललकारा। रामसिंह ने दो सिख रैजीमेंटों और पहाड़ी फौज के साथ शाहपुर के उत्तर पूर्व की ओर **'डल्ले की धार'** नामक पहाड़ी पर मोर्चा लगाया। अंग्रेज़ों ने जनरल व्हीलर के नेतृत्व में भारी सेना लेकर आक्रमण किया। दोनों सेनाओं के बीच घमासान युद्ध हुआ और असंख्य योद्धा मारे गए। कई अंग्रेज अफसर रामसिंह की बहादुर सेना की गोलियों का निशाना बने। तत्कालीन ब्रिटिश प्रधानमन्त्री सर **रॉबर्ट पील** का भतीजा **जॉन पील लैफ्टीनेंट** भी इस युद्ध में मारा गया। अन्त में रामसिंह पठानिया की पराजय हुई। उसे पकड़ लिया गया और देश -निकाला देकर सिंगापुर जेल में डाल दिया गया। कालांतर में स्वाधीनता संग्राम के इस पहले महारथी की सिंगापुर जेल में ही मृत्यु हो गई।

पहाड़ी राज्यों पर नियन्त्रण की अंग्रेज़ों की नीति
(British Policy of control on Hill States)

अंग्रेज़ों ने पहाड़ी राजाओं से किए गए अपने वादों का पूर्णरूप से पालन नहीं किया। महानचन्द, जगत सिंह, रामशरण सिंह, पूरन चन्द, मोहिन्दर सिंह और फतेह प्रकाश को उनकी गद्दियाँ तो वापस दे दीं, लेकिन अंग्रेज़ों ने इस क्षेत्र के कुछ महत्त्वपूर्ण स्थानों पर अपना अधिकार बनाए रखा। अंग्रेज़ों का कहना था कि यह पहाड़ी रियासतों की विदेशी आक्रमणों से सुरक्षा और उनकी पुरानी जागीरों को बनाए रखने के लिए आवश्यक है। इस प्रकार अंग्रेज़ों ने सैनिक महत्त्व के सभी ठिकानों पर अधिकार कर लिया। एक निर्णय यह भी लिया गया कि जो राजवंश समाप्त हो चुके हैं अथवा जिन रियासतों के उत्तराधिकारियों में उत्तरधिकार के लिए झगड़ा है, वे सभी अंग्रेज़ी साम्राज्य का अंग बन जाएँगे। अनेक पहाड़ी शासकों को युद्ध का खर्चा पूरा करने के लिए सोने और सिक्कों के रूप में बड़ी राशियाँ जमा करवाने के लिए भी कहा गया।

अंग्रेज़ों के पहाड़ी राज्यों पर नियंत्रण का वर्णन इस प्रकार है:-

(क) शिमला की पहाड़ी रियासतों पर नियंत्रण
(Control over Shimla Hill States)
अथवा
अंग्रेज़ों के शिमला की पहाड़ी रियासतों से सम्बन्ध
(Relation between the British and Shimla Hill States)

1. जुब्बल (Jubbal)- अंगल-गोरखा युद्ध में अंग्रेज़ों ने शिमला क्षेत्र की रियासतों पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया था। 18 **नवम्बर**, 1815 को सनद के अधीन जुब्बल की रियासत **राणा पूर्णचन्द** और उसके वंशजों को सौंप दी गई थी। दोबारा गद्दी पर बैठने के पश्चात् राजा मूर्खतापूर्ण कार्य करने लगा और उसके घटिया और नीच अधिकारियों ने जनता को लूट कर भ्रष्टता को स्थापित कर दिया। राजा अंग्रेज़ों द्वारा बार-बार चेतावनी दिए जाने पर भी शासन प्रबन्ध

कोई सुधार नहीं कर सका। अन्ततः अंग्रेज़ सरकार ने उस समय के चेता के वज़ीर दांगी को जुब्बल के राणा का वज़ीर नियुक्त कर दिया। वह एक योग्य प्रशासक था। उसने कई सुधार किए लेकिन मृत्यु के कारण उसका कार्यकाल शीघ्र ही समाप्त हो गया और रियासत में दोबारा फैल गई। अंग्रेज़ सरकार को पुनः रियासत में हस्तक्षेप करना पड़ा। 1832 ई. में राणा पूर्णचन्द की सहमति से अंग्रेज़ों ने शासन व्यवस्था के लिए एक तहसीलदार नियुक्त कर दिया। 1840 ई. में यह निर्णय लिया गया कि राणा को पुनः गद्दी दे दी जाए, लेकिन आज्ञा-पत्र पहुँचने से पहले ही राणा की मृत्यु हो गई। उसका पुत्र कर्मचन्द नाबालिग था। इसलिए उसके बालिग होने तक अंग्रेज़ सरकार का ही रियासत पर कब्ज़ा रहा। 1854 ई. में युवा राणा **कर्मचन्द** को गद्दी पर बिठाया गया। कर्मचन्द का शासन कठोर दमनकारी था। वह अनावश्यक रूप से जनता से बेगार लेता था और तीन बार तो उसने जनता के धन को लूटा। अतः अंग्रेज़ों से उसके सम्बन्ध कटु हो गए।

2. बिलासपुर (Bilaspur)- 1814 में गोरखों तथा बिलासपुर की सेना मलौण के युद्ध में अंग्रेज़ों से हार गई। तत्पश्चात् बिलासपुर के राजा महान चन्द ने जनरल आक्टरलूनी के संरक्षण के लिए आवेदन किया। अतः **6 मार्च, 1815** ई. को अंग्रेज़ों ने बिलासपुर के राजा **महानचन्द** को सनद दे दी। उसने 1824 ई. तक शासन किया। उस के बाद बिलासपुर में खड़क चन्द 1824 ई. में गद्दी पर बैठा। उसने अपने सम्बन्धी अधिकांश मियाँ लोगों की जागीरें छीन लीं। उसकी इन नीतियों के कारण खुला गृहयुद्ध प्रारम्भ हो गया। राजा का प्रमुख विरोधी **मियाँ** जंगी था। राजा ने विद्रोह को दबाने के लिए 300 रोहिला पठानों की सेना बुलाई, इस सेना और मियाँ लोगों में अनेक झड़पें हुईं। ब्रिटिश शासन का राजनीतिक प्रतिनिधि विलियम मर्रे, 1827 ई. में प्रथम नासिरी बटालियन की तीन टुकड़ियाँ लेकर उपद्रव दबाने के लिए गया। तब उसने मियाँ मीरी और सनसारू को प्रशासन की बागडोर सौंप दी और राजा को भी अपना व्यवहार सुधारने की चेतावनी दी। अन्तिम दिनों में खड़क चन्द ने मियाँ से समझौता कर लिया और उन्हें उनकी जागीरें सौंप दीं। खड़क सिंह 1839 ई. में मृत्यु हो गई। उसका कोई पुत्र नहीं था। उसकी दो रानियाँ सती होने के लिए तैयार थीं परन्तु रसेल क्लार्क ने उन्हें ऐसा न करने के लिए मना लिया और गुज़ारे के लिए उदारतापूर्वक अनुदान देने का आश्वासन दिया। जब क्लार्क को यह विश्वास हो गया कि कोई विधवा रानी गर्भवती नहीं है, तो उसने **मियाँ जंगी** को राजा बनाने की स्वीकृति सरकार से ली। जंगी 1839 ई. में जगतचन्द के नाम से विधिवत् राजा बना। उसके बाद राजा **हीराचन्द** ने 1850 ई. से 1882 ई. तक शासन किया। इसने बिलासपुर को 1863 ई. में छः तहसीलों 1) बिलासपुर, 2) पंजगाई, 3) फतेहपुर, 4) त्यून, 5) सुन्हाणी व 6) बच्छेरटू में विभक्त किया था। राजा महान चन्द के समय देसा सिंह मजीठिया ने कोटधार को अपने कब्ज़े में कर लिया था। राजा हीरा चन्द ने उसे छुड़ाने की कोशिश की। भंगी पुरानिया राजा का बुद्धिमान् वज़ीर था। अगले राजा **अमर चन्द** (1883-1888 ई.) के समय जनता ने 'जुग्गा' या 'झुग्गा' आंदोलन किया, जिसमें तहसीलदार को मार दिया गया। रियासत के अन्तिम राजा **आनन्द चन्द** (1927-1948 ई.) हुए, जिन्होंने रियासत में कई सुधार किये। 1931 में अंग्रेज़ों ने राजा आनन्द चन्द को पूरे अधिकार दे दिये।

3. क्योंथल (Keonthol)- आंगल-गोरखा युद्ध में विजय के बाद अंग्रेज़ों ने **6 दिसम्बर, 1815** को क्योंथल के राजा संसार सेन को सनद देकर उसका राज्य वापिस कर दिया परन्तु उन्होंने आठ परगने अपने पास रख लिए। 1827 में अंग्रेज़ों ने क्योंथल के राणा से 12 गांव लिए। 1830 ई. के आस-पास क्योंथल राज्य की परिस्थितियाँ भी ठीक नहीं थीं। क्योंथल के राजा के विरुद्ध तीन शिकायतें गवर्नर जनरल से की गई थीं। गवर्नर जनरल ने क्योंथल राज्य के शासक को शासन के अयोग्य माना और कुछ समय के लिए इसे राज्य-प्रबन्ध से वंचित कर दिया गया। 1840 ई. में उसका राज्य पुनः उसे सौंप दिया गया।

4. बघाट (Baghat)- 1815 में गोरखों से युद्ध के बाद अंग्रेज़ों का बघाट पर आधिपत्य स्थापित हो गया। अंग्रेज़ों ने आठ परगनों परगने बघाट के राणा महिन्द्र सिंह को दे दिये तथा पाँच परगने एक लाख तीस हज़ार रुपये में पटियाला के राजा को दे दिये। बघाट के राजा मोहिन्दर सिंह की 11 जनवरी, 1839 में मृत्यु हो गई तथा अंग्रेज़ों ने उसके राज्य को ज़ब्त कर लिया। उसके पीछे उसका भाई और पत्नियों रह गईं। उन्होंने मोहिन्दर सिंह के राज्य पर अपना अधिकार जताया। मृत राजा के छोटे भाई विजय सिंह और मृत राजा की पत्नियां ने अंग्रेज़ी सरकार को अपीलें भेजीं। इस पर कलकत्ता स्थित

सचिव ने जॉर्ज रसेल क्लार्क से अपीलों पर रिपोर्ट माँगी। जॉर्ज रसेल क्लार्क का विजय सिंह के पक्ष में मजबूत तर्क होने के कारण ब्रिटिश सरकार ने क्लार्क की संस्तुति मान ली। अंग्रेज सरकार ने क्लार्क को यह सूचित किया कि राज्य विजय सिंह को लौटा दिया जाए, क्योंकि मोहिन्दर सिंह नि:सन्तान मर गया था और उसका अन्य कोई निकट उत्तराधिकारी नहीं था। अत: क्लार्क को यह ज़िम्मेदारी सौंपी गई कि वह 21 जनवरी, 1842 को कसौली में, बघाट के नए राजा को गवर्नर जनरल से मिलवाए। राज्य जब्त करने से लेकर वापस लौटाने तक के समय में जितना लगान इकट्ठा किया गया है, वह भी राजा को लौटा दिया गया। इस प्रकार 1842 में बघाट ठकुराई **राणा विजय सिंह** को सौंप दी गई जो महिन्द्र सिंह का भाई था। ब्रिटिश सरकार ने कसौली का क्षेत्र छावनी बनाने के उद्देश्य से 50 हजार रुपये में खरीद लिया। 1849 में विजय सिंह की मृत्यु हो गई। उसका भी कोई पुत्र नहीं था। इसलिए गवर्नर जनरल लार्ड डलहौजी ने लैप्स की नीति के अन्तर्गत बघाट को अंग्रेज़ी साम्राज्य में मिला लिया। विजय सिंह के भतीजे उभेद सिंह ने रियासत पर दावा किया परन्तु उसके अंग्रेज़ों द्वारा राणा बनाए जाने के कुछ घंटों बाद से 1862 में मृत्यु हो गई। तत्पश्चात् उसके नाबालिग पुत्र दलीप सिंह को नई सनद दे दी गई।

5. कुमारसेन (Kumarsen)- **11 मई, 1839** के कुमारसेन के राणा केहर सिंह की नि:सन्तान मृत्यु हो गई। उसका राज्य जब्त कर अंग्रेज़ी राज्य में मिला लिया गया। पहले राणा की अंग्रेज़ों के हित में किए गए कार्यों को दृष्टिगत रखते हुए इस क्षेत्र में 'सनद' के अनुसार अधिक राज्यों के अधिग्रहण की प्रवृत्ति को रोकने के लिए, मृत राजा केहर सिंह के एक सम्बन्धी प्रीतम सिंह को एक वर्ष के लगान के बराबर नज़राना देकर गद्दी पर बैठने की सनद जारी कर दी। इससे पूर्व कि यह निर्णय प्रीतम सिंह के पास पहुँचता, एक विद्रोह फूट पड़ा जिसे सम्भवत: प्रीतम सिंह ने ही प्रेरित किया था। इसलिए जाँच-पड़ताल होने तक शिमला के राजनीतिक प्रतिनिधि को राज्य का प्रशासन सौंप दिया गया। जून, **1840** को एक **सनद** के माध्यम से **प्रीतम सिंह** को राज्य सौंप दिया गया, जिसके अनुसार उसके पुरुष अथवा स्त्री वंशजों को भी भविष्य में उस पर राज्य करने का अधिकार दिया गया। शब्द 'नुसलूँ' और 'बडनुसलूँ' और **'बड बुत्तानू'** तथा **'बुत्तानू'** बाद में नई सनद में जोड़े गए। राजा ने अपने राज्य में सती प्रथा और कन्या (शिशु) वध को रोकने का वचन दिया, जोकि सम्भवत: कुमारसेन में उस समय प्रचलित थे।

6. थरोच (Tharoch)- अंग्रेज़ों की 1815 की विजय के बाद कर्म सिंह को थिरोच का ठाकुर मान लिया गया। 1819 में छोबू कर्म सिंह को सनद देकर ठाकुर के अधिकार मिल गए। उस पर अन्य रियासतों की तरह सनद की शर्तें लगाई गई परन्तु शीघ्र ही छोबू और उसके वंशजों को 1819 ई. से गद्दी त्यागने के लिए विवश किया गया। अंग्रेज़ों ने 1841 ई. में श्याम सिंह को हटाकर राज्य को जुब्बल में मिला दिया। यह प्रबन्ध 1843 ई. तक इसी प्रकार चलता रहा। अन्तत: जून, 1843 में एक सनद द्वारा रणजीत सिंह और उसके वंशजों के राज्याधिकार को सदा के लिए स्वीकार कर लिया गया। अंग्रेज़ों को युद्ध के समय सैनिक सहायता देने की सामान्य शर्तें लगाई गईं।

7. 1815 में सिरमौर (Sirmaur)- 1815 ई. में सिरमौर की गद्दी **फतेह प्रकाश** को सौंपी गई। उसकी आयु उस समय छह वर्ष की थी। उसकी अवयस्क अवस्था में शासन कार्य गुलेरी रानी ब्रिटिश अधिकारी **जी बुर्च** की देख-रेख में चलाती थी, जो नाहन के दरबार में सहायक प्रतिनिधि था। बुर्च तथा रानी ने मिलकर राज्य में अनेक सुधार किए। राज्य के भ्रष्ट दीवान किशन चन्द को पद से हटाया और राज्य से बाहर निकाल दिया गया। रानी ने पुलिस प्रशासन में अनेक सुधार किए। सराएँ बनवाईं, चोरी और जुए पर रोक लगाई तथा अन्य कई सुधार किए गए। राज्य का लगान बढ़ गया। कप्तान बुर्च ने स्वयं सार्वजनिक कार्यों के लिए सरकारी खर्च का हिसाब बनाया। उसने महसूल और सीमा शुल्क में भी सुधार किया। अनाज और पशुओं को कर मुक्त कर दिया गया तथा हाथियों के पकड़ने पर कर समाप्त कर दिया। 'फंत व्याहलेरी' अर्थात् धर्मवृत्ति, जोकि राजा की सन्तानों की शादी पर इकट्ठा किया जाने वाला कर था, समाप्त कर दिया गया। 1827 ई. में राजा फतेहचन्द के वयस्क होने पर भारत सरकार ने उसे पूर्ण शासकीय और कर उगाहने सम्बन्धी अधिकार प्रदान कर दिए। इसी वर्ष लॉर्ड एमहर्स्ट के शिमला दरबार में वह उपस्थित हुआ।

सिरमौर के राजा ने जनवरी, 1820 ई. में गवर्नर जनरल से प्रार्थना की कि **जौनसार बाबर, कलसी** और **क्यारदा-दून** के क्षेत्र उसे वापस कर दिए जाएँ। उसने 1,75,000 रुपये का नजराना जौनसार बाबर के लिए और 50,000 रुपये क्यारदा दून के लिए देने का प्रस्ताव रखा। गवर्नर ने जॉर्ज रसेल क्लार्क से सरकारी तौर पर इन क्षेत्रों के सम्बन्ध में रिपोर्ट मांगी। राजनीतिक प्रतिनिधि और सरकार के बीच लम्बे पत्राचार और परामर्श के पश्चात् सरकार ने जौनसार बाबर का क्षेत्र राजा को देने से इनकार कर दिया, केवल क्यारदा घाटी वापस राजा को देने पर अंग्रेज़ सहमत हुए। सिरमौर के राजा द्वारा अम्बाला में राजनीतिक प्रतिनिधि के पास 50,000 रुपये जमा करवाने पर उसे क्यारदा घाटी के पूर्ण राजकीय अधिकार प्रदान कर दिए गए। 5 सितम्बर, **1833** को एक **सनद** द्वारा क्यारदा घाटी राजा फतेह प्रकाश को दे दी गई और उस पर निम्नलिखित शर्तें भी लगाई गईं:-

1) लोगों के अधिकारों की रक्षा के साथ-साथ निष्पक्ष रूप से न्याय किया जाएगा।

2) आवागमन पर कोई महसूल अथवा सीमा शुल्क नहीं लगाया जाएगा।

3) नई सड़कों का निर्माण और वर्तमान सड़कों का उचित रख-रखाव किया जाएगा।

4) कुशल पुलिस प्रबन्ध द्वारा व्यापारियों और यात्रियों की सुरक्षा का प्रबन्ध किया जाएगा।

1850 ई. में फतेह प्रकाश की मृत्यु हो गई।

8. बाघल (Baghal) - यह ठकुराई भी 1815 में अंग्रेज़ों के अधिकार में आ गई तथा एक सनद द्वारा इसका नियंत्रण जगत सिंह को दे दिया गया। किश्न सिंह (1840-1876) के काल में 1857 के विद्रोह में उसने अंग्रेज़ों की सहायता की जिदसके बदले में उसे 'पुश्त-दर-पुश्त' राजा की उपाधि दी गई।

9. बलसन (Balsan) - आंग्ल-गोरखा युद्ध के बाद बलसन अंग्रेज़ों के अधीन आ गई। बाद में अंग्रेज़ों ने देलढ पर बुशैहर का अधिकार मान कर इसे 8 फरवरी 1816 को एक सनद द्वारा बुशैहर के अधीन कर दिया। डेलठ, बुशैहर को 150 रुपये वार्षिक कर देता था।

10 सांगरी (Sangri) - 1815 में यह रियासत भी अंग्रेज़ों के अधीन आ गई तथा उन्होंने 16 दिसम्बर 1815 को सांगरी कुल्लू के राजा विक्रमजीत को लौटा दी। उसकी मृत्यु के बाद अंग्रेज़ों ने सांगरी का नियंत्रण उसके बेटे अजीत सिंह को दे दिया।

11. भजी (Bhajji)- गोरखा युद्ध जीतने के बाद यह ठकुराई भी अंग्रेज़ों के अधीन आ गई तथा एक सनद द्वारा ठकुराई रूद्र पाल को लौटा दी गई। इस सनद के बदले यह ठकुराई अंग्रेज़ों को 1440 रुपये वार्षिक नजराना देती थी।

12. धामी (Dhami)- अंग्रेज़ों के अधीन माने के बाद अंग्रेज़ों ने एक सनद द्वारा यह ठकुराई गोवर्द्धन सिंह को दे दी। 1857 के विद्रोह में अंग्रेज़ों का साथ देने के बदले उसका नज़राना 720 रुपये से आधा का दिया गया। 1920 में अंग्रेज़ों ने यहां के शासक दलीप सिंह को पूरे अधिकार दे दिये।

13. महलोग (Mehlog)- अंग्रेज़ों ने यह ठकुराई को 4 सितम्बर 1815 को एक सनद द्वारा संसार चन्द को प्रदान कर दी। रघुनाथ चन्द (1880-1902) एक कुशल प्रशासक था। अंग्रेज़ों ने प्रसन्न होकर उसे 1898 ई. में राणा के शासक दुर्गा चन्द को अंग्रेज़ों ने पूरे अधिकार दे दिए। नरेन्द्र चन्द के काल में अंग्रेज़ों ने यहां का प्रशासन चलाने के लिए एक मैनेजर नियुक्त किया, क्योंकि नरेन्द्र चन्द जब गद्‌दी पर बैठा तब वह नाबालिग था।

14. कुठार (Kuthar)- 3 सितम्बर, 1815 को अंग्रेज़ों ने यह ठकुराई एक सनद द्वारा भूप सिंह कौ लौटा दी। राजा रणजीत चन्द को अंग्रेज़ों ने 1908 में राज्य के पूरे अधिकार सौंप दिये।

15. मांगल (Mangal) - 1815 में यह ठकुराई अंग्रेज़ों के अधीन आ गई तथा उन्होंने 20 सितम्बर, 1815 को ठकुराई राजा बहादुर सिंह को सौंप दी। बाद में पृथ्वीसिंह, जोध सिंह, अजीत सिंह, त्रिलोक सिंह, शिव सिंह ने इस पर शासन किया।

16. नालागढ़ (Nalagarh)- गोरखा युद्ध के बाद अंग्रेज़ों ने नालागढ़ के राजा राम सरन सिंह को गोरखा युद्ध से पूर्व अधिकार वाले क्षेत्र वापिस लोटा दिये। उन्होंने वे क्षेत्र अपने पास रख लिए जो सामाजिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण थे। इनमें मलौण का किला तथा स्याटू के किले शामिल थे। इसके बदले में अंग्रेज़ों ने नालागढ़ के राजा को कोटखाई के

समीप भड़ौली का क्षेत्र दे दिया। उसके बाद विजय सिंह, उग्र सिंह, ईश्वरी सिंह, जोगेन्द्र सिंह तथा सुरेन्द्र सिंह यहां के शासक हुए। सुरेन्द्र सिंह ने अंग्रेज़ों से अनुमति लेकर पटियाला रियासत के साथ एक सन्धि की, जिसमें नालागढ़ का प्रशासन पटियाला के साथ मिल कर चलाने की बात की गई थी। यह प्रशासन काफी लोकप्रिय रहा।

17. दरकोटी (Darkoti)- गोरखों की हार के बाद यह ठकुराई अंग्रेज़ों के अधिकार में आ गई। उन्होंने एक सनद द्वारा इसका मूल अधिकार वैध ठाकुर को सौंप दिया, जो पैतृक आधार पर शासन करता रहा।

18. कुनिहार (Kunihar) - गोरखा युद्ध के बाद अंग्रेज़ों ने यह ठकुराई स्थाई रूप से एक सनद द्वारा मगन देव को सौंप दी। 1917 ई. में यहां के शासक हरदेव सिंह को पूर्ण अधिकार दे दिया गए।

19. बेजा (Beja) - गोरखा युद्ध के बाद अंग्रेज़ों ने यह ठकुराई मान चन्द को सौंप दी। उदय चन्द (1814-1905) के काल में नरी तथा चलहान गांव अंग्रेज़ों ने कसौली में मिला दिये। पूर्ण चन्द के काल में 1921 ई. में उसे ठकुराई के पूरे अधिकार दे दिये गए।

20. बुशैहर (Bushair)- गोरखा युद्ध के बाद यह रियासत अंग्रेज़ों के अधिकार में आ गई तथा उन्होंने यह रियासत एक सनद द्वारा 6 नवम्बर 1815 को महिन्द्र सिंह को लौटा दी। बाद में यहां 21 शमशेर सिंह ने 1850 से 1914 तक शासन किया। उसके काल में अंग्रेज़ों ने बुशैहर के वनों को 50 साल के पट्टे पर लिया तथा उसके बदले में दस हज़ार रुपये वार्षिक कर देना स्वीकार किया। 1911 में अंग्रेज़ों ने एलन मिचल को बुशैहर का मैनेजर नियुक्त कर दिया। 1936 में इसे पंजाब हिल स्टेटस एजेन्सी के अधीन करके सीधा सरकार से जोड़ दिया गया।

(ख) अन्य पहाड़ी राज्यों पर अंग्रेज़ों का नियंत्रण
(Control of the British over other Hill States)

1. कांगड़ा (Kangra)—1823 ई. में महाराजा संसार चन्द की मृत्यु हो गई। उसके बाद उस का पुत्र अनिरुद्ध चन्द गद्दी पर बैठा। कुछ वर्षों तक महाराजा रणजीत सिंह के साथ उस का सम्बन्ध बहुत अच्छा रहा। 5 महीने के पश्चात् जब अनिरुद्ध चन्द महाराजा रणजीत सिंह से मिलने गया तो उसने एक लाख बीस हज़ार रुपयों का नज़राना दिया और उससे ''खिल्लत'' प्राप्त की किन्तु रणजीत सिंह धीरे-धीरे सारे पहाड़ी राज्यों पर अधिकार करता जा रहा था और कटोच राज्य की शक्ति दिन प्रतिदिन कमज़ोर होती जा रही थी। रणजीत सिंह ने अपने एक दीवान ध्यान सिंह के पुत्र के साथ महाराजा संसार चन्द की एक पुत्री का विवाह करने का प्रस्ताव अनिरुद्ध चन्द के सामने रखा और उस से वादा भी ले लिया परन्तु महारानी अर्थात् राजकुमारी की माता को यह संबंध बिल्कुल नापसन्द था और स्वयं अनिरुद्ध चन्द भी मन से इसे नहीं चाहता था। अतः वह किसी न किसी बहाने टालमटोल करता रहा। अन्त में महाराजा रणजीत सिंह ने नादौन के

लिये स्वयं प्रस्थान किया ताकि विवाह के संबंध पक्के किये जा सकें। अनिरुद्ध चन्द तथा उसकी मां को जब इस बात का पता चला तो वे लड़कियों को साथ ले कर रातों-रात सतलुज पार करके अंग्रेज़ी राज्य में चले गए। कुछ दिन हरिद्वार में रहे और अपनी दोनों बहनों का विवाह टीहरी गढ़वाल के राजा सुदर्शन शाह के साथ कर दिया। इसके बाद वह शिमला के पास बाघल रियासत की राजधानी अर्की में रहने लगे।

अनिरुद्ध के चले जाने के बाद महाराजा रणजीत सिंह नादौन पहुंचे। वहां पर उस का स्वागत संसार चन्द के भाई फतेह चन्द ने किया। उसने अपने पौत्री का विवाह महाराजा रणजीत सिंह का सम्मान रखने के लिये उस के पुत्र हीरा सिंह से किया। रणजीत सिंह से प्रभावित हो कर उसे राजगीर की जागीर प्रदान की और उसे राजा की उपाधि दी। 1831 ई. में अनिरुद्ध की मृत्यु हो गई। उस के दो पुत्र थे। एक का नाम **रणवीर चन्द** और दूसरे का नाम **प्रमोद चन्द** था। अंग्रेज़ी सरकार के अनुरोध पर रणजीत सिंह ने उन्हें 1833 ई. में वापस बुला लिया और 50,000 रुपये की जागीर महल मोरियां में दे दी। जीवन के शेष दिन उन्होंने यहीं पर बिताये। प्रथम सिक्ख-युद्ध के बाद **9 मार्च 1846 ई.** की सन्धि के अनुसार कांगड़ा अंग्रेज़ों के अधिकार में आ गया और कांगड़ा के किले में अंग्रेज़ी सेना रहने लगी। रणवीर चन्द की 1847 ई. में और प्रमोद चन्द की 1851 ई. में मृत्यु हो गई। इनकी कोई सन्तान नहीं थी। अत: इन्हीं के साथ प्रसिद्ध कटोच वंश के राज्य का सूर्य अस्त हो गया। अंग्रेज सरकार ने 1922 में राजा जय चन्द को महाराजा की उपाधि दे कर सम्मानित किया गया।

2. जसवां (Jaswan)-18वीं शताब्दी में मुग़ल साम्राज्य कमज़ोर होने लगा था। ऐसे में कांगड़ा का राजा संसार चन्द पहाड़ों का एक शक्तिशाली राजा बनने का प्रयास करने लगा। संसार चन्द अब जसवां तथा दातारपुर पर अपना प्रभुत्व जमाना चाहता था। अत: मजबूर हो कर जसवां के शासक **उमेद सिंह** ने पहाड़ी राजाओं के साथ मिलकर संसार चन्द के विरुद्ध रणजीत सिंह से सहायता मांगी। रणजीत सिंह ने जब 1809 ई. में कांगड़ा से गोरखों को भगाया तो जसवां भी उसके आधिपत्य में आ गया। 1815 ई. के शरद ऋतु में रणजीत सिंह ने स्यालकोट में अपनी सभी सेनाओं, अधिकारियों तथा अपने अधीन सभी राजाओं को बुलाया। इस बुलावे पर नूरपुर और जसवां के राजा नहीं आ सके। अत: रणजीत सिंह ने उन पर भारी जुर्माना लगाया। यह दण्ड इतना भारी था कि जिसे देने में राजा उमेद सिंह असमर्थ था। इसलिये उस ने अपने राज्य को छोड़ दिया और 12,000 रुपये की जागीर स्वीकार की। इस प्रकार से साढ़े छ: सौ वर्ष पुराने राज्य का अन्त हुआ। 1846 ई. के पहले सिक्ख युद्ध के पश्चात् जसवां राज्य अंग्रेज़ी राज्य के आधिपत्य में आ गया। 1848 ई. में पंजाब में एक विद्रोह हुआ। स्वयं को स्वतंत्र करने के उद्देश्य से जसवां, दातारपुर और कांगड़ा के राजाओं ने भी उस विद्रोह में भाग लिया परन्तु अन्त में उनकी हार हुई और उन्हें बन्दी बना कर अलमोड़ा भेज दिया गया। इन के वंशज अब जसवां के अम्ब नामक स्थान में बसे हुये हैं।

3. गुलेर (Guler)- 1813 ई. में रणजीत सिंह ने गुलेर पर अधिकार करने के लिए **राजा भूप सिंह** से पठानों के विरुद्ध सहायता मांगी और कहा कि वह एक बड़ी भारी सेना भर्ती कर के भेज दे। जब गुलेर खाली हो गया, तब उस ने भूप सिंह को लाहौर बुला लिया। लाहौर में उसे रणजीत सिंह के संकेत पर बन्दी बना लिया रणजीत सिंह ने देसा सिंह को दस हज़ार सिख सेना के साथ गुलेर पर अधिकार करने के लिऐ भेज दिया। उस ने राजा की अनुपस्थिति में गुलेर को निर्विरोध खालसा राज्य में मिला दिया। **1820 ई.** में भूप सिंह की मृत्यु हो गई। उसी के साथ ही गुलेर राज्य का भी अन्त हो गया। भूप सिंह के बाद उस का पुत्र **शमशेर सिंह** उस का उत्तराधिकारी बना। 1845 ई. में सिखों का अंग्रेज़ों के साथ युद्ध आरम्भ हो गया तथा अंग्रेजी सेना ने सिक्खों को हरिपुर के किले से मार भगाया, जिसके फलस्वरूप गुलेर भी अंग्रेज़ी शासन के अधीन आ गया।

4. नूरपूर (Nurpur)-1845 ई. के शरद में सिक्ख सेना ने अंग्रेज़ी इलाके पर आक्रमण करने के लिए सतलुज नदी पार की और उसे हार खानी पड़ी। यह खबर सारे पहाड़ों में फैल गयी और वीर सिंह ने फिर एक बार स्वतन्त्रता का झण्डा उठाया तथा अपनी प्रजा की सहायता से नूरपुर के किले को घेर लिया। लेकिन शक्ति और आयु उसका साथ देने के लिए तैयार नहीं थी और वहां अपने पूर्वजों के किले की दीवारों के सामने उस ने अन्तिम सांस ली। उसे यह जानकर सन्तोष हुआ कि शत्रुओं को अंग्रेज़ों ने खत्म कर दिया। पहली सिक्ख लड़ाई के पश्चात् सतलुज से ले कर **सिन्ध तक** सारा

पहाड़ी प्रदेश अंग्रेज़ों के हाथ आ गया। इस में से सतलुज और रावी के मध्य फैले भू-भाग को अपने अधिकार में रखा और जम्मू तथा कश्मीर महाराजा गुलाब सिंह को बेच दिया। यह देख कर पहाड़ी राजाओं को बड़ा दु:ख हुआ और 1848 ई. में उन्होंने विद्रोह किया, जिसमें नूरपुर के राजा वीर सिंह के बाद पुत्र जसवन्त सिंह तथा उस के वज़ीर राम सिंह ने प्रमुख भूमिका अदा की। उनकी हार हुई। जसवन्त सिंह को 2,000 की जागीर दे दी गई और उसके वजीर सिंह को पकड़ कर सिंगापुर भेज दिया गया। 1857 के विद्रोह में जसवंत सिंह ने अंग्रेज़ों का खूब साथ दिया जिसके फलस्वरूप अंग्रेज़ों ने उसकी जागीर दोगनी कर दी।

5. **चम्बा** (Chamba)- चढ़त सिंह के शासन काल में चम्बा रणजीत सिंह के प्रभुत्व में आ गया परन्तु चम्बा नरेश की स्वतंत्रता भी स्थापित रही। इसी दौरान भद्रवाह के शासक पहाड़ चन्द्र ने चम्बा को कर देना बन्द कर दिया। परिणामस्वरूप चढ़त सिंह ने रणजीत सिंह की सहायता से भद्रवाह पर चढ़ाई कर दी तथा विजय प्राप्त की। रणजीत सिंह ने भद्रवाह का परवाना चम्बा को सौंप दिया। **1836 ई.** में जम्मू के महाराजा गुलाब सिंह के एक सेनानी **जोरावर सिंह कहलूरिया** ने भद्रवाह पर आक्रमण किया परन्तु उसे चम्बा की सेनाओं ने पीछे धकेल दिया। 1844 ई. में चढ़त सिंह की मृत्यु हो गई। उसके बाद श्री सिंह चम्बा का राजा बना। उसके काल में लाहौर की सिख सेना ने चम्बा पर आक्रमण किया परन्तु अपने अभियान को बीच में ही छोड़ कर सिख सेना वापिस चली गई। 1839 में महाराजा रणजीत सिंह की मृत्यु के पश्चात् पंजाब में बड़ी अव्यवस्था फैल गई, जिस के फलस्वरूप 1845 ई॰ में पहला सिक्ख युद्ध हुआ। सिक्खों को करारी हार हुई। बाद में संधि हुई, जिस के फलस्वरूप मैदानी भाग में जालंधर दोआब और पर्वतीय भाग में सतलुज और ब्यास नदियों के मध्य का पहाड़ी भाग अंग्रेज़ों को मिला। नौ मार्च 1846 ई॰ को एक अन्य संधि के द्वारा ब्यास और सिंध नदियों के मध्य का सारा पहाड़ी भाग अंग्रेजों को दिया गया। 16 मार्च को एक और सन्धि हुई। इस के द्वारा अंग्रेजों ने एक करोड़ रुपये के बदले में रावी और सिंध नदियों के मध्य का सारा पहाड़ी भाग जम्मू के गुलाब सिंह को सदा के लिए दे दिया। इसी क्षेत्र में चम्बा भी आता था। एक ओर की सीमा रावी नदी निश्चित की गई। इस समय तक चम्बा सिक्खों के अधीन था परन्तु गुलाब सिंह के अधीन रहने को तैयार नहीं थे। बल्कि उन्होंने अजीत सिंह को महाराजा रणजीत सिंह के दिये हुये परवाने के आधार पर भद्रवाह पर भी अपना अधिकार जताया। उधर अंग्रेज लखनपुर पर अपना अधिकार जता रहे थे। ये दोनों भाग सन्धि के अनुसार अंग्रेज़ों को दिये जाने थे। रावी नदी चम्बा के मध्य भाग से बहती है। इस से चम्बा राज्य दो भागों में बंट जाता है। उस समय यह प्रश्न उठ खड़ा हुआ कि क्या चम्बा का सारा राज्य अंग्रेज़ों द्वारा गुलाब सिंह को दे दिया जाये या उसका केवल रावी के पश्चिम ओर का ही भाग दिया जाए। इसी समय वाधा वजीर लाहौर चला गया और वहां पर सर हैनरी लारेंस से मिल कर सारी स्थिति उस को समझाई। अंत में सहमति हुई, जिस के अनुसार गुलाब सिंह को रावी के इस ओर के भाग के बदले में लखनपुर का भाग मिला। साथ में चम्बा ने भद्रवाह के भाग पर अपना अधिकार छोड़कर उसे भी गुलाब सिंह को दे दिया। इस प्रकार से चम्बा की प्राचीन काल से चली आ रही अखंडता को सुरक्षित रखा गया। अत: चम्बा अंग्रेजी शासन के आधिपत्य में आ गया। चम्बा पर 12,000 रुपये वार्षिक राज कर लगाया गया। 6 अप्रैल 1848 ई॰ में अंग्रेजी सरकार ने श्री सिंह को एक सनद प्रदान की, जिस के द्वारा चम्बा राज्य को उसे पीढ़ी दर पीढ़ी के लिये प्रदान किया। इस सनद में चम्बा के राजा को यह भी अधिकार दिया गया कि यदि राजा के कोई संतान न हो तो वह अपने भाई को अपना उत्तराधिकारी बना सकता है। 11 मार्च 1862 की सनद में उसे गोद लेने का भी अधिकार दे दिया। 1853 में राजा ने कथलग, पांतरेन और बकरोटा अंग्रेज़ों को दे दिये। 1866 में वहलोन और बकलोड के क्षेत्र भी अंग्रेज़ों ने ले लिए। तत्पश्चात् **मेजर ब्लेयर** रीड को चम्बा का प्रवन्धक नियुक्त किया गया। जिसने वहां रहते हुए अनेक कल्याणकारी काम किए। उसने सड़के बनवाई तथा 1863 में वहा डाक स्थापित किया। श्री सिंह के बाद उसका भाई गद्दी पर बैठा परन्तु उसने शीघ्र ही अपने भाई शाम सिंह के हक में गद्दी छोड़ दी। 1885 ई. में वहां प्रबन्धक का पद समाप्त कर दिया गया तथा शाम सिंह को राज्य के पूर्व अधिकार दे दिये गए।

6. **कुल्लू** (Kullu)- राजा अजीत सिंह की मृत्यु 1841 ई० में सांगरी में हुई। शिमला की पहाड़ी रियासतों के **सुपरिंटेंडेंट श्री अरसकीन ने बहुत छानबीन के पश्चात्** अजीत सिंह के चचेरे भाई रणबीर सिंह **को सिक्खों** तथा रानियों

की सहमति से राजा बनाने की सिफारिश की परन्तु उसकी मृत्यु हो गई। इस के बाद सिक्खों ने अजीत सिंह के चाचा ठाकुर सिंह को नाममात्र का राजा बना दिया और उसे वजीरी रूपी की जागीर दे दी। कुछ समय पश्चात् उसे भारी राजकर देने की शर्त पर कुल्लू का सारा भाग दिया जा रहा था परन्तु वह डरपोक प्रकृति का था, इसलिये उस ने इस उत्तरदायित्व को लेने से इन्कार कर दिया। केवल सांगरी का भाग ही अजीत सिंह के चाचा जागीर सिंह के हाथ में रहा।

1846 ई० में अंग्रेज़ों और सिक्खों में पहला युद्ध हुआ। इस के परिणामस्वरूप सिन्ध और सतलुज के मध्य का पहाड़ी क्षेत्र अंग्रेज़ों के हाथ आया। अंग्रेज़ों ने जम्मू-कश्मीर का भाग तो महाराजा गुलाब सिंह को बेच दिया परन्तु सतलुज और रावी के बीच का पहाड़ी क्षेत्र लाहौल स्पीति सहित अंग्रेज़ों ने अपने पास रखा। इस प्रकार से कुल्लू का 1846 ई० **1846 ई०** में अंग्रेजों के अधिकार में आ गया। ठाकुर सिंह को राजा मान लिया गया और उसे वज़ीरीरूपी की जागीर दे कर पूरे राजकीय अधिकार दे दिये। 1852 ई० में ठाकुर सिंह की मृत्यु हो गई और ज्ञान सिंह उस का उत्तराधिकारी बना। इस आधार पर कि वह रखैल का पुत्र था। अंग्रेज़ी सरकार ने उस की पदवी "राजा" से बदल कर "राय" कर दी और उस के राजनैतिक अधिकार समाप्त कर दिये।

7. मण्डी (Mandi)—राजा रणजीत सिंह ने भी मण्डी को अपना करद बनाया हुआ था। **बलवीर सेन** (1839-1851 ई.) एक रखैल का पुत्र था। वह योग्य शासक नहीं था। इसके अनुसार सिक्ख जनरल वेंचूरा ने धोखे से बलवीर सेन को एक अयोध्या प्रसाद व्यक्ति के माध्यम से बुला कर कैद कर लिया और उससे कई कागज़ों पर हस्ताक्षर करवा लिये, जिनके अनुसार सारे किले सिक्खों के नियन्त्रण में आ गये। हालांकि सिक्ख सेना को **कमलाह** किला पर काबू पाने में बड़ा संघर्ष करना पड़ा और यह किला **29 नवम्बर, 1840 ई.** को ही सिक्खों के कब्ज़े में आ सका। राजा बलवीर सेन को सिक्खों ने गोबिन्दगढ़ के किले में कैद कर रखा था। शेर सिंह ने बलवीर सेन को 1841 ई. में छोड़ दिया और लहना सिंह के साथ मण्डी भेज दिया। **बलवीर सेन** ने 12 किलों को सिक्खों से मुक्त करवा लिया, किन्तु कमलाह का किला 9 मार्च, 1846 ई. के बाद ही उसके कब्ज़े में आ सका। 9 मार्च, 1846 ई. की सिक्ख-अंग्रेज़ संधि के बाद हिमाचल की पहाड़ी रियासतें आ गईं। **24 अक्तूबर, 1846 ई.** की एक सनद से **बलवीर सेन** को मण्डी का राजा स्वीकार कर लिया गया। जालंधर का कमिश्नर जॉन लारेंस भी 1846 ई. में मण्डी आया था। 1851 ई. में बलबीर सिंह की मृत्यु हो गई और उसका चार वर्ष का नाबालिग पुत्र विजय सेन राजा बना। अत: प्रशासन चलाने के लिए एक समिति बनाई गई। गोसाऊं वजीर ने मण्डी के शासन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। 2 अक्तूबर 1864 को व्यस्क होने पर अंग्रेज़ों ने विजय सेन को पूरे अधिकार दे दिये। 1877 के दिल्ली दरबार में विजय सेन ने भाग लिया। 1902 ई.में विजय सेन की मृत्यु हो गई।

8. कोटगढ या कोटखाई (Kotgarh or Kotkhai)- अंग्रेज़ों ने गोरखों के साथ हुए युद्ध में विजय के पश्चात् कोटखाई के क्षेत्र को भी विभाजित कर दिया तथा नौ परगना का क्षेत्र जिसकी वार्षिक आय 21,000 रुपये थी, कोटखाई से पृथक् कर 1,50,000 रुपये में पटियाला के राजा को बेच दिया गया। शेष क्योंथल राज्य का कर माफ कर दिया गया। जुब्बल का एक परगना पुनार, अंग्रेज़ों ने अपने अधिकार में रखा और बाद में एक सनद के द्वारा इसे क्योंथल के राजा से बारह गाँव लेकर शिमला नगर की स्थापना की और इसके बदले में उसे रवीन परगना दिया गया। **1828 ई.** में पोलिटिकल एजेंट मेजर पी. सी. कनेडी की सिफारिश पर कोटखाई को अंग्रेज़ी साम्राज्य में मिला लिया गया।

9. भरौली (Bharauli)- सुबाथू, सिवाह एवं भरौली परगनों से मिलकर बनी भरौली रियासत पर अंग्रेज़ों ने 1815 में अधिकार कर लिया, क्योंकि इसका शासक राजवंश समाप्त हो चुका था और कोई वैध उत्तराधकारी नहीं था। क्योंथल और बघाट के राजा उस पर अपना अधिकार सिद्ध कर रहे थे। अत: अंग्रेज़ों ने **20 अक्तूबर, 1815** को भरौली ठकुराई को हिन्दूर शासक को दे दिया, जिसने कुछ समय बाद इसे पुनः अंग्रेज़ों को लौटा दिया।

10. कोटगढ़ और रवीन (Kotgarh and Raveen)- पहाड़ों के आन्तरिक भागों में अंग्रेज़ों ने सबसे पहले **कोटगुरु (कोटगढ़) और पब्बर नदी के बाईं और स्थित रवीन पर अधिकार किया। कोटगढ़ के महत्त्वपूर्ण सैनिक मोर्चे थे, जिनमें हाटू का किला भी था। यह क्षेत्र मूलत: कोटखाई के अधीन था, परन्तु कोटखाई से दूर होने के कारण वहां के राजा**

ने यह क्षेत्र प्रशासन की दृष्टि से कुल्लू को दे दिया था। यह दस वर्ष तक कुल्लू का भाग रहा। इसके पश्चात् यह बुशैहर के राजा **उग्रसेन** के अधीन हो गया, जिसने कुल्लू के राजा को मार कर इसे उससे छीन लिया। यह क्षेत्र चालीस वर्ष तक कुल्लू के अधीन रहा, जिसके पश्चात् गोरखों ने इसे जीत लिया। गोरखों के यहां से जाने के पश्चात् कुल्लू की सेनाओं ने कोटगढ़ पर अधिकार कर लिया और उसके साथ ही वहाँ हाटू सिलजान और बाजी के मजबूत किलों को भी जीत लिया क्योंकि कोटगढ़ मूलत: कुल्लू का नहीं था। इसलिए अंग्रेज़ों ने राजाओं को केवल वही क्षेत्र लौटाने का वायदा किया था, जोकि गोरखों ने उनसे छीने थे। सुबाथू में एक सैनिक टुकड़ी उससे इस क्षेत्र को खाली करवाने के लिए भेजी गई। अंग्रेज़ी सेनाओं के निकट पहुँचते ही राजा ने यह किला खाली कर दिया। अंग्रेज़ों ने कोटगढ़ पर औपचारिक रूप से अधिकार कर लिया। हाटू सिलजान और बाजी के किलों में अंग्रेज़ों की सेनाएँ रखी गईं। गोरखा बटालियन का एक हिस्सा स्थायी रूप से यहीं रखा गया था।

पहाड़ी राज्यों के प्रति अंग्रेज़ों की प्रशासनिक नीति
(Administrative Policy of the British towards Hill States)

आंगल-गोरखा युद्ध में गोरखों की पराजय के परिणामस्वरूप उनके अधीनस्थ रियासतें अंग्रेज़ों के संरक्षण में आ गईं। इसी प्रकार प्रथम आंग्ल-सिक्ख युद्ध के बाद वे रियासतें जो सिक्खों के अधिकार में थीं, वे सभी अंग्रेज़ों के अधिकार में आ गईं। इस प्रकार अधिकांश पहाड़ी रियासतों पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया। अपने अधीन पहाड़ी रियासतों पर अंग्रेज़ों ने जिस प्रकार की प्रशासनिक व्यवस्था चलाई, उसका वर्णन इस प्रकार है :-

1. सनदें देना (To Give Sandas) — गोरखों को पराजित करने के बाद 1815 ई. में अंग्रेज़ों ने सिरमौर, बिलासपुर, जुब्बल, बुशैहर, क्योंथल, बाघल, नालागढ़, शांगरी, कुमारसेन, कुठाड़, बघाट और बलसन की रियासतों को अपने संरक्षण में ले लिया। इसके अतिरिक्त धामी, भज्जी, ठियोग, थरोच, महलोग, बेजा, भांगल, कुनिहार और दरकोटी की ठकुराइयों को भी अपने संरक्षण में लेकर इनके शासकों को सन्धि के रूप में सनदें प्रदान कीं। संरक्षण में ली गई सभी रियासतों के शासकों को आन्तरिक शासन में स्वायत्तता प्रदान की गई। केवल बुशैहर के राजा को 15,000 रुपये वार्षिक नज़राना देने की शर्त लगाई गई। शासकों को दी गई सुविधा प्रदान की गई और इस कार्य के लिए राज्यों में 12 फुट चौड़ी सड़कों का निर्माण कार्य आरम्भ किया गया और युद्ध के समय अंग्रेज़ों की सहायता करना सभी शासकों का कर्त्तव्य बन गया।

2. सैनिक शिविरों का निर्माण (Formation of Army Camps) — अंग्रेज़ों ने गोरखा युद्ध से पूर्व दिए गये सभी वचनों का पालन नहीं किया। युद्ध के दौरान अधिकार में लिए गए किले, क्षेत्र और भू-सम्पत्ति को उन्होंने अपने कब्जे में रखा और अपने व्यापारिक केन्द्र तथा सैनिक शिविर बसाये। राज्यों के आन्तरिक मामलों में भी हस्तक्षेप बढ़ता गया। किसी भी राज्य के क्षेत्र और सीमा में ब्रिटिश शासकों की इच्छा से फेर-बदल होने लगा। इसी नीति के अनुसार 1830 ई. में अंग्रेज़ों ने क्योंथल के राणा संसार सेन से 12 गांव का क्षेत्र प्राप्त कर शिमला शहर का निर्माण और विकास आरम्भ किया।

3. डिप्टी कमिश्नर की नियुक्ति (Appointment of Deputy Commissioner) — 1849 ई. में अंग्रेज़ों ने कांगड़ा में विद्रोह दबाने के पश्चात् कांगड़ा, कुल्लू और लाहौल-स्पीति के क्षेत्र को एक जिला प्रशासनिक इकाई बना कर डिप्टी कमिश्नर के अधीन कर दिया।

4. सुपरिंटेंडेंट की नियुक्ति (Appointment of Suprintendent) — मण्डी, सुकेत, बिलासपुर और चम्बा रियासतों के अधीक्षण के लिये सुपरिंटेंडेंट 'सिस-सतलुज स्टेट्स' नियुक्त किया गया तथा '**शिमला हिल स्टेट्स**' शिमला के सुपरिटेंडेंट के अधीन कर दी गई। इस प्रकार 1849 ई. में समस्त हिमाचल प्रदेश ब्रिटिश कम्पनी सरकार के अधीन हो गया।

5. लैप्स की नीति (Doctrine of Lapse) — 1850 ई. में गवर्नर-जनरल लार्ड डलहौजी की '**लैप्स की नीति**' के आधार पर **बघाट** के राजा की मृत्यु के पश्चात् पैतृक उत्तराधिकारी न होने पर उसका राज्य छीन लिया गया।

6. ईसाई मिशनरी (Christian Missionaries) — 1853 ई. में अंग्रेज़ों ने किन्नौर और लाहौल-स्पीति के

कबायली क्षेत्रों में अपने धर्म-प्रचार के लिए 'ईसाई मोरावियन मिशन' की स्थापना की और डॉ. ए.डी.एच. फ्रैंकल की अध्यक्षता में कार्य करना आरम्भ किया।

7. कम्पनी के इच्छानुसार कानून (Laws of Company's own wish)— 1853 ई. के 'चार्टर एक्ट' व '**इंडियन कौंसिल एक्ट**' के अन्तर्गत भारत में ब्रिटिश संसदीय प्रणाली का आंशिक सूत्रपात हुआ परन्तु केन्द्रीय और प्रान्तीय परिषदों में भारतीय प्रतिनिधि न होने से कम्पनी सरकार अपनी इच्छानुसार कानून बनाती रही।

8. सैनिक छावनियां की क्षमता बढ़ाना (Increasing the capacity of cantonments) — हिमाचल के पर्वतीय क्षेत्र में कांगड़ा, नूरपुर, जतोग, डगशाई, कसौली और स्पाटू में ब्रिटिश सैनिक छावनियों को नई क्षमता प्रदान की गई।

9. हस्तक्षेप की नीति (Policy of Interference) — देशी शासकों के प्रशासन पर कड़ा नियन्त्रण रखा गया और जन-साधारण के आर्थिक सामाजिक और धार्मिक जीवन में कम्पनी सरकार के अफसरों ने हस्तक्षेप करना आरम्भ किया। 1856 ई. तक अंग्रेज हिमाचल में मनमाने ढंग से शासन करते रहे।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न
(Important Questions)

1. प्रथम आंग्ल-सिक्ख युद्ध के कारणों, घटनाएं तथा परिणाम लिखिए।

   Give the causes, events and results of the first Anglo-Sikh war.

2. द्वितीय आंग्ल-सिख युद्ध के कारणों, घटनाओं तथा परिणामों का वर्णन करें।

   Explain the causes, events and results of second Anglo-Sikh war.

3. कांगड़ा, नूरपुर तथा गुलेर रियासतों पर अंग्रेज़ी नियंत्रण की चर्चा कीजिए।

   Discuss the control of the British over Kangra, Nurpur and Guler states.

4. चम्बा रियासत तथा अंग्रेज़ों के सम्बन्धों का वर्णन करे।

   Discuss the relations of the British with Chamba state.

5. अंग्रेज़ों के पहाड़ी रियासतों पर नियंत्रण का उल्लेख कीजिए।

   Discuss the control of the British over the hill states.

6. कुल्लू तथा मण्डी पर अंग्रेज़ों ने किस प्रकार नियंत्रण किया? वर्णन करें।

   How did the British establish their control over Kullu and Mandi? Explain.

7. अंग्रेज़ों की पहाड़ी राज्यों के प्रति प्रशासनिक नीतियों का उल्लेख कीजिए।

   Discuss the administrative Policies of the British with regard to the hill states.

7 हिमाचल परिवहन एवं संचार का विकास (DEVELOPMENT OF HIMACHAL TRANSPORT AND COMMUNICATION)

भूमिका (Introduction)

किसी भी क्षेत्र के विकास के लिए आवागमन तथा संचार के साधनों का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। हिमाचल प्रदेश जैसे राज्य में इनका महत्त्व और भी अधिक बढ़ जाता है। यह कहना अतिश्योक्ति न होगी कि पहाड़ी प्रदेश में सड़कों के निर्माण से ही विकास की प्रक्रिया प्रारम्भ होती है। वर्ष 1948 से पूर्व हिमाचल प्रदेश छोटी-छोटी रियासतों में बँटा था, जिनके पास सड़कों के निर्माण के लिए न साधन थे और न ही इच्छाशक्ति। दुर्भाग्य से ब्रिटिश शासन में रेल-निर्माण में भी प्रदेश को उपयुक्त हिस्सा नहीं मिला, क्योंकि यहां पर रेलवे लाईन बिछाना कठिन था और महंगा था। प्रदेश में पठानकोट से जोगिन्दर नगर तथा कालका से शिमला तक की दो छोटी लाइनें हैं।

सड़कें (Roads)

वर्ष 1948 में राज्य के गठन के समय यहां पर कुल 290 कि. मी. लम्बी सड़कें थीं और इनके अतिरिक्त 300 कि.मी. लम्बी कच्ची सड़कें थीं। प्रदेश के शेष भागों में या तो पैदल चलने योग्य रास्ते थे या खच्चरों के चलने योग्य थे। अत: यात्रा करना कठिन और खतरों से भरा होता था। पक्की सड़कें नहीं थीं। राज्य में सड़कों की कमी लोगों के विकास में बाधक बन रही थी। इसलिए प्रदेश भर में सड़कों के निर्माण की मांग उठने लगी। सरकार ने इस माँग के औचित्य को समझते हुए सड़क निर्माण को विकास-कार्यक्रम में सर्वाधिक महत्त्व दिया। इस नीति का पालन करते हुए प्रथम तीन पंचवर्षीय योजनाओं में बजट का 32 प्रतिशत खर्च किया गया। इससे सड़कों के निर्माण से विकास में तेजी आई। मार्च 1966 तक प्रदेश में 2,137 कि. मी. मोटर योग्य सड़कें थीं तथा 810 कि. मी. जीप योग्य सड़कें थीं। अप्रैल, 2011 तक राज्य में कुल सड़क मार्ग की लम्बाई 33, 727 कि.मी. है।

हिमाचल प्रदेश के अर्थ-तन्त्र में सड़क-निर्माण के महत्त्व को देखते हुए हिमाचल प्रदेश सरकार इस कार्य को अत्यधिक वरीयता देती रही है। चौथी पंचवर्षीय योजना के अन्त तक हिमाचल प्रदेश में 9,705 किमी लम्बी सड़कें बन चुकी थीं, जिन पर 3, 748 कि.मी. तक जल निकास की व्यवस्था भी थी। पाँचवीं पंचवर्षीय योजना (1974-78) में 1,228 कि.मी. सड़कें बनी। राष्ट्रीय यातायात नीति के अन्तर्गत हिमाचल के सभी गांवों को सड़कों द्वारा आपस में जोड़ने के लिए लगभग 40500 कि.मी. लम्बी सड़कों की आवश्यकता है, जो 72.75 कि.मी. प्रति 100 वर्ग कि.मी. बनती है। परन्तु सभी गांवों को सभी मौसमों में काम आने वाली सड़कों का निर्माण करना बहुत ही असम्भव है। इसके प्रमुख कारण भू-संख्लन (Landsliding) तथा पर्यावरणीय हैं। फिर भी मोटर-गाड़ियों की चलने वाली सड़कों का निर्माण 12347 गांवों को जोड़ने के लिए निर्धारित किया गया है। ये सड़कें या तो एक गांव को दूसरे गांव से जोड़ेगी अथवा अधिक से अधिक सड़क गांव से एक कि.मी. की दूरी पर ही होगी। इसके अतिरिक्त 4650 गांवों को ऐसी सड़कों से जोड़ा जायेगा, जो एक से तीन कि.मी. की दूरी पर होंगी। ऐसी सड़कों पर खच्चरों का प्रयोग किया जा सकेगा। मार्च, 1998 तक हिमाचल के 7654 गांवों को सड़कों द्वारा आपस में जोड़ दिया गया था। 760 कि.मी. सड़कों पर जल निकास व्यवस्था भी की गई।

परम्परागत रूप से अगम्य समझे जाने वाले लाहौल-स्पीति और किन्नौर, कुल्लू जिले का ब्राह्य शिराज, मण्डी जिले का झँझेली क्षेत्र, चम्बा ज़िले के भरमौर और तीसा क्षेत्र सिरमौर की पच्छाद (Pachhed) तथा रेणुका (Renuka) तहसीलें अब मोटर योग्य सड़कों से जोड़े जा चुके हैं। हिमाचल प्रदेश के कई इलाके अब भी दुर्गम हैं। वहां तक पहुँचने के लिए सड़क तथा रेलमार्गों के विकास पर ध्यान दिया जा रहा है।

हिमाचल प्रदेश में राष्ट्रीय उच्च मार्गों की लम्बाई लगभग 1467 कि.मी है। यह उच्च मार्ग राष्ट्रीय राज मार्ग संख्या 22, 21 तथा 20 है। हिमाचल प्रदेश में चण्डीगढ़ कौरिक अर्थात हिन्दुस्तान-तिब्बत रोड (N.H. 22), चण्डीगढ़-लेह N.H. 21) तथा पठानकोट मण्डी (N.H. 20) तीन प्रमुख उच्च मार्ग हैं। इनके अतिरिक्त मनाली-केलांग, मनाली-लेह, केलांग-काजा समदों सड़कों का निर्माण एक अद्वितीय उपलब्धि है।

चण्डीगढ़-कौरिक अर्थात हिन्दस्तान तिब्बत मार्ग हिमाचल का एक महत्त्वपूर्ण सड़क मार्ग है, जो हिमाचल में सोलन, शिमला आदि से होकर गुजरता है। इसकी लम्बाई हिमाचल प्रदेश में लगभग 398 कि.मी. है. इसका निर्माण कार्य लार्ड डलहौजी के काल में 1851 ई. में आरम्भ हुआ था। पहाड़ी क्षेत्रों में जहां अभी तक सड़कें नहीं बनाई जा सकी हैं वहां खच्चर मार्ग बनाए जा रहे हैं। इन मार्गों पर घोड़े-खच्चरों द्वारा माल ढोया जाता है। बाद में इन मार्गों को परिवहन योग्य बनाने का प्रस्ताव है।

सड़कों के निर्माणों ने हिमाचल की अर्थव्यवस्था पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव डाला है। सड़कें बनने से अपने कृषि उत्पाद मण्डियों में ले जाने में सुविधा होगी तथा कृषि के लिए आवश्यक सामग्री को खेत में पहुँचाने में सुविधा होगी। सड़कों के निर्माण से लगभग 50,000 लोगों को प्रतिवर्ष काम मिला, तथा नए क्षेत्रों में भी लोगों को कार्य मिला है। सड़कों के निर्माण से प्रदेश की आर्थिक अवस्था को ऊपर उठाने में पर्याप्त सहायता मिलती है। हिमाचल प्रदेश के पहाड़ी क्षेत्रों में सड़क परिवहन जीवन रेखा का कार्य करता है, क्योंकि परिवहन के अन्य मशीनी साधन प्रदेश में बहुत कम मात्रा में उपलब्ध हैं। हिमाचल प्रदेश में 2005 तक लगभग 40 कि.मी. (प्रति 100 वर्ग कि.मी. क्षेत्र) के हिसाब से सड़कों का निर्माण हो चुका है।

सड़कों पर बने पुल
(Bridges built over roads)

1971 तक हिमाचल की सड़कों पर 232 पुल थे, जिनकी संख्या आज 1674 से भी अधिक हो चुकी है।

सड़क-निर्माण की समस्या पुल निर्माण से भी जुड़ी हुई है। पहाड़ी क्षेत्रों में पुल-निर्माण कठिन होता है। बयालीस वर्ष पूर्व हिमाचल प्रदेश में पुल नहीं थे। पिछले तीस वर्षों में अनेक पुलों का निर्माण हुआ है और अनेक निर्मित होने की प्रक्रिया में है।

1. **पांवटा** (Paunta)—यमुना के ऊपर भी एक पुल बना है। यह हिमाचल प्रदेश को उत्तराखण्ड से जोड़ता है यह हिमाचल प्रदेश में सबसे ऊँचा पुल है।

2. **नदौन** (Nadaun)—ब्यास नदी पर बना पुल सभी मौसम में प्रयुक्त होने योग्य है, जो बिलासपुर-शिमला तथा बिलासपुर और धर्मशाला को मिलाता है।
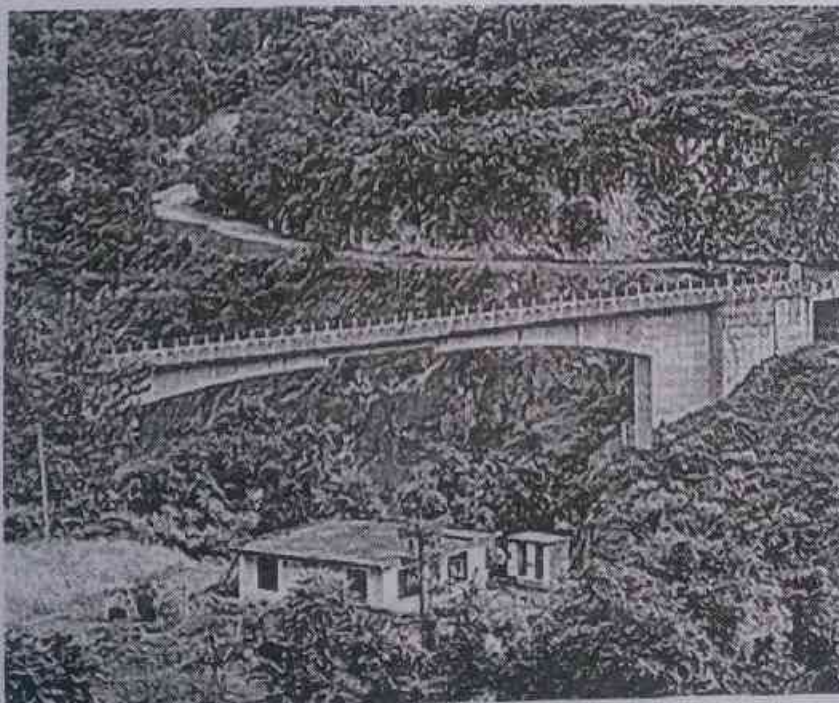
तत्तापानी में सतलुज नदी पर बना पुल

3. सतलुज नदी पर तत्तापानी (Tattapani),लूरी (Luhri), नोगली (Nogli), मुरंग (Moorang) आदि में पुलों का निर्माण हुआ है। इनमें कन्दरौर का पुल एशिया में सबसे ऊँचा है।

4. रावी नदी के सन्दर्भ में झूलते हुए नल पुल, बग्गा (Bagga), चौरा (Chaurah), सितला (Sitla) में निर्मित किए गए हैं।

5. बिलासपुर जिले में सड़कों पर अनेक महत्त्वपूर्ण पुल बने हैं। सतलुज नदी पर बना कन्दरौर (Kandror) पुल एशिया में सबसे ऊँचा पुल है। यह 1959 में बनना शुरू हुआ था तथा 1964 में बन कर तैयार हो गया था। यह 255 मी. लम्बा तथा 7 मी. ऊँचा है। बिलासपुर जिले में ही सतलुज नदी पर बना सलप्पड़ (Slappar) एक अन्य पुल है। यह 1960 में बनना शुरू हुआ था तथा 1964 में बन कर तैयार हो गया था? यह डबल लेन पुल है जिसकी लम्बाई 139 मी. तथा चौड़ाई 6.7 मी. है।

उपरोक्त पुलों के अतिरिक्त बिलासपुर ज़िले में बने अन्य पुलों में सीर खड्ड पर बना पुल, अली खड्ड पर बना पुल, गरमोला पुल, जमथल नुल्ला पर बना पुल आदि प्रमुख हैं।

1. प्रदेश की महत्त्वपूर्ण सड़कें

1. कलकत्ता-शिमला-रामपुर-पूह (हिन्दुस्तान तिब्बत राष्ट्रीय राजमार्ग)
2. रोपड़-बिलासपुर-मण्डी-कुल्लू-केलांग-लेह (राष्ट्रीय राजमार्ग)
3. पठानकोट-जोगिन्दर नगर-मण्डी (राष्ट्रीय राजमार्ग)
4. पठानकोट-चम्बा (राजमार्ग)
5. पांवटा-नाहन-कुमार हट्टी
6. ठियोग-कोटखाई-खड़ा पत्थर-रोहड़ू-चिड़गाँव (राजमार्ग)
7. शिमला-मशोवरा-सुन्नी-नेरचौक (राजमार्ग)
8. चैल-चौपाल-पांवटा (राजमार्ग)
9. शिमला-बिलासपुर-हमीरपुर-धर्मशाला (राजमार्ग)
10. सोलन-राजगढ़-हरिपुर धार-रेणुका (राजमार्ग)
11. बनीखेत-डलहौज़ी-खजियार-चम्बा (राजमार्ग)
12. चम्बा-भरमौर (राजमार्ग)

2. राष्ट्रीय राजमार्गों का विवरण

राष्ट्रीय राज मार्ग अर्थात्

क्रम. सं.	NH संख्या	मार्ग	हिमाचल में लम्बाई (किमी)
1.	1A	पंजाब सीमा-डमटाल	10
2.	20	नूरपुर-मण्डी	196
3.	20A	नगरोटा-रानीताल-देहरा	91
4.	21	स्वारघाटी -मण्डी	240
5.	21A	पिंजौर-नालागढ़	49
6.	22	परवाणु-शिपकी ला	398
7.	70	मण्डी-गगरेट	120

8.	72	काला अम्ब-माजरा	57
9.	72B	पांवटा-राजबन	119
10.	73A	पांवटा-उत्तर प्रदेश सीमा	10
11.	88	शिमला-मटौर	180

उपरोक्त राष्ट्रीय राजमार्गों के अतिरिक्त केन्द्रीय परिवहन तथा राजमार्ग मंत्रालय ने पांच नये राष्ट्रीय राजमार्ग बनाने की स्वीकृति दे दी है। ये राजमार्ग निम्नलिखित हैं:-

1) हमीरपुर-सुजानपुर-पालमपुर 59.775 कि.मी.

2) ब्रह्मपुखर-बिलासपुर-घुमारवीं-सरकाघाट-लड भडोल-बैजनाथ 11.800 कि.मी.

3) भरमौर-चम्बा-डलहौज़ी-पठानकोट 133 कि.मी.

4) तारा देवी-जुब्बरहट्टी-कुनिहार-रामपुरबुशैहर नालागढ़-घनौली 106.400 कि.मी.

5) चण्डीगढ़-बद्दी-नालागढ़-रामपुरबुशैहर-अर्की-शालाघाट 83.900 कि.मी.

हिमाचल प्रदेश राज्य में पक्की सड़कों की कुल लम्बाई 4,676.50 कि.मी. है, जिसमें राष्ट्रीय राजमार्गों की कुल लम्बाई 1,470 किमी. राज्य उच्च पथों की लम्बाई 1,625 कि.मी. तथा जिला स्तरीय मार्गों की लम्बाई 1, 753.05 कि.मी. है।

रेलमार्ग
(Railways)

वर्तमान में हिमाचल प्रदेश में रेलमार्ग की कुल लम्बाई 292 कि.मी. है। प्रदेश में प्रमुख रेल मार्गों का वर्णन निम्नलिखित है:-

कालका-शिमला रेलमार्ग (Kalka-Shimla Railways) — कालका-शिमला रेलमार्ग की कुल लम्बाई 96 कि.मी. है। इस रेल मार्ग पर संकरी रेल लाइन है, जिसकी चौड़ाई 76.2 सै.मी. है। इस रेलमार्ग में 869 पुल हैं। कालका से शिमला के बीच रेलमार्ग में 20 रेलवे स्टेशन हैं जिनमें धर्मपुर, सोलन, कंडाघाट, तारादेवी, सलोगटा, समर हिल आदि प्रमुख हैं। इस रेलमार्ग पर यातायात 1 जनवरी, 1906 को पहली बार प्रारम्भ हुआ था। इस रेल मार्ग का निर्माण अंग्रेज़ों ने अपनी ग्रीष्म कालीन की राजधानी को कालका से जोड़ने के लिए किया था। इस रेल मार्ग पर कुल 103 सुरंगें बनी हैं, जिनमें सबसे लम्बी बड़ोग सुरंग है। इसकी लम्बाई 1143.61 मी. है।

कालका शिमला रेल मार्ग के निर्माण में बाबा भलकू राम का बहुत योगदान है। इसी ग्रामीण अनपढ़ ने आज से सौ वर्ष पूर्व 1900 ई. के लगभग कालका-शिमला रेल मार्ग का सर्वे तथा एलाइनमेंट का काम किया था अन्यथा उसकी सहायता के बिना यह इंजीनियरिंग का अजूबा केवल कागज़ों में ही सिमट कर रह जाता।

नंगल-चुरुडू रेलवे लाइन– प्रदेश की एकमात्र बड़ी रेलवे लाइन नंगल-डैम चुरुडू है। यह 26 कि.मी. लम्बी है। यह दिल्ली-नंगल रेल लाइन का विस्तार है।

नंगल-ऊना रेलवे मार्ग (Nangal-Una Railways)— नंगल-ऊना रेलमार्ग हिमाचल प्रदेश में एकमात्र ब्रॉडगेज रेलमार्ग है। यह रेलमार्ग ऊना को नई दिल्ली से जोड़ता है। इस रेलमार्ग की लम्बाई 16 कि.मी. है। प्रदेश में नंगल से तलवाड़ा रेल मार्ग का निर्माण ज़ोरों पर चल रहा है। इसके बन जाने से हिमाचल में रेल मार्ग में और भी वृद्धि हो जायेगी।

पठानकोट-जोगिन्द्रनगर रेल मार्ग (Parthankot-Jogindernagar Railway)—हिमाचल प्रदेश की कांगड़ा की सुन्दर घाटियों तक पहुंचने का यह रेल मार्ग प्रमुख साधन है। यह रेलमार्ग 1926 में बनना आरम्भ हुआ था तथा तीन वर्ष बाद ही इस रेलमार्ग पर यातायात आरम्भ हो गया था। इस रेलमार्ग की कुल लम्बाई 113 कि.मी. है। इस रेल मार्ग पर जैसूर, हरिपुर, पालमपुर, बैजनाथ, जोगिन्द्रनगर आदि प्रमुख रेलवे स्टेशन बने हैं। इस रेल मार्ग में 2 सुरंगें हैं।
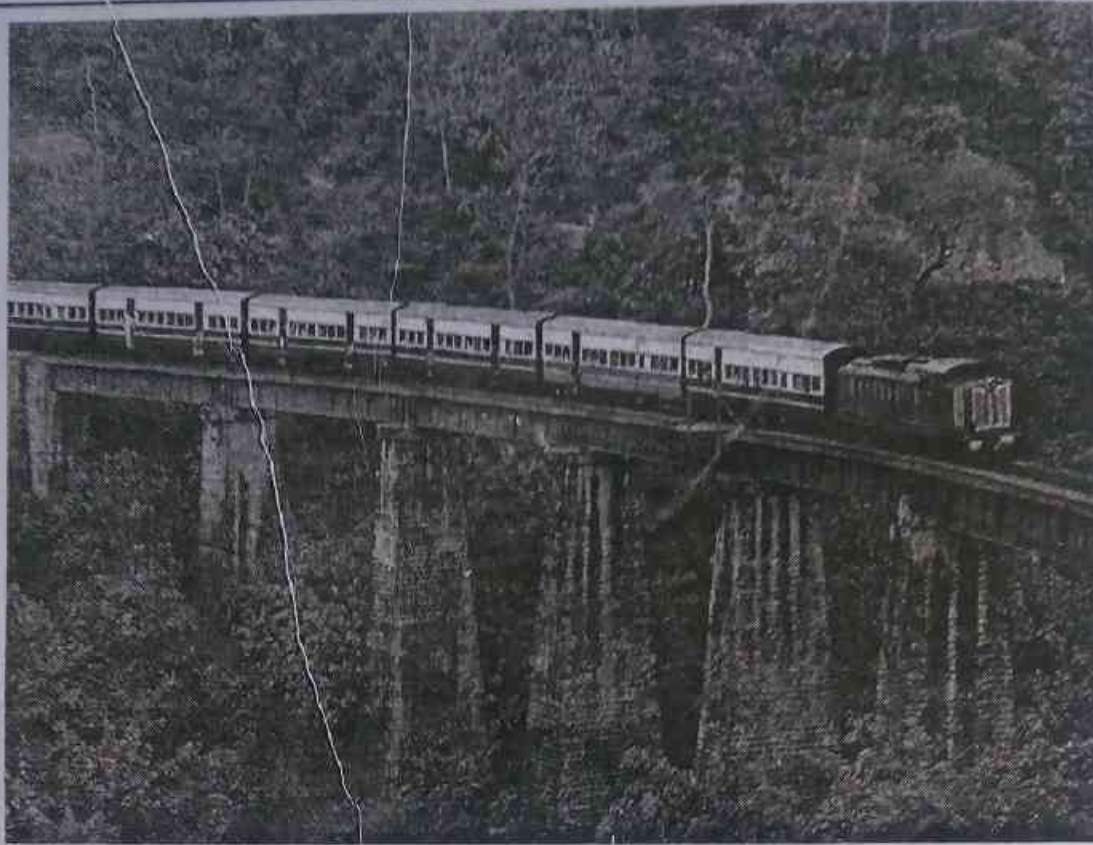
प्रस्तावित रेल मार्ग (Proposed Railways)- भारतीय रेल विभाग **बिलासपुर-मण्डी-लेह** रेल मार्ग बनाने का प्रस्ताव है। यह रेल मार्ग बड़ी रेल लाईन (Broad Gadga) अर्थात् 1676 mm चौड़ा बनाने की योजना है। इस रेलमार्ग के बन जाने से हिमाचल प्रदेश तथा जम्मू और कश्मीर प्रान्त रेल द्वारा आपस में जुड़ जायेंगे। सम्भवत: यह रेल मार्ग विश्व भर में सबसे ऊँचा रेल मार्ग होगा, जो समुद्र तल से 5359 मी. ऊँचाई पर बनेगा। इस रेल मार्ग का निर्माण भारतीय रेल मंत्रालय के लिए एक बड़ी चुनौती है। इस रेलमार्ग के बन जाने से लेह सीधा पंजाब तथा हिमाचल से जुड़ जायेगा। यह रेल मार्ग लगभग 498 कि.मी. लम्बा होगा। इस रेल मार्ग के अन्तर्गत पंजाब के भानुपल्ली (Bhanupalli) से बिलासपुर तक का निर्माण आरम्भ हो चुका है। इस रेल मार्ग की पंजाब से लेह तक की लम्बाई 550 किमी. के लगभग होगी।

वायु मार्ग
(Airways)

गग्गल (Gaggal) : हिमाचल प्रदेश का सबसे बड़ा हवाई अड्डा है, जो धर्मशाला के निकट स्थित है। प्रदेश में कुल्लू के पास **भुन्तर** (Bhunter) में और शिमला से 25 किमी दूर **जुब्बर हट्टी** (Jubber Hatti) (ज़िला सोलन) में तथा काजा व **रंगरीक** में भी हवाई अड्डे हैं। काजा तथा रंगरीक हवाई अड्डों से दिल्ली के लिए हवाई उड़ान होती है।

प्रदेश सरकार हवाई अड्डों के निर्माण कार्य पर ज्यादा बल दे रही है, क्योंकि सारा पर्यटन उद्योग इसी आधुनिक दक्षता पर आधारित है। सरकार **हमीरपुर** (Hamirpur), **मण्डी** (Mandi) तथा **बेनीखेत** में हवाई अड्डे बनाने पर विचार कर रही है। हवाई मार्ग हिमाचल की जनता की यातायात सम्बन्धी बहुत सीमित आवश्यक्ताओं को ही पूरा कर सकते हैं।

हैलीपेड
(Helipads)

हिमाचल प्रदेश एक पर्वतीय प्रदेश है, इसलिए यहां हैलीपैड अर्थात् हैलीकाप्टर उतारने के स्थानों का बड़ा महत्व है। हिमाचल प्रदेश में इस समय 57 हैलीपेड हैं तथा 12 नये हैलीपैड बनाये जा रहे हैं। हिमाचल के हैलीपैडों में **बाहंग** मनाली के पास, **नाहन** सेना अधिकारियों के तहत, **अनाडेल** शिमला, **स्टींगरी** ग्रेफ के अधीन, **डोडराक्वार, किलाड़,** **किन्नौर, भरमौर, पांगी** प्रमुख हैं। **सांगला, चम्बा, रंगरीक, डलहौज़ी** में हैलीपेड बनाए जा रहे हैं।

हिमाचल प्रदेश पथ परिवहन निगम
(Himachal Road Transport Corporation)

इस निगम की स्थापना 2 **अक्तूबर 1974** को की गई थी। परिवहन का कार्य प्रदेश में हिमाचल पथ परिवहन निगम द्वारा चलाया जा रहा है। प्रदेश में यात्री परिवहन का 82% कार्य राज्य पथ परिवहन निगम करता है तथा शेष 18% निजी परिवहन के अधीन है। राज्य के पास पर्याप्त संख्या में बसें मौजूद हैं, जो प्रतिदिन लगभग 2.44 लाख कि.मी. दूरी तय करती हैं।

जल परिवहन
(Water Transport)

हिमाचल प्रदेश में जल परिवहन का उत्तरदायित्व हिमाचल के परिवहन विभाग के पास है। हिमाचल की कृत्रिम झीलों में ही जल परिवहन की सुविधा उपलब्ध है। राज्य में मुख्यत: चार झीलों बिलासपुर ज़िला में **गोबिन्द सागर झील**, मण्डी जिला में **पण्डोह झील**, कांगड़ा जिला में **पौंग झील** तथा चम्बा जिला में **चमेरा झील** में जल परिवहन के लिए अग्निबोट (Steamer) का प्रयोग किया जाता है। यह यातायात बहुत सुविधाजनक व सुरक्षित नहीं है। इसके विकास की ओर ध्यान देने की आवश्यकता है। पर्यटन की दृष्टि से जल परिवहन तथा खेलों का विकास अनिवार्य है।

रज्जू मार्ग
(Rope way)

राज्य में यात्रियों को गांवों में आर-पार ले जाने तथा सामान आदि ले जाने के लिए रज्जू-मार्ग भी स्थापित किए जा रहे हैं। इसका नवीनतम उदाहरण परवाणु के पास देखा जा सकता है, जिसका नाम **टिम्बर ट्रेल** है।
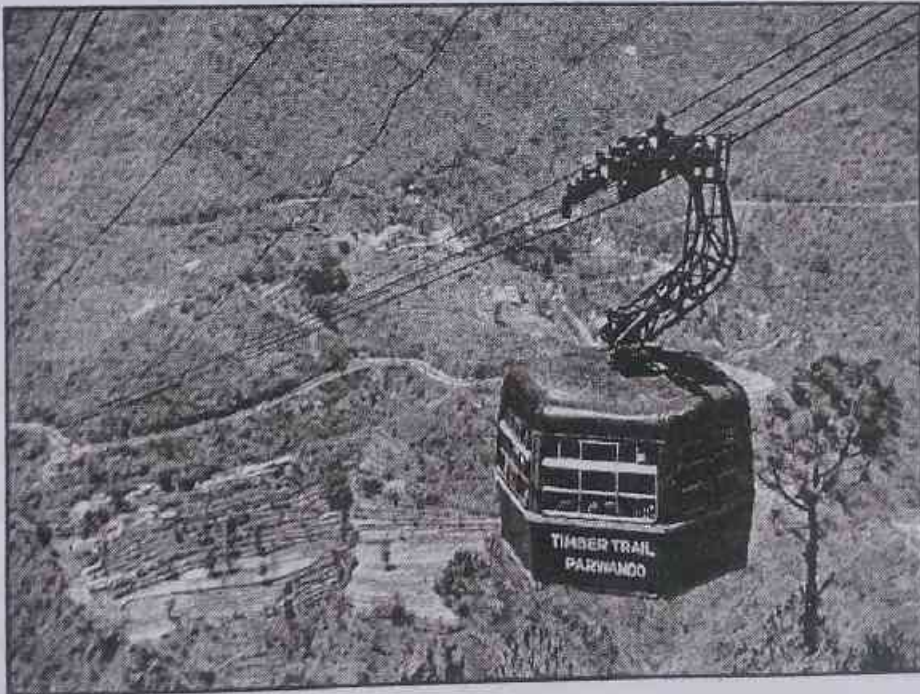
संचार
(Communication)

सड़कों के बढ़ने और अन्य विकास क्रमों के साथ प्रदेश में संचार-तन्त्र का प्रसार हुआ है। आज हिमाचल प्रदेश में लगभग 280 टैलीफोन एक्सचेंज हैं, जबकि दो दशक पूर्व यहाँ 50 टैलीफोन एक्सचेंज थे।

समाचार-पत्र (News Papers)–राज्य में विभिन्न दैनिक, पाक्षिक तथा मासिक पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित होती हैं। इनमें सबसे अधिक हिन्दी में प्रकाशित होने वाली पत्र-पत्रिकाएँ हैं। हिमाचल प्रदेश का सबसे पुराना समाचार-पत्र द्विभाषिक पाक्षिक **'क्षत्रिय तेज'** वर्ष 1934 में प्रकाशित हुआ था।

राज्य से प्रकाशित प्रमुख समाचार-पत्र

क्र. सं.	समाचार-पत्र	भाषा	समय	स्थान
1.	हिमाचल ध्वनि	हिन्दी	पाक्षिक	शिमला
2.	हिमाचल ब्रह्मास्त्र	हिन्दी	साप्ताहिक	शिमला
3.	हिमाचल स्कूल संचार	हिन्दी	मासिक	काँगड़ा
4.	चम्बा न्यूज़	हिन्दी	साप्ताहिक	चम्बा
5.	हिम रक्षक	हिन्दी	पाक्षिक	जोगिन्दर नगर
6.	ऊँचा हिमालय	द्विभाषिक	त्रैमासिक	शिमला
7.	हिम सत्ता	हिन्दी	साप्ताहिक	डलहौज़ी
8.	उदय भारत	हिन्दी	दैनिक	शिमला
9.	हिम संवाहक	हिन्दी	साप्ताहिक	डलहौज़ी

महत्त्वपूर्ण प्रश्न
(Important Questions)

1. हिमाचल प्रदेश के परिवहन व संचार व्यवस्था की विवेचना कीजिए।

   Discuss the transport and communication system of Himachal Pradesh.

2. हिमाचल प्रदेश की सड़कों और रेलमार्ग का विवरण कीजिए।

   Discuss the road and railways of Himachal Pradesh.

UNIT III

The Beginning of the Uneasy Calm

8 हिमाचल में 1857 का विद्रोह (REVOLT OF 1857 IN HIMACHAL)

भूमिका (Introduction)

दूसरे आंग्ल-सिक्ख युद्ध में अंग्रेज़ों की विजय से पहाड़ी रियासतें उनके अधिकार में आ गईं और उन्होंने मनमाने ढंग से उन रियासतों पर प्रशासनिक व्यवस्था लागू की। अंग्रेज़ रियासतों के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप करने लगे, जिससे न केवल शासक ही अपितु जनता भी अंग्रेज़ों को अपना शत्रु समझने लगी। 1849 में राम सिंह पठानिया के नेतृत्व में कांगड़ा समूह की रियासतों ने अंग्रेज़ों के विरुद्ध विद्रोह का झण्डा गाढ़ दिया था जिससे हिमाचल के अन्य शासकों को भी अंग्रेज़ों के विरुद्ध आवाज उठाने का प्रोत्साहन मिला था। इस प्रकार अंग्रेज़ों के विरुद्ध विद्रोह की भावना पहाड़ी रियासतों में भी पनपने लगी थी। 1857 से पूर्व ऐसी कई घटनाएं घटीं, जिन्होंने 1857 के स्वतंत्रता संग्राम को आरम्भ करने की प्रेरणा दी। इस विद्रोह ने अंग्रेज़ों की जड़ों को हिला कर रख दिया और उन्हें भारत में अपनी नीति बदलने पर विवश कर दिया।

1857 के विद्रोह के कारण (Causes of the Revolt of 1857)

1857 के विद्रोह के कुछ प्रमुख कारण निम्नलिखित थे-

1. जनसाधारण में असंतोष (Discontentument among Masses)-उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में हिमाचल के राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक क्षेत्रों में बराबर परिवर्तन आते रहे। विभिन्न पहाड़ी रियासतों पर अंग्रेज़ों का अधिकार होने के पश्चात् भी जनसाधारण में राजशाही और सामन्तवादी के नेतृत्व का प्रभुत्व बना रहा। समस्त पहाड़ी रियासतों में अंग्रेज़ों द्वारा स्थापित नई प्रशासन व्यवस्था के विरुद्ध व्यापक असन्तोष फैला हुआ था। अंग्रेज़ी अधिकारियों द्वारा जनसाधारण के धार्मिक जीवन और सामाजिक रीति-रिवाज़ों में अनावश्यक हस्तक्षेप और पक्षपातपूर्ण नीतियों से भी लोगों में रोष फैल गया था। हिमाचल के पहाड़ी क्षेत्र के सीधे-सादे लोगों को पिछड़ा, असभ्य और हीन समझ कर उनका तिरस्कार किया जाता था। इस प्रकार की दोषपूर्ण प्रशासनिक व सामाजिक नीतियों के कारण लोगों में अंग्रेज़ों के प्रति विद्रोह की भावना जाग उठी थी।

2. पहाड़ी राजाओं में असंतोष (Discontentment among Hill Rulers)-जनसाधारण के साथ-साथ देशी शासक भी अंग्रेज़ों की गुलामी और तानाशाही से तंग आ चुके थे। शिमला की पहाड़ी रियासतों के देशी शासक अंग्रेज़ अफ़सरों के अनावश्यक हस्तक्षेप और कठोर नियन्त्रण से असन्तुष्ट थे। दूसरी ओर कांगड़ा की पहाड़ी रियासतों में अनेक राजवंशों के अस्तित्व को समाप्त करने की कठोर नीति के परिणामस्वरूप इस क्षेत्र के राजाओं और सामन्तों में भी असन्तोष फैल गया था। शासक वर्ग अपनी खोई हुई सत्ता और शक्ति को पुनः प्राप्त करना चाहते थे।

3. सैनिकों से पक्षपातपूर्ण व्यवहार (Behaviour with the Soldiers)-अंग्रेज़ी सरकार द्वारा देशी सेना के साथ पक्षपात एवं भेदभावपूर्ण नीति के कारण देशी सेना में विद्रोह की भावना भड़क रही थी। कोई भी भारतीय सैनिक अफसर के पद तक नहीं पहुँच सकता था। सेना का सबसे बड़ा भारतीय अफसर ब्रिटिश सेना के सबसे छोटे अंग्रेज़ अफसर के अधीन होता था। सरकार सैनिकों के सामाजिक और धार्मिक जीवन में भी हस्तक्षेप कर रही थी। हिन्दू, सिक्ख और मुस्लिम सैनिकों को ईसाई बनाने की बातें चल रही थीं। इसके अतिरिक्त एक अंग्रेज़ अफसर को भारतीय सैनिक की अपेक्षा 7 या 8 गुणा अधिक वेतन मिलता था। भारतीय सैनिकों के साथ बुरा दुर्व्यवहार भी किया जाता था। इन कारणों से भारतीय सैनिकों में अंग्रेज़ी सरकार के प्रति गहरा असंतोष था।

4. सामान्य सेवा भर्ती अधिनियम (General Service Enlistment Act)- लार्ड डलहौज़ी के उत्तराधिकारी **लार्ड कैनिंग** (Lord Canning) द्वारा किये गये परिवर्तनों ने जलती पर तेल का काम किया। उसके द्वारा पास किए गये सामान्य सेवा भर्ती अधिनियम के कारण सैनिकों में रोष की लहर दौड़ गई, क्योंकि अब उन्हें भारत या भारत से बाहर कहीं भी लड़ने के लिए भेजा जा सकता था। समुद्र पार जाना अनेक सैनिकों के लिए धर्म-विरुद्ध कार्य था। इसलिए उन्होंने इस कानून का डटकर विरोध किया। इसके अतिरिक्त सैनिकों को अब अपना डाक-खर्च देने के लिए बाध्य किया गया, जबकि पहले उन्हें कुछ नहीं देना पड़ता था। सैनिकों के वेतन पहले ही कम थे, इसलिए उनके लिए डाक-खर्च सहन करना अति कठिन हो गया। कैनिंग के इन कार्यों से सैनिकों में काफ़ी असन्तोष फैल गया और वे अंग्रेज़ों के विरुद्ध हथियार उठाने की तैयारी करने लगे।

5. लार्ड डलहौज़ी की साम्राज्यवादी नीति (Imperialistic Policy of Lord Dalhousie)- भारतीय शासक तथा भारतीय प्रजा यह बात जान चुकी थी कि किस प्रकार अंग्रेज़ी कम्पनी ने छल-कपट और झूठी संधियों से अपने साम्राज्य को बढ़ाया था। इसलिए उनके मन में अंग्रेज़ों के प्रति घृणा की भावना फैल चुकी थी। लार्ड डलहौज़ी ने अपने कार्यों से जलती पर तेल का कार्य किया। उसके समय में विजयों, लैप्स की नीति, समर्पण तथा कुप्रबंध आदि अनेक बहानों द्वारा अन्धाधुन्ध भारतीय प्रदेशों के मिलाए जाने के कारण भारतीय शासक तथा भारतीय लोग, दोनों ही अंग्रेज़ों के शत्रु हो गए। उन्हें अब अंग्रेज़ों की नीयत पर से विश्वास उठ गया और वे उनसे बदला लेने की तैयारियों में लग गये।

6. एक उड़ती हुई अफ़वाह (A Wild Rumour)- आम लोगों में और विशेषकर सेना में यह अफ़वाह ज़ोरों से फैल रही थी कि अंग्रेज़ी राज्य भारत में एक सौ वर्षों तक ही रहेगा। अंग्रेज़ों को भारत का राज्य 1757 ई. में होने वाली प्लासी की लड़ाई से मिला था। इस प्रकार 1857 ई. में भारत पर उनके राज्य को पूरे 100 वर्ष होने वाले थे। इसलिए लोगों और सैनिकों को इस बात का विश्वास था कि अंग्रेज़ी राज्य के भारत में अब दिन गिने चुने हैं। इस मनोवैज्ञानिक कारण ने भी लोगों और विशेषकर सैनिकों को अंग्रेज़ों के विरुद्ध भड़का दिया।

7. तात्कालिक कारण चर्बी वाले कारतूस (Immediate Cause the Greased Castridge)- 1857 ई. में एक नई प्रकार की राइफ़ल, जिसे एन्फील्ड राइफ़ल (Enfield Rifle) कहते हैं, का सेना में प्रयोग आरम्भ किया गया। इस राइफ़ल में भरने के लिए चिकने कारतूसों को प्रयोग में लाया जाता था। बन्दूक या राइफ़ल में चढ़ाने से पहले कारतूसों को मुंह से काटना पड़ता था। शीघ्र ही यह अफ़वाह फैल गई कि इन कारतूसों में गाय और सुअर की चर्बी का प्रयोग किया गया है। अतः हिन्दू और मुसलमान सैनिकों ने ऐसे कारतूसों का प्रयोग करने से इन्कार कर दिया और जब उनसे ज़बरदस्ती की गई तो कई छावनियों में उन्होंने विद्रोह खड़ा कर दिया। शीघ्र ही अंग्रेज़ों से रुष्ट हुए अनेक भारतीय शासकों तथा भारतीय जनता ने उनका साथ दिया और वे सब मिलकर अंग्रेज़ों से छुटकारा पाने के प्रयत्नों में व्यस्त हो गये। सर्वप्रथम **28 मार्च** 1857 को 34 नेटिव इन्फेन्ट्री के एक देशी सैनिक **मंगल पाण्डे** ने चर्बी वाले कारतूसों का प्रयोग करने से इन्कार कर दिया और अपने दूसरे साथियों को अपने धर्म की रक्षा करने हेतु अंग्रेज़ों के विरुद्ध हथियार उठाने के लिये उकसाया। अगले ही दिन जब **सार्जेंट मेजर हसन** (Sargeant Major Hussan) ने उसे पकड़ने का प्रयत्न किया तो उसने **29 मार्च , 1857 ई.** के दिन उसे गोली से उड़ा दिया। एक अन्य अंग्रेज अधिकारी ने जब उसकी ओर बढ़ने का प्रयास किया, तो उसने उसे भी धराशायी कर दिया। चाहे बाद में मंगल पांडे पकड़ा गया और 8 अप्रैल 1857 ई. के दिन उसे फांसी पर चढ़ा दिया गया तथा बैरकपुर में स्थित दो फ़ौजी दस्तों को तोड़ भी दिया गया, परन्तु इससे बात और बिगड़ गई। मंगल पांडे को फांसी दिये जाने की खबर शीघ्र ही सारे देश में फैल गई और देखते-ही-देखते कई स्थानों पर विद्रोह की ज्वाला भड़क उठी।

विद्रोह की घटनाएं
(Events of the Revolt)

हिमाचल के विभिन्न क्षेत्रों में भी देशी राजाओं, सैनिकों और जनसाधारण ने अंग्रेजी साम्राज्य का जमकर विरोध किया तथा इस स्वाधीनता संग्राम की प्रथम लड़ाई में अलग-अलग पड़े पहाड़ी लोगों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया।

(क) विद्रोह आरम्भ होने से पूर्व हिमाचल में घटनाक्रम
(Incidents Before the Revolt in Himachal)

1857 को विद्रोह का आरम्भ 10 मई को माना जाता है परन्तु इससे पूर्व ही हिमाचल प्रदेश में ऐसा घटनक्रम आरम्भ हो गया जिसने बाद में विद्रोह का रूप धारण कर लिया।

1. **कसौली में भारतीय सैनिकों द्वारा अंग्रेज़ों को चुनौती** (Challenge to the British in Kasauli by Indian Soldiers)-हिमाचल प्रदेश में कम्पनी सरकार के विरुद्ध विद्रोह की प्रथम चिंगारी कसौली की सैनिक छावनी में भड़की। **20 अप्रैल, 1857 ई.** को अम्बाला राईफल डिपो के छः देशी सैनिकों ने कसौली में एक पुलिस चौकी को आग लगा दी। पुलिस चौकी जल कर राख हो गई और घुड़सवार सैनिक जान बचा कर भाग निकले। उन दिनों कसौली सैनिक छावनी हिमाचल के पहाड़ी क्षेत्रों में ब्रिटिश सैनिक शक्ति का सबसे बड़ा केन्द्र था। यहां देशी नसीरी सेना और पुलिस के अतिरिक्त 300 के लगभग ब्रिटिश सैनिक अफसर और जवान तैनात थे। इस सशक्त केन्द्र में क्रान्तिकारियों ने आतंक फैला कर अंग्रेज़ों को चुनौती दी।

2. **शिमला क्षेत्र में असंतोष** (Discontentment in Shimla Region)—कसौली की घटना के पश्चात् अंग्रेज़ों को देशी सैनिकों और साधारण कर्मचारियों पर संदेह होने लगा। अतः भारतीय सैनिकों पर कड़ी निगरानी रखी जाने लगी। देशी जनता के प्रति अंग्रेज़ों का व्यवहार और अधिक कठोर हो गया। इससे देशी सैनिकों और जनसाधारण का असन्तोष क्रोध में बदल गया। फलस्वरूप विद्रोह की भावना को और अधिक बल मिला तथा **कसौली, डगशाई, स्पाटू, कालका** और **जतोग** में तैनात देशी सेना में भी विद्रोह की लहर दौड़ गई। उधर कांगड़ा, नूरपुर, धर्मशाला, सिरमौर आदि विभिन्न रियासतों में तैनात देशी सैनिकों में भी विद्रोह की भावना उत्तेजित होने लगी। समस्त पहाड़ी क्षेत्रों में सैनिक छावनियों, सार्वजनिक स्थानों, जनसभाओं व सरकारी दफ्तरों में ब्रिटिश शासन के प्रति असन्तोष और विरोध पनपने लगा। बुशैहर के राजा **शमशेर सिंह**, कुल्लू-सिराज के युवराज **प्रताप सिंह**, सुजानपुर के राजा **प्रताप चन्द** तथा अन्य रियासतों के विस्थापित और असन्तुष्ट शासक गुप्त रूप से क्रान्तिकारी गतिविधियों में भाग लेने और स्वतन्त्रता संग्राम में कूदने के लिए तैयार हो गए। माल रोड पर शिमला जहाँ सामान्य भारतीयों का चलना वर्जित था, किसी नौजवान ने अपनी मूंछों पर ताव देते हुए अंग्रेज़ी महिलाओं को घूर कर देखा और धमकियां तक दीं। छोटा शिमला और अन्य बाज़ारों में हिन्दू-मुस्लिम दुकानदार अंग्रेज़ों के प्रति विरोध प्रकट करने के लिए कटु व्यवहार तक करने लगे। किसान भी अंग्रेज़ों की कठोरता, निर्दयता तथा भूमि सम्बन्धी नीति से असंतुष्ट थे। इस प्रकार रियासती शासक, सेना और प्रजा में अंग्रेज़ों के प्रति विद्रोह की भावना जागी।

(ख) विद्रोह का आरम्भ तथा अन्य घटनाएं
(Beginning and other Events of the Rovelt)

1. **मेरठ** (Meerut)- बैरकपुर की घटना का भी अंग्रेज़ी सरकार पर कोई असर न पड़ा और अंग्रेज़ों ने मेरठ में स्थित भारतीय सैनिकों को चर्बी वाले कारतूसों का प्रयोग करने के लिये विवश किया। जब वहां लगभग 85 सैनिकों ने इन चर्बी वाले कारतूसों को प्रयोग में लाने से इन्कार कर दिया तो उन्हें 8 से 10 वर्ष की सख्त सज़ा देकर जेल में बन्द कर दिया गया। जेल में भेजने से पहले उन सैनिकों के हाथ बांध कर उनका सैनिकों और मेरठ के नागरिकों के सामने बड़ा निरादर किया गया। **10 मई** 1857 को उन्होंने अनेक अंग्रेज अधिकारियों को मार कर जेल से अपने साथियों को छुड़वा लिया और दिल्ली की ओर प्रस्थान किया। इस प्रकार 10 मई को मेरठ में विद्रोह आरम्भ हो गया।

दिल्ली में विद्रोह (Revolt in Delhi)— मेरठ से क्रान्तिकारी **11 मई 1857 ई.** को दिल्ली पहुंचे और दो दिन के भीतर ही उन्होंने दिल्ली पर अधिकार कर लिया। मुग़ल सम्राट् **बहादुरशाह द्वितीय** को राज्य सिंहासन पर बैठा दिया गया और उसके भारत-सम्राट् होने की घोषणा कर दी गई। उसकी पत्नी **ज़ीनत बेगम** ने भी क्रान्तिकारियों को पूर्ण सहयोग दिया। तब क्रान्तिकारियों ने कश्मीरी गेट के निकट स्थित अंग्रेज़ी तोपखाना को लेने का प्रयास किया, वहां स्थित **जनरल**

विल्लोबी (Gernal Willoughby) ने लगभग तीन घंटे तक क्रान्तिकारियों का मुकाबला किया परन्तु अन्त में अपने-आपको असमर्थ देखकर उसने तोपखाने को आग लगा दी। इस प्रकार होने वाले विस्फोट में वह अपने आठ साथियों सहित उड़ गया परन्तु 1,000 के लगभग क्रान्तिकारी भी मारे गए। फिर जो भी यूरोपीय हाथ लगा, उसका वध कर दिया गया।

2. शिमला क्षेत्र में आतंक (Terrorin Shimal region)-11 मई, 1857 ई. को मेरठ, अम्बाला और दिल्ली के विद्रोह और कत्ले-आम का समाचार शिमला पहुँचा। यह समाचार मिलते ही ब्रिटिश सेना के कमाण्डर-इन-चीफ **जनरल जॉर्ज एनसन ने जतोग, स्पाटू, डगशाई और कसौली** की सैनिक छावनियों के सैनिकों को अम्बाला की ओर कूच करने के आदेश दिए। वह स्वयं भी आतंक व हड़बड़ाहट में अम्बाला की ओर निकल पड़ा। देशी सेना ने अपने सेनापति के आदेश का पालन नहीं किया तथा अंग्रेज़ अफसरों का घेराव किया और उन्हें धमकाया। जतोग में तैनात नसीरी सेना (गोरखा रेंजिमेंट) ने देशी सेना के सूबेदार **भीम सिंह** के नेतृत्व में जतोग छावनी और खज़ाने पर कब्ज़ा कर लिया।

मेरठ, दिल्ली और जतोग के विद्रोह की खबर सुन कर शिमला के अंग्रेज़ों में आतंक छा गया। लगभग 800 यूरोपीय स्त्री, पुरुष और बच्चे मेजर **जनरल निकोल्स पैन्नी** के निर्देशानुसार पहले चर्च के पास और बाद में शिमला बैंक (वर्तमान ग्रेंड होटल) के अहाते में इकट्ठे हो गए। शिमला का डिप्टी कमिश्नर **लॉर्ड बिलियम** हेय लोगों को उचित सुरक्षा प्रदान न कर सका। इसी दौरान एक गोरखा सैनिक ने अपनी खुखरी से बीच बाज़ार में एक ब्रिटिश अफसर की गर्दन उड़ा दी। इस घटना के बाद जतोग की नसीरी बटालियन द्वारा शिमला शहर पर धावा बोलने की आशंका पैदा हो गई। इससे शिमला बैंक के पास एकत्रित फिरंगियों में भगदड़ मच गई। सरकारी दफ्तर, दुकानें तथा घर बार खुले छोड़ कर अंग्रेज़ शिमला से भाग निकले। कुछ डगशाई के सैनिक बैरकों में जाकर चैन की सांस ले सके और कुछ ने जुन्गा के राजमहल में जाकर शरण ली। कुछ अंग्रेज **धामी, कोटी, बलसन** और **बघाट** के देशी शासकों की शरण में जा पहुँचे। कुछ अंग्रेज़ डाक बंगलों में भूखे-प्यासे और थकान से मर गए। अंग्रेज़ों की इस कायरता और अराजकता का यह ऐतिहासिक प्रमाण '**शिमला आतंक**' और '**शिमला कत्ले आम**' के शीर्षकों के अन्तर्गत समाचार पत्रों की सुर्खियों में छाया गया।

मेजर जनरल गोवन्ज ने 15 मई, 1857 ई. को परिवार सहित राजा जुन्गा के पास शरण ली। **कर्नल कीथ** यंग और **कर्नल ग्रेटहैड** ने भी सपरिवार राजा क्योंथल की सुरक्षा प्राप्त की। अन्य सैनिक अफसरों, जवानों एवं अनेक परिवार जनों ने आम नागरिकों की भांति कोटी, धामी, मशोबरा आदि रियासतों और सैनिक छावनियों में जाकर शरण ली।

इस अपूर्व आतंक में मची भगदड़ के कारण शिमला के फिरंगियों को '**भगौड़ादल**' अर्थात् '**फ्लाईंग स्कवाड्रन**' का नाम दिया गया। दूसरी ओर सैनिक प्रशासन भी अस्त-व्यस्त हो चुका था। क्वार्टर मास्टर जनरल, कर्नल ए. बेकर ने शिमला, जतोग, स्पाटू, डगशाई, कसौली और कालका से देशी सेना पुलिस गाड्र्ज़ को अम्बाला की ओर तुरन्त कूच करने के आदेश दिए। शिमला के डिप्टी कमिश्नर विलियम हेय और कर्नल चेस्टर ने भी शिमला गाड्र्ज़ और नसीरी सेना को अम्बाला भेजने की कोशिश की। सेना के शस्त्र, बारूद और सामान उठाने के लिए लगभग 700 मज़दूरों को लेकर जतोग के दुकानदार और अन्य लोग शिमला की ओर भागे। अंग्रेज़ अफसरों और डिप्टी कमिश्नर ने भी शिमला पहुंच कर चैन की सांस ली। नसीरी सेना ने सेनापति जनरल जॉर्ज एनसन को मारने की धमकी दी।

12 मई, 1857 ई. को हिन्दुस्तान तिब्बत रोड के सुपरिंटेंडेंट **कैप्टन डेविड ब्रिगर्जे** को डगशाई छावनी में तैनात फर्स्ट ब्रिगेड बंगाल प्रयूज़ीलियर्ज़ की सैनिक रैजिमेंट और स्पाटू से सैकेंड यूरोपीयन बंगाल फ्यूज़ीलियर्ज को भी अम्बाला की ओर कूच करने के आदेश मिले परन्तु दोनों सैनिक दस्ते अम्बाला नहीं पहुँचे। उसी समय दिल्ली के भगौड़े अंग्रेज़ों में से एक औरत और कुछ बच्चे कालका आ पहुँचे। उन्होंने दिल्ली कत्ले-आम की कहानी सुनाई। परिणामस्वरूप कालका, डगशाई, कसौली और स्पाटू में स्थित अंग्रेजों में और अधिक आतंक छा गया।

भीम सिंह के नेतृत्व में नसीरी सेना द्वारा क्रान्ति (Revolt by Gorkha Army in the Leadership of Bhim Singh) — कसौली की नसीरी सैनिक टुकड़ी ने अम्बाला जाने से इन्कार कर दिया था। वहाँ अंग्रेज़ी सेना के मुकाबले देशी सेना बहुत कम थी। फिर भी देशी सैनिकों ने 16 मई, 1857 ई. को विद्रोह की घोषणा कर दी और कसौली की

ब्रिटिश सेना पर धावा बोल दिया। अंग्रेज़ सैनिक **कैप्टन बलैकॉल** के साथ छावनी से भाग निकले। भारतीय सैनिकों ने सरकारी खजाने पर कब्ज़ा कर लिया और ढेर सारा धन एकत्रित करके जतोग की ओर बढ़े। सूबेदार **भीम सिंह** क्रान्तिकारी देशी सेना के नेता थे। तत्कालीन कसौली के सहायक कमिश्नर **पी. मैक्सवैल** ने इस घटना के विषय में लिखा है कि, ''यह बड़े खेद का विषय है कि मुट्ठी भर क्रान्तिकारियों'' ने चार गुणा से भी अधिक अंग्रेज़ी सैनिकों के सामने विद्रोह के आरम्भ में ही अंग्रेज़ी सरकार को उसके अपनी ही सुदृढ़ गढ़ में त्रस्त कर दिया और ब्रिटिश कोष को भी लूटा।'' यहां केवल 45 क्रान्तिकारियों ने 200 से भी अधिक यूरोपीय सैनिकों के विरुद्ध हथियार उठा कर अपने साहस का परिचय दिया था।

सूबेदार **भीम सिंह** के नेतृत्व में कसौली की क्रान्तिकारी सेना ने जतोग की ओर बढ़ते हुए मार्ग में **हरीपुर** नामक स्थान पर ब्रिटिश सेना के कमाण्डर-इन-चीफ, **जनरन जॉर्ज एनसन** के टैंटों को आग लगा दी और शस्त्र व सामान लूट लिया। **सैरी (सायरी)** नामक स्थान पर क्रान्तिकारियों ने दो ब्रिटिश अफसरों और भगौड़े फिरंगियों को धमकाया, उनकी तलाशी ली गई और अपनी खुखरी (गोरखा शस्त्र) दिखा कर डराया गया। इसके अतिरिक्त सरकार की निजी डाक को ले जाते एक पोस्टमैन को भी पकड़ा और उससे डाक बैग छीन कर पत्रों सहित नष्ट कर दिया। क्रान्तिकारी सेना ने मार्ग में मिलने वाले लोगों से अंग्रेजों की सहायता न करने की अपील की।

कसौली में बुद्ध सिंह के नेतृत्व में विद्रोह (Revolt in Kasauli under the leadership of Budh Singh)—नसीरी सेना के कसौली से कूच करने के बाद स्थानीय पुलिस गार्ड ने क्रान्ति की बागडोर अपने हाथों में ले ली। छावनी के थाने के दरोगा **बुद्ध सिंह** क्रान्तिकारियों के नेता बन गये। उनके नेतृत्व में पुलिस क्रान्तिकारियों ने सहायक कमिश्नर **टेलर** और **कैप्टन ब्लैकॉल** के आदेशों को मानने से इन्कार कर दिया। पुलिस क्रान्तिकारियों ने फिरंगियों को ललकारा और कसौली खजाने पर कब्जा कर लिया। खज़ाने का धन और शस्त्र लूट कर अन्य क्रान्तिकारियों के साथ कन्धे से कन्धा मिला कर अंग्रेज़ों से लड़ने के लिए जतोग की आरे बढ़े। अंग्रेज़ी सेना ने जतोग की ओर बढ़ते हुए इन क्रान्तिकारियों का पीछा किया और कुछ सिपाहियों को पकड़ लिया। कुछ क्रान्तिकारी सिपाही मुठभेड़ में मारे गए। पुलिस क्रान्तिकारियों के नेता दरोगा बुद्धसिंह ने अपने ही पिस्तौल से स्वयं को गोली मार ली। क्रान्तिकारी सिपाही संख्या में बहुत कम होने के कारण अंग्रेज़ी सेना का मुकाबला न कर सके। अंग्रेज़ों ने क्रान्तिकारियों को जेल में डाल दिया और कठोर यातनाएं दीं।

कसौली में आतंक (Terror in Kasauli)—शिमला की पहाड़ी रियासतों की कसौली छावनी में प्रायः 300 के लगभग अंग्रेज सैनिक तैनात रहते थे, परन्तु यहां भी शिमला की भांति अंग्रेज़ी समुदाय में भयानक हिंसा, आतंक और भय फैल गया था। दिल्ली, अम्बाला, कालका, और शिमला से यहां शरण के लिए आए भगौड़े फिरंगियों ने हिंसा और कत्लेआम की कहानियां सुना कर यहां के अंग्रेज़ों को और भी अधिक डरा दिया। नसीरी सेना व पुलिस गार्द की बगावत से **डगशाई, स्पाटू** और **कालका** में भी अंग्रेज़ों के होश उड़ गए। स्थानीय क्रान्तिकारियों के हमले की आशंका से **सनावर लारेंस आश्रम** के 380 बच्चे और सैंकड़ों शरणार्थी डर के मारे रात भर थर-थर कांपते रहे। 17 मई, 1857 ई. को रविवार के दिन आश्रम के शरणार्थी तथा अन्य फिरंगियों को कसौली छावनी की मिलिटरी बैरकों में शरण दी गई। 18 मई, 1857 ई. को **कैप्टन मोफट** '75-फुट बटालियन' के एक सौ जवान लेकर कसौली पहुँचे। डगशाई से **कैप्टन ब्रुक** और स्पाटू से **कर्नल कांगरीव** भी अपने-अपने सैनिक दस्ते लेकर कसौली की सुरक्षा के लिए पहुँच गए। सुरक्षा की समुचित व्यवस्था के होते हुए भी फिरंगियों के भय का ठिकाना न था।

19 मई, 1857 ई. तक शिमला, जतोग, स्पाटू, कसौली, डगशाई, कालका और सिरमौर से कोई सैनिक सहायता अम्बाला नहीं पहुँची। सिरमौर बटालिन, नसीरी बटालियन और बंगाल रैजिमेंट ने भी आगे बढ़ने से इन्कार कर दिया तथा कसौली व जतोग के दस्ते विद्रोही हो गए। सेनापति **जनरल जॉर्ज एनसन** देशी सेना के विद्रोही हो जाने से बहुत हताश हुआ। अम्बाला पहुँचने पर जनरल **एनसन** को हैज़ा हुआ और वह सख्त बीमार पड़ गया। इसी अवस्था में उसने हिन्दुस्तान तिब्बत रोड के निर्माता **कैप्टन डेविड ब्रिगज़** को अंग्रेज़ों की सुरक्षा और सैनिक प्रशासन सुधारने का कार्य भी सौंपा। **कैप्टन ब्रिगज** अम्बाला, कालका और स्पाटू होते हुए 20 मई, 1857 ई. को शिमला पहुँचा। रास्ते में उनकी टक्कर क्रान्तिकारी सेना से हुई। कसौली की क्रान्तिकारी सेना ने सैरी के निकट कैप्टन ब्रिगज को डराया धमकाया और अन्य फिरंगी अफसरों सहित जान से मारने की धमकी भी दी।

20 मई, 1857 ई. को शिमला मुर्दों का शहर लगता था। चारों तरफ भय और सन्नाटा छाया हुआ था। अंग्रेज अफसर, कर्मचारी और बचे-बचाये फिरंगी क्रान्तिकारियों के अचानक हमले से सशंकित रहते थे। इस नाजुक स्थिति में पंजाब के चीफ कमिश्नर **जॉन लॉरेंस** ने रावलपिण्डी से तार द्वारा आदेश भेजा कि शिमला से अंग्रेज़ महिलाओं को अम्बाला भेज दिया जाए तथा कमज़ोर, बीमार, बूढ़े आदि अंग्रेज़ों को कैप्टन एटकिन्सन की सुरक्षा में कसौली भेजा जाए। इसी दौरान शिमला में बार्नस कोर्ट, शिमला बैंक तथा अन्य महत्त्वपूर्ण स्थानों से देशी सैनिक गार्ड्ज को हटा दिया गया परन्तु जतोग छावनी क्रान्तिकारी नसीरी सेना के नियन्त्रण में थी।

विद्रोही सेना को सम्भालने का प्रयास (Efforts to persue the Revolted Army)— शिमला के डिप्टी कमिश्नर **विलियम हेय** और **कैप्टन डी. ब्रिगज** ने जतोग रेजीमेंट को समझा कर शांत करने का प्रयास किया। इससे पूर्व विलियम हेय ने मण्डी के राजा **विजयसेन** के चाचा **मियां रतन सिंह** को जतोग भेज कर सेना से समझौता करने की असफल कोशिश की थी। कैप्टन ब्रिगज़ की उपस्थिति में ही उत्तेजित होकर जवानों ने दो बार हिंसात्मक प्रदर्शन किए और लूटमार मचा दी। ब्रिगज़ ने सभी टुकड़ियों की मांगें सुनीं और कसौली टुकड़ी के इलावा सब को क्षमा करने का वचन दिया। उसने जतोग रैजीमेंट के दो सेवामुक्त सैनिक-**मनहार सहाय** और **शीलाधर** को फिर से सेना में नियुक्त करने का वचन भी दिया। इन दो सैनिक जवानों को राईफल प्रशिक्षण स्कूल के अंग्रेज़ अफसरों के विरुद्ध बोलने के अभियोग में कोर्ट मार्शल किया गया था और बाद में इन्हें सेना से निकाल दिया गया था। कैप्टन ब्रिगज़ ने क्रान्तिकारी नसीरी ेना को अपनी ओर मिलाने का झांसा देकर अम्बाला की ओर बढ़ने के लिये कहा, परन्तु विद्रोही सेना ने ऐसा करने से इन्कार कर दिया।

शिमला हिल्ज की पहाड़ी रिसायतों का विरोध (Resistance of the states of shimla hills)— स्वतंत्रता संग्राम की इस प्रथम लड़ाई में शिमला हिल्ज की सभी पहाड़ी रियासतों में अंग्रेज़ों का घोर विरोध हुआ। प्रजा ने जुब्बल, कोटगढ़, कोटखाई, रामपुर और कल्पा-किन्नौर आदि क्षेत्रों में अंग्रेज अधिकारियों और व्यापारियों का घोर विरोध किया। बुशहर के राजा **शमशेर सिंह** ने अंग्रेज़ सरकार द्वारा लगाया गया 15,000 रुपये वार्षिक नज़राना देना भी बन्द कर दिया और अपनी रियासत को स्वतंत्र घोषित कर दिया। राजा और प्रजा दोनों ने अंग्रेज़ों का डट कर विरोध किया। पहाड़ी रियासतों के राजनीतिक एजेन्ट और शिमला के डिप्टी कमिश्नर **विलियम हेय** ने बुशैहर के राजा के विरुद्ध सेना भेजने का निश्चय किया, परन्तु सैनिक टुकड़ी उपलब्ध न होने के कारण वह कोई कार्यवाही न कर सका।

24 मई, 1857 ई. को जतोग की क्रान्तिकारी नसीरी सेना ने अपने नेता सूबेदार **भीम सिंह** के नेतृत्व में एक क्रान्तिकारी बैठक का आयोजन किया। इस बैठक में कैप्टन ब्रिगज़ और डिप्टी कमिश्नर विलियम हेय द्वारा दिये गए आश्वासनों पर विचार किया गया। दिल्ली, मेरठ और अम्बाला आदि स्थानों से कोई क्रान्तिकारी सहायता व सहयोग न मिलने के कारण जतोग की नसीरी सेना ने विद्रोह स्थगित करने का निर्णय लिया। कैप्टन ब्रिगज़ ने जतोग रैजीमेंट की सभी मांगें मान कर उन्हें शान्त कर दिया था। इसी दौरान दुर्भाग्यवश कसौली की क्रान्तिकारी सैनिक टुकड़ी को सैरी के निकट ब्रिटिश सेना ने घेर लिया और गिरफ्तार कर लिया। इस प्रकार क्रान्तिकारी कसौली की सैनिक टुकड़ी को जतोग की नसीरी रैजीमेंट से मिलकर क्रान्ति करने का अवसर न मिल सका।

शिमला हिल्स में सैनिकों द्वारा विद्रोह की समाप्ति (End of Revolt by the soldiers in Shimla Hills)— 27 मई, 1857 ई. को ब्रिटिश सेनापति **जनरल जॉर्ज एनसन** का अम्बाला में देहान्त हो गया। अंग्रेज़ी सैनिक शक्ति को इससे भारी धक्का लगा। शीघ्र ही **जनरल सर एच. बर्नार्ड** को नया कमाण्डर-इन-चीफ नियुक्त किया गया। 28 मई, 1857 ई. को **जतोग, स्पाटू, कसौली, डगशाई** और **कालका** के देशी सैनिकों ने विद्रोह समाप्त कर दिया। अंग्रेज़ी सरकार के आदेश का पालन करते हुए देशी सैनिकों ने **कालका, अम्बाला** और **सहारनपुर** की ओर कूच किया। **कसौली,** स्पाटू और **डगशाई** में विद्रोह की आग काफी हद तक शान्त हो चुकी थी। परन्तु शिमला के अंग्रेज़ अभी भी अपने को असुरक्षित अनुभव कर रहे थे। 7 जून, 1857 ई. को शिमला म्युनिसिपल कमेटी की प्रैजीडेंट **कर्नल सी. डी. ब्लेयर** और अन्य विदेशियों ने **पंजाब के चीफ कमिश्नर जॉन लारेंस** को एक आवेदन पत्र भेजा और शिमला के नागरिकों, सरकारी कोष और अपार सम्पत्ति की सुरक्षा के उपाय शीघ्र करने की सिफारिश की। उन्होंने कैप्टन ब्रिगज को मार्शल-ला की

शक्ति देकर शिमला की सुरक्षा का भार सौंपने का भी आग्रह किया। फिरंगियों को अब भी शहर के उत्तेजित नागरिकों और क्रान्तिकारियों के हमले का खतरा था। परिणामस्वरूप, जॉन लॉरेंस के आदेश पर डिप्टी कमिश्नर **विलियम हेय** ने डब्बल बैरल गन वाले 20 जवान, 50 पुलिस और 100 देशी गार्ड्ज़ का प्रबन्ध किया।

शिमला तथा कसौली में कड़े रक्षा प्रबन्ध (Strong defensive measures in Shimla and Kasauli)—10 जून 1857 ई. को जालन्धर के क्रान्तिकारी सैनिकों ने पहाड़ों की ओर कूच किया। 600 के लगभग क्रान्तिकारी सैनिक नालागढ़ तक पहुँचे और उन्होंने स्थानीय क्रान्तिकारियों के साथ मिलकर भयानक विद्रोह किया। इनके शिमला की पहाड़ी रियासतों की ओर बढ़ने की आशंका से अंग्रेज़ और भी भयभीत हो गए। अतः सुरक्षा के कड़े प्रबन्ध किए गए। शिमला, स्पाटू, कसौली, डगशाई और कोटगढ़ को निरस्त्र कर दिया गया। कालका में 60-नेटिव इन्फैन्ट्री के एक दस्ते को निरस्त्र कर दिया गया। पब्लिक स्टोर और स्टेशन की सुरक्षा के लिए यूरोपीय सैनिकों की एक टुकड़ी तैनात कर दी गई।

कसौली में **कैप्टन ब्लैकाल** ने एक सैनिक दस्ता लेकर सभी संदिग्ध क्षेत्रों का दौरा किया और सभी क्रान्तिकारी अड्डों की छानबीन की। हर प्रकार के शस्त्र, विषैले पदार्थ आदि छीन लिए गए ताकि किसी भी प्रकार से विदेशियों को कोई खतरा न हो तथा विद्रोह की सम्भावना भी कम हो जाए। इस निरस्त्रीकरण से क्रान्तिकारियों की गतिविधियों को गहरा धक्का लगा। अंग्रेज़ों ने कालका, कसौली, डगशाई, स्पाटू और शिमला में सुरक्षा के कड़े प्रबन्ध किए तथा क्रान्तिकारियों की गतिविधियों पर कड़ी निगरानी रखी। सभी सार्वजनिक मार्गों पर चौकियां स्थापित कर के नाका गार्ड्ज़ तैनात किए गए। इससे क्रान्तिकारियों के आने-जाने पर प्रतिबन्ध लग गया और उन्हें बाहरी सहायता व सहयोग मिलना भी बन्द हो गया।

गुप्त संगठनों की गतिविधियाँ (Activities of Hidden Organisations)—हिमाचल की पहाड़ी रियासतों में 1857 की क्रान्ति के संचालन के लिए एक गुप्त संगठन भी बना लिया था। शिमला की पहाड़ी रियासतों में इस गुप्त संगठन के मुख्य नेता **रामप्रसाद वैरागी** थे। वे स्पाटू के परेड मैदान के पास एक मन्दिर में कई वर्षों से पुजारी थे। इस संगठन का मुख्य उद्देश्य जन क्रान्ति द्वारा अंग्रेज़ों को देश से निकालना था। अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए यह संगठन गुप्तचर भेज कर अथवा पत्रों द्वारा क्रान्ति की योजना और प्रेरणा का सन्देश सेना, जनसाधारण और देशी शासक वर्ग तक पहुँचाता था। संगठन के गुप्त केन्द्र प्रायः मन्दिर, मस्जिद व गुरुद्वारे थे। इनके सदस्य साधु-सन्तों और फकीरों के वेश में क्रान्ति को तेज़ करने में लगे थे। 12 जून, 1857 ई. को इस गुप्त संगठन के कुछ पत्र अम्बाला के कमिश्नर **जी.सी. बार्नस** के हाथ लगे और संगठन की गतिविधियों का भेद खुल गया। इसमें दो पत्र स्पाटू निवासी राम प्रसाद बैरागी द्वारा लिखे गए थे। एक पत्र उन्होंने नसीरी बटालियन के सूबेदार को सहारनपुर भेजा था, जिसमें नसीरी सेना को क्रान्ति के लिए प्रेरित किया गया था। दूसरा पत्र महाराजा पटियाला के वकील के नाम था। इस पत्र में पटियाला के राजा के गुरु से आग्रह किया गया था कि वह देश के क्रान्तिकारियों की मदद करें। पत्रों के पकड़े जाने से पहाड़ी क्षेत्र के मुख्य गुप्तचर नेता क्रान्तिकारी रामप्रसाद बैरागी पकड़े गए। उन्हें अम्बाला ले जाया गया और अम्बाला जेल में फांसी दे दी गई। संगठन के अन्य गुप्तचर भूमिगत हो गए। इसी दौरान दिल्ली, लाहौर, पटियाला और कांगड़ा में भी अनेक गुप्तचर साधु-सन्त और फकीरों के वेश में पकड़े गए। इस घटना के पश्चात् मन्दिर, मस्जिद और गुरुद्वारों पर विशेष निगरानी रखी जाने लगी और साधु सन्तों और फकीरों के आवागमन पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया।

शिमला में सुरक्षा उपायों का प्रभाव (Impact of defencive measures in Shimla)— शिमला में सुरक्षा के समुचित प्रबन्ध होते हुए भी शान्ति व्यवस्था स्थापित न हो सकी। देशी नागरिकों का कठोर व्यवहार, विद्रोही भावना का खुला प्रदर्शन, हिन्दू-मुस्लिम बगावत का डर, फिरंगियों के लिए भय और आतंक का कारण थे। 22 जुलाई, 1857 ई. को **कर्नल ए. बेकर** ने पंजाब के चीफ कमिश्नर **जॉन लॉरेंस** को शिमला की विस्फोटक स्थिति का ब्यौरा दिया और शिमला की सुरक्षा के लिए विशेष प्रबन्ध करने की सिफारिश की। परिणामस्वरूप 7 अगस्त, 1857 ई. को शिमला के डिप्टी कमिश्नर **विलियम हेय** ने सुरक्षा के अनेक प्रबन्ध किए। रियासत **कहलूर** (बिलासपुर) के 50 सशस्त्र जवान बालूगंज में तैनात किए गए। **सिरमौर** रियासत के 60 सिरमौरी सैनिक **कुंवर वीरसिंह** के नेतृत्व में बड़ा बाज़ार के निवास स्थान पर नियुक्त किये गए। **बाघल, जुब्बल, कोटी, क्योंथल** और **धामी** के शासकों ने 250 जवान शिमला में रखे ताकि

आपात्काल में उनकी सेवाएं प्राप्त की जा सके। इसके अतिरिक्त 120 टेन्ड वलटीयर कॉप्स यूरोपियन कैप्टन सथूयर के नेतृत्व में आकस्मिक खतरे की स्थिति से निबटने के लिये शिमला में तैयार था। इस सुरक्षा दल के अन्य अफसर कैप्टन **रौस, कैम्पबेल, जैनकिंज,** और **मैकेन्जी** थे। इसके इलावा विलियम हेय ने पुलिस फोर्स की संख्या भी 90 सिपाही कर दी थी जिसमें एक भी हिन्दुस्तानी नहीं था।

इस प्रकार शिमला की सुरक्षा के हर सम्भव उपाय किये गए और विदेशी नागरिकों को सुरक्षा का पूरा आश्वासन दिया गया। कुछ दिनों के बाद कानून और व्यवस्था पर काबू पाकर शान्ति स्थापित की गई। परिणामस्वरूप भगौड़े फिरंगी नागरिक शिमला वापिस लौट आए। वे अपने खुले छोड़े घरों और सामान को सुरक्षित पाकर हैरान थे, क्योंकि न कोई चोरी हुई, न डाका पड़ा और न ही लूट-पाट हुई। शिमला बैंक का 80,000 रुपये नकद भी सुरक्षित पाये गए।

सैनिक सहायता के अतिरिक्त कुछ देशी शासकों और धनी लोगों ने अंग्रेजी सरकार को आर्थिक सहायता भी प्रदान की। कई पड़ोसी रियासतों के राजाओं ने शिमला के पहाड़ी क्षेत्र में विद्रोह दबाने में अंग्रेजी सेना की सहायता की। पटियाला के महाराजा ने विद्रोह के आरम्भ से ही अंग्रेज़ों का साथ दिया और बहादुर शाह ज़फर के कहने पर भी क्रान्ति में भारतीयों की सहायता नहीं की। इस प्रकार अगस्त, 1857 ई. के आरम्भ में शिमला की पहाड़ी रियासतों में विद्रोह लगभग शान्त हो गया था।

सिरमौर में विप्लव (Riot in Sirmaur)–ब्रिटिश सेना के कमाण्डर-इन-चीफ **जनरल जॉर्ज एनसन** ने 11 मई, 1857 ई. को सिरमौर रियासत के नाहन नगर में तैनात सिरमौर बटालियन के गोरखा सैनिकों को तुरन्त ही अम्बाला की ओर कूच करने का आदेश दिया परन्तु असन्तुष्ट और उत्तेजित सैनिकों ने इस आदेश का पालन नहीं किया और अम्बाला की ओर बढ़ने से इन्कार कर दिया। गाय और सूअर की चर्बी लगे कारतूसों के प्रयोग से यहां के सैनिकों में असन्तोष फैला हुआ था। भयानक विद्रोह की सम्भावना बढ़ती गई। सिरमौर रियासत के शासक से भी विशेष सहायता की आशा नहीं की जा सकती थी, क्योंकि तत्कालीन राजा **शमशेर प्रकाश** केवल 11 वर्ष के थे। नाबालिग राजा की सहायता के लिए **कुंवर सुर्जन सिंह** और **वीर सिंह** को सहायक प्रशासक नियुक्त किया गया। इन दोनों प्रशासकों ने जन साधारण में फैले भारी असन्तोष को विद्रोह में बदलने से पहले ही शान्त कर दिया, इससे सिरमौर बटालियन की उत्तेजना भी कुछ कम हो गई। 22 मई, 1857 ई. को सुपरिंटेंडेंट शिमला हिल स्टेटस **मेजर जी. सी. बार्नस** ने कुंवर **सुर्जन सिंह** और **वीर सिंह** को सिरमौर में पहुँचे फिरंगी भगौड़े शरणार्थियों की सुरक्षा का प्रबन्ध करने का आदेश दिया। उस समय तक सिरमौर में विद्रोह का खतरा टल चुका था और सिरमौर बटालियन तथा सैपर्ज़ सैनिक सरकार के नियन्त्रण में थे।

28 मई, 1857 ई. को सिरमौर बटालियन ने विद्रोह त्याग दिया और सरकारी आदेश का पालन करते हुए दिल्ली की ओर कूच करना स्वीकार कर लिया। 2 जून, 1857 ई. को सिरमौर बटालियन बुलन्दशहर पहुँच गई। सिरमौर की रियासती सरकार विद्रोह को दबाने में सफल रही। 29 जुलाई, 1857 ई. के एक ज्ञापन के अनुसार सिरमौर दरबार ने विद्रोह के दौरान अंग्रेज़ों को 20,000 रुपये की आर्थिक सहायता भी प्रदान की। शिमला के डिप्टी कमिश्नर विलियम हेय के आदेश पर सिरमौर सरकार ने शिमला की सुरक्षा के लिए 60 सिरमौरी सैनिक भेजे। 7 अगस्त, 1857 ई. को कुंवर **वीर सिंह** के नेतृत्व में सिरमौरी सैनिक शिमला पहुंचे और शिमला के मुख्य बाजार में तैनात किए गए। हिमाचल के पर्वतीय क्षेत्र में विद्रोह शान्त हो जाने के पश्चात् 16 अगस्त, 1857 ई. को अंग्रेज़ सरकार ने सिरमौर के राजा **शमशेर प्रकाश** को सैनिक व आर्थिक सहायता प्रदान करने के उपलक्ष्य में ''सात तोपों की सलामी'' दे कर सम्मानित किया। कुंवर सुर्जन सिंह और **वीर सिंह** को प्रशस्ति पत्र तथा खिल्लत देकर सम्मानित किया गया।

कांगड़ा क्षेत्र में क्रान्ति (Revolt in Kangra region)-मेरठ और दिल्ली में 11-12 मई, 1857 ई. को हुए भयानक विद्रोह की गुप्त सूचना कांगड़ा पहुँची। 12 मई, 1857 ई. को टेलीग्राम द्वारा जालन्धर और अम्बाला से दिल्ली के विद्रोह का समाचार 'ट्रांस-सतलुज स्टेट्स' के सुपरिंटेंडेंट और कमिश्नर, **मेजर एडवर्ड जॉन लेक** को कांगड़ा में मिला। वहाँ के अंग्रेज़ अफसरों ने धर्मशाला, कांगड़ा और नूरपुर की सुरक्षा की गुप्त तैयारियां आरम्भ कर दीं। 14 मई, 1857 ई. को 'मेरठ-दिल्ली विद्रोह' की घटना का पूर्ण विवरण पत्रों द्वारा अंग्रेज सैनिक अफसरों और कांगड़ा के डिप्टी कमिश्नर,

मेजर रेयनैल्ड टेलर को धर्मशाला में प्राप्त हुआ। उसी दिन स्यालकोट के विद्रोह की खबर भी कांगड़ा में मिली। उस समय तक कांगड़ा के कस्बों में जनसाधारण को भी विद्रोह की खबर मिल चुकी थी। अतः समस्त पहाड़ी क्षेत्र में असन्तोष, आशंका, अशान्ति और उत्तेजना का माहौल बनने लगा। इससे अंग्रेज़ अधिकारी तथा यूरोपीय सैनिक भयभीत हो गए।

अंग्रेजी पुलिस का कांगड़ा किले पर कब्ज़ा -कांगड़ा की विस्फोटक स्थिति को देखते हुए ब्रिटिश सरकार ने अपनी सुरक्षा के लिए कांगड़ा किले को अपने अधिकार में लेना आवश्यक समझा। उस समय कांगड़ा का किला **मेजर** **हैरसन** की कमांड में 4-नेटिव इनफैन्ट्री देशी सेना के अधिकार में था। अन्य स्थानों पर देशी सेना के विद्रोही हो जाने से 4- नेटिव इन्फैन्ट्री पर भी शंका की जाने लगी, क्योंकि इससे पूर्व भी इस रैजीमेंट ने विद्रोह किया था। अतः अंग्रेज अफसर इस किले को वफादार सेना के कब्ज़े में लाना चाहते थे, क्योंकि कांगड़ा किले को फिल्लौर के बाद उत्तरी भारत का दूसरे नम्बर का प्रसिद्ध किला माना जाता था। इसलिए कांगड़ा के किले को अपने कब्ज़े में लाना अंग्रेज़ों के लिए बहुत आवश्यक था।

15 मई, 1857 ई. को कमिश्नर **एडवर्ड जॉन लेक** और डिप्टी कमिश्नर रेयनैल्ड टेलर के आदेशानुसार, धर्मशाला के पुलिस कमाण्डर, **कैप्टन यंग हसबैण्ड** अपनी पुलिस बटालियन के साथ कांगड़ा पहुँच गए। **कैप्टन यंग हसबैण्ड 'शेर दिल पुलिस बटालियन'** के कमाण्डर थे और इस बटालियन में पंजाब के विभिन्न जातियों के सिपाही थे। यह पुलिस कमांडर अपने 300 पंजाबी सिपाहियों के साथ सुबह 5 बजे किले की ओर बढ़ा और कुछ समय के बाद ही पुलिस ने कांगड़ा के किले पर अधिकार कर लिया। 14- नेटिव इन्फैन्ट्री की सैनिक टुकड़ी जो किले के बाहर तैनात थी, ने पुलिस कब्ज़े का विशेष विरोध नहीं किया। उसके पश्चात् डिप्टी कमिश्नर टेलर ने दुर्ग रक्षक सेना के लिए 6 महीने का राशन दुर्ग के गोदाम में भर दिया और अपना मुख्यालय धर्मशाला से बदल कर कांगड़ा ले आया।

उस समय दुर्ग के शस्त्रागार में एक 18-पॉऊडर तोप, तीन 9-पॉऊडर लोहा गन्ज और एक ब्रास 24-पॉऊडर हॉविटजर तोपखाना था। हॉविटजर तोप किले के बाहर थी। अवसर मिलते ही उसे अन्दर लाया गया और किले के सबसे ऊंचे बुर्ज पर चढ़ा दिया गया। इस प्रकार कांगड़ा के किले को अंग्रेज़ अधिकारियों ने आपात्काल में अपने लिए तथा अंग्रेज़ शरणार्थियों के लिए एक सुरक्षित शरण स्थल बना लिया। कांगड़ा किले की किलेबन्दी से पूर्व किले के बाहर तैनात 4-नेटिव इन्फैन्ट्री के कुछ क्रान्तिकारी सिपाहियों ने स्थानीय क्रान्तिकारियों के साथ मिल कर अंग्रेज अफसरों को मारने की योजना बनाई थी और विद्रोह की पूरी तैयारी कर ली थी लेकिन अचानक पुलिस बटालियन के किले पर कब्ज़ा कर लेने से योजना सफल न हो सकी।

धर्मशाला में विद्रोह के विरुद्ध सुरक्षा के उपाय (Measures taken against Revolt in Dharamshala)— विद्रोह के विस्फोट से पहले कांगड़ा ज़िला का मुख्यालय धर्मशाला में था। डिप्टी कमिश्नर **मेजर आर॰ टेलर** ने पुलिस बटालियन की सुरक्षा में कांगड़ा किले में जाकर शरण ले ली। पुलिस के धर्मशाला से हट जाने के कारण वहां सुरक्षा के लिहाज़ से नाजुक स्थिति पैदा हो गई। विद्रोह की खबर जैसे ही शहरों, गांवों और घाटियों से फैलती गई, इसी के साथ जनसाधारण में असन्तोष, आवेश और आन्दोलन की भावना बढ़ने लगी। सरकार का नियन्त्रण शासन पर से टूट चुका था और अराजकता फैल गई थी। लोग सरकार के आदेशों को मानने से इन्कार करने लगे और कानून का खुला उल्लंघन करने लगे। अंग्रेज़ों के साथ विरोध का व्यवहार होने लगा और अंग्रेज़ अफसरों को धमकियां दी जाने लगीं। रात को क्रान्तिकारी दल के लोग फिरंगियों के घरों, कचहरी, कोतवाली और बंगलों पर पथराव करते। जिससे भय और आतंक के कारण अंग्रेज अफ़सर तथा दूसरे फिरंगी और अधिक भयभीत हो गए।

धर्मशाला में रहने वाले फिरंगियों ने उच्च अधिकारियों को सुनिश्चित सुरक्षा के लिए ज्ञापन भेजे। परिणामस्वरूप धर्मशाला की सुरक्षा के लिए डिप्टी कमिश्नर ने कचहरी, कोतवाली और निजी बंगलों के बाहर मजबूत फाटक लगाव दिए। यह सुरक्षा का कार्य लैफ्टिनैंट हॉल और आर॰ सांडर्ज के निरीक्षण में हुआ। कैप्टन यंग हसबैण्ड के कहने पर कोतवाली और कचहरी की सुरक्षा के लिए नए बुर्ज बनाए गए और ऊंची दीवारें खड़ी कर दी गई।

पंजाब के ज्यूडीशियल कमिश्नर **रॉबर्ट मांटगोमरी** के आदेश पर जिले में अनिवार्य सैनिक भर्ती की गई। प्रत्येक ब्रिटिश आवास पर चार-चार गार्ड्ज़ तैनात किए गए और तीन नई पुलिस चौकियां स्थापित की गईं। 19 मई, 1857 ई. को ऊना, होशियारपुर में स्थानीय क्रान्तिकारियों ने देशी पुलिस के साथ मिलकर भयानक विद्रोह किया और सरकारी

सम्पत्ति नष्ट कर दी। इस विद्रोह को दबाने के लिए 64 बरकुनादज़ गार्ड्ज़ धर्मशाला से ऊना भेज दिए। धर्मशाला में कड़े सुरक्षा प्रबन्धों के कारण क्रान्तिकारियों की खुली बगावत पर रोक लग गई, जिससे वद्रोह की आशंका कम हो गई।

सुजानपुर के राजा द्वारा विद्रोह की सम्भावना (Possibility of Revolt by the Raja of Sujanpur) सुजानपुर टीहरा में राजा **प्रताप** चन्द गुप्त रूप से अपने किले में क्रान्ति की तैयारियों में लगा था। उनके पास टीहरा में एक मज़बूत किला था जिसकी सुरक्षा आसानी से की जा सकती थी। कटोच वंश के इस क्रान्तिकारी राजा ने अकेले ही अंग्रेजों से लोहा लेने की ठान रखी थी। उसने अपने इलाके में अपने विश्वास पात्र सहयोगियों को जनसाधारण में क्रान्ति के लिए जवानों की भर्ती की। वह स्वयं पड़ोसी रियासतों के विस्थापित शासकों से सहयोग प्राप्त करने के लिए मन्त्रणा करता रहा। इस सशस्त्र क्रान्ति की योजना में उनके मुख्य सहयोगी **टीहरा के** क्रान्तिकारी थानेदार थे। वह प्रताप चन्द के साथ कन्धे से कन्धा मिला कर क्रान्ति की योजना को सफल बनाने के लिए भरसक प्रयत्न करता रहा।

उन्हीं दिनों अंग्रेज सरकार ने राजा प्रताप चन्द से अन्य स्थानों पर विद्रोह को दबाने के लिए सैनिक सहायता माँगी। प्रताप चन्द ने डिप्टी कमिश्नर **आर० टेलर** के आदेश को न मानते हुए सैनिक सहायता नहीं दी। इससे अंग्रेज़ों को प्रताप चन्द की क्रान्तिकारी योजना की जानकारी मिल गई। डिप्टी कमिश्नर कांगड़ा ने गुप्तचर भेज कर प्रताप चन्द की गतिविधियों पर कड़ी निगरानी रखी। **कमिश्नर** जॉन लेक के आदेश पर टीहरा के क्रान्तिकारी थानेदार को शाहपुर भेज दिया गया और उसके स्थान पर एक वफादार मुसलमान थानेदार नियुक्त किया गया। इस नए थानेदार ने राजा प्रताप चन्द की क्रान्तिकारी योजना की पूरी सूचना अंग्रेज़ अफसरों तक पहुँचाई। परिणामस्वरूप प्रताप चन्द को उसके महल में नज़रबन्द कर दिया गया।

कांगड़ा के देशभक्तों द्वारा क्रान्ति (Revolt by the Patriotics of Kangra) —**जसवां, गुलेर, हरिपुर, नादौन, कांगड़ा, धर्मशाला, नूरपुर, पठानकोट** और **ऊना** में हज़ारों लोग स्वाधीनता संग्राम की इस प्रथम लड़ाई में कूदने के लिए तैयार थे। शिमला, अम्बाला, लाहौर और दिल्ली से क्रान्तिकारी संगठनों और देशी सेना के अनेक गुप्तचर, साधु, सन्त, फकीर, भिखारी आदि के रूप में यहां आकर देशी सेना, शासकों और जनसाधारण तक क्रान्ति का सन्देश व इससे सम्बन्धित योजनाओं का हवाला देकर जागृति पैदा करते रहे। इसी बीच पटियाला, जालन्धर, मुलतान और लाहौर में इन फकीर गुप्तचरों को पकड़ लिया गया और जेलों में बन्द कर दिया गया। डाक द्वारा भेजे गए क्रान्ति के सन्देश वाले पत्र भी पकड़े गए। फलस्वरूप, **23 मई, 1857 ई.** से पंजाब के ज्यूडीशियल कमिश्नर, **रॉबर्ट मांटगोमरी** के आदेशानुसार पूरे कांगड़ा क्षेत्र में साधुओं, फकीरों, भिखारियों और पर्यटकों का आना-जाना बन्द कर दिया गया। नदी के नौ-घाटों, पहाड़ी दर्रों और मुख्य मार्गों पर चौकियां स्थापित कर नाका गार्ड्ज़ नियुक्त किए गए। मन्दिरों, मस्जिदों और गुरुद्वारों की तलाशी ली गई तथा इन पर कड़ी निगरानी रखी गई। इस दौर में सैंकड़ों साधु-सन्तों, पुजारियों, फकीरों, पर्यटकों और तीर्थयात्रियों को अनेक यातनाएं सहन करनी पड़ीं। स्थानीय लोगों की डाक की जांच होने लगी। अंग्रेज़ी सरकार के इन कड़े सुरक्षा उपायों के कारण क्रान्तिकारियों की गतिविधियों को गहरा धक्का लगा।

नालागढ़ में बगावत (Revolt in Nalagarh)-शिमला हिल्ज़ की अन्य रियासतों की भान्ति नालागढ़ (हिन्दूर) रियासत में भी व्यापक असन्तोष फैला हुआ था। वहां के प्रशासक **अमर सिंह** स्थानीय क्रान्तिकारियों की गतिविधियों पर कड़ी नज़र रख रहे थे। नालागढ़ के मलौण किले में अंग्रेज़ों के हथियार और बारूद का भण्डार था। 16 मई, 1857 ई. को कैप्टन **डी. ब्रिगज़** ने अपना एक असिस्टैंट मलौण किले के शस्त्रागार से हथियार और बारूद आदि लाने के लिए भेजा। उसी समय शिमला के डिप्टी कमिश्नर **विलियम हेय** ने भी एक संदेश वाहक भेज कर नालागढ़ के प्रशासक से हथियार और बारूद की मांग की। उन्हीं दिनों **जतोग, कसौली** और **शिमला** के भयानक विद्रोह की खबर नालागढ़ में भी फैल गई और क्रान्तिकारियों को राजा द्वारा अंग्रेज़ों को हथियार और बारूद आदि भेजने की बात का भी पता चल गया। जब हथियार और बारूद लेकर स्थानीय सैनिक गार्द का दस्ता मलौण किले से बाहर निकला तो मलौण के क्रान्तिकारियों ने वहाँ के ज़मींदारों के साथ मिलकर उन पर हमला कर दिया और मुठभेड़ में हथियार और बारूद छीन लिये। इस प्रकार हथियार और बारूद शिमला न पहुंच सके। डिप्टी कमिश्नर शिमला ने बाघल के राणा के भाई मियां जय सिंह को मलौण भेज कर क्रान्तिकारियों को शान्त करने का प्रयास किया परन्तु उनकी गतिविधियों पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा।

नालागढ़ में विद्रोह को दबाना (Depression of Revolt in Nalagarh)-26 मई, 1857 ई. को पंजाब के चीफ कमिश्नर के सैक्रेटरी **एच. आर. जेम्स** ने भारत की अंग्रेज़ी सरकार के सचिव को नालागढ़ ने विस्फोटक स्थिति के विषय में चिन्ता प्रकट की और विद्रोह को दबाने के लिए समुचित उपाय करने के लिए कहा। परिणामस्वरूप **'ट्रॉंस-सतलुज स्टेट्स'** के कमिश्नर एडवर्ड जॉन लेक ने मण्डी रियासत से कुछ पैदल सैनिक मंगवा कर नालागढ़ की सुरक्षा के लिए भेज दिए। 10 जून, 1857 ई. को जालन्धर के क्रान्तिकारी सैनिक सतलुज नदी को पार कर पहाड़ों की ओर बढ़ते हुए बद्दी के स्थान तक पहुँचे। 600 के लगभग इन देशभक्त सैनिकों ने स्थानीय क्रान्तिकारी दल के साथ मिल कर नालागढ़ पर धावा बोल दिया और वहां के कोषागार को लूट लिया। उन्होंने मलौण के तहसीलदार को धमकाया और रियासत के ब्रिटिश एजेन्ट के निवास को नष्ट कर दिया। उसके पश्चात् ये सैनिक पहाड़ों को छोड़ कर सिसवा के पास होते हुए दिल्ली की ओर बढ़ गए।

नालागढ़ के विद्रोह को दबाकर शांति व्यवस्था कायम करने के लिए शिमला के डिप्टी कमिश्नर **विलियम हेय** ने **कैप्टन ब्रिगज** को नालागढ़ भेजा। इस कार्य के लिए **बाघल** के **राणा कृष्णा सिंह** ने 150 बन्दूकधारी जवान अंग्रेज़ों को प्रदान किए। बिलासपुर (कहलूर) के राजा **हीराचन्द** ने 250 शस्त्रधारी सैनिकों को अंग्रेज़ों की सहायता के लिए नालागढ़ भेजा। नालागढ़ की रियासती सरकार ने अपने 100 सैनिक कैप्टन ब्रिगज के अधिकार में रख दिए। कैप्टन ब्रिगज ने नालागढ़ के प्लासी किले में एक सैनिक दस्ता किले की रक्षा के लिए तैनात कर दिया और अन्य सैनिक दस्तों को रियासत के मुख्य मार्गों और नौ घाटों पर तैनात किया, ताकि क्रान्तिकारी सैनिक सतलुज पार कर रियासत में प्रवेश न कर सकें। 20 जून, 1857 ई. तक नालागढ़ के विद्रोह की विस्फोटक स्थिति पर काबू पा लिया गया। तत्पश्चात् कैप्टन ब्रिगज उसी दिन शिमला की ओर रवाना हुए ताकि शिमला में यूरोपीय नागरिकों की सुरक्षा का प्रबन्ध किया जा सके।

कांगड़ा क्षेत्र में विद्रोह दबाने के प्रयास (Efforts to supress the revolt in Kangra Area) — डिप्टी कमिश्नर टेलर ने 'शेरदिल पुलिस बटालियन' के 100 जवानों को बलपूर्वक साथ लेकर **नूरपुर** विद्रोह को दबाने के लिए कूच किया। यहां अंग्रेज़ों को स्यालकोट के 100 क्रान्तिकारी सैनिकों के पहुँचने और देशी सैनिक दस्ते तथा स्थानीय क्रान्तिकारियों के साथ मिल कर भयानक विद्रोह करने की आशंका थी परन्तु डिप्टी कमिश्नर टेलर के पहुँचने से पहले ही 4-नेटिव इन्फैन्ट्री के स्थानीय कमांडर **मेजर बिल्की** ने पूर्व सूचित आदेशानुसार देशी सैनिकों को हथियार छोड़ने के लिए सहमत कर लिया था। इस प्रकार अंग्रेज़ों ने नूरपुर और कांगड़ा के किलों को पूर्ण रूप से अपने अधिकार में ले लिया।

कांगड़ा और नूरपुर में स्यालकोट तथा जेहलम के क्रान्तिकारी सैनिकों के प्रवेश की बहुत अधिक आशंका थी। इसके अतिरिक्त **पेशावर, मियां मीर, जालन्धर, अम्बाला** और **मुलतान** आदि स्थानों के विद्रोही सैनिक भी **कांगड़ा** में प्रवेश कर के विद्रोह करा सकते थे। अंग्रेज़ों ने इन संभावनाओं से भयभीत होकर क्रान्तिकारियों के कांगड़ा में प्रवेश के सभी रास्ते बन्द कर दिए। रावी, ब्यास और सतलुज नदी के आर-पार जाने के रास्तों पर नाका गाड्र्ज़ नियुक्त किए गये। बशौलीघाट, चक्की, शाहपुर, ज्वाली, मीरथल, इन्दौरा, त्रिलोकनाथ, तलवाड़ा, डमटाल, श्रीनगर, कोटगढ़, चम्बा, राईली, राई, ददाह, ढुक, देहरा, नादौन, टीहरा, लम्बागांव, डमटाल, बस्ती-घाट, बछरेटू, पत्ती, कुटलैहड़, वन अतारीयां और ठोकी में नौकाएं नष्ट कर दीं ताकि आर-पार न आ जा सकें। नौ-घाटों पर नौका गाड्र्ज़ तैनात किये गये। पहाड़ी दर्रों, जंगली मार्गों और अन्य सभी सम्भावित प्रवेश मार्गों पर भी नाकाबन्दी कर दी और नाका गाड्र्ज़ तैनात कर दिए।

नाकाबन्दी की इस कार्यवाही के अन्तर्गत कांगड़ा, नूरपुर, बिलासपुर, कुल्लू, चम्बा और होशियारपुर-ऊना क्षेत्र में 29 नाका चौकियां स्थापित की गईं और सशस्त्र गाड्र्ज़ तैनात किए गए। प्रत्येक चौकी पर प्रायः एक दफादार और सात गाईज़ की नाका पार्टी तैनात रहती थी। इस कार्य के लिए नई भर्ती द्वारा एक देशी कमांडिंग अफ़सर, 5 जमादार, 18 दफादार, 10 घुड़सवार, और लगभग 200 गाड्र्ज़ नियुक्त किए गए। इसके अतिरिक्त चम्बा के राजा **श्री सिंह** ने अंग्रेज़ों की मांग पर 300 जवान रावी नदी के नौ-घाटों की सुरक्षा के लिए प्रदान किए। नूरपुर और सिब्बा के राजाओं ने 50-50 जवान ब्रिटिश सरकार की मदद के लिए भेजे।

मीयांमीर में विद्रोह (Revolt in Mianmir) — **30 जुलाई, 1857 ई.** को मीयांमीर में 26-नेटिव इन्फैन्ट्री ने भयानक विद्रोह कर दिया और क्रान्तिकारी सेना के कुछ जवान कांगड़ा की ओर चल पड़े। कुछ क्रान्तिकारी सैनिकों ने जंगलों का रास्ता अपनाया और कुछ नदी घाटों पर पहुँचे। 26-नेटिव इन्फैन्ट्री के कुछ जवान **मीरथल** घाट तक पहुँचे।

वहां इन क्रान्तिकारी सैनिकों की घाट नाका पार्टी के गाइर्ज से मुठभेड़ हुई। थके-मांदे क्रान्तिकारियों ने रास्ता बदला तो दो क्रान्तिकारी जवानों को नाका गार्डों ने पकड़ लिया। उन्हीं दिनों स्यालकोट, मीयांमीर, लाहौर, जेहलम, जालन्धर और मुलतान के सैनिक क्रान्तिकारी सैनिकों की कांगड़ा क्षेत्र के नौघाटों, नाका चौकियों और जोत पासों पर नाका से हिंसात्मक मुठभेड़ें हुई। इन मुठभेड़ों में अनेक क्रान्तिकारी जवान कांगड़ा क्षेत्र में लड़ते हुए शहीद हो गए और अनेक पकड़े गए।

कांगड़ा क्षेत्र में विद्रोह (Revolt in Kangra Area)— कांगड़ा क्षेत्र की सीमा की पूर्ण नाकाबन्दी होते हुए भी कुछ क्रान्तिकारी सैनिकों ने अनेक घाटों, सड़कों और घने जंगलों से होते हुए प्रवेश किया। इन्होंने स्थानीय क्रान्तिकारी और देशी सेना के साथ मिल कर विद्रोह करने और अंग्रेजों को देश से निकालने के भरसक प्रयास किए। क्रान्तिकारियों ने **कांगड़ा, नूरपुर, धर्मशाला** और **हरिपुर** में विद्रोह किया। नूरपुर में स्थानीय क्रान्तिकारी, उत्तेजित जनता और सैकड़ों बाहर से आए सैनिक क्रान्तिकारियों ने भयानक विद्रोह किया। अंग्रेजी सेना से कड़ा संघर्ष हुआ। इस संघर्ष में स्यालकोट की 9-लाई कैवेलीरी क्रान्तिकारी सेना के कमांडर ब्रिगेडियर रमज़ान पकड़े गए और उन्हें नूरपुर में फांसी दे दी गई। 46-नेटिव इन्फैन्ट्री के क्रान्तिकारी हवलदार **गुगादीन** ब्रिगेडियर और 5 अन्य क्रान्तिकारियों को फांसी के फंदे पर लटका दिया गया। इन फांसी की खबरों को सुनकर सारे कांगड़ा क्षेत्र में फिर से जनता में उत्तेजना फैल गई तथा बदले की भावना से विद्रोह की आशंका और बढ़ गई। अंग्रेज़ों ने डर के मारे 10 अन्य क्रान्तिकारियों को प्राणदण्ड देने से पहले जालन्धर भेज दिया और 20 क्रान्तिकारी सैनिकों को फांसी की सजा देना स्थगित कर दिया ताकि देशी सेना और पुलिस विद्रोह न हो जाए। जिन्हें अम्बाला, जालन्धर, पठानकोट और अमृतसर की जेलों में बन्द कर दिया गया।

कांगड़ा क्षेत्र में विद्रोह की असफलता (Failure of Revolt in Kangra Area)— 10 अगस्त, 1857 ई. तक कांगड़ा, नूरपुर, सुजानपुर टीहरा, धर्मशाला, जसवां, गुलेर, ऊना, पठानकोट, कुल्लू और हरिपुर में भयानक विद्रोह की ज्वाला शान्त हो चुकी थी। कांगड़ा जिले के समस्त पहाड़ी क्षेत्र में अंग्रेज़ों ने विद्रोह को शान्त करने में सफलता प्राप्त की और फिर से अपना शासन स्थापित कर लिया। 11 अगस्त, 1857 ई. को पंजाब के चीफ कमिश्नर, **जॉन लॉरेंस** ने कांगड़ा क्षेत्र का दौरा किया। इस अवसर पर उन्होंने सैनिकों और पुलिस जवानों में शेष बची विद्रोही भावना को भी शान्त करने में सफलता प्राप्त कर ली।

कुल्लू-लाहौल में बगावत (Revolution in Kullu and Lahaul)- हिमाचल के कुल्लू और लाहौल स्पीति में भी 1857 ई. के प्रथम स्वाधीनता संग्राम में स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए भारी जन-संघर्ष हुआ। इस सीमान्त क्षेत्र में सीधे-सादे लोगों ने आज़ादी की भावना से आन्दोलित होकर अंग्रेज़ों की शक्ति को ललकरा और स्वाधीनता संग्राम में कूद पड़े।

मेरठ, दिल्ली, अम्बाला, जालन्धर, शिमला और कांगड़ा के भयानक विद्रोह की सूचना पाकर कुल्लू क्षेत्र के उत्तेजित युवकों ने जनक्रान्ति की योजना बनाई और अंग्रेज़ों को मार-भगाने का निर्णय लिया। इस जनक्रान्ति की योजना का नेतृत्व स्थानीय युवराज **प्रताप सिंह** ने किया। वह कुल्लू के राजा **किशन सिंह** के सुपुत्र थे और 1846 ई. में सिक्खों और अंग्रेज़ों के बीच **मुदकी आलीवाल** के क्षेत्र में हुई लड़ाई में अंग्रेज़ों के विरुद्ध लड़ते हुए गम्भीर रूप से घायल हो गये थे। अंग्रेज़ों ने समझा था कि प्रताप सिंह मारा गया, लेकिन वह घायल अवस्था में ही सिराज पहुँचा और कुछ समय बाद फिर स्वस्थ हो गया। उन्होंने 16 मई, 1857 ई. से सारे **सिराज** क्षेत्र का दौरा करके जनसाधारण में आज़ादी की भावना जागृत की। उन्होंने नौजवानों को अंग्रेज़ों के विरुद्ध हथियार उठाने के लिये प्रेरित किया। इस जन-आन्दोलन में प्रताप सिंह का मुख्य सलाहकार व सहयोगी उनका साला **मीयां धीरसिंह** था जो बैजनाथ, कांगड़ा का निवासी था। इन दोनों ने कुल्लू सिराज के गांवों के मुखिया नेगी, कारदार, लम्बरदार और ज़मींदारों का सक्रिय सहयोग और समर्थन प्राप्त किया। सशस्त्र क्रान्ति की योजना के लिये प्रतापसिंह ने विभिन्न गांवों से अनेक युवकों को अपने क्रान्ति दल में शामिल किया। उन्होंने भारी मात्रा में हथियार, बारूद, सीसा, छर्रा, बन्दूकें, गंडासे, तोड़दार बन्दूकें, जम्बूरे और अन्य अनिवार्य सामग्री तथा शस्त्र इकट्ठे किए। इस प्रकार जन क्रान्ति की पूरी तैयारी होने लग गई। इसी बीच 28 मई, 1857 ई. के लगभग **प्रताप सिंह, वीर सिंह** और उनके सहयोगी क्रान्तिकारियों की विद्रोही गतिविधियों के बारे में कुल्लू और लाहौल-स्पीति के सहायक कमिश्नर मेजर **विलियम सी. हेय** को कुछ भनक लगी। उसने प्रताप सिंह को कड़ी सज़ा देने की चेतावनी दी और देश से बाहर निकालने की धमकी भी दी। उसके पश्चात् मेजर हेय ने प्रताप सिंह और उसके सहयोगी क्रान्तिकारियों को

गतिविधियों पर कड़ी नज़र रखी परन्तु क्रान्तिकारियों ने गुप्त रूप से क्रान्ति की तैयारी जारी रखी और गुप्तचरों के माध्यम से कुल्लू, सिराज, बीड़ भंगाहल, लाहौल और स्पीति तक के ग्रामीण मुखियों के साथ सम्पर्क स्थापित किया। स्थान-स्थान पर नियुक्त अंग्रेज अफ़सरों और कर्मचारियों को मारने की योजना बनाई गई। एक योजना के अनुसार **केलांग, लाहौल** में स्थापित मोरेवियन चर्च मिशन के पादरियों को समाप्त करने की ज़िम्मेवारी केलांग के स्थानीय क्रान्तिकारी दल को सौंपी गई। गुप्तचरों के हाथ पत्र भेज कर क्रान्ति की योजना का विवरण सारे कुल्लू, लाहौल स्पीति और बीड़-भंगाहल के मुखियों तक पहुँचाया गया।

दुर्भाग्यवश, प्रताप सिंह का एक क्रान्तिकारी गुप्तचर पकड़ा गया और उसके पास से क्रान्ति की योजना के कुछ पत्र अंग्रेज अधिकारियों के हाथ लग गए। इससे जनक्रान्ति की सारी योजना का ब्रिटिश सरकार को पता चल गया। जनक्रान्ति के नेता युवराज प्रताप सिंह को जब अपने गुप्तचर पकड़े जाने की खबर मिली तो उन्होंने अपने सहयोगी वीर सिंह के साथ जल्दी-जल्दी में आस-पास के साथी क्रान्तिकारियों को सिराज क्षेत्र में इकट्ठा करके अंग्रेज़ों के विरुद्ध विद्रोह की घोषणा कर दी। समय की कमी और गुप्तचरों के भेद खुल जाने के कारण इस अचानक विद्रोह के निर्णय की सूचना कुल्लू, लाहौल-स्पीति, बीड़ भंगाहल आदि क्षेत्रों के क्रान्तिकारी दलों को समय पर न मिल सकी। फिर भी प्रताप सिंह और वीर सिंह ने अपने कुछ सहयोगी क्रान्तिकारियों के साथ हथियार उठा लिए और अंग्रेजों को ललकार कर स्वाधीनता संग्राम में कूद पड़े। सारे सिराज क्षेत्र में भयानक विद्रोह हुआ। प्रताप सिंह और उसके क्रान्तिकारी सहयोगी पहले सिराज से कुल्लू की ओर बढ़े। दूसरे दिन वे बंजार नामक स्थान पर पहुँचे, वहां अंग्रेज सरकार का सैन्य दल और शस्त्रधारी गार्द पहले से तैनात थी। सरकारी सेना के साथ बंजार में क्रान्तिकारियों का कड़ा संघर्ष हुआ। सहायक कमिश्नर, मेजर विलियम हेय ने कुल्लू से एक अतिरिक्त पुलिस फोर्स दस्ता बंजार भेजा। क्रान्तिकारियों को सरकारी फौज का सामना करना पड़ा और वे अंग्रेजी सेना को खदेड़ने में सफल न हो सके। अन्त में घातक मुठभेड़ के बाद प्रताप सिंह, वीर सिंह और उनके सहयोगी पकड़ लिए गए। योजनाबद्ध जनक्रान्ति का स्वप्न पूरा नहीं हो सका।

जन क्रान्ति के नेता प्रताप सिंह, वीर सिंह और उनके सक्रिय क्रान्तिकारी साथी **सरदूल, कांशी, थुलाराम, मानदास, सूरत राम, देवीदत्त** और अन्य 12 क्रान्तिकारियों को **'भागसू जेल'** धर्मशाला में बन्द कर दिया गया। अंग्रेज़ी सरकार का तख्ता पलटने और राजद्रोह के अभियोग में प्रताप सिंह और वीर सिंह को **3 अगस्त, 1857 ई.** को फांसी के फंदे पर लटका दिया गया। 7 क्रान्तिकारियों को 3 वर्ष से 14 वर्ष तक की कड़ी कैद की सजा मिली। शेष 12 क्रान्तिकारियों को फांसी के फंदे का दृश्य दिखाकर एक वर्ष की ज़मानत पर छोड़ दिया गया। उसके पश्चात् ब्रिटिश सरकार ने प्रताप सिंह के महल को नष्ट कर दिया और उसकी विधवा पत्नी रानी रणपतू की जागीर और पैंशन जब्त कर ली। रानी रणपतू और उसके पुत्र को देश से निकाल दिया गया।

प्रताप सिंह के क्रान्तिकारी आन्दोलन के असफल होने और क्रान्तिकारियों को फांसी की सजा हो जाने से कुल्लू, सिराज और लाहौल क्षेत्र में भारी असन्तोष फैल गया और जनता में उत्तेजना की लहर दौड़ गई। जन साधारण के विद्रोही हो जाने के डर से अंग्रेज़ अफ़सरों ने सुरक्षा के कड़े उपाय किए। पंजाब के चीफ कमिश्नर, **जॉन लारेंस** के आदेश पर कुल्लू एवं लाहौल-स्पीति के सहायक कमिश्नर मेजर विलियम हेय ने कुल्लू क्षेत्र में 14 पुलिस चौकियां स्थापित कीं और 50 नए सैनिक गाइर्ज़ और 60 पुलिस गाईज़ की भर्ती की गई। स्थानीय गाईज़ की संख्या 80 से घटा कर 60 कर दी गई ताकि विद्रोह की आशंका कम हो जाए और नियन्त्रण पाना आसान हो सके। सभी प्रकार के मार्गों पर नाका गाईज़ तैनात कर दिए गए।

14 अगस्त, 1857 ई. को पुलिस यातना के कारण कुल्लू के तीन क्रान्तिकारी कैदी **भागसू जेल**, धर्मशाला में शहीद हो गए और इसी दौरान प्रताप सिंह के मुख्य गुप्तचर क्रान्तिकारी **आशुम** भी पकड़े गए और जेल में बन्द कर दिए गए। इस प्रकार विद्रोह की उत्तेजना धीरे-धीरे शान्त हो गई।

चम्बा में उपद्रव (Riots in Chamba)-1857 की क्रान्ति में चम्बा रियासत के नागरिकों ने सक्रिय भाग नहीं लिया। जनसाधारण में व्यापक असन्तोष और उत्तेजना के होते हुए भी विद्रोही भावना जागृत नहीं हुई। तत्कालीन राजा **श्री सिंह** ब्रिटिश सरकार के वफादार बने रहे और आरम्भ से ही जनसाधारण की उत्तेजना को शान्त करने में सफल रहे। रियासती सरकार ने ब्रिटिश राजनीतिक एजेन्ट और चीफ कमिश्नर पंजाब, **जॉन लारेंस** के आदेश पर 16 मई, 1857 ई.

से रियासत के अन्दर कड़ी सुरक्षा के उपाय किए और सभी मुख्य मार्गों पर पुलिस गार्द का पहरा लगा दिया ताकि शहर से आने वाले क्रान्तिकारियों को रोका जा सके। 8-10 जून, 1857 ई. को जब **जालन्धर** में 36-नेटिव इन्फैन्ट्री और 61-नेटिव इन्फैन्ट्री के देशी सैनिकों ने भयानक विद्रोह किया तो डलहौज़ी में बसे अंग्रेज़ आतंकित हो गए। कुछ महिलाओं और बच्चों ने आकर चम्बा के राजा की शरण ली और राजा ने उनके ठहरने का प्रबन्ध करके उन्हें पूरी-पूरी सुरक्षा प्रदान की। डलहौजी की सुरक्षा के लिए **मीयां अतर सिंह** के नेतृत्व में एक सैनिक टुकड़ी भेजी। रियासती सरकार के आदेश पर इस सैनिक दस्ते ने डलहौज़ी में रह रहे अंग्रेज़ों और चम्बा में प्रवेश को रोकने के सभी सम्भव उपाय किए।

9 जुलाई, 1857 ई. को **जालन्धर** में 36-नेटिव इन्फैन्ट्री और 9-कैवेलरी घुड़सवार सेना ने भयानक विद्रोह किया। इन क्रान्तिकारी सैनिकों के चम्बा की ओर बढ़ने की आशंका से रियासती सरकार ने रावी नदी के नौ-घाटों की नावों को नष्ट कर दिया ताकि क्रान्तिकारी सैनिक चम्बा में आकर विद्रोह को बढ़ावा नहीं दे सकें। **बशौली घाट** पर नाका गाड्र्ज़ तैनात किए गए। रियासत के सभी मार्गों की नाकाबन्दी कर दी गई। इसी दौरान राजा चम्बा ने कांगड़ा के डिप्टी कमिश्नर, मेजर रेनैल्ड टेलर की मांग पर अपनी सेना के 300 जवान रावी, सतलुज और ब्यास नदी के नौ घाटों की सुरक्षा के लिए प्रदान किए। चम्बा रियासत में कड़ी सुरक्षा और मुख्य मार्गों की नाकाबन्दी के बावजूद **स्यालकोट, जेहलम** और **जालन्धर** के कुछ क्रान्तिकारी सैनिक चम्बा में प्रवेश करने में सफल रहे और स्थानीय क्रान्तिकारियों के साथ मिलकर विद्रोह करने की कोशिश की परन्तु रियासती सेना ने स्थिति पर काबू पा लिया और जगह-जगह पर कुल 60 क्रान्तिकारियों को पकड़ा गया। इनमें से 28-30 स्थानीय क्रान्तिकारियों को मार-पीट के पश्चात् छोड़ दिया गया, जबकि अन्य 30 को जेल में बन्द कर दिया गया। स्यालकोट, जेहलम और जालन्धर से आए देशी सैनिक क्रान्तिकारियों को चम्बा सरकार ने पकड़ कर अंग्रेज़ों के हवाले कर दिया।

मण्डी-सुकेत में उपद्रव (Turblance in Mandi-Suket)- 1857 ई. में मण्डी रियासत के राजा **विजय सेन** केवल दस वर्ष के थे। अंग्रेज़ों ने वज़ीर **गोसाऊं** को मण्डी स्टेट का रीजेन्ट व प्रतिशासक बनाया। वजीर गौसाऊं के शासन में स्थानीय क्रान्तिकारियों को शासक वर्ग, ज़मींदार और पुलिस का सहयोग प्राप्त नहीं हुआ, बल्कि रियासती प्रशासन ने क्रान्तिकारियों के सभी इरादे भी निष्फल कर दिए। रियासत के बाहर से भी किसी प्रकार का सहयोग अथवा समर्थन आन्दोलनकारियों को प्राप्त नहीं हुआ। बाहर से विद्रोह की घटनाओं की सूचना पाकर भी रियासत के अन्दर उत्तेजित जनसाधारण केवल असन्तोष, आवेश और विद्रोह की अग्नि में ही झुलसता रहा। अंग्रेज़ों के वफादार वजीर गौसाऊं ने विद्रोह को भड़कने से पहले ही दबा दिया।

मण्डी रियासत के बज़ीर गोसाऊं ने अंग्रेज़ अफ़सरों की मांग पर 125 बन्दूकधारी जवान प्रदान किए, जो ऊना- होशियारपुर में विद्रोह को दबाने के लिए भेजे गए। 28 मई, 1857 ई. को मण्डी की रियासती सरकार ने 60 पैदल सैनिक ट्रांस-सतलुज स्टेट्स के कमिश्नर **एडवर्ड जॉन लेक** के आदेश पर नालागढ़ की सुरक्षा के लिए प्रदान किए। इसके अतिरिक्त वज़ीर गोसाऊं ने 50 जवान जालन्धर के विद्रोह को दबाने के लिए ब्रिटिश सरकार को प्रदान किए। युद्ध सम्बन्धी आर्थिक सहायता के रूप में रियासती सरकार ने 1,25,000 रुपये ब्रिटिश सरकार को भेंट किए। वजीर गोसाऊं ने स्वयं 15000 रुपये अपने व्यक्तिगत खाते से प्रदान किए। वजीर गोसाऊं ने मण्डी रियासत के आन्दोलनकारियों को विद्रोह का अवसर ही नहीं दिया।

सुकेत रियासत में उन दिनों गृह युद्ध चल रहा था। **राजा उग्रसेन, टिक्का रूद्रसेन** और **बज़ीर नरोत्तम** के परस्पर झगड़े के कारण रियासत में आन्दोलनकारियों को विशेष सहयोग प्राप्त नहीं हुआ। न ही रियासत के बाहर से किसी प्रकार का प्रोत्साहन प्राप्त हुआ। अत: सुकेत रियासत की जनता का प्रथम स्वाधीनता संग्राम में उल्लेखनीय योगदान नहीं रहा।

जालन्धर के सैनिकों का विद्रोह (Revolt by the Soldiers of Jalandhar)— 7-8 जून, 1857 ई. को जालन्धर में '36-नेटिव इन्फैन्ट्री' और '61-नेटिव इन्फैन्ट्री' ने भयानक विद्रोह किया। इस विद्रोह के कारण कांगड़ा में डिप्टी कमिश्नर, **मेजर आर० टेलर** ने सुरक्षा के और कड़े प्रबन्ध किए। 12 जून, 1857 ई. को सतलुज, रावी और ब्यास नदी के घाटों को बन्द कर दिया और नौकाएं नष्ट कर दी ताकि जालन्धर के क्रान्तिकारी सैनिक कांगड़ा में प्रवेश न कर सकें। नादौन, हरिपुर और नूरपुर में **नदी घाटों** पर पुलिस का पहरा लगा दिया गया। इस कार्य के लिए आस-पास के गांवों से तीन रुपये मासिक वेतन पर नए नाका गाड्र्ज़ नियुक्त किये गए और नई चौकियां बनाई गईं।

सुरक्षा के कड़े प्रबन्ध होते हुए भी स्थानीय क्रान्तिकारी अंग्रेजों को मार भगाने की योजना बनाते रहे। क्रान्तिकारी गांव-गांव में गुप्तचर भेजकर जनसाधारण को क्रान्ति के लिए प्रोत्साहित करते थे। आवेश में आकर कुछ भावुक क्रान्तिकारियों ने कांगड़ा में **मिस्टर मर्क** के मिशनरी स्कूल के बाहर इश्तिहार चिपका दिया, जिसमें लिखा था कि, "सब ईसाइयों का नाश किया जायेगा।" इससे अंग्रेज भयभीत हो गए। परिणामस्वरूप 18 जून, 1857 ई. को ज्यूडीशियल कमिश्नर, **रॉबर्ट, मॉंटगोमरी** के आदेश पर कांगड़ा क्षेत्र में सभी हथियार बन्द लोगों से हथियार छीन लिए गए। इस निरस्त्रीकरण की कार्यवाही से क्रान्तिकारियों की हिंसात्मक विद्रोह की योजना को गहरा धक्का लगा।

स्यालकोट में विद्रोह (Revolt in Sialkot)— 9 जुलाई, 1857 ई. को स्यालकोट में '46-नेटिव इन्फैन्ट्री' और 9-कैवेलरी सेना घुड़सवार सेना ने भयानक विद्रोह किया। गुप्त सूचना के अनुसार 46-नेटिव इन्फैन्ट्री और कांगड़ा में तैनात 4-नेटिव इन्फैन्ट्री ने पहले से ही मिलकर परस्पर सहयोग से विद्रोह करने तथा लड़ने का निर्णय ले लिया था। विद्रोह के पश्चात् स्यालकोट के 1000 से भी अधिक क्रान्तिकारी सैनिक कांगड़ा की ओर बढ़ रहे थे। इस भयानक परिस्थिति में देशी सेना द्वारा खुली बगावत की पूरी-पूरी सम्भावना थी।

इसी बीच ज्यूडीशियल कमिश्नर **रॉबर्ट मॉंटगोमरी** और **ब्रिगेडियर निकोल्सन** के आदेश पर कांगड़ा में तैनात 4-नेटिव इन्फैन्ट्री के निरस्त्रीकरण का जोखिम भरा कार्य आरम्भ हुआ ताकि देशी सेना स्यालकोट और जेहलम के क्रान्तिकारी सैनिकों के साथ मिलकर विद्रोह न कर सके। डिप्टी कमिश्नर, **मेजर आर॰ टेलर** ने इस कार्य की सूचना 4-नेटिव इन्फैन्ट्री के **कमांडर मेजर पैटरसन** को दी। स्वयं पुलिस बटालियन के कमांडर कैप्टन बंग हसबैण्ड के साथ 12 जुलाई, 1857 ई. को 300 पुलिस जवानों की सहायता से 4-नेटिव इन्फैन्ट्री के 300 पूर्व सैनिकों को केवल 20 मिनट में निरस्त्र कर दिया और छीने हुए हथियारों को किले में जमा कर दिया। देशी सेना ने कोई विरोध नहीं किया और देशी अफसर सूबेदार **भगवान सिंह** ने निरस्त्रीकरण की इस कार्यवाही को चुपचाप स्वीकार कर लिया। सुरक्षा के कड़े प्रबन्ध होने और स्यालकोट तथा अन्य स्थानों के क्रान्तिकारी सैनिकों से संपर्क टूट जाने के कारण देशी सेना ने बिना विरोध के हथियार डाल दिये।

हिमाचल में विद्रोह का अन्त (End of Revolt in Himachal)—14 अगस्त, 1857 ई. तक शिमला, कांगड़ा, कुल्लू, नालागढ़ और अन्य पहाड़ी रियासतों में क्रान्ति के शोले धीमे पड़ चुके थे। इस महान क्रान्ति के आरम्भिक चार महीनों में तत्कालीन हिमाचल के 50 देशभक्त नागरिक फांसी के फंदे पर चढ़ चुके थे। 500 के लगभग क्रान्तिकारी विभिन्न जेलों में बन्द थे। लगभग 30 आन्दोलनकारियों को देश निकाला दिया जा चुका था। शिमला, जतोग, कसौली, स्पाटू, नालागढ़, सोलन, कांगड़ा, नूरपुर, टीहरा-सुजानपुर, कुल्लू, सिराज और बुशैहर में सैकड़ों क्रान्तिकारियों के घर-बार नष्ट कर दिए गए और सम्पत्ति जब्त कर दी गई। अनेक संदिग्ध व्यक्तियों तथा क्रान्तिकारी परिवारों में स्वाधीनता की आशा बनी हुई थी। हिमाचल के पहाड़ी क्षेत्रों के क्रान्तिकारियों को मैदान से सहायता व सहयोग मिलने की अभी भी सम्भावना थी और दिल्ली के निर्णायक संघर्ष में क्रान्तिकारी सेना के विजयी होने की आशा अभी शेष थी।

1857 की क्रान्ति के हिमाचल पर प्रशासनिक प्रभाव

अथवा

1857 के बाद हिमाचल का संवैधानिक तथा प्रशासनिक विकास

Administrative impacts of 1857 Revolt on Himachal

Or

Constitutional and Administrative development in Himachal after 1857

1857 की क्रान्ति के प्रभाव से तत्कालीन हिमाचल एवं समस्त भारत के संवैधानिक और राजनैतिक जीवन में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण परिवर्तन आए। महारानी विक्टोरिया की ब्रिटिश साम्राज्यवादी सरकार ने भारत के प्रत्यक्ष नियन्त्रण और कुशल प्रशासन के लिए ब्रिटिश संसद् में '**भारत सरकार अधिनियम 1858**' पारित करवाया। इस अधिनियम के अन्तर्गत

ईस्ट इण्डिया कम्पनी की सरकार को समाप्त करके भारत के प्रशासन पर पूर्णतया ब्रिटिश क्राऊन और संसद् का नियंत्रण स्थापित कर दिया गया। ब्रिटिश सरकार ने भारत के प्रशासन की जिम्मेदारी सम्भालने के लिए **'भारत राज्य सचिव'** की नियुक्ति की। भारत के लिए नियुक्त सैक्रेटरी **'भारत सचिव'** के नाम से प्रसिद्ध हुआ। भारत सचिव के परामर्श के लिए एक परिषद् का गठन किया गया, जिसे **'भारतीय परिषद्'** कहा जाने लगा। भारत सचिव और भारतीय परिषद् अथवा 'इण्डियन कौंसिल' को **'गृह सरकार'** के नाम से जाना जाता था। भारत सरकार अधिनियम 1858 के अन्तर्गत स्थापित भारत सचिव और उसकी इण्डियन कौंसिल लन्दन में बैठ कर कार्य करती और उसका समस्त व्यय भारत सरकार वहन करती थी।

भारत में प्रत्यक्ष प्रशासन के संचालन के लिए ब्रिटिश क्राऊन के प्रतिनिधि के रूप में 'गवर्नर जनरल' की नियुक्ति की गई और उसे **'वायसराय'** की उपाधि भी प्रदान की गई। ब्रिटिश साम्राज्ञी का यह प्रतिनिधि इंग्लैंड की सरकार तथा भारत के देशी शासकों के लिए वायसराय था, जबकि ब्रिटिश सरकार के अधीन प्रत्यक्ष शासित भारतीय प्रान्तों के लिए वह गवर्नर-जनरल था। इस प्रकार भारत ब्रिटिश साम्राज्य का उपनिवेश बना। एक्ट के अनुसार भारत की जनता ब्रिटिश क्राऊन की प्रजा बन गई और भारतवासी ब्रिटिश साम्राज्य के भारतीय नागरिक कहलाए।

महारानी विक्टोरिया घोषणा -पत्र (Declaration of Queen Victoria)—

भारत में भारत सरकार अधिनियम, 1858 के अन्तर्गत कम्पनी सरकार को समाप्त करने और ब्रिटिश सरकार द्वारा भारत का राज्य-प्रबन्ध अपने नियन्त्रण में लेने की जानकारी यहां के लोगों को महारानी विक्टोरिया के घोषणा पत्र द्वारा दी गई। **प्रथम नवम्बर, 1858** को विक्टोरिया घोषणा पत्र की घोषणा **लार्ड कैनिंग** ने **इलाहाबाद** में की। इस घोषणा पत्र द्वारा तत्कालीन ब्रिटिश गवर्नर-जनरल, चार्ल्स जॉन विस्काउंट कैनिंग को भारत का प्रथम वायसराय नियुक्त किया गया। चार्ल्स कैनिंग ने विक्टोरिया घोषणा पत्र को भारत के सभी प्रमुख शहरों में प्रकाशित करवाया और देशी भाषाओं में अनुवाद करवाकर इसे जनता तक पहुँचाया। शिमला में भी इसका प्रकाशन हुआ और इसे शहर के मुख्य स्थानों पर चिपकाया गया ताकि जनसाधारण तक महारानी की घोषणा का सन्देश पहुँच सके।

घोषणा पत्र की धाराएँ (Terms of Declaration)

(1) विक्टोरिया घोषणा में भारतीय नरेशों को विश्वास दिलाया गया कि उनके राज्यों को ब्रिटिश साम्राज्य में नहीं मिलाया जाएगा और उन्हें पैतृक उत्तराधिकार के साथ-साथ दत्तक पुत्र लेने का भी अधिकार होगा।

(2) महारानी ने कम्पनी सरकार द्वारा दी गई सनदों और सन्धियों को स्वीकार किया और उन्हें कार्यान्वित करने का विश्वास दिलाया।

(3) भारतवासियों को इस बात का आश्वासन दिया गया कि उनके धार्मिक, सामाजिक और परम्परागत जीवन में ब्रिटिश सरकार किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं करेगी। ईसाई धर्म को भारतीयों पर थोंपने की नीति का त्याग किया गया और भारतीयों के रीति-रिवाजों और परम्पराओं का उचित सम्मान करने का विश्वास दिलवाया गया।

(4) महारानी ने भारतीय किसानों के भूमि के प्रति लगाव को ध्यान में रखते हुए उनके भूमि अधिकार और परम्परा को बनाए रखने के लिए प्रशासन से इनकी रक्षा करने का आदेश दिया गया।

(5) ब्रिटिश साम्राज्ञी ने अपनी घोषणा में यह स्पष्ट किया कि राजकीय सेवाओं में भारतीय नागरिकों को ब्रिटिश नागरिकों की भांति किसी धर्म, जाति एवं वर्ग भेद के बिना समान अवसर और अधिकार प्रदान किए जाएंगे। इसके अतिरिक्त प्रत्येक व्यक्ति को उसकी क्षमता, योग्यता और निष्ठा के आधार पर निष्पक्ष रूप से राजकीय सेवाओं में स्थान दिया जायेगा।

(6)भविष्य में अपनाई जाने वाली नीतियों के सम्बन्ध में महारानी विक्टोरिया ने विश्वास दिलाया कि भारत में आन्तरिक शान्ति और शासन व्यवस्था स्थापित हो जाने के पश्चात् ब्रिटिश सरकार भारत में समाज-कल्याण, सार्वजनिक विकास तथा लोक निर्माण के कार्य करेगी। कृषि और उद्योग में विकास किया जायेगा।

शिक्षित भारतीयों ने विक्टोरिया की इस उद्घोषणा को नागरिकों के अधिकारों का विशेष गृहाधिकार-पत्र मान कर प्रशंसा की। इस आदेश के साथ ही भारत में समता के अधिकार और अवसर की स्वस्थ परम्परा का विकास हुआ। इसी

घोषणा को आधार मान कर भारतीय नेताओं और आन्दोलनकारियों ने कालान्तर में ब्रिटिश सरकार से समान अधिकार पाने के लिए संघर्ष किया था।

साम्राज्ञी की घोषणा ने भारतीय नरेशों, नवाबों और जन-साधारण के दिलों में कुछ सीमा तक आशा की भावना जागृत कर दी और महारानी के आश्वासनों को क्रान्ति की उपलब्धि माना जाने लगा। इसलिए 1857 की क्रान्ति भावी आन्दोलन का स्रोत बन गई।

1858 के अधिनियम के अनुसार हिमाचल की प्रशासनिक व्यवस्था
(Administrative system in Himachal according of 1858 Act)

भारत सरकार अधिनियम, 1858 के अन्तर्गत तत्कालीन हिमाचल के पर्वतीय क्षेत्रों पर ब्रिटिश सरकार का सीधा और सुदृढ़ नियन्त्रण स्थापित हो गया और उन्होंने निम्नलिखित ढंग से वहां प्रशासनिक व्यवस्था लागू की:-

(1) उस समय हिमाचल में दो प्रकार का शासन प्रबन्ध प्रचलित था। पंजाब हिल स्टेट्स में **नूरपुर, कांगड़ा, जसवां, गुलेर, सिब्बा, दातारपुर, कोटला, कुल्लू, भंगाहल, लाहौल** और **स्पीति** की रियासतें अपना प्राचीन अस्तित्व खो चुकी थीं। अंग्रेजों ने इन रियासतों को जीत कर ब्रिटिश साम्राज्य में मिला दिया था। इन सभी रियासतों के क्षेत्र को संगठित करके एक प्रशासनिक इकाई के रूप में **'ज़िला कांगड़ा'** बना दिया गया। इस का प्रशासन **डिप्टी कमिश्नर कांगड़ा** के नियन्त्रण में था। इसके अतिरिक्त शिमला हिल स्टेट्स में **जतोग, स्पाटु, कसौली, डगशाई, कोटगढ़, कोटखाई, बहरौली, सनावर** एवं शिमला शहर के अलग-थलग क्षेत्रों को मिला कर **'ज़िला शिमला'** बना दिया गया था, जो डिप्टी कमिश्नर शिमला के नियन्त्रण में था। उपरोक्त ज़िला कांगड़ा, ज़िला शिमला और चम्बा रियासत का डलहौज़ी एवं बकलोह छावनी क्षेत्र अंग्रेज़ों के प्रत्यक्ष नियन्त्रण में थे और ये पंजाब प्रान्त के पर्वतीय भाग थे। इस प्रकार हिमाचल का आधे से ज्यादा क्षेत्र ब्रिटिश साम्राज्य में सम्मिलित था, जिस पर ब्रिटिश सरकार का प्रत्यक्ष शासन और नियन्त्रण था।

(2) देशी शासकों के अधीन लघु राज्यों में **शिमला हिल स्टेट्स** और सतलुज के आर-पार की रियासतें आती थीं। शिमला हिल स्टेट्स में **बुशैहर, क्योंथल, जुब्बल, कुमरसैन, कुनिहार, बाघल, बघाट, बलसन, शांगरी, कुठाड़, बेजा, भज्जी, दरकोटी, थामी, मांगल, महलोग, थरोच, नालागढ़, खनेटी, देलट, ठियोग, घूंड, मधाण, रतेश** और **रावी** रियासतें आती थीं और इनमें देशी शासकों का प्रशासन था। **छोटी ठकुराईयों में करांगला, खनेटी, थरोली, देलठ** और **शांगरी** आदि बुशैहर रियासत के अधीन थी। इसी प्रकार **रावी, ढाडी** और **सारी** पर जुब्बल के शासक का आधिपत्य था। ठियोग, घूंड. मधाण, रतेश और कोटी के शासक क्योंथल राज्य के अधीन थे। इन ठकुराइयों का अपना अलग और स्वतन्त्र अस्तित्व कभी नहीं रहा था। ये ठकुराईयां प्राय: बड़े राज्यों, जैसे बुशहर, सिरमौर, नालागढ़, क्योंथल, बिलासपुर और जुब्बल के प्रशासकों के प्रभुत्व में थीं। यद्यपि इन रियासतों ने अंग्रेज़ों का प्रभुत्व स्वीकार कर लिया परन्तु ये अपने आन्तरिक शासन में स्वायत्त थीं। ब्रिटिश सरकार ने इनके नियन्त्रण के लिए **सुपरिंटेंडेंट** और **कमिश्नर**, शिमला हिल स्टेट्स को नियुक्त किया।

(3) सतलुज पार की कुछ रियासतों में **मण्डी, सुकेत, बिलासपुर, चम्बा** और **कुटलैहड़** में भी देशी राजाओं का शासन था। अंग्रेज़ों के प्रभुत्व में इनके अधीक्षण और नियन्त्रण के लिए **सुपरिंटेंडेंट सिस-सतलुज स्टेट्स**' की नियुक्ति की गई थी। इन सभी रियासतों पर पंजाब सरकार द्वारा नियुक्त ब्रिटिश अधिकारियों का नियन्त्रण रहता था। इन रियासतों के प्रशासन के लिए ब्रिटिश सरकार ने एक **पॉलीटिकल डिपार्टमैंट** खोला हुआ था। इस विभाग के अधिकारी जैसे **पॉलीटिकल रैजिडेंट्स, एजेन्ट्स,** और **सुपरिंटेंडेंट** रियासतों के प्रशासन का निरीक्षण रखते थे। ये सभी अधिकारी वायसराय के प्रति उत्तरदायी थे।

(4) भारत सरकार अधिनियम, 1858 के अन्तर्गत हिमाचल की सभी रियासतों के शासकों को अपने राज्यों के आन्तरिक शासन प्रबन्ध में स्वायत्तता प्रदान की गई। उनके राज्यों की सीमा निश्चित करके उन्हें क्षेत्र विस्तार के अधिकार से वंचित कर दिया गया और अन्य रियासतों के प्रशासन में हस्तक्षेप करने का अधिकार भी उन्हें नहीं दिया गया। ब्रिटिश

सरकार को किसी भी राजा, राणा और ठाकुर के राज्य क्षेत्र में आन्तरिक अशान्ति और कुप्रशासन की अवस्था में हस्तक्षेप करने का अधिकार था। अंग्रेज़ों को सभी रियासतों में स्वतन्त्र दौरे के सभी प्रबन्ध करने और सारा व्यय भी वहन करना पड़ता था। जन-साधारण से **'बेगार'** ली जाती थी। अफसरों को खुश करने के लिए कीमती भेंट प्रदान की जाती थी। रियासतों के आपसी सम्बन्धों एवं विदेशी मामलों में ब्रिटिश सरकार का प्रत्यक्ष नियन्त्रण था। सभी रियासतें ब्रिटिश सरकार को नकद वार्षिक कर व नज़राना देती थीं। संवैधानिक तौर पर ये रियासतें स्वतन्त्र राज्य के रूप में विद्यमान थीं परन्तु वायसराय अपने अधीन कार्यरत पोलीटिकल डिपार्टमैंट के अधिकारियों के माध्यम से इन रियासतों के ऊपर नियन्त्रण रखता था।

हिमाचल के शासकों के प्रति नीति

(Policy towards rulers of Himachal)

महारानी विक्टोरिया की घोषणा के अनुसार देशी शासकों के प्रति विनम्र और क्षमाशील रवैया अपनाया गया। इसी के अन्तर्गत बुशैहर रियासत के राजा **शमशेर सिंह** के 1857 की क्रान्ति के दौरान के विद्रोही व्यवहार को नज़रअंदाज़ कर दिया गया। शिमला हिल स्टेट्स के पॉलीटिकल एजेंट एवं डिप्टी कमिश्नर, **लॉर्ड विलियम** हेय की राजा शमशेर को पदच्युत करने और बुशैहर रियासत को अंग्रेज़ी साम्राज्य में मिलाने की सिफारिश को चीफ कमिश्नर पंजाब **जॉन लारैंस** ने अस्वीकार कर दिया। अत: बुशैहर के विरुद्ध कोई कार्यवाही न हो सकी।

जसवां के विद्रोही राजा **रणसिंह** को अल्मोड़ा बन्दीगृह से मुक्त करके जसवां आने की अनुमति दे दी गई और बाद में उसे जागीर भी प्रदान की गई।

दातारपुर के राजा जगत चन्द के पुत्र **देवी सिंह** को भी अलमोड़ा से अपने देश आने की अनुमति दी गई और बाद में उसे जागीर भी प्रदान की गई। दातारपुर के राजा जगत चन्द के पुत्र **देवी सिंह** को भी अल्मोड़ा से अपने देश आने की अनुमति प्रदान की गई।

नूरपुर के राजा वीर सिंह की वार्षिक पैंशन भी दोगुनी कर दी गई। ब्रिटिश सरकार ने विस्थापित शासकों को राजकीय सेवा में नियुक्त करने और उनके बच्चों की शिक्षा के प्रबन्ध का भी आश्वासन दिया।

विद्रोह के समय अंग्रेज़ों की सहायता करने वाले देशी शासकों को विशेष रूप से सम्मान प्रदान किया गया और इनाम दिए गए।

बाघल के **राणा कृष्ण सिंह** को **'राजा'** की उपाधि से सम्मानित किया गया तथा उसके भाई जय सिंह को खिल्लत प्रदान की गई। धामी के **राणा गोवर्धन सिंह** का आधा नज़राना माफ कर दिया गया।

क्योंथल के राणा **संसारसेन** को राजा की उपाधि से सम्मानित किया गया और खिल्लत प्रदान की गई।

मण्डी, बिलासपुर, सिरमौर, जुब्बल और चम्बा के शासकों को भी सम्मान और ईनाम देकर सन्तुष्ट किया गया।

जन साधारण की दशा

(Condition of Masses after the Revolt)

विद्रोह के बाद देशी शासकों को सन्तुष्ट करने की नीति, उनका विश्वास जीतने और सहयोग प्राप्त करने के लिए अपनाई गई। क्रान्ति के समय किए गये अत्याचारों का कुप्रभाव कम करने की भी चेष्टा की गई, परन्तु जनसाधारण के मन पर अंग्रेज़ों की दमनकारी नीतियों, निर्दयता और अमानवीय अत्याचारों की गहरी छाप पड़ चुकी थी। क्रान्ति की घटनाएं गांव-गांव और घर-घर में वर्षों तक गम्भीर चर्चा का विषय बनी रहीं। क्रान्ति में शहीद हुए पहाड़ी वीर, जनता के दिलों में **'नायक'** का स्थान पा चुके थे। परन्तु साधारण जनता को अभी तक अपने राजनैतिक अधिकारों का ज्ञान नहीं था, क्योंकि उनमें राजनैतिक चेतना केवल नाममात्र की थी। अत: हिमाचल की पहाड़ी प्रजा दोहरी गुलामी का शिकार थी। एक ओर देशी शासकों की हुकूमत तो दूसरी ओर अंग्रेज़ों की गुलामी थी।

1857 के विद्रोह के बाद हिमाचल में संवैधानिक विकास

(Constitutional Development in Himachal after the Revolt of 1857)

हिमाचल में एक ओर जन आन्दोलन शुरू हो गये थे तो दूसरी ओर ब्रिटिश सरकार अपने देश की संवैधानिक एवं प्रशासनिक परम्पराओं एवं प्रणालियों को धीरे-धीरे भारत में प्रवेश करवा रही थी। 1861 ई. में इंग्लैंड में **'भारत परिषद् अधिनियम 1861,'** पास हुआ। इस नए अधिनियम के अनुसार वायसराय की कार्यकारी सभा और विधान परिषदों में भारतीयों को मनोनीत सदस्य के रूप में रखने का प्रावधान रखा गया। भारत के संवैधानिक इतिहास में यह पहला अवसर था, जब प्रतिनिधि संस्था और वैधानिक शक्ति के हस्तान्तरण का आरम्भ हुआ। ब्रिटिश शासित प्रान्तों में विधान परिषदें बनीं और इन्हें वैधानिक शक्ति हस्तान्तरित की गई। इस प्रकार प्रान्तीय सरकारों को कुछ आन्तरिक स्वायत्तता मिलनी आरम्भ हुई।

सन् 1861 में ही **'इण्डियन सिविल सर्विसिज एक्ट 1861'** भी पारित हुआ। इस एक्ट के अनुसार भारतीयों को राजकीय सेवाओं में यूरोपीय नागरिकों के साथ समान अवसर और अधिकार प्रदान किए गए। इस प्रकार भारतीय नागरिकों को ब्रिटिश प्रशासन में प्रवेश मिला। तत्कालीन हिमाचल के ब्रिटिश शासित क्षेत्रों जैसे ज़िला कांगड़ा और शिमला में योग्यता और प्रतियोगिता के आधार पर राजकीय सेवा में नियुक्ति का कानून औपचारिक रूप में लागू किया गया, परन्तु अन्य पहाड़ी रियासतों में वंश-परम्परा की प्रशासन पद्धति चलती रही। रियासत के वज़ीर, दीवान, पुरोहित नेगी, विष्ट , कायथ, वैद्य, मुन्शी और अन्य कर्मचारी वंश परम्परा के अनुसार ही नियुक्त किये जाते थे। ये कर्मचारी अपने-अपने कार्य क्षेत्र में राजा की लापरवाही और अयोग्यता का लाभ उठाते हुए प्रजा पर निरंकुश नियन्त्रण रखते थे। प्रशासन का दृष्टिकोण प्रजा की भलाई और प्रगति के कार्य करने का नहीं था। यह प्रशासन प्रायः भ्रष्ट, दमनकारी और अकुशल होता था। अनेक पहाड़ी रियासतों में प्रजा प्रायः वज़ीर और उसके अधीन कर्मचारियों के कुप्रशासन और दमन से परेशान थी। इसलिए समय-समय पर अधिकतर आन्दोलन वज़ीरों और अन्य प्रशासन अधिकारियों के दमन और अत्याचारों के विरुद्ध होते रहे।

प्रशासनिक व्यवस्था में शिमला का महत्त्व

(Importance of Shimla in Administrative System)

अंततः तत्कालीन हिमाचल पर अंग्रेज़ों का प्रभुत्व पूर्णतया स्थापित हो गया था। रियासतों के प्रशासन पर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से अंग्रेज़ों का नियन्त्रण स्थापित था। सब से महत्त्वपूर्ण बात यह थी कि शिमला अंग्रेज़ों की शक्ति का केन्द्र बन चुका था और पंजाब सरकार का मुख्यालय भी यहीं था। शिमला हिल स्टेट्स और सिस सतलुज स्टेट्स के सुपरिंटेंडेंट तथा पॉलीटिकल डिपार्टमैंट के अधिकारी शिमला में ही रहते थे। भारतीय ब्रिटिश सेना का ग्रीष्मकालीन मुख्यालय भी शिमला में ही स्थित था। ब्रिटिश सेना के कमांडर इन चीफ **जनरल लॉर्ड नेपियर** शिमला से कमान सम्भालते थे। इसके अतिरिक्त शिमला शहर ब्रिटिश सरकार की ग्रीष्मकालीन राजधानी बन चुका था। 1876 ई. में **लॉर्ड लिटन** ने वायसराय की हैसियत से शिमला में वायसराय निवास बनाने का आदेश दिया। इस प्रकार हिमाचल का पहाड़ी शहर शिमला साम्राज्यवादी ब्रिटिश सरकार की अपार शक्ति का केन्द्र बन गया। ब्रिटिश सरकार यहीं से समस्त भारत के प्रान्तों और अधीन रियासतों पर अपना नियन्त्रण और प्रभुत्व बनाए हुए थी।

ब्रिटिश सरकार द्वारा शिमला को ग्रीष्मकालीन राजधानी बनाने से पर्वतीय क्षेत्रों पर अंग्रेज अफ़सरों का नियन्त्रण और भी कड़ा हो गया। यहाँ की प्रजा, देशी राजाओं, अधिकारियों और रियासती कर्मचारियों को अंग्रेज़ों की अपार शक्ति और सामर्थ्य का पूर्ण एहसास हो गया था। देशी शासक अब ब्रिटिश सरकार के प्रति विरोध-प्रदर्शन की बात सोच भी नहीं सकते थे। राजनैतिक प्रभुत्व और नियन्त्रण के साथ-साथ ब्रिटिश सरकार ने भारत का आर्थिक शोषण भी बड़े पैमाने पर आरम्भ कर दिया था। रियासतों से वार्षिक कर के अतिरिक्त कच्चा माल भी वसूल किया जाता था। **बुशहर, कुल्लू, चम्बा, शिमला, मण्डी**

और कांगड़ा के जंगल ब्रिटिश सरकार ने अपने अधीन कर लिये थे । भारत की अधिकतर धन-दौलत इंग्लैंड जाने लगी थी। इतना अवश्य है कि भारत में संवैधानिक, प्रशासनिक तथा सार्वजनिक विकास होना शुरू हो गया था, जिसने आने वाले समय में भारतीयों में राष्ट्रीय चेतना पैदा करने का काम किया।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न
(Important Questions)

1. हिमाचल प्रदेश में 1857 में विद्रोह के स्वरूप का वर्णन करो।
   Discuss the nature of the Revolt of 1857 in Himachal.
2. हिमाचल प्रदेश में 1857 के विद्रोह के केन्द्रों का वर्णन करो।
   Discuss the centres of the revolt of 1857 in Himachal.
3. हिमाचल प्रदेश में 1857 के विद्रोह के कारणों तथा घटनाओं का वर्णन करें।
   Discuss the causes and events of the 1857 revolt in Himachal Pradesh.
4. हिमाचल के 1857 के विद्रोह को अंग्रेज़ों ने किस प्रकार दबाया? वर्णन करें।
   How did the British depress the revolt of 1857 in Himachal? Discuss.
5. शिमला की पहाड़ी रियासतों में 1857 के विद्रोह की घटनाओं की चर्चा कीजिए।
   Discuss the events of the revolt of 1857 in Shimla Hill states.
6. 1857 के पश्चात् हिमाचल प्रदेश के संवैधानिक और प्रशासनिक विकास का वर्णन करो।
   Describe the constitutional and administrative development in Himachal Pradesh after 1857.
7. 1857 के विद्रोह के हिमाचल प्रदेश पर क्या प्रशासनिक प्रभाव पड़े? चर्चा कीजिए।
   What were the impacts of the revolt of 1857 on the administrative system of Himachal Pradesh ? Discuss
8. 1858 का महारानी विक्टोरिया का घोषणा पत्र क्या था? हिमाचल के संदर्भ में इसकी व्याख्या कीजिए।
   What was the declaration of Queen Victoria of 1858? Explain it with regard to Himachal Pradesh.

9 हिमाचल प्रदेश में प्रमुख जन-आन्दोलन (POPULAR PEOPLES' PROTESTS IN HIMACHAL PRADESH)

भूमिका (Introduction)

1839 ई. में महाराजा रणजीत सिंह की मृत्यु हो गई तथा पंजाब में अव्यवस्था फैलने लगी। इसका लाभ उठाकर अंग्रेज़ों ने सिक्खों के साथ 1845 ई. में युद्ध छेड़ दिया, जिसे सिक्खों का प्रथम युद्ध कहा जाता है। इस युद्ध में सिक्खों की हार हुई तथा हिमाचल के पर्वतीय क्षेत्र जो पहले रणजीत सिंह के अधिकार में थे, वे सभी क्षेत्र अंग्रेज़ों के अधिकार में चले गए। इस युद्ध के बाद अंग्रेज़ों ने पहाड़ी रियासतों के शासकों को जागीरदार बना कर रख दिया। परिणामस्वरूप 1848 ई. से अंग्रेज़ों के विरुद्ध विद्रोह की चिंगारी भड़क उठी तथा भारत से अंग्रेज़ों को निकालने के लिए जन विद्रोह आरम्भ हो गए। 1857 का स्वतंत्रता संग्राम भी इसी कड़ी का एक हिस्सा था। यह विद्रोह यद्यपि असफल रहा, फिर भी हिमाचल की रियासतों के शासकों ने जन आन्दोलनों को जारी रखा। इसके लिए उन्होंने प्रजामण्डलों की तथा अनेक संस्थाओं की स्थापना की। इस अध्याय में हिमाचल में होने वाले जन विद्रोहों, प्रजामण्डलों तथा अन्य संस्थाओं का अध्ययन किया जायेगा।

पहाड़ी रियासतों में जन आन्दोलन
(Protests in the Hill States)

हिमाचल प्रदेश में तीन प्रकार के जन-आंदोलन चलते रहे। **पहली प्रकार** के आन्दोलन वे थे, जो किसी विशेष स्थान के लोगों ने अपनी स्थानीय समस्याओं को लेकर चलाए। ये आन्दोलन अधिकतर भूमि लगान, बेगार, राजा या उसके कर्मचारियों की दमनकारी नीतियों के विरुद्ध होते थे। इस प्रकार के आंदोलन शिमला की ऊपरी पहाड़ी रियासतों, विशेषकर बुशैहर में **दूम्ह** और बिलासपुर में **जुग्गा** और **डांडरा** नाम से जाने जाते थे। **दूसरे प्रकार** के जन आन्दोलन भारत के स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े थे, जिन्हें **स्वतंत्रता आन्दोलन** कहा जाता है। **तीसरी प्रकार** के आन्दोलन देशी रियासतों के लोगों द्वारा प्रजा मण्डलों के अधीन रियासतों अथवा ब्रिटिश शासन के विरुद्ध किए गए।

पहली प्रकार के आन्दोलन
(First Kind of Movements)

किसान आन्दोलन तथा पहाड़ी राजाओं के विरुद्ध आन्दोलन
Peasant Protests and Agitations against the British and Hill States)

1. बुशैहर रियासत में दूम्ह (Dujam Movement in Busher State)—जब कभी राजा कोई ऐसा काम करता या भूमि कर लगाता था, जिसको लोग अनुचित और अन्याय पूर्ण समझते थे तो अपना रोष व विरोध प्रदर्शित करने के लिये गांव को छोड़कर पास के जंगल में ले जाते थे। इसे दूम्ह आन्दोलन कहा जाता था। दूम्ह आंदोलनकारियों को तो इससे कष्ट होता था, ऐसे आंदोलन से सत्ता भी विचलित हो जाती और आंदोलनकारियों की मांग पूरी करने का अविलम्ब प्रयास करती थी। दूम्ह आंदोलन प्रायः व्यवस्थित और शांतिपूर्वक होता रहा। सुलह-समझौता होने के बाद लोग अपने घरों को वापस आ जाते थे और पुनः अपने व्यवसाय खेती-बाड़ी और दूसरे कार्यों में लग जाते थे।

बुशैहर रियासत में सन् 1859 में दूम्ह आंदोलन हुआ। इसका प्रमुख केन्द्र रोहड़ू का क्षेत्र था। इस के कई कारण थे, परंतु मुख्यतः यह 1854 ई. में सम्पन्न हुई ज़मीन की पैमायश के विरुद्ध था। नूरपुर निवासी तहसीलदार श्यामलाल ने उस

समय ज़मीन का बंदोबस्त किया और नकदी लगान निश्चित किया। इससे पहले भूमि उपज के रूप में पैदावार का निश्चित भाग, अन्न, घी, तेल, ऊन, भेड़-बकरी आदि प्राचीन प्रथा के अनुसार राज्य को कर के रूप में देने पड़ते थे। इस आंदोलन का सम्बन्ध तत्कालीन राज्य-व्यवस्था से भी था। इन्हीं वर्षों में खानदानी वज़ीरों की प्रथा समाप्त कर दी थी। अत: किन्नौर के पुआरी वज़ीरों ने भी इस आंदोलन को तूल दी। मालगुजारी देने के लिये उस समय मुद्रा का भी अभाव रहता था। इस दूह आंदोलन को समाप्त करने के लिये अंग्रेज़ सरकार का हस्तक्षेप आवश्यक हो गया था। इसको सुलझाने के लिये पहले शिमला के डिप्टी कमिश्नर **विलियम हेय** और रियासतों के सुपरिन्टेंडेंट **जार्ज कारनेक बार्नस** बुशैहर गये और राजा **शमशेर सिंह** से विचार-विमर्श किया। आन्दोलनकारी किसानों की तीन मांगें थीं। **पहली**, उस समय की लगान व्यवस्था को समाप्त करना, **दूसरी**, खानदानी वज़ीरों को सत्ता सौंपना और **तीसरी**, लगान की वसूली परम्परागत ढंग से उपज और वस्तुओं के माध्यम से करना। सुपरिंटेंडेंट **बार्नस** ने आंदोलन की गम्भीरता को देखते हुये तीनों मांगें मान लीं। इस प्रकार बुशहर के किसान राजा और अंग्रेज़ सरकार से अपनी मांगें मनवाने में सफल हो गए तथा आन्दोलन समाप्त हो गया।

2. बिलासपुर में आन्दोलन (Movements in Bilaspur)—जुग्गा और डांडरा प्रकार के आंदोलन बिलासपुर में प्राय: होते रहे। डांडरा भी विरोध करने का एक अन्य तरीका था। इसके शाब्दिक अर्थ **'हल्ला गुल्ला'** अथवा **'जन आंदोलन'** होता है। यह भी अव्यवस्था के प्रति आक्रोश व्यक्त करने के लिये असहयोग आंदोलन था। अगर राजा उन की बात मान लेता तो जुग्गा या डांडरा करने वाले अपने घर वापस चले जाते थे। इस का उद्देश्य आत्मोत्पीड़न और आत्मदाह द्वारा राजा और उसके प्रशासन के अत्याचारों और तानाशाही के प्रति विरोध प्रकट करना था। इसमें भाग लेने वाला व्यक्ति 'जुग्गा' (घास-फूस की झोंपड़ी) बनाकर उसमें बिल्ली, कुत्ता तथा गाय के साथ निश्चित अवधि तक बैठता और न्याय पाने के लिये राजा के आदेश की प्रतीक्षा करता था। निश्चित अवधि के समाप्त होने पर वह उन जानवरों व पशुओं सहित जुग्गा में आत्मदाह कर लेता था। उसके पश्चात् उसका स्थान गांव का दूसरा व्यक्ति ले लेता था। **कोट, पण्डतेहड़ा, गेहड़वीं** तथा **तल्हवाण** में जुग्गा किये जाने के प्रमाण बिलासपुर के इतिहास **'शशिवंश विनोद'** में मिलते हैं।

राजा अमरचंद (1883-1888) के राज्य काल में गेहड़वीं के ब्राह्मणों में असंतोष फैल गया था, क्योंकि राज्य के कुछ नि:संतान मरने वाले ब्राह्मण परिवारों की 1884 ई० में भूमि राज्य ने अपने अधिकार में ले ली थी। ऐसे परिवारों के निकटतम उत्तराधिकारी राज्य के इस कार्य को अनुचित समझते थे। इस असंतोष को भड़काने में राजवंश के **मियां काहन सिंह** का भी हाथ था। गेहड़वीं के अतिरिक्त **पण्डतेहड़ा** और **तुलहण** गांव के ब्राह्मणों ने भी राज्य द्वारा उक्त अधिग्रहण के विरुद्ध अपना रोष प्रकट किया। राजा ने रियासत के तहसीलदार **निरंजन सिंह** के नेतृत्व में गांव गेहड़वीं में पुलिस भेज कर जुग्गा में धरने पर बैठे सत्याग्रहियों को गिरफ्तार करने का आदेश दिया। जब पुलिस के पहुंचने का पता सत्याग्रहियों को चला तो उन्होंने अपने-अपने जुग्गों को आग लगा दी और स्वयं भी उस में भस्म हो गये। इस प्रकार कई आन्दोलनकारी शहीद हो गए। यह देख कर एक व्यक्ति **गुलाब राम** ने तहसीलदार **निरंजन सिंह** पर गोली चला दी। लोगों ने घायल निरंजन सिंह को जलते हुये जुग्गा में फेंक दिया। पुलिस सिपाही भाग कर बिलासपुर पहुँचे। राजा ने अंग्रेज़ सरकार से सहायता लेकर गेहड़वीं के इस विद्रोह को दबा दिया। 140 ब्राह्मण परिवार रियासत को छोड़ कर कांगड़ा चले गये। काहन सिंह को पकड़कर कैद कर दिया और उसे दस हज़ार रुपये दण्ड के तौर पर लगाये। गुलाब राम को भी छ: वर्ष की कड़ी कैद की सज़ा देकर संरीऊन किले में बन्दी बना दिया गया।

भूमि बन्दोबस्त सम्बन्धी आंदोलन 1930 ई० में बिलासपुर में एक बार फिर हुआ था। इसको दबाने के लिये भी लाहौर के रेज़ीडेन्ट ने एडवर्ड वेकफील्ड के साथ कुछ सैनिक इस भूमि-आन्दोलन को दबाने के लिये भेजे। अंत में राजा को उनकी बात माननी पड़ी। इस प्रकार ये दोनों आंदोलन अपने उद्देश्य में सफल रहे।

3. सुकेत में जन-आंदोलन (Protest in Suket)—राजा उग्रसेन (1836-1876) का वज़ीर **नरोत्तम** बहुत अत्याचारी था। उसने कुछ ब्राह्मण परिवारों पर दण्ड लगाया। लोगों ने इसका विरोध किया और उसको गिरफ्तार करने की मांग की परन्तु राजा यह कार्य आगे टालता रहा। राजा के पुत्र रुद्र सेन ने भी उस वज़ीर का विरोध किया। अंत में राजा ने उसे हटाकर उसके स्थान पर धंगुल को वज़ीर बना दिया। **इसने भी** उच्चवर्ग के लोगों से भारी **दण्ड वसूल** करने शुरु

कर दिये। एक दिन धंगुल वज़ीर पहाड़ी क्षेत्र के दौरे पर गया। वहां पर लोगों ने उसे पकड़ कर गढ़-चवासी स्थान पर बारह दिन तक बन्दी बना कर रखा। उसे तभी छोड़ा, जब राजा ने उसके छोड़ने के आदेश दिये। राजा ने गढ़-चवासी में जा कर लोगों की शिकायतें सुनीं। राजा ने धंगुल वजीर के अपराधों को देख कर उसे बीस हज़ार रुपये जुर्माना किया और नौ महीने कैद की सज़ा दी।

4. 1877 ई॰ में नालागढ़ आंदोलन (Movement in Nalagarh in 1877)— राजा ईश्वर सिंह जून 1877 में गद्दी पर बैठा। उसके समय में गुलाम कादिर खान वज़ीर था। उसने इस राजा के शासन सम्भालते ही प्रजा पर नये कर लगाये और भूमि लगान बढ़ा दिये। लोगों में रोष बढ़ गया और उन्होंने लगान देने भूमि से साफ इंकार कर दिया। लोगों ने सभायें कीं और जलूस निकाले। लोगों ने कर्मचारियों के काम में बाधा डालनी आरंभ की। अशांति और गड़बड़ी की स्थिति में अंग्रेज़ सरकार ने हस्तक्षेप किया। शिमला से सुपरिंटेंडेंट हिल स्टेट्स स्वयं पुलिस दल देकर नालागढ़ पहुँचे। जन आन्दोलन का दमन करके उनके नेता को पकड़ लिया और भीड़ को भगा दिया। लोगों ने अपनी मांगें मनवा लीं और राजा ने अंत में वज़ीर को निकाल दिया और लगान भी कम कर दिया।

5. सुकेत आंदोलन (Suket Movement of 1878)—1878 ई॰ में रुद्रसेन गद्दी पर बैठा। उसने धुंगल को वज़ीर बना दिया। उसने किसानों का भूमि कर बढ़ा दिया। इससे लोगों में असंतोष फैल गया। लोगों ने राजा से न्याय की मांग की, परन्तु राजा ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया। इससे वे निराश हो गये और वे आन्दोलन पर उतर आये। राजवंश के लोगों ने भी प्रजा को समर्थन दिया। राजा ने इन लोगों को रियासत से निकाल दिया। जब स्थिति बहुत बिगड़ गई तो जालंधर का कमिश्नर ट्रिमलेट्ट सुकेत आया। उसने सारी स्थिति की जांच पड़ताल की। वज़ीर धुंगल को निकाल दिया और करसोग के आंदोलनकारियों को हिरासत में ले लिया। लोगों ने प्रशासन से असहयोग की नीति अपनाई। दोबारा जांच करने पर राजा को 1879 में गद्दी से हटा दिया। आंदोलन का नेता **मियां शिव सिंह** कांगड़ा से वापस आ गया। आंदोलनकारियों की मांग पर लगान में कमी कर दी गई।

6. सिरमौर का भूमि आन्दोलन (Land Movement of Sirmaur in 1878)—राजा शमशेर प्रकाश के काल में 1878 ई॰ सिरमौर में मुन्शी नंदलाल और मुंशी फतेह सिंह ने भूमि बन्दोबस्त आरंभ किया। राज्य का यह पहला बदोबस्त था। रेणुका के गिरि पार के क्षेत्र में जब बन्दोबस्त शुरू हुआ तो लोगों ने समझा कि राजा इससे लगान बढ़ा देगा। इसलिये **संगडाह** के नम्बरदार **अछबू** और **प्रीतम सिंह** ने लोगों के साथ मिल कर बन्दोबस्त के कर्मचारियों से झगड़ा कर लिया और उन्हें भूमि की पैमाइश करने से रोका। उन्होंने बंदोबस्त तहसीलदार **मुंशी जीत सिंह** को पकड़ने का भी प्रयास किया। अतः बन्दोबस्त के कर्मचारी वापस नाहन चले गये और राजा से मिले। राजा ने ज़मींदारों को समझाने का प्रयास किया परन्तु वे नहीं माने। अंत में राजा ने विद्रोहियों को पकड़ने के लिये नाहन से सिपाही भेजे। साथ ही शिमला में पहाड़ी रियासतों के सुपरिंटेंडेंट को भी राजा ने पहले ही अवगत करा दिया। पुलिस को देखकर प्रदर्शनकारी वापस घर चले गये और उनके नेता अछबू और प्रीतम सिंह को शिमला सुपरिंटेंडेंट ने पकड़ कर राजा के पास नाहन भेज दिया। दूसरे विद्रोहियों को भी पकड़कर नाहन लाया गया और उन्हें सज़ा दी गई। इसके बाद बन्दोबस्त का काम ठीक प्रकार से चलने लगा।

7. चम्बा का किसान आन्दोलन (Peasant Revolt of 1895 in Chamba)- राजा शाम सिंह (1873-1904) के समय में चम्बा रियासत में सार्वजनिक किसान आंदोलन हुआ। **राजा शाम सिंह** और उसके वजीर **गोबिन्द राम** के प्रशासन में किसानों पर भूमि-लगान में भारी वृद्धि कर दी। इसके अतिरिक्त **बेगार** (Begar) भी अधिक ली जाने लगी। किसी भी व्यक्ति को मज़दूरी या वेतन दिये बिना काम करवाने को बेगार प्रथा कहा जाता था। इसके अंतर्गत प्रत्येक परिवार से एक व्यक्ति वर्ष में छः महीने रियासत का काम मुफ्त में करना होता था। उन्हें मज़दूरी नहीं दी जाती थी और न ही रियासत की ओर से उन्हें भोजन मिलता था। उच्च वर्ग के लोगों को इससे छूट थी। अतः लोगों ने राजा से लगान कम करने और बेगार बंद करने के लिए अनुरोध किया, परन्तु इसकी राजा ने परवाह न की। यह देखकर **भटियात** क्षेत्र के किसानों ने इसके विरुद्ध आंदोलन आरंभ कर दिया। **बलाणा** गांव के लोगों ने इसमें मुख्य भाग लिया। लोगों ने लगान देने से इंकार कर दिया तथा लगान वसूल करने वालों को गांव में घुसने नहीं दिया। उन्होंने बेगार-सेवा देनी भी बंद कर दी। कई महीनों तक यह

असहयोग आंदोलन चलता रहा। जब प्रशासन इसे दबा नहीं सका, तो अंग्रेज़ सरकार ने हस्तक्षेप किया। आंदोलन की लाहौर के कमिश्नर ने जांच की। आंदोलन के मुखिया बलाणा गांव के **लारजा, बस्सी** और **बिलू** को पकड़ कर दण्डित किया गया। कई आंदोलनकारियों को बन्दी बनाया गया। इस प्रकार आन्दोलन को सख्ती से दबा दिया गया।

बाघल में भूमि आन्दोलन (Land Movement in Baghal)—1897 ई॰ में बाघल रियासत के राजा ध्यान सिंह के समय में अत्यधिक भूमि-लगान के विरोध में 1897 ई॰ से लेकर 1902 ई॰ तक लोगों ने आन्दोलन चलाया। भूमि लगान में भारी वृद्धि, चरागाहों की कमी तथा उन जंगली जानवरों के मारने पर रोक लगाने, जो उनकी फसलों को नष्ट कर देते थे, के विरोध में किसानों ने आन्दोलन किये। बड़ोग गांव के ब्राह्मणों ने गांव में भारी जलसा किया और वे राजा के पास भी गये। अंग्रेज़ सरकार के हस्तक्षेप करने पर रिसायती सरकार ने लगान में कमी करके लोगों को शान्त किया, जिससे आन्दोलन समाप्त हो गया।

क्योंथल में भूमि आन्दोलन (Land Movement in Keonthal)—1897 ई० में क्योंथल रियायत में चार परगना के लोगों ने **लगान तथा बेगार** देना बन्द कर दिया। अंग्रेज़ अधिकारी **सैडमैन** और **टामस** ने इस असंतोष का निपटारा करने के लिये कहा परन्तु राजा बलबीर सेन (1882-1901) इससे निपट न सका। अत: अंग्रेज़ सरकार ने **मियां दुर्गा सिंह** को बतौर मैनेज़र 11 जुलाई 1898 ई० को नियुक्त किया और उसने स्थिति को ठीक किया।

थयोग और बेजा में आन्दोलन (Movement in Theog and Beja)—1898 ई०में बेजा लोगों ने ठाकुर के विरुद्ध आन्दोलन किया और रिसायत के दो सिपाहियों को बन्दी बना लिया। बेजा के शासक उदय चन्द ने अंग्रेज सरकार की सहायता से इस आन्दोलन को दबा दिया। आन्दोलनकारियों के कुछ नेताओं को बन्दी बना दिया। 1898 ई० में ही थयोग ठकुराई में बन्दोबस्त में गड़बड़ी के विरोध में किसानों ने आन्दोलन किया और उन्होंने बेगार देने से इन्कार कर दिया। रिसायती सरकार ने अंग्रेज सरकार की सहायता से लोगों को शान्त किया।

बाघल में विद्रोह (Revolt in Baghal)—1905 ई० में बाघल रिसायत में विद्रोह फैल गया। राजा विक्रम सिंह जब 1904 में गद्धी पर बैठा तो वह उस समय अवयस्क था। इसलिए राज्य का प्रबन्ध **मियां मान सिंह** के हाथ में था। इस आन्दोलन का आरम्भ तो राज परिवार के अपने घपले से आरम्भ हुआ परन्तु बाद में क्षेत्र के सभी कनैत लोगों ने राजा के प्रतिनिधि, शासक और उसके भाई के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। लोगों ने बढ़ा लगान देना बन्द कर दिया। राज्य में अशान्ति फैल गई। अन्त में शिमला की पहाड़ी रिसायतों के अंग्रेज सुपरिंटेंडेंट ने बाघल की राजधानी **अर्की** जाकर इसमें हस्तक्षेप किया और आन्दोलनकारियों को न्याय का आश्वासन देकर शान्त किया। साथ ही मियां शेर सिंह को कुमारसेन से स्थानान्तरण करके कौंसिल का सदस्य बना दिया। उसने भूमि-बन्दोबस्त आरम्भ किया और अन्य सुधार करके शान्ति की स्थापना की।

डोडरा क्वार में विद्रोह (Revolt in Dodra-Kawar)—1906 ई० में बुशैहर के गढ़वाल के साथ लगते क्षेत्र डोडरा-क्वार में एक विद्रोह हुआ। इस क्षेत्र का प्रशासन राजा की ओर से किन्नौर के गांव **पवारी** के वंशानुगत वज़ीर परिवार के **रणबहादुर सिंह** को दिया गया था। उसने राजा के विरुद्ध विद्रोह कर के डोडरा-क्वार को स्वतंत्र बनाकर अपने अधीन करने का प्रयास किया। उसने वहां की राजकीय आय भी बुशैहर के खज़ाने में जमा करनी बन्द कर दी। वहां के लोगों ने भी उसके समर्थन में बुशैहर राज्य के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। क्योंकि रणबहादुर उस समय का एक राष्ट्रवादी था। अन्त में उसे शिमला पहाड़ी रिसायतों के अंग्रेज़ अधिकारी के आदेश पर 1906 ई० में पकड़कर शिमला लाया गया और बन्दी बना लिया गया। उसने हड़प की गई राजकीय आय को वापस करना स्वीकार कर लिया। वहां बीमार होने पर उसे कैद से मुक्त कर दिया गया। उसकी मृत्यु शिमला में ही हो गई।

मण्डी में किसान आन्दोलन (Peasant Protest in Mandi)—1909 ई० में मण्डी में राजा भवानी सेन (1903-1912) के समय में एक किसान आन्दोलन हुआ। राजा का वज़ीर **जीवानन्द पाधा** एक भ्रष्ट, अत्याचारी और दुष्ट प्रशासक था। उसने किसानों को डरा-धमका कर सारे अनाज का व्यापार अपने भूमि हाथ में लिया था। इस के साथ ही किसानों पर अनेक प्रकार के कर लगा कर उनका आर्थिक शोषण भी करता रहा। उसने लोगों पर बेगार भी बढ़ा दी। रिसायत में भ्रष्टाचार भी बहुत बढ़ गया। ऐसी स्थिति में **सरकाघाट** क्षेत्र का **शोभाराम** 20 व्यक्तियों का एक शिष्ट-

मण्डल अपनी शिकायतों को लेकर राजा के पास मण्डी आया। राजा ने वजीर की बातों में आकर उनकी शिकायतों की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। दूसरी बार शोभाराम फिर 50 व्यक्तियों का शिष्ट-मण्डल लेकर राजा के पास आया। इस बार भी राजा ने उन की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। तीसरी बार वह 300 व्यक्तियों को लेकर आया। इस समय कुछ लोगों को आन्दोलन करने के लिये गिरफ्तार कर लिया। अन्त में शोभाराम के नेतृत्व में 20,000 के लगभग किसानों का जलूस मण्डी पहुंचा। उत्तेजित किसानों ने तहसीलदार **हरदेव** और अन्य अधिकारियों को पकड़कर जेल में बन्द कर दिया तथा कचहरी और थाने पर कब्जा कर लिया। रिसायत का प्रशासन अस्त-व्यस्त हो गया। सब जगह शोभाराम का आदेश चलने लगा। राजा भवानी सेन ने विवश होकर बर्तानवी सरकार से सहयता मांगी। कांगड़ा ज़िला के डिप्टी कमिशनर, कुल्लू के सहायक कमिश्नर कुछ सैनिकों को लेकर मण्डी पहुँचे। जालन्धर से कमिशनर **एच०एस० डैविज** भी समय पर मण्डी पहुँच गये। राजा ने लोगों की मांग पर वज़ीर जीवानन्द को पद से हटा दिया। उसके स्थान पर **मियां इन्द्र सिंह** को वज़ीर नियुक्त किया गया और कुटलैहड़ के **'टीका' राजेन्द्र पाल** को राजा का सलाहकार नियुक्त किया गया। किसानों के करों में कमी करके अनाज के खुले व्यापार का आदेश दे दिया गया। इसके पश्चात् स्थिति में सुधार हो गया।

1909 के सितम्बर मास में मण्डी रिसायत में ही एक और जन-आन्दोलन **बल्ह** क्षेत्र में **डोडावन** के किसानों ने किया। वहां के किसानों ने रिसायती सरकार के भूमि वन सम्बन्धी असंगत कानूनों के विरोध में प्रदर्शन किये और सरकारी आदेश मानने से इन्कार किया। इस आन्दोलन के नेता बड़सू गांव के **सिद्ध खराड़ा** थे। इस बार राजा के सलाहकार टीका राजेन्द्र पाल ने उस क्षेत्र का दौरा किया। कुछ लोगों को पकड़ लिया गया परन्तु बाद में छोड़ दिया गया। जांच करने के पश्चात् दोषियों को पकड़कर सज़ा दी गई। उनका नेता **सिद्धू खराड़ा** भाग कर हमीरपुर चला गया परन्तु बाद में मण्डी षड्यंत्र विवाद में पकड़ा गया और उसे सात वर्ष की सज़ा हुई।

नालागढ़ का जन आन्दोलन (Protest of Nalagarh)— 1918 ई० में नालागढ़ के पहाड़ी क्षेत्रों में चारगाहों तथा वन सम्बन्धी कानूनों के विरोध में जन आन्दोलन हुआ।राजा जोगिन्द्र सिंह तथा उसका वज़ीर **चौधरी राम जी लाल** इस आन्दोलन को दबा न सके। अन्त में अंग्रेज़ सरकार ने अपनी सेना भेजकर आन्दोलन को दबा दिया। सक्रिय आन्दोलनकारियों को जेल में डाल दिया। इस के पश्चात् लोगों ने रिसायती सरकार से असहयोग की नीति अपनाई। विवश होकर सरकार ने लोगों की शिकायतें दूर कर दीं और कानून बदल दिये। इस प्रकार वहां शान्ति-व्यवस्था स्थापित की गई।

कुनिहार में किसान आन्दोलन तथा बेगार के विरुद्ध आन्दोलन (Peasant Revolt and revolt against Begar in Kunihar)—1920 ई० में कुनिहार रिसायत में किसानों ने प्रशासन के अत्याचारों के विरोध में आन्दोलन किया। लोगों ने राणा के विरुद्ध आवाज़ उठाई। रिसायती सरकार ने अंग्रेज़ों की सहायता से इस आन्दोलन को दबा दिया और इसे उकसाने वालों को जेल में बन्द कर दिया। 1921 ई० कुनिहार के **बाबू कांशीराम** और कोटगढ़ के **सत्यानन्द स्टोक्स** ने पहाड़ी रिसायतों में **बेगार** के विरुद्ध आवाज़ उठाई। सत्यानन्द स्टोक्स ने **बेगार प्रथा** के विरुद्ध पहाड़ी रिसायतों में आन्दोलन चलाया। लोगों में इसके लिये जागृति पैदा करने के लिये उसने कई लेख लिखे तथा स्थान-स्थान पर सम्मेलन किये। सन् 1921 में स्टोक्स ने बुशैहर रियासत की राजधानी **रामपुर** में भी एक सम्मेलन किया। इसके पश्चात् बुशहर के राजा पदम् सिंह (1914-1947) ने रियासत में बेगार बन्द करने का आश्वासन दिया।

1924 का सुकेत आन्दोलन (Suket Movement of 1924)—1924 ई० में सुकेत के राजा लक्ष्मण सेन (1919) के समय में जनता से आवश्यकता से अधिक लगान लिया जाता था। बेगार प्रथा बड़े ज़ोरों पर थी। जो बेगार नहीं देता था, उसकी सम्पत्ति जब्त कर ली जाती थी। राजा के नाम से **'लक्ष्मण दण्ड कानून'** चलाया जाता था। 1924 ई०में बेगार, लगान और कर सीमा जब हद से बाहर हो गई तो आम जनता ने संघर्ष की राह पकड़ी। इसका नेतृत्व **बनैक** (सुन्दरनगर) के एक **मियां रत्न सिंह** ने किया। लोगों ने उसके नेतृत्व में कचहरी का घेराव किया। इस आन्दोलन में सुकेत के कई क्षेत्र के लोगों ने भी भाग लिया। राजा लक्ष्मण सेन ने स्थिति से निपटने के लिये पंजाब से 10 सितम्बर, 1924 को सेना मंगवाई। अंग्रेज गोरखा और पेशावरी सिपाहियों के साथ सुन्दरनगर आये। धर्मशाला से भी **कर्नल मीचिन** कुछ सैनिकों को लेकर आया। स्थिति को नाजुक देखकर रत्न सिंह ने लोगों को शान्त रहने को कहा। रत्न सिंह और

उसके साथियों को गिरफ्तार कर लिया गया और लोगों को डरा कर तितर-बितर कर दिया। 42 व्यक्ति पकड़े गये। उन्हें जालन्धर, लायलपुर, मुलतान, रावलपिण्डी आदि जेलों में रखा गया।

1926 के अक्तूबर मास में थ्योग ठकुराई में राणा पद्मचंद (1909) के प्रशासन के विरुद्ध जनता ने आन्दोलन किया। इसका नेता उसी का भाई **मियां खड़कसिंह** था। परन्तु बाद में यह आन्दोलन शिथिल पड़ता गया और खड़क सिंह अपने परिवार सहित खनेटी ठकुराई में जाकर बस गया। 1927 में फिर मियां खड़क सिंह ने खनेटी से पुनः इस आंदोलन को चलाया। इस बार इसमें राणा के पुत्र कर्मचन्द और राजमाता ने भी खुले रूप में जनता का साथ दिया। इस आन्दोलन को दबाने के लिये राणा ने अंग्रेज़ सरकार से सहायता मांगी। अतः डिप्टी कमिश्नर **सैलिसबरी** ने शिमला से पुलिस थ्योग भेजी। पुलिस ने मियां खड़क सिंह को गिरफ्तार कर किया और लोगों को तितर-बितर कर दिया।

सिरमौर में आन्दोलन (Sirmaur Movement)— मई 1929 ई॰ में सिरमौर में मनमाने ढंग से किए गए भूमि बन्दोबस्त के विरोध में पांवटा और नाहन के लोगों ने **पं॰ राजेन्द्र दत्त** के नेतृत्व में आन्दोलन किया। पांवटा के लोगों ने **राजा अमर प्रकाश** तथा अंग्रेज़ सरकार को विज्ञापन भेजे। पांवटा में जुलूस निकाले गये। राज्य सरकार ने बर्तानवी सरकार के कहने पर आन्दोलन को दबाने का प्रयास किया और थोड़े समय के पश्चात् आन्दोलन समाप्त हो गया।

बिलासपुर में जन आन्दोलन (Bilaspur Protest of 1930)—1930 में बिलासपुर में भूमि बन्दोबस्त के कारण एक बड़ा भारी विद्रोह उठ खड़ा हुआ। लोगों में बन्दोबस्त से भूमि लगान व अन्य कर बढ़ने की आशंका हो गई। इसलिये लोगों ने भूमि बन्दोबस्त का विरोध किया। सबसे पहले परगना बहादुरपुर के लोगों ने बन्दोबस्त के विरुद्ध आन्दोलन छेड़ा। उन्होंने बन्दोबस्त के कर्मचारियों को लकड़ी, दूध, घी, रोटी आदि मुफ्त देना बन्द कर दिया। इस पर कर्मचारियों ने सख्ती करनी आरम्भ कर दी। बहादुरपुर के लोगों ने तंग आकर पटवारियों के पैमाईश के सामान को तोड़-फोड़ दिया। राज्य के लगाये भारी भू-राजस्व कर की शिकायतों से उत्पन्न स्थिति को कौंसिल का अध्यक्ष पी॰एल॰चन्दूलाल ठीक प्रकार से न सम्भाल सका और लोगों में असंतोष फैल गया। इस पर आंदोलनकारियों से निपटने के लिये लाहौर से रैज़ीडेन्ट जैम्स फिट्ज पैट्रिक के सचिव पर एडवर्ड वेकफील्ड को कुछ और सैनिकों को देकर बिलासपुर भेजा गया। पुलिस नमहोल गांव में मेले के अवसर पर एकत्रित कुछ आन्दोलनकारियों को पकड़ कर बिलासपुर ले गई। कुछ आंदोलनकारियों को हिरासत में ले कर जेलों में बंद कर दिया। पुलिस द्वारा इस बगावत में डण्डा चलाने के कारण इस आन्दोलन का नाम **'डाण्डरा'** आन्दोलन पड़ गया।

पझौता किसान आन्दोलन (Peasants Pajauta Andolan of 1942-43)— 1942-43 ई॰ में सिरमौर के ऊपरी क्षेत्र पझौता के लोगों ने अपनी शिकायतों को लेकर एक किसान आन्दोलन चलाया। इस समय दूसरा विश्वयुद्ध जोरों पर था। उधर बंगाल में अकाल पड़ा हुआ था। अन्न की कमी अनुभव हो रही थी। इसलिये रियासती सरकार ने किसानों पर रियासत से बाहर अनाज भेजने पर रोक लगा दी जहां उन्हें बेचने पर अच्छे मूल्य मिलते। किसानों को यह आदेश भी दिया गया कि वे लोग अपने पास थोड़ा अन्न कर शेष अन्न सरकारी कोआपरेटिव सोसायटियों में बेच दें। राज्य में **घराट, रीत विवाह कर** आदि **अनुचित कर** लगाये गये थे। कर्मचारी लोगों से अधिक बेगार लेने लगे। पझौता के गांव टपरौली में अक्तूबर 1942 को किसान एकत्रित हुये और स्थिति से निपटने के लिये "पझौता किसान सभा" का गठन किया। इसके प्रधान **लक्ष्मी सिंह** गांव कोटला तथा सचिव **वैद्य सूरत सिंह** कटोगड़ा चुने गये। इसके अतिरिक्त टपरौली गांव के **मियां गुलाब सिंह** और **अतर सिंह**, उदोल के **चूं चूं मियां**, पैणकुफर के **मेहर सिंह**, धमाला के **मदन सिंह**, वघोट के **जालम सिंह**, नेरी के **कलीराम शावणी** आदि-आदि। कुछ समय के पश्चात् लक्ष्मी सिंह प्रधान के स्थान पर धामला गांव के मदन सिंह को प्रधान बना दिया। इस आन्दोलन का समूचा नियंत्रण व संचालन **वैद्य सूरत सिंह** के हाथ में था। उसने राजा राजेन्द्र प्रकाश को पत्र लिखकर अनुरोध किया कि वह स्वयं लोगों की परेशानियां जानने के लिये इलाके का दौरा करें। सिरमौर नरेश राजेन्द्र प्रकाश कर्मचारियों की चापलूसी पर आश्रित था। उन्होंने राजा को लोगों से मिलने नहीं दिया। अतः राजा ने पुलिस अधिकारी के संचालन में पुलिस गांव **धामला**, हाब्बन भेजी दी। वह आन्दोलन को दबा न सका। इसके पश्चात् समूचा पझौता क्षेत्र सैनिक शासन के अधीन कर दिया गया। दो मास तक लोग बराबर

मार्शल लॉ के अधीन आन्दोलन करते रहे। इसी दौरान कमना नामक एक व्यक्ति की गोली लगने से मृत्यु हो गई। दो मास के पश्चात् सैनिक शासन और गोलीकाण्ड के बाद सेना और पुलिस ने आन्दोलनकारियों के मुख्य व्यक्तियों को गिरफ्तार कर लिया। कुछ लोगों ने भाग कर रियासत जुब्बल में शरण ली। जुब्बल के राजा भक्त चंद ने उन्हें बड़ा सम्मान दिया। नाहन में एक ट्रिब्यूनल बैठा कर आन्दोलनकारियों पर मुकद्दमे चलाये गये। पांच वर्षों में परिवर्तित कर दिया गया। दस वर्ष में वैध सूरत सिंह, मियां गुलाब सिंह, अमर सिंह, मदन सिंह, कालीराम आदि को दस साल की सजा दी गई।

बेगार प्रथा तथा उसके विरोध में आन्दोलन (Begar and Movements against it)- बिना वेतन अथवा मज़दूरी दिये श्रमिकों से काम करवाने को बेगार कहा जाता है। निरंकुश शासक अपने दासों तथा कैदियों से प्राय: बिना मज़दूरी दिए ही काम लेते थे। वे उन्हें सड़कें, किले, महल आदि बनवाने के कार्यों में लगाते तथा सख्ती से काम लेते। उन्हें को केवल पेट भरने के लिए ही खाना दिया जाता ताकि वे जीवित रह सकें। श्रमिकों को श्रम के बदले अन्य कुछ भी नहीं दिया जाता था। मध्य काल में जागीरदार भी बन्धक मज़दूरों से बेगार लेते थे। अंग्रेज़ों के पहाड़ी रियासतों पर आधिपत्य के बाद बेगार प्रथा को और भी अधिक बल मिला, क्योंकि अंग्रेजी सरकार रियासतों को सनद देते समय बेगार की शर्त को प्राय: उसमें लिख देती थी। इस प्रकार बेगार की प्रथा पहाड़ी रियासतों के लिए एक अभिशाप बन गई थी।

बेगार लेने को श्रमदान अर्थात् श्रम के रूप में दान देना कह कर लोगों को भ्रमित किया जाता था। अंग्रेज़ी काल में बेगार को कठोरता से लिया जाने लगा। इसके अन्तर्गत रियासत के प्रत्येक परिवार के एक व्यक्ति को वर्ष में 6 महीने रियासत के लिए काम करना पड़ता था। श्रमिकों को रियासती सरकार राज्य के कार्यों में लगाती थी। वे अंग्रेज़ अफसरों का बोझ ढोते तथा उनके घरों में काम करते। वे रियासत के महलों में काम करते। बेगार करने वाले मज़दूरों को मजजदूरी तथा भोजन भी नहीं मिलता था।

आंग्ल-गोरखा युद्ध के बाद जब पहाड़ी रियासतों पर अंग्रेज़ों का आधिपत्य हो गया तो रियासतों के लिए बेगार को अनिवार्य कर दिया गया। रियासतों को अपने क्षेत्र से प्राप्त राजस्व के अनुपात में बेगार देना होता था, जो उनके लिए कठिन था। अत: अंग्रेज़ी सरकार को बेगार लेने से पहले बड़ा ध्यान रखना पड़ता था। सरकार भी बेगार प्रथा के कारण लोगों तथा रियासत को होने वाली कठिनाइयों तथा अन्याय से परिचित थी। परन्तु अंग्रेज़ी सरकार बिना धन खर्च किये रियासतों में काम करवाना भी चाहती थी। इसलिए बेगार प्रथा को पूरी तरह से समाप्त करना सरकार के लिए कठिन कार्य था। इस प्रकार बेगार प्रथा का प्रचलन अंग्रेजी काल में पहाड़ी रियासतों में प्राय: चलता रहा।

उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त में तथा बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में देश के लोगों में जागृति आने लगी, जिसका प्रभाव पहाड़ी रियासतों पर भी पड़ा। पहाड़ी रियासतों की जनता बेगार प्रथा के विरुद्ध आवाज़ उठाने लगी तथा इसके विरोध में आन्दोलन भी होने लगे। 1859 ई. में रामपुर बुशहर में बेगार की प्रथा की समाप्ति के लिए आन्दोलन किया गया।

1883 ई. में बिलासपुर में वहां के राजा अमर चन्द के विरुद्ध उसकी तानाशाही तथा बेगार की प्रथा के विरुद्ध आन्दोलन हुआ, जिसमें वहां की जनता ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। अन्त में 1884 ई. में राजा ने बेगार की प्रथा को समाप्त कर दिया।

1885 ई. में चम्बा के राजा शामसिंह के काल में ब्रिटिश अफसरों के आदेश पर बेगार की अधिक मांग की जाने लगी तथा बेगार के नियम भी कठोर कर दिए गए। वहां के लोगों ने रियासत के राजा तथा अंग्रेजी सरकार से इसके बारे में प्रार्थना की परन्तु उसकी ओर कोई ध्यान न दिया गया। अत: विवश हो कर लोगों ने आन्दोलन की राह अपनाई। लोगों ने बेगार सेवा देनी बन्द कर दी तथा सार्वजनिक कार्यों का बहिष्कार कर दिया। ब्रिटिश सरकार तथा रियासती प्रशासन ने आन्दोलन को कठोरता से दबा दिया।

1898 ई. में बेजा रियासत में बेगार के विरुद्ध आन्दोलन हुआ। राजा ने आन्दोलनकारियों को जेल भेज दिया। ठियोग में भी किसानों ने बेगार देने से इन्कार कर दिया। रियासती सरकार ने अंग्रेज़ों की सहायता से आन्दोलन को दबा दिया।

1909 में मण्डी में भी बेगार के विरोध में लोगों में आक्रोश की भावना पनपने लगी तथा उन्होंने प्रशासन के विरुद्ध आन्दोलन आरम्भ कर दिया, जिसका नेतृत्व शोभा राम ने किया। लोगों ने मण्डी में प्रदर्शन किए तथा वजीर को पद से हटाने की मांग की। अन्त में वजीर को हटा दिया गया, जिससे लोग शान्त हो गए तथा आन्दोलन समाप्त हो गया।

बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में कुनिहार के बाबू कांशी राम तथा कोटगढ़ के सत्यानन्द स्टोक्स ने पहाड़ी रियासतों

में बेगार प्रथा के विरुद्ध आवाज उठाई। स्टोक्स ने इस प्रथा के विरुद्ध आन्दोलन चलाया तथा लोगों को जागृत करने के लिए समाचार पत्रों में लेख लिखे गए। 1921 में स्टोक्स के नेतृत्व में रामपुर में एक सम्मेलन हुआ जिसके बाद बुशैहर के राजा पद्म सिंह ने रियासत में बेगार बन्द करने का आश्वासन दिया।

1932 में चम्बा में 'सुरक्षा लीग' की स्थापना हुई जिसमें भारी करों तथा बेगार प्रथा के बारे में विचार किया गया। 1936 में चम्बा सेवक संघ गठित किया गया, जिसने बेगार प्रथा को समाप्त करने के लिए जन आन्दोलन किए। 1939 में प्रेम प्रचारिणी सभा को धामी प्रजा मण्डल में बदल दिया गया, जिसने धामी के राजा को लोगों पर होने वाले अत्याचारों के प्रति अवगत करवाया तथा अनेक मांगों के साथ-साथ बेगार प्रथा को समाप्त करने की मांग भी की। राणा ने उनकी मांगों की ओर ध्यान नहीं दिया, जिसके कारण लोगों ने भागमल सोहटा के नेतृत्व में राणा के निवास स्थान का घेराव किया तथा राणा ने भीड़ को तितर-बितर करने के उद्देश्य से गोली चलाने का आदेश दे दिया। परिणाम स्वरूप गांव का दुर्गादास तथा उमा दत्त शहीद हो गए। इस घटना को इतिहास में धामी गोली कांड के नाम से जाना जाता है।

1939 में शिमला में 'बुशैहर रियासत प्रजामण्डल' की स्थापना की गई। जिसके कार्यकर्ताओं ने एक मांगपत्र बुशहर दरबार में भेजा। इस मांगपत्र में अधिकारों, बेगार को समाप्त करने तथा प्रतिनिधि सरकार के गठन की मांग की गई। 1946 में शांगरी के चिरंजीलाल वर्मा ने बेगार के विरुद्ध आन्दोलन किया।

उपरोक्त आन्दोलनों के फलस्वरूप बेगार प्रथा पर अनेक पहाड़ी रियासतों ने रोक लगा दी। शिमला ज़िले में 1916 में बेगार प्रथा को पूरी तरह से समाप्त कर दिया गया। अंग्रेज़ी सरकार ने भी बेगार प्रथा को अन्याय समझते हुए इस पर रोक लगाने का प्रयास किया। कई रियासतों में इसे रोकने के उद्देश्य से रियासतों से बेगार लेने को कोटा समाप्त करने का निर्णय लिया गया तथा बेगार प्रथा को समाप्त करने के लिए रियासतों के शासकों के साथ बातचीत की गई। यह भी निर्णय लिया गया कि बेगार के कोटे को मज़दूरी देने में बदल दिया जाए। इस प्रकार रियासतों द्वारा मज़दूर तथा गधे किराए पर लेने की व्यवस्था आरम्भ हुई।

दूसरी प्रकार के आन्दोलन-स्वतंत्रता आन्दोलन
(Second Type of Movement-Freedom Movement)

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना (Foundation of Indian National Congress)— देश की स्वतंत्रता के लिये आन्दोलन चलाने वालों में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (इण्डियन नैशनल कांग्रेस) का प्रथम स्थान रहा है। कांग्रेस के संगठन की कल्पना भारतीय सेवा से अवकाश प्राप्त एक स्काटलैण्डवासी **एलन आकटेवियन ह्यूम** का यह विचार था कि कांग्रेस केवल सामाजिक समस्या को अपने हाथ में ले। परन्तु उसने शिमला में जब अपने मन की बात गर्वनर जनरल लार्ड डफरिन के सामने रखी, तब डफरिन ने सुझाव के तौर पर उसे अपनी राय दी कि भारतीय राष्ट्र-कल्याण को दृष्टि में रख इस संस्था को स्वतंत्र राजनैतिक संस्था के रूप में रहने दें। इसका नाम अधिवेशन बम्बई में **28 दिसम्बर 1885 ई॰** को **गोकुलदास तेजपाल संस्कृत कालेज** के हाल में हुआ। मुख्य प्रतिनिधियों में शिमला से ए॰ ओ॰ ह्यूम थे। सम्मेलन का सभापतित्व बैरिस्टर **वमेश** चन्द्र बैनर्जी ने किया। आरम्भ में इस संस्था का अंग्रेज़ सत्ता से कोई द्वेष नहीं था। उस समय इसका उद्देश्य भारतीयों को प्रशासन में हिस्सा दिलाना तथा ऊँचे पदों पर नियुक्तियाँ करवाने से था। इस समय तक ऊँचे पदों पर अंग्रेज अधिकारी ही लगाये जाते थे। समय के साथ इसकी नीतियों में परिवर्तन आये और यह देश की एक राजनैतिक संस्था बन गई।

गदर पार्टी की स्थापना (Formation of Gadar Party)— उस समय देश से बाहर विदेशों में भी भारतीय देश को स्वतंत्र करवाने के प्रचार में लगे हुए थे। 1911 ई॰ में लाला **हरदयाल** भारत से भाग कर फ्रांस होते हुये अमेरिका में स्थित सेन फ्रांसिस्को पहुंच गये। 1913 ई॰ में उनकी पहल पर और 1857-59 के जन-विद्रोह की स्मृति में उन्होंने 'गदर' नामक समाचार पत्र आरंभ किया। उसी वर्ष अमेरिका में विभिन्न भारतीय समुदायों के प्रतिनिधियों के सम्मेलन में **'इण्डिन एसोसिएशन'** नामक संगठन स्थापित किया और उसके प्रमुख नेता भी **हरदयाल** बने। शीघ्र ही इसका नाम बदल कर **गदर पार्टी** रख दिया गया। इसकी कई देशों में शाखायें थी। अमेरिका में ये साप्ताहिक अखबार 'गदर' कई भारतीय भाषाओं में निकालते थे।

1913 ई० में मण्डी के **हरदेव राम** अध्यापक की नौकरी छोड़कर अमेरिका होते हुये जापान पहुंचे। वहां से वे शंघाई चले गये। वहां उन की भेंट गदर पार्टी के नेता **डा० मथुरा सिंह** से हुई। उच्च शिक्षा प्राप्ति का लक्ष्य छोड़कर हरदेव राम गदर पार्टी में शामिल हो गये। लाला हरदयाल की गदर पार्टी का बहुत सा साहित्य लेकर 1914 ई० में हरदेव एक क्रांतिकारी बनकर भारत वापस लौटे और गदर पार्टी का प्रचार आरंभ किया। उन्होंने मण्डी में भी बहुत काम किया।

मण्डी षड्यंत्र (Mandi Consipacy)—प्रसिद्ध **मण्डी षड्यंत्र** की 1914-15 की घटना गदर पार्टी से प्रभावित होकर घटी। गदर पार्टी के कुछ लोग जब अमेरिका से वापस आये और उन्होंने मण्डी और सुकेत की रियासतों के लोगों में अपने समर्थक बनाने के लिए कुछ कार्य आरंभ किया। 'गदर की गूंज' साहित्य को पढ़कर उन्होंने लोगों को उकसाया। मण्डी की रानी खेरागढ़ी और मियां जवाहर सिंह उनके प्रभाव में आ गये। रानी ने धन देकर उन लोगों की सहायता की। दिसम्बर 1914 और जनवरी 1915 में गुप्त बैठकें करके यह निर्णय लिया गया कि पुलिस अधिकारी और वज़ीर को मार दिया जाये और सरकारी कोष को लूटा जाये तथा ब्यास नदी पर बने पुल को उड़ा दिया जाये। इसके पश्चात् मण्डी और सुकेत की रियासतों पर अधिकार किया जाये। केवल एक नागचला डाके के इलावा वे अपने सभी उद्देश्यों में असफल रहे। इस असफलता के फलस्वरूप रानी खेरागढ़ी को मण्डी से निर्वासित कर दिया गया। गदर पार्टी के एक कार्यकर्ता **'भाई हिरदा राम'** को पंजाब भेज कर बम बनाने का प्रशिक्षण ग्रहण करने का कार्य सौंपा गया। इस पार्टी के कार्यकर्त्ताओं की पकड़-पकड़ में भाई हिरदा राम पकड़ा गया और लाहौर में षड्यंत्र के मुकद्दमे में उसे प्राण-दण्ड दिया गया। बाद में इस दण्ड को उम्रकैद में बदल दिया गया। इस पकड़-पकड़ में हरदेव भागने में सफल हो गया और वह भागकर गढ़वाल में बद्रीनाथ पहुँच गया। उसने अपना नाम बदल कर **स्वामी कृष्णानंद** रख लिया तथा कांग्रेस पार्टी में शामिल हो कर 1917 ई० में सिन्ध प्रान्त अहिंसात्मक आन्दोलन में कूद पड़ा। अंत में सभी क्रांतिकारी पकड़े गये और उन पर मुकद्दमें चला कर लम्बी-लम्बी कैद की सजायें दी गईं। उन में मुख्य थे-**जवाहर नरयाल, मियां जवाहर सिंह, बद्रीनाथ, सिद्धू खगड़ा, ज्वाला सिंह, शारदा राम, दलीप सिंह, लौंगूराम** और **सिद्ध दूसरा**। बाद में हिरदा राम को काला पानी की सजा के लिये अण्डेमान भेज दिया गया। इसके पश्चात् मण्डी का क्रांतिकारी संगठन कमज़ोर पड़ गया।

1916 ई० के आरंभ में मण्डी, सुकेत और ऊना में गदर पार्टी के क्रांतिकारी फिर से सक्रिय हो गये। उन्होंने अंग्रेज अफसरों को मारने की योजना बनाई। इस बार मण्डी के कार्यकर्त्ता पकड़े गये। उन में से पांच पर मुकद्दमा चलाया गया और उन्हें चौदह से अठारह वर्ष की सज़ा हुई। ऊना के क्रांतिकारी **ऋषिकेश लट्ठ** के क्रांतिकारी दल का भी भेद खुल गया और वे भूमिगत हो गये तथा कुछ समय बाद ईरान पहुँचकर गदर पार्टी में शामिल हुये।

कांग्रेस आन्दोलन का आरम्भ (Beginning of Congress Movement)—**मोहन दास कर्म चन्द गांधी** 1914 में दक्षिणी अफ्रीका से लौट कर भारत आये और राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन में उनका भवतरण हुआ। कांग्रेस के भीतर गांधी जी का प्रभाव तेज़ी से बढ़ने लगा और वे राष्ट्रीय आन्दोलन के सर्वमान्य नेता बनने लगे। सन् 1920 ई० से कांग्रेस आन्दोलन ने ज़ोर पकड़ा। इसी वर्ष नाहन-सिरमौर के चौधरी शेर जंग ने कांग्रेस की सदस्यता ली और जन-आन्दोलन में कूद पड़े। सिरमौर के दूसरे देश भक्त **पं० राजेन्द्र दत्त** भी इसी अवधि में कांग्रेस में शामिल हो गए और सिरमौर में स्वाधीनता आन्दोलन आरम्भ किया। कांगड़ा में पालमपुर में **लाला बाशीराम**, देहरा-गोपीपुर में **बाबा कांशीराम** प्रमुख थे। 1920 ई० में ही गांधी जी के आह्वान पर कांगड़ा में **पंचम चन्द्र कटोच, सर्व मिश्र, बाशी राम, कृपाल सिंह, सिद्धू राम, थोहली राम** आदि लोग भी कांग्रेस के कार्यकर्ता बन गये। मई 1921 ई० में शिमला में कांग्रेस का पहला प्रतिनिधि संगठन बनाया गया। इसमें शिमला नगर के **मौलवी गुलाम मुहम्मद** कांग्रेस के प्रधान चुने गये। इसके अतिरिक्त **भागीरथ लाल** उप प्रधान, **मुहम्मद उमर नुमानी** मंत्री, **द्वारिका प्रसाद** उपमंत्री और **लाला घुंघर मल** खजांची चुने गये। मौलवी अब्दुलगनी, चिरंजी लाल आढ़ती, हरिश्चन्द्र, गोकुल चन्द, प्यारे लाल, केदारनाथ सूद, राणा होशियार सिंह, राम किशन बजाज, स्वामी रामानंद, मोहन लाल सूद और वकील हरिश्चन्द्र सूद शिमला कांग्रेस कमेटी की कार्यकारिणी के सदस्य बनाए गए।

महात्मा गांधी का शिमला आगमन (Mahatama Gandhi's Coming to Shimla) –11 मई 1921 को गांधी जी शिमला पधारे। उनके साथ **मौलाना मुहम्मद अली, शौकत अली, लाला लाजपतराय, मदन मोहन मालवीय, लाला दूनी चन्द**

अम्बालवी आदि नेता भी शामिल थे। 13 मई को गांधी जी वायसराय लार्ड रीडिंग से मिले। दूसरे दिन गांधी जी ने लोअर बाज़ार शिमला के आर्य समाज के हाल में महिलाओं को सम्बोधित किया। 15 मई को उन्होंने पन्द्रह हजार से अधिक के एक जन समूह को ईद-गाह पर सम्बोधित किया। शिमला के आस-पास के पहाड़ी क्षेत्रों से भी लोग गांधी के दर्शन के लिये आये थे। गांधी जी के शिमला आगमन ने इस पर्वतीय क्षेत्र के लोगों का ध्यान राष्ट्रीय विचारधारा की ओर आकृष्ट किया। लगभग 1923 के पश्चात् जुब्बल रियासत के गांव धार के इंजीनियर **भागमल सौहटा** ने राष्ट्रीय आन्दोलन में प्रवेश किया। सन् 1922-1923 तक शिमला में क्रांगेस आन्दोलन ने ज़ोर पकड़ा। इसमें पंडित **गैंडामल, मौलाना मुहम्मद नौनी, अब्दुल गनी, गुलाम मुहम्मद नकबी, ठाकुर भागीरथ लाल, हकीम त्रिलोकीनाथ** भाग लेने वाले प्रमुख व्यक्ति थे।

कुछ समय पूर्व अमेरिका से आये एक व्यक्ति **सेमुअल इवांस स्टोक्स** ने शिमला पहाड़ियों के ऊपरी भाग कोटगढ़ में रहना आरंभ किया। उसने गांधी जी के विचारों से प्रभावित होकर **बेगार की प्रथा** के विरुद्ध सारी पहाड़ी रियासतों में आन्दोलन चलाया। उन्होंने हिन्दू धर्म अपना लिया और सत्यानंद स्टोक्स बन गया। असहयोग आन्दोलन में भाग लेने के कारण उन्हें बन्दी बना लिया गया और 24 मार्च 1923 को अन्य लोगों के साथ शिमला में कैथू जेल से रिहा किया। सत्यानंद स्टोक्स ने जेल से रिहा होने के पश्चात् पहाड़ी रियासतों में अपना समाज-सुधार और राजनैतिक जागृति का कार्यक्रम जारी रखा।
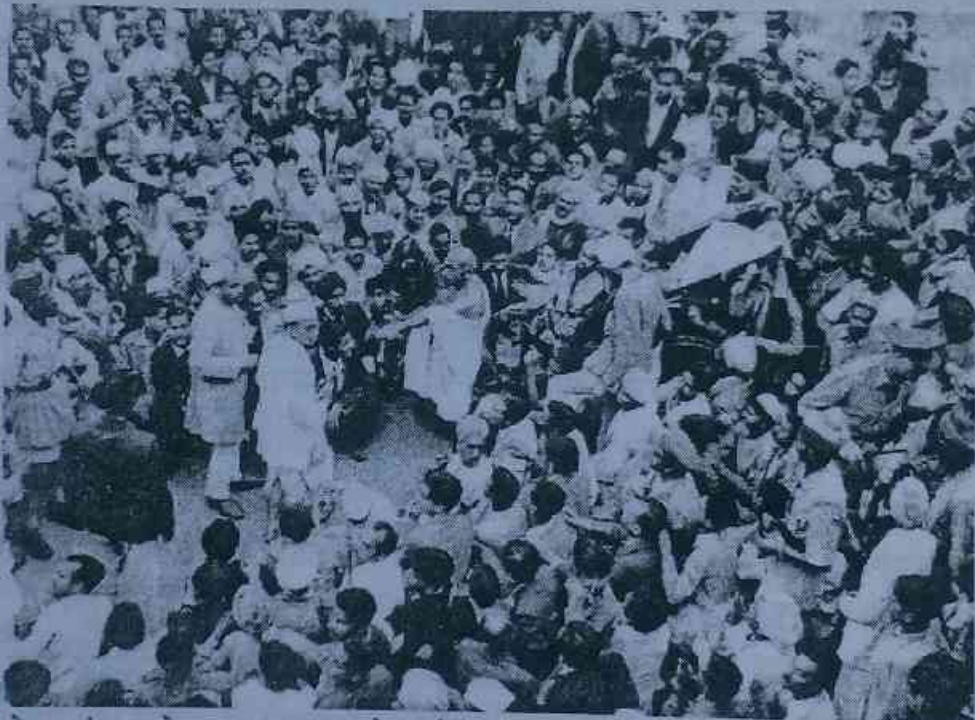
कांगड़ा के जो लोग कांगड़ा से बाहर काम करने वाले कांगड़ा के लोग भी राष्ट्रीय आन्दोलन से प्रभावित होते रहे। जब वे वापस अपने गांव आते तो वे कांग्रेस के कार्य को चलाते और उन के जलसों में भाग लेते। ऐसा ही एक सम्मेलन 1927 में सुजानपुर के पास ताल में हुआ, जिसमें बलोच सिपाहियों ने लोगों को बुरी तरह पीटा। इस मार-पीट में **ठाकुर हज़ारा सिंह, बाबा कांशीराम** (पहाड़ी गांधी), **गोपाल सिंह** और **चतुर सिंह** भी शामिल थे। सिपाहियों ने उनकी गांधी टोपियां भी उनसे छीन ली। इसके विरुद्ध पहाड़ी गांधी बाबा कांशीराम ने शपथ ली कि जब तक भारत स्वतंत्र नहीं होता वह काले पकड़े पहनेंगे। कांग्रेस के आन्दोलन में बाबा कांशीराम और हज़ारा सिंह का योगदान बहुत महत्त्वपूर्ण है।

शिमला में कांग्रेस का पुनर्गठन (Reformation of Congress in Shimla)— सन् 1929 ई० में शिमला में कांग्रेस को पुन: संगठित किया गया, जिससे सदस्यों की संख्या बहुत बढ़ गई। मौलवी गुलाम मुहम्मद, मुहम्मद उमर नुमानी, द्वारिका प्रसाद, सुन्दर लाल, भागीरथ लाल, डा. नन्द लाल वर्मा, लाला गेंडा मल, दीनानाथ आंधी, रूप लाल मेहता, सालिगराम, गुप्ता, कन्हैया लाल बुटेल, मेला राम सूद, कर्म चन्द सूद, खुशीराम, हरिशचन्द्र, होशियार सिंह राणा, गोकुल चन्द, प्यारे लाल मेहरचन्द, चिरंजी लाल, राम कृष्णन बजाज, स्वामी रामानन्द, लाला घुघर मल आदि सदस्य कांग्रेस के कार्य में बढ़-चढ़ कर भाग लेते रहे। इनके अतिरिक्त जुब्बल का **भागमल सौहटा,** कोटगढ़ के **सत्यानन्द स्टोक्स**, बुशैहर के **पं. पद्मदेव**, थियोग के **सूरत राम प्रकाश**, पालमपुर के **कन्हैया लाल बुटेल**, कोटी के **ठाकुर गौरी**

दत्त, कुनिहार के **बाबू कांशीराम** आदि अनेक पहाड़ी रियासतों के आन्दोलनकारी भी शिमला नगर में आकर कांग्रेस के कार्यों में बढ़-चढ़ भाग लेते रहे।

सविनय अवज्ञा आन्दोलन (Disobedience Movement)— 27 फरवरी 1930 को गांधी जी ने देश में सविनय अवज्ञा आन्दोलन आरम्भ करने की घोषणा की। शिमला तथा कांगड़ा के कांग्रेसी कार्यकर्ताओं ने इस आन्दोलन में भाग लिया। इस के बारे में स्थान-स्थान पर जलसे होते रहे और जुलूस निकाले गये। बहुत से कांग्रेस के लोग पकड़ लिए गये और उन्हें जेल भेज दिया गया। इस सविनय आन्दोलन के लिये शिमला में लाला गेंडामल, डा० नन्द लाल बर्मा, लक्ष्मी देवी, रूप लाल मेहता, सुन्दर दास लखन पाल, सत्यवती खोसला, द्वारिका प्रसाद, नवल किशोर, वायुदेव, दीनानाथ आन्धी आदि लोग गिरफ्तार किये गये और उन्हें कड़े कारावास की सज़ा दी गई। 20 जुलाई, 1930 तक शिमला में 494 सत्याग्रही पकड़े गये और दण्ड देकर शिमला, अम्बाला, लुधियाना, मुलतान, लाहौर, म॰ऊंटगुमरी और अमृतसर जेलों में भेज दिया गया। कांगड़ा में भी अक्तूबर 1930 तक 700 सत्याग्रही गिरफ्तार कर लिये गये थे।

गांधी इरविन समझौता (Gandhi Irwin Pact)—सविनय अवज्ञा आन्दोलन से निटपने के लिये वायसराय लार्ड इरविन ने मार्च 1931 को समझौता करने के लिये गांधी जी को शिमला बुलाया। उनके साथ **जवाहर लाल नेहरू, मौलाना अब्दुल कलाम आज़ाद, खान अब्दुल गफ्फार खान, मदन मोहन मालवीय, डा० अन्सारी** भी थे। आगे बात करने के लिये 5 मई 1931 को वे फिर शिमला आये। इस बार गांधी जी ने गिरजा मैदान में भाषण भी दिया। इरविन-गांधी समझौता पर हस्ताक्षर करने के लिये गांधी जी एक बार 25 अगस्त 1931 को शिमला पधारे। उनके साथ **जवाहर लाल नेहरू, सरदार वल्लभ भाई पटेल** तथा **सर प्रभाशंकर पट्टनी** भी थे।

3 सितम्बर 1939 को दूसरा विश्व-युद्ध आरम्भ हो गया। इसी काल में कांगड़ा व अन्य पहाड़ी क्षेत्रों में कांग्रेस के विशाल राजनैतिक सम्मेलन होते रहे। इस उद्देश्य से कांगड़ा क्षेत्र में लगभग 60 और हमीरपुर क्षेत्र में 40 कांग्रेस कमेटिएं बनाई गईं। कांग्रेस के बढ़ते हुये प्रभाव को देखकर अंग्रेज़ सरकार ने इसे दबाने का प्रयास किया। इसलिये सरकार ने बड़े -बड़े नेताओं पर झूठे मुकद्दमे बना कर उन्हें गिरफ्तार किया और डिफेन्स आफ इंडिया एक्ट लागू कर दिया। इस दमन-चक्र के कारण **बाबा कांशीराम, महाशय बैसाखी राम, ब्रह्मानन्द** आदि गिरफ्तार करके धर्मशाला जेल में रखे गये। 22 अक्तूबर 1939 ई० को शिमला में भी इस अधिनियम के अन्तर्गत सक्रिय कांग्रेसजन पकड़े गये। इनमें **डॉ० नन्द लाल वर्मा, दीनानाथ आंधी, मुन्शी अहमद्दीन, हरिराम शर्मा** आदि थे। इनमें से डॉ० नन्द लाल वर्मा और हरि राम शर्मा को बिना शर्त छोड़ दिया गया और दूसरों को 6 मास की सज़ा दे दी गई।

व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन (Induidual Satyagrah Movement)—17 अक्तूबर 1937 ई० में गांधी जी ने व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन आरम्भ किया। शिमला में इस सत्याग्रह में **पं० पद्मदेव**, कांग्रेस के प्रधान **श्याम लाल खन्ना** और महामन्त्री **सालिग राम शर्मा** आदि प्रमुख व्यक्ति थे। पहाड़ी क्षेत्र में सत्याग्रह का नारा 'न भाई दो', 'न पाई दो' का नारा खूब गूंजा जिसे बाद में प. पद्म देव ने 'भाई दो न पाई दो' के नारे में बदल दिया। उन्होंने गंज में जनसभा की और भाषण दिये। पुलिस ने पद्मदेव को पकड़ कर कैथू जेल भेज दिया। बाद में 18 मास की सजा देकर उन्हें लुधियाना और गुजरात की जेलों में बन्दी बना कर रखा गया। नवम्बर 1940 में कांगड़ा क्षेत्र में व्यक्तिगत सत्याग्रह के संचालन के लिये एक समिति बनाई गई। इस समिति में ठाकुर हजारा सिंह, पं० परस राम तथा ब्रह्मानन्द मुख्य थे। कांगड़ा नगर में **लाला मंगतराम खन्ना** प्रमुख थे। अन्य स्थानों में भी कई लोगों ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया और गिरफतारियां दीं। अप्रैल 1941 ई० तक कांगड़ा में व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन में असंख्य सत्याग्रही गिरफ्तार हो चुके थे। 1941 में 'भाई दो न पाई दो' का नारा लोकप्रिय आन्दोलन के रूप में प्रसिद्ध हुआ। 4 दिसम्बर 1941 को गांधी जी ने व्यक्तिगत सत्याग्रही आन्दोलन को स्थगित कर दिया। परिणास्वरूप सभी गिरफ्तार नेताओं को रिहा कर दिया गया। इस प्रकार आन्दोलन समाप्त हो गया।

भारत छोड़ो आन्दोलन (Quit India Movement)–14 जुलाई 1942 ई० को कांग्रेस की कार्यकारिणी सभा ने वर्धा में गांधी जी के 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव को पारित किया। 7-8 अगस्त, 1942 ई० को अखिल भारतीय-कांग्रेस कमेटी की बम्बई बैठक में 'भारत छोड़ो आन्दोलन' को चलाने का निर्णय लिया गया। गांधी जी को इस आन्दोलन का

नेतृत्व सौंपा गया। शिमला, कांगड़ा और अन्य पहाड़ी क्षेत्रों में ''अंग्रेजो भारत छोड़ो'' के सम्बन्ध में जलसे-जुलूस और आन्दोलन आरम्भ हुये तथा 'भाई दो न पाई दो' का नारा गांव-गांव में गूंजा। इस आन्दोलन के दौरान शिमला में **भागमल सोहटा, पं० हरिराम, चौधरी दीवान चन्द, सालिगराम शर्मा, नन्द लाल वर्मा, तुफैल अहमद, ओम प्रकाश चोपड़ा, सन्त राम, हरिचन्द** आदि आन्दोलनकारी गिरफ्तार किये गये। उन्हें कड़े कारावास की सजा देकर पंजाब की जेलों में बन्द कर दिया गया। शिमला से राजकुमारी अमृतकौर ''भारत छोड़ो आन्दोलन'' का संचालन करती रही तथा गांधी जी के कैद में बन्द होने पर उनकी पत्रिका ''हरिजन'' का सम्पादन करती रही। गांधी जी के सत्याग्रही के समर्थन में कांगड़ा के कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने भी सत्याग्रह में भाग लिया। भारत छोड़ो आन्दोलन के समय कई लोगों ने इस में अपना योगदान दिया। इस प्रकार के आन्दोलनों में भाग लेने वालों में **मंगत राम खन्ना, हेमराज सूद, कॉमरेड रामचन्द्र, परस राम, सरला शर्मा, ब्रह्मानन्द** और **पंडित अमर नाथ** प्रमुख थे। मई 1944 ई० में महात्मा गांधी को जेल से रिहा किया गया। परिणामस्वरूप ''भारत छोड़ों आन्दोलन'' कुछ धीमा पड़ गया। सितम्बर 1944 ई० में हिमाचल में ''भारत छोड़ों आन्दोलन'' में गिरफ्तार नेताओं को रिहा करा दिया गया।

वेवल योजना (Wavel Plan)–14 मई 1945 ई० को लंदन में भारत सचिव **एल०एस० एमरी** ने पार्लियामैंट में भारत के राजनैतिक हल के लिये एक योजना की घोषणा की, जिसे इतिहास में ''वेवल-योजना'' कहा जाता है। इसके अनुसार वायसराय लार्ड वेवल ने भारतीय राजनैतिक दलों को 25 जून 1945 को शिमला में बातचीत के लिये आमंत्रित किया। इस सम्मेलन में भाग लेने के लिये आमंत्रित दलों के प्रतिनिधि शिमला पहुंचे। इनमें कांग्रेस के अध्यक्ष **मौलाना अब्दुल कलाम आज़ाद** तथा **जवाहर लाल नेहरू, सरदार वल्लभ भाई पटेल, राजेन्द्र प्रसाद, चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य, खान अब्दुल गफ्फार खान, आचार्य कृपलानी, गोविन्द बल्लभ पन्त, पट्टाभिसीतारमैया,** शंकर **राव देव, जय दास दौलत राम, रवि शंकर शुक्ला, सुचेता कृपलानी, सरोजिनी नायडू, भौला भाई देसाई,** आसफ **अली, अरूणा आसफ, मीराबेन** आदि कांग्रेस के नेता शिमला आये। सलाह-मशविरा देने के लिये महात्मा गांधी भी शिमला आये और समरहिल में राजकुमारी अमृतकौर के निवास स्थान मनौरविला में ठहरे। 25 जून 1945 को वायसराय के निवास स्थान ''**वायसरीगल लॉज**'' में 21 प्रतिनिधियों ने सम्मेलन में भाग लिया। इन 21 प्रतिनिधियों में मुस्लिम लीग के मुख्य प्रतिनिधि **मुहम्मद अली जिन्नाह** थे। इस कांफ्रेंस में कांग्रेस ने राजनीतिक समस्याओं पर तो सन्तोष प्रकट किया परन्तु मुस्लिम लीग के साम्प्रदायिक दृष्टिकोण पर उसने अपना असन्तोष व्यक्त किया। यद्यपि यह सम्मेलन कई दिनों तक चलता रहा और वायसराय ने ईमानदारी के साथ बीच-बचाव भी किया तथापि लीग के हठ के सामने सम्मेलन फीका पड़ गया। अन्त में 14 जुलाई को वायसराय की घोषणा के साथ सम्मेलन समाप्त हो गया।

अन्तरिम सरकार का गठन (Formation of Interim Government)–मई 1946 ई० में बर्तानिया से एक कैबिनेट-मिशन भारतीय नेताओं से बातचीत करने भारत आया। भारतीय नेताओं, वायसराय लार्ड वेवल तथा कैबिनेट-मिशन की बैठकें इस बार भी शिमला में 5 मई से 12 मई 1946 तक होती रहीं। मुस्लिम लीग की हठधर्मी से इसे कोई अधिक सफलता तो नहीं मिल पाई परन्तु वायसराय लार्ड वेवल अन्तरिम सरकार बनाने में सफल हुये और बाद में लीग वालों ने भी सरकार में सम्मिलित होने में बुद्धिमानी समझी और वायसराय से बात कर ली। अत: 2 सितम्बर 1946 को कांग्रेस ने भारत में अन्तरिम सरकार बनाई और 26 अक्तूबर 1946 को मुस्लिम लीग के नेता भी इस सरकार में सम्मिलित हो गये।

तीसरी प्रकार के आन्दोलन-प्रजामण्डल आन्दोलन
(Third Type of Movement-Praja Mandal Movement)

19वीं शताब्दी के अंत में तथा बीसवीं शताब्दी के आरम्भिक वर्षों में देश के जागरण के साथ ही पहाड़ी रियासतों के लोगों में भी बड़ी तेज़ी से जागृति आई। वहां भी **उत्तरदायी सरकार स्थापित करने के लिये** आन्दोलन आरम्भ होने लगे। कांग्रेस ने भी इस बात को समझा कि वह रियासती प्रजा को मार्ग दिखाये। साथ ही कांग्रेस को पूर्ण स्वाधीनता प्राप्त करनी थी। इसमें देशी रियासतें भी शामिल थीं। ये रियासतें भारत के ही टुकड़े थे, जिन्हें भारत से पृथक् नहीं रखा जा

सकता था। 17 दिसम्बर 1927 में बम्बई में **''आल इण्डिया स्टेट्स पीपुल कांफ्रेंस''**(अखिल भारतीय रियासती प्रजा परिषद्) का गठन किया गया। इसका प्रथम अधिवेशन भी सन् 1927 ई० में हुआ। अंग्रेज़ों के अधीन भारतीय भू-भाग में चल रहे असहयोग आन्दोलन तथा सत्याग्रह से होने वाली सफलता ने रियासती प्रजा को भी जागृत बीसवीं शताब्दी में पहाड़ी राज्यों के लोगों में भी जागृति की भावना पैदा होने लगी थी जिसके परिणामस्वरूप रियासतों में चम्बा सेवक, संघ, धामी प्रेम प्रचारिणी सभा तथा बुशैहर सेवा मण्डल आदि प्रमुख संस्थाएं बनाई गई थीं। रियासतों के युवकों ने रोज़गार की तलाश में देश के बड़े शहरों में अपनी-अपनी रियासतों के नाम पर संस्थाएं बनाईं। इनमें लाहौर में सिरमौरर एसोसियेशन प्रमुख थी। इसके अतिरिक्त दिल्ली में हिमालय सेवक संघ की स्थापना पहाड़ी जनता की संस्कृति तथा नागरिक और आर्थिक अधिकारों की रक्षा के लिए की गई। 1937 ई. के बाद सांस्कृतिक एवं सामाजिक गतिविधियों के अतिरिक्त ये संस्थाएं राजनीतिक और जनतांत्रिक चेतना का कार्य करने में लग गईं। बाद में यही संघठन प्रजामण्डल बन गए, जिससे रियासतों को जनतांत्रिक चेतना पैदा करने के लिए एक संगठनात्मक रूप मिला।

प्रजामण्डलों के गठन के उद्देश्य (Aims of Praja Mandals)-

1. प्रजामण्डलों का गठन पहाड़ी जनता ने स्वयं को संगठित करने की इच्छा से किया।

2. इनकी स्थापना सामाजिक, आर्थिक एवं आम रहन-सहन की कठिनाइयों की प्रतिक्रिया के रूप में की गई।

3. राज्य प्रशासन की अनदेखी, बर्बरता, भ्रष्ट अधिकारियों के बर्ताव, लगानों एवं करों के बोझ से तंग आई जनता ने प्रजामण्डलों का गठन किया।

4. प्रारम्भ में इन संगठनों का उद्देश्य प्रजा के अधिकारों की लड़ाई को आगे बढ़ाने, मैत्री सुदृढ़ करने, एक संगठित संस्कृति को पैदा करना आदि था।

5. इन प्रजामण्डलों का गठन राजा और ब्रिटिश शासन के विरोध में किया गया।

6. आरम्भिक दौर में इन प्रजामंडलों का उद्देश्य जन-मानस को आकर्षित करने तथा राज्य प्रशासन के आतंक से बचने के लिए रणनीति तय करना था।

7. कर और लगान में कटौती तथा फसलों के न होने की स्थिति में इनकी माफी प्रजामण्डलों की मुख्य मांगें रहीं।

8. इसके अतिरिक्त घासनियों, चरागाहों, राजा के जीवन-मरण पर कर आदि असंख्य करों का विरोध करना इनका उद्देश्य था। बेगार तथा बेठ की समस्या को उठाकर प्रजामण्डलों को लोकप्रियता मिली। लगानों, बेगार की समाप्ति की मांग में अग्रणी रहकर इन संगठनों के आंदोलनों को केन्द्र बिन्दु में ला दिया। बाद में सामाजिक तथा आर्थिक मांगों के साथ राजनीतिक मांगे भी आई।

9. समय के साथ-साथ प्रज्यामण्डलों के उद्देश्य तथा उनकी मांगों में नई मांगें भी जुड़ने लगीं जैसे,

राजनीतिक संगठनों पर लगे प्रतिबन्धों को हटाना, राजनीतिक कैदियों की रिहाई एवं प्रजामण्डलों की छीनी हुई सम्पत्ति को लौटाने की मांगे आदि।

10. प्रजा मण्डलों द्वारा राज्य प्रशासन तथा शिक्षण संस्थानों में हिन्दी के प्रयोग और राज्यों में चुने गए प्रतिनिधियों की एक कमेटी के गठन की मांग भी उनका उद्देश्य बन गई।

11. शासकों से जन मानस की हालात में सुधार और रियासतों के प्राकृतिक साधनों के दोहन की मांग भी प्रजामण्डलों का उद्देश्य बन गई।

12. प्रजामण्डल की मांगों में बेगार, लगान और अन्य करों को समाप्त करने की मांग के साथ-साथ रियासत में उत्तरदायी सरकार की स्थापना पर ज़ोर दिया गया। उत्तरदायी सरकार की मांग का लक्ष्य राजा के अधीन ही राज्य के प्रशासन को चुनाव की प्रक्रिया द्वारा लोकतांत्रिक बनाना था।

प्रजामण्डलों का महत्त्व (Importance of Praja Mandals) - राजाओं को अंग्रेज़ों की सहायता मिलने के फलस्वरूप संगठित जन आंदोलन आज़ादी के कुछ वर्ष पूर्व ही पनपे थे। इन रियासतों के लोग, प्रजामण्डल के संगठन से अपनी सांस्कृतिक एवं भाषायी समानता की पहचान को सुदृढ़ कर पाए। हिमाचल प्रदेश के गठन में भी प्रजा मण्डल

सहायक और मुख्य कारण रहे। प्रजा मण्डल की मांगों में बेगार प्रथा के विरुद्ध आवाज़ जनतांत्रिक अधिकारों की स्थापना की मांग के रूप में प्रकट हुई। इससे प्रजामण्डलों की राजनीतिक चेतना और राजनीतिक आकांक्षाओं का विकास हुआ। प्रजामण्डलों ने सबसे महत्वपूर्ण योगदान छोटी-छोटी बिखरी हुई रियासतों की प्रजा को संगठित करने में दिया।

प्रजामण्डल व कांग्रेस में सम्बन्ध - भाषायी राज्यों के संगठन सम्बन्धी फैसले से भी प्रजामण्डलों को प्रोत्साहन मिला। रियासती प्रजा के अपनी छोटी-छोटी रियासतों की सीमाओं को लांघकर समान भाषा, संस्कृति एवं आर्थिक समानता के महत्त्व को पहचानने का अवसर मिला। कांग्रेस द्वारा रियासतों में उत्तरदायी सरकार, नागरिक अधिकार आदि विषयों पर रियासतों की प्रजा को सक्रिय सहायता देने के फैसले ने भी प्रजामण्डलों को प्रोत्साहन दिया।

प्रजामण्डल की गतिविधियों ने पहाड़ी रियासतों के एकीकरण में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। छोटी-छोटी रियासतों में सांस्कृतिक, भाषायी, सामाजिक एवं आर्थिक समानता थी। प्रजामण्डल के गठन से रियासतों की जनता राजनीतिक एवं जनतांत्रिक अधिकारों के लिए एक संगठन के नीचे इकट्ठी हुई। ब्रिटिश शासित क्षेत्रों में भी प्रजामण्डल की गतिविधियों को समन्वित करने में सहायता मिली। प्रशासन के अत्याचार से बचने के लिए प्रजामण्डलों ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। । अत: वहां भी स्थान-स्थान पर रियासती प्रजा मण्डलों की स्थापना तथा जनसभायें होने लगीं। आन्दोलनों की तीव्रता देख कर रजवाड़े तिलमिला उठे। लगभग सभी बड़ी रियासतों ने लोगों पर अनेक प्रतिबन्ध लगाने आरम्भ कर दिये।

सिरमौर में प्रजामण्डल का गठन (Formation of Praja Mandal In Sirmaur)—अखिल भारतीय रियासती प्रजा परिषद् के प्रस्तावों से प्रभावित हो कर सिरमौर में हिमाचल की सबसे पहली प्रजा मण्डल संस्था का गठन किया गया। इसके संस्थापक **पं० राजेन्द्र दत्त** थे। उन्होंने इसका कार्यालय **नाहन** के स्थान पर पांवटा में स्थापित किया। इसमें **चौधरी शेर जंग, मास्टर चतर सिंह, सालिग राम, कुन्दन लाल, अजायब सिंह** आदि ने सक्रिय भाग लिया। 12 अक्तूबर 1930 ई० को पंजाब तथा पहाड़ी रियासती प्रजा का प्रथम सम्मेलन लुधियाना में हुआ। इसमें सिरमौर के पांवटा से **सरदार भगत सिंह** और दो अन्य लोगों ने सिरमौर रियासत का प्रतिनिधित्व किया। इसी अवधि में सिरमौर रियासत के **पं० शिवानन्द रमौल** ने दिल्ली में स्थित **''सिरमौरी एसोसिएशन''** का सदस्य बन कर अपने आन्दोलनकारी जीवन का आरम्भ किया। रियासत के भीतर **राजेन्द्र दत्त** आदि इसका संचालन करते रहे। 1934 ई० में सिरमौर रियासत में कुछ लोगों ने एक अन्य **सिरमौर प्रजा मण्डल** की स्थापना की। इसमें **डॉ० देवेन्द्र सिंह, नगेन्द्र सिंह, रामनाथ** और **आत्माराम** संस्थापक सदस्य बने।

चम्बा सेवक संघ (Chamba Sewak Sangha)— मार्च 1936 में चम्बा रियासत में कुछ लोगों ने ''चम्बा सेवक संघ'' नाम से एक संस्था का गठन किया। बाद में यह संस्था राजनैतिक संगठन में बदल गई। अत: सरकार ने इस संघ पर प्रतिबन्ध लगा दिया। परिणामस्वरूप संघ ने अपनी गतिविधियों का केन्द्र डलहौज़ी बना लिया।

मण्डी प्रजामण्डल (Mandi Praja Mandal)—हिन्दी तथा उर्दू के समाचार पत्रों में चम्बा की बुरी दशा के बारे में लेख लिखे जाने लगे। मण्डी रियासत में भी 1936 में प्रजामण्डल की स्थापना हुई। सिरमौर के पश्चात् पहाड़ी रियासतों में यह दूसरा प्रजामण्डल था। **स्वामी पूर्णानन्द** इसके अध्यक्ष बने। इनके साथ **राम चन्द मल्होत्रा, बलदेव राम, हरसुखराय, सुन्दरलाल** और **मोती राम** प्रमुख थे। बाद में कृष्ण चन्द्र, तेज सिंह निधड़क, केशव चन्द्र, पद्मनाथ और हेम राज भी प्रजामण्डल के सदस्य बन गये। मण्डी के राजा ने प्रजामण्डल की गतिविधियों पर पाबन्दी लगा दी।

धामी प्रेमप्रचारिणी सभा (Dhami Prempracharimi Sahha)–धामी रियासत के शिमला के निकट होने के कारण यहां के बहुत से लोग शिमला में नौकरी करते थे। उन्होंने अपनी रियासत में सुधार लाने के उद्देश्य से 1937 ई० में एक ''प्रेम प्रचारिणी सभा'' बनाई। शिमला में कार्यरत **बाबा नारायण दास** को इसका अध्यक्ष और **पं० सीता राम** को मन्त्री बनाया गया। आरम्भ में इसका उद्देश्य सामाजिक और आर्थिक सुधार था परन्तु बाद में इसमें राजनैतिक कार्यों में भी भाग लेने और आन्दोलन की बात होने लगी।

लुधियाना कांफ्रेंस (Ludhiana Conference)—15-16 फरवरी 1939 को लुधियाना में **''आल इण्डिया स्टेट्स पीपल कान्फ्रेंस''** का सम्मेलन **जवाहर लाल नेहरू** की अध्यक्षता में हुआ। पं० नेहरू ने रियासतों में प्रजा मण्डल की स्थापना

पर ज़ोर दिया। उन्होंने यह विचार व्यक्त किया कि छोटी रियासतें मिलकर संगठन बनायें ताकि संगठन शक्तिशाली बनें। लुधियाना के इस अधिवेशन में शिमला की पहाड़ी रियासतों से **पं० पद्मदेव, भागमल सौहटा** थे। मण्डी से **स्वामी पूर्णानन्द**, सिरमौर से **ठाकुर हितेन्द्र सिंह**, बिलासपुर से **सदाराम चन्देल**, चम्बा से **विद्या सागर, विद्याधर, गुलाम रसूल और पृथ्वी सिंह** ने भाग लिया। इसके पश्चात् इन पहाड़ी रियासतों में तेज़ी से प्रजा मण्डल बनने लगे।

बाघल तथा कुछ अन्य प्रजामण्डल (Baghal and some other Praja Manadal)–शिमला में नौकरी करने वाले बाघल के कुछ लोगों ने 11 अगस्त 1938 को **जीवणुराम चौहान** की अध्यक्षता में एक बैठक की और बाघल प्रजा मण्डल की स्थापना की। **मन्शा राम चौहान** को इस प्रजा मण्डल का मन्त्री बनाया गया। इसका उद्देश्य लोगों में अपने अधिकारों के बारे में जागृति पैदा करना था। इस भावना को लेकर **पं० भास्करनन्द** ने भज्जी में, **सूरत राम प्रकाश** ने थियोग में तथा **भागमल सौहटा** ने जुब्बल में प्रजा मण्डलों का गठन किया। जुब्बल रियासत में पं० मस्त राम, जिया लाल शरखोली और राम सरन प्रजा मण्डल के सक्रिय सदस्य थे। रियासत कोटी, कुमारसेन और बुशैहर में भी इसी प्रकार के प्रजा मण्डलों के गठन का कार्य आरम्भ हुआ।

राजाओं का सम्मेलन (Conference of Rajas)—लोगों में प्रजा मण्डल की लोकप्रियता को देखकर राजा तथा राणा इसे अपने अधिकारों के लिए खतरा समझने लगे। इसलिये उन्होंने जून 1929 के पहले सप्ताह में **शिमला पर्वतीय राज्यों एवं रजवाड़ों के राजाओं तथा राणाओं** ने शिमला में एक अधिवेशन का आयोजन किया। इसमें प्रजामण्डलों की गतिविधियों से निपटने पर विचार किया गया।

शिमला हिल स्टेट्स रियासती प्रजामण्डल की स्थापना (Formation of Shimla Hill States Praja Mandal)–पहली जून 1939 को शिमला पहाड़ी राज्यों के लोगों के प्रतिनिधियों की शिमला में एक सभा हुई। इसमें राजाओं और राणाओं की गुप्त गतिविधियों को प्रकाश में लाया गया। लुधियाना सम्मेलन से प्रभावित होकर शिमला की पहाड़ी रियासतों की विभिन्न संस्थाओं ने एक संयुक्त संस्था बनाई, जिसका नाम "शिमला हिल स्टेट्स रियासती प्रजा मण्डल" रखा गया। इस संस्था की स्थापना में बुशैहर के पं० पदमदेव और जुब्बल के **भागमल सौहटा** ने विशेष योगदान दिया। इसमें **पं० पद्मदेव** को प्रधान और भागमल सौहटा को महामन्त्री बनाया गया। जून 1939 ई० में पं० पद्मदेव तो शिमला से आर्य समाज का जत्था लेकर हैदराबाद चले गये और शिमला की पहाड़ी रियासतों में प्रजा मण्डल के प्रचार और प्रसार का काम भगमल सौहटा ने अपने हाथ में लेकर आगे चलाया। जुलाई 1939 में शिमला का पहाड़ी रियासतों में प्रजा मण्डल संगठन की स्थापना का अभियान चलाया गया। इसी मास के आरम्भ में भागमल सौहटा, हीरा सिंह पाल, देव सुमन ने महलोग रियासत में "**प्रजा मण्डल महलोग**" की स्थापना की।

कुनिहार प्रजामण्डल (Kunihar Praja Mandal)–शिमला हिल स्ट्रेटस प्रजा मंडल के नेता 8 जुलाई 1939 ई० को कुनिहार रियासत गये। वहां पर उन्होंने कांशीराम के साथ कई लोगों को प्रजा मण्डल का सदस्य बनाया। 9 जुलाई 1939 ई०को कुनिहार रियासत के दरबार भवन में कुनिहार के राणा **हर देव सिंह** के सभापतित्व में "**कुनिहार प्रजामण्डल**" की विधिवत् स्थापना की गई। **बाबू कांशीराम** को प्रजा मण्डल कुनिहार का संरक्षक नियुक्त किया गया। इस सभा में भागमल सौहटा और देव सुमन भी उपस्थित थे। इसके अतिरिक्त रियासत **धामी, बाघल, पटियाला, महलोग** के प्रतिनिधि भी इस सभा में भाग लेने आये हुये थे।

धामी प्रजामण्डल (Dhami Praja Mandal)—इसी दौरान धामी रियासत की "**प्रेम प्रचारिणी सभा**" ने सरकार के दमन से बचने के तथा संरक्षण हेतु रियासती प्रजा मण्डल शिमला में शामिल होने की योजना बनाई। इसी उद्देश्य को लेकर 13 जुलाई 1939 ई० **को** भागफल सौहटा की अध्यक्षता में शिमला के निकट कुसुम्पटी के पास कमाहली स्थान पर शिमला की पहाड़ी रियासतों के प्रजामण्डलों की एक बैठक हुई। इस बैठक में धामी रियासत की "प्रेम प्रचारिणी सभा" को "धामी प्रजा मण्डल" में बदल दिया गया। धामी के **पं० सीता राम** को इस संगठन का प्रधान नियुक्त किया गया। इस अवसर पर धामी प्रजा मण्डल की ओर से एक प्रस्ताव पारित किया गया, जिसमें राणा धामी से निम्नखिति मांगें की गईं:

1. बेगार प्रथा को समाप्त किया जाये।

2. भूमि-लगान में पचास प्रतिशत कमी की जाये।

3. धामी राज्य प्रजा मण्डल को मान्यता प्रदान की जाये।

4. लोगों को नागरिक अधिकारों की स्वतन्त्रता प्रदान की जाये।

5. राज्य की जनता पर लगाये गये प्रतिबन्ध और अवरोधों को समाप्त किया जाये।

6. प्रेम प्रचारिणी सभा धामी के सदस्यों की ज़ब्त की गई सम्पत्ति वापस की जाये।

7. धामी में एक प्रतिनिधि उत्तरदायी सरकार का गठन किया जाये और उसमें जनता के प्रतिनिधियों को प्रशासकीय कार्यों में नियुक्त किया जाये।

इस प्रस्ताव में व्यक्त किया गया कि यदि रियासत के शासक की ओर से उनके मांग पत्र का शीघ्र कोई उत्तर नहीं मिला तो 16 जुलाई को सात व्यक्तियों का एक शिष्टमण्डल हलोग आकर राणा से मिलेगा। **मंशा राम** को विशेष प्रतिनिधि बना कर यह मांग पत्र राणा के पास धामी भेजा। राणा ने इस पत्र को अपना अपमान समझा। उसने प्रजा मण्डल की मांगें स्वीकार नहीं कीं और प्रस्ताव का उत्तर नहीं निश्चित दिया। उत्तर न पाने पर यह तय किया गया कि पूर्व निर्धारित तिथि 16 जुलाई को भागमल सौहटा शिमला से धामी के लिये प्रस्थान करेंगे और धामी की राजधानी **हलोग** से लगभग डेढ़ मील दूर खेल के मैदान में उनके स्वागत में लोग इकट्ठे होंगे। वहीं शेष छः प्रतिनिधि-हीरा सिंह पाल, मंशा राम चौहान, पं० सीता राम, बाबू नारायण दास, भगत राम और गौरी सिंह उनके साथ मिलेंगे। वहां से वे राणा दलीप सिंह के पास जायेंगे।

धामी काण्ड (Dhami Tragedy)—भागमल सौहटा 16 जुलाई को लगभग ग्यारह बजे शिमला से एक छोटे से दल को लेकर धामी के लिये चल पड़े। इस दल के दो सदस्यों-**भगत राम** और **देवी सरन** ने कांग्रेस का झंडा उठा रखा था। जब भागमल सौहटा और उनके साथी धामी की सीमा के पास घनहिट्टी के पास पहुँचे तो रियासत के सिपाहियों ने सत्याग्रहियों के नेता भागमल सौहटा को हिरासत में ले लिया और धामी ले गये। सत्याग्रहियों के स्वागत हेतु इकट्ठे हुये लोग राणा के विरुद्ध नारे लगाते हुये राणा के निवास स्थान के पास पहुँचे। राणा ने भयभीत होकर भीड़ को तितर-बितर करने के लिये गोली चलाने के आदेश दे दिये। इस से वहां खलबली मच गई और बहुत से लोग बुरी तरह से घायल हो गये। दो व्यक्तियों की मृत्यु हो गई। सत्याग्रह के नेता भागमल सौहटा को गिरफ्तार करके अम्बाला जेल भेज दिया गया।

इस घटना के पश्चात् पहाड़ी रियासतों में प्रजा मण्डल आन्दोलन ने ज़ोर पकड़ा लिया। विभिन्न प्रजा मण्डलों के मध्य तालमेल बैठाने के उद्देश्य से दिसम्बर 1939 में हिमालयन रियासती प्रजा मण्डल को संगठित किया गया। इसकी ज़िम्मेवारी यह थी कि यह पहाड़ी रियासतों में राजनैतिक तथा सामाजिक गातिविधियों का संचालन करे। लोगों में यह प्रचार किया गया कि वे सेना में भर्ती होने के लिये जवान न दें और न ही लड़ाई के लिये चन्दा दें। एक प्रकार से यह अवज्ञा आन्दोलन था, जिसमें प्रजामण्डलों के बहुत से लोग पकड़े गये।

सिरमौर प्रजामण्डल (Sirmaur Paraja Mandal)—इसी दौरान सिरमौर में भी प्रजा मण्डल ने भी ज़ोर पकड़ लिया। इस के प्रमुख कार्यकर्ता चौधरी शेर जंग, डॉ० देवेन्द्र सिंह और शिवा नन्द रमोल थे। प्रजा मण्डल के लोगों को आतंकित करने के लिये रियासती सरकार ने डॉ० देवेन्द्र सिंह, हरी चन्द पाधा, आत्माराम, इन्द्र नारायण और उन के साथियों पर मुकद्में चलाये। उन पर महाराजा को जान से मारने तथा उनकी कार पर पत्थर फेंकने के झूठे आरोप लगाये गये। इन दिनों **यशवन्त सिंह परमार** सिरमौर के डिस्ट्रिक्ट और सैशन जज थे। उन्होंने इस केस से सम्बन्धित अपने फैसले में प्रजा मण्डल वालों का पक्ष लिया और उन पर लगे महाराजा की हत्या के आरोप को झूठा सिद्ध किया। इससे यशवन्त सिंह परमार के राजा राजेन्द्र प्रकाश के साथ राजनैतिक मतभेद हो गये। इसी कारण उन्होंने सन् 1941 में नौकरी से त्याग पत्र दे दिया। इस पर राजा ने उन्हें रियासत से निकाल दिया। उन्होंने 1943 से 1946 तक दिल्ली में सिरमौरियों को संगठित किया और उन्हें लोकतान्त्रिक अधिकारों की प्रप्ति के लिये संघर्ष करने के लिये तैयार किया।

उधर चम्बा रियासत के प्रजा मण्डल ने मांग की कि रियासत में लोकप्रिय सरकार बना दी जाये। प्रजा मण्डल कार्यकर्ताओं ने परिवारवाद के विरुद्ध भी आवाज़ उठाई। उनका यह कहना था कि रियासत के दीवान ने सारे अधिकार

अपने हाथ में ले रखे हैं। इसके परिणामस्वरूप जब आन्दोलन ने ज़ोर पकड़ा और इसके कारण कई व्यक्तियों को पकड़ा लिया गया। गांधी जी ने अहिंसा से आन्दोलन चलाने के लिये कहा। अंग्रेज़ी के समाचार पत्र ''दी ट्रिब्यून'' ने सम्पादकीय में लिखा ''सोए हुये चम्बा में भी जागृति आ गई है। लोकतान्त्रिक विचार पहाड़ी अवरोध को पार करके रियासत के लोगों के पास पहुँचे हैं और वे उत्तरदायी सरकार के लिये मांग कर रहे हैं।''

बुशैहर प्रजामण्डल (Bushehar Praja Mandal)–बुशहर प्रजा मण्डल को 1945 ई०में पुन: सक्रिय करने के लिए बुशैहर की अन्य संस्थाओं जैसे- बुशैहर सुधार सम्मेलन, बुशैहर प्रेम सभा और सेवक मण्डल दिल्ली में भी बुशैहर के लोगों को संगठित किया। पं० पद्मदेव ने शिमला में इसके लिये कार्य किया और रियासत के भीतर पं० घनश्याम और सत्यदेव बुशैहरी और अन्य कई नेताओं ने किया। बाद के वर्षों में नेगी ठाकुरसेन ने भी प्रजा मण्डल में सक्रिय रूप से भाग लेना आरम्भ किया। इस के साथ-साथ ही बिलासपुर, जुब्बल और अन्य क्षेत्रों के प्रजा मण्डलों ने भी अपनी-अपनी गतिविधियां तेज़ कर दीं। इसमें जुब्बल के भागमल सौहटा और बिलासपुर के दौलत राम सांख्यायन ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया।

हिमाचल हिल स्टेट्स कौंसिल (Himachal Hill States Council)— सन् 1945 के अन्त में उदयपुर में ''**आल इण्डिया स्टेट्स पीपुल्स कान्फ्रेंस**'' का अधिवेशन हुआ। अधिवेशन के पश्चात् वहीं पर पहाड़ी रियासतों से गये प्रजा मण्डल के प्रतिनिधियों ने अपने क्षेत्र में प्रजा मण्डल को सुचारु रूप से चलाने के लिये जनवरी 1946 में ''हिमालयन हिल स्टेट्स रीजनल कौंसिल'' नामक एक संस्था की स्थापना की। इसके प्रधान **स्वामी पूर्णानन्द** बनाये गये और उनका कार्यालय **मण्डी** रखा गया। **पं० पद्मदेव** को इसका मुख्य सचिव बनाया गया और उन का कार्यालय शिमला में रखा गया। इसके अतिरिक्त **श्याम चन्द नेगी** को उप-प्रधान तथा **शिवनन्द रमौल** को संयुक्त सचिव बनाया गया। ''हिमालयन हिल स्टेट्स रीजनल कौंसिल'' का पहला सम्मेलन 8 से 10 मार्च 1946 ई० को मण्डी में हुआ। कौंसिल के प्रधान स्वामी पूर्णाचन्द, महामन्त्री पद्मदेव और संयुक्त सचिव शिवानन्द रमौल के अतिरिक्त सुकेत, मण्डी, बिलासपुर, सिरमौर, चम्बा, नालागढ़, बघाट और शिमला की पहाड़ी रियासतों के प्रतिनिधियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। इस सम्मेलन की अध्यक्षता करने के लिये आजाद हिन्द फौज के सुप्रसिद्ध सेनानी कर्नल गुरुदयाल सिंह ढिल्लों भी मण्डी पहुँचे।

इस सम्मेलन में निम्नलिखित मुख्य प्रस्ताव पास किये गये:-

1. यह सम्मेलन श्री सरयूदेव ''सुमन'' की मृत्यु पर शोक प्रकट करता है तथा इस मृत्यु के लिये टिहरी राज्य को दोषी ठहराता है।
2. उन महान् आत्माओं को जिन्होंने देश की स्वतन्त्रता के लिये प्राण त्याग दिये हैं, श्रद्धांजलि अर्पित करता है।
3. उदयपुर में हुये अखिल भारतीय देशी राज्य सम्मेलन द्वारा पास किये गये प्रस्तावों का अनुमोदन करता है।
4. यह सम्मेलन हिमाचल के समस्त राजाओं से मांग करता है कि वे शीघ्र ही अपनी अपनी रियासतों में उत्तरदायी सरकारों की स्थापना करें।
5. यह सम्मेलन नागरिक अधिकारों पर लगाये गये प्रतिबन्धों के विरुद्ध दु:ख व्यक्त करता है तथा हिमालय की रियासतों के शासकों से अनुरोध करता है कि वे नरेन्द्र मण्डल की ओर से स्वीकृत नागरिक अधिकारों के प्रस्तावों को मानते हुए अपनी-अपनी रियासतों में नागरिक अधिकारों पर लगाये हुये प्रतिबन्धों को हटा दें।
6. यह सम्मेलन मांग करता है कि बेगार प्रथा पूर्ण रूप से बन्द की जानी चाहिये तथा अनुचित कर समाप्त होने चाहिये।
7. यह सम्मेलन मण्डी नरेश से प्रार्थना करता है कि ''मण्डी स्टेट्स सब्जेक्ट्स एसोसिएशन'' के जिन सदस्यों की सम्पत्ति छीन ली गई है वह वापिस लौटा दी जाये तथा प्रजा मण्डल पर लगे प्रतिबन्ध हटा दिये जायें।
8. यह सम्मेलन सिरमौर राज्य से अनुरोध करता है कि वह पझौता आन्दोलन में भाग लेने वाले लोगों को बिना किसी शर्त के छोड़ दे और उनकी छीनी हुई सम्पत्ति वापिस लौटा दी जाये।
9. यह सम्मेलन उन नरेशों का धन्यवाद करता है, जिन्होंने ''हिन्दी'' को अपनी राज्य भाषा घोषित किया हुआ है। तथा अन्य राज्यों से अनुरोध करता है कि वे भी हिन्दी को राज्यभाषा घोषित करें।

10. सम्मेलन अनुभव करता है कि शिमला की समस्त रियासतों की जनसंख्या के आधार पर प्रजा द्वारा निर्वाचित लोगों की एक समिति बनाई जाये जिसके अधिकार में रियासतों के मन्त्रियों तथा कर्मचारियों की नियुक्ति तथा वियुक्ति का कार्य सौंपा जाये।
11. यह सम्मेलन मांग करता है कि निकट भविष्य में बनाई जाने वाली वैधानिक समिति के लिये समस्त रियासतों के प्रजा द्वारा निर्वाचित सदस्य ही लिए जायें।
12. यह सम्मेलन बिलासपुर राज्य की ओर से कार्यकर्ताओं पर किये गये घृणित अत्याचारों पर दु:ख व्यक्त करता है और मांग करता है बन्दी बनाये गये कार्यकर्ताओं को तुरन्त छोड़ दिया जाये।
13. यह सम्मेलन हिमालय प्रान्तीय नरेशों से मांग करता है कि प्राकृतिक धन के प्रयोग के लिये एक विभाग बनाया जाये। सम्मेलन यह भी मांग करता है कि इस प्रकार के कार्यों में ठेका देने के लिये स्थानीय लोगों को प्रोत्साहित किया जाये ताकि लोगों का आर्थिक सुधार हो सके।
14. यह सम्मेलन मांग करता है कि रियासतों में नशाबन्दी के कानून लागू किए जायें।

31 अगस्त और पहली सितम्बर 1946 को हिमालयन हिल स्टेट्स रीजनल कौंसिल का सम्मेलन **नाहन-सिरमौर** में हुआ। इस सम्मेलन में आल इण्डिया स्टेट्स पीपुल्स कान्फ्रेंस के अध्यक्ष **डा० पट्टाभिसीतारामैय्या** तथा **जयनारायण व्यास महामन्त्री, कर्नल शाहनवाज़, दूनी चन्द अम्बालवी** आदि के साथ पहाड़ी रियासतों के चालीस से अधिक प्रतिनिधि उपस्थित हुये । प्रजा मण्डल सिरमौर के नेता का **राजेन्द्र दत्त, शिवान्द रमौल, डा० देवेन्द्र सिंह, हितेन्द्र सिंह, धर्म नारायण, हरीचन्द्र पाधा** और उनके सहयोगी आन्दोलनकारियों द्वारा आयोजित इस सम्मेलन से सिरमौर रियासत में अभूतपूर्व जागृति पैदा हुई, जिससे रियासती सरकार की जड़ें हिल गईं। इसी काल में **चिरंजी लाल** ने वापिस शांगरी जा कर वहां **बेगार** के विरुद्ध आन्दोलन आरम्भ किया। इसी वर्ष **ज्ञान चन्द टूटू** कोहिस्तान प्रजा मण्डल के प्रधान बने। नवम्बर 1946 ई० में **सत्यदेव बुशैहरी** प्रजा मण्डल के प्रधान बने। इसी काल में भागमल सौहटा ने रियासत जुब्बल में प्रजा मण्डल आन्दोलन को विशेष गति प्रदान की। जय लाल श.रखोली, मास्टर राम रतन, मियां काहन सिंह आदि ने भी इस आन्दोलन में भाग लिया। बलसन रियासत में तो इस आन्दोलन ने उग्र रूप धारण किया।

फरवरी 1947 ई० में भज्जी के **लीला दास वर्मा**, बिलासुपर के **कांशीराम** उपाध्याय और प्रजा मण्डल के कुछ अन्य कार्यकर्ता **डॉ० यशवन्त सिंह** के पास दिल्ली गये और उन्हें शिमला ले आये। शिमला में पं० पद्मदेव, शिवानन्द रमौल, दौलत राम सांख्यायन, पं० सीता राम, दुर्गा सिंह राठौड़ और अन्य पहाड़ी नेताओं के आग्रह पर डॉ० यशवन्त सिंह राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन में शामिल हुये। उन्होंने शिमला के निकट संजौली में कृष्ण विला लॉज में रहना आरम्भ किया। वहीं पर संजौली में लीला दास वर्मा ने प्रजा मण्डल का कार्यालय भी खोला। इसके साथ ही डॉ० यशवन्त सिंह परमार ने स्थायी रूप से राजनीति में पदार्पण करके पहाड़ी रियासतों में आन्दोलन का नेतृत्व करना आरम्भ किया।

पहली मार्च 1947 को हिमालयन हिल स्टेट्स रीजनल कौंसिल की बैठक शिमला में हुई। इस बैठक में कौंसिल के पदाधिकारियों के चुनाव हुये। **डॉ० यशवन्त सिंह** परमार को इसका प्रधान और **पं० पद्मदेव** को इस का महामन्त्री निर्वाचित किया गया। अप्रैल 1947 में डॉ० परमार दिल्ली से दौलत राम सांख्यायन, नरोत्तम शास्त्री, लीला दास वर्मा, शिवानन्द रमौल आदि के साथ कांग्रेस के ग्वालियर अधिवेशन में भाग लेने के लिये गये।

हिमालयन हिल स्टेट्स सब रीजनल कौंसिल (Himalayan Hill States Sub Regional Council)—10 जून 1947 ई० को हिमालयन हिल स्टेट्स रीजनल कौंसिल की एक अन्य बैठक शिमला के रॉयल होटल में हुई। इसमें 16 सदस्यों में से 11 सदस्यों ने बैठक में भाग लिया। इस बैठक में सदस्यों में मतभेद पैदा हो गये और छ: सदस्यों ने एक अलग संगठन बना लिया। इस संगठन का नाम **''हिमालयन हिल स्टेट्स सब-रीजनल कौंसिल''** रखा गया। इस नई कौंसिल के प्रधान **डॉ० यशवन्त सिंह परमार** चुने गये । मण्डी के तेज सिंह निधड़क, भज्जी के लीला दास वर्मा और बिलासुपर के सदाराम चन्देल उप-प्रधान बनाये गये। पं० पद्मदेव महामन्त्री, दौलत राम गुप्ता प्रचार मन्त्री, सूरत राम प्रकाश कोषाध्यक्ष और सेनू राम को कार्यालय मंत्री का कार्यभार सौंपा गया। इसके अतिरिक्त शिवानन्द रमौल, साधूराम,

...सिंह दत्त, हीरा सिंह पाल, गौरी नन्द, देवी राम, चमन लाल और चिरंजी लाल वर्मा को कौंसिल की कार्यकारिणी में शामिल किया गया। हिमालयन हिल स्टेट्स सब-रीजनल कौंसिल ने पहला सम्मेलन 31 जुलाई 1947 को शिमला की पहाड़ी रियासत **संगरी** में किया, जिसमें डा० यशवन्त सिंह परमार, पं० पद्मदेव, सत्यदेव बुशहरी, सूरत राम प्रकाश, ठाकुर हरिदास, राधा कृष्ण आदि नेताओं ने भाग लिया। इस सम्मेलन का आयोजन वहां के प्रजामण्डल के कार्यकर्ता चिरंजी लाल वर्मा ने किया। सम्मेलन की सफलता को देखकर सांगरी का राजा सांगरी छोड़ कर परिवार सहित कुल्लू में स्थित **आनी** चला गया।

सिरमौर प्रजामण्डल का सम्मेलन (Session of Sirmaur Praja Mandal)—अगस्त 1947 में **सिरमौर प्रजा मण्डल** ने नाहन में एक बडा सम्मेलन हुआ। इसके मुख्य आयोजक पं० राजेन्द्र दत्त, डॉ० देवेन्द्र सिंह, धर्म नारायण वकील, पं० शिवानन्द रमौल थे। इस सम्मेलन में सिरमौर के **राजा राजेन्द्र प्रकाश** ने भी भाग लिया। सम्मेलन में हिमालयन हिल स्टेट्स सब-रीजनल कौंसिल के अध्यक्ष **डॉ० यशवन्त सिंह परमार** को सभापति बनाया गया और उन्होंने राष्ट्रीय झंडा लहराया। नवम्बर 1947 ई० से डॉ० यशवन्त सिंह और पं० पद्मदेव ने सुकेत रियासत के दौरे आरम्भ किये। मण्डी में रियासत की ओर से प्रजामण्डलों में भाग लेने वालों पर बहुत ज्यादतियां की जाने लगीं और कई कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार भी कर लिया गया।

सुकेत की रियासती सरकार ने भी आन्दोलनकारियों का दमन करना शुरू कर दिया। प्रजा-मण्डल के प्रधान रत्न सिंह और उनके कुछ साथी भाग कर शिमला पहुँचे और यहां से वे लोग दिल्ली गये। वहां पर वे जवाहर लाल नेहरू और सरदार बल्लभ भाई पटेल से मिले। हिमालयन हिल स्टेट्स सब-रीजनल कौंसिल के प्रधान डॉ० यशवन्त सिंह परमार भी उनके साथ थे। केन्द्रीय नेताओं ने सहायता का आश्वासन दिया। हिमालयन हिल स्टेट्स सब-रीजनल कौंसिल गुट के अध्यक्ष डॉ० यशवन्त सिंह परमार पहाड़ी रियासतों के '' भारत संघ'' में विलय का प्रचार करते रहे। दूसरी ओर मूल संस्था **''हिमालयन हिल स्टेट्स रीजनल कौंसिल''** के सदस्य भी अपना काम नियमित रूप से करते रहे। इसके मुख्य सदस्य भागमल सौहटा, सत्यदेव बुशैहरी, हीरा सिंह पाल, भास्करानन्द शर्मा, स्वामी पूर्णानन्द, बाबू शिव दत्त, पं० सीता राम, ठाकुर हरि दास, सूरत राम, प्रकाश, देवी राम केवला, सन्त राम, मुकुन्द लाल, सदा राम , नेगी विरजा नन्द, चिरंजी लाल वर्मा थे। इन लोगों ने 21 दिसम्बर 1947 को इस गुट का सम्मेलन शांगरी रियासत की राजधानी बड़ागांव में किया। इस की अध्यक्षता **सत्य देव बुशैहरी** ने की। इस सम्मेलन में एक प्रस्ताव पास किया गया, जिसमें सभी पहाड़ी रियासतों को मिलाकर एक पहाड़ी प्रान्त बनाने की मांग की गई। इन प्रजामण्डलों ने पहाड़ी राजाओं पर अपना बहुत दबाव बढ़ाया और उनसे मांग करने लगे कि वे अपनी रियासतों में उत्तरदायी सरकार बनायें। 15 अगस्त 1947 ई० को स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत सरकार के राज्य मन्त्रालय की प्रजामण्डल कार्यकर्ताओं के साथ सहानुभूति होने से राजाओं ने भी नाजुक स्थिति देख कर अपनी रियासतों में उत्तरदायी सरकारें स्थापित करनी आरम्भ कर दीं।

कुनिहार के ठाकुर ने इस आन्दोलन की बहुत प्रशंसा की और अपने राज्य के लोगों को प्रशासन में सम्मिलित कर लिया। यह देखकर कुछ अन्य शासकों ने भी ऐसा ही किया। स्वाधीनता दिवस के अवसर पर **थ्योग** रियासत के प्रजा मण्डल के नेताओं ने **राणा कर्मचन्द** को सत्ता छोड़ने पर मजबूर कर दिया। कुछ समय के पश्चात् राणा ने मंत्री परिषद् की घोषणा कर दी, जिसके 13 सदस्य थे। महात्मा गांधी और सरदार पटेल ने इन कदमों का स्वागत किया परन्तु पांच मास के पश्चात् राणा ने खजाने पर कुछ लोगों की सहायता से कब्जा कर लिया। सरदार पटेल के हस्तक्षेप पर सशस्त्र पुलिस थ्योग भेजी गई। शासक को पकड़ कर वहां से बाहर निकाल दिया गया। थ्योग पहली रियासत थी, जो हिमाचल प्रदेश के बनने से पूर्व ही भारतीय संघ में मिल गई।

जुब्बल के राजा **दिग्विजय चन्द्र** ने आने वाले समय को देखते हुये आठ सदस्यों की एक समिति बनाई। इस के पांच सदस्य निर्वाचित और तीन मनोनीत थे। इसका कार्य लोगों की शिकायतें सुनना और उन्हें दूर करना था। बाद में एक प्रतिनिधि सरकार बना दी गई, जिसके मुख्यमंत्री भागमल सौहटा तथा जयलाल शरखोली, वशेर चन्द नेगी, बाबू दूला राम भेजटा और कुंवर रघुवर सिंह मन्त्री बने। यह मन्त्रिमण्डल 15 अप्रैल 1948 ई० तक कार्य करता रहा।

कोटी के राणा ने **25 नवम्बर 1947 ई०** को एक विधानसभा स्थापित करने की घोषणा की। बुशैहर में सत्य देव बुशैहरी ने मार्च 1947 में ही सत्याग्रह आन्दोलन आरम्भ कर दिया था। इस कारण बहुत से कार्यकर्ता पकड़े गये। यह देखकर रियासत के कर्मचारियों ने आन्दोलन करने आरम्भ कर दिये और उन्होंने **''कर्मचारी संघ''** बनाया। रियासती सरकार ने उनकी मांग मान ली और 18 अप्रैल 1947 ई० को एक प्रतिनिधि सभा की बात स्वीकार कर ली। इस प्रतिनिधि सभा को स्थापित करने के लिये लोगों के प्रतिनिधियों को विश्वास में नहीं लिया गया। इसलिये उन्होंने अविश्वास प्रस्ताव पास किया। अक्तूबर 1947 ई० को चुनाव हुये और प्रजामण्डल ने सत्यदेव बुशैहरी के नेतृत्त्व में चुनाव में विजय प्राप्त की।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् कुछ लोगों ने मांग की कि पहाड़ी रियासतों को पूर्वी पंजाब में मिला दिया जाये। पूर्वी पंजाब के गवर्नर **चन्दू लाल त्रिवेदी** और मुख्यमंत्री **गोपी चन्द भार्गव** ने भी पं० जवाहर लाल नेहरू और सरदार पटेल को पत्र लिखे कि पहाड़ी रियासतों को पूर्वी पंजाब में मिला दिया जाये परन्तु इन रियासतों के राजाओं तथा लोगों ने इसका डट कर विरोध किया। इन राजाओं तथा प्रजामण्डल के लोगों का कहना था कि इन रियासतों के लोग भाषा, संस्कृति और सामाजिक व्यवहार की दृष्टि से पंजाब के लोगों से एकदम अलग हैं। यही बात पं० जवाहर लाल नेहरू तथा सरदार बल्लभ भाई पटेल ने पंजाब के गवर्नर चन्दू लाल त्रिवेदी और गोपीचन्द भार्गव के पत्रों के उत्तर में लिखी। इसलिये शिमला की पहाड़ी रियासतों के राजा जनवरी 1948 ई० के प्रथम सप्ताह में दिल्ली में इकट्ठे हुये और आगे का कार्यक्रम बनाया। बैठक में इन राजाओं ने यह प्रस्ताव पारित किया कि ''पूर्ण रूप से विचार करने के पश्चात् यह निर्णय लिया गया है कि लोगों की भावना और भलाई को ध्यान में रखते हुये शिमला की सभी पहाड़ी रियासतों को एक संघ के रूप में संगठित किया जाये''। इसलिये सभी रियासतों को संदेश भेजे गये कि वे अपने-अपने प्रतिनिधि चुनकर 26 जनवरी 1948 तक सोलन भेजें ताकि संविधान बनाने वाली समिति की बैठक में भाग ले सकें। इसी अवधि में बघाट का राजा **दुर्गा सिंह** तथा मण्डी का राजा **जोगेन्द्र सेन** दिल्ली में थे। वे दोनों वहां महात्मा गांधी से मिले। गांधी जी ने उन्हें सलाह दी कि वे प्रजामण्डल और राजाओं के प्रतिनिधियों की बैठक बुलाकर अपने भविष्य के बारे में फैसला करें।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न
(Important Questions)

1. ब्रिटिश काल में 1839-1948 हिमाचल के प्रमुख जन आन्दोलनों का वर्णन करो।
   Explain the major popular protests during the British Period from 1839 to 1947.
2. भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन की स्थापना हिमाचल में कहाँ हुई तथा हिमाचल में राष्ट्रीय आन्दोलन के विकास का वर्णन करो।
   Where was the Indian National Movement started in Himachal ? Discuss the development of Indian National Movement in Himachal.
3. हिमाचल प्रदेश के प्रमुख प्रजामण्डलों का वर्णन करो।
   Explain the major Praja Mandals of Himachal Pradesh.
4. हिमालय हिल स्टेट्स कौंसिल की स्थापना तथा सुझावों का वर्णन करो।
   Explain the toundation and objectives of Himalayan Hill States Council.
5. हिमालयन हिल-स्टेट्स सब रीजनल कौंसिल की स्थापना कैसे हुई उसके प्रमुख उद्देश्य क्या थे?
   How was the Himalayan States Sub-regional Counail formed ? Explain its main objectives.
6. प्रजा मण्डलों के प्रमुख उद्देश्यों का वर्णन करें।
   Explain the major objectives of Praja Mandals.
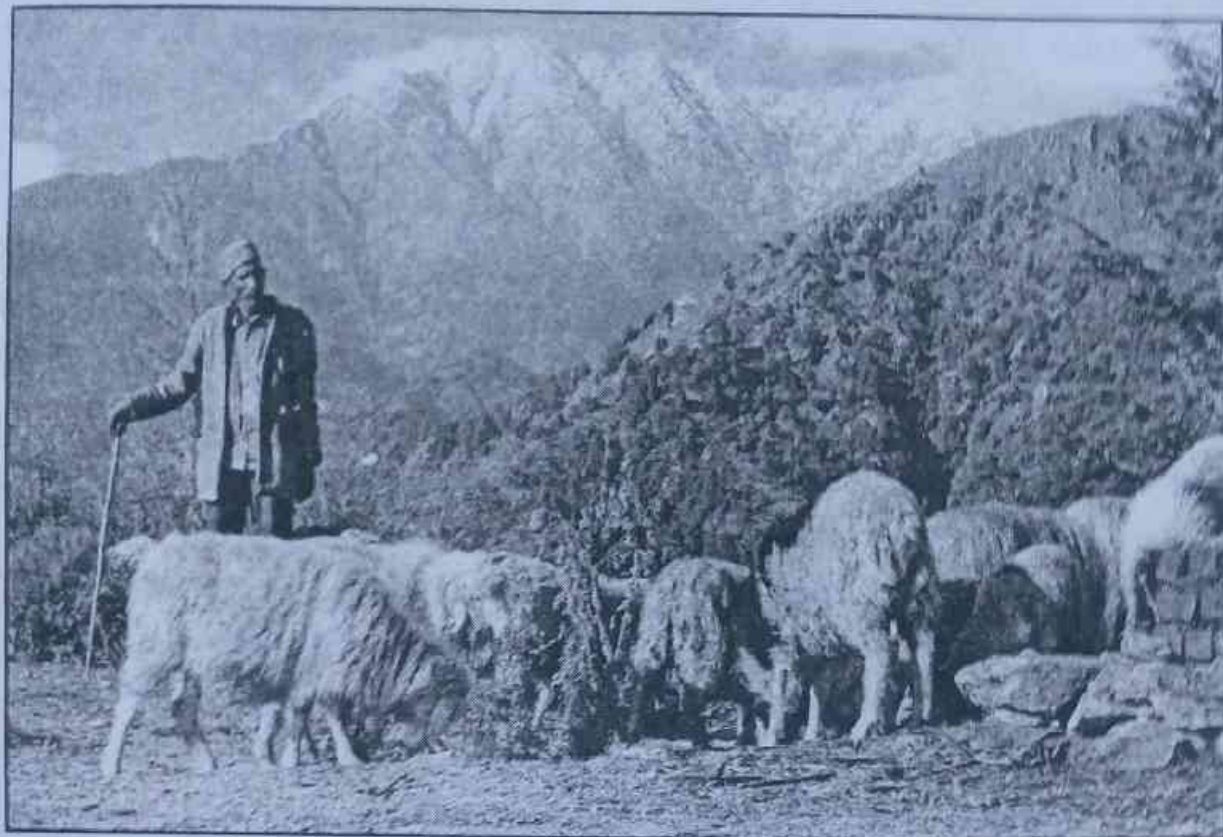
●●●

Unit – IV

The Idea of Himachal Pradesh

IV.1. The Birth of Modern Himachal : 1947-71 : Party Politics and re-organization.

IV.2. Socio-economic change in Modern Himachal.

IV.3. H.P. Ceiling of Land Holding Bill, 1972

IV.4. Tribes of Himachal Pradesh with special reference to Gaddi, Gujjar, Kinnaura, Lahaula and Pangwal.

IV.5. Art and Architecture in the 19th and 20th centuries with special reference to Colonial Architecture (Simla and main cantonments in Himachal Pradesh)

10 हिमाचल प्रदेश के राजनीतिक दल एवं राजनीतिक विकास
(POLITICAL PARTIES AND POLITICAL DEVELOPMENT IN HIMACHAL PRADESH)

भूमिका (Introduction)

स्वतंत्रता से पूर्व जिस प्रकार देश में कांग्रेस ही प्रमुख दल था, उसी प्रकार हिमाचल में भी कांग्रेस ही प्रमुख दल था। यद्यपि साम्यवादी दल की स्थापना स्वतंत्रता से पहले ही हो चुकी थी, परन्तु उसका भारतीय राजनीति में कोई विशेष महत्व नहीं था। इस प्रकार समस्त देश में केवल कांग्रेस का ही प्रभुत्व था। 1947 में स्वतंत्रता के बाद धीरे-धीरे राजनीति में परिवर्तन होने लगा तथा अन्य कई दल अस्तित्व में आ गए। 1951 ई. में जनसंघ की स्थापना हुई। इसी प्रकार हिमाचल में स्वतंत्र पार्टी, प्रजा सोशलिस्ट पार्टी, विशाल हिमाचल समिति आदि की स्थापना की गई। हिमाचल में 1952 से 1972 तक कांग्रेस दल का प्रभुत्व स्थापित रहा और डा. यशवंत सिंह परमार हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री बने रहे।

हिमाचल प्रदेश के 1952 से 1972 तक प्रमुख राजनीतिक दल
(Major Political Parties of Himachal Pradesh from 1952 to 1972)

भारत की स्वतंत्रता से पहले हिमाचल प्रदेश सामन्तों, जागीरदारों, शासकों आदि के आधिपत्य में रहा तथा वहां के लोग लोकतंत्रीय प्रणाली से अनभिज्ञ रहे। सर्वप्रथम 1951-52 के चुनावों में हिमाचल के लोगों को वोट का अधिकार मिला तथा उन्होंने विधानसभा के चुनावों में इस अधिकार का स्वतंत्रतापूर्वक प्रयोग किया। इस चुनाव में तथा इसके बाद के चुनावों में अर्थात् 1952 से 1972 तक के समय में हिमाचल प्रदेश में अग्रलिखित राजनीतिक दलों ने भाग लिया।

1. कांग्रेस (Congress) — कांग्रेस की स्थापना 1885 ई. में एक अंग्रेज अधिकारी **ए. ओ. ह्यूम** (A.O. Hume) ने बम्बई में की थी। इसके प्रथम अध्यक्ष व्योमेश चन्द्र बैनर्जी (W.C. Banerji) थे। कांग्रेस के अनथक प्रयत्नों के परिणामस्वरूप ही भारत को 1947 ई. में ब्रिटिश शासन से स्वतंत्रता मिली। यही कारण था कि स्वतंत्र भारत में अनेक वर्षों तक सत्ता पर कांग्रेस का ही आधिपत्य बना रहा।

जिस प्रकार स्वतंत्रता के उपरान्त देश पर कांग्रेस पार्टी का लम्बे समय तक शासन रहा, उसी प्रकार हिमाचल प्रदेश में भी कांग्रेस पार्टी लम्बे समय तक शासन सत्ता पर अपना आधिपत्य जमाए रही। प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी **डॉ. यशवंत सिंह परमार** मार्च, 1952 से जनवरी, 1977 तक हिमाचल प्रदेश में कांग्रेस पार्टी की ओर से प्रदेश के मुख्यमंत्री रहे। उन्हें 1948 में ही उन्हें अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी का सदस्य मनोनीत किया गया था। 1951-52 में उन्होंने विधानसभा चुनाव में दल का नेतृत्व किया तथा विधानसभा नेता और मुख्यमंत्री बने। पं. नेहरू जिस प्रकार भारत के शिखर पुरुष थे, उसी प्रकार डॉ. परमार हिमाचल प्रदेश के शिखर पुरुष रहे। उन्हें ही हिमाचल प्रदेश के संस्थापक के रूप में याद किया जाता है। यह उनकी कार्यकुशलता का ही परिणाम है कि उन्हें लगातार प्रदेश के शीर्ष पद पर जनता आसीन करती रही।

कांग्रेस के असंतुष्टों ने डॉ. परमार को मुख्यमंत्री पद से हटाने के लिए वर्षों संघर्ष किया। हाईकमान से डॉ. परमार का तालमेल तो था ही, इसलिए वह अपने पद पर डटे हुए थे। किन्हीं कारणों से संजय गांधी उनसे नाराज़ हो गए। असंतुष्ट विधायकों को यह अच्छा मौका लगा और उन्होंने संजय गांधी से सम्पर्क स्थापित किया। इस कारण उन्हें पद से हटने के लिए हाईकमान का आदेश मिला। अत: उन्होंने 28 जनवरी, 1977 को उन्होंने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया। इसके पश्चात् **ठाकुर राम लाल** को हिमाचल प्रदेश का मुख्यमंत्री बनाया गया, जो 30 अप्रैल, 1977 तक वह इस पर आसीन रहे।

2. भारतीय जनसंघ (Bhartiya Jansangha) — भारतीय जनसंघ की स्थापना 1951 में डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने की थी तथा वही इस दल के प्रथम अध्यक्ष थे। पं. दीन दयाल शर्मा इस दल के प्रथम महासचिव थे। डॉ.

श्यामा प्रसाद मुखर्जी, पं. नेहरू के नेतृत्व में बने पहले अन्तरिम मंत्रिमण्डल में शामिल थे, परन्तु 1950 ई. में उन्होंने मंत्रिमण्डल से त्याग पत्र दे दिया और भारतीय जनसंघ नामक राजनीतिक दल बनाया। 'राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ' का भारतीय जनसंघ से गहरा रिश्ता था और यह जनसंघ की रीढ़ की हड्डी थी। अनुशासित तथा कर्मठ कार्यकर्ता उपलब्ध कराने में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती थी। हिमाचल प्रदेश में जनसंघ की स्वतंत्र इकाई नहीं थी और यह पंजाब की शाखा से जुड़ी थी। इसलिए हिमाचल में प्रारम्भ में जनसंघ को अधिक सफलता नहीं मिल पाई।

1953 में जम्मू व कश्मीर को भारत का अभिन्न अंग बनाने के लिए भारतीय जनसंघ ने सहयोग आन्दोलन प्रारम्भ किया था। सत्याग्रह के लिए लोग पठानकोट पहुंचे, जहां से विद्रोहियों को पकड़ कर गुरदासपुर की जेल में डाल दिया गया। इस प्रकार शुरू-शुरू में विद्रोही दल के रूप में ही जनसंघ अस्तित्व में आया और 1953 से लेकर 1975 के 22 वर्षों के लंबे अन्तराल तक कई टेढ़े-मेढ़े रास्तों से गुज़रता हुआ आगे बढ़ता रहा।

इस पार्टी ने 1957 में दिल्ली में महापंजाब आन्दोलन के दिनों में संसद् भवन के सामने एक विशाल प्रदर्शन किया। ज्योंहि जुलूस ने आगे बढ़ने की कोशिश की तो पुलिस द्वारा प्रदर्शनकारियों को गिरफ्तार कर लिया गया और उन सब को जेल में डाल दिया गया। अधिकतर प्रदर्शनकारी पंजाब से आए थे। शांता कुमार उन दिनों दिल्ली में ही थे। दिल्ली से भी काफी लोग इस प्रदर्शन में शामिल हुए थे। जब सब जेल में पहुंच गए, तब उन हज़ारों लोगों के लिए जेल में कोई स्थान नहीं बचा। सामने एक मैदान में सब को बिठा दिया गया, जहां एक ऊंचा सा पत्थर था। यहीं से महाशय कृष्ण जी ने सब को संबोधित किया। रात पड़ने से पहले ही इन सब को छोड़ दिया गया।

7 जुलाई, 1961 में जनसंघ ने दो दिवसीय सम्मेलन शिमला में किया जिसमें हिमाचल की जनसंघ इकाई ने प्रदेश के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक मुद्राओं को उठाकर अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई परन्तु हिमाचल की जनसंघ इकाई को राष्ट्रीय नेतृत्व के आदेशों को मानते हुए विशाल हिमाचल प्रदेश की मांग को छोड़ना पड़ा। अत: हिमाचल प्रदेश की स्वतंत्र जनसंघ इकाई का गठन **पहली नवम्बर 1966** को ही हो पाया, जब हिमाचल में पंजाब के पहाड़ी क्षेत्रों को मिलाया गया।

जब 1970 में हिमाचल प्रदेश सरकार ने **बसों** के किराये में 30 से 40 **प्रतिशत** की वृद्धि कर दी, तब हिमाचल जनसंघ ने उसके विरोध में पूरे प्रदेश में एक जन-आन्दोलन चलाया। शिमला सचिवालय के सामने प्रदर्शन करने पहुंचे आन्दोलनकारियों को गिरफ्तार कर लिया गया। प्रदेश संगठन मंत्री **भगवत स्वरूप, संसारचन्द, कृष्ण चन्द्र, केसर सिंह, प्रताप सिंह** तथा **प्रेमसागर** सहित अन्य बहुत से कार्यकर्त्ता भी इनके साथ थे। इन सभी को 107-51 धारा के अधीन गिरफ्तार किया गया था। रात के समय शिमला जनसंघ के नेता **माधवेन्द्र शर्मा** के ज़मानत देने पर उन्हें छोड़ दिया गया। सरकार ने वह मुकद्दमा स्वयं ही वापस ले लिया। बसों के बढ़े किराए का आदेश भी सरकार ने वापस ले लिया।

3. स्वतंत्र पार्टी (Swatantra Party) — स्वतंत्र पार्टी की स्थापना स्वतंत्र भारत में दूसरे आम चुनावों के बाद 1959 ई. में की गई। इस दल के संस्थापकों में **सी. राजगोपालचारी, के.एम.मुंशी, एन.जी.रंगा** तथा **मीनू मसानी** जैसे प्रमुख कांग्रेसी नेता थे। यह दल अर्थव्यवस्था में सरकार के कम से कम हस्तक्षेप के पक्ष में तथा व्यक्तिगत स्वतंत्रता के पक्ष में था। हिमाचल प्रदेश में इस दल की स्थापना राजा **आनन्द चन्द बिलासपुर** द्वारा **29 फरवरी 1960 ई.** में की गई। हिमाचल प्रदेश में यह दल कांग्रेस के विरुद्ध एक सशक्त संगठन के रूप में उभरा तथा हिमाचल प्रदेश के विधानसभा के चुनाव में **बिलासपुर** जिले की चारों सीटों पर विजय प्राप्त की। बाद में टैरीटोरियल कौंसिल के दल सदस्य भी स्वतंत्र पार्टी में शामिल हो गए। इस दल ने 1960 के दशक में हिमाचल की राजनीति को बहुत प्रभावित किया। इस दल ने राष्ट्रीय राजनीति को भी बहुत प्रभावित किया तथा 1962 के लोकसभा के चुनावों में 18 स्थान प्राप्त किए। हिमाचल में स्वतंत्र पार्टी की शाखाएं चम्बा, **मण्डी**, सुन्दर नगर, रामपुर, **बिलासपुर**, **नाहन**, **सोलन** में स्थापित की गईं। स्वतंत्र पार्टी के संस्थापक राजा आनन्द चन्द जब कांग्रेस में शामिल हो गए तो हिमाचल में इस दल का अस्तित्व समाप्त हो गया।

4. कम्युनिस्ट पार्टी (Communist Party) — भारत में कम्युनिस्ट पार्टी अर्थात् साम्यवादी दल की स्थापना स्वतंत्रता से पूर्व हुई थी। 1917 की रूस की क्रान्ति से प्रभावित होकर भारत के अनेक नवयुवक क्रान्ति द्वारा भारत की समस्याओं का समाधान चाहते थे। उनका विश्वास था कि केवल क्रान्ति द्वारा ही ब्रिटिश सरकार को झुकाया जा सकता

है। अत: 1924 में कानपुर में कुछ संगठनों का सम्मेलन हुआ, जिसमें साम्यवादी दल की आधारशिला रखी गई तथा 1925 ई. इस दल की विधिवत् स्थापना की गई। हिमाचल प्रदेश में इस दल की स्थापना का पहला कदम **अप्रैल** 1951 में उठाया गया, जब **भंगरोटू (मण्डी)** में किसान सभा आयोजित की गई। इस सभा में **कसौली तथा सोलन ब्रूरी** और नाहन फाऊंडरी (Nahan Foundary) के मजदूरों की मांगों को पूरा करवाने का मुद्दा उठाया गया। विधिवत् रूप में हिमाचल प्रदेश में इस दल की स्थापना **जनवरी 1953** में एक शाखा स्थापित करके की गई तथा इस शाखा को पंजाब कम्युनिस्ट पार्टी के अधीन रखा गया। यद्यपि 1961 ई. तक इस दल की हिमाचल शाखा पंजाब के दल के अधीन ही बनी रही, फिर भी हिमाचल की शाखा पृथक् तथा स्वतंत्र हिमाचल की स्थापना पर जोर देती रही। हिमाचल प्रदेश में इस दल ने श्रमिकों तथा दिहाड़ीदार मज़दूरों के हितों की रक्षा के लिए बीड़ा उठाया। भारत में इस दल को **केरल, आन्ध्र प्रदेश** तथा **पश्चिमी बंगाल** में बड़ा समर्थन मिला तथा केरल में तो 1957 के आम चुनावों के बाद कुछ निर्दलीय विधायकों के सहयोग से सरकार भी बनाई थी।

5. प्रजा सोशलिस्ट पार्टी (Praja Socialist Party) — 1952 में समाजवादी दल तथा किसान मज़दूर प्रजा दल का विलय हो गया तथा एक नये दल प्रजा सोशलिस्ट पार्टी की स्थापना हुई। हिमाचल प्रदेश में इस दल की स्थापना कांग्रेस के कुछ नाराज नेताओं ने की थी। इस दल को हिमाचल प्रदेश में अधिक समर्थन नहीं मिला। परिणामस्वरूप बाद में इस दल के सदस्य कांग्रेस पार्टी में शामिल हो गए। इस प्रकार हिमाचल प्रदेश में इस दल का कोई महत्त्वपूर्ण योगदान नहीं रहा। इस दल का राष्ट्रीय महत्त्व अवश्य ही देखने को मिलता है। इस दल के समर्थन से ही 1957 में कांग्रेस ने सरकार बनाई थी। 1954 में तो त्रावनकोर कोचीन (वर्तमान केरल) में इस दल ने अपनी सरकार का भी गठन किया था।

6. अनुसूचित जाति संघ (Scheduled Caste Association) — हिमाचल प्रदेश में अनुसूचित जाति संघ की स्थापना 1950 ई. में की गई तथा **राम दास** को इस का प्रथम महासचिव बनाया गया। इस दल ने **नवम्बर, 1951** में हिमाचल में हुए विधानसभा चुनावों में अपने 9 उम्मीदवार खड़े किये तथा 2 स्थानों पर विजय प्राप्त भी की। इस दल का मुख्य उद्देश्य अनुसूचित जाति के लोगों की उच्च जाति के लोगों से रक्षा करना था। इस दल को हिमाचल प्रदेश में विशेष सफलता नहीं मिल पाई, क्योंकि कांग्रेस की नीतियां भी अनुसूचित जातियों की पक्षधर थीं। इसके अतिरिक्त इस दल के महासचिव रामदास को भी कांग्रेस ने अपने साथ मिला लिया, जिससे इस दल का अस्तित्व ही समाप्त हो गया। इस प्रकार अनुसूचित जाति संघ तथा रिपब्लिकन पार्टी दोनों ही हिमाचल प्रदेश में सफल नहीं हो पाये।

7. विशाल हिमाचल समिति (Vishal Himachal Samiti) — इस समिति संगठन की स्थापना 1955 ई. में की गई। इस संगठन में जनसंघ को छोड़कर अन्य सभी दलों के सदस्य शामिल थे। इस संगठन का प्रमुख उद्देश्य विशाल हिमाचल प्रदेश की स्थापना करना था। कुछ समय के बाद इस संगठन में शामिल कांग्रेस के सदस्यों ने एक अलग संगठन की स्थापना कर ली, जिसने विशाल हिमाचल प्रदेश की माँग का समर्थन किया। 1 नवम्बर 1966 में जब हिमाचल प्रदेश में पंजाब के पहाड़ी भागों को मिला कर हिमाचल प्रदेश का पुनर्गठन किया गया तो विशाल हिमाचल समिति तथा विशाल हिमाचल संगठन का कार्य भी समाप्त हो गया।

8. लोकराज समिति/पार्टी (Lokraj Samiti/Party)– इस संगठन की स्थापना 1967 ई. में हिमाचल प्रदेश के विधानसभा चुनावों से पहले की गई। इसकी स्थापना कांग्रेस के भूतपूर्व सदस्य तथा समाजवादी दल के असंतुष्ट सदस्यों द्वारा की गई। इस संगठन का मुख्य उद्देश्य हिमाचल प्रदेश को पूर्ण राज्य का दर्जा दिलाना था। इस पार्टी का कोई भी निश्चित संविधान नहीं था।

1972 के बाद हिमाचल प्रदेश में राजनीतिक विकास
(Political Development in Himachal Pradesh after 1972)

1972 के विधानसभा चुनावों में भी कांग्रेस को हिमाचल प्रदेश की 68 सीटों में से 54 सीटें प्राप्त हुईं तथा एक बार पुन: डॉ. परमार प्रदेश के मुख्यमंत्री बने परन्तु कांग्रेस के भीतर उनके बढ़ते विरोध के कारण उन्हें 28 जनवरी 1977 को त्यागपत्र देना पड़ा तथा ठाकुर राम लाल नये मुख्यमंत्री बने।

देश में आपातकालीन घोषणा तथा उसका प्रभाव (Declaration of Emergency in Country and its impact) — 1975 में आपातकालीन की घोषणा के समय हिमाचल प्रदेश जनसंघ की प्रतिनिधि सभा का अधिवेशन उसी मास के अन्तिम दिनों में शिमला में आयोजित किया गया था। अखिल भारतीय जनसंघ के संगठन **मंत्री श्री कृष्ण** लाल भी शिमला आए थे। शिमला में जनसंघ के जितने भी प्रमुख नेता थे वे सब 10 बजे एक एकांत स्थान पर मिले। वहां बैठकर चंडीगढ़ और दिल्ली से दूरभाष पर सम्पर्क करने से उन्हें पता चला कि तुरन्त गिरफ्तारियाँ की जा रही है। तब तक यह समाचार भी मिल गया था कि समाचार पत्रों पर भी सैंसर लगा दिया गया है। इससे उन्होंने प्रदेश जनसंघ के अध्यक्ष को अवगत करा दिया। जनसंघ का यह अधिवेशन स्थगित कर दिया गया। उसी सायंकाल शिमला में सभी विरोधी दलों की ओर से आपातकाल की घोषणा के विरुद्ध एक जनसभा की योजना बनाई गई। **शान्ता कुमार** और **कंवर दुर्गाचन्द** उस सभा में नहीं बोले। उन दोनों की इच्छा यह थी कि अपने घर पालमपुर पहुंचकर ही गिरफ्तारी दी जाए। इस सभा के तुरन्त बाद शिमला के जनसंघ विधायक **दौलतराम चौहान** को गिरफ्तार कर लिया गया। इनकी गिरफ्तारी के बाद शांता कुमार कुछ अन्य कार्यकर्ताओं के साथ दीपक होटल में बैठे हुये थे और इन घटनाओं पर चर्चा कर रहे थे, तभी सी. आई.डी. द्वारा उन्हें 27 जून को गिरफ्तार कर लिया गया। 28 जून 1975 को **मदनलाल चिटकारा**, जो वकील थे, उनसे मिलने आए। उनके साथ कुछ देर बातचीत हुई। फिर भी आपातकाल के उन्नीस महीने उन्हें जेल में गुज़ारने पड़े। आपातकाल की समाप्ति तथा चुनाव की घोषणा होने पर ही बन्दियों को रिहा किया गया।

1975 के आपातकाल के बाद की घटनाओं ने देश को झिंझोड़ कर रख दिया। इन परिस्थितियों में जय प्रकाश नारायण ने एक जन आन्दोलन चलाया, जिसके परिणामस्वरूप कांग्रेस के विकल्प के रूप में जनता पार्टी का गठन हुआ, जिसमें पांच दल शामिल थे। इन पार्टी के घटकों में जनसंघ एक प्रमुख घटक था। 1977 के लोकसभा के चुनावों में जनता पार्टी को भारी विजय प्राप्त हुई तथा **श्री मोरार जी देसाई** देश के नये प्रधानमंत्री तथा **श्री अटल बिहारी वाजपेयी** विदेश मंत्री बने।

हिमाचल में जनता पार्टी (Janta Party in Himachal) — लोकसभा में अभूतपूर्व विजय के बाद प्रायः यह निश्चित समझा जा रहा था कि अब प्रदेशों में भी जनता पार्टी की सरकारें बनेंगी। इस कारण प्रदेशों में सत्ता के बीज बोए जाने लगे। जनता पार्टी का गठन हो चुका था। प्रदेशों के लिए संयोजक तथा चुनाव समितियों का गठन किया जाना था। उसे लेकर खूब जोड़-तोड़ शुरू हो गया। उस समय संयोजक के पद के लिए **कुंवर दुर्गाचन्द** , **रणजीत सिंह** तथा **किशोरीलाल** प्रयास कर रहे थे। शान्ता कुमार का विचार था कि कुंवर दुर्गाचन्द संयोजक के कार्य को ठीक प्रकार से निभा पाएंगे। लोकसभा चुनाव के समय शान्ता कुमार प्रदेश के गांव-गांव में घूम कर प्रचार करते रहे परन्तु कुछ नेता दिल्ली के चक्कर लगाते रहे। केन्द्र ने **श्री किशोरी लाल** को संयोजक नियुक्त कर दिया। उनके साथ सात सदस्यों की एक चुनाव अभियान समिति बनाई गई। **श्री रणजीत सिंह** इसके प्रमुख नियुक्त किए गए। शांता कुमार को इस बात का विशेष दुःख नहीं था कि वह इन दोनों में से किसी भी समिति के सदस्य नहीं बनाए गए। पर इस बात का उन्हें आघात लगा कि उन जैसे को टिकट देने वालों में वे भी थे जो आपातकाल में माफी मांगते रहे, जेल से बचने के लिए डॉ. परमार से मित्रता का दम भरते रहे, उन्नीस महीने किसी आन्दोलन या संघर्ष के निकट तक नहीं आए और हेराफेरी करने में विशेषज्ञ थे। टिकट की बंदरबांट में कुछ पुराने कार्यकर्त्ताओं की उपेक्षा की गई, जो बचपन से लेकर हमेशा कांग्रेस का विरोध करने वाले थे ऐसे कुछ लोग पीछे कर दिए गए। आपातकाल में जेल गए कुछ लोग भी टिकट से वंचित रह गए, जबकि कुछ लोगों को टिकट मिल गया, जिन्होंने दो ही महीने पहले लोकसभा चुनाव में कांग्रेस की सहायता की थी। टिकट देने के लिए सिद्धांत की बात नहीं रही, बल्कि व्यक्तिगत वफादारी के तराजू पर तोलने की कोशिश की गई। केन्द्रीय बोर्ड ने लगभग उन्हीं को टिकट दिया जिनकी सिफारिश प्रदेश समिति ने की थी। अन्ततः चुनावों में जीत के उपरान्त **शांता कुमार** को ही 26.6.77 को मुख्यमंत्री बनाया गया।

तीस वर्षों के उपरान्त यहां की सरकार बदली थी। इसलिए मुख्यमंत्री **शान्ता कुमार** के नेतृत्व में यह परिवर्तन बड़े जोश एवं उत्साह के साथ हुआ। 1980 में शांता कुमार के नेतृत्व वाली सरकार गिर गई और पुनः चुनाव हुए, जिसमें कांग्रेस को जीत मिली।

हिमाचल में 1980 से 2012 तक राजनीतिक विकास (Political Development in Himachal from 1980 to 2012) — कांग्रेस दस के ठाकुर राम लाल 14-2-80 को प्रदेश के नये मुख्यमंत्री बने। 8 अप्रैल 1983 को उनके स्थान पर **श्री वीरभद्र सिंह** मुख्यमंत्री बनाये गए। 1985 में विधानसभा के चुनावों में कांग्रेस को भारी बहुमत मिला और श्री वीरभद्र सिंह पुन: प्रदेश के मुख्यमंत्री बने। वह इस पद पर **4 मार्च 1990** तक आसीन रहे। 1990 के चुनावों में भारतीय जनता पार्टी को बहुमत मिला और **5 अप्रैल, 1990** को **शांता कुमार** के नेतृत्व में नई सरकार बनी। 15 दिसम्बर 1992 को राष्ट्रपति के अध्यादेश द्वारा विधानसभा भंग कर दी गई और प्रदेश में राष्ट्रपति शासन लागू कर दिया गया। इस प्रकार शांता कुमार के नेतृत्व वाली सरकार केवल अढाई वर्ष तक ही शासन कर सकी।

नवम्बर 1993 में प्रदेश में विधानसभा के चुनाव हुए तथा वीरभद्र सिंह रोहडू से विधानसभा के लिए जीते और पुन: **3 दिसम्बर 1993** को मुख्यमंत्री बने। 1998 के चुनावों में भारतीय जनता पार्टी तथा कांग्रेस दोनों को ही बहुमत नहीं मिल पाया। अत: भारतीय जनता पार्टी ने **सुखराम** द्वारा बनी पार्टी **हिमाचल विकास कांग्रेस** के साथ मिल कर सरकार का गठन किया और भारतीय जनता पार्टी के **प्रेम कुमार धूमल** 24 मार्च, 1998 को प्रदेश के मुख्यमंत्री बने तथा पं. सुख राम को उप- मुख्यमंत्री बनाया गया।

भारतीय जनता पार्टी और हिमाचल विकास कांग्रेस में गुटबाजी सोलन उपचुनाव में खुलकर सामने आयी, जहां एक ओर शान्ता कुमार के समर्थक महेन्द्र सिंह को टिकट दिलाने के पक्षधर थे, वहीं दूसरी ओर भारतीय जनता पार्टी ने **डॉ. राजीव बिंदल** को इस सीट पर टिकट दिया। हिमाचल विकास कांग्रेस भी इस सीट पर प्रत्याशी उतारना चाहती थी लेकिन आन्तरिक गुटबाजी के कारण हिमाचल विकास कांग्रेस को अन्तिम समय में अपने प्रत्याशी को हटाना पड़ा। इस प्रकार सोलन विधानसभा सीट पर भाजपा ने जीत हासिल की। उसके उम्मीदवार राजीव बिंदल को विजयी घोषित किया गया। इससे राज्य में भाजपा विधायक दल की संख्या बढ़कर 35 हो गई और पार्टी को अपने दम पर बहुमत हासिल हो गया। इस प्रकार भारतीय जनता पार्टी की सरकार 2003 तक सरलता से चल पाई परन्तु इस चुनाव से पं. सुखराम और महेन्द्र सिंह में विवाद बढ़ गया। इस चुनाव के दौरान जो चिंगारी हिमाचल विकास कांग्रेस और भारतीय जनता पार्टी के भीतर सुलग रही थी, उसी के कारण पहले महेन्द्र सिंह को हिमाचल विकास कांग्रेस से निष्कासित किया गया और बाद में उन्हें अपने कुछ समर्थकों के साथ पार्टी छोड़नी पड़ी। इस प्रकार हिमाचल विकास कांग्रेस का दो गुटों में विभाजित हो गया। सोलन उपचुनाव के कारण ही भारतीय जनता पार्टी में भी अन्तर्विरोध के स्वर मुखर होने लगे, परन्तु प्रेमकुमार धूमल पार्टी के अन्दर पनप रहे असन्तोष को दबा कर संगठनात्मक चुनाव शान्तिपूर्वक सम्पन्न कराने में सफल हुए।

2003 के चुनावों में एक बार फिर कांग्रेस को विजय प्राप्त हुई तथा **वीरभद्र सिंह 6 मार्च, 2003** को प्रदेश के मुख्य मंत्री बने तथा 2007 के चुनावों तक इस पद पर बने रहे। 2007 में हुए चुनावों में भारतीय जनता पार्टी को बहुमत प्राप्त हुआ और **श्री प्रेम कुमार धूमल 30 दिसम्बर 2007** को प्रदेश के मुख्यमंत्री बने तथा 25 दिसम्बर 2012 तक इस पद पर बने रहे।

2012 में प्रदेश विधानसभा के चुनावों में कांग्रेस पार्टी को पुन: बहुमत मिल गया और **25 दिसम्बर 2012** को **श्री वीरभद्र सिंह** प्रदेश के मुख्यमंत्री बने।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न
(Important Questions)

1. हिमाचल प्रदेश में 1972 तक प्रमुख राजनीतिक दलों का वर्णन करें।
   Explain the main Political Parties of Himachal Pradesh up to 1972.
2. हिमाचल प्रदेश में 1972 से 2012 तक के राजनीतिक विकास का वर्णन करें।
   Explain the Political Development in Himachal Pradesh from 1972 to 2012.

11

हिमाचल का पुनर्गठन
(REORGANISATION OF HIMACHAL)

भूमिका (Introduction)

15 अगस्त, 1947 को भारत ब्रिटिश शासन से स्वतंत्र हो गया और अंग्रेज भारत छोड़ कर इंग्लैण्ड वापिस चले गए। उस समय समस्त भारत में 562 छोटी-बड़ी रियासतें थीं। भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम के अनुसार उन रियासतों को भारत अथवा पाकिस्तान किसी से भी मिलने की स्वतंत्रता थी। इसके अतिरिक्त उन्हें स्वतंत्र रहने का भी अधिकार था। अतः समस्त भारत में रियासतों को भारत के साथ जोड़ने तथा रियासतों के पुनर्गठन का काम शुरू हुआ। अतः हिमाचल प्रदेश की पहाड़ी रियासतों के पुनर्गठन तथा वहां जन प्रतिनिधि सरकार की स्थापना करने की ओर ध्यान दिया जाने लगा। प्रजामण्डल के सदस्यों ने अपनी-अपनी रियासत में प्रतिनिधि सरकार बनाने के लिए राजाओं पर ज़ोर डाला। परिणामस्वरूप कुछ शासकों ने अपनी-अपनी रिसायतों में प्रतिनिधि सरकार बना भी ली। सबसे पहले **कुनिहार** के ठाकुर ने प्रशासन में लोगों को शामिल किया। इसी प्रकार **भागमल सौठा** के नेतृत्व में **जुब्बल** में भी प्रतिनिधि सरकार बनाई गई। बुशैहर में भी **सत्यदेव बुशैहरी** के नेतृत्व में प्रतिनिधि सरकार बनाई गई।

आधुनिक हिमाचल के निर्माण के विभिन्न चरण
(Different Steps of the Formation of Modern Himachal)

अलग पहाड़ी प्रांत की मांग

अलग पहाड़ी प्रांत की मांग (Demand for Separate Hill State)—21 दिसम्बर, 1947 को हिमालयन हिल स्टेट्स रीजनल कौंसिल का अधिवेशन **सत्यदेव बुशैहरी** के नेतृत्व में शांगरी रिसायत की राजधानी **बड़ागांव** में हुआ, जिसमें भागमल सौहटा, स्वामी पूर्णानन्द. सदाराम, ठाकुर हरिदास, सूरत प्रकाश आदि नेता शामिल हुए। इस अधिवेशन में पहाड़ी रिसायतों को मिलाकर पहाड़ी प्रांत बनाने की केन्द्रीय सरकार से मांग की गई।

शिमला की पहाड़ी रियासतों का सम्मेलन (Shimla Hill States Conference)- 26 से 28 जनवरी 1948 तक राजाओं और प्रजामण्डल के प्रतिनिधियों का सम्मेलन **बघाट** के राजा **दुर्गासिंह** की अध्यक्षता में **सोलन** के दरबार हाल में हुआ। इसमें केवल शिमला की पहाड़ी रियासतों ने भाग लिया। इस सम्मेलन में सभी ने **"हिमालय प्रान्त"** और **"रियासती संघ"** के प्रस्तावों पर विचार किया। साथ ही **चम्बा, मण्डी, बिलासपुर, सुकेत, सिरमौर** आदि शासकों व प्रजामण्डल के नेताओं से बातचीत करने का प्रस्ताव भी रखा गया। इसी सभा में प्रस्तावित संघ का नाम **"हिमाचल प्रदेश"** रखा गया। राजाओं की ओर से यह प्रस्ताव **बाघल** रियासत के **कंवर मोहन सिंह** ने रखा। उन्होंने प्रस्ताव में कहा कि शिमला की 25 पहाड़ी रियासतों के शासक अपनी प्रशासनिक सत्ता, अधिकार और सम्पत्ति आदि प्रस्तावित **"हिमाचल प्रदेश"** का संविधान बनने पर चुनाव द्वारा गठित जनता की प्रतिनिधि सरकार को सौंप देंगे। एक अन्य प्रस्ताव में केन्द्रीय सरकार के राज्य मन्त्रालय से यह निवेदन किया गया कि पंजाब की पहाड़ी रियासतों को भी प्रस्तावित "हिमाचल प्रदेश" में मिला दिया जाये तथा एक पूरा प्रान्त बना दिया जाये। इस कार्य की उद्‌देश्य पूर्ति के लिये एक **"नैगोशियेटिंग कमेटी"** बनाई गई। इस कमेटी में बघाट का राजा **दुर्गा सिंह**, जुब्बल के **भागमल सौहटा**, बुशैहर के **ठाकुर सेन नेगी** व **सत्य देव बुशैहरी**, बाघल के **कंवर मोहन सिंह** व **हीरा सिंह पाल** आदि आठ सदस्य शामिल थे। इस समिति का कार्य

अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिये दूसरी पहाड़ी रियासतों से तथा भारत सरकार के राज्य मन्त्रालय से बातचीत करना था।

पहाड़ी रियासतों को हिमाचल प्रदेश के रूप में संगठित करने की घोषणा राजा दुर्गा सिंह और प्रजा मण्डल के प्रतिनिधियों ने सोलन में की। राजा ने कुछ लोगों के मन में उत्पन्न हुये भय को दूर करने के उद्देश्य से घोषणा की कि **''हिमाचल प्रदेश''** भारत का अभिन्न अंग होगा और भारत के सभी नागरिकों के अधिकार एक समान होंगे। भारत सरकार को भी सूचित करने का फैसला किया गया कि **''हिमाचल प्रदेश'' पहली मार्च 1948** को अस्तित्व में आ जायेगा।

हिमालयन हिल स्टेट्स सब-रीजनल कौंसिल की शिमला में बैठक (Himalayan Hill States Sub-Regional Council Session)- प्रजामण्डल के दूसरे गुट **''हिमालयन हिल स्टेट्स सब-रीजनल कौंसिल''** के सदस्य पं० **पद्मदेव** और **डॉ० यशवन्त सिंह** परमार रियासती संघ के प्रस्ताव के विरुद्ध थे। उन्होंने भी जनवरी 1948 को आल इण्डिया स्टेट्स पीपुल्स कान्फ्रेंस के संरक्षण में शिमला में बैठक की। डॉ० यशवन्त सिंह परमार ने इस बैठक की अध्यक्षता की और कहा कि उन्हें संघ का प्रस्ताव तभी स्वीकार होगा, जब सत्ता लोगों के हाथों में दी जाये और प्रत्येक राज्य को विलीन करके **''हिमालय प्रान्त''** स्थापित किया जाये। यह बात राजाओं को मान्य नहीं थी। अत: डॉ. परमार सीधे दिल्ली गये और सरदार पटेल से मिले। प्रजा मण्डल के इस गुट ने इस बात पर जोर दिया कि सभी रियासतें भारतीय संघ में मिल जायें। इस उद्देश्य के लिये उन्होंने शिमला में एक **'हिमालय प्रान्त'** प्रोविज़नल गवर्नमैंट अर्थात् अस्थाई सरकार स्थापित की। इसके मुखिया **शिवानन्द रमौल** बनाये गये। इस गुट ने सुकेत के राजा को संदेश भेजा कि वह अपनी रियासत को 48 घंटे के भीतर भारतीय संघ में विलीन कर दें अन्यथा उसके विरुद्ध सत्याग्रह आरम्भ कर दिया जायेगा।

पद्मदेव के नेतृत्व में सुकेत सत्याग्रह (Suket Satyagraha in the leadership Padamadev)- राजा से कोई उत्तर न मिल पाने पर **18 फरवरी 1948** को **पं० पद्मदेव** के नेतृत्व में कुछ सत्याग्रही तत्तापानी के रास्ते से सुकेत रियासत में दाखिल हुए। उन्होंने तहसील मुख्यालय पर अधिकार कर लिया। रियासत के भीतर भी असंतोष उठ खड़ा हुआ। जब इस सत्याग्रह की सूचना राज्य मन्त्रालय को मिली तो उसने आदेश दिया कि सत्याग्रह को रोक दिया जाये। राजा को भी कहा गया कि वह सत्याग्रहियों से कोई टक्कर न ले। यह सूचना भी दी गई कि जालन्धर के चीफ कमिश्नर और धर्मशाला (कांगड़ा) के डिप्टी कमिश्नर सेना की एक टुकड़ी सहित सुकेत को अधिकारगत करने के लिए सुन्दरनगर पहुँच रहे हैं।

पं० पदमदेव, शिवनन्द रमौल, डॉ० देवेन्द्र सिंह, स्वामी पूर्णाचन्द, सदाराम चन्देल, रत्न सिंह आदि सत्याग्रही समूह के साथ **25 फरवरी,** 1948 को सुकेत की राजधानी **सुन्दरनगर** पहुंच गये। रियासत की फौजी टुकड़ी ने हथियार डाल दिये और राजा लक्ष्मण सेन सीधे दिल्ली चले गये। सत्याग्रहियों ने रियासत पर अधिकार कर लिया। दूसरे दिन केन्द्रीय सरकार की ओर से जालन्धर के चीफ कमिश्नर **लै० ज० नगेश दत्त** तथा धर्मशाला स्थित कांगड़ा के डिप्टी कमिश्नर **कन्हैया लाल** फौजी टुकड़ी के साथ सुन्दरनगर पहुँच गए। चीफ कमिश्नर **नगेश दत्त** ने सुकेत रियासत पर भारत सरकार के अधिकार की घोषणा कर दी। इस प्रकार से सुकेत रियासत का प्रबन्ध भारतीय सेना ने सम्भाल लिया।

भागमल सौहटा का पटेल को ज्ञापन (Bhagmal's to Patel)– जब ये गतिविधियां चल रही थीं तो राजा दुर्गा सिंह बघाट की अध्यक्षता में बनी **''नैगोशियेटिंग कमेटी''** के सदस्य **भागमल सौहटा ने पहली मार्च 1948** को सरदार बल्लभ भाई पटेल को एक ज्ञापन दिया, जिसमें कहा गया कि 2 मार्च, 1948 को राज्य मंत्रालय द्वारा दिल्ली में राजाओं की बुलाई जाने वाली बैठक में राज्य मन्त्रालय के सामने प्रजा के विचार रखने की वे अनुमति चाहते हैं। उन्होंने पटेल को यह भी लिखा कि पंजाब की सभी पहाड़ी रियासतों को मिला कर वह एक पृथक् राज्य चाहते हैं। उस का मानचित्र भी संलग्न है। शिमला की पहाड़ी रियासतों ने पहले ही स्वयं को एक राज्य के रूप में संगठित कर दिया है और इस का नाम **''हिमाचल प्रदेश''** रखा है। इसके अतिरिक्त एक विधान समिति भी बनाई गई है, जिसे सभी रियासतों ने अपने अधिकार सौंप दिये हैं। उन्होंने यह भी लिखा कि हम पहाड़ी लोग आदत, रिवाज और सांस्कृतिक दृष्टि से मैदानी भाग और साथ की लगते पूर्वी पंजाब और उत्तर प्रदेश के प्रान्तों से भिन्न हैं। हमारी भाषा भी इन क्षेत्रों से बहुत हद कर भिन्न

है। पहाड़ी लोगों का जीवन और आज की स्थिति मांग करती है कि इस क्षेत्र को एक पृथक् राज्य के रूप में संगठित करना आवश्यक है।

राज्य मंत्रालय की शिमला में बैठक तथा हिमाचल प्रदेश का जन्म (Meeting of State ministry in Shimla and Birth of Himachal)– भारत सरकार के राज्य मन्त्रालय (मिनीस्ट्री ऑफ स्टेट्स) की दिल्ली में **2 मार्च** 1948 को शिमला और पंजाब की पहाड़ी रिसायतों के शासकों की बैठक बुलाई हुई। इस बैठक में मन्त्रालय के सचिव सी०सी० देसाई ने पहाड़ी रियासतों के शासकों से बिना शर्त "विलय पत्र" पर हस्ताक्षर करने को कहा परन्तु **बघाट के राजा दुर्गा सिंह** ने सोलन सम्मेलन के प्रस्ताव के अनुसार पहाड़ी रियासतों के एक अलग प्रान्त **"हिमाचल प्रदेश"** में सामूहिक विलय का आग्रह किया। सचिव **सी०सी०देसाई** ने इसका विरोध किया। इस पर शासकों ने बैठक का बहिष्कार कर दिया। अगले दिन पहाड़ी रिसायतों के भागमल सौहटा-बुशैहरी धड़े के नेता गृहमंत्री सरदार पटेल से मिले। उन्होंने सरदार पटेल को सोलन सम्मेलन का प्रस्ताव पेश किया और उनसे पहाड़ी रियासतों को मिलाकर एक अलग पहाड़ी प्रान्त **"हिमाचल प्रदेश"** के गठन की स्वीकृति देने की अपील की। काफी विचार-विमर्श के बाद पटेल ने इस शिष्टमण्डल को सचिव **वी० पी० मेनन** से मिलने का सुझाव दिया। इसके पश्चात् इस शिष्टमण्डल के आग्रह पर विलय पत्र पर यह दर्ज करवा दिया कि यह पहाड़ी रियासतों का क्षेत्र **"हिमाचल प्रदेश"** के नाम से केन्द्र के अधीन होगा। विलय पत्र पर यह प्रारूप तैयार कर और **8 मार्च 1948 ई० को** शिमला की पहाड़ी रियासतों के राजाओं ने विलय पत्र पर हस्ताक्षर कर दिये। राज्य मन्त्रालय (मिनीस्ट्री ऑफ स्टेट्स) के सचिव ने केन्द्रीय सरकार की ओर से पहाड़ी रियासतों के विलय से एक अलग प्रान्त "हिमाचल प्रदेश" के निर्माण की घोषणा कर दी। इस प्रकार 8 मार्च 1948 को शिमला हिल्ज़ का 26 पहाड़ी रियासतों के विलय से "हिमाचल प्रदेश" के गठन की प्रक्रिया आरम्भ हुई। हिमालयन हिल स्टेट्स सब रीजनल कौंसिल (परमार पद्मदेव धड़ा) ने "हिमाचल प्रदेश" नाम का विरोध किया। वे इसका नाम "हिमालय प्रान्त" चाहते थे परन्तु सरदार पटेल ने **"हिमाचल प्रदेश"** नाम का ही अनुमोदन किया। इस प्रकार सोलन सम्मेलन के प्रस्ताव के अनुसार– **"हिमाचल प्रदेश"** का जन्म हुआ।

पहाड़ी रियासतों का हिमाचल में विलय (Merger of Hill States in Himachal)- शिमला की पहाड़ी रियासतों में नालागढ़-हिन्डूर भी एक रियासत थी। यहां के राजा **सुरेन्द्र सिंह** के पटियाला के महाराजा **यादवेन्द्र सिंह** के साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध थे। इसलिये नालागढ़ के राजा सुरेन्द्र सिंह ने प्रजा की इच्छा के विरुद्ध पंजाब की रियासत पटियाला के साथ अपनी रियासत का विलय कर दिया और नालागढ़ ने पटियाला तथा पंजाब की अन्य रियासतों के साथ मिल कर 5 मई को विलय-पत्र पर हस्ताक्षर कर दिए।

मण्डी का राजा जोगेन्द्र सेन आरम्भ से ही इस में रुचि लेता रहा और बातचीत में भाग लेता रहा। उसने **14 मार्च** को विलय-पत्र पर हस्ताक्षर कर दिये। इसके साथ ही सुकेत के राजा **लक्ष्मण सेन** ने भी हस्ताक्षर किये। इसके पश्चात् केन्द्रीय सरकार ने इन दो रियासतों को "हिमाचल प्रदेश" में मिला दिया।

चम्बा के राजा लक्ष्मण सिंह अभी तक भी अपनी रियासत को हस्तान्तरित करने से आना-कानी कर रहे थे। अतः चम्बा में प्रजा मण्डल सत्याग्रह पर उतर आये। राजा ने सत्याग्रह को कुचलने का पूरा प्रयत्न किया। अन्त में हतोत्साहित होकर भारत सरकार से पुलिस तथा सेना भेजने के लिये आग्रह किया। अतः सरकार ने पुलिस भेजी और राजा को विलय-पत्र पर हस्ताक्षर करने हेतु कहा और राजा ने विवश होकर हस्ताक्षर कर दिये।

सिरमौर और बिलासपुर के राजाओं को छोड़कर सभी राजाओं एवं राणाओं ने अपनी-अपनी रियासतें भारत सरकार के साथ विलय करने के पत्र पर हस्ताक्षर कर दिये थे। **सिरमौर** के महाराजा **राजेन्द्र प्रकाश** अन्तिम घड़ी में भी अपनी रियासत को बचाने का पूरा प्रयास करते रहे। उनका कहना था उनकी प्रजा रियासत के हस्तान्तरण करने के लिये नहीं मानती। उन्होंने सुझाव दिया कि सिरमौर में जनमत करवाया जाये, जिससे जनता की इच्छा का पता चल जाये। यदि जनता रियासत के विलय के लिये स्वीकृति दे देती है तो विलय पत्र पर हस्ताक्षर कर देंगे। उनकी यह बात मान ली गई और मार्च 1948 ई. को केन्द्र से वित्त सचिव **इ.पी. कृपलानी नाहन** पहुँचे। उन्होंने महाराजा सिरमौर के साथ नाहन चौहान में विशाल जनसभा को सम्बोधित किया और 23 मार्च 1948 ई. को विलय पत्र पर महाराजा राजेन्द्र प्रकाश के हस्ताक्षर

करवाकर सिरमौर रियासत को भी हिमाचल प्रदेश में मिला दिया। अन्ततः **15 अप्रैल 1948** को पहाड़ी क्षेत्र की 30 छोटी-बड़ी रियासतों को मिला कर व विलय करके एक पहाड़ी प्रान्त ''हिमाचल प्रदेश'' की विधिवत् स्थापना हुई और इसे **केन्द्र शासित चीफ कमिश्नर्ज़ प्रोविन्स** का दर्जा दिया गया। हिमाचल प्रदेश के अस्तित्व में आने पर **एन. सी. मेहता** हिमाचल प्रदेश के पहले चीफ कमिश्नर नियुक्त हुए और **पैन्ड्रल मून** ने डिप्टी चीफ कमिश्नर के रूप में कार्यभार संभाला। शिमला हिल स्टेट्स की 26 छोटी-बड़ी रियासतों को मिलाकर ''**महासू**'' ज़िला बना दिया गया। मण्डी और सुकेत की रियासतों को एक करके मण्डी ज़िला का नाम दिया गया। चम्बा और सिरमौर के दो अलग-अलग ज़िले बना दिये गये। 1948 में इन चार ज़िलों में 23 तहसीलें बनाई गईं। उस समय इनका क्षेत्रफल 10,451 वर्ग मील और जनसंख्या 9,83,367 थी।

बिलासपुर रियासत का विरोध (Opposition of Bilaspur State)- बिलासपुर का राजा **आनन्द चन्द** आरम्भ से ही बिलासपुर के भारतीय संघ में विलय करने का विरोध करता आ रहा था। उस का तर्क था कि अंग्रेज़ों (सर्वोपरि सत्ता) के भारत से वापस चले जाने के बाद भारतीय रियासतें भी स्वतन्त्र हो गई हैं और यह उनकी अपनी इच्छा है कि किसी संघ में मिल जायें या अलग रहें। वह स्वतन्त्र कहलूर की बात करता था। राज्य मन्त्रालय के सचिव ने राजा आनन्द चन्द से दिल्ली और बिलासपुर में कई बार बातचीत की। अन्त में राजा ने **15 अगस्त** 1948 को विलय पत्र पर हस्ताक्षर कर दिये और बिलासपुर को अलग से चीफ कमिश्नर अधीनस्थ प्रान्त बना दिया । इस के पीछे यह भी उद्देश्य रहा कि उस अवधि में पंजाब सरकार भाखड़ा में एक बहुत बड़ा संघ (बांध) बना रही थी, जिसका अधिकांश भाग बिलासपुर में था। इसी कारण **राजा आनन्द चन्द को 12 अक्तूबर 1948 को** बिलासपुर का चीफ कमिश्नर बनाया गया और पंजाब के पी. सी. एस. अधिकारी **श्री चन्द छाबड़ा को** डिप्टी कमिश्नर नियुक्त किया गया। बाद में प्रजा के विरोध पर केन्द्रीय सरकार ने राजा आनन्द चन्द को चीफ कमिश्नर के पद से हटा दिया और श्रीचन्द छाबड़ा को चीफ कमिश्नर बना दिया गया।

बिलासपुर के नेता **सन्त राम कांगा, दौलतराम साँख्यायन, सदा राम चन्देल** आदि रियासत के हिमाचल प्रदेश में विलय के लिये संघर्ष करते रहे। सन्त राम कांगा के नेतृत्व में बिलासपुर का एक शिष्टमण्डल 6 अप्रैल 1952 ई. को पं. जवाहर लाल नेहरू और विजय लक्ष्मी पंडित से मिला तथा बिलासपुर के हिमाचल प्रदेश में विलय का आश्वासन प्राप्त किया। पं. नेहरू ने लोकसभा में बिलासपुर के हिमाचल प्रदेश में विलय की घोषणा कर दी। अंततः हिमाचल प्रदेश कांग्रेस कमेटी और बिलासपुर के नेताओं एवं प्रजा के सफल संघर्ष के फलस्वरूप एक **जुलाई 1954 ई.** को बिलासपुर का हिमाचल प्रदेश में विलय हुआ और वह राज्य का पांचवां ज़िला बना।

हिमाचल : पूर्ण राज्यत्व की ओर (Himachal towards Complete State)— 15 अप्रैल 1948 ई. को हिमाचल प्रदेश के अस्तित्व में आने के साथ ही राजाओं तथा प्रजा मण्डल के नेताओं को दिये गये आश्वासनों पर भारत सरकार ने नौ सदस्यों की एक सलाहकार समिति बनाई, जिसमें जनता के छः प्रतिनिधि थे – **डां. यशवंत सिंह परमार, स्वामी पूर्णा नन्द, प. पदम देव, अवतार चन्द, लाला शिवचरण दास** और **श्रीमती लीला देवी** थे। राजाओं के तीन सदस्य थे-राजा मण्डी, राजा चम्बा और राजा बघाट। इस समिति का गठन सितम्बर 1948 ई. को किया गया । इसका उद्देश्य चीफ कमिश्नर को आम नीति, विकास योजना, संविधान सम्बन्धी सलाह देना था परन्तु प्रशासन की ओर से इसकी अनदेखी किए जाने से वह 1951 ई. में इससे अलग हो गये। तत्पश्चात् डॉ. यशवन्त सिंह परमार संविधान सभा के सदस्य बने। उन्होंने तथा हिमाचल के अन्य कांग्रेस नेताओं ने प्रदेश तथा दिल्ली में हिमाचल प्रदेश में लोकप्रिय सरकार की व्यवस्था के लिये केन्द्रीय सरकार से संवैधानिक संघर्ष किया। अंततः केन्द्रीय सरकार ने हिमाचल प्रदेश को **पार्ट सी स्टेट** का दर्जा देकर इसके लिये विधानसभा का प्रावधान किया। सन् 1952 ई. के आरम्भ में प्रथम चुनाव हुये और **36 सदस्यों** की सभा में 28 सदस्य कांग्रेस के चुने गये तथा शेष स्वतन्त्र उम्मीदवार चुनाव जीते। 24 मार्च 1952 ई. में डॉ. **यशवन्त सिंह परमार** ने हिमाचल प्रदेश के प्रथम मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ग्रहण की।

भारत सरकार द्वारा पुनर्गठन आयोग का गठन (Formation of State Reorganisation Commission by Indian Government)—भारत सरकार के गृह मन्त्रालय ने **29 दिसम्बर 1953 ई.** को एक अधिसूचना द्वारा राज्यों के पुनर्गठन के लिये एक आयोग बनाया। इस आयोग के अध्यक्ष **सईद फजल अली** और सदस्य **हृदय नाथ कुंजरू** तथा **कवलभ माहवा पानीकर** थे। इस आयोग के सदस्यों ने 1954 ई. में प्रदेश का भी दौरा किया। हिमाचल प्रदेश कांग्रेस

कमेटी ने आयोग के सदस्यों को पंजाब के पहाड़ी क्षेत्र-**कांगड़ा, कुल्लू, लाहौल स्पीति, शिमला, कोहीस्तान (कण्डाघाट), ऊना तहसील, डलहौज़ी, मोरनी** को हिमाचल प्रदेश में मिलाने के बारे में ज्ञापन दिया। हिमाचल प्रदेश की विधानसभा ने भी **प्रो. तपीन्द्र सिंह** की अध्यक्षता में एक नैगीशियेटिंग कमेटी बनाकर एक रिपोर्ट तैयार की और भारत सरकार को प्रस्तुत की। इसके अतिरिक्त मुख्यमंत्री डॉ. यशवन्त सिंह परमार ने **23 अप्रैल 1954 ई.** को आयोग के सदस्य **सईद फज़ल** अली को विस्तारपूर्वक एक पत्र भी लिखा। आशा के विपरीत इस आयोग ने हिमाचल प्रदेश को पंजाब से मिलाने का सुझाव दिया, जिससे प्रदेश का अस्तित्व खतरे में पड़ गया। रिपोर्ट में आयोग के अध्यक्ष फजल अली ने अपना एक अलग नोट लगा कर हिमाचल प्रदेश को एक पृथक् राज्य के रूप में रखने का सुझाव दिया। सभी दलों और लोगों ने पंजाब के साथ विलय का कड़ा विरोध किया। अतंत: भारत सरकार ने हिमाचल प्रदेश की भौगोलिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक स्थिति को देखकर इसे अलग रखने का आश्वासन दिया।

क्षेत्रीय परिषद् के चुनाव (Election of State Council)-आयोग की रिपोर्ट के पश्चात् 1956 ई. में **''स्टेट्स रि-आर्गेनाइजेशन एक्ट''** बना तो उसके फलस्वरूप 31 अक्तूबर 1956 ई. को हिमाचल प्रदेश विधानसभा समाप्त हो गई और लोगों को संतुष्ट करने के लिये **''टैरीटोरियल कौंसिल एक्ट 1956''** पारित कर इसे क्षेत्रीय परिषद् दे दी। 31 अक्तूबर 1956 ई. को मुख्यमन्त्री डॉ. परमार के नेतृत्व वाली परिषद् ने त्यागपत्र दे दिया और **पहली नवम्बर 1956 ई.** से यह प्रदेश केन्द्र प्रशासित राज्य बन गया और **बजरंग बहादुर सिंह** (राजा भदरी, उत्तर प्रदेश) इस केन्द्र शासित प्रदेश के पहले उपराज्यपाल बने।

1957 ई. में क्षेत्रीय परिषद् (टेरीटोरियल कौंसिल) के लिये चुनाव हुये। **ठाकुर कर्म सिंह ने 15 अगस्त 1957 ई.** को परिषद् के अध्यक्ष की शपथ ली। प्रशासन के सभी अधिकार उप-राज्यपाल के पास थे। क्षेत्रीय परिषद् केवल एक स्थानीय स्वशासन मात्र था। प्रदेश के विकास कार्य तथा वित्त व अर्थव्यवस्था जैसे मामलों में इसकी कोई पूछ नहीं थी। लोग इस प्रशासकीय प्रणाली से सन्तुष्ट नहीं थे। अत: प्रजातन्त्र की पुन: प्राप्ति के लिये उन्होंने अपना शान्तिमय संघर्ष चालू रखा। प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने भारत के गृहमन्त्री को इस बारे में एक ज्ञापन दिया।

हिमाचल विधानसभा का निर्माण (Formation of Himachal Legislative Assembly)—अत: गृहमन्त्री लाल बहादुर शास्त्री ने **29 मार्च** 1961 को लोक सत्ता में बयान दिया कि यदि लोगों को उसके संवैधानिक अधिकार देने हैं तो खुले दिल से दिये जायें। फिर 1962 में **''हिमाचल प्रदेश क्षेत्रीय परिषद्''** ने एक प्रस्ताव पारित किया। लोगों की भावनाओं को देखते हुये लोकसभा ने 1963 ई. में **''गवर्नमैन्ट ऑफ यूनियन एक्ट 1963''** पारित किया। इसके फलस्वरूप **पहली जुलाई 1963** को हिमाचल प्रदेश क्षेत्रीय परिषद् को हिमाचल प्रदेश विधानसभा में परिवर्तित कर दिया गया तथा तीन सदस्यीय मन्त्रिमण्डल का गठन हुआ। अत: डॉ. यशवन्त सिंह परमार दूसरी बार मुख्यमन्त्री बने।

हिमाचल प्रदेश का विस्तार (Extention of Himachal Pardesh)- हिमाचल प्रदेश के लोग तथा प्रदेश के नेता बहुत समय से यह मांग करते आ रहे थे कि हिमाचल प्रदेश के साथ लगते हुये **कांगड़ा, कुल्लू, लाहौल-स्पीति, शिमला, ऊना, डलहौज़ी, नालागढ़** के पर्वतीय क्षेत्र भी हिमाचल प्रदेश के साथ मिलाये जायें। हिमाचल प्रदेश के पंजाब के पहाड़ी क्षेत्रों को हिमाचल प्रदेश में मिलाने के पीछे भाषा, संस्कृति, रीति-रिवाज़, भौगोलिक समीपता और अन्य सामान्य प्रथाएं शामिल थीं। हिमाचल प्रदेश एक सशक्त और समृद्ध राज्य बनकर ही इन क्षेत्रों की मूल मांगें पूरी कर सकता है। इन क्षेत्रों के लोग यह मांग कर रहे थे कि उनके आर्थिक विकास, भाषा, संस्कृति, रीति-रिवाज़ और भौगोलिक समीपता को ध्यान में रखकर हिमाचल प्रदेश के साथ मिला लिया जाए। लोगों का कहना था कि यदि भाषायी आधार पर यदि देखा जाए तो पंजाब के पहाड़ी क्षेत्रों की बोलियां हिमाचल के क्षेत्रों से अधिक मेल खाती हैं। कोई भी निर्णय लेने से पूर्व कांगड़ा के लोगों की संस्कृति, रीति-रिवाज़, भाषा, परम्पराओं और अन्य भावनाओं का ध्यान रखा जाना चाहिए, जिसके अन्तर्गत वह हिमाचल प्रदेश के साथ अधिक जुड़े हुये हैं। यदि भाषायी आधार पर पंजाबी सूबे की मांग उचित है तो यह न्याय संगत तथा उचित होगा कि पंजाब के पहाड़ी भाषायी क्षेत्रों को हिमाचल प्रदेश में मिलाया जाए। तर्क था कि ये क्षेत्र संस्कृति, सामाजिक व्यवस्था और आर्थिक स्थिति की दृष्टि से हिमाचल प्रदेश से जुड़े हुये हैं। अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिये हिमाचल प्रदेश के नेताओं ने कांगड़ा तथा शिमला के प्रमुख लोगों से सम्पर्क स्थापित

किया। दूसरी तरफ पंजाब में **पंजाबी सूबा** का नारा उठ खड़ा हुआ। इससे कांगड़ा, कुल्लू, लाहौल-स्पीति, शिमला, नालागढ़, आदि के लोगों को अपने वास्तविक भौगोलिक अस्तित्व का आभास हुआ। फलस्वरूप **''विशाल हिमाचल''** का विचार लोगों के मन में उभर आया। इसके कट्टर समर्थक **भागमल सौहटा** और **सत्यदेव बुशैहरी** थे। हिमाचल प्रदेश के सांसदों ने तथा पंजाब विधानसभा में पंजाब के पहाड़ी क्षेत्र के विधानसभा सदस्यों ने सदन तथा सभा में बार-बार इसके बारे में बात उठाई।

हिमाचल प्रदेश सरकार द्वारा विचाराधीन पंजाबी सूबे की मांग पर दिया गया ज्ञापन–हिमाचल प्रदेश सरकार सैद्धान्तिक रूप में इसके विषय में कोई टिप्पणी नहीं करती है। प्रदेश में कोई भी क्षेत्र पंजाबी भाषायी नहीं है। यदि भाषायी आधार पर पंजाब का निर्धारण होता है तो पंजाब के निम्न पहाड़ी क्षेत्र प्रभावित होंगे :

(क) कांगड़ा, कुल्लू, शिमला और लाहौल-स्पीति ज़िले।

(ख) गुरदासपुर ज़िले की पठानकोट तहसील, ऊना तहसील (होशियारपुर ज़िला), कालका तहसील और अम्बाला ज़िला।

(ग) अम्बाला ज़िले का नालागढ़ उप मण्डल और नारायणगढ़ का मोरनी क्षेत्र।

(घ) अन्य ऐसे पंजाबी भाषायी क्षेत्र जो ऊपर दिए गए ज़िलों, तहसीलों और उपमण्डलों के भाग रहे हैं।

यदि वर्तमान पंजाब का भाषायी आधार पर निर्धारण होता है तो ये ज़िले, तहसीलें, उपमण्डल और अन्य क्षेत्र आर्थिक, सांस्कृतिक, भाषायी, प्रशासनिक और भौगोलिक रूप में हिमाचल प्रदेश के साथ अधिक घनिष्ठ हैं। क्षेत्रों की भाषा, वेशभूषा, रीति-रिवाज़ और समस्याएं हिमाचल प्रदेश के साथ मिलती हैं। इन क्षेत्रों को हिमाचल प्रदेश में मिलाने से कई ज्वलन्त समस्याओं का हल हो सकता है। संसदीय समिति और कैबिनेट समिति से अनुरोध है कि जब भी पंजाबी सूबे की मांग पर विचार हो तो हिमाचल के साथ लगते इन प्रदेशों की संस्कृति, भाषा और समरूपता का ध्यान रखा जाए। अन्त में भारत सरकार ने **सन् 1965 ई.** में **''पंजाब स्टेट पुनर्गठन आयोग''** नियुक्त किया। हिमाचल सरकार ने भी भारत सरकार को **''विशाल हिमाचल''** का पूरा मसौदा भेज दिया और पंजाब स्टेट रि-आर्गेनाइजेशन कमीशन के अध्यक्ष हुक्म सिंह को भी यह मसौदा दिया।

हुकम सिंह संसदीय समिति द्वारा सुझाए गए प्रस्ताव-सांस्कृतिक, भाषायी और सीमा के आधार पर कांगड़ा, लाहौल-स्पीति और कुल्लू ज़िलों को हिमाचल प्रदेश में सम्मिलित किया जाए। इन ज़िलों की सीमाएं और क्षेत्रों के विषय में कोई विवाद नहीं है। ये क्षेत्र हिमाचल के साथ अधिक समीप भी हैं। इन क्षेत्रों के चुने हुए प्रतिनिधि भी समय-समय पर हिमाचल प्रदेश में विलय की मांग करते रहे हैं। इन सभी ज़िलों में शिमला ज़िले को हिमाचल प्रदेश में सम्मिलित करने से महासू जिले के ऊपरी तथा निचले क्षेत्र के लोगों को प्रशासनिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से जोड़ने में सहायता मिलेगी। शिमला नगर जो एक केन्द्रीय प्रादेशिक राजधानी के रूप में विद्यमान है, इन क्षेत्रों के विलय के बाद हिमाचल प्रदेश की स्थाई राजधानी बन सकता है।

डलहौज़ी, बलून और बकलोह क्षेत्र इन क्षेत्रों को हिमाचल प्रदेश में मिलाने के पीछे एक कारण है। ये क्षेत्र चम्बा राज्य के भाग रहे थे और इन्हें भारत सरकार को 100 वर्ष के पट्टे पर दिया गया था, जिसकी अवधि समाप्त हो चुकी थी। प्रशासनिक और अन्य दृष्टि से इन क्षेत्रों को हिमाचल प्रदेश में सम्मिलित करने से न केवल अधिक कुशलता आएगी अपितु इन क्षेत्रों के लोगों के हितों को भी सुरक्षित रखा जा सकेगा।

नालागढ़, कालका, मोरनी और कलेसर-नालागढ़ उपमण्डल, कालका उप-तहसील, मोरनी और कलेसर के शिवालिक क्षेत्र की संस्कृति, भाषा और रीति-रिवाज़ हिमाचल प्रदेश के लोगों से मिलते हैं।

नालागढ़ के राजा ने पटियाला के शासक परिवार से पारिवारिक सम्बन्ध होने के कारण अपने राज्य को ''पैप्सू राज्य'' में मिला लिया था। बाद में पैप्सू को पंजाब में मिला लिया गया तथा नालागढ़ भी उसका भाग बन गया। संसदीय समिति का मानना है कि अब समय आ गया है जब नालागढ़ को हिमाचल प्रदेश में मिलाया दिया जाए।

कालका उप-तहसील शिमला का प्रवेश द्वार है। यह हिमाचल प्रदेश संघीय प्रदेश की आर्थिक समृद्धि की जीवन रेखा है। अपनी भौगोलिक एकरूपता, सामाजिक और सांस्कृतिक समीपता के कारण इसे हिमाचल प्रदेश में मिलाया जाना चाहिए।

शिवालिक शृंखला का क्षेत्र स्वतन्त्रता से पूर्व सिरमौर राज्य का भाग रहा है। सांस्कृतिक और अन्य समानताओं के कारण इसे हिमाचल में मिलाया जाना चाहिए।

कलेसर शिवालिक शृंखला का भाग पांवटा (सिरमौर) के साथ लगता है। इसे हिमाचल में सम्मिलित करने से ही इसका लाभ होगा।

होशियारपुर और गुरदासपुर जिलों की ऊना और पठानकोट तहसीलें-एक समान आर्थिक हितों, भौगोलिक स्थिति, भाषायी, सांस्कृतिक और रीति-रिवाजों को ध्यान में रखते हुए इन क्षेत्रों का हिमाचल प्रदेश में विलय आवश्यक है।

दनेश (धार क्लांग) का क्षेत्र चम्बा ज़िला और नूरपुर (कांगड़ा ज़िला) के बीच है। प्रशासनिक और आर्थिक कारणों से इसे हिमाचल प्रदेश में मिलाया जाना चाहिए। इन क्षेत्रों के आर्थिक हितों को ध्यान में रखते हुए कमीशन पंजाब के इन पहाड़ी क्षेत्रों को हिमाचल प्रदेश को सौंपने के लिए यथासंभव कोशिश करें।

पंजाब के पहाड़ी क्षेत्रों का हिमाचल प्रदेश में विलय (Merge of Hill areas of Punjab into Himachal Pradesh)—भारत सरकार ने इस आयोग की सिफारिश पर **''पंजाब स्टेट रि-आर्गेनाईजेशन एक्ट 1965''** संसद् में प्रस्तुत किया और इसके विधेयक बनने पर **पहली नवम्बर** 1966 ई. को **कांगड़ा, कुल्लू, लाहौल-स्पीति, शिमला, नालागढ़, कण्डाघाट, ऊना, डलहौजी** आदि क्षेत्र हिमाचल प्रदेश में मिला दिये। इस प्रकार इन क्षेत्रों के विधानसभा के सदस्य हिमाचल विधानसभा के सदस्य बन गए। इस प्रकार चिनाब रावी नदी से लेकर यमुना नदी तक का समस्त पहाड़ी क्षेत्र एक होकर **''विशाल हिमाचल''** बन गया। अब हिमाचल प्रदेश का क्षेत्रफल 55,673 वर्ग कि मी. और जनसंख्या 28,12,463 हो गई।

स्टेट ऑफ हिमाचल प्रदेश एक्ट (State of Himachal Pradesh Act)-1967 ई. के विधानसभा चुनाव के समय प्रदेश कांग्रेस ने अपने घोषणा पत्र में हिमाचल के लिये उचित आकार तथा पूर्ण राज्य का दर्जा प्राप्त करने का वायदा किया। राज्य के सभी दलों ने इस का समर्थन किया। मुख्यमंत्री डॉ. यशवन्त सिंह परमार के नेतृत्व में हिमाचल प्रदेश सरकार ने पूर्ण राज्य की मांग केन्द्रीय सरकार के समक्ष उठाई। 31 जुलाई 1970 ई. को प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने लोकसभा में हिमाचल प्रदेश को पूर्ण राज्य का दर्जा देने की घोषणा की और तत्पश्चात् दिसम्बर 1970 में संसद् में **''स्टेट ऑफ हिमाचल प्रदेश एक्ट 1971''** पेश करके पारित किया। **25 जनवरी 1971 ई.** को प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने शिमला आकर रिज मैदान में भारी हिमपात के बीच हजारों हिमाचल वासियों के सामने हिमाचल प्रदेश का 18वें पूर्ण राज्य के रूप में उद्घाटन किया। यह दिन हिमाचल प्रदेश के स्वतन्त्रता सेनानियों, प्रजा मण्डलों के कार्यकर्ताओं और राज्यत्व की प्राप्ति के लिए संघर्ष करने वाले लोगों तथा डॉ. यशवन्त सिंह परमार के लिये अत्यन्त खुशी का दिन था, क्योंकि इसी दिन हिमाचल वासियों का स्वप्न साकार हुआ था और उन्होंने अपने भविष्य को अपने द्वारा चुनी गई सरकार को सौंप दिया था।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न
(Important Questions)

[illegible]

In which circumistances was Himachal formed? Discuss it.

2. हिमाचल कब और कैसे अस्तित्व में आया और कैसे? विवेचना कीजिए।

When and how did Himachal come into existance? Explain it.

3. हिमाचल प्रदेश के पुनर्गठन का वर्णन कीजिए।

Explain the reorganisation of Himachal Pradesh.

4. 1971 में पूर्ण राज्य की प्राप्ति तक हिमाचल में हुए संवैधानिक विकास का आलोचनात्मक वर्णन करें।

Examine Critically the constitutional developments in Himachal Pradesh till the formation of statehood in 1971.

12 आधुनिक हिमाचल में समाज
(SOCIETY IN MODERN HIMACHAL)

भूमिका (Introduction)

हिमाचल प्रदेश की संस्कृति भारत वर्ष की संस्कृति का मूलाधार है, क्योंकि भारत की संस्कृति हिमालय की चोटियों और तलहटियों में पनप कर समूचे देश में फैल कर कई रूपों में विकसित हुई। विष्णु पुराण में लिखा है कि हिमालय द्वारा अभिरक्षित इस भूमि पर जन्म लेने के लिए देवता भी तरसते हैं। हिमालय संसार की सभी मानव जातियों का घर रहा है। वेद, पुराण, उपनिषद्, रामायण और महाभारत जैसे रत्न भी हमें हिमालय की कृपा से ही प्राप्त हुए हैं। हिमालय प्रदेश भौगोलिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक तौर पर हिमालय का अभिन्न अंग हैं। यहां आर्य पूर्व-आर्योत्तर संस्कृति का समन्वय हुआ है। यहां के नगरों, गांवों, देवी-देवताओं के नाम आदि ऋषि-मुनियों के साथ जुड़े हैं-जैसे; बिलासपुर के साथ व्यास, सुकेत के साथ शुकदेव, मारकण्ड के साथ मारकण्डेय, मनाली के साथ मनु, वशिष्ट कुंड के साथ वशिष्ट ऋषि, मंडी के साथ मांडव्य ऋषि, रेणुका के साथ जमदग्नि ऋषि-पत्नी रेणुका, पांगणा के साथ पांडवों, भीमकोट के साथ भीम और हिड़म्बा के साथ भी भीम के नाम जुड़े हैं। हिमालय सांस्कृतिक जीवन के विभिन्न अंग जन्म-जीवन, वेश-भूषा, आभूषण, रीति-रिवाज, लोक-गीत, लोक-नाट्य, लोक नृत्य मेले, त्यौहार, धर्म, साहित्य कला आदि सभी की अपनी-अपनी विशेषतायें हैं।

हिमाचल प्रदेश के सामाजिक जीवन एवं रीति रिवाज़
(Social Life and Rituals of Himachal)

1. हिमाचल के वासी
(Inhabitants of Himachal)

हिमाचल प्रदेश के ऊपरी भाग के लोग प्रदेश में बसने वाले लोगों में से प्राचीनतम हैं। **काली, हाली, चनाल, रेहाड़, लुहार, बाढ़ी, ढाकी** और **तुरी** आदि जाति के लोग हिमाचल प्रदेश के मूल निवासी माने जाते हैं और उनके साथ **खशों**, और **कुनैलों** को भी हिमाचल प्रदेश के पुराने निवासी माना जाता है। खश या कुनैल स्वयं को राजपूत मानते हैं। इन जातियों के अतिरिक्त हिमाचल में बसने वाले लोगों की जातियां हैं-**ब्राह्मण, राजपूत,** (**मियां** जो स्वयं खशों/कुनैलों से उच्च-वंशीय मानते हैं और जिनकी मुख्य उपजातियां, **चन्देल, सेन, कटोच, मिन्हास, पठानिया, रणौत, पटियाल, जसवाल** आदि हैं), **खत्री, घिरथ** (वाहती, भांगा आदि हैं। हरिजन मानी जाने वाली जातियां है-हरिजन, जुलाहे, तरखान, छींबें, वाल्मीकि आदि। इसके अतिरिक्त कुछ जातियां हैं जैसे -कुम्हार, झीवर और नाई आदि पेशों पर आधारित हैं। इसके अलावा प्रदेश में कुछ ऐतिहासिक कबीले हैं जो हिन्दू या बौद्ध धर्मों के अनुयायी हैं। हिमाचल प्रदेश की 96 प्रतिशत के लगभग जनसंख्या हिन्दू धर्मानुयायी है। इसके अतिरिक्त इस्लाम, बुद्ध, सिक्ख, इसाई और जैन धर्मों के अनुयायी भी प्रदेश में बसते हैं।

हिमालय सांस्कृतिक जीवन के विभिन्न अंग जन्म-जीवन, वेश-भूषा, आभूषण, रीति-रिवाज, लोक-गीत, लोक-नाट्य, लोक नृत्य मेले, त्यौहार, धर्म, साहित्य कला आदि सभी अपनी विशिष्टतायें लिये हुये हैं और सारे राष्ट्र के जीवन में महत्व रखते हैं। प्राकृतिक खंडों के अनुरूप ही सामाजिक दृष्टि से भी हिमाचल को तीन भागों में बांटा जा सकता है: (क) ऊपरी भाग जिसमें लाहौल-स्पीति और किन्नौर आदि के क्षेत्र शामिल किये जा सकते हैं, (ख) मध्य भाग जिसमें शिमला से ऊपर के मंडी के ऊपरी भाग के, कुल्लू, चम्बा, सोलन के पूर्वी भाग और सिरमौर के पूर्वी भाग आदि के क्षेत्र शामिल किये जा सकते हैं तथा (ग) निम्न भाग जिसमें सोलन का पश्चिमी भाग, सिरमौर का पश्चिमी भाग, बिलासपुर, हमीरपुर, ऊना, कांगड़ा और मंडी का पश्चिमी भाग शामिल किये जा सकते हैं।

प्रदेश में पाई जाने वाली विभिन्न जनजातियों का अपना एक इतिहास है, जिसका वर्णन हमारे धर्म ग्रन्थों में मिलता है। हिमाचल प्रदेश गांवों का प्रदेश है। हिमालय प्रदेश की 91.31 प्रतिशत के लगभग जनता गांवों में बसती है। शहरों में केवल 8.69 प्रतिशत लोग ही बसते हैं। उनमें से अधिकतर जीविका कमाने हेतु शहरों में गांवों के लोग ही होते हैं। लाहौल-स्पीति जिले की शत प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण है। प्रदेश की जनसंख्या का अधिकांश भाग शिवालिक की पहाड़ियों के साथ-साथ या बाह्य हिमालय के क्षेत्र में बसता है। जैसे-जैसे पहाड़ों की ऊँचाई बढ़ती जाती है, जनसंख्या का घनत्व घटता जाता है।

2. लोगों का रहन-सहन
(Life Style of People)

हिमाचल के लोगों के जीवन पर आर्यों और अनार्यों दोनों की संस्कृतियों का प्रभाव पड़ा है। पहाड़ी लोगों के मानस की सरलता से लोक-गाथाएं भरी पड़ी हैं। यहां की नदियां के जीवन और यहां के श्वेत पर्वत लोगों के हृदय की पवित्रता की कहानी सुनाते हैं। यहां के हरे-भरे वन तथा रमणीक घाटियां सरल और अटल प्रेम के गीत गाती हैं। हिमालय के लोग सुन्दर और सुगठित शरीर के हैं। कुल्लू की कोलन, चम्बा की गद्दण और किन्नौर की युवतियां तथा गुजरियां अपनी सुन्दरता और सरलता के लिए विश्व में प्रसिद्ध हैं।

हिमाचल के लोगों के जीवन की प्रमुख विशेषताएं :-

1. **संयुक्त परिवार** (Joint Family)— हिमाचल के लोगों में संयुक्त परिवार प्रणाली प्रचलित है। कई घरों में 40-50 तक की संख्या में परिवार के सदस्य इकट्ठे रहते है परन्तु समय के साथ-साथ अब एकल परिवारों की ओर लोग आकर्षित हो रहे हैं।

2. **मकान** (House)— यहां रहने के लिए बनाए गए मकान आमतौर पर मिट्टी के बने होते हैं, जिन पर स्लेट पड़े होते हैं। कहीं-कहीं आर. सी. सी. की स्लैबनुमा छतें हैं। पशुशाला घरों से कुछ ही दूरी पर बनाई जाती है। प्रदेश के ऊपरी और मध्य भाग में मकान आमतौर पर लकड़ी के बने हैं। उनका ढांचा लकड़ी का बना होता है, जो ऊपर से स्थानीय स्लेटों से या टीन से ढके हुए हैं। ये अधिकतर दो मंजिले हैं। ऊपर का भाग मनुष्यों के रहने के लिए प्रयोग किया जाता है और नीचे का भाग पशुओं के लिए प्रयोग किया जाता है। स्पीति आदि में मैदानों की भांति मिट्टी के कोठे भी बनाए गए हैं। मकानों का निर्माण किसी स्थान की भौगोलिक स्थिति और जलवायु को ध्यान में रखकर किया जाता है। बढ़ते शहरीकरण के कारण अब धीरे-धीरे लोग सीमेंट, पत्थर तथा लोहे के प्रयोग से घरों का निर्माण भी करने लगे हैं।

3. **पशु** (Animals)— पशु ग्रामीणों की अमूल्य सम्पति है। मुख्य पाले जाने वाले पशुओं में **बैल, गाय, भैंस** और **भेड़-बकरियां** आदि हैं। कुछ इलाकों में **घोड़े** और **खच्चर** भी सामान ढोने के लिए पाले जाते हैं। स्पीति में पाले जाने वाला प्रसिद्ध पशु **याक** है जो परिवहन, हल चलाने तथा दूध तथा मांस आदि लोगों को प्रदान करता है। सरकारी प्रयत्नों के परिणामस्वरूप आज श्रेष्ठ नस्ल की गाय तथा भेड़ पालने का काम प्रदेश के कई भागों में चल रहा है।

साधारण ग्रामीण की दिनचर्या प्रातः से ही जल-स्त्रोत से, पानी भरकर लाने से शुरू होती है। फिर पशुओं को घास-चारा डालने के बाद उनका गोबर उठाकर खेतों में डाला जाता है। सायंकाल को पशुओं को दोबारा घास-चारा डालने के बाद परिवार के सदस्यों की चूल्हे के पास गोष्ठी लगती है। इसमें वे पारिवारिक समस्याओं पर विचार विनिमय करते हैं और अगले दिन के कार्य की योजनाएं बनती हैं। स्त्रियां चरखा कातती हैं और पुरुष तकलियों पर ऊन कातते हैं। अतिथि के आने पर सारा परिवार प्रसन्नता से उसकी सेवा में जुट जाता है। उत्सवों, त्यौहारों और मेलों की बड़े शौक से प्रतीक्षा की जाती है। उत्सवों व मेलों में सामूहिक खान-पान और नृत्यों तथा नाटियों का आयोजन किया जाता है। गांव के लोग सुख-दुख, जन्म-मरण और विवाह आदि के समय सामूहिक रूप से एक -दूसरे को हर प्रकार से सहयोग देते हैं। हिमाचल के लोगों का जीवन सहनशीलता और परिश्रम से परिपूर्ण है। पहाड़ी लोग बोझ उठाकर एक के बाद एक पहाड़ी पर सहर्ष चढ़ते हैं। रेडियो, दूरदर्शन तथा चलचित्रों ने आवश्यक रूप से हिमाचली जनजीवन पर अपना प्रभाव डाला है।

4. व्यवसाय (Occupation)— हिमाचल के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि करना तथा पशु पालना है। कृषि के अन्तर्गत गेहूं, चावल, सब्जियां आदि की कृषि की जाती है। बागवानी हिमाचल के लोगों का एक अन्य मुख्य व्यवसाय है जिसके अन्तर्गत बड़ी मात्रा में सेब के बगीचे लगाए गए हैं। हिमाचल के लोग भेड़-बकरियां तथा अन्य दूध देने वाले पशु पालते हैं। कृषि तथा वनों पर आधारित उद्योग भी लगाए गए है। मछली पालन, खुम्ब उत्पादन, मधु-मक्खी आदि भी लोगों की आय के प्रमुख साधन हैं।

5. वेषभूषा (Dress)— हिमाचल की भौगोलिक विभिन्नता के कारण लोगों की वेष-भूषा में भी विभिन्नता पाई जाती है। ठण्डे क्षेत्रों में लोग गर्म ऊनी वस्त्रों का प्रयोग करते हैं। गद्दियों का चोला जो लम्बे कोट की तरह ऊन का बना होता है कुल्लू और मध्य भाग के क्षेत्रों का दोहडू, (विशेष प्रकार से निर्मित ऊन की चादर जो कमर से नीचे बांधी जाती है और ढियाटु) स्त्रियों द्वारा पहने जाने वाला **रेजटा** अर्थात् लम्बा बन्द कोटनुमा वस्त्र जो पैरों तक शरीर को ढांपता है। निम्न भागों में विशेष उत्सवों पर पहने जाने वाला लहंगा हिमाचली वेष-भूषा के विशेष प्रतीक हैं। पुरुषों के पहाड़ी लिबास में बुशैहरी टोपी और कोटनुमा ''लोइ'' विशेष स्थान रखती हैं। अब अधिकतर मैदानों की तरह स्त्रियां, कमीज-सलवार या विशेष अवसरों पर साड़ी और पुरुष कमीज़-पाजामा या पैंट-कोट पहनते हैं। विशेष उत्सवों और नृत्यों आदि में चूड़ीदार पाजामा भी पहना जाता है।

6. आभूषण (Ornaments)—हिमाचल के प्रसिद्ध आभूषण नाक के बाईं ओर गोलाकार लौंग, नाक के दोनों नत्थुनों के मध्य भाग में होंठों की तरफ लटकने वाली मुरकी, तिल्ली, काँटे या बालियां हैं। सोने या चाँदी का सिर पर लगाया जाने वाला ऊंचा गोलाकार चक्र है। चाँदी के लम्बे बाजुओं में पहने जाने वाले चूड़े, गले के लिए चाँदी या सोने का हार व पैरों में पहने जाने वाली पायल है। परन्तु अब धीरे-धीरे इनका रिवाज़ खत्म होकर सोने का चक्र, टीक, नत्थ और कंठहार आदि का ही रिवाज रह गया है।

7. भाषा (Language)— हिमाचल में अलग-अलग क्षेत्रों की अलग-अलग बोलियां है जैसे-सिरमौर में सिरमौरी, क्योंथल में क्योंथली, बघाट में बघाटी, बाघल में बाघली, कहलूर में कहलूरी, कुल्लू में कुलवी, मंडी में मंडयाली, कांगड़ा में कांगड़ी और चम्बा में चम्बयाली बोलियां बोली जाती हैं। इन स्थानीय बोलियों से ही पहाड़ी बोली का विकास हुआ है। पहाड़ी की लिपि **टांकरी** रही है। कई राज्यों के अभिलेख टांकरी लिपि में थे। बनिया लोग अभी तक भी अपने हिसाब की बहियां लिखने में टांकरी का प्रयोग करते हैं परन्तु अब टांकरी का स्थान देवनागरी लिपि ने ले लिया है। पहाड़ी साहित्य का सृजन अब इसी लिपि में हो रहा है।

3. रीति-रिवाज़ व संस्कार
(Rituals and Sanskars)

संसार के हर समाज के अपने-अपने रीति रिवाज़ हैं जो मनुष्य के जन्म से लेकर, विवाह और मृत्यु तक अपनाए जाते हैं। ये रीति-रिवाज़ समाज की ओर से मनुष्य के लिए सामाजिक बंधन हैं और समाज के साथ चलने के लिए इन्हें अपनाना पड़ता है।

1. जन्म (Birth)—हिमाचल प्रदेश में जब स्त्री गर्भवती होती है तो उस पर बाहर जाने और कुछ कार्य करने पर प्रतिबन्ध लगा दिये जाते हैं। वह श्मशान भूमि पर नहीं जा सकती। उसे किसी की मृत्यु हो जाने पर वहां नहीं जाने दिया जाता। वह सूर्य या चन्द्र ग्रहण को नहीं देख सकती, क्योंकि ऐसा करने से बच्चे के अपंग होने का भय रहता है। गर्भवती स्त्री के पति पर शिकार खेलने का प्रतिबन्ध होता है। बच्चे के जन्म के समय स्त्री को मकान की निचली मंजिल के कमरे में रखा जाता और गांव में मौजूद दाई को बुलाया जाता है। स्त्री के पास दाई के साथ घर की पड़ोस की प्राय: सधवा औरतों को ही जाने दिया जाता है। बच्चे का जन्म होने पर दाई द्वारा तुरन्त बच्चे का नालू चांदी के रुपये या आभूषण पर रख कर काटा जाता है। बच्चे के जन्म के बाद बच्चे की मां को गर्म दूध गुड़ और देशी घी डाल कर पिलाया जाता है।

इस प्रदेश में लड़के के जन्म को अधिक महत्त्व दिया जाता है। उसके जन्म पर इस दिन उस स्त्री के मां-बाप या भाई या जिसके बच्चा जन्मा है, उसे नये कपड़े पहनाते हैं, और बच्चे को भी उसी दिन वस्त्र पहनाया जाता है। सारे घर

की सफाई की जाती है और पानी में गाय का मूत्र (गून्तर) और गंगाजल मिलाकर घर में छिड़के जाते हैं। मध्य क्षेत्र में ''गून्तर'' लेने की इस रस्म को 'दसूठन' भी कहते हैं। सूतक का समय प्रायः 10 दिन होता है।

2. मुंडन संस्कार (Mundan Sanskaras)—बच्चे के जन्म संबंधी अन्य संस्कार नामकरण, अन्न-धारण, मुंडन और यज्ञोपवीत (जनेऊ) आदि हैं। नामकरण पंडित द्वारा ग्रहों के या राशि के अनुसार किया जाता है। जब बच्चे को पहली बार अनाज खिलाया जाता है तो उसे दूध और चावल की खीर बनाकर दी जाती है।

नवजात बच्चे के पहली बार बालों के कटवाने का संस्कार 'मुंडन' होता है। यह बच्चे की आयु के **पहले, तीसरे, पांचवे या सातवें** वर्ष में किया जाता है। सबसे पहले बच्चे के बाल उसका मामा काटता हैं। यदि मामा न हो तो बच्चे की मां किसी को धर्म-भाई बनाकर उससे यह कार्य सम्पन्न करवाती है। यथा-शक्ति लोगों और सम्बन्धियों को इस समय प्रीति-भोज दिया जाता है। बच्चे के बाल डोरी में बांधकर लाल कपड़े में संभालकर रख दिये जाते हैं। समय मिलने पर उन्हें किसी कुलदेवता या देवी या अन्य तीर्थ-स्थान पर चढ़ाने के लिए रख लिया जाता है। कई बार यह संस्कार किसी देव-मन्दिर या तीर्थ-स्थान पर पूर्ण किया जाता है जैसे कि कांगड़ा में ज्वालाजी का मन्दिर या मंडी में रिवाल्सर झील का पवित्र स्थान।

3. विवाह (Marriage)—हिमाचल प्रदेश में क्षेत्रानुसार विवाह कई प्रकार से सम्पन्न किए जाते हैं। निम्न क्षेत्रों में विवाह सम्पन्न करने के प्रायः दो तरीके हैं:-**शास्त्र सम्मत विवाह** और **झंजराड़ा**। विवाह में सबसे पहले सगाई की रस्म अदा की जाती है। लड़के और लड़की के मां-बाप रिश्ता तय करने के बाद ठीक मुहूर्त में लड़की के मां-बाप और सम्बन्धी बारात लेकर लड़की के घर जाते हैं और विवाह वेदी के इर्द-गिर्द लड़के और लड़की द्वारा सात इकट्ठे फेरे लेने पर सम्पन्न माना जाता है। किसी समय लड़की के मां-बाप को लड़के के मां-बाप पैसे देते थे, जिसे वरीणा कहा जाता था परन्तु अब यह प्रथा समाप्त हो गई है। विवाह की सभी रस्में लगभग मैदानों जैसी ही हैं।

अब वयस्क होने पर शिक्षित लड़के-लड़कियां, यदि उन्होंने मां-बाप की इच्छा के विरुद्ध शादी करनी होती है तो वे अदालत का सहारा लेते हैं। इस प्रकार के विवाह को निम्न क्षेत्रों में **बराड़फुक**, मध्य क्षेत्रों में **जराड़फुक** और चम्बा आदि में **झिण्डीफुक** विवाह कहते हैं। इस विवाह में नौजवान लड़की, मां-बाप या संबंधियों की इच्छा के बिना किसी पुरुष से संबंध जोड़कर शादी कर लेती है। शादी के समय पुरुष लड़की को नथ या अन्य नाक का गहना पहनाता है। दोनों किसी ''बराड़ या झाड़ी'' को आग लगाते हैं और हाथ में हाथ लेकर आग के सात या आठ फेरे लेते हैं। पुरुष लड़की को घर या अपने रहने के स्थान पर ले जाता है और विवाह पूर्ण माना जाता है। परन्तु ऐसी शादियों का रिवाज़ अब नहीं रहा। प्रदेश के जनजातीय परिवारों में यह प्रथा लम्बे समय तक चलती रही है।

झंजराड़ा, गाड्डर या परैणा—मध्य भाग में शास्त्रानुसार विवाह या उपरोक्त वर्णित जराड़फुक आदि शादी के अतिरिक्त अनौपचारिक प्रकार के विवाह का भी प्रचलन है जिसे **झंजराड़ा, गाड्डर या परैणा** कहते हैं। इसमें शादी तो तय लड़की-लड़के के मां-बाप ही करते हैं परन्तु शादी की तिथि को लड़का दुल्हा बन कर नहीं जाता। लड़के का बाप/भाई अपने रिश्तेदारों और गांव वालों को लेकर जिनकी संख्या 5,7 या 11 तक होती है, गहने-कपड़े लेकर लड़की के घर जाता है। उनके लिये वहां खाने-पीने इत्यादि का प्रबंध होता है। पुरोहित मंत्र-उच्चारण के साथ लड़की को मुहूर्त के समय नथ या बालू पहनाता है और अन्य गहने-कपड़े भी उसे दिये जाते हैं। उसी दिन या दूसरे दिन वे लोग लड़की को लेकर घर आ जाते हैं। लड़की के सगे संबंधी भी साथ आते हैं। वर के घर पहुंचने पर वर पक्ष की स्त्रियां लड़की का स्वागत करती हैं। घर के दरवाज़े के सामने गन्दम के आटे या चावल की भरी टोकरी, पानी का भरा हुआ घड़ा और जला हुआ दीपक रख दिये जाते हैं। चूल्हे और गणेश की पूजा की जाती है। सिरमौर में निम्न क्षेत्रों में कांगड़ा आदि के ''कणदेओं'' की भान्ति दीवार पर रंग से मूर्तियां बनाई जाती हैं। वर और वधू को इकट्ठे बिठाया जाता है। वर और वधू एक दूसरे के हाथ पर गुड़ रखकर खाते हैं और विवाह पूर्ण समझा जाता है। इस रस्म को ''घरासनी'' कहते हैं। सभी रिश्तेदारों और गांव वालों को खाना खिलाया जाता है। तीसरे दिन लड़की के मां-बाप लड़के के घर आते हैं और साथ में कुछ पकवान लाते हैं। इसे **''मुरापुली''** कहते हैं। उससे तीसरे दिन लड़का-लड़की के मां-बाप के घर जाते हैं। इस रस्म को ''धनोज'' कहते हैं।

हार (Har)—हिमाचल के मध्य भाग में जब कोई लड़का मेले, किसी विवाह आदि में से किसी लड़की को जबरदस्ती उठाकर विवाह कर लेता है या लड़की-लड़के के साथ स्वयं भाग जाती है तो इसे "**हार**" शादी कहा जाता है। ऐसी सूरत में लड़के के मां-बाप बाद में लड़की के मां-बाप से समझौता करके उनके लड़के द्वारा किये गए काम के कारण बेइज्जती की क्षतिपूर्ति के लिए 100 से 500 रुपये तक और बकरा आदि देते हैं। किन्नौर इलाके में ऐसी शादी को **दुबदुब, चुचिस** या **खुटकिमा** कहते हैं। एक महीने के बाद जब लड़का लड़की को लेकर मायके जाता है तो अपने साथ तीन-चार टोकरी पकवान तथा लड़की की मां के लिए सूखे मेवे की माला जिसे '**टूमलैंग**' कहते हैं ले जाता है। इस संस्कार को '**स्टेन टैनिक**' कहा जाता है।

रीत (Reet)—झाजरा या गाड्डर विवाह में जब पति-पत्नी में अनबन हो जाती है और वे इकट्ठे नहीं रह सकते तो लड़की अपने मां-बाप के घर चली जाती है और लड़की का बाप पिछले पति को रीत का पैसा देकर जिसमें, उसके पति द्वारा दिए गए गहने-कपड़ों की कीमत या शादी के अन्य शामिल होते हैं, बिना कोई औपचारिक तलाक लिए, छुड़ा सकता है। दूसरा विवाह करने की सूरत में यह रीत दूसरे पति द्वारा दी जाती हैं। यह रिवाज स्त्री की स्वतंत्रता का प्रतीक है कि उसकी इच्छा के विरुद्ध उसे बांधकर नहीं रखा जा सकता और उसका पति उस पर जुर्म नहीं कर सकता। रीत का सारा खर्च लड़की के होने वाले पति द्वारा दिया जाता है।

बहुपति प्रथा (Polyandry)—इस प्रथा के अनुसार सबसे बड़ा भाई लड़की से झाजरा शादी करता है और उसके शेष भाई स्वयमेव ही उसके पति मान लिये जाते हैं। वैवाहिक संबंधों का बंटवारा वे आपसी सहमति से प्रथा के अनुसार करते हैं। इस विवाह से पैदा होने वाली संतान बड़े भाई के नाम दर्ज की जाती है। स्त्री को निष्पक्ष होकर सभी पतियों से एक जैसा व्यवहार करना पड़ता है परन्तु समय के परिवर्तन के साथ यह प्रथा समाप्त ही हो रही है।

एक से अधिक पत्नी रखने की बहुपत्नी प्रथा का भी कहीं-कहीं प्रचलन है। इसके मुख्य कारण ज्यादा जमीन होना या अन्य कारोबार का होना या पहली स्त्री के संतान न होना आदि हैं।

4. हिमाचल प्रदेश की प्रमुख पूजा पद्धतियां
(Worship methods of Himachal)

हिमाचल प्रदेश को **देव भूमि** के नाम से जाना जाता है। यह देवी-देवताओं की जन्म स्थली है। पवित्र भूमि विभिन्न तपस्वियों व ऋषियों की विश्राम स्थली भी रही है। पांडव भी अपने विश्राम के समय यहां आए थे। रामं व रावण के युद्ध के समय लक्ष्मण को सर्प दंस से मुक्ति दिलाने के लिए हनुमान संजीवनी बूटी लेने हिमालय पर्वत आए थे तथा वापिस जाते समय जब **जाखू चोटी** पर विश्राम करने के लिए रुके थे। वहां आज प्रसिद्ध हनुमान मन्दिर बना है। आर्यों व अनार्यों के मध्य 40 साल तक चला युद्ध भी प्रसिद्ध है। अन्त में दिवोदास ने उदवज नामक स्थान पर साम्बर का वध कर दिया था। बाद में आर्यों ने इन पहाड़ी राज्यों पर अपना अधिकार कर यहां की राजनीतिक व्यवस्था में बदलाव लाने का अथक प्रयास किया। वैदिक काल में पहाड़ों पर आक्रमण करने वाला प्रमुख राजा कीर्तवाय था। कीर्तवाय ने मंडी में आकर जमदग्नि ऋषि की गऊएं चुरा ली थीं तथा वशिष्ठ ऋषि पर बिना किसी कारण आक्रमण किया था। बाद में परशुराम ने कीर्तवार्य के कारनामों से तंग आकर कीर्तवार्य के पुत्र ने जमदग्नि का वध कर दिया और परशुराम के क्रोध की ज्वाला ने क्षत्रियों का नाश कर दिया था। पद्म पुराण, वायु पुराण, मार्कण्डेय तथा विष्णु पुराण और कुछ अन्य पुराणों तथा महाभारत के वन-पर्व, द्रोण-पर्व आदि में भी हिमाचल का वर्णन आता है।

पहाड़ी लोगों का प्रायः हिन्दू धर्म ही है। किन्नौर व लाहौल स्पीति में बौद्ध धर्म की बहुलता है और वे बौद्ध परम्परा के अनुसार ही अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं। हिन्दू लोग अधिकतर काली शक्ति के उपासक हैं। देवी-देवता का निवास मन्दिर में होता है। काली-पूजकों के बाद दूसरा स्थान शिव पूजा का है। शिवलिंग के रूप में शिव की पूजा की जाती है। विष्णु, नरसिंह व परशुराम की पूजा का प्रचलन भी है। अधिकतर पूजा स्थल मन्दिर ही हैं। मन्दिरों में लोगों ने अपने देवता बनाए होते हैं, जो उनके कष्टों व दुखों का प्रायः निवारण करते हैं।

हिमाचल प्रदेश में देवी-देवताओं की पूजा की योजनाबद्ध पद्धति है। निम्न क्षेत्रों में कुछ भिन्नतायें हैं, परन्तु पूजा-पद्धति और देवी-देवताओं का मूल स्वरूप एक जैसा ही है। निम्न क्षेत्रों को छोड़कर देवी-देवताओं के अधिकतर वर्गाकार के मन्दिर बने हैं, जिनके निर्माण में लकड़ी का प्रयोग हुआ है। मन्दिरों में देवी-देवताओं की पत्थर की मूर्तियां कम और सोने-चांदी, पीतल या अन्य धातुओं की मूर्तियां अधिक हैं।

1. शिव पूजा (Worship of Shiva)—दंतकथाओं व किवदंतियों में शिव के एक सौ आठ नाम लिये जाते हैं। शिवपुराण और उत्तम-पुराण काव्य शिव महिमा से परिपूर्ण हैं। हिमालय में शिव का कोई मन्दिर या मूर्ति नहीं, केवल शिवलिंग के रूप में पूजा की जाती है। हिमाचल में प्रमुख शिव मन्दिर, कांगड़ा में बड़ोह मन्दिर, ईश्वर देव (सराज) नर्वदेश्वर महादेव, शमशी महादेव, जगेश्वर, वीणी, बुशैहर महादेव, शिमला जिला के कुमारसेन में महादेव के कई मन्दिर बने हैं। इसके अलावा कोटेश्वर महादेव, महासू देवता, कुलखेत्र, बौगेंडू महादेव के मन्दिर प्रमुख हैं।

2. सिद्ध पूजा (Siddh Worship)—महाभारत काल से ही पहाड़ों में सिद्ध पूजा की जाती रही है। सिद्धि तपस्या का रूपांतर ही है। प्राचीन काल में तपस्या व भक्ति में निपुण होने के बाद ही सर्वशक्तिमान व्यक्ति को 'सिद्धि' का अवतार कहा गया है। हिमाचल में प्रमुख सिद्ध मन्दिर देहरा में **बालकरूपी, बाबा कालकानाथ** (दयोट सिद्ध)आदि सम्पूर्ण उत्तर-भारत में प्रसिद्ध हैं। बाबा बालकनाथ के बारे में प्राचीन कथा इस प्रकार है कि उन्होंने पार्वती की कृपा से, स्त्री वेश बना कर शिवजी के दर्शन का कृपा प्रसाद चखा था, इन्हें बाबा गोरखनाथ ने अपना शिष्य बनाने की कोशिश की परन्तु वे एक गुफा में जाकर अन्तर्धान हो गये, जहां अब उनका मन्दिर बना है। लोगों का विश्वास है कि यहां सभी दु:खों का निवारण होता है।
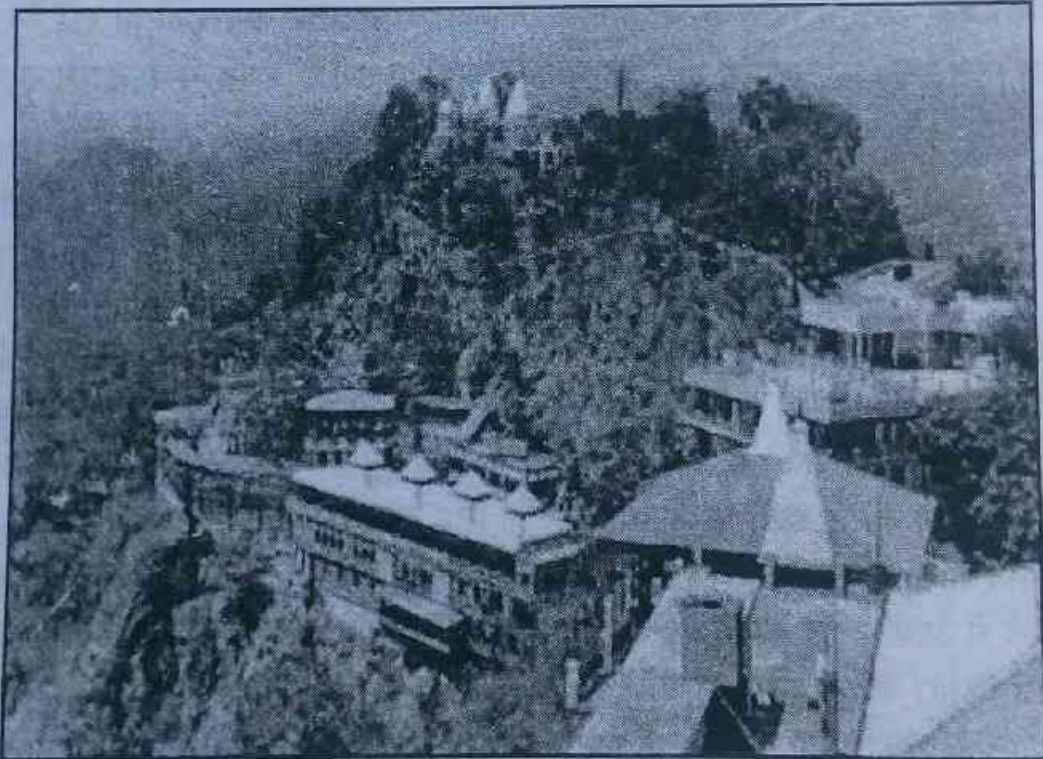
हमीरपुर (दयोट सिद्ध) में बाबा बालकनाथ मन्दिर

3. देवी पूजा (Worship of Devi)-देवी को शक्ति पीठों के रूप में पूजने का प्रचलन प्राचीन काल से होता रहा है। सिंधु घाटी सभ्यता में भी मातृ देवी की पूजा की जाती थी। हिमाचल में भी देवी शक्तियों की पूजा का इतिहास पुराना है। यहां **भीमाकाली, नयनादेवी, ज्वालाजी, चामुण्डा देवी, बेखली माता, कुसुम्बा देवी, कामना देवी** के अतिरिक्त **काली दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती** की पूजा भी प्रत्येक घर में की जाती है। देवियों को सैकड़ों नामों से सम्बोधित किया गया है। नवरात्रों व धार्मिक दिनों में देवी की आराधना बड़े ज़ोर-शोर से की जाती है। ज्वाला जी माता (ज्वालामुखी) के मन्दिर में रात्रि को कीर्तन व मां को सुलाने का दृश्य अति मनोरम व हृदय विदारक होता है। भक्त लोग इसमें शामिल हो कर स्वयं को कृतघ्न पाते हैं।

4. **नरसिंह पूजा** (Narsimha Worship)—'नृसिंह' का ही विकृत रूप नरसिंह को माना गया है। ये देवता सुन्दर स्त्रियों पर आकर्षित होकर उनके माध्यम से भविष्यवाणियां करते हैं। हिमाचल में इस देवता के प्रमुख मन्दिर **धौलरा का मन्दिर** (बिलासपुर) में है। साथ ही **कुल्लू, चम्बा, मंडी** में भी नरसिंह के मन्दिर देखने को मिलते हैं। ये सुकेत में प्राचीन समय से पूजे जाते हैं। कई अन्य स्थानों पर इन्हें **कालिया वीर, बधेरा, श्मशान भू** के नाम से जाना जाता है।

5. **जामलू देवता की पूजा** (Worship of Jamlu God)—कुल्लू के **मलाणा** में जामलू देवता की पूजा की जाती है। उस गांव में अभी भी देवता का शासन चलता है। किंवदन्ती के अनुसार यहां के निवासियों को सिकन्दर महान (326 ई. पूर्व) का वंशज भी माना गया है। ये स्वयं को सिकन्दर के संबंधी कहने में गौरव अनुभव करते हैं। दूसरी विचारधारा के लोग जायलू देवता को **जमदग्नि ऋषि** की संतान भी मानते हैं। कुछ एक इन्हें किन्नरों की संतान भी मानते हैं। मलाणा में जामलू देवता के समक्ष हर वर्ष फाल्गुन (मार्च) में बड़ा मेला लगता है जो देवता के प्रति सम्मान तथा आस्था का प्रतीक है।

6. **नाग पूजा** (Naag Worship)—पहाड़ों में लाल रंग के सर्प की पूजा देवता का प्रतीक मानकर की जाती है क्योंकि लोगों का विश्वास है कि लाल रंग का सर्प रूपी देवता उनकी धन-सम्पत्ति की रक्षा करता है। हिमाचल में नाग देवता के मन्दिरों में प्रमुख **कामरू व माहुनाग** (मंडी) देट व **ज्वालिया नाग** (कांगड़ा), **नागनी देवी** (ज्वाला जी), **धारल-घूंड नाग** (शिमला), **बढुआ नाग** (किन्नौर), **चमाण नाग** (कुल्लू), **वासुकि नाग** (चम्बा) आदि हैं।

7. **श्रीगुल या सरगल देवता** (Srigul or Sargal)-यह सिरमौर की **चूड़धार** चोटी का प्रसिद्ध देवता है। यह अपनी अद्‌भुत शक्तियों के कारण मानव से देवता बना था। श्रीगुल ने एक सहानलवी घोड़ा बना कर चूड़धार के दैत्य को (जो गाय का मांस खाकर उस स्थान को अपवित्र कर रहा था) पत्थर बना दिया, वह अभी भी चूड़धार में पड़ा है। उसे अब **औरापोटली** के नाम से जाना जाता है। हिमालय के अनेक मन्दिरों में श्रीगुल के साथ चूहड़ू (श्रीगुल का वजीर) की मूर्तियां भी स्थापित की गई हैं।

8. **महासू देवता की पूजा** (Worship of Mahasu God)—महासू देवता को महाशिव का प्रतिरूप ही अंगीकार माना गया है। यह देवता एक देवता न होकर **भोटु, पव्वर, वाशिक, चालहु** नामक चार भ्राता-देवों का एक समूह है। महासू की पूजा लोगों द्वारा हर गांव व अपने घरों में ईष्ट देव के रूप में भी की जाती है, क्योंकि इसे शिव के रूप में ही माना जाता है। ये मुख्यत: शिमला ज़िला के ऊपरी क्षेत्रों का प्रमुख देवता है।

9. **जख या पीर पूजा** (Jakh or Pir worship)- जख या पीर की मुख्य विशेषता यह है कि इन देवताओं की मूर्तियां न होकर मन्दिर के अन्दर कब्र बनी होती है। कहा जाता है कि ये पशुओं की बीमारियों से रक्षा करते हैं।

10. **ऋषि पूजा** (Rishi worship)-ऋषि पूजा का प्रचलन हिमाचल में अतीत काल से चला आ रहा है। पहाड़ों के प्रमुख ऋषि मार्कण्ड, व्यास, वशिष्ट, शुकदेव, लोमष, श्रृंग, माडव्य, जमदग्नि तथा वाल्मिकी ऋषि आदि हैं। विभिन्न त्योहारों व अवसरों पर इनकी पूजा अर्चना की जाती है। हिमाचल में ऋषियों से संबंधित कई मन्दिर भी बने हैं। इनमें से प्रमुख बिलासपुर में **मार्कण्ड व व्यास ऋषि** के, सुन्दर नगर में **शुकदेव** के, मंडी में **माडव्य व लोमष ऋषि** के, सिरमौर में **जमदग्नि ऋषि** के मन्दिर हैं। कुल्लू में भी **श्रृंग व वशिष्ठ** आदि के मन्दिर बने हैं। इन मन्दिरों में हर वर्ष ऋषियों से संबंधित मेले लगते हैं तथा पूजा पाठ व प्रार्थना की जाती है।

विभिन्न अन्धविश्वास (Different Disbeliefs)-हिमाचल प्रदेश के लोग जादू-टोने व भूत-प्रेत से बचने के लिए धार्मिक अंधविश्वासों से भरे पड़े हैं। वे विभिन्न प्रकार के रोगों से बचने के लिए मन्दिरों में देवता के पास निवारण हेतु जाते हैं। वहां देवता के गुरु झाड़-फूंक कर बीमारी को ठीक करने का दावा करते हैं । लोग अंध विश्वास की आड़ में अस्पताल जाने की अपेक्षा ढोंगी साधु, पाखण्डी ज्योतिषियों के पास जाते हैं। इसी धार्मिक अंधविश्वास के चलते बलि-प्रथा भी प्रचलित है।

ढोंगी बाबा किसी भी व्यक्ति को अपनी शक्ति के बल पर रोग को दूर करने का दावा करता है। वह रात्रि को झाड़-फूंक करता है। वह इस कार्य करने के लिए मुर्गा व शराब की बोतल तथा कुछ अन्य सामग्री मंगवाता है। फिर

अपना सिर हिलाकर वह उछल-कूदकर ड्रामे बाजी करता है, लोग उसके प्रभाव में आकर धन का दुरुपयोग करते हैं।

शिमला के ऊपरी क्षेत्र व हिमाचल के कुल्लू, मंडी, सिरमौर व किन्नौर के निचले भाग में लोग अपने रोगों के निवारण हेतु, जादू से बचने के लिए, सूखे की स्थिति में तथा बाढ़ व भयंकर वर्षा से बचने के लिए मन्दिरों में बकरों की बलि चढ़ाते हैं, जो सरासर अन्याय है।

धर्म (Religion)— किन्नौर आदि क्षेत्रों में बौद्ध-धर्म के का काफी प्रभाव है। वहां का धार्मिक जीवन भी लगभग वही है, जो राज्य के अन्य भागों का परन्तु वहां ब्राह्मणों की अपेक्षा लामाओं का अधिक प्रभाव रहा है। किन्नौर के मुख्य देवताओं में शुआ परगना की **चण्डिका** है, जो वास्तव में हिन्दू काली है।

इस संभावना से पहाड़ी लोगों का धर्म हिन्दू धर्म की शाखा है जिसमें लोग अधिकतर शक्ति या काली के पुजारी हैं, जिसका प्रमाण देवी के अधिकांश मन्दिरों से मिलता है। काली-पूजकों के बाद दूसरा स्थान शिव पूजकों का है जिसका आभास महासु, श्रीगुल और महादेव आदि के पूजकों से मिलता है। वैष्णव-पूजा का प्रमाण नरसिंह और परशुराम की पूजा से मिलता है परन्तु विष्णु के पूजक कम हैं।

5. हिमाचल प्रदेश के मेल
(Fairs of Himachal)

मेले व त्यौहार किसी भी देश व प्रदेश की संस्कृति तथा मानवीय भावनाओं को जोड़ने का एक सरल व उत्तम माध्यम समझे जाते हैं। मेले हमारी मानसिक कुंठा का दमन कर प्रेम व भाईचारे का संदेश देते हैं। त्यौहार हमें पारिवारिक व सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से जोड़ने का काम करते हैं। आधुनिक स्वरूप की छवि व समय की बदलती तस्वीर के अनुसार हिमाचल प्रदेश के विभिन्न उत्सवों व मेलों को चार विभिन्न प्रकारों से विभक्त किया जा सकता है:-

1. राज्य स्तरीय मेले (State Fairs)-ये मेले राज्य स्तर पर मनाये जाते हैं। ये मेले सरकार द्वारा अनुमोदित होते हैं। इसमें सभी सुविधाएं सरकार द्वारा प्रदान की जाती हैं। इनमें सरकार की ओर से समूची व्यवस्था संबंध, चिकित्सा सुविधा, कानून व्यवस्था, मनोरंजन क्रिया-कलाप तथा दूसरी अन्य अन्तर्राज्यीय प्रतियोगिता तथा सांस्कृतिक कला कृतियों का आयोजन किया जाता है। इन राज्यस्तरीय मेलों में प्रमुख मिञ्जर मेला (चम्बा), शिवरात्रि (मंडी), दशहरा (कुल्लू) लवी(रामपुर) आदि शामिल हैं।

2. धार्मिक मेले (Religious Fairs)- ये मेले धार्मिक स्थलों व मन्दिर प्रांगण में मनाये जाते हैं। इसमें मन्दिरों के देवस्थलों में विभिन्न सम्प्रदायों के लोग एक साथ श्रद्धा व विश्वास से पूजा अर्चना करते हैं और धार्मिक अनुभूति व आत्म शांति का जाप करके सुखद अनुभव प्राप्त करते हैं। नवरात्रों के समय मनाया जाने वाला मेला आकर्षण का केन्द्र होता है तथा श्रद्धालुओं की अपार भीड़ को देखते हुए धार्मिक मेले का स्वरूप देखने योग्य होता है। पर्यटकों के आने से इन मन्दिरों को शुद्ध आय भी प्राप्त होती है। हिमाचल में धार्मिक मेलों का वर्णन इस प्रकार है:-

(1) मारकण्डेय मेला (Markandaya Fair)- यह मेला प्रतिवर्ष वैशाखी के समय तीन दिन तक बिलासपुर के मकरी गांव में ऋषि मारकण्डेय के मन्दिर के समक्ष मनाया जाता है। मान्यता है कि ऋषि मारकण्डेय का जन्म यहां हुआ था तथा लोग यहां पवित्र जल में स्नान करके अपनी मनो-कामना पूरी होने के लिए प्रार्थना करते हैं।

(2) नयना देवी तथा अन्य देवी मेले (Nayna Devi and other Devi Fairs)- बिलासुपर जिले में श्रावण नवरात्रों में होने वाला मेला श्री नयना देवी को समर्पित है। मन्दिर के विषय में धारणा है कि जब राजा दक्ष ने अपने दामाद (भगवान शिव) को यज्ञ में नहीं बुलाया तो क्रोधित दक्ष की पुत्री हवन-कुण्ड में कूद गई थी। शिव को इस घटना का पता चला तो उन्होंने पार्वती की आंखें गिरा दी थीं। फिर इस स्थान पर मन्दिर का निर्माण किया गया। गुरु गोबिन्द सिंह जी ने इस मन्दिर में पूजा-अर्चना की थी। यहां से बिलासपुर तथा गोबिन्द सागर का मनोरम दृश्य दिखाई देता है।

अन्य देवी मेले (Other Devi Fairs)- हिमाचल प्रदेश देवी के मेलों के लिए विख्यात है। ऊना जिले में चिंतपूर्णी, कांगड़ा में **ज्वाला** जी तथा **ब्रजेश्वरी** देवी के प्रमख मेले हैं। इन सभी मन्दिरों में चैत्र, श्रावण तथा आश्विन

महीनों में मेले लगते हैं। इन मेलों में दूर-दूर से लोग अपनी-अपनी मनोकामनाएं लेकर देवी दर्शन के लिए आते हैं और इच्छा अनुसार देवी को भेंटें चढ़ाते हैं। नवरात्रों के दिनों में देवी के दर्शन करना पुण्य समझा जाता है।

चण्डी देवी का मेला सोलन जिले के चण्डी गांव में आयोजित किया जाता है। तारा देवी का मेला दुर्गा माता की याद में दुर्गा अष्टमी के दिन मनाया जाता है।

(3) **गुग्गा पीर मेला** (Gugga Pir Fair)- यह मेला गुग्गा पीर की याद में गुग्गा मन्दिर बटेहर उपराली (सदर बिलासपुर) में मनाया जाता है। लोगों का विश्वास है कि गुग्गा उनकी सर्प-दंश और अन्य भूत-प्रेतों से रक्षा करता है।

(4) **हाटकोटी मेला** (Hatkoti Fair)- हाटकोट (रोहड़ू) में इस मेले को दुर्गा माता की याद में आयोजित किया जाता है। मान्यता है कि हाटकोटी के इस मन्दिर का निर्माण राजा विराट ने किया था। पाण्डवों का सम्बन्ध इस मन्दिर से जोड़ा जाता है। मन्दिर में माता की अष्ठभुजा मूर्ति अद्वितीय है।

(5) **रोहड़ू मेला** (Rohru Fair)- साधारतया इस मेले को वैशाख (मध्य अप्रैल) में देवता शिकरु के मन्दिर के समक्ष रोहड़ू बाज़ार में आयोजित किया जाता है। शिकरु देवता को धनटाली, जाखर दशलानी, गंगटोली और रोहड़ू में घुमाया जाता है। देवता के यह पांच आवास माने जाते हैं।

(6) **सिप्पी मेला** (Sippy Fair)- सिपुर (शिमला ज़िले) में मनाया जाने वाला यह मेला **सिप देवता** को समर्पित है। हिमाचल प्रदेश के गठन से पूर्व यह मेला कोटी रियासत में राजा के पद ग्रहण के समय मनाया जाता था। प्रथा थी कि राजा अपनी गद्दी ग्रहण करने से पूर्व **सिप** देवता की पूजा करता था। सिप्पी मेला शिव भगवान को समर्पित है।

(7) **कुफरी मेला** (Kufri Fair)- मशोबरा के समीप डगहोगी गांव में रामायण के उस सुअवसर को याद करने के लिए यह मेला आयोजित किया जाता है, जब हनुमान ने वानरों की सहायता से लंका को जोड़ने वाला सेतु बनाया था।

(8) **शूलिनी मेला** (Shuline Fair)- सोलन का यह मेला दुर्गा माता की छोटी बहन शूलिनी देवी को समर्पित है। यह देवी पूर्व बघाट रियासत के शाक की कुल-देवी रही है। सात बहनों में हिंगलाज देवी, जेठी ज्वालाजी, लूगासनी देवी, नयना देवी, नौग देवी, शूलिनी देवी और तारा देवी थीं। सातों बहने दुर्गा का अवतार मानी जाती हैं। शूलिनी मेला प्रतिवर्ष आषाढ़ माह के दूसरे रविवार को मनाया जाता है। सोन का नाम भी देवी शूलिनी के नाम पर है।

(9) **रेणुका मेला** (Renuka Fair)- रेणुका माता की याद में यह मेला ज़िला सिरमौर में आयोजित होता है। जमदग्नि ऋषि (परशु राम के पिता) का राजा सहर्स्राजुन ने वध कर दिया था । इसके पश्चात् जमदग्नि की पत्नी रेणुका ने झील में कूदकर आत्महत्या कर ली थी। दूसरी मान्यता है कि परशु राम ने अपनी माता रेणुका का पिता जमदग्नि के आदेश पर वध कर दिया था। आज भी लोग हज़ारों की संख्या में कार्तिक माह में एकादशी के दिन मेले में आकर यहां पूजा-अर्चना करते हैं। झील का आकार पहाड़ी के ऊपर से सुप्त महिला जैसा प्रतीत होता है।

(10) **बाबा बालक नाथ मेला** (Baba Balak Nath Fair)- यह मेला दियोट सिद्ध नामक स्थान में बाबा बालक नाथ (संन्यासी बालक) की चमत्कारी शक्ति को याद करने के लिए मनाया जाता है। धारणा है कि बाबा बालक नाथ का जन्म गिरिनार काठियावाड़ (जूनागढ़ राज्य) में हुआ था। यह चमत्कारी बालक तलाई बिलासुपर के आसपास भी घूमता रहा, जहां वह पशु-चराता रहता था। दियोट सिद्ध में बालक ने सिद्धि प्राप्त की। बाबा की याद में ही इस मेले में रोटियाँ (रोटों) को श्रद्धालुओं में बांटा जाता है।

(11) **होला मोहल्ला मेला** (Hola Mohalla Fair)- मुख्य रूप से इस होली उत्सव को पांवटा (सिरमौर ज़िले) में मनाया जाता है। इस मेले का आरम्भ गुरु गोबिन्द सिंह के पांवटा में रहने के साथ जोड़ा जाता है। गुरु के यहां रहने के दौरान 52 कवि उनके दरबार में रहते थे। वास्तव में होला मोहल्ला मेला आनन्दपुर साहिब (पंजाब) से शुरू हुआ जहां गुरु अपनी सेना के बहादुरी और सैनिक दक्षता को देखते थे।

(12) **मेला बाबा बड़भाग सिंह** (Mela Baba Barbhag Singh)- यह मेला ऊना जिला के मैड़ी नामक स्थान पर ज्येष्ठ के महीने में पूरा महीना चलता है। इस मेले में पंजाब से बड़ी संख्या में लोग जाते हैं। बाबा बड़भाग सिंह देवी

शक्तियों के लिए विख्यात है तथा इसके बारे में अनेक लोक कथाएं प्रचलित हैं। ज्येष्ठ महीने के अतिरिक्त यहां प्रत्ये... मास की अमावस्या को भी मेला लगता है।

(14) मणिमहेश मेला (Mani Mahesh Fair)- यह चम्बा से 65 कि.मी. दूर एक धार्मिक स्थल है, जहां ए... सुन्दर झील है। झील के किनारे शिव मन्दिर बना है जिसे शिव का घर कहा जाता है। कृष्ण जन्माष्टमी से 15 दिनों... बाद यहां मेला लगता है, जिसे मणि महेश यात्रा कहा जाता है। यहां आने वाले श्रद्धालु झील में स्नान करते हैं।

(14) शिवरात्रि का मेला (Shivratri Fair)- वैसे तो हिमाचल में शिवरात्रि के दिन अनेक स्थानों पर छोटे-छोटे मेले लगते हैं परन्तु **मण्डी** का शिवरात्रि मेला बहुत प्राचीन काल से चलता आ रहा है। इस मेले का सम्बन्ध मण्डी के राजा अबरसेन से है क्योंकि सर्वप्रथम उसने ही मण्डी में शिवलिंग की स्थापना की थी तथा तब से शिवरात्रि का मेला मण्डी में शुरू हुआ था। इस मेले में मण्डी के एक सौ देवता नगर में पधारते हैं तथा सभी देवताओं का उन के स्तर के अनुसार स्वागत किया जाता है।

3. व्यापारिक मेले (Trade Fairs)- व्यापारिक मेलों का उद्देश्य व्यापार करना मात्र ही नहीं होता है अपितु इन मेलों में भी संस्कृति के दर्शन देखने को मिलते हैं। ये व्यापार के माध्यम से लोगों को एक दूसरे से सम्पर्क बनाये रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन मेलों का आरम्भ राजाओं के अन्तर-रियासत क्रय-विक्रय व सोहार्द्रपूर्ण संबंध स्थापित करने के उद्देश्य से हुआ था। ये मेले-लवी (रामपुर), मंडी-बिलासपुर, हमीरपुर में आयोजित किये जाते है। इनमें नलवाड़ी के पशु मेले को ख्याति प्राप्त है।

(1) बिलासुपर का नलवाड़ी मेला (Nalwari Fair of Bilaspur)- यह मेला सामान्यत: 17 से 23 मार्च तक मनाया जाता है। यह पशु व्यापार मेला है, जो आस-पास के इलाके में पशु व्यापार विशेषकर बैलों के लिए प्रसिद्ध है। इस समय यह मेला राज्य स्तरीय मेले के रूप में मनाया जाता है। मेले का शुभारम्भ परम्परागत ढंग से 'खुंडी गाड़ने' के साथ होता है। 1962 तक यह मेला सांहडू मैदान में मनाया जाता रहा। इस मैदान के गोबिन्द सागर में डूबने के बाद यह मेला लूहणु मैदान में मनाया जाता है। खुंडी गाड़ने के साथ ही बैल पूजा होती है और मेला प्रारम्भ हो जाता है। पशु मेले के साथ-साथ कुछ दुकानें भी लगाई जाती हैं। साथ-ही साथ '**छिंज**' का आयोजन भी होता है जिसमें पंजाब, हरियाणा तथा हिमाचल के पहलवान भाग लेते हैं। अन्तिम कुश्ती जीतने वाले को चाँदी का गुर्ज दिया जाता है, जो हनुमान की गदा का प्रतीक है।

रात्रि को सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन स्कूल के मैदान में किया जाता है। प्रदेश के विभिन्न सांस्कृतिक दलों के अतिरिक्त देश के अन्य प्रदेशों के सांस्कृतिक दल भी भाग लेते हैं। नलवाड़ की प्रबंध व्यवस्था जिलाधीश, बिलासपुर की अध्यक्षता में बनी कमेटी द्वारा की जाती है।

मेले के दौरान पशुओं का क्रय-विक्रय चलता रहता है, जिससे नए-नए पशु आते हैं और पुराने बिकते जाते हैं। आय-पास के इलाकों के लोग बैलों की खरीद के लिए इस मेले का इंतज़ार करते रहते हैं। आस-पास के लोग बैलों के साथ पूरा परिवार लाकर मेले में रहते हैं और बिक्री के बाद या नई जोड़ी लेने के बाद वापस जाते हैं। बैलों तथा पशुओं को तरह-तरह से सजाकर मेले में लाया जाता है।

(2) सुन्दर नगर का नलवाड़ी मेला (Nalwari Fair of Sunder Nagar)- यह मेला 9 से 17 चैत्र (मार्च) तक मनाया जाता है। यह प्रदेश का सबसे बड़ा पशु मेला है और बिलासपुर नलवाड़ से कई गुणा बड़ा है। इस पशु मेले में ज़िला मंडी, कांगड़ा, बिलासपुर तथा हमीरपुर तक के कृषक बैल खरीदने आते हैं। यह समझा जाता है कि यह सबसे पुरातन पशु मेला है। बिलासपुर, भंगरोटू की नलवाड़ बाद में आरम्भ हुई। ऐसा भी विश्वास है कि राजा चेतसेन के समय राजा नल सुन्दर नगर (सुकेत) आए। राजा नल ने परामर्श दिया कि लोगों की आर्थिक स्थिति के सुधार के लिए पशु व्यापार मेला आरम्भ किया जाए। राजा चेतसेन ने यह मेला आरम्भ किया और इसका नाम नलवाड़ रखा।

यह मेला लिंडी खड्ड में एक किलोमीटर से ऊपर के क्षेत्र में मनाया जाता है। दूर-दूर तक खड्ड तथा आस-पास के क्षेत्रों में पशु-ही-पशु दिखाई देते हैं। मेले में छ:-सात दिनों तक खड्ड तथा खेतों में पशु-ही-पशु रहते हैं। पशु मेले

साथ-साथ अब सुन्दरनगर बाजार तथा आगे तक दुकानें सजती हैं। कृषि भवन के साथ ग्राउंड में रात्रि को सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं। नीचे खड्ड के पास कुश्ती का आयोजन भी किया जाता है। यह मेला भी स्थानीय कमेटी द्वारा आयोजित किया जाता है।

(3) **लवी का मेला** (Lavi Fair)- यह हिमाचल का एक व्यापारिक मेला है, जो 11 से 13 नवम्बर को रामपुर लगता है। इस मेले में बड़ी व्यापारिक मण्डी लगती हैं जिसमें ऊनी चादरों तथा शाल-दोशालों का अत्यधिक व्यापार होता है। इसलिए इसे लवी अर्थात ऊन का नाम दिया गया है। इस मेले में चिलगोजा, अखरोट, बादाम, काला जीरा आदि की बहुत बिक्री होती है। मेले में लोकनृत्य भी देखने को मिलते है, जिनमें माला नृत्य मेले का सर्वाधिक आकर्षण होता है।

4. **क्षेत्रीय मेले** (Regonal Fairs)- हिमाचल प्रदेश में गांव के लोग अपने क्षेत्र की संस्कृति को जीवित रखने के लिए इन मेलों का आयोजन करते हैं। ये मेले किसी न किसी रूप में इष्टदेव की स्तुति में आयोजित किये जाते हैं। इनमें 'जातरा' नामक मेले ग्रामीण रीति रिवाजों रहन-सहन के लिए प्रसिद्ध हैं। इन मेलों को देखने से आभास होता है कि गांव के लोग अभी भी अपनी संस्कृति को सुरक्षित रखे हुए हैं।

6. त्यौहार
(Festivals)

हिमाचल प्रदेश में मनाए जाने वाले त्यौहारों का प्रदेश में बदलती ऋतुओं से सीधा संबंध है। प्रत्येक नई ऋतु के आने पर कोई न कोई त्यौहार मनाया जाता है। इसके साथ कुछ त्यौहारों के फसल का आने से भी संबंध है। त्यौहारों की तिथियां देसी विक्रमी संवत् के महीनों के अनुसार गिनी जाती हैं। प्रत्येक महीने का पहला दिन संक्रांति कहकर पुकारा जाता है और कई लोग इस दिन व्रत रखते हैं। इसी प्रकार पूर्णिमा का दिन, जिस दिन चन्द्रमा पूर्ण रूपेण आकाश में दिखाई देता है, को भी शुभ माना जाता है। प्रत्येक त्यौहार के समय विवाहित लड़कियों को अपने घर बुलाना मां-बाप अपना कर्तव्य समझते हैं।

प्रदेश में मनाये जाने वाले त्यौहार निम्न हैं:-

1. **बैसाखी** (Baisakhi)-बिस्सु या **बिस्सा** (शिमला), **बीस** (किन्नौर), **बओसा** (बिलासपुर-कांगड़ा), **लिसू** (पांगी) नामों से ज्ञात यह बैसाखी का त्यौहार पहली बैसाख यानि 13 अप्रैल को लगभग सारे प्रदेश में मनाया जाता है। इस त्यौहार का संबंध रबी की फसल के आने से है। इस दिन **बिलासपुर** में मारकण्ड, **मंडी** में रिबालसर और पराशर झीलों, **तत्तापानी**, **शिमला** व **सिरमौर** के क्षेत्रों में गिरिगंगा, रेणुका झील आदि, **कांगड़ा** में बाणगंगा तथा अन्य तीर्थ स्थानों पर स्नान किया जाता है। इस दिन तीर्थ स्थानों पर मेलों का भी आयोजन होता है। तीर्थ स्थानों के अतिरिक्त गांवों में वैसे भी मेलों का आयोजन किया जाता है।

2. **नाहौले** (Nahole)-ज्येष्ठ मास की संक्रांति (13-14 मई) को निम्न भाग के क्षेत्रों में नाहौले नामक त्यौहार मनाया जाता है, जिसमें मीठे पकवान बनाकर खिलाये जाते हैं।

3. **छिंज** (Wrestling Bouts)-चैत्र के महीने में हिमाचल के निम्न भाग के क्षेत्रों में कुछ लोग अपनी इच्छा पूरी हो जाने पर या कुछ लोग सामूहिक तौर पर स्थानीय देवता जिसे लखदाता कहते हैं, को प्रसन्न करने के लिए छिंज का आयोजन करते हैं, जिसमें दूर-दूर से पहलवान बुलाए जाते हैं।

4. **चैत्र-संक्रांति** (Chetra Sankranti)-विक्रमी संवत् चैत्र मास की प्रथम तिथि से प्रारम्भ होता है। चैत्र की संक्रांति भी त्यौहार के रूप में मनाई जाती है ताकि नया वर्ष शुभ और उल्लासमय हो। हालांकि इस दिन कोई विशेष पकवान आदि तैयार नहीं किए जाते, फिर भी पूजा की जाती है। निम्न भाग के **हेसी** या **मंगलमुखी** और मध्य तथा ऊपरी भाग के **ढाकी** या **तुरी** जाति के लोग सारे चैत्र महीने में शहनाई और ढोलकी बजाते हुए घर-घर जाकर मन्दिरों के आहातों में नाच व गाकर मंगल गान करते हैं।

5. चतराली, चातरा या ढोलरू (Chatrali, Chatra or Dholru)-कुल्लू में इस त्यौहार को चतराली या च कहते हैं और चम्बा में भरमौर इलाके में इसे ढोलरू कहते हैं। चतराली में औरतें रात को इकट्ठी होकर नाच-गाना क हैं। ढोलरू में भी नृत्य का आयोजन किया जाता है।

6. चेरवाल (Cherwal)-यह मध्य व ऊपरी भाग के क्षेत्रों का त्यौहार है, जो भाद्रपद की संक्रांति (15 अगस्त) से आरम्भ होकर सारा महीना मनाया जाता है। ज़मीन से गोलाकार मिट्टी की तह निकालकर एक लकड़ी तख्ते पर रखी जाती है। एक इसी प्रकार की दूसरी छोटी तह निकालकर पहले वाली तह पर रखी जाती है और चारों ओर फूल व हरी घास सजाई जाती है। इसको चिड़ा कहते हैं। शाम को घर के सभी व्यक्ति धूप जलाकर और आदि देकर पूजा करते हैं। विशेष पकवान पकाए जाते हैं। बच्चे चिड़ा के गीत गाते हैं। भादों के अन्तिम दिन इसकी की जाती है और प्रथम आश्विन (सितम्बर) को इसे गोबर के ढेर पर फेंक दिया जाता है तथा बाद में उसे खेतों में जाया जाता है। कई लोग इसे पृथ्वी पूजा भी कहते हैं।

7. जागर या जगराता (Jagra or Jagrata)-वैसे जगराता साल के किसी भी दिन किसी भी देवता की स्मृति मनाया जा सकता है परन्तु भाद्रपद महीने में जगराता का विशेष महत्त्व है। जगराता किसी देवी-देवता के मन्दिर में देवता को घर में बुलाकर सम्पन्न किया जा सकता है। जगराता रखने वाले परिवार और अड़ोस-पड़ोस या गांव के व्य सारी रात जाग कर संबंधित देवी-देवता का कीर्तन गान करते हैं।

8. बरलाज (Warlaj)-दीवाली के दूसरे या तीसरे दिन बरलाज और उससे अगले दिन भैया-दूज का त्यौ मनाया जाता है जिसमें चेरवाल त्यौहार की तरह पकवान भी पकाए जाते हैं। बरलाज वाले दिन कारीगर कोई काम करते न ही ज़मींदार हल आदि चलाते हैं। इसे विश्वकर्मा दिवस भी कहते हैं। भैया-दूज वाले दिन बहनें भाइयों के म पर उनकी भलाई और समृद्धि की कामना करते हुए टीका लगाती हैं।

9. लोहड़ी या माघ (Lohri or Magha)-यह त्यौहार प्रथम माघ की संक्रांति को मनाया जाता है। निचले क्षे में इसको लोहड़ी या मकर-संक्रांति कहते हैं, मध्य भाग में माघी या साजा। इस दिन तीर्थ स्थानों पर स्नान करना माना जाता है। पकवान के रूप में चावल और दाल की खिचड़ी बनाई जाती है, जिसे घी या दही के साथ खाया जा है। गांव में अंगीठे जलाए जाते हैं जहां रात को लोग भजन कीर्तन गाते हैं। प्रातः वहीं से उठकर ठंडे पानी से स्न करने के बाद ही लोग घर जाते हैं। गांव के बच्चे, लड़के और लड़कियां अलग-अलग टोलियों में आठ दिन घर-घर जाकर लोहड़ी के गीत गाते हैं।

10. विजयदशमी या दशहरा (Vijaydashmi or Dushahra)-यह त्यौहार आश्विन के नवरात्रों के अन्त मनाया जाता है। यह त्यौहार भारत में विजय दशमी या दशहरा नाम से मनाया जाता है। यह हिमाचल प्रदेश में भी मना जाता है। त्यौहार से पहले नौ दिन तक रामलीला का आयोजन किया जाता है तथा दशमी के दिन रावण, मेघनाथ त कुम्भकर्ण के पुतले जलाए जाते हैं। देश भर में हिमाचल में कुल्लू के दशहरे का विशेष स्थान है। यह मेला सात दिन चलता है तथा देश विदेश से इसे देखने के लिए लोग कुल्लू आते हैं।

11. होली (Holi)-यह त्यौहार फाल्गुन पूर्णिमा को मनाया जाता है। लोग व्रत रखते हैं जो होली के जलाने के ब खोला जाता है। इस दिन बच्चे, बूढ़े, जवान स्त्री, पुरुष रंग और गुलाल की होली खेलते हैं और एक दूसरे पर रंग फैं हैं। इसके बारे में कई लोक-गाथाएं प्रचलित हैं।

12. शिवरात्रि (Shivratri)-फाल्गुन मास में कृष्ण पक्ष की चौदहवीं तिथि को मनाया जाने वाला शिवरात्रि त्यौहार हिमाचल प्रदेश में बहुत महत्त्व रखता है, क्योंकि शिवजी का हिमालय के पहाड़ों से सीधा संबंध माना जाता निम्न भाग के क्षेत्रों में इस दिन व्रत रखा जाता है और शिवजी की पिंडी की पूजा की जाती है। शिवालयों में कीर्तन कि जाते हैं और शिव के भजन गाए जाते हैं।

13. भारथ (Bharath)-निम्न भाग के क्षेत्रों में भादों के महीने और अन्य महीनों में भी भारथों का आयोजन कि जाता है। भारथ भी जगराते की भांति ही गाए जाते हैं। अन्तर इतना है कि भारथ में इस किस्म का गायन करने वाले

एक कुशल टोली होती है। उस टोली के सदस्य ही अपने अलग वाद्य यंत्रों जिनमें डौरू और थाली आदि का बजाना प्रमुख होते हैं, के साथ-साथ गाते हैं। भारथ गायन का आधार किसी वीर दैवीय पुरुष की गाथा होती है।

14. **फुलेच (Phulech)**-भादों के अन्त या आश्विन के शुरू के महीने में मनाया जाने वाला यह किन्नौर का प्रसिद्ध त्यौहार है और मुख्यत: यह फूलों का त्यौहार है। यह त्यौहार अलग-अलग तिथियों पर मनाया जाता है। इसे उख्यांक भी कहते हैं।

15. **सैर (Sair)**-यह त्यौहार प्रथम आश्विन (सितम्बर) को मनाया जाता है। इसमें भी पकवान पकाए जाते हैं। पिछली रात यानि भादो महीने की अन्तिम रात को नाई एक थाली में गलगल के खट्टे को मूर्ति के रूप में सजाकर उस पर फूल चढ़ाकर और दीपक जलाकर घर-घर ले जाते हैं। लोग उसके आगे शीश झुकाते हैं और पैसे चढ़ाते हैं। कई स्थानों पर इस दिन मेलों का आयोजन भी किया जाता है। यह त्यौहार बरसात की समाप्ति और आषाढ़ी फसल के आने की खुशी में मनाया जाता है।

16. **रक्षा बंधन, रखड़ी (बिलासपुर), रक्षपुण्या (शिमला), सलूनु (मंडी-सिरमौर)** (Rakshabandhan or Rakhi)-यह त्यौहार सावन मास में पड़ने वाली पूर्णिमा को मनाया जाता है। इस दिन बहनें अपने भाइयों को टीका लगाकर राखी बांधती हैं।

17. **खोहड़ी (Khohri)**-लोहड़ी के दूसरे दिन खोहड़ी मनाई जाती है, जिसमें कई स्थानों पर मेले लगाए जाते हैं। इस दिन कुंवारी लड़कियों के कान और नाक छेदना अच्छा समझा जाता है। इस दिन सरसों का साग बनाकर खाया जाना अच्छा समझा जाता है। कारीगर लोग इस दिन कोई काम नहीं करते।

18. **नाग पंचमी (Nag Panchmi)**-यह श्रावण मास की शुक्ल पंचमी को मनाया जाता है। यह नागों की पूजा करके उन्हें प्रसन्न करने का त्यौहार है। नाग पंचमी के दिन "बामी" (दीमक द्वारा जमीन पर तैयार किया गया पर्वतनुमा घर) में नागों के लिए दूध, कुंगु और फूल डाले जाते हैं क्योंकि बामी में नागों का निवास माना जाता है।

19. **श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (Shri Krishna Janamashtami)**-यह त्यौहार भादों की अष्टमी को श्री कृष्ण के जन्म दिवस पर मनाया जाता है। श्रीकृष्ण की बाल मूर्ति को पंघूड़े में झूलाकर उसकी पूजा की जाती है। व्रत और जगराता रखा जाता है। सारी रात श्रीकृष्ण का कीर्तन किया जाता है।

20. **नवाला (Nawala)**-शिव पूजा के रूप में मनाया जाने वाला गद्दी कुनबे के लोगों का यह प्रसिद्ध त्यौहार है। यह पारिवारिक त्यौहार है, जो परिवार के प्रत्येक सदस्य को जीवन में एक बार मनाना जरूरी है।

21. **हरितालिका**-यह त्यौहार भादों महीने में कृष्ण पक्ष की तृतीया को मनाया जाता है। यह स्त्रियों का त्यौहार है जिसमें स्त्रियां शिवजी-पार्वती और पक्षियों की मिट्टी की मूर्तियां बनाकर उन्हें सजाकर व रंग चढ़ाकर पूजती हैं। यह व्रत पतियों की रक्षा के लिए किया जाता है।

22. **निर्जला एकादशी (Nirjala Ekadashi)**-यह त्योहार ज्येष्ठ महीने की शुक्ला एकादशी को मनाया जाता है। जिसमें एकादशी के सूर्योदय से द्वाद्वशी के सूर्यास्त तक अन्न या जल भी ग्रहण नहीं किया जाता जो गर्मी के दिनों में कड़ी तपस्या है। यह व्रत ऋषि व्यास ने भीम को बताया था क्योंकि वह अपने भाइयों और मां की भांति हर एकादशी को व्रत नहीं कर सकता था।

इसके अतिरिक्त चंदनषष्ठी, जिसमें भी व्रत रखे जाते हैं, करवा चौथ जिसमें स्त्रियां भी अपने पति की भलाई हेतु व्रत रखती हैं और पति को करवा यानि घी, शक्कर और अखरोट आदि फल खिलाती हैं।

23. **भुंडा, शान्द भोज (Bhunda Shand and Bhoj)**-भुंडा में निर्मण्ड (कुल्लू) का भुंडा अति प्रसिद्ध है। यह नरबेध यज्ञ की तरह नरबलि का उत्सव है। सरकार ने अब इस उत्सव में आदमी को शामिल किया जाना बन्द कर दिया है और आदमी के स्थान पर बकरा बिठाया जाता है परन्तु 20वीं सदी के आरम्भ तक भुंडा त्यौहार में आदमी की बलि दी जाती थी। शांद का संबंध समृद्धि से है। यह उत्सव खुंड खश हर बारह साल के बाद मनाते हैं। यह उत्सव गांवों में पहाड़ों की चोटियों पर मनाया जाता है जिसमें गांव के देवता को पालकी में लाकर झुलाया जाता है और बकरे आदि की बलि दी जाती है। सभी दर्शकों और गांव वालों के संबंधियों का स्वागत किया जाता है तथा चार-पांच दिनों तक उन्हें धाम खिलाई जाती है। भोज भी शान्द की भांति का ही उत्सव है, जिसे कोली लोग ही मानते हैं।

7. हिमाचल के लोक-गीत

(Folk Songs of Himachal)

हिमाचल प्रदेश के लोक-गीत अत्यन्त मधुर तथा आनन्द-दायक हैं। इन लोक-गीतों का विषय सामान्य जीवन से लेकर इतिहास, धर्म, पुराण आदि सभी से संबंधित हो सकता है। परन्तु प्राय: गाए जाने वाले लोक-गीत, प्रेम-कथाओं, वीर-गाथाओं, देव-स्तुतियों, ऋतु-प्रभात और सामाजिक बंधनों, सामाजिक उत्सवों आदि से सम्बन्धित हैं। हर्ष और वेदना दोनों की इनमें अनुभूति होती है। ये लोक-गीत **एकल, युगल** या **सामूहिक** रूप से गाए जाने वाले हैं। इनके रचयिता कोई गायन विशेषज्ञ नहीं बल्कि ये किन्हीं सरस हृदय से निकली स्वच्छन्द लयात्मक आवाज है। किसी विशेष उत्सव, त्यौहार या मेले में गाते समय स्थानीय वाद्य यंत्रों का गायन के साथ प्रयोग किया जा सकता है।

हिमाचल प्रदेश में जन्म तथा विवाह सम्बन्धी लोक गीत अति प्रसिद्ध हैं। जन्म, नामकरण, मुण्डन आदि संस्कारों के समय गाए जाने वाले गीतों को **'बिहाइयां'** कहते हैं। कन्या के विवाह के समय गाये जाने वाले लोक गीतों को **'सुहाग'** कहते हैं। विवाह की रस्म पूरी होने के बाद विदाई गीत गाये जाते हैं। कांगड़ा के विवाह सम्बन्धी गीतों को **घोड़ी** कहा जाता है। विवाह सम्बन्धी कुछ अन्य गीतों को **'सेठणियां'** भी कहते हैं।

हिमाचल में श्रृंगार रस के लोकगीतों का भी विशेष महत्त्व है। कुल्लू और कांगड़ा के प्रेम गीत 'कुंजू-चंचलो' हिमाचल में उसी प्रकार से विख्यात हैं, जिस प्रकार हीर-रांझा के प्रेम गीत हैं। ये गीत प्रेम की प्रबल भावनाओं से ओत-प्रोत हैं। सिरमौर के श्रृंगार रस से भरे **'झूरीगीत'** कोमल भावनाओं को प्रस्तुत करते हैं। झूरी पहाड़ी भाषा के झूर शब्द का स्त्रीलिंग है जिसका अर्थ अनुभव करना होता है। वास्तव में 'झूरी गीत' विरह गीत होते हैं। मण्डी में **'सिराज की दासी'** नामक लोकगीत प्रसिद्ध है।

सावन के महीने में बिलासपुर में झूलों के गीत गाये जाते हैं तथा घर-घर में झूले डाले जाते हैं। इन झूलों के गीतों को **'पींगा दे गीत'** कहा जाता है। **'छींजे'** हिमाचल का एक प्रसिद्ध ऋतु गीत है। चैत्रमास में वर्षा के आरम्भ होने पर यह गीत मण्डी के घर-घर में गूंज उठते हैं। छींजे चैत्र संक्रान्ति से लेकर मास के अन्त तक गाई जाती हैं।

बिलासपुर की गंगी जो युवक-युवतियों के मध्य युगल-गीत के रूप में गाई जाती है और ''गम्भरी'', 'बालो' तथा 'झंन्युटी' आदि प्रसिद्ध लोक-गीत हैं। सिरमौर का **''हार''** और बिलासपुर, कांगड़ा व मंडी का **'झेड़ा'** ऐसे लोक गीत हैं जिनमें वीर पुरुषों की गाथा का गायन किया जाता है। किन्नौर और लाहौल-स्पीति के अपने लोक-गीत हैं, जिनका अधिकतर रूप समूहगान में ही देखने को मिलता है।

8. हिमाचल के लोक-नृत्य

(Folk Dances of Himachal)

हिमाचल प्रदेश में लोक-नृत्यों को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है-**एकांकी** और **सामूहिक**।

एकांकी नृत्य में निम्न भाग का **'गिद्धा'** और सिरमौर, शिमला व सोलन का **''मुजरा''** शामिल किए जा सकते हैं। इस वर्ग के अन्य नृत्य **''प्रेक्षणी'', ''नतरांभ'' और ''चेड़ी''** आदि हैं। इस प्रकार के नृत्य में भाग लेने वाले गोलाकार में बैठ जाते हैं। वे गाना गाते रहते हैं और स्थानीय वाद्य यंत्रों को भी बजाते रहते हैं। बीच में एक व्यक्ति उठ कर नाचना आरम्भ करके नाचता रहता है, उसके बैठने पर दूसरा नाचना शुरू कर देता है और कई बार दो या तीन भी इकट्ठे नृत्य करते हैं। **गिद्धा** स्त्रियों का नृत्य है। यह नृत्य कीर्तन, विवाह या अन्य उत्सवों के समय किया जाता है।

'सामूहिक नृत्य' हिमाचल प्रदेश के जन-जीवन का प्रमुख अंग है। नृत्य का स्थान घर का आंगन या गांव का प्रमुख खुला स्थान कोई भी हो सकता है। निम्न भाग के क्षेत्रों में सामूहिक नृत्यों में स्त्रियां अलग और पुरुष अलग भाग लेते हैं परन्तु अन्य क्षेत्रों में वे सब इकट्ठे एक ही मंच पर नाचते हैं। गद्दियों में भी पुरुष और स्त्रियां प्रायः अलग-अलग नाचते हैं।

हिमाचल प्रदेश में निम्नलिखित लोक नृत्य देखने को मिलते हैं :-

(1) नाटी (Naati)-हिमाचल के मध्य क्षेत्रों का देश प्रसिद्ध सामूहिक नृत्य नाटी है, जिसे शिमला क्षेत्र में **''गी''** या **''माला''** भी कहते हैं। नाटी में स्त्री-पुरुष, बच्चे-बूढ़े सभी भाग ले सकते हैं। सभी एक-दूसरे का हाथ पकड़कर पैर आगे पीछे रखते हुए और गाने की लय के अनुसार शरीर के अन्य अंगों को हिलाते हुए नाचते रहते हैं। वाद्य-यंत्र के बिना भी नाटी चल सकती है। जो जब चाहे नाटी में शामिल हो सकता है जब चाहे, छोड़ कर बैठ सकता है। खुले स्थान में लकड़ी का अंगीठा जला दिया जाता है और उसके चारों ओर नृत्य चलता रहता है। दिन को भी नाटी नृत्य चलता है। क्षेत्र और अभिनय के लिहाज से नाटी के लुड्डी, ढीली-नाटी, फटी-नाटी, देहरी-नाटी, बुशैहरी-नाटी, बाहडु-नाटी, कड़थी-नाटी, लाहौली, बखैली, खरैत, गड़भी, दयोखल और जोण-नाटी आदि प्रमुख नाटी हैं।

(2) कड़थी (Karthi)-इनमें कड़थी नाटी कुल्लू की मशहूर नाटी है, जो चांदनी रात में खरीफ फसल के बाद खुले में आयोजित की जाती है। पहले इसका आरम्भ धीमे-धीमे किया जाता है और पूर्ण गति प्राप्त करने पर स्त्रियां अपना-अपना नृत्य साथी चुनकर नाटी में प्राण डालकर आगे नाटी को चलाती हैं।

(3) घुघटी (Ghughti)-यह लोक-नृत्य किशोरों के मध्य क्षेत्रों में लोकप्रिय है। इसमें नर्तक एक दूसरे के पीछे खड़े होते हैं। पीछे वाले आगे वाले के कोट को नीचे से एक किनारे से पकड़ते हैं। टोली का नेता **'घुघटी'** गीत गाता है और टेढ़े-मेढ़े तरीके से आगे की ओर झुकता है। शेष उसका अनुसरण करते हैं।

(4) बिड़सु-यह शिमला के ऊपरी भाग और सिरमौर के पूर्वी भाग का प्रसिद्ध लोक-नृत्य है। यह नृत्य प्रायः मेलों के समय खुंडों द्वारा किया जाता है। खुंड, खशों की एक बलप्रिय टोली है। जब वे किसी मेले में जाते हैं तो इकट्ठे होकर रास्ते में नाचते हैं। इनके हाथ में तलवारें, डंगरे, लाठी खुखरी या रूमाल होते हैं। साथ में ढोल और रणसिंगा बजाते चलते हैं। रात के समय नर्तक यह नृत्य करते समय हाथ में मशालें लेते हैं। जब वे मेले में पहुंचते हैं तो थोड़ी देर तक नृत्य करके बिछुड़ जाते हैं। शाम को वापिसी पर फिर नृत्य करते हुए वापस आते हैं।

(5) बुड़ाह नृत्य (Burah Dance)-यह सिरमौर में किया जाने वाला प्रसिद्ध लोक-नृत्य है जो दीवाली या अन्य उत्सवों के समय 10-15 आदमियों की टोली द्वारा सामूहिक तौर पर किया जाता है। 4-5 आदमी हुड़की (वाद्य यंत्र) बजाते हैं और शेष डांगरों को हाथ में लिये गीत गाते हुये नाच करते हैं। इन गीतों में वीर-गाथाओं का वर्णन होता है, जिनमें सिद्ध और उसके गढ़ का गीत अधिक लोकप्रिय है। इस नृत्य में दाएं से बाएं तेज़ी से नाचा जाता है। मर्द पहले चलते हैं और औरतें उनका अनुसरण करती हैं। 'रासा और क्रासा' सिरमौर के अन्य प्रसिद्ध लोक-नृत्य हैं, जो नाटी से मिलते-जुलते हैं।

(6) डांगी व डेपक (Dangi or Depak)-ये चम्बा के छतराड़ी इलाके के लोक-नृत्य हैं। डांगी नाच गद्दी औरतों का सामूहिक नृत्य है, जो ''जातरा'' या मेलों में किया जाता है। डेपक नृत्य तब किया जाता है, जब गद्दी अपनी भेड़-बकरियां लेकर कांगड़ा की ओर चलती हैं।

(7) पांगी का फूल-यात्रा नृत्य-यह नृत्य पांगी की औरतों द्वारा पहला हिमपात होने से पूर्व किया जाता है। नृत्य ''घरेई'' चाल से आरम्भ होता है, जबकि नर्तक एक दूसरे को काटती हुई पंक्तियों में नृत्य-स्थान में प्रवेश करते हैं और उसके बाद बाजू में बाजू डालकर गोलाकार में नाचना शुरू करते हैं। घुटनों को झुकाते हुये एक कदम आगे लिया जाता है और एक कदम किये जाते हैं। किन्नौर की किन्नरों की भूमि होने के कारण नृत्यों का घर ही कहा जाता है। यहां के नृत्यों में बौद्ध और हिन्दू दोनों का समावेश हुआ है।

(8) कायांग-यह किन्नौरों का प्रसिद्ध लोक नृत्य है। इसमें मर्द और औरतें अर्द्ध-वृत्त बनाते हैं और बाजकी (यंत्र बजाने वाले) मध्य में खड़े होते हैं। पुरुषों की टोली का एक वृद्ध पुरुष और स्त्रियों की टोली की एक वृद्ध स्त्री नेतृत्व करते हैं और बाद्य द्वारा निश्चित की गई धुनि के अनुसार कदमों की चाल रखते हैं। जैसे ही नृत्य में गति आती जाती है, पूरा वृत्त बना लिया जाता है और प्रत्येक व्यक्ति अपने से तीसरे का हाथ पकड़ता है। टोली का नेता ''हो'' ''हो'' कहता है। जिस पर सारे आगे को आधा झुकते हैं टोली के दो आदमी लोक-गीत गाते हैं, जिनका शेष सभी अनुसरण करते हैं।

(9) बाक्यांग (Bakayand)-यह किन्नौर का दूसरी किस्म का नृत्य है जिसमें नर्तक एक दूसरे के सामने दो या

तीन पंक्तियां बनाते हैं। एक पंक्ति के नर्तक लयात्मक तरीके से नाचते हुए पीछे हटते हैं और सामने की पंक्ति के आगे आते हैं। बारी-बारी यह क्रम दोहराया जाता है। यह नृत्य आमतौर पर स्त्रियों द्वारा किया जाता है।

(10) बानांग्चयु (Banyangchu) -यह किन्नौर का तीसरी प्रकार का नृत्य है, जो पुरुषों द्वारा किया जाता है। इसमें स्वतंत्र रूप से कदम चलाये जाते हैं। नर्तक बाजकियों के चारों ओर गोलकार में नाचते हैं। औरतें गीत गाती हैं। किन्नौर के अन्य नृत्य पनास, चम्पा, चामिक, रवार, डेयांग व जोगसन आदि हैं।

(11) दानव-नृत्य (Devil Dance)-यह लाहौल-स्पीति व ऊपरी किन्नौर में लामाओं द्वारा विशेष अवसरों पर गुफाओं में किया जाने वाला नृत्य है। **लोसर** (नव-वर्ष), **दाछांग, ''थोंग-थोंग''** और **''नमगान''** आदि उत्सवों पर लामा गुफाओं के आंगन में **''वाग''** (मुखौटे) पहन कर यह नृत्य करते हैं। इसमें वाद्य-यंत्र बजाने वाले भी लामा ही होते हैं। यह नृत्य देवताओं की दानवों पर विजय को दर्शाता है।

9. हिमाचल के लोक-नाट्य
(Folk Acts of Himachal)

पहाड़ी ग्राम्य-जीवन में लोक नाट्य का भी विशेष महत्त्व है। यह भी लोगों के मनोरंजन का साधन है। यद्यपि अब रामलीला और कृष्णलीला आदि नाटकों ने हमारे लोक-नाट्य में प्रवेश कर लिया है परन्तु इसका वास्तविक स्वरूप कुछ और तथा अति-प्राचीन है। इन लोक-नाट्यों का आयोजन दीवाली के आदि से लेकर बैशाखी के आरम्भ तक रात को किया जाता है, क्योंकि यही समय है जब लोग फसल आदि के काम से निवृत्त होकर मनोरंजन के लिए समय निकाल सकते हैं।

हिमाचल प्रदेश के प्रसिद्ध लोक-नाट्य निम्नलिखित हैं:-

(1) करियाला या करियाड़ा (Kariyala)-यह मध्य भाग के **शिमला** आदि क्षेत्रों का मुख्य लोक-नृत्य है। इस नाट्य को खेलने वाले, बुलावा मिलने पर गांव में खुले स्थान में कहीं भी इसका प्रदर्शन शुरू कर देते हैं। इसे करियाला लोक-नाट्य के बिलासपुर में स्वांग, मंडी में बांठड़ा और कांगड़ा में भगतु तथा इसके कलाकारों को क्रमश: **करियालची, स्वांगची, बांटड़िए** और **भगतिए** कहा जाता है। इनके पास अपने वस्त्र होते हैं जिनका समय-समय पर पात्रों की भूमिका के अनुसार प्रयोग किया जाता है। अपने वाद्य-यंत्र होते हैं। करियाला के मंच को अखाड़ा कहते हैं। अखाड़े में धूनी (आग का अंगीठा) जलाई जाती है और आमतौर पर यह ऐसे स्थान पर चुना जाता है, जहां लोग कलाकारों को अच्छी प्रकार देख सकें। असली नाटक शुरू होने से पहले बाजकी जिनके पास **ढोल, नगाड़ा, डामण, डौरु, कानल** और **रणसिंगा** आदि होते हैं, अपना स्थान ग्रहण कर लेते हैं। किसी कमरे को या बाहर पर्दे लगाकर कलाकारों के लिए कपड़े आदि बदलने के लिए स्थान बना लिया जाता है। सबसे पहले एक कलाकार स्त्री के रूप में जिसे चन्द्रावली कहते हैं और दूसरा सिद्धा के रूप में बड़े ठाठ-बाठ से पर्दे के पीछे से दर्शकों के मध्य होते हुए अखाड़े में पहुंचते हैं। ये दोनों धूनी के चारों ओर नाचते हैं इसे **अखाड़ा बांधना** कहा जाता है। इसके बाद वे दोनों पर्दे के पीछे चले जाते हैं। इसके बाद पहला स्वांग किया जाता है जो प्रथा-अनुसार साधु का स्वांग होता है जिसमें आमतौर पर साधुओं का उपहास उड़ाया जाता है। इसके बाद अन्य स्वांग दिखाए जाते हैं। इन स्वांगों का मुख्य उद्देश्य यद्यपि मनोरंजन करना ही होता है। स्वांगचियों का प्रत्येक शब्द हंसाने वाला होता है परन्तु मनोरंजन के साथ-साथ समाज के ठेकेदारों यानि साधुओं, पंडितों, बाबू-लोगों यानि नौकरी करने वालों (मेम और साहब) और साहूकारों का व्यंग्यात्मक ढंग से चित्रण किया जाता है।

बिलासपुर का स्वांग, मंडी का बांउड़ा और कांगड़ा का भगतु करियाला से बिल्कुल मिलते हैं अलबत्ता समय और क्षेत्र के अनुसार उनमें कुछ परिवर्तन कर लिये जाते हैं।

(2) बुड़ा और सीह (Bura and Sih)-यह जुब्बल और रोहड़ू क्षेत्र का प्रसिद्ध लोक-नाट्य है, जिसके कलाकार वहां प्रचलित किसी राणा के कार्यकलापों संबंधी गाथा को प्रदर्शित करते हैं। इसमें नृत्य-नाटिका और गायन-नाटिका दोनों का मिश्रण होता है।

(3) रावल (Rawal)-यह भी मध्य भाग के क्षेत्रों का लोक-नाटक है जिसमें एक लड़की की कहानी दर्शायी

जाती है, जो किसी अनजाने व्यक्ति से प्रेम करती है। अपने बाप के इन्कार करने पर भी वह उस व्यक्ति के साथ विवाह कर लेती है परन्तु वह कुछ दिनों के बाद उसे छोड़ कर भाग जाता है। उसे बाप के घर लौटना पड़ता है। अन्त में वह आत्म-हत्या कर लेती है।

(4) **दोगानों के नाट्य** (Duel Acts)-इसके अतिरिक्त कई दोगानों जैसे कि फुलमु-रांझु, कुंजु-चंचलो, गंगी आदि को मंच पर नाटक के रूप में दर्शाया जाता है। एक व्यक्ति पुरुष का लिबास पहनकर रांझु-कुंजु या लड़के का अभिनय करता है और दूसरा स्त्री का लिबास पहनकर फुलमु-चंचलो या गंगी आदि का। इसके अतिरिक्त विवाह आदि के समय निम्न भाग के क्षेत्रों में जिस दिन दुल्हा बारात लेकर चला जाता है, स्त्रियां पीछे से विवाह वालों के घर नृत्य और गायन करती हैं। साथ में कई लड़कियां/स्त्रियां पुरुषों का लिबास पहन कर आपस में हास्य-नाटकों का प्रदर्शन करती हैं। उनका उद्देश्य मनोरंजन करना ही होता है।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न
(Important Questions)

1. हिमाचल प्रदेश के सामाजिक जीवन एवं रीति रिवाज़ों का विश्लेषण कीजिए।
   Analyse the social life and rituals of Himachal Pradesh.
2. हिमाचल प्रदेश की प्रमुख पूजा पद्धतियों का वर्णन करो।
   Discuss the main methods of worship of Himachal Pradesh.
3. हिमाचल प्रदेश के मेले एवं त्योहारों की विवेचना कीजिए।
   Discuss the fairs and festivals of Himachal Pradesh.
4. हिमाचल प्रदेश के लोक गीत, लोक नृत्य व लोक नाट्य की संक्षिप्त विवेचना कीजिए।
   Dicuss the folk songs, folk dances and folk dramas of Himachal Pradesh.

13 हिमाचल प्रदेश की अर्थव्यवस्था (ECONOMY OF HIMACHAL PRADESH)

भूमिका (Introduction)

हिमाचल प्रदेश एक कृषि प्रधान राज्य है। सन् 1948 में हिमाचल बनने से पूर्व हिमाचल के लोगों के आर्थिक विकास और समाज कल्याण के लिए कम ध्यान दिया जाता था। उस समय रियासतें आर्थिक रूप से सुदृढ़ नहीं थीं। रियासतों के शासक अपने क्षेत्रों का विकास करने की इच्छा शक्ति भी नहीं रखते थे। प्रजा के प्रति राजाओं का व्यवहार प्राय: नकारात्मक था और प्रजा असहाय होती थी। परिवहन के साधन न के बराबर थे। अत: कृषक खेतों में पैदा किए गए अनाजों, सब्जियों, फलों व अन्य वस्तुओं को बाज़ार तक नहीं पहुंचा पाते थे। उनकी आर्थिक स्थिति दयनीय थी। अंग्रेज़ों ने भी अपने अधीन क्षेत्रों की ओर ध्यान नहीं दिया। लोग अपने गुजारे के लिए केवल ज़मीन पर ही निर्भर रहते थे। लोगों के पास थोड़ी बहुत उपजाऊ भूमि ही होती थी। केवल अफीम ही एक मात्र नकदी फसल होती थी। उपजाऊ और अच्छी किस्म की भूमि राजाओं तथा उनके रिश्तेदारों के पास होती थी। किन्नौर के लोगों का ही तिब्बत के साथ कुछ व्यापारिक सम्बन्ध था। कांगड़ा, कुल्लू, लाहौल व स्पीति पंजाब के पहाड़ी क्षेत्र और शिमला के पहाड़ी क्षेत्रो जो सीधे रूप में अंग्रेज़ों के अधीन थे, पंजाब के अन्य क्षेत्रों से बहुत पिछड़े हुए थे। प्रथम नवम्बर 1966 को हिमाचल में विलय के बाद ही इन क्षेत्रों का विकास आरम्भ हुआ। हिमाचल के गठन के पश्चात् प्रदेश के लोगों और सरकार ने अपनी तथा प्रदेश की आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाने के लिए प्रयास आरम्भ किए। आज हिमाचल की आर्थिक अवस्था कृषि, बागवानी, जल विद्युत्, सड़कों और परिवहन पर पूर्णतया आधारित है।

हिमाचल में कृषि (Agriculture in Himachal)

कृषि क्षेत्र (Agriculture Area)-हिमाचल प्रदेश में आर्थिक उन्नति का मूल आधार **कृषि** है। यहां 897403 **हैक्टेयर भूमि** पर फसलें उगाई जाती हैं। यह हिमाचल के कुल क्षेत्रफल का 16 प्रतिशत है। **परती (बंजर)** भूमि 72575 हैक्टेयर तथा **शिमला ज़िला** में 88476 हैक्टेयर है, जो हिमाचल प्रदेश के कुल क्षेत्रफल का **कांगड़ा** में 3.97 प्रतिशत, **मण्डी** 2.87 में प्रतिशत तथा **शिमला** में 1.58 प्रतिशत बनता है। हिमाचल प्रदेश में 70 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या कृषि पर निर्भर करती है। यहां 76.6 हैक्टेयर भूमि कृषि योग्य है।

कृषि जलवायु पर आधारित हिमाचल का विभाजन
(Distribution of Himachal on Agro Climatatic Conditions)

कृषि-जलवायु के आधार पर प्रदेश को चार खण्डों में विभक्त किया जा सकता है-

1. शिवालिक पहाड़ी खण्ड (Shivalik Hill Zone)-इस खण्ड में तलहटी और घाटी क्षेत्र, जो समुद्र तल से लगभग 800 मीटर तक की ऊंचाई पर है। इस के क्षेत्र में ऊना, हमीरपुर, बिलासपुर, कांगड़ा, सोलन, चम्बा आदि के जिले शामिल हैं। यहां की जलवायु अर्द्ध-ऊष्ण है। इस खण्ड में प्रदेश का 35 प्रतिशत भाग शामिल है। इसके कुल क्षेत्र में से 33% कृषि योग्य क्षेत्र आता है। भूमि दोमट किस्म की है। भौगोलिक बनावट के कारण इस क्षेत्र में जंगल कहीं-कहीं ही उगते हैं। वार्षिक वर्षा लगभग 150 सैं.मी. तक होती है। फसलें अच्छी नहीं होतीं। सिंचाई की सुविधा नालों से पानी को मशीनों द्वारा उठाकर अथवा कुओं और ट्यूबवैलों तथा टैंकों द्वारा उपलब्ध कराई गई है। इस क्षेत्र की प्रमुख फसलें गेहूं, मक्की, धान, चना, गन्ना, सरसों, आलू, अन्य सब्जियां आदि हैं और संगतरा, आम, अमरूद, लीची और नींबू प्रजाति के फल आदि उगाए जाते हैं।

2. मध्य पहाड़ी खण्ड (Mid Hill Zone)-समुद्र तल से 800 मीटर से लेकर 1600 मीटर तक की ऊंचाई वाला क्षेत्र समशीतोष्ण जलवायु का है। इस क्षेत्र में पालमपुर, रामपुर, शिमला तथा मंडी, सोलन, कुल्लू और चम्बा के कुछ भाग शामिल हैं। यहां वार्षिक वर्षा लगभग 180 सें.मी. तक होती है। मिट्टी दोमट और चिकनी है। इस खण्ड में पूरे राज्य का लगभग 32 प्रतिशत भाग शामिल है तथा लगभग 53 प्रतिशत कृषि योग्य क्षेत्र है। सिंचाई नालों, खड्डों, कूहलों तथा टैंकों द्वारा की जाती है। यहां ज़मीन का बड़ा हिस्सा घासनियों का है। ये घासनियां प्रायः उत्तरी और दक्षिणी ढलानों पर ही होती हैं। वन प्रायः उत्तरी-पूर्वी ढलानों पर पाए जाते हैं। घास भूमियों पर अच्छी किस्म की घास नहीं होती। गर्मियों में सूखे की स्थिति बनी रहती है। मुख्य फसलें मक्की, गेहूँ, माश, जौ, सेम और धान आदि होती हैं। यह खण्ड नकदी फसलें पैदा करने के लिए उपयुक्त है। बेमौसमी सब्ज़ियां, अदरक और फलों में नाशपती, पलम, खुर्मानी और अखरोट आदि प्रमुख हैं। इस क्षेत्र में उच्च किस्म के गोभी, मूली के बीज तैयार किए जाते हैं। यहां के खड्ड और नाले भूमि की उपजाऊ शक्ति को कमज़ोर बना देते हैं।

3. ऊपरी पहाड़ी खण्ड (High Hill Zone)-इस खण्ड में समुद्र तल से 1600 मीटर से अधिक ऊंचाई क्षेत्र शामिल हैं, जिसमें उत्तर-पश्चिम हिमाचल क्षेत्र शामिल है। यहां की जलवायु सीलन भरे तापमान वाली है। शंकु आकार की पत्तियों वाले वृक्षों के जंगल पाये जाते हैं। मिट्टी अधिकतर चिकनापन लिए हुए है। इस खण्ड में हिमाचल के कुल भौगोलिक क्षेत्र का ही लगभग 25 प्रतिशत भाग शामिल है, जिनमें से केवल 11 प्रतिशत भाग पर ही कृषि की जाती है। वार्षिक वर्षा 100 से 150 सैं.मी. होती है।

कृषि योग्य क्षेत्र पहाड़ों की ऊंचाइयों पर स्थित है। यहां सिंचाई के साधनों की कमी है। यहां छोटे नालों, खड्डों आदि से सिंचाई की जाती है। मुख्यतः गेहूं, जौ, मटर व दालें आदि फसलें होती हैं। कहीं-कहीं मक्की भी पैदा की जाती है। यह क्षेत्र अच्छी किस्म के बीज आलू, सब्ज़ियों, सेब, आड़ू, खुर्मानी और नाशपाती जैसे फलों की पैदावार के लिए उपयुक्त है।

4. ठण्डा शुष्क खण्ड (Cold Dry Zone)-इसके अन्तर्गत लाहौल-स्पीति, किन्नौर ज़िले तथा चम्बा ज़िले की पांगी तहसील आती हैं, जो समुद्र तल से लगभग 2700 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। इस खण्ड में प्रदेश के कुल क्षेत्र का 6 प्रतिशत भाग शामिल है और 3 प्रतिशत ही कृषि योग्य है। इस क्षेत्र में लाहौल-स्पीति, किन्नौर, पांगी आदि शामिल हैं। पूरा क्षेत्र शुष्क जलवायु वाला है। वार्षिक वर्षा 20 सैं.मी. तथा गर्मियों के मौसम में होती है। सर्दियों में यहां भारी हिमपात होता है। इस खण्ड में अच्छी किस्म के बीज आलू, सेब, अंगूर, बादाम, अखरोट, खुर्मानी आदि की काश्त की जाती है। स्वयं रोपित पेड़-पौधे प्रायः पानी के नज़दीक ही मिलते हैं, जिनका उपयोग जलाने और पशुओं के चारे के लिए किया जाता है।

हिमाचल में सिंचाई और फसल उगाने के ढंग
(Irrigation and Methods of Growing Crops)

(1) सिंचाई व्यवस्था-(Irrigation)-कृषि के क्षेत्र में सिंचाई का अपना विशेष महत्त्व होता है। बिना सिंचाई की सुविधा के फसलों को पैदा करना किसानों के लिए पूर्ण रूप से असमर्थ है। कृषि को नये-नये वैज्ञानिक ढंगों से किया

जा रहा है। रासायनिक खादें प्रयोग में लाई जा रही हैं। नये बीज बोये जाते हैं। हिमाचल प्रदेश में प्रायः सीढ़ीनुमा, ढलानदार व छोटे खेत पाए जाते हैं। अतः सिंचाई की परियोजनाएं सीमित हैं। ऐसी स्थिति में छोटी सिंचाई योजनाएं ही सफल हैं। लगभग 95 प्रतिशत क्षेत्र की कूहलों द्वारा सिंचाई की जाती है। कूहलों को पहाड़ के साथ-साथ बनाया जाता है, जिनके माध्यम से नालों आदि के पानी को खेतों तक पहुंचाया जाता है। लाहौल-स्पीति में पूरे क्षेत्र को बीजने से पूर्व सींचा जाता है। चम्बा ज़िले में पांगी तहसील और किन्नौर ज़िले के क्षेत्रों में भी ऐसा ही किया जाता है। बिना सिंचाई के यहां घास भी नहीं उग पाती।

हिमाचल प्रदेश में कृषि को उन्नतशील बनाने के आश्य से अधिकतर **भूमि को सिंचाई** के अधीन लाया गया है। **यहां नहरों से 4390** हैक्टेयर, **जल भण्डारण** से 236 हैक्टेयर, **नलकूपों से** 15752 हैक्टेयर तथा **अन्य स्रोतों से** 73172 हैक्टेयर भूमि की सिंचाई की जाती है। हिमाचल प्रदेश में सिंचाई के लिए चलाई जा रही परियोजनाओं में **शाहनहर**-कांगड़ा तथा ऊना, **बल्ह-घाटी**-मण्डी, **सिद्धाता**-कांगड़ा, **चनर**-बिलासपुर, **फिन्ना सिंह**-(नूरपूर) कांगड़ा, **कृपाल चन्द कूहल**-जिला कांगड़ा, **सिंचाई परियोजना** नादौन-हमीरपुर, **स्वां नदी तटीकरण**-ऊना, **बात्ता नदी** तटीकरण पांवटा आदि प्रमुख हैं। सिंचाई परियोजनाओं में **शाहनहर** राज्य की सबसे बड़ी है।

(2) फसलें उगाने का ढंग (Methods of Growing Crops)-हिमाचल प्रदेश में नये वैज्ञानिक ढंग अभी भी पूर्ण रूप से विकसित नहीं हो पाए हैं। फिर भी फसलों, बेमौसमी सब्जियों, फलों और फूलों का अच्छा उत्पादन होता है। पहाड़ों में कृषि विकास हेतु बहुत कम अनुसंधान केन्द्र हैं, जो कृषि को नये विकसित ढंगों से करने के लिए पूर्ण जानकारी के उद्देश्य से स्थापित किए गए हैं परन्तु खेतों तक इसका प्रभाव बहुत ही कम है। प्रदेश के कुल कृषि योग्य 9.51 लाख हैक्टेयर क्षेत्र में से अधिकतर क्षेत्र खाद्यान्न पैदा करने में प्रयुक्त किया जाता है। 9.51 लाख हैक्टेयर क्षेत्र में से केवल 1.23 लाख हैक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई की सुविधा उपलब्ध है। सीमान्त और छोटे किसानों ने अपनी अधिक जमीनों को खाद्यान्न पैदा करने में ही प्रयुक्त किया हुआ है, जबकि बड़े किसानों द्वारा अपनी ज़मीन में अधिकतर नकदी फसलें पैदा की जाती हैं। राज्य सरकार के उत्साह और प्रचार से दलहनों की पैदावार में वृद्धि होने लगी है। दूसरी फसलें, जैसे फल और सब्जियां आदि जो व्यापारिक फसलें हैं, उनको 5.7 प्रतिशत क्षेत्र में किया जाता है। इनके अतिरिक्त प्रदेश में तेल वाले बीजों और चाय की भी कृषि होती है।

मुख्य फसलें
(Main Crops)

1. अनाज (Cereals)-हिमाचल प्रदेश में अनाज से सम्बन्धित प्रमखु फसलों का वर्णन इस प्रकार है :-

(1) गेहूँ (Wheat)-हिमाचल में सभी पैदा की जाने वाली फसलों में गेहूँ का प्रथम स्थान है। इसे सितम्बर-अक्तूबर के मध्य में बोया जाता है और अप्रैल-जून में काट लिया जाता है। अधिक ऊंचे क्षेत्रों में केवल वर्ष में एक ही फसल पैदा होती है। राज्य में 38 प्रतिशत भूमि पर गेहूँ की खेती की जाती है। **हमीरपुर, बिलासपुर, कांगड़ा, किन्नौर** तथा **लाहौल-स्पीति** गेहूँ उत्पादन के प्रमुख क्षेत्र हैं।

(2) मक्की (Maize)-हिमाचल प्रदेश में मक्की निचले व मध्यवर्ती क्षेत्रों में बोई जाती है। यह खरीफ़ की एक प्रमुख फसल है। राज्य में मक्की की कृषि लगभग 3.10 लाख हैक्टेयर में की जाती है व उत्पादन लगभग 8 लाख टन तक पहुंच गया है। औसतन पैदावार 26.0 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है, जो राष्ट्रीय स्तर 17.2 क्विंटल प्रति हैक्टेयर से काफी अधिक है। हिमाचल प्रदेश में मक्की की कृषि मुख्य रूप से कांगड़ा, हमीरपुर, बिलासपुर, मण्डी, कुल्लू व चम्बा ज़िलों में की जाती है। मक्की के उत्पादन में उत्तर प्रदेश, बिहार, पंजाब तथा राजस्थान के बाद हिमाचल का पांचवां स्थान है।

(3) धान (Rice)-धान हिमाचल प्रदेश की एक महत्त्वपूर्ण फसल है। धान की कृषि पूरे सिंचित क्षेत्र के 57.3 प्रतिशत भाग पर की जाती है। प्रदेश में केवल 6 प्रतिशत क्षेत्र में धान ऐसे क्षेत्रों में पैदा किया जाता है, जहां सिंचाई की सुविधा उपलब्ध नहीं है। लाहौल-स्पीति और किन्नौर जिलों को छोड़कर शेष पूरे प्रदेश में धान की खेती की जाती है।

ज़िला **मण्डी** और **कांगड़ा** को धान के उत्पादन में विशेष दर्जा प्राप्त है। प्रदेश में धान का उत्पादन औसतन 1, 202 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर है, जो समस्त भारत की औसत से अधिक है।

(4) जौ (Barley)-जौ प्रदेश की दूसरी बड़ी फसल है। यह रबी की फसल है। इस फसल के अन्तर्गत कुल कृषि योग्य क्षेत्र का 3.7 प्रतिशत क्षेत्र आता है। लाहौल-स्पीति में 32.1 प्रतिशत, किन्नौर में 16.8 प्रतिशत और चम्बा में 0.6 प्रतिशत क्षेत्र में जौ की कृषि होती है, जो कुल्लू और शिमला के ऊँची पहाड़ियों पर भी पैदा किया जाता है।

(5) अन्य अनाज (Other Cereals)-दूसरे अनाज जैसे ज्वार, बाजरा, रौंगी, शौंक, ओगडा, कंगणी, चिना, चलाई और बाथू आदि भी प्रदेश में बोये जाने वाले अन्य अनाज हैं। ये मुख्यतः **लाहौल-स्पीति, किन्नौर, शिमला, चम्बा, मण्डी** और **सिरमौर** ज़िलों के भीतरी भागों में पैदा होते हैं।

(6) दालें तथा तिलहन (Pulses and oil seeds)-लगभग 5.7 प्रतिशत क्षेत्रों में दालें उगाई जाती हैं। केवल लाहौल-स्पीति में दालों की पैदावार नहीं होती। प्रदेश में माश (उड़द), मूंग, कोलथ, रौंगी, चने, मटर, मसूर आदि दालें उगाई जाती हैं। सरसों, अलसी, तारामीरा, तिल आदि निचली पहाड़ियों में पैदा किए जाते हैं।

2. नकदी फसलें (Cash Crops)-ऐसी फसलें जो व्यापार के उद्देश्य से उगाई जाती हैं, नकदी फसलें कहलाती हैं। हिमाचल की प्रमुख नकदी फसलों का वर्णन इस प्रकार है:-

(1) आलू (Pottatoes)-हिमाचल प्रदेश की अर्थ-व्यवस्था में आलू का महत्त्वपूर्ण स्थान है। जब द्वितीय विश्व युद्ध के कारण बर्मा और दूसरे देशों से आलू आना बन्द हो गया तो चौथे दशक में शिमला के आसपास के क्षेत्रों में आलू की कृषि की जाने लगी। इस क्षेत्र की जलवायु आलू उत्पादन के अनुकूल थी। इसकी अच्छी पैदावार और मांग को देखते हुए किसानों ने आलू का उत्पादन नकदी फसल के रूप में शुरू किया। यहां उच्चस्तरीय बीज आलू पैदा किया जाता है।
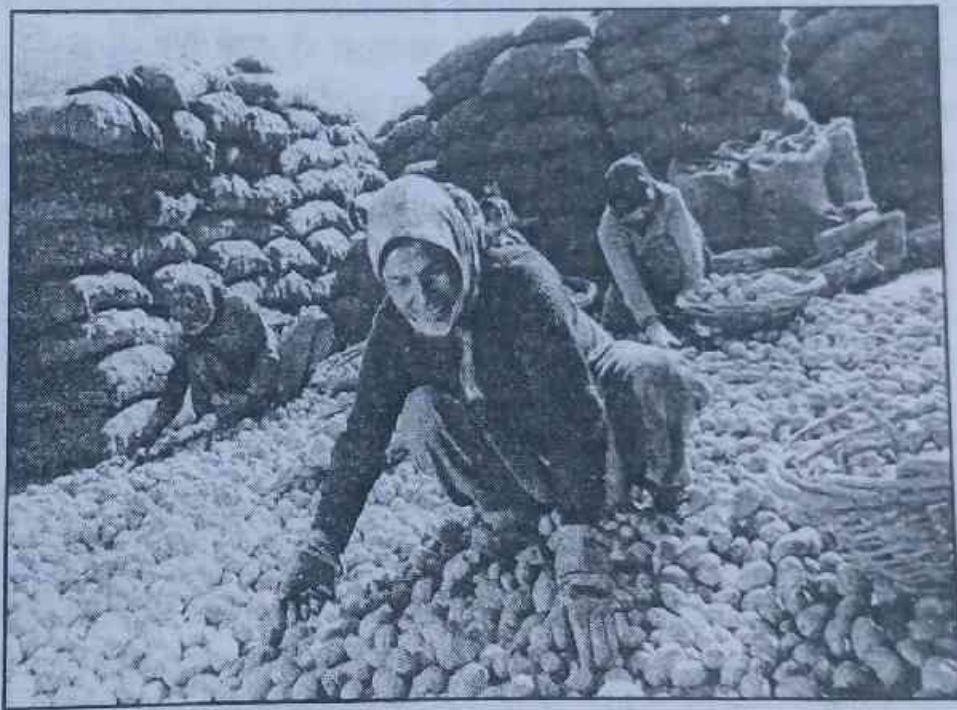
आलू की फसल आम तौर पर खरीफ की फसल है परन्तु जहां कहीं सिंचाई की सुविधा है, वहां इसे सर्दियों में भी पैदा किया जाता है। पूरे देश में आलू और बीज-आलू की पैदावार के लिए हिमाचल अपना विशेष स्थान रखता है। देश के आधे से अधिक आलू का उत्पादन हिमाचल प्रदेश में होता है। यह केवल बीज आलू के उत्पादन के कारण हैं। केवल हिमाचल प्रदेश में ही बीज आलू की विभिन्न किस्में पैदा की जाती हैं। इसलिए इसे **बीज आलू का घर** कहा जाता है। आलू चम्बा, कुल्लू, लाहौल, शिमला, मण्डी और सिरमौर के ऊंचे स्थानों में पैदा किया जाता है। राज्य के ग्रामीण लोगों की अर्थ-व्यवस्था बीज आलू पर काफी निर्भर करती है। आलू निर्यात भी होता है। हिमाचल का बीज आलू पूरे देश के बीज की 20 प्रतिशत से अधिक ज़रूरत पूरी करता है। यहां का आलू बीमारी रहित तथा गुणवत्ता के लिए प्रसिद्ध है।

(2) अदरक (Ginger)-अदरक मुख्यतः सिरमौर, शिमला और सोलन ज़िलों में बोया जाता है। अदरक के उत्पादन

में केरल के बाद हिमाचल का स्थान है। हिमाचल प्रदेश में अदरक की कृषि 2551 हैक्टेयर में की जाती है। कुल उत्पादन 23, 323 मी. टन है। इस समय प्रदेश के नौं जिलों में अदरक की कृषि की जा रही है। सबसे अधिक अदरक जिला सिरमौर में उगाया जाता है। इसके अतिरिक्त अदरक की कृषि सोलन, शिमला, बिलासपुर, कांगड़ा, मण्डी, हमीरपुर, कुल्लू तथा चम्बा जिलों में की जाती है। प्रदेश में अदरक की कृषि 1500 मीटर की ऊंचाई तक सफलतापूर्वक की जा सकती है। हिमाचल प्रदेश में अदरक की औसत पैदावार 100-250 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है। आधुनिक व वैज्ञानिक विधि द्वारा यह उत्पादन 200-250 प्रति हैक्टेयर तक किया जा सकता है।

(3) गन्ना (Sugarcane)-गन्ना कम मात्रा में ऊना, कांगड़ा, सोलन और सिरमौर जिलों में उगाया जाता है।

(4) कुठ (Kuth)-कुठ का छोटा पौधा लाहौली लोग अपने इलाके के किनारों में उगाते हैं। इसके अतिरिक्त यह किन्नौर और कुल्लू घाटी में भी थोड़ा बहुत उगाया जाता है। कुठ की सूखी जड़ों का निर्यात फ्रांस, अमेरिका, वियतनाम, इंग्लैंड, कनाडा, स्विट्ज़रलैंड, हांगकांग, जापान और मलेशिया देशों को किया जाता है। इस पौधे की जड़ों का निर्यात करके स्टेट ट्रेडिंग कार्पोरेशन प्रति वर्ष लगभग 14 लाख रुपये कमाती है। कुठ का उत्पादन लगभग 1100 हैक्टेयर में होता है, जो घाटी के पूरे कृषि क्षेत्र का चार प्रतिशत है। यह पौधा भारत में बाहर से आया और सबसे पहले कश्मीर के जंगलों में पैदा होता रहा। ऐसा मत है कि यहां से इसे लाहौल घाटी में 1925 ई. में लाकर उगाया जाने लगा।

(5) सब्जियां (Vegetables)—सेब उत्पादन के सीमित क्षेत्र होने के कारण प्रदेश के शेष क्षेत्र के लोगों ने नकदी आय का विकल्प ढूंढना शुरू किया है। मध्य पहाड़ी क्षेत्रों के लोगों के लिए सब्जी उत्पादन ही नकदी आय का प्रमुख साधन है। बहुत सी सब्जियां बेमौसमी पैदा की जाती हैं। जब कि ये मैदानी क्षेत्रों में पैदा नहीं की जातीं, उस समय इनकी मांग बढ़ने से उत्पादकों को अपेक्षाकृत अधिक लाभ मिलता है। अधिक उत्पादन के लिए प्रदेश में किसानों को उन्नत किस्म के बीज, पौधे और तकनीकी जानकारी दी जाती है।

हिमाचल प्रदेश जब अस्तित्व में आया तो सब्जियों की पैदावार काफी कम थी लेकिन आज हजारों टन सब्जियां पैदा की जा रही हैं। नई और सुधरी हुई किस्मों से सब्जियों के क्षेत्र में एक क्रान्ति आई है और किसानों को अधिक लाभ प्राप्त हुआ है। अब सब्जियां पैदा करने के साथ-साथ किसान सब्जी बीज का उत्पादन भी करने लगे हैं, जिससे उनकी आय में काफी वृद्धि हुई है।

सब्जियों के अनुकूल जलवायु आधारित खण्ड
(Climatic Zones Suitable for Vegetables)

सब्जियों के अनुकूल जलवायु के आधार पर हिमाचल प्रदेश को चार क्षेत्रों में विभाजित किया गया है:-

1. उप-उष्ण कटिबन्ध क्षेत्र (Sub Tropical Zone)-इस क्षेत्र में समुद्र तल से 914 मीटर तक की ऊंचाई वाले क्षेत्र आते हैं। मैदानी क्षेत्रों में उगाई जाने वाली सभी सब्जियां इस क्षेत्र में भी उगाई जाती हैं। यहां पर **टमाटर,** बैंगन, **खीरा, शिमला मिर्च, फ्रांसबीन** तथा **मटर** का उत्पादन किया जाता है। इसके अतिरिक्त एशियन मूली (जापानी व्हाइट और चाइनीज पिंक), शलगम, (पर्पल टाप व्हाईट ग्लोब) और भिण्डी का शुद्ध बीज पैदा किया जाता है।

2. उप-समशीतोष्ण क्षेत्र (मध्य पर्वतीय क्षेत्र) (Sub Temperate Zone)-यह क्षेत्र समुद्र तल से 915 मीटर से 1523 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। यहां पर 90 से 100 सैं.मी. तक वर्षा होती है। इस क्षेत्र में बेमौसमी सब्जियां जैसे **टमाटर, फ्रांसबीन, शिमला मिर्च, मटर** इत्यादि की कृषि व्यापक स्तर पर की जाती है। फूलगोभी की पिछेती किस्मों का उत्पादन सोलन, सिरमौर तथा कुल्लू के आसपास के क्षेत्रों में किया जाता है।

3. आर्द्र समशीतोष्ण क्षेत्र (आर्द्र ऊंचे पर्वतीय क्षेत्र) (Temperate High Hill Zone)-यह क्षेत्र समुद्र तल से 1524 मीटर से लेकर 2742 मीटर की ऊंचाई तक स्थित है। यहां 100 से 200 सैं.मी. मौनसून ऋतु में वर्षा होती है। मैदानी क्षेत्रों में सर्दियों में उगाई जाने वाली महत्त्वपूर्ण सब्जियां जैसे कि **मटर, फूलगोभी, बन्दगोभी,** मूली, शलजम, **गाजर, चुकन्दर** और **पत्ते वाली हरी सब्जियों** को गर्मियों के महीनों में उगाया जाता है तथा इन्हें मैदानी क्षेत्रों में बेमौसमी सब्जी के रूप में उपलब्ध करवाया जाता है।

4. शुष्क समशीतोष्ण क्षेत्र (शुष्क ऊंचे पर्वतीय क्षेत्र) (Dry High Hill Zone)-यह क्षेत्र समुद्र तल से 2723 मीटर की ऊंचाई से ऊपर स्थित है। इस क्षेत्र में स्पीति, चम्बा और किन्नौर शुष्क जलवायु वाले क्षेत्र शामिल हैं। इन क्षेत्रों में ग्रीष्म ऋतु में 25 से 40 सैं.मी. वर्षा और शरद ऋतु में 3 से 5 मीटर बर्फ पड़ती है। जहां पर सिंचाई की व्यवस्था है। वहां पर गर्मी के मौसम में कुछ सब्जियों की कृषि की जाती है जैसे लाहौल घाटी में अधिकतम क्षेत्र मटर की फसल के लिए रखा जाता है। बन्दगोभी, फूलगोभी, प्याज और जड़ वाली सब्जियां भी उगाई जाती हैं। इस क्षेत्र में **बन्दगोभी, चुकन्दर, चिकोरी, गाजर, मूली, शलगम** का उत्तम बीज तैयार किया जाता है।

हिमाचल प्रदेश में सब्जी उत्पादन
(Production of Vegetables in Himachal)

हिमाचल प्रदेश में भिन्न-भिन्न ऊंचाईयों पर पाए जाने वाले जलवायु सब्जी उत्पादन हेतु अनुकूल है। प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में उत्पादित सब्जियां अधिक अनुकूल मौसम होने के कारण ज्यादा पौष्टिक व स्वादिष्ट पाई गई हैं। सब्जियों का उत्पादन प्रदेश में ऐसे समय में होता है, जब इसके पड़ौसी मैदानी राज्यों में प्रतिकूल मौसम होने के कारण पैदा नहीं किया जा सकता। अतः बेमौसमी होने के कारण सब्जी उत्पादन से प्रदेश के 10,000-12,000 रुपये प्रति बीघा आय प्राप्त कर सकते हैं। प्रदेश में वर्ष 1966-67 जहां सब्जी उत्पादन मात्र 0.53 लाख टन था, बढ़कर वर्ष 2010-11 में 8.00 लाख टन हो गया था। प्रदेश में कांगड़ा में पपरोला, बैजनाथ, नगरोटा और जमानाबाद, सोलन में सपरून, कण्डाघाट, चायल, सिरमौर ज़िला में राजगढ़, शिमला में ठियोग, शोघी, घणाहट्टी, मण्डी में नगवाई, कुल्लू में बजौरा, चम्बा में डलहौज़ी, लाहौल में पटून आदि बेमौसमी सब्जी उत्पादन के लिए प्रमुख केन्द्र हैं। हिमाचल प्रदेश में प्रति वर्ष लगभग 150 करोड़ रुपये की बेमौसमी सब्जियों का उत्पादन होता है। हिमाचल प्रदेश को अब बेमौसमी सब्जी उत्पादन के लिए **''ग्रीन हाऊस''** की संज्ञा दी गई है।

हिमाचल में बागवानी
(Horticulture in Himachal)

सन् 1948 में हिमाचल के बनने के बाद, वैज्ञानिक ढंग से बागवानी को प्रोत्साहन देने के लिए कदम उठाए गए। उस समय केवल 500 एकड़ कृषि भूमि बागवानी के अन्तर्गत थी और विस्तृत रूप में फलों का उत्पादन नहीं किया जाता था। 1953 में कृषि विभाग में बागवानी को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से इसका एक अनुभाग स्थापित किया गया। बागवानी के विकास में बहुत सी समस्याएं आईं। पहाड़ी क्षेत्र होने तथा जलवायु के विविध रूपों के कारण पहाड़ी इलाकों में फल उत्पादन काफी कठिन था।

फल पैदा करने की दृष्टि से प्रदेश में फलों के अनुकूल जलवायु के आधार पर चार खण्ड हैं। इन खण्डों में विभिन्न प्रकार की जलवायु होने के कारण फलों की भी अलग-अलग किस्मों को पैदा किया जाता है। इन खण्डों का वर्गीकरण इस प्रकार है :-

1. उप-ऊष्ण कटिबन्धीय खण्ड (Sub Tropical Zone) -इस खण्ड में निम्न पहाड़ियों और उप-पर्वतीय घाटियां पंजाब तथा हरियाणा के मैदानी क्षेत्रों से लगती हैं। ये क्षेत्र विशेषत: **आम, लीची, लोकाट, अमरूद, अंजीर** और अन्य **नींबू प्रजाति के फलों** के उत्पादन के लिए उपयुक्त हैं। **नाशपाती, आड़ू और पलम** भी इस खण्ड में उगाए जा सकते हैं।

2. उप-समशीतोष्ण खण्ड (Sub Temperate Zone)-इस खण्ड में मध्य पर्वतीय क्षेत्र आता है, जिसका जलवायु प्रायः सामान्य है। **आड़ू, पलम, खुर्मानी, नाशपाती** आदि का उत्पादन होता है। इसके अतिरिक्त **लौंग, पिस्ता** और अन्य जंगली किस्मों के फल भी उगाए जा सकते हैं। ओलावृष्टि के अतिरिक्त अधिक गर्मी के कारण फलों के उत्पादन पर प्रभाव पड़ता है।

3. समशीतोष्णीय उच्च पर्वतीय खण्ड (Hight Tropical Zone)-इस खण्ड में समुद्र तल से 1600 से 2700 मीटर की ऊंचाई पर स्थित ऊंचा पहाड़ी क्षेत्र और दूर-दराज का घाटियों वाला क्षेत्र आता है। यहां की जलवायु ठण्डी और

वर्षा 100 सैं.मी. (वार्षिक औसत) तक होती है। यहां बर्फ काफी पड़ जाती है। इस खण्ड में बहुत ही बढ़िया किस्म के सेब होते हैं। इनके अतिरिक्त यहां **नाशपाती, चेरी, अखरोट** और **चिलगोजे** भी होते हैं।

4. शीत एवं शुष्क खण्ड (Cold and Dry Zone)-इस खण्ड में लाहौल-स्पीति, किन्नौर, ज़िला चम्बा की पांगी तहसील के क्षेत्र आते हैं, जो समुद्र तल से 2700 मीटर से भी अधिक ऊंचाई पर स्थित हैं। न्यूनतम औसत तापमान 15 डिग्री सैंटीग्रेड होता है और गर्मियों में मौसम गर्म तथा शुष्क होता है।

बागवानी फल
(Horticulture Fruits)

हिमाचल प्रदेश में कृषि की रीढ़ बागवानी मानी जाती है। राज्य का **मुख्य फल सेब** है। इसी फल के कारण हिमाचल प्रदेश को **''सेब राज्य''** की उपाधि प्राप्त है। यहां अन्य फल **आम, नींबू, सन्तरा, आड़ू, नाशपाती, खुर्मानी, किवी** आदि फलों की फसलें भी प्रचुर मात्रा में होती हैं। हिमाचल प्रदेश में **2,04629 हैक्टेयर भूमि** पर बागवानी की जाती है, जिसमें **सेब 99, 654** हैक्टेयर, **खट्टे फल-22, 050** हैक्टेयर, **सूखे मेवे**-11,037 हैक्टेयर तथा **अन्य फल**-75,503 हैक्टेयर पर विभिन्न प्रजाति के फलों की पैदावार होती है। हिमाचल प्रदेश में वर्ष 2010 में 9.61 लाख मीट्रिक टन रिकॉर्ड फल उत्पादन हुआ। यहां वर्ष 2010-11 में फलों का कुल उत्पादन 1027.82 हजार मीट्रिक टन हुआ, जिसमें सर्वाधिक पैदावार सेब की 892.11 हज़ार मीट्रिक टन हुई। हिमाचल प्रदेश में सेब के पुराने पौधों के स्थान पर अधिक गुणवत्ता वाले सेब के पौधे उपलब्ध करवाने के लिए **''एप्पल रिजूविनेशन प्रोजैक्ट''** चलाया जा रहा है। इस परियोजना के अधीन 12,500 हैक्टेयर भूमि पर सेब की नई किस्म के पौधे लगाए जा रहे हैं। सेब की फसल को ओलावृष्टि की तबाही से बचाने के लिए खड़ापत्थर के समीप **''एंटी हेलगन तथा रडार''** स्थापित किया गया है। हमीरपुर ज़िले के नेरी में **प्रौद्योगिकी** एवं **पर्यावरण विज्ञान संस्थान** खोला जा रहा है। यह संस्था डॉ. यशवन्त सिंह परमार बागवानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय के तत्वावधान में चलाया जा रहा है। एशिया का सबसे बड़ा फल विधायन संयन्त्र सोलन ज़िले के परवाणु में स्थापित किया गया है।

1. कांगड़ा चाय (Kangra Tea)-डॉ. जेसमन की रिपोर्ट के अनुसार कांगड़ा में चाय बागवानी सर्वप्रथम सन् 184[illegible] ई. को प्रथम चरण में **कांगड़ा** 2, 500 फुट, **नगरोटा**-2,900 फुट तथा **भवारना**-3,200 फुट पर चाय बागवानी प्रारम्भ की गई। कांगड़ा में सन् 1849 ई. को प्रथम चरण में चाय बागवानी हेतु चयनित स्थलों पर चाय नर्सरी असफल होने पर चाय उत्पादन के लिए पुनः **होल्टा, पालमपुर**-4200 फुट को चुना गया है। सन् 1852 ई. को होल्टा, पालमपुर में चाय उत्पादन सबसे पहले शुरू किया गया। सन् 1892 ई. को कांगड़ा घाटी में चाय की पैदावार यूरोपीयन-3,943 एकड़ तथा स्थानीय 5,594 एकड़ के स्वामित्व में की जाती थी। सन् 1892 ई. तक कांगड़ा घाटी में यूरोपीयन चाय के 34 बाग थे। सन् 19[illegible] ई. तक कांगड़ा घाटी में सबसे अधिक होल्टा-2.076 एकड़ में तथा सबसे कम अंद्रेटा-10 एकड़ में चाय की पैदावार [illegible] जाती थी। सन् 1918 ई. तक कांगड़ा घाटी में ''ग्रीन टी'' की पैदावार भारत की कुल ''ग्रीन टी'' का मुख्य बा[illegible] अफगानिस्तान तथा पर्शिया देश थे। हिमाचल प्रदेश में सन् 2000 ई. में चाय की कुल पैदावार 1483 किलोग्राम थी।

2. सेब (Apple)-हिमाचल का मुख्य फल सेब है, जिसके कारण हिमाचल को सेब राज्य कहा जाता है।

(1) कुल्लू में सेब की पैदावार (Apple Cutivation in Kullu)-हिमाचल प्रदेश में सबसे पहले सेब का बगी[illegible] **कुल्लू घाटी** के **बंदरोल** गांव में लगाया गया। यह बगीचा सन् 1860 ई. के लगभग रिटायर्ड ब्रिटिश सेना अधिकारी कैप्टन **ए. ए. ली.** ने लगवाया था। ब्रिटेन डैविनशायर के कैप्टन आर.सी. ली ने सन् 1860 ई. को **बन्दरोल** में 250 बीघा [illegible] खरीदी। इन्होंने इसी भूमि पर सन् 1870 ई. में सेब के साथ **नाशपाती, चेरी, पलम** आदि फलों के पौधे भी लगवाए। इ[illegible] बाद इन्होंने बन्दरोल से कुछ दूर **डोभी** में 20 एकड़ ज़मीन खरीद कर सेब का बगीचा लगवाया।

(2) शिमला में सेब बागवानी (Apple Cultivation in Shimla)-हिमाचल प्रदेश राष्ट्रीय स्तर पर सेब [illegible] फल के रूप में विख्यात है। शिमला में सर्वप्रथम सेब का बगीचा **एलैग्ज़ैंडर काऊँट** ने 1887 ई. में **मशोबरा** में ल[illegible] था। हिमाचल प्रदेश में अमेरिकन किस्म के सेब का बगीचा 1918 में **सेम्युल इवांस स्टोक्स** ने सबसे पहले कोट[illegible]

शिमला में लगाया। हिमाचल प्रदेश में सबसे अधिक सेब शिमला जिले में होते हैं। इसे काऊंट की बगीचा कहा जाता है तथा यहां पर हिमाचल प्रदेश उद्यान विश्वविद्यालया का क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र स्थापित किया गया है।

3. अंगूर (Grapes)-अंगूर का उत्पादन शुष्क शीतोष्ण क्षेत्र, किन्नौर, लाहौल-स्पीति और निचले पर्वतीय क्षेत्र कांगड़ा, मण्डी, शिमला के निचले इलाके तथा सिरमौर की पांवटा घाटी में किया जाता है। अंगूर का पौधा बेल की तरह होता है तथा इसके फल गुच्छों में लगते हैं, विदेशों में अंगूर से ज्यादातर शराब बनाई जाती है। इन्हें ताज़ा फलों के रूप में तथा किशमिश और ताजे रस के रूप में भी प्रयोग किया जा सकता है। हिमाचल प्रदेश में अंगूर की अनेक किस्में पाई जाती हैं-

4. जैतून (Olive)-जैतून की संसार में बहुत सी प्रजातियां हैं, जिनमें ओलिया यूरोपिया से ज्यादातर फल एवं तेल का उत्पादन किया जाता है। तेल का उपयोग खाना पकाने, सौन्दर्य तेलों व साबुन में किया जाता है। फलों का आचार भी डाला जाता है। पके हुए फलों से लोहा, कैल्शियम व कई विटामिन शरीर के लिये प्राप्त होते हैं। औषधीय गुणों के साथ-साथ यह कोलेस्ट्रोल से मुक्त तेल होता है।

हिमाचल प्रदेश में जंगली जैतून (ओलिया कस्पीडेटा) के पेड़ हैं, जिन्हें **काहू** के नाम से जाना जाता है। जिला कुल्लू, मण्डी, चम्बा, सिरमौर, सोलन व शिमला ज़िलों में समुद्रतल से 1000 से 1300 मीटर की ऊंचाई वाले क्षेत्रों में इसके पेड़ पाये जाते हैं। जैतून की कृषि सबसे पहले जिला मण्डी के किंग्स स्थित सरकारी फार्म पर शुरू की गई। वर्ष 1984 में इटली सरकार के सहयोग से जैतून विकास परियोजना शुरू की गई, जिसका मुख्यालय बजौरा, जिला कुल्लू में स्थापित था।

5. नींबू प्रजाति के फल (Fruits of Lime Family)- हिमाचल प्रदेश के निचले तथा घाटी क्षेत्र, जिनकी ऊंचाई समुद्र सतह से 1,000 मीटर से अधिक नहीं है, वहां नींबू प्रजाति के फल जैसे सन्तरा, माल्टा, नींबू, गलगल आदि तथा आम व अमरूद आदि उगाए जाते हैं।

नींबू प्रजाति के फल सामान्यत: उपोष्ण देशीय क्षेत्रों में उगाए जाते हैं। यहां की जलवायु उनके लिए अत्यधिक उपयुक्त मानी जाती है। ऐसे क्षेत्रों में उनकी पैदावार अधिक होती है। सन्तरा और विशेषकर नींबू प्रजाति के फल अपेक्षाकृत ठण्डे क्षेत्रों में भी उगाए जा सकते हैं। उत्तम प्रकार के माल्टे पैदा करने के लिए अपेक्षाकृत गर्म तथा शुष्क जलवायु अधिक अच्छी समझी जाती है। कागज़ी नींबू केवल उन्हीं क्षेत्रों में अधिक अच्छा होता है, जहां पाले का प्रकोप नहीं होता।

बागवानी (उद्यान विद्या) गतिविधियों का विविधीकरण
(Diversification of Horticulutre Activities)

पिछले कुछ वर्षों से बागवानी के साथ-साथ किसानों ने कुछ अन्य धन्धे भी आरम्भ किये हैं, जिनसे उनकी आर्थिक दशा सुधरने लगी है। ऐसे धंधों में प्रमुख मधुमक्खी पालन, मशरूम उत्पादन तथा पुष्प उत्पादन हैं।

1. मधुमक्खी पालन (Bee keeping)-हिमाचल प्रदेश में मधु-मक्खी पालन कृषि के साथ-साथ किसानों का एक प्रमुख धंधा बन गया है। लगभग 1500 किसान इस धंधे में अब तक जुड़ चुके हैं, जिन्होंने लगभग 83 हज़ार मधुमक्खी छत्ते बना रखे हैं। बागवानी विभाग ने भी मधुमक्खियों के 32 स्थान बना रखे हैं, जिनमें 1500 मधु-मक्खी छत्ते बने हैं। हिमाचल का बागवानी विभाग किसानों के नये छत्ते बनाने के लिए प्रोत्साहित करता है तथा उन्हें मधु-मक्खियां भी देता है।

2. मशरूम उत्पादन (Mushroom Cultivation)-हिमाचल प्रदेश का मशरूम उत्पादन में देश में प्रमुख स्थान है। इस समय यह उद्योग हिमाचल में एक लोकप्रिय उद्योग बन चुका है तथा इससे अनेक बेरोज़गार युवाओं को रोज़गार उपलब्ध हुआ है। इससे कमज़ोर वर्ग के लोगों की आर्थिक दशा में सुधार हुआ है। अनेक युवाओं द्वारा मशरूम उत्पादन को मुख्य धन्धे के रूप में अपनाया गया है, जिससे इस क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन आया है।

3. डेयरी उत्पादन (Dairy Production)-हिमाचल प्रदेश में छोटे तथा गरीब किसानों के लिए डेयरी उद्योग उनकी आय का एक मुख्य घटक है। दूध की नगरीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए डेयरी उद्योग का ग्रामीण क्षेत्रों में विकास किया गया है। दुग्ध उत्पादन के लिए अब किसान उत्तम नस्ल की गायों को पालते हैं। उत्तम प्रकार की गायें प्राप्त करने के लिए क्रास ब्रीडिंग तकनीक अपनाई जाती है। इसके लिए जर्सी (Jersey) तथा होल्सटन (Holsten) नामक उत्तम प्रजाति के बैल से प्रजनन करवाया जाता है। इसी प्रकार उत्तम प्रजाति की भैंसों के लिए मुराला नामक सांड से प्रजनन करवाया जाता है।

हिमाचल में डेयरी उद्योग में काफी विकास हुआ है। इस समय प्रदेश में मिल्क फैड की 1759 दूध उत्पादन आपरेटिव सोसायटियां स्थापित की हैं। इन सोसायटियों में 35 हजार पुरुष तथा 125 स्त्रियां कार्यरत हैं। दूध उत्पादकों के अतिरिक्त दूध ये सोसायटियां इकट्ठा करती हैं तथा हिमाचल प्रदेश का दुग्ध विभाग दूध को बाज़ार में भेजता है। इस समय हिमाचल प्रदेश मिल्कफैड के 21 केन्द्र स्थापित हैं, जो प्रतिदिन 70 हज़ार लीटर दूध का शीतकरण करते हैं तथा 8 दूध के केन्द्र 85 हज़ार लीटर दूध को प्रतिदिन परिष्कृत किया जाता है।

4. मछली उत्पादन (Fish Production)-हिमाचल प्रदेश में मछली पालन भी एक प्राकृतिक देन है, क्योंकि यहां मछलियों के विकास के लिए नदियां, तालाब, जलाशय आदि ही प्रमुख साधन है। इनमें से गोबिन्दसागर, पौंग बांध प्रमुख हैं। इनके अतिरिक्त कई बारहमासी जल खड्डें भी हैं, जिनमें मछलियां पाली जाती हैं। सरकार ने मछली बीज उत्पादन के लिए दयोली (बिलासपुर), जगतखाना (नालागढ़), आलसु (मण्डी), मिलवा (कांगड़ा) में मछली प्रजनन केन्द्र स्थापित किए हैं। दयोली एशिया का सबसे बड़ा मत्स्य प्रजनन केन्द्र है। हिमाचल में महाशीर, लोबियों , मिरर कार्य, ट्राउट आदि किस्म की मछलियां पाई जाती हैं। ट्राउट नामक मछली केवल ठण्डे क्षेत्रों में ही पाई जाती है।

हिमाचल में लगभग 40 हज़ार मछुआरे प्रत्यक्ष रूप से मछली पालन के धंधे से जुड़े हुए हैं। 2011-12 में कुल 4986 मी. टन मछली का उत्पादन हुआ था। गोबिन्दसागर में प्रति हैक्टेयर सबसे अधिक मछली पाई जाती है, जब कि पौंग बांध से देश में सबसे अधिक मछली से धन अर्जित किया जाता है। 2011 के वर्ष में ट्राउट नामक मछली का 12.40 मी. टन उत्पादन हुआ था।

5. पशु पालन (Rearing of Livestock)-हिमाचल प्रदेश में पशु पालन का धंधा ग्रामीण आर्थिकता का महत्त्वपूर्ण घटक है। हिमाचल प्रदेश के लगभग 90 प्रतिशत परिवार पशुपालन का धन्धा करते हैं। पशु पालन में भेड़ पालन सबसे प्रमुख है। सरकार भेड़ पालन के लिए लघु तथा सीमान्त किसानों और कृषि मजदूरों को कम ब्याज पर ऋण देती है। सरकार ने भेड़ प्रजनन के लिए ज्यूरी (शिमला), सराल (चम्बा), ताल (हमीरपुर) तथा करछम (किन्नौर) में फार्म खोले हैं। ज़िला मण्डी के नगवेन में भी एक मेढा केन्द्र (Ram Center) भी खोला है, जहां मेढ़ा की सुधरी हुई किस्मों की नस्ल पैदा की जाती है। 2011 तक ऐसे फार्मों की संख्या 2128 थी तथा 272 सुधरी हुई नस्ल के मेढ़े पशु पालन करने वालों को दिये गए। भेड़ तथा ऊन उत्पादन के दस केन्द्र इस समय कार्यशील हैं। कांगड़ा जिले के कन्टवाड़ी तथा मण्डी जिला के नगवाई में अंगोरा खरगोश फार्म भी खोले गए हैं। हिमाचल के लाहौल-स्पीति में घोड़ा प्रजनन फार्म भी स्थापित किया गया है।

भूमि-सुधार
(Land Reforms)

हिमाचल प्रदेश के अस्तित्व में आने पर 1948 में पंजाब का **पंजाब गुजारा अधिनियम, 1888** लागू किया गया। 1950 ई. में पंजाब का **पंजाब भूमि-जोत प्रतिभूमि अधिनियम** भी हिमाचल प्रदेश में लागू किया गया।

वर्ष 1952 में भूमि सम्बन्धी दो एक्ट पंजाब काश्तकारी (हिमाचल प्रदेश परिवर्तन) एक्ट 1952 और हिमाचल प्रदेश काश्तकार एक्ट 1952 लागू किए गए। पहले एक्ट के अनुसार काश्तकार को अधिक से अधिक लगान के रूप में पैदावार का चौथा हिस्सा देना होता था। दूसरे एक्ट द्वारा बहुत से काश्तकारों को ये अधिकार दिए गए कि यदि भूमि का मालिक भूमि खरीद लेता है तो काश्तकार उसे फिर भी अपने कब्ज़े में रख सकता था लेकिन 15 अगस्त, 1950 के बाद ऐसी स्थिति को अस्वीकार कर दिया गया।

1953 ई० में हिमाचल प्रदेश सरकार ने बड़ी ज़मींदारी उन्मूलन व भूमि-सुधार अधिनियम पारित किया, जिसे राष्ट्रपति की स्वीकृति मिलने के बाद 25 जनवरी, 1955 से लागू कर दिया गया। यह समस्त भारत वर्ष में मुजारों सम्बन्धी यानि 'काश्तकार को भूमि' देने सम्बन्धी अपनी प्रकार का पहला कानून था। इसके अनुसार काश्तकार को भूमि का स्वामी मान लिया गया। इसके लिए शर्त यह थी कि काश्तकार मुआवज़े के रूप में भूमि के स्वामी को वास्तविक राजस्व का 24 गुणा अदा करे।

इस कानून के लागू होने के बाद भूमि मालिकों ने इसका विरोध किया। राजनीति और कानून का सहारा लिया। राजनैनिक तौर पर उन्होंने रैलियां और जलूस निकाले। कानूनी तौर पर उन्होंने एक्ट का बहिष्कार करना शुरू कर दिया परन्तु इस एक्ट ने काश्तकारों को उनके अधिकारों से वंचित न होने दिया।

सन् 1966 में पंजाब पुनर्गठन एक्ट 1966 के अनुसार, तत्कालीन पंजाब राज्य का बहुत सा क्षेत्र हिमाचल प्रदेश को दिया गया। वहां यह एक्ट लागू नहीं होता था। इन क्षेत्रों में काश्तकारों की स्थिति ठीक नहीं थी। सरकार ने काश्तकारों को कानूनी सहायता हिमाचल प्रदेश काश्तकार एक्ट 1971 के अनुसार दिलाई।

हिमाचल प्रदेश लैंड होल्डिंग एक्ट, 1972
(Himachal Pradesh Land Holding Act, 1972)

पूर्ण राज्य बनने के बाद हिमाचल प्रदेश की सरकार ने कृषि क्षेत्र के विकास के लिए कार्य आरम्भ किया तथा भूमि सुधारों द्वारा किसानों को अधिक से अधिक राहत देने का प्रयास किया। 1972 में भूमि सीमा निश्चित करने के उद्देश्य से '**हिमाचल प्रदेश लैंड होल्डिंग एक्ट, 1972**' (Himachal Pradesh Land Holding Act, 1972) पारित किया गया। इस एक्ट द्वारा भूमि सीमा निश्चित कर दी गई ताकि अतिरिक्त भूमि को उन किसानों में वितरित किया जा सके, जो वर्षों से कृषि तो करते आ रहे थे, वे भूमि के स्वामी नहीं थे। इस एक्ट को पास करने के बाद तुरन्त सम्पूर्ण हिमाचल में लागू कर दिया गया।

1972 के इस भूमि सीमा निर्धारण एक्ट की प्रमुख धाराएं इस प्रकार थीं:-

(1) एक परिवार जिसमें पति-पत्नी तथा उनके तीन नाबलिग बच्चे हों, के लिए 10 एकड़ भूमि सीमा निश्चित की गई। इसकी शर्त यह थी कि भूमि सिंचित वर्ग की हो तथा वर्ष में दो फसलें उगाई जाती हों।

(2) यदि सिंचित भूमि पर वर्ष में एक फसल उगाई जाती है तो उसके लिए भूमि सीमा 15 एकड़ निश्चित की गई।

(3) उपरोक्त प्रकार की भूमियों के अतिरिक्त अन्य प्रकार की भूमियों के लिए निर्धारित भूमि सीमा एकड़ निश्चित की गई। परन्तु ज़िला किन्नौर, लाहौल-स्पीति, चम्बा ज़िला की तहसील पांगी तथा उप-तहसील भरमौर, कांगड़ा को तहसील पालमपुर शिमला की रामपुर तहसील में इस प्रकार की भूमि सीमा 70 एकड़ निर्धारित की गई।

(4) राज्य सरकार केन्द्रीय सरकार तथा रजिस्टर्ड को-आपरेटिव फार्मिंग सोसायटीज़ को इस भूमि सीमा निर्धारण एक्ट से मुक्त रखा गया है। सोसायटियों के लिए यह शर्त लगाई गई कि इसके सदस्य के पास उपरोक्त भूमि सीमा से अधिक भूमि नहीं होनी चाहिए।

(5) निर्धारित सीमा से अधिक भूमि का राज्य सरकार अधिग्रहण कर लेगी तथा उस भूमि से सम्बन्धित सभी अधिकार सरकार के पास चले जायेंगे। अधिगृहित भूमि के लिए सरकार भू-स्वामी को उपयुक्त मूल्य अदा करेगी।

(6) यदि कोई व्यक्ति अतिरिक्त भूमि को सरकार को देने में आनाकानी करेगा तो सरकार को उसे बल प्रयोग (use of force) द्वारा अपने अधिकारी कलैक्टर द्वारा अधिग्रहण करने का अधिकार होगा।

(7) अधिकृत भूमि को बांटने के लिए सरकार एक योजना तैयार करेगी, जिसके अन्तर्गत भूमि रहित किसानों तथा अन्य उपयुक्त व्यक्तियों का विवरण तैयार करेगी।

(8) अतिरिक्त भूमि को विकलांगों तथा अन्य बेघर लोगों को घर बनाने के लिए वितरित किया जायेगा।

(9) भूमि आवंटन करते समय भूमि रहित अनुसूचित जातियों तथा अनुसूचित जनजातियों के लोगों को वरीयता दी जायेगी।

उपर्युक्त एक्ट द्वारा लगभग 2500 बड़ी-बड़ी भू-सम्पतियों को समाप्त कर दिया गया तथा लगभग 70 हज़ार एकड़ भूमि को उपयुक्त भू-रहित लोगों में बांट दिया गया। 1973 से 1975 तक 17088 ऐसे लोगों में अतिरिक्त भूमि वितरित की गई। इनमें से 66 प्रतिशत भू-रहित लोग अनुसूचित जातियों तथा अनुसूचित जनजातियों के थे। 1972 के इस एक्ट के बाद भी हिमाचल में भू-सुधारों का दौर जारी रहा। 'हिमाचल प्रदेश टैनन्सी एण्ड लैंड रिफार्मान एक्ट' द्वारा 87 हज़ार किसानों को भू-स्वामी बनाया गया।

अप्रैल 1981 तक प्रदेश के ऐसे भूमिहीनों का दो बार सर्वेक्षण किया गया। प्रदेश में लगभग 90,000 ऐसे खेतिहर मज़दूर थे, जिन्हें इस कार्यक्रम के तहत लाभान्वित कराया लेकिन अमीर ज़मींदारों से ली गई भूमि को बांटकर पूरा नहीं पड़ रहा था। अत: सरकार को अपनी ज़मीन देने के अतिरिक्त और कोई विकल्प नज़र नहीं आया। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए दूसरा एक्ट हिमाचल प्रदेश विलेज कॉमन लैण्ड वेस्टिंग एण्ड यूटिलाइजेशन एक्ट 1974 तैयार किया गया। इसके अन्तर्गत सरकार की शामलाट भूमि भूमिहीनों को दी जानी थी। इस तरह सरकार उन 90,000 भूमिहीनों जिनके पास 5 बीघे से कम भूमि थी, को 5 बीघा के हिसाब से भूमि दे पाने की स्थिति में हो गई। कुछ ही लोगों को भूमि दी जानी शेष थी। यह फॉरैस्ट एक्ट (कन्जर्वेशन) के कारण हुआ, क्योंकि इस एक्ट में यह प्रावधान था कि वनों की भूमि को वनों के उपयोग के अतिरिक्त किसी अन्य उपयोग के लिए नहीं दिया जा सकता था।

तीसरा अन्य महत्त्वपूर्ण विधेयक हिमाचल प्रदेश गांव शामलाट भूमि (**स्वामित्व-अधिकार विहित**) अधिनियम, 1974 था। इस अधिनियम के अनुसार शामलाट भूमियों में से जो पहले पंचायतों के नियन्त्रण में थी, 50 प्रतिशत भूमि गांवों के साझे उपयोग के लिए सुरक्षित कर दी गयी और शेष सरकार के स्वामित्व में विहित हो गयी, जिसे सरकार ने एक योजना के अनुसार भूमिहीनों में बांटने व उन व्यक्तियों की जोतें एक एकड़ तक पूरी करने के लिए करना था, जिनकी जोतें एक एकड़ से कम थीं। इस समय तक सरकार 90,000 के लगभग भूमिहीन व्यक्तियों की ज़मीन एक एकड़ पूरी करने के लिए जिनके पास एक एकड़ ज़मीन नहीं थी, ज़मीन बांट चुकी है।

वन
(Forests)

वन प्रदेश की बहुमूल्य सम्पदा है। वन केवल जलवायु को ही प्रभावित नहीं करते, बल्कि इसके आर्थिक जीवन में भी महत्त्वपूर्ण योगदान देते हैं। प्रदेश के 37033 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में किसी न किसी प्रकार के वन पाये जाते हैं, जो प्रदेश के कुल क्षेत्र का 66.5 प्रतिशत के लगभग है।

हिमाचल प्रदेश में पाये जाने वाले वनों को नुकीली पत्ती और चौड़ी पत्ती वाले वनों में बाँटा जाता है। **देवदार, कैल, चील, रई, न्योजा देने वाली चील** नुकीली पत्ती के वृक्ष हैं। न्योजा चील जिससे खाने का फल न्योजा मिलता है, किन्नौर में होती है। **साल, बान, खडशु, बड़, पीपल, अखरोट, पापलर, सेमल, तूहनी, जामुन** और **शीशम** आदि चौड़ी पत्ती वाले वृक्ष हैं। वनों में स्वत: पैदा होने वाली जड़ी-बूटियाँ भी पाई जाती हैं। जड़ी बूटियों में बणा, बसूंटी, बरया, वनखशा, मुलहठी, पतीश, तेजपत्र, कड़ी पत्ता (गंधेला) कुठ, धूप, कक्कड़सिंगी, कडु, खैर से निकलने वाला कत्था आदि महत्त्वपूर्ण हैं।

हिमाचल के वनों से 34 लाख घनफुट के लगभग **इमारती लकड़ी** प्रतिवर्ष प्राप्त होती है। इसके अतिरिक्त इनमें

कई प्रकार की **जड़ी बूटियाँ** पाई जाती हैं, जो दवाइयाँ बनाने के काम आती हैं। इसके अतिरिक्त इन वनों में **अख़बारी कागज़, रेयोन ग्रेड पल्प, आर्ट पेपर, गत्ता** तथा **कपड़े के उद्योग** लगाने के लिए कच्चा माल उपलब्ध है। चील के वृक्ष से **बिरोजा** प्राप्त होता है, जो **तारपीन का तेल** और **प्लास्टिक** की चीजें बनाने के काम आता है। बिरोजे से तारपीन का तेल बनाने के लिए बिलासपुर और नाहन में बिरोजा फैक्ट्रियां लगायी गयी हैं, जिनमें 1,10,000 क्विंटल के लगभग बिरोजा साफ किया जाता है।

हिमाचल प्रदेश वन निगम (Himachal Pradesh Forest Corporation Ltd.) : निजी ठेकेदारों द्वारा जंगलों में काम करने से वन-सम्पत्ति का कई प्रकार से दुरुपयोग किया जाने लगा था। अत: **25 मार्च, 1974** से हिमाचल प्रदेश वन निगम की स्थापना की गयी। इसका उद्देश्य प्रदेश में वनों और उनकी सम्पदा का पूर्ण राष्ट्रीयकरण करके वनों पर आधरित उद्योगों का विकास करना तथा वन सम्पदा का विपणन आदि है।

वनों के विकास के लिए वन उत्पादन अर्थात् विस्तृत रूप से वृक्ष लगाने और कई प्रकार के घास लगाकर चरागाहों का विकास करने के लिए सरकार ने कई योजनाएं चलायी हैं, जिनका संक्षेप में वर्णन इस प्रकार है :

1. राष्ट्रीय सामाजिक वानिकी (अम्बरेला) परियोजना (National Social Forestry Umbrella Project) : इस परियोजना का उद्देश्य लोगों की आम जरूरतों को पूरा करने के लिए जलाने की लकड़ी, पशुओं के लिए चारे तथा इमारती लकड़ी के उत्पादन को बढ़ाना है। यह योजना 1985-86 में विश्व बैंक की सहायता से आरम्भ की गयी थी।

2. केन्द्र द्वारा प्रायोजित ग्रामीण ईंधन सामाजिक वन-रोपण परियोजना (Centrally Sponsored Rural Fuelwood Social Forestry Scheme) : यह परियोजना केन्द्रीय व राज्य सरकारों द्वारा 50 : 50 के अनुपात की लागत से चलाई गई है, जिसका उद्देश्य सरकारी व्यर्थ भूमि, गाँव की सामूहिक भूमि तथा सड़कों के किनारों आदि पर ईंधन के काम आने वाली लकड़ी के पौधों का रोपण करना है। यह योजना काँगड़ा, हमीरपुर, मण्डी, सोलन व शिमला ज़िलों में चलाई जा रही है।

3. धौलाधार प्रक्षेत्र वानिकी परियोजना (Dhauladhar Farm Forestry Project) : यह योजना वनारोपण, पशु-पालन, ईंधन के लिए लकड़ी जलाने वाले साधनों सम्बन्धी संयुक्त योजना थी, जो अब पूर्ण है।

4. वन्य प्राणी तथा प्रकृति संरक्षण (Wild Life and Nature Conservation) : इस कार्यक्रम का उद्देश्य प्रदेश में वर्तमान विभिन्न प्रकार के पशुओं की रक्षा करना है, जिनकी प्रजातियां ही कुदरती तौर पर या शिकार आदि खेलने के कारण लुप्त-प्राय: हो रही हैं। प्रदेश में वन्य प्राणी विहार तथा राष्ट्रीय पार्क आदि स्थापित किए जा रहे हैं।

खनिज
(Minerals)

खनिज (Minerals) : हिमाचल प्रदेश में पाये जाने वाले खनिजों का वर्णन इस प्रकार है :-

1. चूने का पत्थर (Lime Stone) - यह सीमेंट, चूना, कैल्शियम कारबाईट, रासायनिक खाद, कपड़ा उद्योग, चीनी, कागज़ और स्टील उद्योगों में अलग-अलग मात्रा में प्रयोग होता है। सभी सीमेंट उद्योगों में इसका प्रयोग हो रहा है। यह ज़िला **बिलासपुर, मण्डी, सिरमौर, सोलन, काँगड़ा** व **चम्बा** में पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। बिलासपुर ज़िला में कोठीपुरा के आस-पास मैग्नीशियम वाला चूने का पत्थर पाया जाता है, जिसका उपयोग खाद बनाने के लिए नंगल की खाद फैक्टरी में किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त इस चूने के पत्थर के 52 लाख टन के भण्डार नालागढ़ (सोलन) में मिले हैं।

2. जिप्सम (Gypsum) - **सिरमौर** (कौरग-अलगी क्षेत्र), **सोलन** (कुठाड़ क्षेत्र), **चम्बा** के (बाथरी क्षेत्र) में पाया जाता है। किन्नौर और लाहौल-स्पीति में भी यह धातु उपलब्ध है। जिप्सम के 96 हजार टन का भण्डार चम्बा ज़िले में भी है। उत्तम प्रकार का जिप्सम किन्नौर तथा लाहौल स्पीति में भी है।

3. खनिज रेत (Silica Sand) - खनिज रेत शीशे के उत्पादन के काम आती है। यह **ऊना** में अधिक मात्रा में और **बिलासपुर** में कम मात्रा में पाया जाता है। ऊना क्षेत्र में 10 लाख टन के भण्डार मौजूद हैं।

4. **सोना** (Gold) - प्रदेश की कई खड्डों और नदियों के रेत में सोने के कण पाये जाते हैं। पुराने समय में दौला जाति के लोग व्यापारिक तौर पर रेत से सोना निकालते थे, भले ही उसकी मात्रा कम थी। बिलासपुर में **करयाल खड्ड** और सतलुज के रेत से सोने के कण निकाले जाते थे। ऊना की **स्वां खड्ड** और कुल्लू व किन्नौर की कुछ खड्डों व नदियों में सोने के कण पाये जाते हैं। चम्बा की चिनाब में छुट-पुट सोने के कण मिलते हैं।

5. **स्लेट** (Slate) - **मण्डी, काँगड़ा, चम्बा, कुल्लू** व **शिमला** में पर्याप्त मात्रा में स्लेट पत्थर पाया जाता है। इसका प्रयोग मकान की छतें तथा फर्श बनाने के लिए किया जाता है।

इसके अतिरिक्त हमीरपुर तथा कुल्लू क्षेत्र में यूरेनियम पाया गया है। अन्य भी कई प्रकार के लघु खनिज प्रदेश में पाये जाते हैं।

6. **चट्टानी नमक** (Rock Salt) - भारत में हिमाचल प्रदेश के **मण्डी** में ही चट्टानी नमक पाया जाता है। इसकी चट्टानें गुम्मा और द्रंग (मण्डी) क्षेत्र में विद्यमान हैं। यह नमक रवेदार पत्थर के रूप में पाया जाता है।

7. **खनिज पानी** (Mineral Water) - मनाली के समीप **कालथ** के झरने से उत्तम प्रकार का खनिज पानी मिलता है। ज्वालामुखी में कैल्शियम, सोडियम तथा आयोडीन युक्त पानी के झरने उपलब्ध हैं।

8. **मैग्नेसाइट** (Magnesite) - इसके भण्डार **भरमौर** तालुके के नचेन्तर क्षेत्र में मिले हैं, जहां 60 हज़ार टन खनिज होने का अनुमान है। सुई क्षेत्र में भी मैग्नेसाइट मिला है। मैग्नेसाइट के इस भण्डार से 30 % से 40% तक मैग्नीशियम होने का अनुमान है।

9. **तेल और प्राकृतिक गैस** (Oil and Natural Gas) - **बिलासुपर, काजा** (लाहौल-स्पीति), **कांगड़ा, ढाबणा** (मण्डी) आदि क्षेत्रों में तेल और प्राकृतिक गैस की खोज की जा रही है

10. **बैराइटस** (Barytes) - उत्तम प्रकार का बैराइटस **कान्ति-मिशवा-तांत्याना, ढाला-पिपली और सिरमौर** ज़िले में टाइलर घर क्षेत्र में पाया गया है। कान्ति-तात्याना क्षेत्र में लगभग 15 हज़ार टन के भण्डार मौजूद हैं। शिमला के नालदेरा क्षेत्र में भी बैराइट मिलने की सम्भावना है।

हिमाचल में उद्योग
(Industry in Himachal)

1966 ई. में पंजाब के कुछ क्षेत्र हिमाचल प्रदेश में शामिल होने से, प्रदेश में औद्योगीकरण का विकास आरम्भ हुआ। इस दौरान सोलन और पांवटा साहब में लघु इकाइयाँ स्थापित की गयीं, जिनमें शाल व गलीचे बनाने, लकड़ी का फर्नीचर तैयार करने और जूते बनाने का प्रशिक्षण भी दिया जाता था।

परन्तु 1967 ई. के बाद उद्योग विकास की ओर विशेष ध्यान दिया गया और इस समय तक प्रदेश में मध्यम और बड़े पैमाने की 460 व 37,476 लघु पैमाने की इकाइयां काम करने लगी थीं, जिनमें 2.50 लाख के लगभग लोगों को रोज़गार मिला था।

प्रदेश में उद्योगों के प्रकार (Kinds of Industries in the State)— प्रदेश में निम्न प्रकार के उद्योग स्थापित किए जा सकते हैं:

1. **वनों पर आधारित** (Forest Based)- इस क्षेत्र में लकड़ी, बिरोजे व जड़ी-बूटियों पर आधारित उद्योग आते हैं।

2. **बागवानी पर आधारित** (Horticulture Based)- इस प्रकार के उद्योगों में फलों की पैकिंग के लिए डिब्बे आदि बनाना, फलों को डिब्बों में बन्द करने, मुरब्बा या आचार बनाने और रस निकालने सम्बन्धी उद्योग आते हैं।

3. **खनिजों पर आधारित** (Mineral Based)-प्रदेश में धरती विभिन्न प्रकार के खनिजों से भरपूर है। खनिजों का दोहन करके उनसे वस्तुएं बनाने के कई उद्योग चल सकते हैं।

4. **कृषि पर आधरित** (Agriculture Based)- इसमें कृषि पर आधारित उद्योग आते हैं।

5. अन्य (Others)-उपरोक्त के अतिरिक्त प्रदेश की जलवायु धूल रहित होने के कारण इलैक्ट्रोनिक वस्तुओं के निर्माण के लिए अति उपयोगी है। प्लास्टिक और प्लास्टिक की वस्तुएं तैयार करने, घड़ियां बनाने, अन्य कई उपकरण तैयार करने सम्बंधी उद्योगों का भी यहां विकास हुआ है और हो सकता है अखबारी कागज़ की तैयारी सम्बंधी घास और लकड़ी उपलब्ध होने के कारण इस सम्बंधी उद्योग भी यहां लगाये जा सकते हैं।

कांगड़ा क्षेत्र में चाय सम्बंधी उद्योगों के लगने की गुंजाइश है। प्रदेश के निम्न क्षेत्रों में शहतूत पर्याप्त मात्रा में होने के कारण रेशम के कीड़े पाल कर रेशम से सम्बंधित उद्योग लगाये जा सकते हैं। यहाँ ऊन, पश्मीने व चमड़े से सम्बंधित घरेलू व मध्यम उद्योग लगाये जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त प्रदेश में जल-विद्युत्, पर्यटन, सूचना प्रौद्योगिकी एवं जीव-विज्ञान (Bio-Tech.) से सम्बंधित उद्योगों की अपार संभावनाएँ हैं।

प्रसिद्ध उद्योग
(Important Industries)

1. सीमेंन्ट फैक्टरियाँ (Cement Factories) - हिमाचल प्रदेश में (सिरमौर) में 600 टन प्रतिदिन सीमेंट उत्पादन, बरमाणा बिलासपुर में 1700 टन प्रतिदिन की 2 इकाइयां लगाई गई हैं। दाड़लाघाट सोलन में 8 लाख टन प्रति वर्ष सीमेंट तैयार किया जाता है। बागा (बलग) सोलन में 20 लाख 5 हजार टन प्रतिवर्ष उत्पादन क्षमता वाला सीमेंट का कारखाना है।

अन्य सीमेंट संयंत्र गुम्मा (शिमला), रुहांडा (मण्डी), सुन्दरनगर (मण्डी), अलसिंडी (मण्डी), बरोह सिंह (चम्बा) आदि में हैं।

2. बिरोजा फैक्टरियां-रघुनाथपुरा (बिलासपुर) व नाहन सिरमौर।

3. नाहन फाऊंडरी नाहन (सिरमौर)– यह हिमाचली क्षेत्र में अपनी प्रकार का पहला उद्योग था, जिसे 1867 ई. में राजा शमशेर प्रकाश ने स्थापित किया था। यहां पम्पिंग सैट, मोहरें व लोहे का अन्य सामान तैयार किया जाता था, परन्तु अब इसे बन्द करने की घोषणा कर दी गई है।

4. सोलन ब्रूरी सोलन-हिमाचल में शराब बनाने का पुराना कारखाना है। इसके अतिरिक्त हिमाचल खाद फैक्टरी (मझोली-नालागढ़) (सोलन), हिमाचल वूल प्रोसैसर्ज व हिमाचल ब्रस्टर्ड मिल्ज़ नालागढ़, फ्रूट प्रोसैसिंग यूनिट्स नालागढ़ व धौलाकुआं आदि प्रसिद्ध उद्योग हैं।

5. टैक्सटाइल–टैक्सटाइल क्षेत्र में बद्दी/बरोटीवाला (सोलन) में बिरला, वर्धमान, पशुपति व मालवा कॉटन आदि ग्रुप काम कर रहे हैं।

6. दवाइयाँ–दवा व आयुर्वेदिक दवाइयों के निर्माण में ए. आई. एम. आई. एल. (AIMIL), अलैम्बी (Alembi), सिपला (Cipla) कैडिला (Cadila), डाबर (Dabur), रैनबैक्सी (Ranbaxi), यूनिकौम (Unicom), पैनेसिया (Panacea) आदि कम्पनियों ने अपने उद्योग बद्दी/बरोटीवाला/पांवटासाहिब आदि क्षेत्रों में स्थापित किये हैं।

औद्योगिक विकास में सहायता के लिए प्रदेश सरकार ने कई स्वायत संस्थाएं स्थापित की हैं, जो उद्यमियों को ऋण, आर्थिक सहायता और कच्चा माल आदि उपलब्ध करवाती हैं। इनमें आर्थिक निगम जो औद्योगिक इकाइयों और ट्रांसपोर्टरों को ऋण देती हैं, हिमाचल प्रदेश खनिज व औद्योगिक विकास निगम जिसकी आर्थिक सहायता भारतीय औद्योगिक विकास बैंक करता है तथा जिसकी अपनी औद्योगिक इकाइयाँ हैं, हिमाचल प्रदेश हैण्डीक्राफ्ट व हैण्डलूम कार्पोरेशन, हिमाचल प्रदेश खादी व ग्रामोद्योग बोर्ड, हिमाचल प्रदेश लघु उद्योग व निर्यात निगम तथा हिमाचल प्रदेश इलैक्ट्रोनिक्स कार्पोरेशन आदि प्रमुख हैं। अब कुल निगमों में आय के साधन का ध्यान रखते हुए एक दूसरे में विलय किया जा रहा है। प्रदेश में औद्योगिक विकास सर्वेक्षण अभी तक चल रहा है। निकट भविष्ट में औद्योगिक क्षेत्र में भारी क्रांति आने की संभावनाएं हैं।

हिमाचल प्रदेश में पनविद्युत् का विकास
(Development of Hydro Power in Himachal)

हिमाचल प्रदेश में प्राकृतिक जल संसाधनों का दोहन कर आर्थिक स्थिति में बेहतर सुधार लाए जा सकते हैं। हिमाचल में कुल 23 हजार मैगावॉट पनविद्युत् उत्पादन क्षमता का अनुमान लगाया जा रहा है। अभी तक पनविद्युत् दोहन कर 6725 मैगावॉट विद्युत उत्पाद किया जा रहा है। हिमाचल प्रदेश में राज्य सरकार, केन्द्र सरकार, संयुक्त क्षेत्र तथा निजी क्षेत्र के सहयोग से चलाई जा रही परियोजनाओं से राज्य को 625 करोड़ का राजस्व प्राप्त हो रहा है। इन परियोजनाओं से प्राप्त कुल विद्युत् उत्पादन हिमाचल प्रदेश राज्य विद्युत् बोर्ड द्वारा किया जा रहा है। हिमाचल प्रदेश में आरम्भ की गई **"अटल बिजली बचत योजना"** के अन्तर्गत घरेलू उपभोक्ताओं को चार-चार सी.एफ. एल. बल्ब उपलब्ध करवाए गए हैं।

हिमाचल प्रदेश में पनविद्युत् दोहन का सूत्रपात सन् 1908 ई. को चम्बा रियासत से हुआ। चम्बा के राजा भूरि सिंह ने पहाड़ी रियासतों में सर्वप्रथम पनविद्युत् परियोजना का निर्माण करवाया। इसके पश्चात् अन्य रियासतों में भी जल के अक्षय भण्डार से बिजली उत्पन्न करने की परम्परा आरम्भ हुई। **सन् 1912 ई.** में शिमला के समीप चाम्बा में विद्युत् उत्पादन आरम्भ हुआ। पंजाब की कांगड़ा रियासत के मण्डी में बस्सी-शानन पनविद्युत् परियोजना 10 मार्च, 1933 ई. को भारत के तत्कालीन वाइसरॉय तथा गवर्नर जनरल विलिंग्डन ने जनता को समर्पित की थी।

हिमाचल प्रदेश में स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व बिजली की आपूर्ति कुछ रियासतों के मुख्यालय में ही उपलब्ध थी। सन् 1948 ई. में हिमाचल प्रदेश गठन पर राज्य में कुल विद्युत् आपूर्ति 550 किलोवाट थी। पनविद्युत् क्षेत्र को सरकारी नियन्त्रण में रखने के आशय से सन् 1948 ई. को विद्युत् आपूर्ति अधिनियम-1948 हिमाचल प्रदेश विधानसभा में पारित हुआ। सन् 1917 ई. को **हिमाचल प्रदेश राज्य विद्युत् बोर्ड** का गठन हुआ। राज्य में विद्युत् उत्पाद, संचार तथा वितरण के समस्त कार्य विद्युत् बोर्ड को सौंपे गए। पनविद्युत् के क्षेत्र में बढ़ती विकासात्मक गति ने हिमाचल प्रदेश को आर्थिकी सुदृढ़ करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पनविद्युत् की अपार सम्भावनाओं को सही ढंग से कार्यान्वित करने के दृष्टिगत सरकार ने 6 जनवरी, 2011 को हिमाचल प्रदेश **विद्युत् नियामक आयोग** का गठन किया है। सन् 2010 से हिमाचल प्रदेश में पनविद्युत् का कार्य विभाजन इस प्रकार किया गया।

1. **पनविद्युत उत्पादन** (Generation) - इस कार्य का दायित्व हिमाचल प्रदेश पॉवर कॉरपोरेशन कम्पनी लिमिटेड (PPCL) को सौंपा गया है। राज्य में पनविद्युत् उत्पादन से सम्बन्धित समस्त कार्य इस कम्पनी को सौंपे गए हैं।

2. **पनविद्युत् संचार** (Transmissions) - पनविद्युत् उत्पाद के पश्चात् विद्युत् संचरण (Transmission) का कार्य **हिमाचल प्रदेश पॉवर ट्रांसमिशन कम्पनी लिमिटेड** (HPPCL) को सौंपा गया। यह कम्पनी पनविद्युत् संचरण की समस्त व्यवस्थाओं को करेगी।

3. **पनविद्युत् वितरण** (Distribution) - राज्य में पनविद्युत् (Distribution) का कार्य **हिमाचल प्रदेश राज्य विद्युत् बोर्ड लिमिटेड** (HPSEB Ltd.) को सौंपा गया है। विद्युत् बोर्ड लिमिटेड पनविद्युत् वितरण कार्य के साथ-साथ घरेलू उपभोक्ता विद्युत् बिलिंग का कार्य भी करेगा।

इन तीन कम्पनियों के कार्यों की निगरानी के लिए ऊर्जा निदेशालय की सन् 2010 में स्थापना की गई। हिमाचल प्रदेश में पनविद्युत् उत्पादन तीन क्षेत्रों (1) **राज्य** (State Sector) **(2) केन्द्र और संयुक्त क्षेत्र** (Central Joint Sector) **(3) निजी क्षेत्र** (Private Sector) में हो रहा है।

हिमाचल प्रदेश की पनविद्युत् उत्पादन क्षमता 2300 मैगावाट आंकी गई है। यह पनविद्युत् उत्पादन हिमाचल प्रदेश से प्रवाहित हो रही पांच मुख्य नदियों पर नदी घाटी पर आधारित है। इनमें **सतलुज घाटी-10445** मैगावाट, **ब्यास घाटी-5339** मैगावाट, **चिनाब घाटी-3453** मैगावाट, **रावी घाटी-2952** मैगावाट तथा **यमुना घाटी-811** मैगावाट पनविद्युत् उत्पाद रखा गया है।

जल विद्युत् परियोजनाएँ
(Hydel Power Projects)

हिमाचल में जल विद्युत् योजनाएं आरम्भ हो जाने से प्रदेश की आर्थिकी पर अच्छा प्रभाव पड़ा है। प्रदेश की प्रमुख जलविद्युत् योजनाएं निम्नलिखित हैं:-

1. **संजय विद्युत् परियोजना या भावा परियोजना** (Bhaba Project) - यह परियोजना किन्नौर जिले में हुरी गांव में भावा खड्ड पर कार्यान्वित की गयी है। इसकी तीन इकाइयाँ हैं। प्रत्येक से 40 मैगावाट कुल 120 मैगावाट बिजली पैदा की जा रही है। इस पर 125.22 करोड़ खर्च होने का अनुमान है। इस परियोजना में भावा खड्ड के पानी को 5.7 किलोमीटर लम्बी, 2.5 मीटर व्यास वाली सुरंग से ले जाकर 4.5 मीटर व्यास वाली सार्जशाफ्ट में डालकर 1410 मीटर लम्बी लोहे की शाफ्ट से बनी 1.5 मीटर व्यास की तीन शाखाओं में ले जाकर भूमिगत पावर हाऊस में डाला गया है। अब यह योजना पूर्ण हो चुकी है।

2. **आन्ध्रा हाइडल परियोजना** (Andhra Hydel Project)- यह परियोजना शिमला ज़िले के **रोहड़ू** उपमण्डल की चड़गांव तहसील में चड़गांव के समीप **आन्ध्रा गांव** में तैयार की गयी है। इस परियोजना के अन्तर्गत 5.65 मैगावाट की तीन इकाइयां हैं। परियोजना की कुल बिजली उत्पादन क्षमता 16.95 मैगावाट है।

3. **रौंग-टौंग हाइडल परियोजना** (Rong Tong Hydel Project)- यह परियोजना लाहौल-स्पीति में स्पीति नदी के सहायक रौंग-टौंग नाले के पानी से बिजली तैयार करने हेतु कार्यान्वित की गयी है। इसमें 2 मैगावाट बिजली पैदा हो रही है। यह दिसम्बर 1986 में चालू हो गयी है। इस योजना की विशेषता यह है कि यह समुद्रतल से 3660 मीटर की ऊँचाई पर तैयार की गयी है।

4. **बिनवा हाइडल परियोजना** (Binwa Hydel Project)- यह परियोजना काँगड़ा ज़िले के **बैजनाथ** के समीप **उतराला** में कार्यान्वित की गई है। इसमें 6 मैगावाट बिजली उत्पादन की क्षमता है। इस पर 12.82 करोड़ रुपये खर्च हुए हैं।

5. **गज परियोजना** (Gaj Project)- यह काँगड़ा जिले में शाहपुर के नजदीक **गज** और **ल्योण** खड्डों के पानी से कार्यान्वित की गयी है। इससे 10.5 मैगावाट बिजली पैदा होगी। इस पर 40 करोड़ रुपये के लगभग खर्च हुआ। गज खड्ड के किनारे बिठड़ी गाँव के पास पावर हाऊस बनाया गया है।

6. **बनेर परियोजना** (Baner Project)- यह परियोजना धर्मशाला से 25 किलोमीटर दूर **बनेर खड्ड** के पानी से कार्यान्वित की गयी। इससे 12.5 मैगावाट बिजली पैदा होगी। इस पर 40.54 करोड़ रुपये खर्च आने का अनुमान है। ये दोनों योजनाएँ मई-जून, 1996 में चालू की गई हैं।

7. **थिरोट परियोजना** (Thirot Project)- यह परियोजना लाहौल-स्पीति ज़िले की लाहौल घाटी में **थरोट नाले** के पानी से समुद्रतल से 2970 मीटर की ऊँचाई पर कार्यान्वित की गयी। इससे 4.5 मैगावाट बिजली पैदा की जा रही है।

8. **लारजी हाइडल परियोजना** (Larji Hydel Project)- यह परियोजना कुल्लू ज़िले में भुन्तर से थोड़ा दूर लारजी नामक स्थान पर **ब्यास नदी** के पानी से कार्यान्वित हुई। इसके अन्तर्गत 45.3 मीटर ऊँचा बाँध बना कर पानी को 15 किलोमीटर लम्बी और 8.5 मीटर व्यास वाली सुरंग से ले जाकर गिराया गया है। इससे 126 मैगावाट बिजली पैदा होगी। इस परियोजना पर 662 करोड़ रुपये व्यय होने का अनुमान है।

9. **कोल डैम परियोजना** (Kol Dam Project)- यह परियोजना सतलुज नदी पर डैहर से 6 किलोमीटर ऊपर को **कोल नामक स्थान** पर 163 मीटर ऊँचा **राकफिल डैम** बनाकर कार्यान्वित की जा रही है। 11.7 मीटर व्यास वाली 1 किलोमीटर लम्बी सुरंग द्वारा पानी **सतलुज** नदी के बाएं किनारे पावर हाऊस में गिराया जाएगा। इस परियोजना से 800 मैगावाट बिजली उत्पन्न की जाएगी और इस इस पर 5360 करोड़ रुपये के लगभग व्यय होगा। इसका कार्यान्वयन नैशनल थर्मल पावर कारपोरेशन (NTPC) द्वारा किया जा रहा है।

10. नाथपा-झाकड़ी परियोजना (Nathpa-Jhakhari Project)- यह प्रदेश की अभी तक सबसे बड़ी विद्युत परियोजना है, जिससे 1500 मैगावाट बिजली पैदा हो रही है। इस परियोजना पर 6,000 करोड़ के लगभग व्यय होने का अनुमान है। यह राज्य और केन्द्रीय सरकार द्वारा संयुक्त रूप से विश्व बैंक की सहायता से चालू की गई है। इसके कार्यान्वयन के लिए एक स्वतन्त्र निगम **नाथपा-झाकड़ी निगम** (NJPC) बनाया गया था, जो अब '**सतलुज जल विद्युत निगम**' (SJVN Ltd.) के नाम से पुनर्नामित है।

11. कड़छम वांगतु परियोजना (Karchham Wangtu Project)- इस परियोजना में कड़छम के पास **सतलुज** के पानी को मोड़ कर 15.5 किलोमीटर लम्बी सुरंग से ले जाकर 280 मीटर शीर्ष से वांगतु (किन्नौर) के पास भूमिगत पावर हाऊस में गिराकर 1000 मैगावाट बिजली पैदा की जायेगी। इस योजना पर 6314 करोड़ रुपये खर्च होने का अनुमान है।

12. घानवी परियोजना (Ghanvi Project)- यह परियोजना ज्योरी के पास **सतलुज नदी** से मिलने वाली **घानवी खड्ड** के पानी से कार्यान्वित की जा रही है, जिससे 22.5 मैगावाट बिजली पैदा होगी और इस पर 95 करोड़ रुपये व्यय होने का अनुमान है। इसे कार्यान्वयन के लिए निजी क्षेत्र में दिया गया है।

13. बास्पा हाइडल परियोजना (Baspa Hydel Project)- यह परियोजना सतलुज की सहायक नदी **बास्पा** के पानी से दो चरणों में कार्यान्वित की जाएगी। इससे 300 मैगावाट बिजली पैदा की जा सकेगी और इस पर 600 करोड़ रुपये व्यय होने का अनुमान है।

14. धमवाड़ी-सुंडा परियोजना (Dhamawari-Sunda Project)- यह शिमला जिले में **पब्बर नदी** के पानी से कार्यान्वित की जाएगी। इससे 70 मैगावाट बिजली पैदा होगी और इस पर 150 करोड़ रुपये खर्च होने का अनुमान है। इसे कार्यान्वयन के लिए निजी क्षेत्र में दिया गया है।

15. चमेरा हाइडल परियोजना (Chamera Hydel Project)- चम्बा में रख नामक गाँव के पास **रावी नदी** पर बाँध बना कर चमेरा हाइडल परियोजना कार्यान्वित की जा रही है। इसे तीन चरणों में कार्यान्वित किया जायेगा। इसमें हिमाचल प्रदेश का भाग भी होगा। इस परियोजना में 22 किलोमीटर सुरंग से पानी ले जाकर 411 मीटर की ऊँचाई से गिराया जाएगा। इससे पहले चरण में 540 मैगावाट, दूसरे चरण में 300 व तीसरे चरण में 231 मैगावाट बिजली पैदा होगी।

16. पार्वती हाइडल परियोजना (Parbati Hydel Project)- यह परियोजना कुल्लु की **पार्वती नदी** के पानी से कार्यान्वित होगी। यह परियोजना तीन चरणों में पूरी होगी। इससे 2051 मैगावाट बिजली पैदा की जा सकेगी। पहले चरण में 750 मैगावाट, दूसरे चरण में 800 मैगावाट तथा तीसरे में 501 मैगावाट बिजली तैयार की जा सकेगी।

17. रामपुर परियोजना (Rampur Project)- 412 मैगावाट की यह परियोजना सतलुज जल विद्युत् निगम द्वारा रामपुर (शिमला) के समीप बनाई जा रही है।

साथ ही राज्य सरकार द्वारा कई छोटी-छोटी परियोजनाएं (माइक्रो मिनी प्रोजैक्ट्स) कार्यान्वित किये जाने का प्रस्ताव है। जो दूर-दराज के क्षेत्रों में चलाई जाएगी ताकि वहां की बिजली सम्बन्धी स्थानीय आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके।

हिमाचल प्रदेश में लगभग पांच सौ पनविद्युत् परियोजनाएं प्राईवेट क्षेत्र में आवंटित की गई हैं। उनमें से 100 मैगावाट या इससे अधिक पनविद्युत् उत्पादन क्षमता रखने वाली कुछ परियोजनाओं का वर्णन कर दिया गया है। अन्य पनविद्युत् परियोजनाओं का निर्माण निजी क्षेत्र में विभिन्न कम्पनियों द्वारा किया जाएगा। हिमाचल प्रदेश पॉवर कार्पोरेशन लिमिटेड (HPPCL) द्वारा यह **शौंग कड़छम**-450 मैगावाट, **सैंज**-100 मैगावाट, **सावड़ा कुडडू**-111 मैगावाट, काशंग-243 मैगावाट, **रेणुका बांध**-40 मैगावाट तथा **चढ़गाव-मझगांव**-42 मैगावाट पनविद्युत परियोजनाओं का निर्माण कार्य चलाया जा रहा है। ब्यास नदी पर नादौन के समीप 75 मैगावाट की धौलासिद्ध पनविद्युत् परियोजना का कार्य आरम्भ करने की औपचारिकताएं पूरी की जा रही हैं।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न
(Important Questions)

1. हिमाचल प्रदेश की कृषि की प्रमुख विशेषताएं लिखिए।

   Write down the main features of Agriculture in Himachal.

2. हिमाचल प्रदेश को कृषि-जलवायु के आधार पर कितने भागों में बांटा जा सकता है? वर्णन करें।

   In how many agro-climatic divisions have Himachal been distributed? Explain.

3. हिमाचल प्रदेश की प्रमुख फसलों का वर्णन करें।

   Explain the main Crops of Himachal Pradesh.

4. हिमाचल प्रदेश की प्रमुख नकदी फसलों का वर्णन करें।

   Discuss the main cash crops of Himachal.

5. सब्जियों के अनुकूल जलवायु के आधार पर हिमाचल के विभिन्न खण्डों का वर्णन करें।

   Discuss the different zones of Himachal with regard to climate suitable for vegetables.

6. बागवानी के आधार पर हिमाचल के विभिन्न खण्डों का वर्णन करें।

   Explain the different zones of Himachal based on Horticulture.

7. हिमाचल में बागवानी गतिविधियों के विविधीकरण की व्याख्या कीजिए।

   Explain the diversification of horticulture activites of Himachal.

8. आधुनिक हिमाचल में हुए प्रमुख भूमि सुधारों का वर्णन करें।

   Explain the main land reforms of modern Himachal.

9. हिमाचल की वनसम्पदा पर नोट लिखिए।

   Write note on Forest wealth of Himachal.

0. हिमाचल प्रदेश के वनों के महत्त्व पर चर्चा कीजिए।

   Discuss the importance of the forests of Himachal Pradesh.

1. हिमाचल के प्रमुख खनिज पदार्थों का वर्णन करें।

   Explain the main minerals of Himachal.

2. हिमाचल के जल विद्युत् के विकास तथा प्रमुख जल विद्युत् परियोजनाओं का संक्षेप में वर्णन करें।

   Explain the development of hydel power projects and the main Hydel Power Projects o Himachal.

14 हिमाचल की जनजातियां
(TRIBES OF HIMACHAL)

भूमिका (Introduction)

हिमाचल प्रदेश में अनेक जनजातियां पाई जाती हैं, जिनमें से अधिकांश खानाबदोश हैं, फिर भी अनेक जनजातियों ने खानाबदोश का जीवन त्याग कर स्थाई जीवन बिताना आरम्भ कर दिया है। राज्य की जनजातियों में किन्नौर, गुज्जर, पंगवाल, गद्दी, लाहौली आदि प्रमुख जन जातियां हैं। जनसंख्या की दृष्टि से चम्बा जिले में सबसे अधिक जनजातियां पाई जाती हैं। दूसरे स्थान पर किन्नौर जिला है, जहां किन्नौर जनजाति पाई जाती है। गुज्जर हिमाचल के मूल निवासी नहीं हैं। पंगवाल चम्बा की प्रमुख जनजाति है। गद्दी जनजाति मण्डी, भरमौर, बिलासपुर तथा कांगड़ा में पाई जाती है। इस प्रकार हिमाचल अनेक जनजातियों का राज्य है।

हिमाचल प्रदेश की प्रमुख जनजातियां
(Main Tribes of Himachal)

1. किन्नर अथवा किन्नौरा (Kinner or Kannaura)–किन्नरों के बारे में ऋग्वेद महाभारत और कालीदास की कृतियों में उल्लेख मिलता है। किन्नर या **किन्नौरा** वर्तमान किन्नौर निवासियों को कहते हैं। किन्नर शब्द संस्कृत में दो शब्दों किम+नरः से बना है जिसका शाब्दिक अर्थ है ये कैसे नर हैं? (अयम् किम नरः)। यह प्रश्न संभवतः इस कारण उठा, क्योंकि किन्नर पुरुषों की दाढ़ी नहीं होती है जोकि एक पुरुष की पहचान है। ऋग्वेद, महाभारत व अन्य भारतीय वांग्मय में किन्नरों का वर्णन यक्षों और गंधर्वो के साथ आता है। उच्च गुणों, सरल स्वभाव, सुन्दर शरीर, सुरीले कंठ और

किन्नर जनजाति के लोग

अन्य गुणों के कारण इन्हें शास्त्रों में देव की संज्ञा दी गई है। अर्जुन को अश्वमेध यज्ञ के घोड़े की रक्षा करते समय हिमालय में किन्नर मिले थे। जहां किन्नर अति प्राचीन काल से लेकर अभी तक अपनी मौलिकता बनाए हुए हैं। किन्नरों को खस अथवा खसिया भी कहा जाता है संभव है कि यक्ष शब्द विकृत होकर कालान्तर में खस बन गया हो। किन्नौर विभिन्न जाति समूहों से सम्बन्ध रखते हैं। उनमें से कुछ का सम्बन्ध कनेत, खस, खसिया आदि राजूपतों से है। किन्नौरों में कोली (Kole) जुलाहे, हल चलाने वाले 'हली', बढ़ी, नगालू आदि लोहार, तरखान, चांदी का काम करने वाले भी हैं। किन्नौरों का राजपूत जाति समूह पूह के उच्च भागों में निवास करता है, जो बौद्ध धर्म के अनुयायी हैं तथा जिन्हें जद्द या जद (Zad) कहते हैं। इस समूह की तीन श्रेणियां ओरंग (Orang), मोरंग (Morang) तथा वज़ा (Waza) हैं, ये तीन श्रेणियां आगे अनेक खानदानों तथा उप-खानदानों (Sub Kahndans) में बंटी हुई हैं। किन्नौरों का राजूपत जाति समूह अपने ही समूह के लोगों के साथ खान-पान तथा वैवाहिक सम्बन्ध रखते हैं। किन्नौरा जन जाति में ब्राह्मण वंशज के लोग भी शामिल हैं। किंन्नर हिन्दू और बौद्ध-दोनों धर्मों के अनुयायी हैं। इन्हें-नेगी कह कर भी पुकारा जाता है, जो एक सम्मान सूचक सम्बोधन है। हिन्दू देवी-देवताओं में ये लोग बद्रीनाथ, महेश्वर और भगवती में विश्वास रखते हैं। भेड़-बकरियां और घोड़े पालना तथा ऊन का व्यापार करना इन लोगों का मुख्य व्यवसाय था परन्तु अब ये कृषि और बागवानी में भी किसी से पीछे नहीं। किन्नरों में कई लोग उच्च शिक्षा प्राप्त हैं और देश और प्रदेश में महत्त्वपूर्ण पदों पर आसीन हैं।

2. गद्दी (Gaddi)–गद्दी चम्बा के भरमौर क्षेत्र के निवासी हैं। ये लोग धौलाधार की तलहटी में भी बसते हैं। गद्दी लोग अपने क्षेत्र को '**गदरीन**' अर्थात् गद्दियों की जगह या शिव भूमि कहते हैं। कुछ गद्दी लोग कांगड़ा में भी बसे हैं। धौलाधार पर्वत शृंखला में गद्दी लोग पारिवारिक रूप से आपस में जुड़े हैं। इतिहासकार गद्दियों को मुस्लिम आक्रमणों के डर से पहाड़ों की ओर भागकर आने वाले हिन्दू लोग मानते हैं परन्तु यह बात सत्य नहीं लगती। वास्तविक गद्दी लोग अति प्राचीन और हिमाचल के मूल निवासियों में से हैं। ऐसा गद्दियों के परम्परागत विशिष्ट पहरावे से पता चलता है। वैसे पाणिनि की अष्टाध्यायी में गद्दी और गव्दिका प्रदेश का वर्णन मिलता है। जिसका अपभ्रंश रूप गद्दी है। अत: इस जनजाति के लोग अति प्राचीन हैं। गद्दियों में हिन्दू खत्री लोगों का मानना है कि उनके पूर्वज मुसलमानों के आक्रमण के बाद लाहौर से भरमौर आकर बस गए थे। इसलिए उनमें एक कहावत है कि उजड़िया लाहौर बसिया भरमौर अर्थात् लाहौर से उजड़े लोग भरमौर में आकर बस गए। गद्दी लोग भेड़-बकरियां पालने का मुख्य व्यवसाय करते है। सर्दियों में ये ठंडे इलाके छोड़ कर निम्न क्षेत्रों में अपने पशुओं समेत आ जाते हैं, और गर्मी पड़ने पर पुन: ऊपरी क्षेत्रों में चले जाते हैं। रियासती काल में ये लोग पशु चराने के बदले में शासक को कर देते थे।
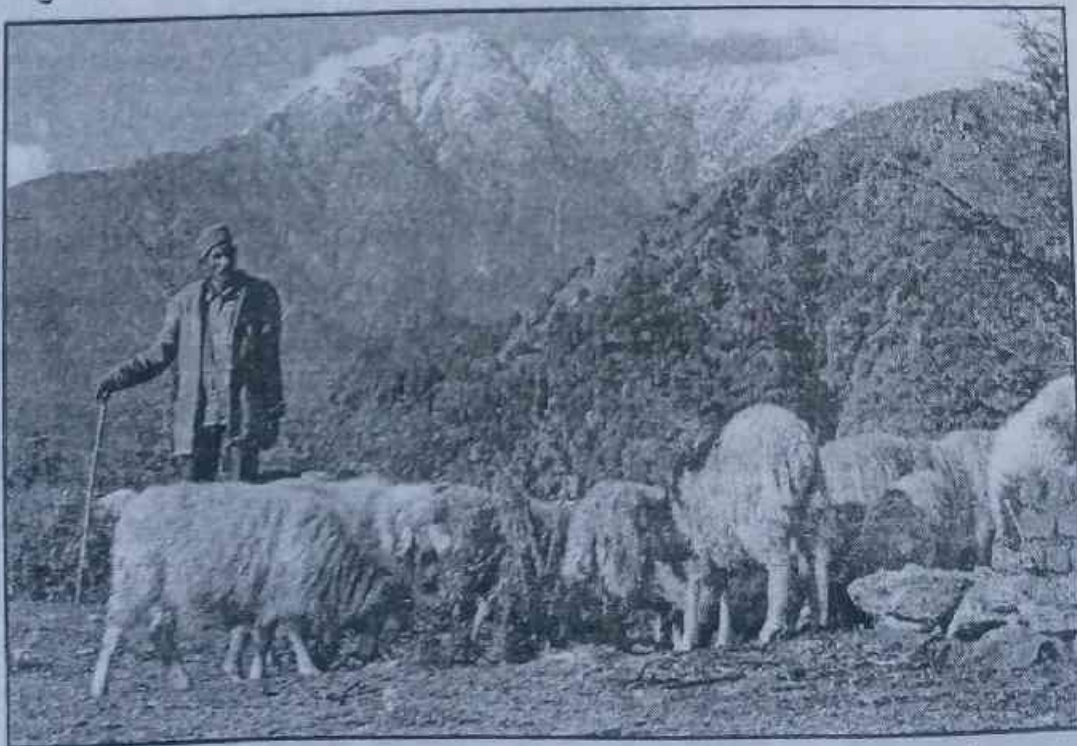
गद्दी जनजाति के लोग

3. पंगवाल (Pangwal)–चम्बा के पांगी क्षेत्र के लोगों को पंगवाल कहते हैं। पांगी इस समय प्रदेश का सबसे दुर्गम क्षेत्र है, जिसका सर्दियों में देश-प्रदेश के हर भाग से सम्पर्क कट जाता है। यही क्षेत्र है जो अभी तक किसी भी ओर से सड़क से नहीं जुड़ा है। दंतकथा के अनुसार मुस्लिम युग में कुछ राजपूत अपनी स्त्रियों सहित कुछ गुलाम आदि को साथ लाकर इस दुर्गम क्षेत्र में बस गए। पुरुष लोग युद्ध में भाग लेने के लिए मैदानों में गए और वापिस नहीं आए। स्त्रियों ने गुलाम नौकरों से विवाह कर लिए और पंगवाले उनकी संतान हैं, परन्तु यह बात मनघड़न्त लगती हैं। इनका व्यवसाय कृषि है। पंगवाल समाज कई जातियों तथा उपजातियों में बंटा है। पंगवाल अनाज से छड़क को अलग नहीं करते हैं, उसके साथ ही पीस लेते हैं, क्योंकि इस क्षेत्र में अनाज की भारी कमी है। पंगवाल समाज में औरतों का स्थान उच्च है।

4. लहौले व स्पितन (Lahaule-Sapitin)–लाहौल के निवासियों को स्थानीय भाषा में लहौले कहा जाता है, जब कि स्पितन को भोट कह कर पुकारते हैं। यद्यपि इन लोगों की शक्लें तिब्बत के निवासियों से मिलती हैं परन्तु इनका कद अपेक्षाकृत छोटा है। लाहौल निवासी हिन्दू और बौद्ध दोनों धर्मों के अनुयायी हैं। स्पितन बौद्ध धर्मावलम्बी हैं किन्तु ये बौद्ध धर्म भी हिन्दू धर्म से ही प्रभावित हुआ है। लाहौल जनजाति की उत्पत्ति आर्य तथा मंगोल श्रेणी के लोगों के सम्मिश्रण से हुई है। स्पितन लोग पूरी तरह से तिब्बत प्रजाति के हैं। लाहौल निवासी हिन्दू और बौद्ध धर्म के अनुयायी हैं।

लाहौल जनजाति में मुख्य रूप से दो जाति वर्ग पाये जाते हैं-एक उच्च वर्ग तथा दूसरा निम्न वर्ग। उच्च वर्ग में राजपूत, ब्राह्मण, ठाकुर तथा राठी शामिल हैं, जब कि निम्न वर्ग में हाली, लोट तथा लोहार शामिल हैं। लाहौलों में अन्तर्जातीय तथा बहुपति विवाह प्रचलित हैं। उनमें मुख्यत: दो प्रकार के विवाह प्रचलित हैं। पहला व्यवस्थित (Arranged) विवाह, जिसे **तभगस्तन** (Tabhagstan) कहा जाता है तथा दूसरा चोरी का विवाह जिसे स्थानीय भाषा में **भगस्तन** (Bhagstan) कहा जाता है। व्यवस्थित विवाह में लड़की तथा लड़के के माता-पिता की सहमति होती है, जब कि दूसरी प्रकार के विवाह में लड़की तथा लड़के को अपनी इच्छानुसार विवाह करने की आज्ञा होती है।

लाहौल जनजाति के लोग सफेद अथवा भूरे रंग का तिब्बती चल (Gown) पहनते हैं, परन्तु युवा कोट पहनते हैं। वे सिर पर कुल्लू प्रकार की टोपी पहनते हैं। वे टांगों को ढकने के लिए गर्म सुथन (Suthan) पहनते हैं। लाहौल स्त्रियां सुन्दर दिखने के लिए आभूषण पहनती हैं। साधारणतया लाहौल मांसाहारी हैं। वे किसी भी प्रकार के भोजन तथा पेय को निषिद नहीं समझते। वे लुगरी नामक स्थानीय पेय का प्रयोग करते हैं।

लाहौल जनजाति के लोग मुख्यत: व्यापारिक प्रवृति के हैं। अधिकतर लोग अपने क्षेत्र की वस्तुएं बेचने के लिए दूसरे क्षेत्रों में जाते हैं। व्यापार के साथ-साथ कुछ लोग कृषि कार्य भी करते हैं। वे आलू, कुठ, जीरा आदि नकदी फसले पैदा करते हैं और दूसरे क्षेत्रों को भेजते हैं। शरद ऋतु में अतिशील होने के कारण ये लोग अपने पशुओं के साथ निचले क्षेत्रों में आ जाते हैं।

5. गुज्जर (Gujjar)- गुज्जर हिमाचल के पशुपालकों की एक जनजाति है। गुज्जर गर्मियों में मैदानी इलाकों की गर्मी के कारण पहाड़ों पर चले जाते हैं और सर्दियों में ठण्ड से बचने के लिए मैदानी क्षेत्रों में चले आते हैं।

क्रूक के अनुसार गुज्जर नाम संस्कृत के शब्द गुज्जारा (वर्तमान राज्य गुजरात का पुराना नाम) से निकला है। एक अन्य धारणा के अनुसार गुज्जर वास्तव में गाय पालक थे, जिससे उनका नाम **गोचर्स** पड़ गया। यह नाम गुजरात और काठियावाड़ में प्रचलित है। बाद में यह शब्द बिगड़कर गुज्जर बन गया। समय के साथ-साथ गुज्जरों ने गाय पालन छोड़कर भैंस पालना शुरू कर दिया। गुज्जर स्वयं को कृष्ण के सौतेले पिता नन्द मिहिर के वंशज मानते हैं। हिमाचल के गुज्जरों की धारणा है कि वे पैगम्बर इशाक के वंशज हैं। हिमाचल प्रदेश में अधिकांश गुज्जर जम्मू क्षेत्र से आए हैं। हिमाचल प्रदेश में गुज्जर आमतौर पर चम्बा, मण्डी, बिलासपुर, सिरमौर और शिमला जिलों में रहते हैं।

गुज्जर घुमक्कड़ प्रवृति के लोग हैं। इस प्रकार के जीवन की उन्हें आदत पड़ गई है। अपनी गाय-भैंसों को चराने के लिए गुज्जरों को एक जंगल से दूसरे जंगल, मैदान से पहाड़ी व पहाड़ों से मैदानी क्षेत्रों में जाना पड़ता है। गुज्जरों की तीन-चौथाई आबादी चम्बा जिले में है, जो सर्दियों में पठानकोट, गुरदासपुर, बटाला, अभृतसर व होशियापुर के क्षेत्रों में चले जाते हैं। सिरमौर के गुज्जर देहरादून व सहारनपुर की ओर चले जाते हैं। हिमाचल प्रदेश सरकार ने केन्द्रीय सरकार

...सहायता से गुज्जरों को स्थाई निवास देने की कई योजनाएं तैयार कीं। 1962 में प्रत्येक गुज्जर परिवार को इस ...के साथ 5-5 एकड़ जमीन आवंटित की गई कि वे ऊंचे पर्वतीय क्षेत्रों में पशु चराने नहीं जाएंगे। 1966 में ...सरकार ने चम्बा जिले में साहू स्थान पर एक गुज्जर कालोनी का निर्माण किया। अपनी कमजोर आर्थिक स्थिति के ...गुज्जर आज भी अपना कोई स्थाई आवास नहीं बना पाए हैं।

6. **स्वांगला (Swangala)-** लाहौल उपमण्डल की पट्टन घाटी में स्वांगला जनजाति के लोग रहते हैं। चन्द्रा ...भागा घाटी के वासी स्वांगला जाति के लोगों को मौन या मुंटसी कहते हैं। ऐसा माना जाता है कि स्वांगला ब्राह्मण ...जो कश्मीर, चम्बा, किश्तवाड़ और जम्मू से आए थे। स्वांगला जाति का सामाजिक परिवेश में उच्च स्थान है। ...जिक संरचना में दूसरे नम्बर पर आते हैं।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न
(Important Questions)

1. हिमाचल प्रदेश की प्रमुख जनजातियों का उल्लेख कीजिए।
   Describe the main tribes of Himachal Pradesh.
2. हिमाचल प्रदेश की गद्दी, गुज्जर तथा किन्नर जनजातियों के बारे में आप क्या जानते हैं?
   What do you know about Gaddi, Gujjar and Kinnar tribes of Himachal Pradesh.

हिमाचल प्रदेश में कला तथा वास्तुकला का विकास
(DEVELOPMENT OF ART AND ARCHITECTURE IN HIMACHAL PRADESH)

भूमिका (Introduction)

कला संस्कृति का अभिन्न अंग है। कला के बिना संस्कृति का ज्ञान अधूरा है, क्योंकि सभ्यता के विकास के साथ-साथ ही कला का भी विकास हुआ है। जिस प्रकार प्रदेश की प्राकृतिक बनावट कलात्मक है, वैसे ही यहां मानव ने अपने हाथों से भी कला के विभिन्न पहलुओं का उच्च विकास किया। इस विकास पर इतिहास के कई का प्रभाव पड़े हैं। यहां की आरम्भिक कला को **'खश-कला'** के नाम से पुकारा जाता है। तत्पश्चात् उस पर आर्य संस्कृति प्रभाव पड़ा। तिब्बत का पड़ोसी होने के कारण तिब्बत क्षेत्रीय कला ने भी यहां के कलात्मक कार्यों पर अपनी छाप छोड़ी है। हिमाचल की वास्तुकला में मन्दिरों, दुर्गों तथा महलों का विशेष महत्त्व है। वहां के मन्दिरों के निर्माण में विभिन्न पहाड़ी शैलियों का प्रयोग किया गया है, जब कि औपनिवेशिक काल में पाश्चात्य वास्तुकला पर आधारित भवनों का निर्माण किया गया। औपनिवेशिक काल में अंग्रेज़ों ने शिमला में वास्तुकला को विशेष महत्त्व दिया तथा वहां अनेक ऐसे भवन बनाए, जो पाश्चात्य वास्तुकला पर आधारित थे। पहाड़ी रियासतों में चित्रकला तथा मूर्तिकला का भी खूब विकास हुआ। चित्रकला में 'कांगड़ा शैली' का खूब प्रचार-प्रसार हुआ परन्तु 1905 के भूकंप के बाद इस शैली का प्रभत्व कम हो गया।

हिमाचल की वास्तुकला
(Arctutecture in Himachal)

हिमाचल प्रदेश की वास्तुकला के उत्तम नमूने यहां पाए जाने वाले मन्दिर, राजाओं के महल, दुर्ग हैं। वास्तु-कला की दृष्टि में हिमाचल के मन्दिरों में विभिन्न शैलियों के दर्शन होते हैं, जिनका वर्णन निम्नलिखित है:-

(1) शिखर शैली (Shikhara Style)– इस शैली के मन्दिरों में छत से ऊपर का हिस्सा काफी ऊंचा तथा पर्वत की चोटी के समान होता है। धर्मशाला के निकट मसरूर में चट्टानों से बनाए गए मन्दिर इस शैली के मन्दिर हैं। प्रदेश में नर सिंह के मन्दिर भी इसी शैली के हैं।

(2) समतल शैली (Flat roofed Style)– टीहरा सुजानपुर का नर्वदेश्वर मन्दिर और नूरपुर का ब्रजवासी का मन्दिर इस शैली के मन्दिर हैं। इस शैली में मुख्यत: राम और कृष्ण के मन्दिर हैं। इनकी विशेषता यह है कि समतल छत होने के साथ-साथ इनकी दीवारों पर कांगड़ा शैली के चित्रों को चित्रित किया गया है। स्पीति के ताबो, 'कानम' और 'की' आदि के बौद्ध-मठ भी इसी शैली के हैं और उनकी दीवारों पर भी चित्रकला की गई है।

(3) गुम्बदाकार शैली (Goomed Style)– इस प्रकार के मन्दिरों पर मुग़ल और सिक्ख शैली का भी प्रभाव पड़ा है। गुम्बदाकार होने के साथ-साथ इनकी दीवारें थोड़ी झुकी हुई होती हैं। इस प्रकार के मन्दिरों में कांगड़ा के ब्रजेश्वरी देवी, ज्वाला जी, ऊना के चिन्तपूर्णी, बिलासपुर के नयना देवी आदि के नाम लिए जा सकते हैं। सिरमौर का रेणुका मन्दिर भी इसी शैली से सम्बन्धित है।

(4) स्तूपाकार शैली (Stupa Style)– जुब्बल के हाटकटी के हाटेश्वरी और शिव मन्दिरों को इस शैली में रखा जा सकता है। इस शैली के अधिकतर मन्दिर जुब्बल क्षेत्र में है।

(5) बन्द-छत-शैली- ये अति प्राचीन मन्दिर हैं। इनमें भरमौर में **लक्षणादेवी** मन्दिर और छतराड़ी के शक्ति देवी के मन्दिर शामिल हैं।

(6) पैगोडा शैली (Pagoda Style)– इस शैली के मन्दिरों में कुल्लू में **हिडम्बा देवी** (मनाली), त्रिपुरा नारायण (दरार), आदि **ब्रह्मा** (खोखण), मंडी का **पराशर देव मन्दिर** तथा किन्नौर में **सुंगरा का महेश्वर और चगाओ** मन्दिर आदि प्रमुख मन्दिर हैं।

(7) पैगोडा और बन्द छत की मिश्रित शैली (Slopingand Pagoda Style)– इस शैली के मन्दिर प्रायः **ऊपरी सतलुज घाटी** में पाए जाते हैं। इनमें बाहरी सिराज में निथर के **'बाहन-महादेव'** और **धनेश्वरी** देवी के मन्दिरों के नाम लिए जाते हैं।

मन्दिरों के निर्माण में चम्बा (भरमौर) के राजा मेरूवर्मन (550 ई.) और उसके कलाकार 'गूगा' का नाम अमर रहेगा, क्योंकि चम्बा के भरमौर में उन्होंने भव्य मन्दिरों का निर्माण किया जो हमारी अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर हैं।

उपरोक्त के अतिरिक्त हिमाचल प्रदेश में अन्य प्रसिद्ध मन्दिर चम्बा में **मणिमहेश,** चम्बा के तीन **विष्णु** और तीन **शिव** के मन्दिर, लाहौल में **त्रिलोकीनाथ,** बजौरा (कुल्लू) में **विश्वेश्वर महादेव,** नगर में **गौरीशंकर,** निरथ (शिमला) में **सूर्यमन्दिर** हैं जिनमें पत्थर से निर्माण कला का विकास हुआ है। इन्हें प्राचीन **नागर-शैली** के मन्दिर भी कहा जा सकता है।

बैजनाथ में बैद्यनाथ, मंडी शहर में त्रिलोकीनाथ, पंचवक्त्र और अर्धनारीश्वर के मन्दिर पुरानी मंडप शैली के मन्दिर हैं। करसोग के ममेल के मन्दिर भी प्रसिद्ध हैं।

जहां तक महलों का संबंध है, प्रायः प्रत्येक पहाड़ी राजा ने अपनी आर्थिक क्षमता के अनुसार भव्य महलों का निर्माण करवाया और दीवारों पर चित्रकारियां कीं। अब इनमें से कइयों के तो अवशेष ही बाकी बचे हैं। इनमें टीहरा-सुजानपुरा के राजा संसार चन्द के महल वास्तुकला के प्रतीक हैं। इसके अतिरिक्त कांगड़ा-किला, शाहपुर-किला, त्रिलोकपुरा किला, **नूरपुर-किला, मउकोट-किला,** कुल्लू में **मदनकोट** किला, बिलासपुर में त्यून-सरयून और बसेह के किले-भले ही आज खण्डहरों के रूप में विद्यमान हों परन्तु ये प्राचीन वास्तुकला की प्राचीन निधि हैं। इतनी बड़ी दुर्गम पहाड़ियों पर सामान पहुँचा कर किस प्रकार इनका निर्माण किया गया होगा, यह सोचने की बात है। इनमें इतना मजबूत समान लगाया है, जो प्रकृति के प्रकोपों को सहने के बावजूद सैकड़ों वर्षों के बाद भी बिना किसी मरम्मत के इन्हें खड़ा रखे हुए हैं।

औपनिवेशिक कालीन वास्तुकला
(Architecture During Colonvial Period)

औपनिवेशिक काल में भारत में बने भवनों में पाश्चात्य वास्तुकला को अपनाया गया। जब यूरोपीय लोग भारत में आये, तब उन्होंने पाश्चात्य ढंग की इमारतें बनाने का कार्य प्रारम्भ किया। इसमें पुर्तगाली अग्रणी थे। पुर्तगालियों ने अपने अधीनस्थ क्षेत्रों में गिरजाघर और राजभवन एक विशेष शैली से बनवाए। गोआ में सोलहवीं शताब्दी में निर्मित भव्य गिरजाघर उनी के स्मारक हैं। इस गिरजाघर में पाश्चात्य औपनिवेशिक वास्तुकला के लक्षणों की प्रधानता है। इसके बाद अंग्रेज़ों ने भी पश्चात्य शैली के भवन बनवाये। इनकी विशेषताएँ दीर्घ आकार, विस्तृत, खुले स्थान और सादगी थीं। कहीं-कहीं उन्होंने भारतीय ढंग से इमारतें भी बनवायीं। सूरत में उस समय के बने अंग्रेज़ों के मकबरे मुस्लिम शैली के हैं। जब अंग्रेज़ों ने धीरे-धीरे बम्बई, मद्रास, कलकत्ता जैसे प्रांतों की राजधानियाँ स्थापित कीं, तब उन्होंने इंग्लैण्ड में बने तत्कालीन ढंग के भवनों का अनुसरण किया। इन भवनों में **गाथिक** (Gothic), **रौमन** और **विक्टोरियन** युग की भवन निर्माण शैली की विशेषताओं का मिश्रण था। भारतीय राजाओं-महाराजाओं, नवाबों, सामन्तों, धनिकों ने भी ऐसे भवनों का आदर्श मानकर अपने-अपने स्थानों में इनकी नकल की।

ब्रिटिश शासन काल में (लोक निर्माण विभाग) Public Works Department की स्थापना हो जाने से पाश्चात्य ढंग की भवन-निर्माण कला को खूब प्रोत्साहन प्राप्त हुआ। इस विभाग ने भारतीय वास्तुकला की शैलियों की ओर तनिक भी ध्यान नहीं दिया।

उन्नीसवीं शताब्दी में इन परिस्थितियों में जो भी सरकारी भवन बने, वे इंग्लैण्ड की **विक्टोरियन वास्तुकला** की नकल थे। ब्रिटेन की महारानी विक्टोरिया के युग में जो भवन बनाये गये वे चूने और ईंटों के विशाल भवन थे। उनमें

लोहे के भारी भरकम गार्डर और ब्रेकेट का उपभोग भवन के भार को संभालने व सहारा देने के लिये किया गया। भवन के ऊपर भारी भरकम विशाल गुम्बद निर्मित किया गया। इस शैली के भवन उन्नीसवीं सदी में बनाये गये। **कलकत्ता और मद्रास** के गिरजाघर, **शिमला** और **लाहौर के केथेड्रल** (Cathedrals, गिरजाघर), **कलकत्ता और मद्रास के उच्च न्यायालय आदि** भवन इसके उदाहरण हैं।

बीसवीं सदी के प्रारंभ में भारत में दो प्रकार की स्थापत्य कला के मत प्रचलित थे। पहला, वे जो पुनर्जागण से तथा राष्ट्रीय भावनाओं से प्रेरित होकर भारतीय स्थापत्य कला का पुनर्जीवन चाहते थे और हिन्दू तथा मुस्लिम ढंगों की बैसी इमारतें बनाने के पक्ष में थे, जैसी राजस्थान, मध्य भारत तथा अन्य देशी रियासतों की राजधानियों और स्थानों में बनी थीं। दूसरे, वे लोग थे जो पाश्चात्य ढंग की स्थापत्य कला के आधार पर भवन बनाने के पक्ष में थे। परिणामस्वरूप पाश्चात्य शैली के आधार पर लार्ड कर्जन के शासन काल में **कलकत्ता** में '**विक्टोरिया मैमोरियल हाल**' में विक्टोरियन युग की वास्तुकला की कुछ विशिष्टताओं का समावेश था। ऐसा प्रतीत होता है कि विक्टोरिया मैमोरियल हाल इग्लैण्ड से उठा कर भारत भूमि पर स्थापित कर दिया हो।

भारत की राजधानी नई दिल्ली के निर्माण का कार्य दो प्रमुख वास्तुकला सर एडविन लेटिंस (Sir Edwin Latyens) और इसके सहयोगी सर एडवर्ड बेकर (Ser Edward Baker) को सौंपा गया था। उन्होंने नई दिल्ली के जो भवन निर्मित करवाये, इनमें शैलियों का विचित्र सम्मिश्रण हुआ है। ये इमारतें अधिकतर पाश्चात्य ढंग की, विशेषकर **इटालियन ढंग** की बनायी गयी हैं। कहीं-कहीं, जाली, छज्जा तथा छतरी देकर इनमें **भारतीयपन** लाने का प्रयत्न किया गया। वायसराय के राजभवन (Viceragel Palace) था। राष्ट्रपति भवन में इस ओर विशेष ध्यान दिया और उस पर **बौद्ध स्तूप** के समान भारी भरकम **गुम्बद** लगा दिया गया। **पार्लियामैंट भवन** और **सचिवालय भवन** में विशालता, दीर्घाकाल, सादगी और आधुनिकता है। वायसराय के राजभवन के पीछे मुग़ल ढंग का विशाल, सुन्दर, उद्यान बनाया गया। पर सन् 1930 के दशक में बने इन भवनों में तथा दिल्ली के इस युग में निर्मित अन्य भवनों में मौलिकता और कल्पना से काम नहीं लिया गया।

पाश्चात्य कला का इतना अधिक प्रभाव होने पर भी अनेक देशी नरेशों, नवाबों, राजकुमारों, ठाकुरों, सामन्तों और सम्पन्न ज़मींदारों ने भारतीय ढंग की इमारतें बनवायीं हैं। राजस्थान में **उदयपुर, जोधपुर, बीकानेर, जयपुर, जैसलमेर, हैदराबाद, बड़ौदा, मैसूर** आदि देशी नरेशों की राजधानियों तथा उन राज्यों के अन्य प्रमुख नगरों में बने आधुनिक भवन भारतीय मिस्त्रियों, उस्तादों और शिल्पियों की कला के श्रेष्ठतम नमूने हैं। वाराणसी, हरिद्वार, मथुरा के मन्दिर, दिल्ली तथा अन्य स्थानों के बिड़ला मन्दिर तथा अनेक जैन मंहिर जो ब्रिटिश युग में ही निर्मित हुये 'मजबूती और कला में अनुपम और भारतीय कारीगरों की शिल्प कला के श्रेष्ठ नमूने हैं।

ब्रिटिश शासन काल में शिमला की वास्तुकला

(Architeture in Shimla during the British Period)

19 वीं शताब्दी में शिमला अंग्रेज़ी साम्राज्य के लिए एक महत्त्वपूर्ण स्थान था। वे इसे मॉउंट आलम्पस, वायसराय **शूटिंग बाक्स तथा भगवान के रहने के स्थल के नाम से पुकारते थे।** अंग्रेज़ों ने सन् 1822 में **कैप्टन चार्ल्ज़ ली पैरट कैनेडी** को ली स्टेट का सुपरिंटेंडेंट नियुक्त किया और उन्हें पहाड़ी राजाओं से **नज़राना** हासिल करने और अंग्रेज़ी राज के कानून लागू करने की हिदायत दी गई। इससे पहले यह पहाड़ी इलाका अंग्रेजों ने 1815-16 के मध्य गोरखों के साथ हुए युद्ध के समय देखा था। कैप्टन कैनेडी को शिमला में स्थानीय लोगों की सहायता से यूरोपीयन वास्तुकला के अनुसार भवन बनाने का श्रेय है। वर्ष 1830 में फ्रांस के पर्यटक **विक्टर जेक्यूमोंट** के यात्रा वृत्तांत में भी इसका उल्लेख किया है। 1836 ई. में **लार्ड ऑकलैण्ड** ने अपनी निजी रिहायश के लिए शिमला की ज़मीन खरीदी थी। चौड़ा मैदान में सीसिल होटल का पुराना नाम **फैलेटिस होटल** था। शिमला के **क्राइस्ट चर्च** को बनाने में 1844-1857 तक 13 वर्ष लगे थे। यहां प्रार्थना 11 **अक्तूबर** 1857 से आरम्भ हुई। **ओक ओवर** जहां मुख्यमंत्री का निवास है, पहले महाराजा पटियाला

की सम्पत्ति थी। शिमला जिलाधीश कार्यालय की ईमारत का नाम **गैस्टन हाल** था। जिलाधीश शिमला की आवासीय ईमारत को **बालसिंघम** कहते हैं।

शिमला में भवनों का निर्माण अंग्रेज़ों ने अपनी सुविधानुसार करवाया। 1828 में **लार्ड कॉम्बरमियर** भारतीय सेना के कमाण्डार-इन-चीफ बने और शिमला आए। कॉम्बरमियर ने **जाखू हिल** के इर्द-गिर्द तीन मील लम्बी सड़क का निर्माण करवाया। कॉम्बरमियर व ऑकलैंड के कारण शिमला को **हिल स्टेशन** का दर्जा मिला। इसके बाद विलियम बैंटिंग ने अपने लिए आवास का निर्माण करवाया। इस दौरान **माल रोड** व **लोअर बाज़ार** तथा मुख्य भवनों में **बुडवायन कॉटेज, परिमरोज हिल, ऑक फील्ड, हरमीटेज, सनी बैंक, बैनमोर, स्नोडन हाऊस** बने। 1840 में शिमला में पहला होटल खुला, जिसका नाम **पैवेलियन** था।

बालूगंज का नाम कर्नल ब्यालू के नाम पर पड़ा था। यह चर्च बिल्डिंग का निर्माता व **ज्योतिर्विद** था, जिसने 1844 ई. में **'ऑबजर्वेटरी हाऊस'** का निर्माण किया था। इन्होंने अपने भाई के साथ मिलकर इस भवन की वैद्यशाला स्थापना की। ये चुम्बकीय उपकरण से पूर्ण रूप से लैस थी। बायलू दो भाई तथा वे अपनी विलक्षण प्रतिभा के लिए मशहूर थे। इनकी आदतें भी विचित्र थी। शिमला के पश्चिम में स्थित एक बस्ती का नाम **बालूगंज** इन भाइयों के नाम पड़ा है।

सन् 1851 में लॉर्ड डलहौज़ी ने शिमला के महत्त्व को समझते हुए इसे मैदानों से चीन की सीमा तक जोड़ने के लिए हिन्दुस्तान-तिब्बत सड़क का कार्य आरम्भ करवाया। फिर अंग्रेज़ों ने अपनी सुख-सुविधाओं को तोड़ने के लिए **अनाडेल, मनोरंजन पार्क, गेयटी थियेटर** आदि का निर्माण करवाया। 1850 में शिमला नगरपालिका का गठन किया गया। 1863 में शिमला में जतोग में **बिशप कॉटन स्कूल** लड़कों के लिए व **ऑकलैंड हाऊस** व **लोरेटो इन्वेंट** लड़कियों के लिए खोले गए।

यू. एस क्लब की स्थापना 1866 में हुई थी। **गेयटी थियेटर** का निर्माण 1887 ई. में हुआ, जो महारानी विक्टोरिया का जुबली वर्ष था। औपनिवेशिक कालीन वास्तुकला **"Time will Tell"** गेयटी थियेटर में दिखाया जाने वाला पहला नाटक था। लार्ड रिपन ने रिपन अस्पताल 1882 ई. में बनवाया था।

1862 से 1888 तक के वायसराय (लॉर्ड एलगिन से लॉर्ड डफरिन) तक **पीटरहॉफ** भवन में रहे। पीटरहॉफ पहाड़ पर स्थित था परन्तु इसके सामने व पिछले भाग में मैदान व बाग-बगीचे के लिए जगह नहीं थी। लॉर्ड ने पीटरहॉफ को **सुअरों का बाड़ा** की संज्ञा दी थी। 1981 में भीषण अग्नि में यह भवन पूर्ण रूप से नष्ट हो गया था। आज यहां सरकार ने **पांच सितारा होटल** बना दिया है। 1863 में लॉर्ड एलगिन पहले वायसराय थे, जो शिमला में ठहरे। 1876 तक लॉर्ड वायसराय बने तथा वह शिमला में वायसराय का निवास स्थान था। पीटरहॉफ में वायसराय द्वारा दी जाने वाले पार्टियां स्थानाभाव के कारण अन्दर नहीं हो सकती थीं। इसके लिए बाहर शामियाना लगाना पड़ता था। अंग्रेज लोग इसमें अपने को मेहमानों के समक्ष छोटा महसूस करते थे। इसी को ध्यान में रखकर अंग्रेज़ों ने शिमला में वायसराय के लिये नये भवन के लिए स्थान ढूंढना शुरू किया।
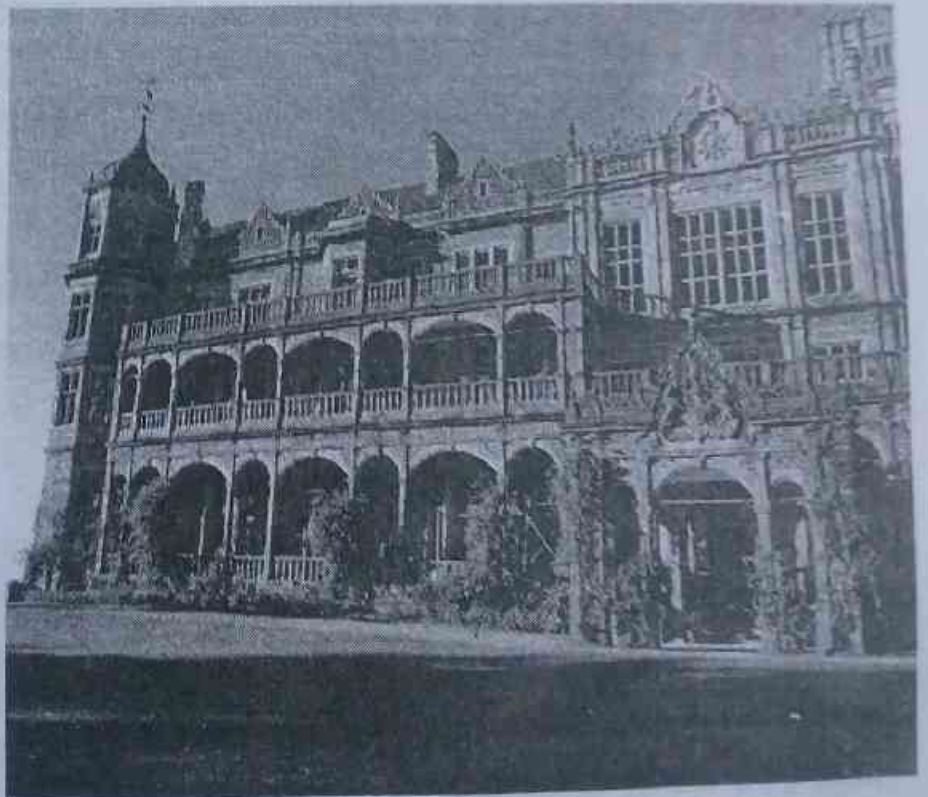
ऑब्जरवेटरी हिल

पहले पीटरहॉफ को गिरा कर इस जगह पर बड़ा भवन बनाने की सोची गई परन्तु इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया गया व इसके समीप स्थित **ऑब्जरवेटरी हिल** को वायसराय निवास के निर्माण के लिए चुना गया। यह कार्य सन् 1884 में आरम्भ हुआ। वर्ष 1888 में ईमारत बनकर तैयार हो गई।

वायसराय लॉज 331 एकड़ क्षेत्र में फैला है, इसमें **ऑब्जरवेटरी हिल, बैंटिक हिल** और **पीटरहॉफ हिल** का कुछ हिस्सा शामिल है, जहां पहले वायसराय का निवास स्थान होता था। ऑब्जरवेटरी हिल पर स्थित यह इमारत ऐसी जगह पर है, जिसके एक भाग का निकास जल सतलुज में बह कर अरब सागर में मिलता है और दूसरे भाग का पानी यमुना में बहकर अंत में बंगाल की खाड़ी में पहुंचता है।

वायसरीगल लॉज का डिज़ाइन, वास्तुकार, **हैनरी इरविन** ने बनाया था। इमारत के निर्माण कार्य की देखरेख **एफ. बी. हैवर्ट** तथा **एल. एम. सकलैन** को सौंपी गई थी। एडवर्ड बक के अनुसार इस भवन की वास्तुकता इंग्लैंड के पुनर्जागरण काल **इलिजाबेश प्रथम** से मिलती है। भवन के बाहर हरे-भरे बाग हैं। इसके भीतरी भाग में बर्मा से आयात की गई सागवान, अखरोट तथा देवदार की लकड़ी पर नक्काशी का बेहतरीन कार्य हुआ है। भवन के अन्दर प्रथम मंजिल पर हाल व गैलरी तथा ऊपरी मंजिलों को जोड़ने वाला सीढ़ीनुमा रास्ता वास्तुकला का अनूठा नमूना है। भवन के सभागारों व कमरों में लगे फानूस तथा दीवार में निर्मित लकड़ी की अलमारियां देखते ही बनती हैं।

इस भवन के साज-सज्जा का कार्य मैसर्ज मेपल एण्ड कम्पनी लंदन द्वारा किया गया है। 22 जुलाई, 1888 को यह भवन बनकर तैयार हो गया। सर्वप्रथम **लेडी डफरिन** इस भवन में गई। 15 दिनों के उपरान्त वायसराय दम्पत्ति ने शिमला के प्रमुख व्यक्तियों के लिए भोज का आयोजन किया। लॉर्ड डफरिन का कार्यकाल गर्मियां बीतने के साथ समाप्त हो गया।

शिमला पंजाब सरकार का मुख्यालय 1871 ई० में बना और 1955 ई० में यहां से बदला गया। शिमला में रिज के नीचे पानी का टैंक 1880 ई० में बना था। ग्रांड होटल का पुराना नाम बैंटिन कौंसल था। ए०जी० आफिग बिल्डिंग का नाम गार्ट कासल है। **विधानसभा** के भवन का निर्माण 1925 ई० में हुआ था। भारत सरकार का सचिवालय **गार्टन कासल** में था।

जो कर्नल कीथ यंग की रिहायश थी, का निर्माण 1899 में हुआ था। शिमला 1864 ई० में भारत की ग्रीष्मकालीन राजधानी बनी। ए०ओ० ह्यूम जिसने 1885 ई० में इण्डिन नैशनल कांग्रेस की स्थापना की, शिमला में **रोथनी कासल** में रहते थे। शिमला में **ओबराय सीसिल होटल** का निर्माण 1884 ई० में हुआ और इसके मालिक का नाम **फ्लेटी** था।

1899 में लॉर्ड कर्जन प्रथम बार जब शिमला आए तो उन्होंने **वायसरीगल भवन** के बागों में विभिन्न प्रजातियों के पौधे लगवाए। कर्जन ने शिमला से सात मील दूर स्थित **रिट्रीट** (राष्ट्रपति निवास) तथा मशोबरा में रहना ज्यादा पसन्द किया। माल रोड पर टाऊन हाल भवन का निर्माण 1908 ई. में पूरा हुआ था।

वर्तमान राज भवन की बिल्डिंग का नाम **वार्नस** कोर्ट है। यहीं शिमला समझौता इन्दिरा गांधी और जुल्फिकार अली भुट्टो के मध्य 3 जुलाई 1972 को हस्ताक्षरित हुआ था। **अन्नाडेल ग्राउंड** का नाम कैप्टन चार्ल्स कैनेडी ने अपनी बचपन की प्रेमिका **अन्ना** के नाम पर रखा था। राजकुमारी अमृत कौर (जो कपूरथला की राजकुमारी थी) के समर हिल स्थित भवन का नाम **मनोर विला** है, जो **जार्जियन शैली** में बनाया गया था। जहां इस समय स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया की बिल्डिंग है, उसका पुराना नाम **डालजैल हाऊस** था। **क्रैगनैनो 23** एकड़ क्षेत्र में शिवैलियर पैलिटी नामक इटालियन ने 1920 ई० में बनाया था।

हिमाचल की चित्रकला
(Painting in Himachal)

हिमाचल प्रदेश की चित्रकला का भारतीय चित्रकला के इतिहास में अपना विशिष्ट स्थान है। यह अपनी विशेषताओं के लिए ख्याति प्राप्त कर चुकी है। हिमाचल प्रदेश की चित्रकला के उदाहरण हमें लघुचित्रों व भित्तिचित्रों के रूप में मिलते हैं। ये लघुचित्र कागजों पर बनाए जाते थे और भित्तिचित्र मन्दिरों, राजमहलों, बावड़ियों तथा निजी भवनों की

दीवारों और छतों को सुशोभित करने के लिए चित्रित किये गए थे। हिमाचल प्रदेश की यह चित्रकला, कांगड़ा की चित्रकला आदि नामों से जानी जाती है।

हिमाचल प्रदेश की चित्रकला भी हमारी सभ्यता व संस्कृति की अमूल्य धरोहर है। हिमाचल प्रदेश की चित्रकला की कुछ सुन्दर कृतियां 19वीं और 20वीं शताब्दी में प्रकाश में आईं। सर्वप्रथम 19वीं शताब्दी में मैटकॉफ नामक व्यक्ति ने कांगड़ा में इस शैली के कुछ चित्रों की खोज की। 20वीं शताब्दी में **डॉ. आनन्द कुमार स्वामी** भी इस और आकृष्ट हुए और उन्होंने 1908-10 के बीच इस विषय को लेकर काफी लेख लिखे तथा भाषण दिये। 1912 ई. में **डॉ. स्वामी** ने राजपूत कला को मुगल कला से भिन्न बताया और उन्होंने राजपूत कला को दो भागों में विभक्त किया-**पहाड़ी कला** तथा **राजस्थानी कला**। उनके अनुसार पहाड़ी कला का क्षेत्र पंजाब की पहाड़ी रियासतें (वर्तमान हिमाचल प्रदेश) तथा राजस्थानी कला का क्षेत्र राजस्थान का मैदानी क्षेत्र था। 1916 ई. में डॉ. **आनन्द कुमार स्वामी** की पुस्तक "राजपूत पेंटिंग" प्रकाशित हुई, जिसमें उन्होंने पहाड़ी कलाकृतियों की सांस्कृतिक भूमिका पर प्रकाश डाला। इससे हिमाचल प्रदेश की कला को मान प्राप्त हुआ और इस चित्रकला को विश्व में गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ।

हिमाचल में चित्रकला का जन्म (Birth of Painting in Himachal)-कुछ विद्वानों के अनुसार पहाड़ी चित्रकला का जन्म जम्मू के पहाड़ी क्षेत्र **बसोहली** में हुआ। इनके अनुसार सर्वप्रथम मुगल दरबार से निष्कासित कलाकारों का एक दल बसौली पहुंचा और उन्होंने वहां की लोक कला में परिमार्जन करके **बसौली शैली** का निर्माण किया। इसके बाद इसका विकास अन्य पहाड़ी रियासतों में हुआ। कुछ अन्य विद्वानों के अनुसार पहाड़ी कला का जन्म **गुलेर** में हुआ। फिर 1780 ई. में जब गुलेर शैली अपने पूर्ण निखार में थी तो उसने कांगड़ा में प्रवेश किया और कांगड़ा **शैली** के नाम से प्रसिद्ध हुई। इस कला शैली को ही **पहाड़ी कलम** या **कांगड़ा कलम** भी कहा जाता है।

पहाड़ी चित्रकला का विस्तार (Spread of Pahari Painting)-पहाड़ी चित्रकला जम्मू से टिहरी और पठानकोट से कुल्लू तक लगभग 1500 वर्ग मील क्षेत्र में फैली हुई थी। ये पहाड़ी क्षेत्र मैदानी क्षेत्रों की अपेक्षा आर्थिक स्थिति में पिछड़ा हुआ परन्तु शांतमय था। मुग़ल दरबार से जहांगीर के समय में कलाकारों की अधिकता के कारण इधर-उधर आश्रय ढूंढते कलाकार इस शान्तमय वातावरण में पहाड़ी रिसायतों में आकर बस गए। हिमाचल प्रदेश के प्राकृतिक सौन्दर्य से कला निर्माण में विशेष योगदान रहा है। यहां के इस मनोहारी शान्तमय वातावरण की झलक हिमाचल की चित्रकला में स्पष्ट रूप से देखने को मिलती है।

'कांगड़ा शैली' का एक चित्र

औपनिवेशक काल में हिमाचल की पहाड़ी रियासतों में बसे कलाकारों का प्रधान स्थान कांगड़ा बन गया। उन्होंने जिस शैली में चित्रांकन किया, उसे चित्रकला की '**कांगड़ा शैली**' या '**पहाड़ी शैली**' कहा जाने लगा। कालांतर में राजस्थानी चित्रशैली अलंकारिक बन गयी और कांगड़ा शैली भाव प्रधान हो गयी। कांगड़ा शैली के कलाकारों ने कवियों और नायकों से प्रेरणा लेकर चित्रांकन के विषयों को अत्यंत व्यापक कर दिया। उन्होंने पौराणिक नायकों और देवी-देवताओं की गाथाओं के साथ-साथ लोक गाथाओं और कृषक जीवन के दृश्यों के भी चित्र बनाए । उन्होंने रामलीलाओं को चित्रित कर संगीत और चित्रकला के अटूट सम्बन्धों को प्रदर्शित करने का प्रयास किया। राजा संसार चन्द्र के शासन काल में पहाड़ी शैली की खूब प्रगति हुई और टिहरी-गढ़वाल तथा बुन्देलखण्ड की रियासतों में इसका विशेष प्रचार हुआ। जब बंगाल, बिहार और उत्तरप्रदेश में ब्रिटिश शासनकाल स्थापित हो गया था, तब टिहरी गढ़वाल, कांगड़ा और इस पहाड़ी क्षेत्र के अन्य नगरों में तथा पंजाब में सिक्ख रियासतों की राजधानियों में कांगड़ा, चित्र-शैली बड़ी लोकप्रिय थी। इस समय गढ़वाल के चित्रकारों में **भोलाराम माणकूस** और **चैकू** ने बड़ा यश प्राप्त किया था। कांगड़ा शैली के व्यक्ति चित्र इतने सुन्दर और आकर्षक बनने लगे थे कि उन्नीसवीं शताब्दी में अनेक नगरों में उनकी मांग हो रही थी। पंजाब में रणजीत सिंह की राजसभा में भी कांगड़ा शैली के चित्रकार विद्यमान थे। इनमें प्रख्यात चित्रकार कपूरसिंह भी था। पंजाब में सिक्खों के पतन और अंग्रेज़ी राजसत्ता और आधिपत्य स्थापित हो जाने के कारण कांगड़ा शैली के चित्रकारों का राज्याश्रय विलुप्त हो गया। इसके बाद सन् 1905 में भीषण भूकम्प से कांगड़ा नगर और वहाँ के अविशिष्ट चित्रकारों का अंत हो गया। कांगड़ा शैली के जो चित्रकार नगरों में जाकर बस गये थे, उन्होंने अपने जीवन की आर्थिक और पारिवारिक समस्याओं के कारण अपनी चित्र-शैली को व्यावसायिक बना दिया। नगरों में सस्ते दामों में बिकने योग्य व्यावसायिक चित्र बनाने में उनकी शक्ति और साधन लग गये। इस समय उनके चित्रों में कांगड़ा के मौलिक रंगों की मनोरमता, लालित्व और रेखाओं का सौन्दर्य नहीं था। धीरे-धीरे परिस्थितिवश यह कांगड़ा शैली लुप्त हो गयी।

प्रमुख चित्रकला केन्द्र (Main Painting Centres)-हिमाचल प्रदेश की रियासतों में मुगल कलाकारों के आने से वहां लोकशैली मुग़ल प्रभाव से विकसित होकर एक नया रूप धारण करने लगी। यहां की कई पहाड़ी रियासतों में कला केन्द्र स्थापित हो गए। सभी पहाड़ी रियासतों में उस समय छोटे-बड़े कुल 38 कला केन्द्र थे। वर्तमान हिमाचल प्रदेश के क्षेत्र में जो प्रमुख कला केन्द्र थे उनके नाम इस प्रकार से हैं: **गुलेर, नूरपुर, टीहरा सुजानपुर, नदौन, चम्बा, मंडी, सुकेत, कुल्लू, बिलासपुर, अर्की (बाघल), नाहन, कोटला, जुन्गा** तथा **जुब्बल**। हिमाचल प्रदेश की चित्रकला के इन केन्द्रों में जिन शैलियों ने जन्म लिया वे **गुलेर शैली** आदि नामों से जानी जाने लगीं तथा इन शैलियों में बने चित्र "**पहाड़ी चित्रकला**" के अन्तर्गत आते हैं। इन कला केन्द्रों में कलाकारों का एक केन्द्र में आना जाना लगा रहता था, जिससे एक शैली दूसरी शैली को प्रभावित करती रही। पहाड़ी जीवन का कोई भी सामाजिक या धार्मिक उत्सव चित्रकला के बिना पूर्ण नहीं। दैनिक कार्य में भी घरों की बनावट में इसका प्रयोग होता है। घर की दीवारों को गोलूं-चना के बाद दीवारों पर रंगीन चित्र बनाए जाते हैं। स्त्रियां घर के फर्श को गोबर से लीपते समय उसमें कई प्रकार की चित्रकारियां करती हैं। विवाह के समय नाईन-रंग-बिरंगे चित्र दीवार पर बनाती है और व्रतोत्सवों के समय दीवार पर या मिट्टी की मूर्तियां बनाकर उस पर रंग के चित्र बनाए जाते हैं।

राजाओं के समय चित्रकला के क्षेत्र में ऐतिहासिक महत्त्व का कार्य होकर उसका विकास हुआ है, जिसे क्षेत्रीय विकास के अनुसार **गुलेर, कांगड़ा, बसौली, मंडी, कुल्लू, बिलासपुर, चम्बा** एवं अन्य शैलियों के नाम से पुकारा जाता है।

इन चित्रों को बनाने के लिए कुटीर-उद्योगों में तैयार किए गए कागज़ का प्रयोग किया गया है, जिसे सियालकोटी कागज़ कहते हैं। प्रमुख रूप से प्रयोग में लाए गए रंग लाल, पीला, नीला और काला है। 200, 300 वर्ष बीत जाने पर भी इन रंगों की चमक पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा है। पहाड़ी चित्रकला के नमूने कागड़ा के मन्दिरों की दीवारों पर बनाए गए चित्रों में देखे जा सकते हैं। चित्रकला का यह रूप स्पीति की तांबों और बौद्धमठों की दीवारों पर भी देखा जा सकता है।

हिमाचल की मूर्तिकला
(Sculphire in Himachal)

जहां हिमाचल प्रदेश में कला के अन्य पहलुओं का विकास हुआ, वहां मूर्ति-निर्माण की कला में भी यहां के लोग पीछे नहीं रहे हैं। अति प्राचीन काल से लेकर आज तक कई भव्य मूर्तियों का निर्माण किया गया है। इस कला का विकास पाषाण, काष्ठ और धातु की मूर्तियां बनाने में हुआ है, जिनके निम्नलिखित रूप देखने को मिलते हैं:-

1. **पाषाण मूर्ति कला** (Stone Sculpture)-इसका सबसे ज्वलंत उदाहरण कांगड़ा में मसरूर के मन्दिर और इनमें पाई जाने वाली पाषाण मूर्तियां हैं। इसके अतिरिक्त इस कला के अन्य उदाहरण हैं **हाटकोटी, निरथ, निर्मण्ड** और **ममेल** (करसोग) के मन्दिर और बिलासपुर के **गूगा-गेहड़वीं** आदि के मन्दिर। देवी देवताओं की पाषाण मूर्तियां हिमाचल के प्राय: हर गांव में मिलेंगी, जो इस क्षेत्र में इस कला की लोकप्रियता का द्योतक हैं।

2. **काष्ठ मूर्ति कला** (Wood Sculpture)-यद्यपि लकड़ी की मूर्तियां नहीं रखी जाती हैं परन्तु मन्दिरों की लकड़ी की मूर्तियां दीवारों में बनाकर रामायण, महाभारत या पुराणों की कहानियों के दृश्य दिखाए गए हैं। ऐसे मन्दिर जिनमें लकड़ी की मूर्ति-कला का विकास हुआ है, भरमौर के **लक्षणा व शक्ति देवी** के मन्दिर, निर्मण्ड (कुल्लू) में **दखणी महादेव**, लाहौल में **मृकुला देवी**, मंडी में **मगरू महादेव** और शिमला में मानण के मन्दिर हैं।

3. **धातु मूर्ति कला** (Metal Sculpture)-हिमाचल के मध्य और ऊपरी भाग में प्राय: प्रत्येक गांव का अपना देवता है जिसकी पीतल, चाँदी और सोने की लघु या विशाल आकार की मूर्तियां हैं जिनकी बनावट देखते ही बनती है। कई मूर्तियों को देखकर तो ऐसा लगता है जैसे वे आप से बातें कर रही हों। इन मूर्तियों का निर्माण अति प्राचीन कला से पिछली शताब्दी तक होता रहा है। निम्न भाग में देवी के मन्दिरों में धातु की मूर्तियां हैं। इस कला के अनुपम उदाहरण जुब्बल के हाटकोटी मन्दिर में **महिषासुर मर्दिनी, चम्बा** में **लक्षणा देवी, शक्ति देवी, नारसिंह, गणेश, नन्दी, विष्णु,** लाहौल में **मृकुला देवी**, कुल्लू में **त्रिपुरा-सुन्दरी** और सराहण में **भीमाकाली** की मूर्तियां हैं।

इसके अतिरिक्त मूर्ति निर्माण पहाड़ी जीवन के सांस्कृतिक पहलू से जुड़ा है। विशेष उत्सवों पर गणेश और अन्य देवी-देवताओं की मिट्टी या आटे की मूर्तियां बनाई जाती हैं, जिन्हें बाद में पानी में बहा दिया जाता है। मिट्टी को कई बार सुरक्षित भी रखा जाता है।

हिमाचल की भौगोलिक स्थिति, ऐतिहासिक परम्परा, धार्मिक विश्वासों, जलवायु की विविधता और लोगों की परिश्रम प्रियता ने कई प्रकार की हस्तकलाओं को जन्म देकर विकसित किया है। जो मिट्टी के बर्तनों, खिलौनों के निर्माण से लेकर संसार भर में प्रचलित ऊनी वस्त्रों के रूप में देखी जा सकती है। हिमाचलीय लोगों की हस्तकला के नमूने मिट्टी के बर्तनों, पिटक निर्माण, काष्ठ कर्म, धातु कर्म, कपड़ा बुनाई आदि में देखे जा सकते हैं। हिमाचल के मध्य और ऊपरी भाग में बनाया जाने वाला प्रसिद्ध बर्तना "**किल्टा**" या "**धीरटा**" है। यह आमतौर पर नागल या तुंग नामक वास से बनाया जाता है। शंकु-आकार की यह लम्बी टोकरी चश्मे से बर्तनों में पानी ढोने, खेतों में फसल लाने और खेतों में खाद डालने तथा जंगल से घास आदि लाने के लिए प्रयोग में लाई जाती है। इसी हस्तकला से बैलों और पशुओं के मुंह बन्द करने के लिए ताकि वे फसल आदि न खाएं, 'छिकड़े' या छबेड़े भी बनाए जाते हैं। इस काम को करने वाले भी विशेष जाति के सिद्धहस्त होते हैं, जिन्हें 'रेहड़ा' या 'डुमणे' कहा जाता है।

हस्तकलाएं
(Handicrafts)

लकड़ी के मकान, मन्दिर और अन्य वस्तुएँ बनाना तथा उन्हें कलात्मक ढंग से सजाना हिमाचल की कला की विशेषता है। लकड़ी के बने मन्दिरों, राजाओं के महलों और साधारण मकानों में लकड़ी के प्रयोग और उसमें की गई चित्रकारी के अनेक प्रमाण मिलते हैं। पहाड़ों में लकड़ी, पत्थर तथा धातु-कला में भी अधिक महत्त्वपूर्ण कलात्मक कार्य हुआ है, जिसका उदाहरण मन्दिरों में सुरक्षित मूर्तियां ही नहीं अपितु हिमाचलीय क्षेत्रों में साधारण व्यक्ति का आभूषणों

से प्रेम आदि है। हिमाचल प्रदेश की कई खड्डों के रेत से अभी तक भी लोग थोड़ी सी अधिक मात्रा में सोना चांदी निकालते हैं, जो हो सकता है पहले ज्यादा निकलता हो।

हिमाचल प्रदेश में सूती और ऊनी कपड़े बनाने की कला भी अति प्राचीन है। मुगल बादशाह शाहजहां की पत्नी बेगम मुमताज-महल को जब हिमाचलीय क्षेत्रों के शाल भेंट किए गए तो उसने आश्चर्य व्यक्त किया था। उसने पहाड़ों में इस कला को प्रोत्साहन दिया। आज भी लोग बहुत से काम हाथ से ही करते थे। रूई खरीद कर पुरुष उसे तकली और स्त्रियां चरखे पर कातती थीं और गांव के 'जुलाहे' या 'बनूरे' कपड़ा तैयार करते थे। अब भी गांवों में ऊन को पुरुष तकली और स्त्रियां चरखे या तकली दोनों पर कातती हैं और 'खड्डी' (हथकरघा) चलाने वाले व्यक्ति से उसके पट्टु कोट की पट्टियां शाल, दोहडू, गुमदे, चक्टु, खड़चा आदि तैयार करवाते हैं। हिमाचल में व्यापारिक तौर पर भेड़-बकरियां पालने वाले गद्दी लोग हैं। ग्रामीण, अन्य ग्रामीण गाय, बैल, भैंस या खच्चर घोड़ों को पालते हैं। चम्बा के रूपाल कढ़ाई का ही नहीं बल्कि चित्रकारी का भी अद्भुत नमूने हैं और सजावट के काम में लाए जाते हैं।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न
(Important Questions)

1. हिमाचल प्रदेश में कला के विभिन्न पहलुओं के विकास पर प्रकाश डालिए।
   Throw light on the different types of art in Himachal Pradesh.
2. हिमाचल प्रदेश की पहाड़ी चित्रकला की विवेचना कीजिए।
   Discuss the hill painting of Himachal Pradesh.
3. हिमाचल प्रदेश की वस्तुकला के विकास की विवेचना कीजिए।
   Discuss the development in architecture of Himachal Pradesh.
4. हिमाचल प्रदेश की औपनिवेशिक कालीन वास्तुकला का वर्णन करें।
   Explain the architecture of Himachal Prdesh during colonial period.
5. औपनिवेशिक कालीन शिमला में भवन निर्माण कला के विकास का वर्णन करें।
   Explain the development of architecture of Shimla during colonial period.

वस्तुनिष्ठ प्रश्न
OBJECTIVE TYPE QUESTIONS

1 X 10 = 10

Type I बहुविकल्पीय प्रश्न (Multiple Choice Questions)

Type II रिक्त स्थानों की पूर्ति (Fill in the blanks)

Type III ठीक /गलत लिखिए (Write True/ false)

Type IV अति संक्षिप्त उत्तरों वाले प्रश्न (VERY SHORT ANSWER TYPE QUESTIONS)

संक्षिप्त उत्तरों वाले प्रश्न
SHORT ANSWER TYPE QUESTIONS

2 X 4 = 8

वस्तुनिष्ठ प्रश्न
OBJECTIVE TYPE QUESTIONS

1 X 10 = 10

TYPE-I

बहुविकल्पीय प्रश्न Multiple Choice Questions

1. हिमाचल का भूगोल

प्रश्न 1. निम्न में से किस राज्य की सीमा हिमाचल प्रदेश को नहीं स्पर्श करती?
(क) उत्तराखण्ड (ख) पंजाब
(ग) जम्मू-कश्मीर (घ) मध्य प्रदेश — घ

प्रश्न 2. हिमाचल प्रदेश का कौन-सा जिला उत्तराखण्ड को स्पर्श नहीं करता?
(क) किन्नौर (ख) ऊना
(ग) शिमला (घ) सिरमौर — ख

प्रश्न 3. कौन-सी नदी उत्तर प्रदेश व हिमाचल प्रदेश के मध्य सीमा बनाती है?
(क) गंगा (ख) यमुना
(ग) व्यास (घ) चिनाब — ख

प्रश्न 4. हिमाचल प्रदेश का कौन-सा जिला अन्तर्राष्ट्रीय सीमा तिब्बत (चीन) को स्पर्श करता है?
(क) काँगड़ा (ख) चम्बा
(ग) लाहौल-स्पीति (घ) ये सभी — घ

प्रश्न 5. जास्कर श्रेणी को कौन-सी नदी काटती है?
(क) गंगा (ख) पीन
(ग) पाँग (घ) सतलुज — घ

प्रश्न 6. पांगी पर्वत श्रेणी किसे कहा जाता है?
(क) ट्रांस हिमालय (ख) शिवालिक
(ग) पीरपंजाल (घ) धौलाधार — ग

प्रश्न 7. निम्नलिखित में से कौन-सा पर्वतीय शिखर बाह्य हिमालय में स्थित नहीं है?
(क) गुमरंग (ख) शिप्की
(ग) चोलांग (घ) लियो पर्गियाल — ग

प्रश्न 8. निम्नलिखित में से कौन-सा पर्वतीय शिखर बृहद् हिमालय में स्थित है?
(क) मानेरंग (ख) कुण्डली
(ग) बारू (घ) ये सभी — क

प्रश्न 9. सोलांग नामक पर्वत शिखर हिमाचल में किस जिले में स्थित है?
(क) लाहौल (ख) स्पीति
(ग) कुल्लू (घ) काँगड़ा — ग

प्रश्न 10. हिमाचल प्रदेश की स्थानीय भाषा में हिमनद को क्या कहते हैं?
(क) शिगड़ी (ख) चिकती
(ग) शिपका (घ) शापी
क

प्रश्न 11. प्रदेश के बाह्य हिमालय या शिवालिक श्रेणी के अन्तर्गत निम्नलिखित में से कौन-सी पहाड़ियाँ आती हैं?
(क) ऊँची पहाड़ियाँ (ख) जास्कर की पहाड़ियाँ
(ग) निचली पहाड़ियाँ (घ) उपरोक्त में से कोई नहीं
ग

प्रश्न 12. प्रदेश के बाह्य हिमालय या शिवालिक श्रेणी के अन्तर्गत आने वाली निचली पहाड़ियाँ समुद्रतल से कितनी ऊँचाई पर स्थित हैं?
(क) 500 मी. (ख) 600 मी.
(ग) 700 मी. (घ) 800 मी.
ख

प्रश्न 13. जास्कर पर्वत श्रेणी किन्नौर व स्पीति को निम्नलिखित में से किस भाग से अलग करती है?
(क) तिब्बत (ख) बर्मा
(ग) चीन (घ) कश्मीर
क

प्रश्न 14. ऊपरी हिमालय पर्वत श्रेणी कितनी ऊँचाई पर स्थित है?
(क) 4,000 मी से 5,0000 मी. (ख) 5,000 मी. से 6,000 मी.
(ग) 6,000 मी से 7,000 मी. (घ) 7,000 मी. से 8,000 मी.
ख

प्रश्न 15. हिमाचल प्रदेश की ऊँचाई समुद्रतल से कितनी है?
(क) 300 मी से 4,300 मी. (ख) 450 मी से 6,500 मी.
(ग) 460 मी से 5,200 मी. (घ) 580 मी से 7,200 मी.
ख

प्रश्न 16. हिमाचल प्रदेश में बहने वाली सतलुज नदी का वैदिक नाम क्या है?
(क) चन्द्रभाग (ख) शताक्षी
(ग) शतुद्री (घ) छिताद्री
ग

प्रश्न 17. हिमाचल प्रदेश में बहने वाली कौन-सी नदी 'रावी नदी' की सहायक नदी है?
(क) खड्डे चिजचन्द (ख) छतराणी
(ग) बोढिल (घ) तवी
घ

प्रश्न 18. हिमाचल प्रदेश में चिनाब नदी को अन्य किस नाम से पुकारा जाता है?
(क) चन्द्रकला (ख) चारुद्रा
(ग) चपला (घ) चन्द्रभागा
घ

प्रश्न 19. हिमाचल प्रदेश में चिनाब नदी का प्रवाह क्षेत्र कितने कि.मी. में है?
(क) 112 कि.मी. (ख) 115 कि.मी.
(ग) 122 कि.मी. (घ) 135 कि.मी.
ग

प्रश्न 20. व्यास नदी का प्रवाह क्षेत्र, हिमाचल प्रदेश में लगभग कितने कि.मी. की लम्बाई में है?
(क) 265 कि.मी. (ख) 115 कि.मी.
(ग) 390 कि.मी. (घ) 415 कि.मी.
ख

प्रश्न 21. निम्नलिखित में से कौन-सी नदी हिमाचल प्रदेश से सम्बन्धित है?
(क) रावी (ख) सतलज

(ग) चिनाब (घ) उपरोक्त सभी घ

प्रश्न 22. हिमाचल प्रदेश से सम्बन्धित 'रावी नदी' का अन्य नाम कौन-सा है?

(क) इरावती (ख) सतवामी
(ग) चिरूथा (घ) बंचली क

प्रश्न 23. निम्नलिखित में से कौन-सी नदी व्यास नदी की सहायक नदी नहीं है?

(क) भागा (ख) चाकी
(ग) पार्वती (घ) सुकेटी क

प्रश्न 24. हिमाचल प्रदेश में यमुना नदी का कुल जल ग्रहण क्षेत्र कितने कि.मी. का है?

(क) 1,255 कि.मी. (ख) 3,115 कि.मी.
(ग) 2,320 कि.मी. (घ) 2,388 कि.मी. ग

प्रश्न 25. निम्नलिखित में से कौन-सी नदी 'शिमला' जिले से सम्बन्धित नहीं है?

(क) सतलुज नदी (ख) व्यास नदी
(ग) पब्बर नदी (घ) गिरि नदी ख

प्रश्न 26. हिमाचल प्रदेश में रावी नदी की लम्बाई कुल कितनी है?

(क) 100 किमी (ख) 125 किमी
(ग) 158 किमी (घ) 182 किमी ग

प्रश्न 27. 'व्यास नदी' निम्नलिखित में से किस जिले से सम्बन्धित नहीं है?

(क) कुल्लू (ख) मण्डी
(ग) ऊना (घ) काँगड़ा ग

प्रश्न 28. 'सैंज', 'तीर्थन', 'मलाण', 'नालान' आदि खड्डें प्रदेश के किस जिले में हैं?

(क) कुल्लू (ख) हमीरपुर
(ग) काँगड़ा (घ) चम्बा क

प्रश्न 29. 'मान', 'गुणाह' आदि प्रसिद्ध खड्डे हिमाचल के किस जिले में हैं?

(क) किन्नौर (ख) सोलन
(ग) बिलासपुर (घ) हमीरपुर घ

प्रश्न 30. कुल्लू के दुधोन हिमनद किस नदी को पानी देते हैं?

(क) पार्वती (ख) चन्द्रा
(ग) भागा (घ) मियार क

प्रश्न 31. हिमाचल प्रदेश की सबसे बड़ी कृत्रिम झील कौन-सी है?

(क) गोविन्द सागर झील (ख) पोंग झील
(ग) मणिमहेश झील (घ) रिवाल्सर झील क

प्रश्न 32. हिमाचल प्रदेश की सबसे बड़ी प्राकृतिक झील कौन-सी है?

(क) पराशर (ख) कमरुनाग
(ग) नाको (घ) रेणुका झील घ

प्रश्न 33. हिमाचल प्रदेश में सबसे अधिक ऊँचाई पर स्थित झील कौन-सी है?

(क) महाकाली (ख) डल झील
(ग) मणिमहेश झील (घ) चन्द्रताल झील ग

प्रश्न 34. मण्डी नगर से लगभग 22 मील की दूरी पर स्थित पराशर झील की समुद्रतल से ऊँचाई लगभग कितनी है?

(क) 1,000 फुट (ख) 3,000 फुट
(ग) 4,000 फुट (घ) 6,000 फुट ख

प्रश्न 35. निम्नलिखित में से कौन-सी झील मण्डी जिले में स्थित नहीं है?

(क) कमरवाह झील (ख) नाको झील
(ग) कमरुनाग झील (घ) रिवाल्सर झील ख

प्रश्न 36. बिलासपुर जिले में स्थित गोविन्द सागर झील का क्षेत्रफल कितना है?

(क) 50 वर्ग मील (ख) 66 वर्ग मील
(ग) 88 वर्ग मील (घ) 95 वर्ग मील ख

प्रश्न 37. निम्नलिखित में से कौन-सी झील मण्डी जिले में स्थित है?

(क) चन्द्रताल (ख) कमरुनाग
(ग) लामा (घ) रेणुका ख

प्रश्न 38. हिमाचल प्रदेश की निम्नलिखित में से कौन-सी झील सात झीलों का समूह है?

(क) लामा झील (ख) खजियार झील
(ग) डल झील (घ) मणिमहेश क

प्रश्न 39. प्रदेश में 'काँगड़ा' क्षेत्र में स्थित 'डल' झील की ऊँचाई क्या है?

(क) 1,500 फुट (ख) 2,800 फुट
(ग) 2,500 फुट (घ) 3,110 फुट ग

प्रश्न 40. प्रदेश में किस जिले में 'रोहला झरना' स्थित है?

(क) बिलासपुर (ख) शिमला
(ग) कुल्लू (घ) ऊना ग

प्रश्न 41. सुप्रसिद्ध 'चाडविक झरना' शिमला जिले में किस स्थान के समीप है?

(क) समरहिल (ख) नालढेरा
(ग) कुफरी (ग) मशोतरा क

प्रश्न 42. सूरजताल व चन्द्रताल नामक झीलें प्रदेश के किस जिले में स्थित हैं?

(क) लाहौल-स्पीति (ख) कुल्लू
(ग) चम्बा (घ) मण्डी क

प्रश्न 43. 'रिवाल्सर झील' जो कि तैरने वाले टापू के लिए प्रसिद्ध है, प्रदेश के किस जिले में स्थित है?

(क) काँगड़ा (ख) मण्डी
(ग) चम्बा (घ) बिलासपुर ख

प्रश्न 44. सरकुण्ड या दशहर झील की समुद्रतल से ऊँचाई कितनी है?

(क) 500 मी. (ख) 1000 मी.
(ग) 12,100 मी. (घ) 14,500 मी. घ

प्रश्न 45. 'नाको' नामक झील हिमाचल प्रदेश के किस क्षेत्र में स्थित है?

(क) किन्नौर (ख) चम्बा
(ग) शिमला (घ) मण्डी क

प्रश्न 46. निम्नलिखित में से कौन-सी झील चम्बा जिले में स्थित नहीं है?
(क) मणिमहेश (ख) कमरवाह
(ग) महाकाली (घ) लामा
ख

प्रश्न 47. 'सतधार झरना' प्रदेश के किस नगर के समीप स्थित है?
(क) किन्नौर (ख) डलहौजी
(ग) ऊना (घ) हमीरपुर
क

प्रश्न 48. यूनामत्सो नामक झील शिमला जिले में किस स्थान पर स्थित है?
(क) जुब्बल (ख) थियोग
(ग) रोहड़ू (घ) चौपाल
ग

प्रश्न 49. काँगड़ा जिले में धर्मशाला नगर के समीप कौन-सी प्रसिद्ध झील स्थित है?
(क) नाको झील (ख) लामा झील
(ग) डल झील (घ) कमरवाह झील
ग

प्रश्न 50. लाहौल-स्पीति में स्थित 'ढेकरछोह' नामक झील समुद्रतल से कितनी ऊँचाई पर स्थित है?
(क) 1,200 मी. (ख) 2,500 मी.
(ग) 3,500 मी. (घ) 3,800 मी.
ग

प्रश्न 51. निम्नलिखित में से कौन-सा गर्म पानी का झरना कुल्लू जिले में नहीं है?
(क) खीरगंगा (ख) मणिकर्ण
(ग) ज्योरी (घ) वशिष्ठ
ग

प्रश्न 52. प्रदेश में निम्नलिखित में से किस जिले में गर्म पानी का झरना नहीं है?
(क) ऊना (ख) मण्डी
(ग) कुल्लू (घ) काँगड़ा
क

प्रश्न 53. ज्वालामुखी नामक झरना प्रदेश में किस स्थान पर है?
(क) कुल्लू (ख) बड़सर
(ग) नदौन (घ) चम्बा
ग

प्रश्न 54. सालोल गर्म पानी का झरना कहाँ स्थित है?
(क) काँगड़ा घाटी (ख) चम्बा घाटी
(ग) कुल्लू (घ) मण्डी जिले में
क

प्रश्न 55. निम्नलिखित में से कौन-सा हिमनद हिमाचल प्रदेश में स्थित है?
(क) पार्वती हिमनद (कुल्लू) (ख) लाहौल का बड़ा शिगड़ी हिमनद
(ग) मियार हिमनद (लाहौल) (घ) उपरोक्त सभी
घ

2. हिमाचल का प्राचीन इतिहास

प्रश्न 1. हिमाचल प्रदेश की सबसे प्राचीन रियासत कौन-सी थी?
(क) त्रिगर्त रियासत (ख) बिलासपुर रियासत
(ग) थियोग रियासत (घ) कहलूर रियासत
क

प्रश्न 2. पाणिनी काल (300 ई. पू.) में हिमाचल प्रदेश दो भागों में विभक्त था इनमें से एक त्रिगर्त गणसंघ कहलाता था, दूसरा गणसंघ क्या कहलाता था?
(क) आयस गणसंघ (ख) कुणिन्द गणसंघ

(ग) भद्र गणसंघ (घ) राघव गणसंघ ख

प्रश्न 3. प्राचीनकालीन हिमाचल की जानकारी सबसे पहले किस प्राचीन ग्रन्थ से मिलती है?

(क) आरण्यक (ख) उपनिषद्

(ग) ऋग्वेद (घ) पुराण ग

प्रश्न 4. किस चीनी यात्री के लेखों से काँगड़ा, कुल्लू, लाहौल आदि जिलों के जनजीवन की जानकारी मिलती है?

(क) फह्यान (ख) इत्सिंग

(ग) ह्यूनसाँग (घ) युवानच्वांग ग

प्रश्न 5. हिमाचल क्षेत्र में रहने वाली अनार्य जातियों का सबसे शक्तिशाली राजा कौन था?

(क) वीरचन्द (ख) सुकेत

(ग) शांबर (घ) कचोट ग

प्रश्न 6. 614-15 ई. में कौन-सा राज्य था, जिसे सर्वप्रथम नूरपुर के राजा जगतसिंह ने अपने कब्जे में लिया था?

(क) काँगड़ा (ख) क्योंथल

(ग) बूशोली (घ) चम्बा ग

प्रश्न 7. निम्नलिखित में से किस प्राचीन राज्य की स्थापना इतितहास के अज्ञात काल में हो चुकी थी?

(क) काँगड़ा (ख) कुल्लू

(ग) रामपुर-बुशहर (घ) ये सभी घ

प्रश्न 8. महाभारत के युद्ध में काँगड़ा के किस कटोच वंश के राजा ने कौरवों की ओर से युद्ध में भाग लिया था?

(क) सुशर्मचन्द (ख) जगतचन्द

(ग) सुचेन्द (घ) गणेशचन्द क

प्रश्न 9. ऐतिहासिक अवशेषों के आधार पर हिमाचल प्रदेश में मानव किस काल में बसा था?

(क) लौहयुगीन काल (ख) ताम्र पाषाण काल

(ग) पूर्व पाषाण काल (घ) उत्तर पाषाण काल ग

प्रश्न 10. हिमाचल के त्रिगर्त गणसंघ के अधीन कितने राज्य थे?

(क) 6 (ख) 7

(ग) 12 (घ) 16 क

प्रश्न 11. पाणिनी काल का कौन-सा गणराज्य वर्तमान महासू, शिमला और नालागढ़ के राज्यों का संथशासित क्षेत्र था?

(क) आयुध (ख) कुलिन्द (कुनिन्द)

(ग) चम्बा (घ) ब्रह्मौर ख

प्रश्न 12. हिमाचल प्रदेश का सबसे प्रसिद्ध वैदिककालीन आर्य राजा कौन था?

(क) सुदास (ख) रविदास

(ग) भुजबाहु (घ) अमोघवर्ष क

प्रश्न 13. महाभारत काल में भीम ने राक्षस जाति की किस कन्या से विवाह किया था, जो बाद में कुल्लू राज्य की कुल देवी के रूप में पूजी गई?

(क) देवी महामाया (ख) देवी हाण्डोली

(ग) देवी राजभीमा (घ) देवी हिडिम्बा घ

प्रश्न 14. कुलिन्द लोग हिमाचल की शलदा नदी के निकट रहते थे। इस बात का उल्लेख किस प्राचीन ग्रन्थ में किया गया है?
(क) रामायण (ख) उपनिषद्
(ग) महाभारत (घ) अष्टाध्यायी ग

प्रश्न 15. प्रदेश के अनार्य राजा शांबर का किस आर्य राजा से कई बार युद्ध हुआ था?
(क) द्रुगेन्द्र (ख) दिवोदास
(ग) शशांक (घ) पृथु ख

प्रश्न 16. हिमाचल में प्राचीनकालीन राज्यों के बीच युद्धों में किस शस्त्र का प्रयोग किया जाता था?
(क) तलवार (ख) भाले
(ग) तीर-कमान (घ) ये सभी घ

प्रश्न 17. श्रीकृष्ण के पौत्र अनिरुद्ध का ऊषा के साथ प्रेम विवाह प्रदेश में किस स्थान पर हुआ था?
(क) किन्नौर (ख) चम्बा
(ग) काँगड़ा (घ) कहलूर क

प्रश्न 18. चौथी शताब्दी के प्रारम्भ में गुप्त साम्राज्य के संस्थापक किस राजा ने हिमालय के जनपदों को जीतकर अपने आधिपत्य में किया था?
(क) चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य (ख) समुद्रगुप्त
(ग) चन्द्रगुप्त (घ) कुमारगुप्त ग

प्रश्न 19. प्राचीनकाल में चम्बा राज्य की राजधानी कहाँ पर स्थित थी?
(क) सत्पुरा (ख) बहावपुरा
(ग) ब्रह्मपुरा (घ) चमोरा ग

प्रश्न 20. हिमाचल में प्राचीन कुल्लू राज्य की स्थापना विहंगम मणिपाल ने कब की थी?
(क) 1300 ई. में (ख) 1400 ई. में
(ग) 500 ई. में (घ) 1600 ई. में ग

प्रश्न 21. शिवालिक निवासी उस शक्तिशाली किरात राजा का नाम बताइए, जो आर्यों के राजा दिवोदास से लड़ा था
(क) कीर्तिमान (ख) कामरान
(ग) शाम्बर (घ) देवदत्त ग

प्रश्न 22. हिमाचल में त्रिगर्त-काँगड़ा का संस्थापक कौन था?
(क) भूमिचन्द (ख) संसारचन्द
(ग) धर्मचन्द (घ) लक्ष्मीचन्द क

प्रश्न 23. टॉलेमी नामक यूनानी इतितहासकार ने त्रिगर्त की किस नाम से सम्बोधित किया था?
(क) चारुन्द्र (ख) कालिन्द्रेन
(ग) पोरुनी (घ) त्रिपेन्द्रन ख

प्रश्न 24. हिमाचल के 'पांगणा' नामक स्थान पर 765 ई. में एक राज्य की नींव रखी गई थी, यह बाद में किस नाम से जाना गया?
(क) काँगड़ा (ख) मण्डी

(ग) कुल्लू (घ) सुकेत घ

प्रश्न 25. हिमाचल का कुलिन्द गणराज्य किस सदी में फूला-फला था?
(क) प्रथम सदी ईसा पूर्व (ख) तृतीय सदी ईसा पूर्व
(ग) दूसरी सदी ईसा पूर्व (ग) चतुर्थ सदी ईसा पूर्व ग

प्रश्न 26. हिमाचल की किरातों व नागों को परास्त करने वाली आदिम जाति कौन-सी थी?
(क) कोल (ख) डूम
(ग) खस (घ) हाली ग

प्रश्न 27. राजसूय यज्ञ से पूर्व की विजय यात्रा के दौरान अर्जुन ने हिमाचल के किस गणराज्य की यात्रा की?
(क) त्रिगर्त (ख) कुलूट
(ग) कुलिन्द (घ) उपरोक्त सभी घ

प्रश्न 28. चम्बा के कई मन्दिरों व चट्टान लेखों से किस राजा के शासनकाल की जानकारी मिलती है?
(क) मेरुवर्मन (680-700 ई.) (ख) जयवर्मन (800-830 ई.)
(ग) चन्द्रवर्मन (650-708 ई.) (घ) मुक्तेश्वर (775-800 ई.) क

प्रश्न 29. काँगड़ा जिले में स्थित कुनिहारा नामक स्थान से कुछ दूरी पर पथियार के समीप किस काल के शिलालेख प्राप्त हुए हैं?
(क) मौर्यकाल (ख) गुप्तकाल
(ग) कुषाणकाल (घ) राजपूत काल क

प्रश्न 30. युगाकार वर्मन के भरमौर ताम्र-पत्र लेख में कितनी पंक्तियाँ हैं?
(क) 16 (ख) 17
(ग) 18 (घ) 19 घ

प्रश्न 31. 'लोह टिकरी' चुराह के पास गया 'पत्थर लेख' किस राजा के शासन काल से सम्बन्धित है?
(क) असाटा वर्मन (ख) जसाटा वर्मन
(ग) राणा पाल (घ) अनन्त देवी

प्रश्न 32. दो स्थानों पर पाए पत्थर लेख एक 'डिवरी कोठी' तथा दूसरा 'सैयू नाल' पाँगी, किस राजा के शासन काल से सम्बन्धित हैं?
(क) ललित वर्मन (ख) उदय वर्मन
(ग) पृथ्वी वर्मन (घ) दाला वर्मन क

3. मध्यकालीन हिमाचल रियासतें

प्रश्न 1. महमूद गजनवी ने काँगड़ा के किले और मन्दिर पर कब आक्रमण किया था?
(क) 1009 ई. में (ख) 1100 ई. में
(ग) 1000 ई. में (घ) 1200 ई. में क

प्रश्न 2. 1009 ई. में जिस समय महमूद गजनवी ने नगरकोट पर आक्रमण किया उस समय वहाँ का शासक कौन था?
(क) जयचन्द (ख) कल्याणचन्द
(ग) विजयचन्द (घ) जगदीशचन्द घ

प्रश्न 3. तेहरवीं शताब्दी में रजिया सुल्ताना बेगम के विद्रोही सरदार मोहम्मद जनैदी ने हिमाचल के किस राज्य में

शरण ली थी?

(क) सिरमौर (ख) चम्बा

(ग) काँगड़ा (घ) नालागढ़ क

प्रश्न 4. शेरशाह सूरी ने अपने सेनापति खवास खाँ को नगरकोट और अन्य पहाड़ी राज्यों पर अधिकार करने के लिए कब भेजा था?

(क) 1450 ई. में (ख) 1504 ई. में

(ग) 1505 ई. में (घ) 1540 ई. में घ

प्रश्न 5. 1540 ई. में शेरशाह सूरी के सेनापति खवास खाँ ने हिमाचल के किस स्थान पर विजय प्राप्त की थी?

(क) कुल्लू (ख) काँगड़ा

(ग) चम्बा (घ) शिमला ख

प्रश्न 6. शेरशाह सूरी ने प्रदेश के किस स्थान पर विजय प्राप्त की थी?

(क) काँगड़ा (ख) सिरमौर

(ग) चम्बा (घ) शिमला क

प्रश्न 7. 1572 ई. में मुगल शासक अकबर ने किसे काँगड़ा का जागीदार बनाया था?

(क) टोडरमल (ख) बीरबल

(ग) मानसिंह (घ) जयसिंह ख

प्रश्न 8. मुगल शासक जहाँगीर ने नूरपुर के राजा जगत सिंह की सहायता से काँगड़ा के दुर्ग पर कब अधिकार किया था?

(क) 1550 ई. में (ख) 1555 ई. में

(ग) 1620 ई. में (घ) 1630 ई. में ग

प्रश्न 9. काँगड़ा के किस शासक ने सभी पहाड़ी शासकों का संघ बनाकर 1588-89 ई. में अकबर के विरुद्ध युद्ध किया था?

(क) संसारचंद (ख) विधिचन्द

(ग) विजयचन्द (घ) जगतसिंह ख

प्रश्न 10. किस मुगल शासक ने कुल्लू के राजा 'जगतसिंह' को 'राजा' की उपाधि से अलंकृत किया था?

(क) बाबर (ख) हुमायूँ

(ग) शाहजहाँ (घ) औरंगजेब घ

प्रश्न 11. 1641 ई. में हिमाचल के किस राजा ने मुगल शासक के विरुद्ध विद्रोह किया था?

(क) जगतसिंह (ख) पद्मसिंह

(ख) ज्ञानसिंह (घ) बहिंगपाल क

प्रश्न 12. सिरमौर राज्य के अन्तिम शासक का नाम बताइए।

(क) मानसिंह (ख) राजेन्द्र प्रकाश

(ग) पद्मसिंह (घ) नौरंग सिंह ख

प्रश्न 13. मुगल शासक जहाँगीर ने काँगड़ा के किले पर हिमाचल की किस रियासत के राजा की सहायता से अधिकार किया था?

(क) चम्बा के राजा चतरसिंह (ख) काँगड़ा के राजा हरिचन्द

(ग) काँगड़ा के राजा रूपचन्द (घ) नूरपुर के राजा जगतसिंह घ

प्रश्न 14. मुगल शासक औरंगजेब ने चम्बा के किस राजा को राज्य के सभी हिन्दू मन्दिरों को गिराने का आदेश दिया था?

(क) रतनसिंह (ख) विजयचन्द

(ख) श्यामसिंह (घ) चतरसिंह — घ

प्रश्न 15. जिस समय मुगल सम्राट जहाँगीर (1620 ई.) काँगड़ा आया था, उस समय वहाँ का राजा कौन था?

(क) बालभद्र (ख) वीरभद्र

(ग) बालाचन्द (घ) रामचन्द — क

प्रश्न 16. 1620 ई. में काँगड़ा किले को मुगल सेनाओं ने अपने कब्जे में लिया था, उस समय किले का प्रथम किलेदार किसे बनाया गया था?

(क) अलीमर्दान खाँ (ख) नवाब अली खाँ

(ग) शेर अफगान (घ) अफीफ खाँ — ख

प्रश्न 17. काँगड़ा के राजा विधिचन्द ने सभी पहाड़ी शासकों का संघ बनाकर अकबर के विरुद्ध युद्ध कब किया था?

(क) 1489-90 ई. (ख) 1516-17 ई.

(ग) 1588-89 ई. (घ) 1590-91 ई. — ग

प्रश्न 18. 15वीं शताब्दी में काँगड़ा की प्रसिद्ध शाखा हरिपुर या गुलेर राज्य की नींव किसके द्वारा रखी गई थी?

(क) हरिचन्द और कर्मचन्द (ख) चन्द्रभान और घमण्डचन्द

(ग) धर्मचन्द और शिवचन्द (घ) संसारचन्द और रामचन्द — क

प्रश्न 19. हिमाचल में जसवां राज्य की स्थापना किसने की थी?

(क) संसारचन्द (ख) शिवचन्द

(ग) रामचन्द (घ) पूर्वचन्द — घ

प्रश्न 20. कुटलैहर रियासत का अन्तिम शासक कौन था?

(क) ब्रजमोहनपाल (ख) सूर्यपाल

(ग) शशिपाल (घ) चाँदमोहनपाल — क

प्रश्न 21. गुरू गोबिन्द सिंह ने किस राजा के शासनकाल में सिरमौर की यात्रा की?

(क) मेदनी प्रकाश (ख) रवि राव

(ग) चन्द्रवर्मन (घ) प्रकाश चन्द — क

प्रश्न 22. काँगड़ा जिले के नूरपुर उप-मण्डल का नाम ढमेली से 'नूरपुर' किस मुगल शासक के समय में पड़ा था?

(क) बाबर (ख) जहाँगीर

(ग) अकबर (घ) औरंगजेब — ख

प्रश्न 23. हिमाचल के किस राजा ने नूरपुर राज्य की राजधानी 'पठानकोट' से 'धमेरी' स्थानान्तरित की थी?

(क) बासदेव (ख) शिवदेव

(ग) रामदेव (घ) कृष्णदेव — क

प्रश्न 24. हिमाचल में 1778 ई. में किसने सुजानपुर टिहरा नामक स्थान की नींव रखी थी?

(क) विजयचन्द (ख) अभयचन्द

(ग) वीरेन्द्र सिंह (घ) राजा महिपाल — ख

प्रश्न 25. सुप्रसिद्ध राजा संसार चन्द जो पहाड़ी क्षेत्र में विशाल हिन्दू साम्राज्य स्थापित करना चाहता था, कहाँ का शासक था?

(क) कुल्लू (ख) बिलासपुर
(ग) काँगड़ा (घ) मण्डी ग

प्रश्न 26. हिमाचल की पहाड़ी रियासतों में निम्नलिखित में से किस विदेशी आक्रमणकारी ने 1399 ई. में लूटपाट की थी?
(क) बाबर (ख) मुहम्मद गौरी
(ग) तैमूरलंग (घ) उपरोक्त में से कोई नहीं ग

प्रश्न 27. गुलेर रियासत के अन्तिम राजा रघुनाथ सिंह का शासनकाल बताइए।
(क) 1680 से 1705 ई. (ख) 1666 से 1711 ई.
(ग) 1790 से 1811 ई. (घ) 1855 से 1905 ई. ग

प्रश्न 28. काँगड़ा के दुर्ग को मुहम्मद तुगलक ने कब विजित किया था?
(क) 1337 ई. में (ख) 1357 ई. में
(ग) 1405 ई. में (घ) 1415 ई. में क

प्रश्न 29. 1527 ई. में मण्डी नगर की स्थापना किस राजा ने की थी?
(क) अजबर सेन (ख) दर्शन सेन
(ग) श्यामसिंह (घ) बहादुरसिंह क

4. 19वीं शताब्दी में हिमाचल की पहाड़ी रियासतें

प्रश्न 1. किस सिख सरदार ने सर्वप्रथम 18 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में काँगड़ा के पहाड़ी क्षेत्र पर आक्रमण किया था?
(क) जस्सा सिंह रामगढ़िया (ख) मालसिंह छत्तीसगढ़िया
(ग) तेज सिंह (घ) भीरु सिंह जमशेदपुरिया क

प्रश्न 2. राजा संसार चन्द व महाराजा रणजीत सिंह के बीच ज्वालामुखी की सन्धि किस वर्ष हुई थी?
(क) 1809 ई. में (ख) 1829 ई. में
(ग) 1856 ई. में (घ) 1866 ई. में क

प्रश्न 3. हिमाचल की 'कुल्लू रियासत' किस वर्ष अंग्रेज़ी साम्राज्य का एक भाग बनी थी?
(क) 1818 ई. में (ख) 1835 ई. में
(ग) 1840 ई. में (घ) 1846 ई. में. घ

प्रश्न 4. बिलासपुर के किस राजा ने 1809 ई. में गोरखों को काँगड़ा पर आक्रमण करने के लिए आमन्त्रित किया था?
(क) महानचन्द (ख) नाथूचन्द
(ग) विजयचन्द (घ) कल्याणचन्द क

प्रश्न 5. हिमाचल के असन्तुष्ट पहाड़ी राजाओं ने सिखों के साथ मिलकर अंग्रेजों के विरुद्ध कब विद्रोह किया था?
(क) 1812 ई. में (ख) 1848 ई. में
(ग) 1850 ई. में (घ) 1856 ई. में ख

प्रश्न 6. 1786 ई. में काँगड़ा के किस शासक ने काँगड़ा के किले पर अधिकार किया था?
(क) संसार चन्द (ख) कल्याणचन्द
(ग) विधिचन्द (घ) हीराचन्द क

प्रश्न 7. गोरखों ने काँगड़ा क्षेत्र पर कब आक्रमण कर लूटमार मचाई थी?
(क) 1820 ई. में (ख) 1847 ई. में
(ग) 1825 ई. में (घ) 1809 ई. में घ

प्रश्न 8. काँगड़ा के राजा संसारचन्द के विरुद्ध संयुक्त आक्रमण (1804-05) के समय चम्बा सेनाओं का सेनापति कौन था?
(क) शिवचरण (ख) विजयपाल
(ग) कामरु वजीर (घ) नत्थू वजीर घ

प्रश्न 9. हिमालय में नरेटी शाहपुर का युद्ध कब हुआ था?
(क) 1750 ई. में (ख) 1786 ई. में
(ग) 1890 ई. में (घ) 1895 ई. में ख

प्रश्न 10. किस अंग्रेज़ अफसर के प्रयत्नों के परिणास्वरूप 1864 ई. में शिमला अंग्रेजों की ग्रीष्मकालीन राजधानी बनी?
(क) लॉर्ड वेलेजली (ख) लॉर्ड डफरिन
(ग) लॉर्ड लॉरेन्स (घ) लॉर्ड कर्जन ग

प्रश्न 11. हिमाचल के कोटखाई-कोटगढ़ को ब्रिटिश भारत का भाग कब बनाया गया था?
(क) 1828 ई. में (ख) 1852 ई. में
(ग) 1866 ई. में (घ) 1868 ई. में क

प्रश्न 12. 1850 ई. में मण्डी रियासत पर किए गए आक्रमण में सिख सेना का नेतृत्व किसने किया था?
(क) रणजीत सिंह (ख) जनरल कामरा
(ग) जनरल वन्चूरा (घ) चौधरी गजेन्द्र ग

प्रश्न 13. हिमाचल की मण्डी व सुकेत रियासतें किस वर्ष प्रत्यक्ष रूप से अंग्रेजी साम्राज्य के अधीन आ गई थीं?
(क) 1820 ई. में (ख) 1838 ई. में
(ग) 1846 ई. में (घ) 1842 ई. में ग

प्रश्न 14. हिमाचल की 'सुकेत' रियासत का अन्तिम राजा कौन था, जिसने 'प्रिन्स ऑफ वेल्स अनाथ आश्रम' की स्थापना भी की थी?
(क) रामचन्द्र सेन (ख) राघवेन्द्र चन्द
(ग) जितेन्द्र सेन (घ) लक्ष्मण सेन घ

प्रश्न 15. 1948 ई. में जब 'भागल' रियासत को हिमाचल प्रदेश में मिलाया गया था, उस समय वहाँ का शासक कौन था?
(क) राजेन्द्र सिंह (ख) गजेन्द्र सिंह
(ग) भूपेन्द्र सिंह (घ) विजेन्द्र सिंह क

5. आंग्ल-गोरखा युद्ध

प्रश्न 1. गोरखों ने गोरखपुर पर कब अधिकार किया?
(क) 1801 (ख) 1805
(ग) 1806 (घ) 1815 क

प्रश्न 2. गोरखा सेनापति अमर सिंह थापा ने जुब्बल और धामी पर कब अधिकार किया?
(क) 1813 (ख) 1810

(ग) 1812 (घ) 1815 ख

प्रश्न 3. 1812-13 ई. में अमर सिंह थापा कहाँ रहा?
(क) जुब्बुल (ख) नालागढ़
(ग) रामपुर (घ) कोटगढ़ ग

प्रश्न 4. आंगल-गोरखा युद्ध में अंग्रेज़ी सेना के कर्नल डेविड आक्टर लोनी ने किस रियासत के राजा को अपने साथ मिलाया?
(क) बिलासपुर (ख) कांगड़ा
(ग) नूरपुर (घ) रामपुर क

प्रश्न 5. कोटगढ़ को किस गोरखा के नेतृत्व में गोरखों ने अपने अधिकार में लिया?
(क) अमर सिंह थाप (ख) रणजोर सिंह थापा
(ग) कीर्ति राणा (घ) इनमें से कोई नहीं ग

प्रश्न 6. कीर्ति राणा को किस रियासत के वज़ीर के सम्मुख आत्मसमर्पण करना पड़ा?
(क) बुशहर (ख) कांगड़ा
(ग) नालागढ़ (घ) चम्बा क

प्रश्न 7. सैगोली की संधि कब हुई?
(क) 1814 (ख) 1810
(ग) 1812 (घ) 1816 घ

प्रश्न 8. अमर सिंह थापा ने मानलोन के किले पर कब अधिकार किया?
(क) 1810 (ख) 1801
(ग) 1815 (घ) 1816 ग

प्रश्न 9. आंग्ल-गोरखा युद्ध के परिणामस्वरूप किस क्षेत्र में गोरखा अधिपत्य समाप्त हो गया?
(क) शिमला (ख) कांगड़ा
(ग) चम्बा (घ) सिरमौर क

प्रश्न 10. आंग्ल-गोरखा युद्ध किसके काल में हुआ?
(क) लार्ड वारेन हेस्टिंगज (ख) लार्ड हेस्टिग्ज़
(ग) लार्ड डलहोजी (घ) लार्ड वैलज़ली ख

6. अंग्रेजों द्वारा पहाड़ी रियासतों पर नियन्त्रण

प्रश्न 1. प्रथम सिख युद्ध कब लड़ा गया?
(क) 1815-16 (ख) 1845-46
(ग) 1848-49 (घ) 1846-48 ख

प्रश्न 2. अंग्रेज़ों तथा महाराजा रणजीत सिंह के बीच अमृतसर की संधि कब हुई?
(क) 1809 (ख) 1801
(ग) 1805 (घ) 1815 क

प्रश्न 3. महाराजा रणजीत सिंह की मृत्यु कब हुई?
(क) 1829 (ख) 1849
(ग) 1839 (घ) 1809 ग

प्रश्न 4. पहली अफगान लड़ाई कब हुई?

(क) 1836-39 (ख) 1842-45
(ग) 1839-42 (घ) 1815-16 ग

प्रश्न 5. सिंध को अंग्रेज़ी सम्राज्य में कब मिलाया गया?

(क) 1843 (ख) 1849
(ग) 1839 (घ) 1858 क

प्रश्न 6. सिखों के पहले युद्ध की घोषणा कब की गई?

(क) 18 दिसम्बर, 1845 (ख) 13 दिसम्बर, 1845
(ग) 21 दिसम्बर, 1845 (घ) 11 दिसम्बर, 1845 ख

प्रश्न 7. मुदकी की लड़ाई कब लड़ी गई?

(क) 18 दिसम्बर, 1845 (ख) 14 दिसम्बर, 1845
(ग) 11 दिसम्बर, 1845 (घ) 13 दिसम्बर, 1945 क

प्रश्न 8. फिरोज़शाह की लड़ाई में किस सिख जनरल ने विश्वासघात किया?

(क) रणजीत सिंह मजीठिया (ख) तेजा सिंह
(ग) शमशेर सिंह (घ) इनमें से कोई नहीं ख

प्रश्न 9. सबराओं की लड़ाई कब लड़ी गई?

(क) 10 फरवरी, 1846 (ख) 20 फरवरी, 1846
(ग) 1 फरवरी, 1845 (घ) 10 मार्च, 1846 क

प्रश्न 10. लाहौर की संधि कब हुई?

(क) 19 मार्च, 1846 (ख) 19 फरवरी, 1846
(ग) 10 मार्च 1846 (घ) 1 मार्च, 1846 क

प्रश्न 11. भैरोंवाल की संधि कब हुई?

(क) सितम्बर, 1846 (ख) दिसम्बर, 1846
(ग) अकतूबर, 1846 (घ) नवम्बर, 1846 क

प्रश्न 12. दूसरा सिख युद्ध कब लड़ा गया?

(क) 1845-46 (ख) 1848-49
(ग) 1814-16 (घ) 1808-09 ख

प्रश्न 13. सिखों का दूसरा युद्ध किसके काल में लड़ा गया?

(क) लार्ड हेस्टिंगज (ख) लार्ड डलहौज़ी
(ग) लार्ड रिपन (घ) लार्ड कैनिंग ख

प्रश्न 14. मूलराज मुलतान का गवर्नर कब बना?

(क) 1845 (ख) 1844
(ग) 1848 (घ) 1847 ख

प्रश्न 15. दीवान मूलराज ने कब विद्रोह किया?

(क) अप्रैल, 1846 (ख) अप्रैल, 1847
(ग) अप्रैल, 1848 (घ) अप्रैल, 1849 ग

प्रश्न 16. पंजाब को अंग्रेज़ी साम्राज्य में कब मिलाया गया?
(क) 1809 (ख) 1839
(ग) 1849 (घ) 1869 ग

प्रश्न 17. सिखों के दूसरे युद्ध में चिलियांवाला की लड़ाई कब लड़ी गई?
(क) 22 नवम्बर, 1848 (ख) 13 जनवरी, 1849
(ग) 22 जनवरी, 1849 (घ) 13 जनवरी, 1849 ख

प्रश्न 18. सिखों के दूसरे युद्ध में गुजरात की लड़ाई कब लड़ी गई?
(क) 22 जनवरी, 1849 (ख) 22 नवम्बर, 1849
(ग) 21 फरवरी, 1849 (घ) इनमें से कोई नहीं ग

प्रश्न 19. बिलासपुर के राजा को अंग्रेज़ों ने कब सनद दी?
(क) 6 नवम्बर, 1815 (ख) 6 मार्च 1815
(ग) 6 दिसम्बर, 1815 (घ) 16 मार्च 1815 ख

प्रश्न 20. बघाट के राजा को अंग्रेज़ों ने कब सनद दी?
(क) जनवरी, 1840 (ख) फरवरी, 1840
(ग) अप्रैल, 1840 (घ) जून, 1840 घ

प्रश्न 21. गुलेर के राजा भूप सिंह के मृत्यु कब हुई?
(क) 1790 (ख) 1820
(ग) 1800 (घ) 1830 ख

प्रश्न 22. 1809 में जसवां रियासत किस के अधीन आ गई?
(क) गोरखों के (ख) सिखों के
(ग) अंग्रेजों के (घ) इनमें से कोई नहीं क

प्रश्न 23. कुल्लू के राजा अजीत सिंह की मृत्यु कब हुई?
(क) 1833 (ख) 1841
(ग) 1845 (घ) 1827 ख

प्रश्न 24. अंग्रेज़ों ने राजा फतह सिंह को क्यारदा घाटी की सनद कब दी?
(क) 1820 (ख) 1815
(ग) 1833 (घ) 1827 ग

प्रश्न 25. कांगड़ा के राजा अनिरुद्ध की मृत्यु कब हुई?
(क) 1811 (ख) 1821
(ग) 1841 (घ) 1831 घ

7. परिवहन एवं संचार व्यवस्था

प्रश्न 1. हिमाचल के किस जिले में ब्राड गेज लाइन है?
(क) ऊना (ख) धर्मशाला
(ग) सोलन (घ) शिमला क

प्रश्न 2. हिमाचल प्रदेश में किन स्थानों के मध्य छोटी रेल लाइन की रेल चलती है?
(क) कुल्लू से काँगड़ा (ख) पठानकोट से जोगिन्दर नगर
(ग) चम्बा से शिमला (घ) मण्डी से कुल्लू ख

प्रश्न 3. कालका-शिमला रेलमार्ग की अधिकतम चौड़ाई कितनी है?
(क) 100.06 मी (ख) 100.06 सेमी
(ग) 76.2 मी. (घ) 76.2 सेमी घ

प्रश्न 4. पठानकोट-जोगिन्दर नगर रेल लाइन पर कुल कितनी सुरंगें हैं?
(क) 2 (ख) 4
(ग) 6 (घ) 10 क

प्रश्न 5. नंगल से तलवाड़ा के बीच बन रही बड़ी रेल लाइन को हिमाचल प्रदेश में किस जिले तक विकसित किया गया है?
(क) जिला सोलन (ख) जिला कुल्लू
(ग) जिला बिलासपुर (घ) जिला ऊना घ

प्रश्न 6. हिमाचल प्रदेश में पथ परिवहन की स्थापना कब हुई?
(क) 2 जनवरी, 1974 (ख) 2 अक्टूबर, 1973
(ग) 2 अगस्त, 1974 (घ) 2 अक्टूबर, 1974 घ

प्रश्न 7. कौन-सा राष्ट्रीय राजमार्ग शिमला जिले से गुजरता है?
(क) राष्ट्रीय राजमार्ग-1 (ख) राष्ट्रीय राजमार्ग-13
(ग) राष्ट्रीय राजमार्ग-9 (घ) राष्ट्रीय राजमार्ग-22 घ

प्रश्न 8. कालका-शिमला रेलवे लाइन पर सबसे लम्बी सुरंग कहाँ पर है?
(क) तारादेवी (ख) धामी
(ग) बड़ोग (घ) समरहिल ग

प्रश्न 9. कौन-सा राष्ट्रीय राजमार्ग सोलन में से गुजरता है?
(क) राष्ट्रीय राजमार्ग-7 (ख) राष्ट्रीय राजमार्ग-22
(ग) राष्ट्रीय राजमार्ग-21 (घ) राष्ट्रीय राजमार्ग-11 ख

प्रश्न 10. 1948 में हिमाचल प्रदेश के निर्माण के समय वहाँ की सड़कों की लम्बाई लगभग कितनी थी?
(क) 150 कि.मी. के लगभग (ख) 228 कि.मी. के लगभग
(ग) 250 कि.मी. के लगभग (घ) 290 कि.मी. के लगभग घ

प्रश्न 11. प्रदेश में NH-88 की कुल लम्बाई कितनी किमी है?
(क) 160 (ख) 180
(ग) 120 (घ) 280 ख

प्रश्न 12. हिमाचल प्रदेश में किस स्थान की सड़क 'हिन्दुस्तान-तिब्बत राष्ट्रीय राजमार्ग' से सम्बन्धित है?
(क) कालका (ख) शिमला
(ग) रामपुर (घ) ये सभी घ

प्रश्न 13. कौन-सा राष्ट्रीय राजमार्ग मण्डी जिले में से गुजरता है?
(क) राष्ट्रीय राजमार्ग-60 (ख) राष्ट्रीय राजमार्ग-20
(ग) राष्ट्रीय राजमार्ग-22 (घ) ख और क घ

प्रश्न 14. हिमाचल प्रदेश में निम्नलिखित में किस-किस स्थान पर हैलीपेड उपलब्ध है?
(क) डोडरा-क्वार (ख) काजा
(ग) किलाड़ (घ) उपरोक्त सभी घ

प्रश्न 15. हिमाचल प्रदेश के किस हवाई अड्डे से केवल दिल्ली के लिए ही हवाई उड़ानें होती हैं?
(क) शिमला (ख) सोलन-जुब्बर हट्टी
(ग) काजा व रंगरीक (घ) हमीरपुर ग

प्रश्न 16. राज्य में निम्नलिखित में से किस स्थान पर हवाई अड्डा नहीं है?
(क) काजा (ख) भुन्तर
(ग) सोलन (घ) रंगरीक ग

प्रश्न 17. राज्य का सबसे अधिक ऊँचाई पर हवाई अड्डा कौन-सा है?
(क) गग्गल (ख) भुन्तर
(ग) रंगरीक (घ) काजा घ

8. हिमाचल में 1857 का विद्रोह

प्रश्न 1. कसौली की सैनिक छावनी में 1857 के विद्रोह की चिंगारी कब भड़की थी?
(क) 10 मई (ख) 20 मार्च
(ग) 20 अप्रैल (घ) 20 मई ग

प्रश्न 2. 1857 के विद्रोह का आरम्भ कब माना जाता है?
(क) 11 मई (ख) 10 मई
(ग) 30 मई (घ) 20 मई ख

प्रश्न 3. दिल्ली में मेरठ के क्रान्तिकारी कब पहुंचे?
(क) 11 मई, 1857 (ख) 10 मई, 1857
(ग) 12 मई, 1857 (घ) 20 मई, 1857 क

प्रश्न 4. 1857 के विद्रोह के समय शिमला का डिप्टी कमिश्नर कौन था?
(क) ब्लैकवेल (ख) विलियम हेय
(ग) निकोलस (घ) जार्ज एनसन ख

प्रश्न 5. कसौली की क्रान्तिकारी सेना का नेतृत्व किसने किया?
(क) मंगल पाण्डेय (ख) विजय सेन
(ग) मीयां रत्न सिंह (घ) भीम सिंह घ

प्रश्न 6. शिमला की पहाड़ी रियासतों में स्थापित गुप्त संगठन का नेता कौन था?
(क) भीम सिंह (ख) मीयां रत्न सिंह
(ग) राम प्रसाद वैरागी (घ) इनमें से कोई नहीं ग

प्रश्न 7. 1857 के विद्रोह के दौरान पंजाब का चीफ कमिश्नर कौन था?
(क) विलियम हेय (ख) जॉन लोरंस
(ग) कैम्पबैल (घ) मैकन्जी ख

प्रश्न 8. इनमें से किसने 1857 के विद्रोह में अंग्रेजों की सहायाता की थी?
(क) बाघल के राणा कृष्ण सिंह (ख) बिलासपुर के राजा हीराचन्द
(ग) सिरमौर के राजा शमशेर प्रकाश (घ) सभी ने घ

प्रश्न 9. 'शेरदिल पुलिस बटालियन' का कमाण्डर कौन था?
(क) विलियम हेय (ख) कैप्टन यंग हस्बैण्ड
(ग) एडवर्ड जॉन लेक (घ) जार्ज एनसन ख

प्रश्न 10. जालन्धर में विद्रोह कब आरम्भ हुआ?
(क) 7-8 जून 1857 (ख) 10 मई, 1857
(ग) 30 मई, 1857 (घ) 12 जून, 1857 क

प्रश्न 11. स्यालकोट में घुड़सवार सेना ने विद्रोह कब शुरू किया?
(क) 8 जून, 1857 (ख) 30 जून, 1857
(ग) 9 जुलाई,. 1857 (घ) 15 जुलाई, 1857 ग

प्रश्न 12. मीयां मीर में विद्रोह कब आरम्भ हुआ?
(क) 9 जुलाई, 1857 (ख) 11 मई, 1857
(ग) 10 मई, 1857 (घ) 30 जुलाई, 1857 घ

प्रश्न 13. 1857 के विद्रोह के समय सुजानपुर टीहरा का राजा कौन था?
(क) प्रताप चन्द (ख) हीरा चन्द
(ग) वीर सिंह (घ) सुर्जन सिंह क

प्रश्न 14. महारानी विकटोरिया का घोषणा पत्र कब घोषित किया गया?
(क) 1 नवम्बर, 1858 (ख) 10 नवम्बर, 1858
(ग) 11 नवम्बर, 1858 (घ) 30 नवम्बर, 1858 क

प्रश्न 15. महारानी विक्टोरिया के घोषणा पत्र की घोषणा किसने की?
(क) लार्ड डलहौजी (ख) लार्ड कैनिंग
(ग) लार्ज वाटेन हेस्टिंग्ज़ (घ) लार्ड कर्जन ख

प्रश्न 16. इंडियन सिविल सर्विसिज़ एक्ट कब पास किया गया?
(क) 1856 (ख) 1857
(ग) 1861 (घ) 1881 ग

प्रश्न 17. किस वायसराय के शिमला में वायसराय निवास बनाने का आदेश दिया?
(क) लार्ड कैनिंग (ख) लार्ड रिपन
(ग) लार्ड लिटन (घ) लार्ड कर्जन ग

प्रश्न 18. शिमला क्षेत्र में जतोग सैनिक क्रान्ति कब हुई थी?
(क) 1856 ई. में (ख) 1867 ई. में
(ग) 1860 ई. में (घ) 1857 ई. में घ

प्रश्न 19. 1857 ई. की क्रान्ति के संचालन के लिए शिमला में बनाए गए संगठन का प्रमुख नेता कौन था?
(क) रामप्रसाद बैरागी (ख) शिवदास
(ग) किशन सिंह (घ) बलवन्त सिंह क

प्रश्न 20. प्रदेश के किन दो क्रान्तिकारियों को 3 अगस्त, 1857 को अंग्रेज़ी सरकार द्वारा फाँसी की सजा दी गई थी?
(क) शिव सिंह व भद्र सिंह (ख) प्रताप सिंह व वीर सिंह
(ग) रामप्रासद व शिव सिंह (घ) अजय सिंह व बलवन्त देव क

प्रश्न 21. राजा शमशेर सिंह किस रियासत का शासक था, जिसने 1857 ई. के विद्रोह के दौरान अंग्रेज़ों को आर्थिक और सैनिक सहायता देना बन्द कर दिया था?
(क) किन्नौर (ख) कोटगढ़

(ग) बुशहर (घ) नालागढ़ ग

प्रश्न 22. स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान शिमला पहाड़ी की किस रियासत में तीव्र असन्तोष फैला?
(क) कुल्लू (ख) नालागढ़ (हिण्डूर)
(ग) काँगड़ा (घ) किसी में नहीं ख

प्रश्न 23. हिमाचल प्रदेश में 1857 ई. के स्वतन्त्रता संग्राम की शुरूआत कहाँ से हुई?
(क) कसौली की सैनिक छावनी से (ख) नालागढ़ नामक स्थान से
(ग) कुल्लू रियासत से (घ) बुशहर रियासत से क

प्रश्न 24. 1857 ई. की क्रान्ति के समय कुल्लू रियासत के किस शासक ने सिराज के नेगी की सहायता से विद्रोह किया था ?
(क) राजा प्रताप सिंह (ख) वीरेन्द्र प्रताप
(ग) अजय सिंह (घ) गजेन्द्र सिंह क

प्रश्न 25. कुल्लू के राजा प्रताप सिंह ने अंग्रेजों के विरुद्ध लोगों को विद्रोह करने के उद्देश्य से सिराज का दौरा कब किया था?
(क) 10 जून, 1857 को (ख) 16 मार्च, 1857
(ग) 1 मई, 1857 को (घ) 16 मई, 1857 को घ

प्रश्न 26. 1857 ई. के स्वतन्त्रता संग्राम के समय कुल्लू रियासत के किस शासक को 'राय' की उपाधि मिली थी?
(क) ज्ञानसिंह (ख) ज्ञानेश्वरसिंह
(ग) रामसिंह (घ) प्रकाशचन्द क

9. हिमाचल में जन अन्दोलन

प्रश्न 1. प्रदेश के पुरानी पहाड़ी रियासतों में सत्ता के विरोध में किए जाने वाले प्रदर्शन को स्थानीय लोग क्या कहकर पुकारते थे?
(क) कहक (ख) लुम्ह
(ग) दूम (घ) सुम्ह ग

प्रश्न 2. राजा उग्रसेन के कार्यकाल (1836-76 ई.) में प्रदेश की सुकेत रियासत में जन-आन्दोलन कब हुआ?
(क) 1857 ई. में (ख) 1840 ई. में
(ग) 1862 ई. में (घ) 1858 ई. में ग

प्रश्न 3. वर्ष 1930 में प्रदेश की बिलासपुर रियासत में हुए जन-आन्दोलन को अन्य किस नाम से भी जाना जाता है?
(क) डाण्डरा आन्दोलन (ख) किसान आन्दोलन
(ग) डण्डा आन्दोलन (घ) सत्याग्रह आन्दोलन क

प्रश्न 4. बिलासपुर रियासत की जनता ने वहाँ के शासक मान सिंह के आतंक के विरुद्ध कब विद्रोह किया था?
(क) 1805 ई. में (ख) 1957 ई. में
(ग) 1806 ई. में (घ) 1860 ई. में क

प्रश्न 5. बुशहर रियासत में 'दुम्ह' (असहयोग आन्दोलन) की शुरूआत किस वर्ष हुई थी?
(क) वर्ष 1904 में (ख) वर्ष 1906 में
(ग) वर्ष 1910 में (घ) वर्ष 1918 में ख

प्रश्न 6. 1859 ई. में रामपुर-बुशहर में बेगार के विरुद्ध संघर्ष का प्रमुख केन्द्र कौन-सा था?
(क) नालागढ़ (ख) सुकेत
(ग) रोहड़ (घ) चम्बा
ग

प्रश्न 7. 1862-76 ई. के मध्य सुकेत रियासत की जनता ने वहाँ के किस मन्त्री के विरुद्ध विद्रोह किया था?
(क) भगवानमल (ख) तेजप्रताप सिंह
(ग) नरहरिवर्मन (घ) नरोत्तम
घ

प्रश्न 8. नालागढ़ रियासत की जनता ने वहाँ के मन्त्री गुलाम कादिर खाँ के अन्यापूर्ण व्यवहार के विरुद्ध विद्रोह कब किया था?
(क) 1876 ई. में (ख) 1880 ई. में
(ग) 1878 ई. में (घ) 1995 ई. में
क

प्रश्न 9. वर्ष 1906 में बुशहर के गढ़वाल के साथ लगते किस क्षेत्र में विद्रोह हुआ था?
(क) डोडावन (ख) डोडरा-क्वार
(घ) बल्ह (घ) इनमें से कोई नहीं
ख

प्रश्न 10. वर्ष 1942-43 में हुए 'पझौता आन्दोलन' का संचालन किसने किया था?
(क) पण्डित राजेन्द्र दत्त (ख) चन्द्रवर्मन सिंह
(ग) सूरज प्रताप सिंह (घ) वैद्य सूरत सिंह
घ

प्रश्न 11. 'पझौता' में किसान आन्दोलन कब चलाया गया था?
(क) 1940-42 में (ख) 1965-66 में
(ग) 1942-43 में (घ) 1896-97 में
ग

प्रश्न 12. प्रदेश में पझौता आन्दोलन किसके विरुद्ध हुआ था?
(क) अंग्रेजों के (ख) मण्डी रियासत के
(ग) सिखों के (घ) गोरखों के
क

प्रश्न 13. मण्डी जिले में किसान आन्दोलन कब हुआ था?
(क) 1904 में (ख) 1912 में
(ग) 1909 में (घ) 1921 में
ग

प्रश्न 14. प्रदेश की कुनिहार रियासत में किसानों ने प्रशासन के अत्याचारों के विरूद्ध में कब आन्दोलन किया था?
(क) 1922 में (ख) 1885 में
(ग) 1920 में (घ) 1905 में
ग

प्रश्न 15. राजा रुद्रसेन के कार्यकाल में सुकेत में जन-आन्दोलन कब हुआ था?
(क) 1878 ई. में (ख) 1895 ई. में
(ग) 1877 ई. में (घ) 1906 ई. में
क

प्रश्न 16. प्रदेश की क्योंथल रियासत में भूमि सम्बन्धी आन्दोलन कब हुआ था?
(क) 1878 ई. में (ख) 1895 ई. में
(ग) 1888 ई. में (घ) 1890 ई. में
ख

प्रश्न 17. प्रदेश की बेजा और थियोग नामक रियासतों में ठकुराइयों के विरुद्ध जन-आन्दोलन कब हुआ था?
(क) 1880 ई. में (ख) 1857 ई. में
(ग) 1898 ई. में (घ) 1885 ई. में
ग

प्रश्न 18. कहलूर नामक रियासत की जनता ने 1880 ई. में उच्छ तथा अन्य किस शासक के राज्य शासन के विरुद्ध विद्रोह किया था?
(क) मनजीत सिंह (ख) भागवतमल
(ग) करतार सिंह (घ) प्रीतम सिंह
घ

प्रश्न 19. राजा ध्यानसिंह के समय में अत्यधिक भूमि-कर लगाने के विरोध में 1897 ई. से लेकर वर्ष 1902 तक किस रियासत में जन-आन्दोलन चलाया गया था?
(क) बाघल रियासत (ख) सुकेत रियासत
(ग) चम्बा रियासत (घ) मण्डी रियासत
क

प्रश्न 20. मण्डी रियासत के राजा भवानी सेन के समय में किसान आन्दोलन कब हुआ था?
(क) वर्ष 1904 में (ख) वर्ष 1915 में
(ग) वर्ष 1909 में (घ) वर्ष 1918 में
ग

प्रश्न 21. वर्ष 1909 के सितम्बर में मण्डी रियासत में डोडा वन के किसानों के आन्दोलन का नेतृत्व किसने किया था ?
(क) सिद्धु खराडा (ख) जयसिंह सिद्धू
(ग) विजयचन्द (घ) राम सिद्धू
क

प्रश्न 22. कुनिहार रियासत के बाबू काशीराम और कोटगढ़ रियासत के सत्यानन्द स्टोक्स ने प्रदेश की पहाड़ी रियासतों में बेगार प्रथा के विरुद्ध कब आन्दोलन चलाया था?
(क) वर्ष 1905 में (ख) वर्ष 1945 में
(ग) वर्ष 1915 में (घ) वर्ष 1920 में
घ

प्रश्न 23. 1924 में बेगार लगान और अधिक कर के विरोध में वनैक (सुन्दरनगर) के रत्नसिंह के नेतृत्व में किस स्थान पर जन-आन्दोलन हुआ था?
(क) सुकेत (ख) नाहन
(ग) बिलासपुर (घ) चम्बा
क

प्रश्न 24. प्रदेश में नालागढ़ नामक स्थान पर जन-आन्दोलन कब हुआ?
(क) 1960 ई. में (ख) 1877 ई. में
(ग) 1865 ई. में (घ) 1880 ई. में
ख

प्रश्न 25. प्रदेश में किस स्थान पर वर्ष 1930 में भूमि बन्दोबस्त सम्बन्धी आन्दोलन हुआ था?
(क) चम्बा में (ख) बिलासपुर में
(ग) सुकेत में (घ) काँगड़ा में
ख

प्रश्न 26. 'हिमालयन हिल स्टेट्स रीजनल काउन्सिल' नामक संस्था के प्रधान स्वामी पूर्णानन्द जी ने किस स्थान पर अपना कार्यालय बनाया था?
(क) काँगड़ा (ख) मण्डी
(ग) चम्बा (घ) सुकेत
ख

प्रश्न 27. चम्बा रियासत में कुछ लोगों ने 'चम्बा सेवक संघ' नाम से एक संस्था का गठन कब किया था?
(क) जून, 1935 को (ख) मई, 1945 को
(ग) मार्च, 1936 को (घ) अप्रैल, 1942 को
ग

प्रश्न 28. प्रदेश की धामी रियासत का प्रसिद्ध गोलीकाण्ड कब हुआ?
(क) 10 फरवरी, 1926 (ख) 13 जुलाई, 1939
(ग) 15 अक्टूबर, 1930 (घ) 18 जून, 1940
ख

प्रश्न 29. धामी रियासत में 'प्रेम प्रचारिणी सभा' की स्थापना कब हुई थी?

(क) 1942 में (ख) 1946 में

(ग) 1944 में (घ) 1947 में — क

प्रश्न 30. वर्ष 1937 में सिरमौर प्रजामण्डल का प्रथम अध्यक्ष किसे बनाया गया था?

(क) चौधरी शमशेर सिंह (ख) भगवत सिंह

(ग) ब्रह्मदत्त गुप्त (घ) चौधरी शेरजंग — घ

प्रश्न 31. सिरमौर में हिमाचल की सबसे पहली 'प्रजामण्डल' संस्था का संस्थापक कौन था?

(क) पण्डित राजेन्द्र दत्त (ख) पण्डित रामचरण

(ग) पण्डित शिव प्रसाद (घ) सूर्य प्रकाश — क

प्रश्न 32. 'हिमालयन हिल स्टेट्स काउन्सिल' के प्रथम सम्मेलन की अध्यक्षता आजाद हिन्द फौज के किस सुप्रसिद्ध सेनानी ने की थी?

(क) कर्नल प्रकाश सिंह (ख) सुरजीत सिंह

(ग) जनरल प्रतापराय चौधरी (घ) कर्नर गुरुदयाल सिंह ढिल्लों — घ

प्रश्न 33. प्रदेश की पहाड़ी रियासतों के प्रजामण्डल के प्रतिनिधियों ने अपने क्षेत्र में प्रजामण्डल को सुचारू रूप से चलाने के लिए जनवरी, 1946 में किस संस्था की स्थापना की थी?

(क) शिमला मण्डल (ख) हिमालयन रीजनल काउन्सिल

(ग) शिमला प्रेम प्राचरिणी सभा (घ) हिमालयन हिल स्टेट्स रीजनल काउन्सिल — घ

प्रश्न 34. लुधियाना में हुई ऑल इण्डिया स्टेट्स पीपुल्स कॉन्फ्रेन्स के शीघ्र पश्चात् शिमला हिल स्टेट्स हिमाचल रियासती प्रजामण्डल की स्थापना कब हुई थी?

(क) 1929 में (ख) 1938 में

(ग) 1930 में (घ) 1935 में — ख

प्रश्न 35. 'हिमालयन हिल स्टेट्स रीजनल काउन्सिल' का प्रथम सम्मेलन मण्डी में कब हुआ था?

(क) 8 से 10 मार्च, 1946 (ख) 14 से 16 मार्च, 1947

(ग) 8 से 10 मार्च, 1948 (घ) 25 से 26 मार्च, 1950 — क

प्रश्न 36. नौजवान सभा की स्थापना किसने की थी?

(क) भक्त सिंह तथा सुखदेव (ख) चन्द्र शेखर आज़ाद

(ग) राजगुरु (घ) ऊधम सिंह — क

प्रश्न 37. प्रदेश में प्रसिद्ध मण्डी षडयंत्र की वर्ष 1914-15 की घटना किसके परिणामस्वरूप घटी थी?

(क) गदर पार्टी (ख) किसान आन्दोलन

(ग) धामी गोली काण्ड (घ) जन-आन्दोलन — क

प्रश्न 38. किस वर्ष सिरमौर राज्य को शिमला पहाड़ी क्षेत्र के अधीक्षक के नियन्त्रण से हटाकर दिल्ली अधीक्षक के अधीन किया गया था?

(क) 1880 ई. में (ख) 1886 ई. में

(ग) 1885 ई. में (घ) 1860 ई. में — क

प्रश्न 39 वर्ष 1934 में प्रदेश की किस पहाड़ी रियासत ने सर्वप्रथम पंचायती राज कानून बनाया था?

(क) मण्डी (ख) सुकेत

(ग) काँगड़ा (घ) चम्बा — क

प्रश्न 40. 1927 में हुए किस सम्मेलन के दौरान बलोच सिपाहियों ने लोगों को बुरी तरह पीटा था?
(क) चम्बा के पास झील में (ख) मण्डी के पास ताल में
(ग) सुजानपुर के पास ताल में (घ) सुकेत के पास मैदान में ग

प्रश्न 41. प्रदेश के किस राजा ने वर्ष 1911 में हुए 'राज्याभिषेक दरबार दिल्ली' में भाग लिया था?
(क) अमर प्रकाश व विजय सेन (ख) अमरचन्द व भूरी सिंह
(ग) क और ख (घ) उपरोक्त में से कोई नहीं ग

प्रश्न 42. प्रदेश के शिमला जिले में बेगार की समाप्ति कब हुई?
(क) वर्ष 1916 में (ख) वर्ष 1919 में
(ग) वर्ष 1921 में (घ) वर्ष 1947 में क

प्रश्न 43. शिमला में कांग्रेस का पुनः संगठन कब हुआ था?
(क) वर्ष 1929 में (ख) वर्ष 1942 में
(ग) वर्ष 1935 में (घ) वर्ष 1945 में क

प्रश्न 44. वर्ष 1946 में सर्वप्रथम किस व्यक्ति ने हिमाचल के पहाड़ी राज्य के निर्माण की माँग की थी?
(क) ठाकुर हजारा सिंह (ख) राजा मानसिंह
(ग) ठाकुर वीरभद्र सिंह (घ) जीवनलाल क

प्रश्न 45. किस व्यक्ति को पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने पहाड़ी गाँधी की उपाधि दी थी?
(क) रमाशंकर दीक्षित (ख) करतार सिंह
(ग) बाबा काशीराम (घ) बाबा रामचरण ग

प्रश्न 46. महात्मा गाँधी ने प्रथम बार शिमला की यात्रा कब की थी?
(क) वर्ष 1915 में (ख) वर्ष 1922 में
(ग) वर्ष 1921 में (घ) वर्ष 1930 में ग

प्रश्न 47. वायसराय लॉर्ड वेवल ने भारतीय राजनैतिक दलों को शिमला में बातचीत करने के लिए कब बुलाया था?
(क) 25 जून, 1945 को (ख) 30 जून, 1943 को
(ग) 25 अप्रैल, 1947 को (घ) 1 फरवरी, 1947 को क

प्रश्न 48. शिमला में कांग्रेस का पहला प्रतिनिधि संगठन कब बनाया गया जिसमें शिमला नगर के मौलवी गुलाम मुहम्मद कांग्रेस के प्रधान चुने गए थे?
(क) जुलाई, 1912 (ख) मई, 1921
(ग) अगस्त, 1909 (घ) जून, 1924 ख

प्रश्न 49. 'नौजवान सभा' पर आधारित 'बाल भारत सभा' की स्थापना 1928 में किसने की थी?
(क) शिवदास (ख) दीनबन्धु गाँधी
(ग) पण्डित जयशंकर प्रसाद (घ) दीनानाथ गाँधी घ

प्रश्न 50. प्रदेश में 'भाई दो' 'ना पाई' आन्दोलन किस राष्ट्रीय आन्दोलन की शाखा थी?
(क) भारत छोड़ो आन्दोलन (ख) असहयोग आन्दोलन
(ग) व्यक्ति सत्याग्रह आन्दोलन (घ) उपरोक्त में से कोई नहीं ग

प्रश्न 51. इरविन-गाँधी समझौते पर हस्ताक्षर करने के लिए गाँधीजी शिमला कब गए थे?
(क) 25 अगस्त, 1931 (ख) 7 अगस्त, 1929
(ग) 26 जून, 1934 (घ) 27 मार्च, 1945 क

प्रश्न 52. हिमाचल प्रदेश में 'सुकेत सत्याग्रह' कब हुआ था?
(क) 16 जनवरी, 1945 में (ख) 26 जून, 1947 में
(ग) 5 अप्रैल, 1949 में (घ) 18 फरवरी, 1948 में — घ

प्रश्न 53. प्रदेश के काँगड़ा क्षेत्र में व्यक्तिगत सत्याग्रह का संचालन के लिए समिति कब बनाई गई थी?
(क) जून, 1939 को (ख) जुलाई, 1942 को
(ग) सितम्बर, 1942 को (घ) नवम्बर, 1940 को — घ

प्रश्न 54. शिमला में भारत छोड़ो आन्दोलन का संचालन किसने किया था?
(क) सोमनाथ (ख) राजकुमारी अमृतकौर
(ग) भावकर नन्द (घ) बाबा काशीराम — ख

प्रश्न 55. गाँधीजी के सविनञ अवज्ञा आन्दोलन में प्रदेश के किन स्थानों के कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने भाग लिया था?
(क) चम्बा व सुकेत (ख) सिरमौर व बुशहर
(ग) मण्डी व बिलासपुर (घ) शिमला व काँगड़ा — घ

प्रश्न 56. राजकुमारी अमृतकौर ने गाँधीजी के सत्याग्रह के दौरान जेल में बन्द होने पर, उनकी किस पत्रिका के सम्पादन का कार्य संभाला?
(क) हरिजन (ख) राष्ट्र चेतना
(ग) स्वराज्यनामा (घ) उपरोक्त में से कोई नहीं — क

10. हिमाचल में राजनीतिक दल एवं राजनीतिक विकास

1. कांग्रेस की स्थापना किसने की थी?
(क) प० जवाहर लाल नेहरू (ख) महात्मा गांधी
(ग) ए. ओ. ह्यूम (घ) योगेश चन्द्र बनर्जी — ग

2. हिमाचल प्रदेश के पहले मुख्यमंत्री कौन बने?
(क) डा. यशवंत सिंह परमार (ख) शांता कुमार
(ग) वीर भद्र सिंह (घ) ठाकुर राम लाल — क

3. हिमाचल प्रदेश में स्वतंत्र पार्टी की स्थापना किसने की थी?
(क) ठाकुर राम लाल (ख) प्रेम कुमार घूमल
(ग) आनन्द चन्द (ग) महाशय कृष्ण — ग

4, डा. यशवंत सिंह परमार के बाद हिमाचल का मुख्य मंत्री किसे बनाया गया?
(क) शांता कुमार (ख) ठाकुर राम लाल
(ग) प्रो. प्रेम कुमार घूमल (घ) वीर भद्र सिंह — ख

5. जनसंघ की स्थापना कब की गई?
(क) 1948 (ख) 1947
(ग) 1951 (घ) 1965 — ग

6. स्वतंत्र पार्टी की स्थापना कब की गई?
(क) 1947 (ख) 1959
(ग) 1952 (घ) 1957 — ख

7. स्वतंत्र पार्टी के संस्थापक बाद में किस दल में शामिल हो गए?
(क) कांग्रेस (ख) जनसंघ
(ग) समाजवादी दल (घ) कम्युनिस्ट पार्टी — क

8. कम्यूनिस्ट पार्टी की स्थापना कब हुई?
(क) 1905 (ख) 1885
(ग) 1925 (घ) 1947 — ग

9. हिमाचल प्रदेश में साम्यवादी दल की स्थापना कब की गई?
(क) 1947 (ख) 1953
(ग) 1952 (घ) 1950 — ख

10. प्रजा सोशलिस्ट पार्टी की स्थापना कब की गई?
(क) 1950 (ख) 1951
(ग) 1952 (घ) 1948 — ग

11. अनुसूचित जाति संघ की स्थापना कब की गई?
(क) 1925 (ख) 1950
(ग) 1947 (घ) 1949 — ख

12. विशाल हिमाचल समिति कब स्थापित की गई?
(क) 1955 (ख) 1952
(ग) 1966 (घ) 1972 — क

13. लोकराज पार्टी की स्थापना कब की गई?
(क) 1965 (ख) 1950
(ग) 1924 (घ) 1967 — घ

14. श्रीमति इंदिरा गांधी ने देश में आपातकाल कब घोषित किया?
(क) 1970 (ख) 1975
(ग) 1984 (घ) 1964 — ख

15. 1977 के लोक सभा चुनावों के बाद केन्द्र में किस दल ने सरकार बनाई?
(क) कांग्रेस (ख) जनता दल
(ग) जनसंघ (घ) समाजवादी पार्टी — ख

16. 1977 के लोक सभा चुनावों के बाद कौन प्रधानमंत्री बना?
(क) श्री मोरार जी देसाई (ख) श्री अटल बिहारी बाजेपयी
(ग) श्रीमति इंदिरा गांधी (घ) डा. मनमोहन सिंह — क

17. 1977 के हिमाचल के विधानसभा के चुनावों के बाद राज्य का मुख्यमंत्री कौन बना?
(क) प्रेम कुमार धूमल (ख) शांता कुमार
(ग) वीर भद्र सिंह (घ) ठाकुर राम लाल — ख

18. हिमाचल में राष्ट्रपति शासन कब लगाया गया?
(क) 1990 (ख) 1988
(ग) 1992 (घ) 1993 — ग

19. 1998 के हिमाचल विधानसभा चुनावों के बाद मुख्यमंत्री कौन बना?
(क) प्रेम कुमार धूमल (ख) वीर भद्र सिंह
(ग) शांता कुमार (घ) इनमें से कोई नहीं — क

20. प्रेम कुमार धूमल दूसरी बार हिमाचल के मुख्यमंत्री कब बने?
(क) 2003 (ख) 2007
(ग) 2012 (घ) इनमें से कोई नहीं — ख

21. 2012 के हिमाचल विधानसभा चुनावों के बाद राज्य का मुख्यमंत्री किसे बनाया गया है?
(क) ठाकुर राम लाल (ख) वीर भद्र सिंह
(ग) प्रेम कुमार धूमल (घ) डा. परमार — ख

11. आधुनिक हिमाचल का निर्माण

1. भारतीय संविधान सभा में हिमाचल प्रदेश का नेतृत्व किसने किया था?
(क) डॉ. यशवंत सिंह परमार (ख) डॉ राधा स्वामी
(ग) श्री चन्द्रमोहन (घ) श्री केशव दास — क

2. भारत के स्वतन्त्र होने तक सम्पूर्ण हिमाचल क्षेत्र कितनी छोटी-बड़ी रियासतों में विभक्त था?
(क) 31 (ख) 29
(ग) 40 (घ) 25 — क

3. 15 अप्रैल, 1948 को हिमाचल प्रदेश में कितनी रियासतों का विलय किया गया था?
(क) 15 (ख) 16
(ग) 25 (घ) 30 — घ

4. शिमला हिल स्टेट्स की 26 छोटी-बड़ी रियासतों को मिलाकर वर्ष 1948 में कौन-सा जिला बनाया गया?
(क) मण्डी (ख) सिरमौर
(ग) बिलासपुर (घ) महासू — घ

5. बिलासपुर रियासत का हिमाचल प्रदेश में विलय कब हुआ था?
(क) जुलाई, 1954 (ख) जनवरी, 1950
(ग) अगस्त, 1948 (घ) अप्रैल, 1948 — क

6. 23 मार्च, 1948 को हिमाचल प्रदेश में किस रियासत को सम्मिलित किया गया था?
(क) बिलासपुर रियासत (ख) सुजानपुर रियासत
(ग) सिरमौर रियासत (घ) धामी रियासत — ग

7. हिमाचल के समस्त पहाड़ी क्षेत्र को एक करके उसे 'हिमाचल प्रदेश' नाम कब दिया गया था?
(क) 15 अगस्त, 1947 (ख) 15 जनवरी, 1950
(ग) 15 अप्रैल, 1948 (घ) 15 फरवरी, 1949 — ग

8. 1948 में हिमाचल प्रदेश के लिए स्थापित की गई अल्पकालिक सरकार का प्रथम अध्यक्ष कौन था?
(क) पण्डित शिवहरि (ख) श्री परमानन्द
(ग) पण्डित शिवानन्द (घ) श्री राम सहाय — ग

9. **हिमाचल प्रदेश का प्रथम डिप्टी चीफ कमिश्नर किसे बनाया गया था?**
(क) श्रीमति विजयलक्ष्मी पण्डित (ख) पैण्ड्रल मून
(ग) पण्डित गौरी प्रसाद (घ) डॉ. परमार — ख

10. **हिमाचल प्रदेश का प्रथम राज्यपाल किसे बनाया गया था?**
(क) रामास्वामी (ख) डॉ. शशि भूषण
(ग) एस चक्रवर्ती (घ) डॉ. यशवन्त राव — ग

11. **प्रदेश में मुख्य आयुक्त के स्थान पर उप-राज्यपाल की नियुक्ति कब हुई थी?**
(क) 18 मार्च, 1954 (ख) 1 मार्च, 1952
(ग) 1 अप्रैल, 1950 (घ) 20 मार्च, 1956 — ख

12. **निम्नलिखित में से कौन हिमाचय प्रदेश का मुख्यमंत्री नहीं रहा?**
(क) श्री वीरभद्र सिंह (ख) श्री शान्ता कुमार
(ग) श्री सत्यप्रकाश ठाकुर (घ) श्री प्रेम कुमार धूमल — ग

13. **पूर्वी पंजाब सरकार का मुख्यालय शिमला में कब तक था?**
(क) वर्ष 1955 तक (ख) वर्ष 1965 तक
(ग) वर्ष 1957 तक (घ) वर्ष 1966 तक — घ

14. **डॉ. यशवन्त सिंह परमार पहली बार प्रदेश के मुख्यमंत्री कब बने?**
(क) 24 मार्च, 1952 में (ख) 30 मार्च, 1953 में
(ग) 26 जनवरी, 1954 में (घ) 23 अप्रैल, 1959 में — क

15. **प्रदेश के प्रथम मुख्यमन्त्री का नाम बताइए**
(क) लालबहादुर शास्त्री (ख) डॉ. यशवन्त सिंह परमार
(ग) ठाकुर रामलाल (घ) श्री वीरभद्र सिंह — ख

16. **हिमाचल प्रदेश में विधानसभा के लिए सर्वप्रथम चुनाव कब हुए थे?**
(क) वर्ष 1952 में (ख) वर्ष 1950 में
(ग) वर्ष 1955 में (घ) वर्ष 1960 में — क

17. **हिमाचल प्रदेश को केन्द्रशासित प्रदेश का दर्जा कब प्राप्त हुआ था?**
(क) 10 जनवरी, 1954 (ख) 5 दिसम्बर, 1955
(ग) 1 नवम्बर, 1956 (घ) 1 फरवरी, 1957 — ग

18. **क्षेत्रीय परिषद् को हिमाचल प्रदेश विधानसभा में परिवर्तित कर लोकप्रिय सरकार की पुनर्स्थापना कब हुई?**
(क) 1 फरवरी, 1963 को (ख) 4 अगस्त, 1963 को
(ग) 10 जून, 1963 को (घ) 1 जुलाई, 1963 को — घ

19. **क्षेत्रीय परिषद् के प्रदेश विधानसभा में परिवर्तित करने के लिए लोकसभा ने वर्ष 1963 में कौन-सा एक्ट पास किया था?**
(क) यूनियन एक्ट (ख) काउन्सिल एक्ट
(ग) गवर्नमेण्ट ऑफ यूनियन एक्ट (घ) गवर्नमेण्ट ऑफ स्टेट एक्ट — ग

20. **पंजाब के पहाड़ी क्षेत्र हिमाचल प्रदेश में कब मिलाए गए थे?**
(क) 1 नवम्बर, 1966 को (ख) 1 जनवरी, 1965 को
(ग) 10 दिसम्बर, 1969 को (घ) 22 जून, 1970 को — क

21. 1966 में जब पंजाब के पहाड़ी क्षेत्र हिमाचल प्रदेश को सौंपे गए थे उस समय स्थापित पंजाब विभाजन आयोग का चेयरमैन कौन था?
(क) के वी रमैया (ख) बी एस माथुर
(ग) जे सी शाह (घ) जी सी वर्मा — ग

22. संसद द्वारा हिमाचल राज्य कानून कब पास किया गया था?
(क) 10 दिसम्बर, 1955 (ख) 15 अप्रैल, 1960
(ग) 5 जनवरी, 1956 (घ) 18 दिसम्बर, 1970 — घ

23. श्रीमति इन्दिरा गाँधी ने लोकसभा में हिमाचल प्रदेश को पूर्ण राजत्व प्रदान करने की घोषणा कब की थी?
(क) 30 नवम्बर, 1960 को (ख) 31 जुलाई, 1970 को
(ग) 10 जुलाई, 1971 को (घ) 31 अप्रैल, 1972 को — ख

24. प्रदेश में राज्य मन्त्रिमण्डल का पुनर्निर्माण कब हुआ था?
(क) वर्ष 1963 में (ख) वर्ष 1980 में
(ग) वर्ष 1972 में (घ) वर्ष 1981 में — क

25. विधानसभा ने प्रस्ताव पास कर हिमाचल प्रदेश को एक पृथक राज्य बनाने की माँग कब की थी?
(क) वर्ष 1960 में (ख) वर्ष 1970 में
(ग) वर्ष 1968 में (घ) वर्ष 1971 में — ग

26. 31 अक्टूबर, 1956 में हिमाचल प्रदेश विधानसभा को किस एक्ट के फलस्वरूप समाप्त कर दिया गया?
(क) स्टेट्स रीऑर्गेनाइजेशन एक्ट (ख) यूनियन एक्ट
(ग) गवर्नमेण्ट ऑफ यूनियन एक्ट (घ) काउन्सिल एक्ट — क

27. 25 जनवरी, 1971 में हिमाचल प्रदेश को भारत का कौन-सा राज्य बनाया गया?
(क) 12वाँ (ख) 16वाँ
(ग) 14वाँ (घ) 18वाँ — घ

28. हिमाचल प्रदेश को पूर्ण राज्य का दर्जा कब प्राप्त हुआ था?
(क) 25 जनवरी, 1971 को (ख) 25 अप्रैल, 1972 को
(ग) 25 अगस्त, 1973 को (घ) 25 जून, 1976 को — क

12. आधुनिक हिमाचल में समाज

1. हिमाचल के बनिया पहले किस लिपी में अपनी बहिया लिखते थे?
(क) देवनागरी (ख) टांकरी
(ग) उर्दू (घ) पंजाबी — ख

2. लाहौल-स्पीति तथा किन्नौर हिमाचल के किस भाग में स्थित हैं?
(क) ऊपरी भाग (ख) मध्य भाग
(ग) निम्न भाग (ग) सभी में — क

3. इनमें से हिमाचल के मूल निवासी कौन हैं?
(क) काली (ख) रेहाड़
(ग) बाढ़ी (घ) सभी — घ

4. मध्य क्षेत्र में बच्चे के जन्म पर की जाने वाली रस्म 'गून्तर' को स्थानीय भाषा में क्या कहते हैं?
(क) यज्ञोपवीत (ख) दसूठन
(ग) झंजराड़ा (घ) बराड़फुक — ख

5. किन्नौर में 'हार' नामक विवाह को क्या कहते हैं?
(क) दुबदुब (ख) रीत
(ग) झांजरा (घ) बराड़फुक — क

6. हिमाचल के किस क्षेत्र में बहुपति प्रथा का प्रचलन था?
(क) ऊपरी क्षेत्र में (ख) सराज क्षेत्र में
(ग) सिरमौर के गिरी धर क्षेत्रों में (घ) सभी — घ

7. हिमाचल में नरसिंह के मन्दिर कहां मिलते हैं?
(क) कुल्लू (ख) चम्बा
(ग) मण्डी (घ) सभी — घ

8. महासू देवता मुख्यत: किस जिले का देवता है?
(क) सिरमौर (ख) चम्बा
(ग) शिमला (घ) ऊना — ग

9. निम्नलिखित में से कौन-सा लोकनृत्य हिमाचल प्रदेश का नहीं है?
(क) थाली नृत्य (ख) जद्दा नृत्य
(ग) झैन्ता नृत्य (घ) झूमर नृत्य — घ

10. प्रदेश की महिलाओं का कृषक नृत्य निम्नलिखित में से कौन-सा है?
(क) झैन्ता (ख) थोरा
(ग) गद्दी (घ) थाली — ग

11. प्रदेश का प्रसिद्ध 'छोहारा नृत्य' किस क्षेत्र से सम्बन्धित है?
(क) महासू (ख) बिलासपुर
(ग) काँगड़ा (घ) ऊना — क

12. प्रदेश का 'भटैथू' नृत्य जो '20 चैत्र से लेकर 1 बैसाख' तक किया जाता है, किन लोगों का विशेष नृत्य हैं?
(क) ढाकियों का (ख) किन्नरों का
(ग) झैन्ता (घ) थाली — क

13. प्रदेश में कुल्लू नामक कुल्लू घाटी के लोकनृत्य किस अवसर पर किए जाते हैं?
(क) होली के अवसर पर (ख) दशहरे के अवसर पर
(ग) फाल्गुन में (घ) सावन में — ख

14. प्रसिद्ध 'झांझर नृत्य' प्रदेश में किस जिले से सम्बन्धित है?
(क) काँगड़ा (ख) लाहौल
(ग) बिलासपुर (घ) चम्बा — घ

15. लाहौल-स्पीति में 'शेरनी', 'धुरे' व 'गारफी' शब्द किससे सम्बन्धित हैं?
(क) लोकगीत (ख) नृत्य कला
(ग) नाट्यकला (घ) मूर्तिकला — ख

16. प्रदेश में 'जागरा' नामक उत्सव पर विशेष रूप से कौन-सा नृत्य किया जाता है?
(क) बिरसू नृत्य (ख) मुंजरा नृत्य
(ग) नाटी नृत्य (घ) घाघरा नृत्य — क

17. पूरे वर्ष होने वाला प्रदेश का नाटी नृत्य अन्य किस नाम से जाना जाता है?
(क) अर्द्ध गोल पंक्ति (ख) माल या गीत नृत्य
(ग) ताल नृत्य (घ) मृदंग के साथ नृत्य
ख

18. हिमाचल प्रदेश की लाहौल घाटी के लोकप्रिय नृत्य कौन-से हैं?
(क) झूरी व रासो (ख) नाटी व स्वाँगटेगी
(ग) कीकली व भांगड़ा (घ) शन व शाबू
घ

19. हिमाचल प्रदेश का सबसे बड़ा पशु मेला सुन्दरनगर नलवाड़ किस मास में मनाया जाता है?
(क) चैत्र (ख) पौष
(ग) सावन (घ) बैसाख
क

20. सुन्दरनगर नलवाड़ मेला किसने शुरू किया था?
(क) राजा भीमसेन (ख) राजा चेत सेन
(ग) राजा परशुनाथ (घ) इनमें से कोई नहीं
ख

21. बिलासपुर जिले में कौन-सा मेला राज्य स्तरीय मेला घोषित किया गया है?
(क) नलवाड़ मेला (ख) शिव मेला
(ग) चिन्तपूर्णी मेला (घ) रिवाल्सर मेला
क

22. प्रदेश में मण्डी जिले के किस मेले को 'राज्य स्तरीय' घोषित किया गया है?
(क) रिवाल्सर मेला (ख) भंगरोटू मेला
(ग) काओ मेला (घ) शिवरात्रि मेला
घ

23. बिलासपुर जिले में लगने वाला कौन-सा मेला व्यापार की दृष्टि से महत्वपूर्ण है?
(क) मेला लुहणू (ख) छिंज
(ग) कृषि मेला (घ) नलवाड़ का मेला
घ

24. मार्कण्ड मेला किस जिले में लगता है?
(क) बिलासपुर (ख) हमीरपुर
(ग) कुल्लू (घ) चम्बा
क

25. बाबा बड़भाग सिंह मेला किस जिले में लगता है?
(क) चम्बा (ख) ऊना
(ग) हमीरपुर (घ) सोनपुर
ख

26. हिमाचल प्रदेश का वह प्रसिद्ध मेला कौन-सा है, जो प्रतिवर्ष 25 से 27 कार्तिक विक्रमी को रामपुर (महासू) में लगता है?
(क) मार्कण्ड मेला (ख) शिव मेला
(ग) लवी मेला (घ) देवी मेला
ग

27. हिमाचल के किस स्थान का दशहरा विश्व प्रसिद्ध है?
(क) कुल्लू (ख) शिमला
(ग) मण्डी (घ) सोलन
क

28. प्रदेश में किस स्थान पर 'पत्थर का खेल' नामक सुप्रसिद्ध मेला लगता है?
(क) किन्नौर (ख) हलोग
(ग) लाहौल (घ) काँगड़ा
ख

29. चम्बा में रानी चम्बियाली की स्मृति में 15 चैत्र से प्रथम बैसाख तक कौन-सा मेला लगता है?
(क) मार्कण्ड मेला (ख) सूही मेला
(ग) शिव मेला (घ) दयोटसिद्ध मेला — ख

30. हिमाचल में नाहन नामक स्थान पर सावन द्वादशी और दशहरे पर कौन-सा मेला लगता है?
(क) तीज मेला (ख) बाबा बड़भाग सिंह मेला
(ग) दयोटसिद्ध मेला (घ) छड़ियों का मेला — घ

31. बैसाख के महीने में किन्नौर में कौन-सा मेला लगता है?
(क) साँझी मेला (ख) सूही मेला
(ग) पशु मेला (घ) उखयांग मेला — घ

32. निम्नलिखित में से कौन-सा त्योहार हिमाचल प्रदेश में मनाया जाता है?
(क) चेरवाल (ख) जगराता
(ग) बरलाज (घ) उपरोक्त सभी — घ

33. पूर्वी हिमाचल का सबसे बड़ा मेला कौन-सा है?
(क) रेणुका मेला (ख) होली मेला
(ग) काहिक मेला (घ) मिंजर मेला — क

34. प्रदेश में 'मण्डी शिवरात्रि मेला' की शुरुआत किसने की थी?
(क) राजा आमेर सिंह (ख) राजा आनन्द पाल
(ग) राजा मोहर सिंह (घ) राजा अजबेर सिंह — घ

35. हिमाचल की गद्दी जनजाति में निम्नलिखित में से कौन-सा त्यौहार मनाया जाता है?
(क) बसोआ (ख) पतरोडू
(ग) सैर (घ) उपरोक्त सभी — घ

36. किन्नौर जिले का कौन-सा महोत्सव 'फूलों का महोत्सव' के रूप में प्रसिद्ध हैं?
(क) लोसर (ख) फुलाइच
(ग) उखयांग (घ) भुण्डा — क

37. काँगड़ा जिले का सुप्रसिद्ध 'बाबा दयागीर मेला' किस स्थान पर लगता है?
(क) दौलतपुर (ख) मण्डी
(ग) महासू (घ) काँगड़ा — क

38. हिमाचल में 'तिलोकपुर' नामक स्थान पर बाला सुन्दरी का मेला कब लगता है?
(क) माघ मास में (ख) श्रावण मास में
(ग) चैत्र मास में (घ) भादो मास में — ग

39. कुल्लू जिले में 'देवी हिडिम्बा' की याद में कौन-सा उत्सव मनाया जाता है?
(क) डूंगरी मेला (ख) चिन्तपूर्णी मेला
(ग) ब्रजेश्वरी मेला (घ) दुर्गा मेला — क

40. चम्बा में भाद्रपद की पूर्णिमा को कौन-सा प्रसिद्ध मेला लगता है?
(क) रथ-रथणी (ख) ब्रजेश्वरी मेला
(ग) विष्णु रथ यात्रा मेला (घ) मिंजर मेला — क

41. सिरमौर क्षेत्र में बैसाखी के दिन कौन-सा त्यौहार मनाया जाता है?
(क) बिशु (ख) हालड़ा
(ग) फुलाइच (घ) बीस भादों — क

42. भरमौर के समीप किस स्थान पर भाद्रमद्र मास की शुक्ल अष्टमी को मेला लगता है?
(क) मणिमहेश (ख) मलई
(ग) पाँगी (घ) सलूनी — क

43. प्रदेश में किस स्थान पर 'बूढ़ी दिवाली' नामक मेला लगता है?
(क) मण्डी (ख) रिवाल्सर
(ग) निर्मड (घ) बिलासपुर — ग

13. हिमाचल की अर्थव्यवस्था

1. प्रदेश के कितने क्षेत्र में बागवानी की जाती है?
(क) 10% (ख) 21%
(ग) 30% (घ) 35% — ख

2. हिमाचल प्रदेश में सेब का सबसे पहला बाग किसके द्वारा लगाया गया था?
(क) कैप्टन ए ए ली (ख) जॉन क्रिस्टल
(ग) सर हेनरी (घ) लेडी माउण्ट बेटन — क

3. शिमला की पहाड़ियों में मशोबरा नामक स्थान पर सबसे पहले सेब की पैदावार कब की गई थी?
(क) 1850 ई. में (ख) 1855 ई. में
(ग) 1887 ई. में (घ) 1865 ई. में — ग

4. 1823 ई. में शिमला की पहाड़ियों में सर्वप्रथम किसने आलू उत्पादन शुरू किया था?
(क) मेजर हेनरी (ख) ए. ओ. ह्यूम
(ग) सहर चार्ल्स (घ) मेजर कैनेडी — घ

5. राष्ट्रीय स्तर पर हिमाचल प्रदेश का अदरक उत्पादन में कौन-सा स्थान है?
(क) छठा (ख) सातवाँ
(ग) आठवाँ (घ) नौवाँ — क

6. हिमाचल प्रदेश में सेब का सबसे पहला बाग कहाँ पर लगाया गया था?
(क) शिमला में (ख) काँगड़ा में
(ग) कुल्लू घाटी के बुन्दोरल में (घ) लाहौल-स्पीति में — ग

7. प्रदेश में सन्तरों का उत्पादन प्रमुख रूप से कहाँ किया जाता है?
(क) शिमला व मनाली (ख) कुल्लू व काँगड़ा
(ग) लाहौल व किन्नौर (घ) कसौली — ख

8. प्रदेश के किस जिले में सेब का उत्पादन सबसे अधिक होता है?
(क) बिलासपुर (ख) सिरमौर
(ग) सोलन (घ) शिमला — घ

9. प्रदेश का कौन-सा भू-भाग नींबू प्रजाति के फल उत्पादन के लिए सर्वोत्तम है?
(क) नालागढ़ क्षेत्र (ख) मनाली क्षेत्र
(ग) चम्बा क्षेत्र (घ) शिवालिक घाटी — घ

10. हिमाचल प्रदेश में पैदा की जाने वाली कुठ नामक बूटी का निर्यात भारत से बाहर किस देश में किया जाता है?
(क) अमेरिका (ख) कनाडा
(ग) फ्रांस (घ) उपरोक्त सभी
घ

11. हिमाचल प्रदेश में किस स्थान पर कृषि विश्वविद्यालय की स्थापना की गई है?
(क) काँगड़ा (ख) कुल्लू
(ग) पालमपुर (घ) ऊना
ग

12. मक्का का उत्पादन प्रदेश के निम्नलिखित में से किस जिले में होता है?
(क) शिमला (ख) हमीरपुर
(ग) सोलन (घ) ये सभी
घ

13. हिमाचल प्रदेश के कितने हेक्टेयर क्षेत्र में कृषि की जाती है?
(क) 10.12 लाख हेक्टेयर (ख) 10.14 लाख हेक्टेयर
(ग) 10.20 लाख हेक्टेयर (घ) 15.18 लाख हेक्टेयर
ख

14. प्रदेश के किस जिले में धान का सर्वाधिक उत्पादन होता है?
(क) शिमला (ख) सोलन
(ग) काँगड़ा (घ) चम्बा
ग

15. किन्नौर व लाहौल-स्पीति जिलों में किस खाद्यान्न का उत्पादन अधिक मात्रा में होता है?
(क) मक्का (ख) गेहूँ
(ग) जौ (घ) चना
ग

16. प्रदेश में खरीफ की फसलें प्राय: कब बोई जाती हैं?
(क) मार्च-अप्रैल (ख) अगस्त-दिसम्बर
(ग) दिसम्बर-जनवरी (घ) मई-जून
घ

17. 'काला जीरा' हिमाचल प्रदेश में कहाँ पर पैदा किया जाता है?
(क) चम्बा व काँगड़ा (ख) सोलन व शिमला
(ग) किन्नौर व लाहौल-स्पीति (घ) ऊना व बिलासपुर
ग

18. प्रदेश के निम्नलिखित में से किस क्षेत्र में चरवाहे, गद्दी, किन्नर व गुर्जर लोग पशुपालन द्वारा जीवन निर्वाह करते हैं?
(क) किन्नौर (ख) लाहौल-स्पीति
(ग) पाँगी (घ) ये सभी
घ

19. दयोल नामक स्थान जहाँ पर एशिया का सबसे बड़ा मत्स्य प्रजनन केन्द्र स्थित है, किस जिले के अन्तर्गत आता है?
(क) बिलासपुर (ख) काँगड़ा
(ग) ऊना (घ) शिमला
क

20. प्रदेश में मछली का वार्षिक उत्पादन लगभग कितना है?
(क) 5000 मीट्रिक टन (ख) 5100 मीट्रिक टन
(ग) 5900 मीट्रिक चन (घ) 6500 मीट्रिक टन
ग

21. निम्नलिखित में से किस किस्म की मछली हिमाचल प्रदेश में पाई जाती है?
(क) महाशीर (ख) मिर्र
(ग) ट्राउट (घ) ये सभी
घ

22. प्रदेश के चम्बा जिले में किस स्थान पर भेड़ प्रजनन केन्द्र खोला गया है?
(क) पाँगी (ख) चूड़ी
(ग) भटियात (घ) सलूनी — ख

23. हिमाचल प्रदेश में चाय का उत्पादन प्रमुख रूप से किन स्थानों पर किया जाता है?
(क) कुल्लू व चम्बा (ख) मण्डी व काँगड़ा
(ग) नाहन व बिलासपुर (घ) हमीरपुर व शिमला — ख

24. हिमाचल प्रदेश का प्रधान औद्योगिक नगर कौन-सा है?
(क) नाहन (ख) शिमला
(ग) बिलासपुर (घ) ऊना — क

25. हिमाचल प्रदेश का कौन-सा जिला 'पहाड़ी नमक' की खानों के लिए प्रसिद्ध हैं?
(क) कुल्लू (ख) मण्डी
(ग) बिलासपुर (घ) काँगड़ा — ख

26. प्राचीन समय में किन्नौर राज्य के दो प्रमुख 'व्यापार केन्द्र' कौन-से थे?
(क) भटियात व चम्बा (ख) कुल्लू व काँगड़ा
(ग) सांगला व रामपुर-बुशहर (घ) बिलासपुर व सांगला — ग

27. प्रदेश के निम्नलिखित में से किस स्थान पर सीमेण्ट फैक्ट्री हैं?
(क) गागल (ख) सिरमौर
(ग) राजबन (ग) ये सभी — घ

28. प्रदेश के वनों में अधिकांश रूप से किस प्रकार के वृक्ष पाए जाते हैं?
(क) देवदार (ख) ओक
(ग) स्प्रूस (घ) ये सभी — घ

29. प्रदेश के नाहन एवं होशियारपुर क्षेत्रों में प्रमुख रूप से किस प्रकार के वृक्ष पाए जाते हैं?
(क) चीड़ (ख) देवदार
(ग) साल (घ) पीपल — ग

30. हिमाचल प्रदेश के कुल क्षेत्रफल के लगभग कितने प्रतिशत भाग में वन स्थित हैं?
(क) 67% (ख) 88%
(ग) 90% (घ) 95% — क

31. निम्न में से किस स्थान पर सेंधा नमक के भण्डार मिले हैं?
(क) गुम्मा (ख) दारांग
(ग) क और ख (घ) उपरोक्त में से कोई नहीं — ग

32. प्राकृतिक गैस का सम्भावी क्षेत्र है
(क) ज्वालामुखी (ख) बिलासपुर के स्वारघाट
(ग) हमीरपुर के दयोट सिद्ध (घ) उपरोक्त सभी — घ

33. हिमालय के गर्म पानी के चश्मों में पाया जाता है
(क) नमक (ख) गन्धक
(ग) आयोडीन (घ) ये सभी — घ

34. राज्य में जिप्सम पाया जाता है

(क) सिरमौर (ख) चम्बा

(ग) कुल्लू (घ) इनमें से कोई नहीं क

35. चामेरा हाइडल परियोजना किस नदी पर बनी है?

(क) रावी (ख) झेलम

(ग) सतलुज (घ) चिनाब क

36. भाखड़ा बाँध की ऊँचाई कितनी है?

(क) 118 मी (ख) 126 मी

(ग) 218 मी (घ) 226 मी घ

37. वर्ष 1926 में पश्चिमी हिमाचल में स्थापित की जाने वाली प्रथम जल-विद्युत परियोजना कौन-सी थी?

(क) जोगिन्दर नगर (ख) बासपा

(ग) विनबा (घ) नाथपा-झाखरी क

38. निम्नलिखित में से कौन-सी परियोजना हिमाचल प्रदेश से सम्बन्धित हैं?

(क) लारजी हाइडल परियोजना (ख) गज परियोजना

(ग) कोल डैम परियोजना (घ) उपरोक्त सभी घ

39. हिमाचल प्रदेश की सबसे बड़ी सिंचाई योजना कौन-सी है?

(क) शाह नगर परियोजना (ख) सींगापुर नहर परियोजना

(ग) जलालपुर नहर परियोजना (घ) ईष्टा पौरी-नहर परियोजना क

40. हिमाचल प्रदेश में सतलुज नदी पर निम्नलिखित में से कौन-सी परियोजना बनाई गई हैं?

(क) दुलहस्ती जल-विद्युत परियोजना (ख) गिरना परियोजना

(ग) नाथपा-झाकरी परियोजना (घ) गोबिन्द सागर परियोजना ग

41. राज्य में रोंग-टोंग जल विद्युत परियोजना किस क्षेत्र में स्थित है?

(क) मण्डी (ख) लाहौल-स्पीति

(ग) कुल्लू (घ) जोगिन्दर नगर घ

42. पार्वती परियोजना निम्नलिखित में से किस राज्य की सबसे बड़ी जल-विद्युत परियोजना है?

(क) जम्मू-कश्मीर (ख) हिमाचल प्रदेश

(ग) बिहार (घ) उत्तर-प्रदेश ख

43. निम्नलिखित में से कौन-सी नदी हिमाचल प्रदेश में होकर प्रवाहित नहीं होती है?

(क) सतलज (ख) रावी

(ग) चिनाब (घ) झेलम घ

44. चामेरा परियोजना हिमाचल प्रदेश के किस जिले में हैं?

(क) ऊना (ख) सोलन

(ग) बिलासपुर (घ) चम्बा घ

45. नाथपा-झाकरी विद्युत निगम (एन जे पी) हिमाचल प्रदेश सरकार ने वर्ष 1988 में किसके सहयोग से चलाई थी?

(क) भारत सरकार (ख) जर्मन सरकार

(ग) जापान सरकार (घ) नेपाल सरकार क

46. कोल बाँध परियोजना किस प्रदेश के लिए हैं?
(क) उत्तर प्रदेश (ख) मध्य प्रदेश
(ग) हिमाचल प्रदेश (घ) पंजाब
ग

47. पार्वती हाइडल परियोजना के अन्तर्गत हुई सन्धि में शामिल राज्य हैं।
(क) हरियाणा (ख) राजस्थान
(ग) गुजरात (घ) ये सभी
घ

48. बासपा किस नदी की सहायक नदी है जहाँ बासपा हाइडल परियोजना शुरू की गई है?
(क) रावी (ख) सतलुज
(ग) चिनाब (घ) झेलम
ख

14. हिमाचल की जनजातियां

1. हिमाचल प्रदेश की कौन-सी जाति सिन्धु सभ्यता की समकालीन मानी जाती है?
(क) कोल (ख) किन्नर
(ग) नाग (घ) ये सभी
घ

2. पश्चिमी हिमाचल में रहने वाले कोली, हाली, डूम, चनाल, रेहड, बाढ़ी आदि नामों वाले लोग किस आदिम जाति से सम्बन्धित माने जाते हैं?
(क) अनार्य जाति से (ख) किन्नर जाति से
(ग) नाग जाति से (घ) द्रविड़ जाति से
क

3. हिमाचल प्रदेश के मूल निवासी, जिनका वर्णन ऋग्वेद में मिलता है, आज उन्हें किस जाति के रूप में जाना जाता है?
(क) कोली (ख) डूम
(ग) हाली (घ) ये सभी
घ

4. हिमाचल प्रदेश की किस जनजाति को 'खोसिया' नाम से भी जाना जाता है?
(क) गद्दी (ख) पंगवाल
(ग) गुर्जर (घ) किन्नर
घ

5. हिमाचल प्रदेश के खासिया और कनेत राजपूत किस वंशज के हैं?
(क) आर्यों के (ख) ब्राह्मणों के
(ग) हाली के (घ) खसों के
घ

6. प्रदेश की गद्दी जनजाति में प्रचलित शिव पूजा किस प्रथा द्वारा की जाती हैं?
(क) नुआला (ख) सुतन
(ग) नाचा (घ) टोडा
क

7. प्रदेश की गद्दी जनजाति में किस नदी को सबसे पवित्र नदी माना जाता है?
(क) यमुना (ख) रावी
(ग) गंगा (घ) सतलज
ग

8. गद्दी जनजाति हिमाचल प्रदेश के किन क्षेत्रों में सर्वाधिक पाई जाती है?
(क) बिलासपुर, किन्नौर (ख) भरमौर, चम्बा
(ग) बजौर, कुल्लू (घ) उपरोक्त में से कोई नहीं
ख

9. हिमाचल प्रदेश के निवासी 'गुर्जर' किसके वंशज माने जाते हैं?
   (क) क्षत्रिय (ख) राजपूत
   (ग) हूण (घ) खस — ग

10. ठाकुर नामक श्रेष्ठ उपजाति प्रदेश की किस जनजाति से सम्बन्धित है?
   (क) पाँगी (ख) पुंगवाल
   (ग) गद्दी (घ) लाहौली — घ

11. 'गुर्जर' जनजाति मुख्यतः किस धार्मिक सम्प्रदाय से सम्बन्ध रखती है?
   (क) हिन्दू (ख) मुस्लिम
   (ग) ईसाई (घ) क और ख — घ

12. प्रदेश की 'स्पीतियन' जनजाति को अन्य किस नाम से जाना जाता है?
   (क) भोट (ख) पाँगी
   (ग) चारु (घ) सीलानी — क

13. किन्नौर जिले के 'लोहार' व 'बढ़ई' किस नाम से जाने जाते हैं?
   (क) कराल (ख) चनाल
   (ग) सनाल (घ) बरवाल — ख

15. हिमाचल की वास्तुकला

1. काँगड़ा कला शैली का प्रादुर्भाव किस शैली से हुआ है?
   (क) मुगल शैली (ख) राजस्थानी शैली
   (ग) राजपूत शैली (घ) गुलेरी शैली — घ

2. निम्नलिखित में से कौन-सी कला शैली हिमाचल प्रदेश से सम्बन्धित नहीं है?
   (क) गुलेरी शैली (ख) नागर शैली
   (ग) अर्की कला शैली (घ) रूमाली कला शैली — ख

3. पहाड़ी चित्रशैली में काँगड़ा शैली के अतिरिक्त कौन-सी चित्रशैली हिमाचल प्रदेश की है?
   (क) राजस्थानी शैली (ख) चन्देली शैली
   (ग) बसौली शैली (घ) गढ़वाली शैली — ग

4. निम्न में से किस वास्तु शैली पर मुसलमानी सभ्यता का प्रभाव दिखाई देता है?
   (क) गोंपा (ख) गुम्बदाकार शैली
   (ग) पैगोड़ा (घ) उपरोक्त में से कोई नहीं — ख

5. निम्नलिखित में से कौन शास्त्रीय शैली के मन्दिर हैं?
   (क) गोंपा (ख) ढलुवा छतीय मन्दिर
   (ग) पैगोड़ा (घ) शिखर शैली मन्दिर — घ

6. 'काँगड़ा कलम' का सबसे अधिक विकास काँगड़ा के किस राजा के काल में हुआ था?
   (क) संसारचन्द (ख) पृथ्वी सिंह
   (ग) भूमिचन्द (घ) जगदेव चन्द — क

7. चम्बा कलम का विकास चम्बा के किस राजा के काल में हुआ था?
   (क) हरिचन्द (ख) राजसिंह
   (ग) विजयसिंह (घ) मानसिंह — ख

8. प्रदेश की काँगड़ा कला शैली का मुख्य विषय क्या था?
   (क) प्राकृतिक सौन्दर्य (ख) इमारत
   (ग) मन्दिर (घ) कृष्ण एवं राधा
   घ
9. इंग्लैंड की प्रमुख वास्तु कला शैली कौन सी थी?
   (क) रोमन शैली (ख) गाथिक शैली
   (ग) विक्टोरियन शैली (घ) इनमें से कोई नहीं
   ग
10. विक्टोरिया मैमोरियल हाल का निर्माण किसके काल में हुआ?
   (क) लार्ड कर्जन (ख) लार्ड डलहौज़ी
   (ग) लार्ड रिपन (घ) लार्ड विलियम बैंटिक
   क
11. शिमला के क्राइस्ट चर्च में पहली प्रार्थना कब की गई?
   (क) 1 जून, 1857 (ख) 11 अक्तूबर, 1857
   (ग) 10 मई, 1857 (घ) 30 मई, 1857
   ख
12. शिमला में खुले पहले होटल का क्या नाम था?
   (क) ओबराय (ख) चीफ
   (ग) पैवेलियन (घ) इनमें से कोई नहीं
   ग
13. क्राइस्ट चर्च की आधार शिला कब रखी गई?
   (क) 1856 (ख) 1857
   (ग) 1844 (घ) 1848
   ग
14. शिमला पंजाब सरकार का मुख्यालय कब बना?
   (क) 1858 (ख) 1871
   (ग) 1881 (घ) 1876
   ख
15. भारत-तिब्बत सड़क का निर्माण किसने आरम्भ करवाया था?
   (क) लार्ड कर्जन (ख) लार्ड डलहौज़ी
   (ग) लार्ड हेस्टिंग्ज (घ) लार्ड रिपन
   ख
16. शिमला अंग्रेज़ों की गीष्म कालीन राजधानी कब बनी?
   (क) 1887 (ख) 1874
   (ग) 1885 (घ) 1864
   घ
17. वायसरीगल लॉज का वास्तुकार कौन था?
   (क) हैनरी इरविन (ख) सकलैन
   (ग) हैवर्ट (घ) एडवर्ड बैंक
   क

TYPE-II

ठीक गलत लिखिए Write True/False

1. हिमाचल का भूगोल

प्रश्न 1. क्षेत्रफल की दृष्टि से हिमाचल भारत का सातवां राज्य है।

उत्तर- गलत

प्रश्न 3. हिमाचल के पूर्व में सीमावर्ती राष्ट्र तिब्बत है।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 4. हिमाचल में सबसे अधिक क्षेत्रफल ऊना जिले का है।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 5. हिमाचल में सबसे अधिक क्षेत्रफल लाहौल-स्पीति का है।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 6. बृहद हिमालय की सबसे बड़ी पर्वतमाला जस्कर पर्वत शृंखला है।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 7. जास्कर पर्वत शृंखला चम्बा को कश्मीर से अलग करती है।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 8. स्पीति के काजा खण्ड को शति मरूस्थल कहा जाता है।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 9. ब्राह्य हिमालय को पांगी पर्वत श्रेणी भी कहा जाता है।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 10. मध्य हिमालय को पांगी पर्वत श्रेणी भी कहते हैं।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 11. मध्य हिमालय में पर्वत श्रेणी की ऊँचाई समुद्र तल से लगभग 5100 मी. से 5700 मी. तक की है।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 12. ब्राह्य हिमालय को धौलाधार के नाम से भी जाना जाता है।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 13. शिवालिक पर्वतमाला हिमाचल के पहाड़ी क्षेत्रों को मैदानी क्षेत्रों से अलग करती है।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 14. कुण्डली दर्रा और चोलांग दर्रा मध्य हिमालय में स्थित हैं।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 15. चोलांग दर्रा बाह्य हिमालय में है।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 16. शिपकी-ला नामक दर्रा बृहद हिमालय में है।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 17. शिवालिक पर्वत श्रेणी को पीर पंजाल नाम से भी जाना जाता है।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 18. पांगी पर्वत श्रेणी को पीर पंजाल नाम से भी पुकारा जाता है।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 19. सतलुज नदी का वैदिक नाम शतुद्रु है।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 20. सतलुज नदी हिमालय में बहने वाली सबसे छोटी नदी है।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 21. सतलुज नदी मानतलाई झील से निकलती है।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 22. सतलुज की सबसे बड़ी सहायक नदी स्पीति है।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 23. व्यास नदी को संस्कृत में बिपाशा के नाम से पुकारा जाता है।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 24. पंडोह बांध व्यास नदी पर बनाया गया है।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 25. चन्द्रभागा का वैदिक नाम अस्किनी है।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 26. चिनाब नदी पीर पंजाल पर्वत श्रंखला से

निकलती है।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 27. चिनाब नदी बारालाचा दर्रे से निकलती है।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 28. चन्द्र और भागा नदियों के मिलन से रावी नदी बनती है।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 29. चन्द्र और भागा के मिलन से चिनाब नदी बनती है।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 30. रावी नदी का संस्कृत नाम ईरावती है।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 31. रावी नदी की सबसे बड़ी सहायक नदी सिऊल है।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 32. यमुना नदी का शास्त्रीय नाम यमनोत्री है।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 33. यमुना का शास्त्रीय नाम कालिंदी है।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 34. तौंस नदी यमुना नदी की सहायक नदी है।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 35. खजियार झील डलहौज़ी उपमण्डल में है।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 36. मणिमहेश झील चम्बा जिले में हैं।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 37. मणिमहेश झील भरमौर उपमंडल में है।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 38. रिवाल्सर झील मण्डी जिले में है।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 39. पौंग झील मण्डी में है।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 40. पौंग झील कांगड़ा जिले में है।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 41. पराशर झील मण्डी जिले में है।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 42. रिवालसर झील के तैरते टापू की झील भी कहते हैं।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 43. भृगु झील कुल्लू में स्थित है।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 44. रेणुका झील सिरमौर जिले की प्राकृतिक झील है।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 45. रेणुका झील कुल्लू जिले की प्राकृतिक झील है।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 46. तत्तापानी के चश्में मण्डी तथा शिमला जिलों में हैं।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 47. मणिकर्ण का गर्म चश्मा कांगड़ा जिले में स्थित है।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 48. मणिकर्ण का गर्म चश्मा कुल्लू जिले में है।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 49. गोबिन्दसागर झील बिलासपुर जिले में स्थित है।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 50. गोबिन्द सागर झील सबसे बड़ी प्राकृतिक झील है।

उत्तर- गलत।

2. हिमाचल का प्राचीन इतिहास

प्रश्न 1. हिमाचल के सबसे प्राचीन निवासी दास तथा दस्यु थे।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 2. हिमाचल के प्राचीनतम निवासी मुंडा थे।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 3. पुराणों में खस जनजाति का उल्लेख मिलता है।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 4. खस जनजाति के लोग आज भी सिरमौर तथा किन्नौर में बसते हैं।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 5. जन अनेक परिवारों का समूह होता था।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 6. जनपद अस्थाई राज्य होते थे।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 7. भद्र जनपद के पूर्व मद्र तथा पश्चिम भद्र दो भाग थे।
उत्तर- गलत।
प्रश्न 8. भद्र जनपद के पूर्व मद्र तथा उत्तर मद्र दो भाग थे।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 9. त्रिगर्त को आजकल कुल्लू कहते हैं।
उत्तर- गलत।
प्रश्न 10. त्रिगर्त जनपद को आजकल कांगड़ा कहा जाता है।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 11. त्रिगर्त जनपद का संस्थापक सुशर्म चन्द था।
उत्तर- गलत।
प्रश्न 12. त्रिगर्त का संस्थापक भूमि चन्द्र था।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 13. सुशर्म चन्द ने नगरकोट को अपनी राजधानी बनाया था।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 14. जालन्धर, त्रिगर्त राज्य का दूसरा नाम था।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 15. हर्षवर्धन कन्नौज का प्रसिद्ध शासक था।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 16. कन्नौज के शासक यशोवर्मन ने कश्मीर के शासक ललितादित्य को पराजित किया था।
उत्तर- गलत।
प्रश्न 17. कन्नौज के शासक यशोवर्मन को कश्मीर के शासक ललितादित्य ने पराजित किया था।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 18. आठवीं तथा नवमी शताब्दी में त्रिगर्त को कीरा भी कहा जाता है।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 19. त्रिगर्त के कटोच वंश के राजा इन्दु चन्द ने अपनी पुत्री सूर्यमति का विवाह कश्मीर के राजा अनन्त देव से किया था।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 20. औदुम्बर देश सतलुज और व्यास के बीच स्थित था।
उत्तर- गलत।
प्रश्न 21. औदुम्बर देश रावी और व्यास नदियों के बीच था।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 22. औदुम्बर जनपद की मुद्राएं कुलूत राज्य में मिली हैं।
उत्तर- गलत।
प्रश्न 23. औदुम्बर जनपद की मुद्राएं पठानकोट तथा ज्वालामुखी से मिली हैं।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 24. औदुम्बर जनपद के निवासी महादेव के उपासक थे।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 25. औदुम्बर जनपद के लोग इन्द्र देवता के उपासक थे।
उत्तर- गलत।
प्रश्न 26. कुलूत जनपद व्यास नदी के ऊपरी घाटी में फैला हुआ था।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 27. कुलूत जनपद का संस्थापक बिहिंगमणी पाल था।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 28. प्राचीन काल में कुल्लू के सामन्त राणा और ठाकुर कहलाते थे।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 29. ह्यूनसांग जालन्धर होता हुआ कुलुत तथा लाहौल भी गया था।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 30. स्पीति के राजा राजेन्द सेन ने कुलूत के राजा रुद्र पाल को राज कर देने के लिए बाध्य किया था।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 31. चम्बा राज्य का संस्थापक चन्द्रवंशी राजा मरू था।
उत्तर- गलत।
प्रश्न 32. चम्बा राज्य का संस्थापक सूर्यवंशी राजा मरू था।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 33. मरू ने राणाओं और ठाकुरों को अधीन करके ब्रह्मपुर नगर की स्थापना की।
उत्तर- ठीक।

प्रश्न 34. मणिमहेश का मन्दिर आदित्य वर्मन ने बनवाया था।
उत्तर- गलत।
प्रश्न 35. मणिमहेश का मन्दिर चम्बा के राजा मेरू वर्मन ने बनवाया था।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 36. लक्ष्मी वर्मन ने अपनी राजधानी ब्रह्मपुर से बदलकर आज के चम्बा में बनाई।
उत्तर- गलत।
प्रश्न 37. साहिल वर्मन ने अपनी राजधानी ब्रह्मपुर से बदलकर वर्तमान चम्बा में बनाई।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 38. आज के चम्बा का पहला नाम चम्पा था।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 39. रामायण में कुलिन्द जनपद का वर्णन आता है।
उत्तर- गलत।
प्रश्न 40. महाभारत में कुलिन्द जनपद का वर्णन आता है।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 41. समुद्रगुप्त के इलाहाबाद के स्तम्भ में भी कुलिन्द जनपद का वर्णन मिलता है।
उत्तर- गलत।

3. मध्यकालीन हिमाचल रियासतें

प्रश्न 1. आठवीं शताब्दी से बारहवीं शताब्दी के काल को भारत के इतिहास में राजपूत काल कहा जाता है।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 2. राजपूत काल में बहुत समय तक दिल्ली भारत की राजनीति का केन्द्र बना रहा।
उत्तर- गलत।
प्रश्न 3. राजपूत काल में बहुत समय तक कन्नौज भारत की राजनीति का केन्द्र बना रहा।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 4. महमूद गज़नवी के समय नगरकोट का दुर्ग भीमनगर के नाम से प्रसिद्ध था।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 5. महमूद गज़नवी के आक्रमण के समय भूम चन्द्र कांगड़ा का शासक था.
उत्तर- गलत।
प्रश्न 6. महमूद गज़नवी के नगरकोट पर आक्रमण के समय कांगड़ा का शासक जगदीश चन्द्र था।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 7. महमूद गज़नवी के समय दिल्ली पर तोमर वंशीय राजा का शासन था।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 8. त्रिगर्त का राजा जगदेव अपनी राजधानी जालन्धर से नगरकोट ले गया।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 9. जसवां राज्य की स्थापना पद्म चन्द ने की थी।
उत्तर- गलत।
प्रश्न 10. जसवां राज्य की स्थापना पूर्व चन्द ने की थी
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 11. पृथ्वीराज चौहान और मुहम्मद गौरी के बीच हुए युद्ध में कांगड़ा के कटोच राजा ने भी भाग लिया था।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 12. मुहम्मद तुगलक के नगरकोट पर आक्रमण के समय वहां का शासक जयसिंह चन्द्र था।
उत्तर- गलत।
प्रश्न 13. मुहम्मद तुगलक के 1337 ई. में नगरकोट पर किए गए आक्रमण के समय वहां का शासक पृथ्वी चन्द्र था।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 14. कांगड़ा के शासक पृथ्वी चन्द्र ने मुहम्मद तुगलक को पराजित कर दिया।
उत्तर- गलत।
प्रश्न 15. फिरोजशाह तुगलक ने 1337 ई. में नगरकोट पर आक्रमण किया।
उत्तर- गलत।
प्रश्न 16. फिरोज़शाह तुगलक ने 1361 ई. में नगरकोट पर आक्रमण किया।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 17. तैमूर ने 1498 ई. में भारत पर आक्रमण किया।
उत्तर- गलत।
प्रश्न 18. तैमूर ने 1398 ई. में भारत पर आक्रमण किया।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 19. जब शेरशाह सूरी ने दिल्ली पर अधिकार

किया, उस समय राम चन्द्र कांगड़ा का शासक था।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 20. शेरशाह सूरी के दिल्ली पर अधिकार करने के समय कांगड़ा का शासक धर्म चन्द था।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 21. कांगड़ा का शासक रामचन्द मुगल सम्राट अकबर का समकालीन था।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 22. कांगड़ा का शासन धर्म चन्द मुगल सम्राट अकबर का समकालीन था।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 23. अकबर ने नगरकोट पर आक्रमण करने के लिए पंजाब के सूबेदार हुसैन कुली खान को भेजा।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 24. अकबर कांगड़ा की जागीर टोडरमल को देना चाहता था।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 25. अकबर कांगड़ा की जागीर बीरबल को देना चाहता था।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 26. कांगड़ा के राजा विधि चन्द ने विद्रोह के बाद अकबर के प्रति अपनी वफ़ा प्रकट की थी।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 27. कांगड़ा का राजा त्रिलोक चन्द मुगल सम्राट जहांगीर का समकालीन था।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 28. जहांगीर के काल में 1520 ई. में नगरकोट पर अधिकार किया गया।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 29. जहांगीर के काल में 1620 ई. में नगरकोट पर अधिकार किया गया।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 30. शाहजहां का वास्तविक नाम खुर्रम था।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 31. कांगड़ा पर अधिकार करने के बाद 1620 ई. में कांगड़ा की राजधानी नगरकोट बनाई गई।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 32. कांगड़ा पर अधिकार करने के बाद कांगड़ा की राजधानी राजगीर में बनाई गई।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 33. कांगड़ा का राजा चन्द्रभान चन्द मुगल सम्राट जहांगीर का समकालीन था।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 34. कांगड़ा का राजा चन्द्रभान चन्द मुगल सम्राट शाहजहां का समकालीन था।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 35. कांगड़ा के राजा भीमचन्द ने जम्मू के राजा के आक्रमण को असफल कर दिया।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 36. जब जम्मू के राजा ने कांगड़ा के राजा भीम चन्द पर आक्रमण किया, तब गुरू गोबिन्द सिंह ने भीम चन्द की सहायता की।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 37. गुरू गोबिन्द सिंह ने आनन्दपुर साहिब में खालसा पंथ की स्थापना की थी।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 38. गुरू गोबिन्द सिंह ने 1799 ई. में खालसा पंथ की स्थापना की थी।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 39. गुरू गोबिन्द सिंह ने 1699 ई. में खालसा पंथ की स्थापना की थी।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 40. अहमद शाह अब्दाली ने 1759 ई. में शंकर चन्द को अपने इलाके का प्रतिनिधि नियुक्त किया।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 41. अहमदशाह अब्दाली ने 1759 ई. में कांगड़ा के शासक घमण्ड चन्द को पहाड़ी इलाके का प्रतिनिधि नियुक्त किया।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 42. जस्सा सिंह रामगढ़िया ने कांगड़ा, नूरपुर, चम्बा, मण्डी आदि से कर वसूल किया।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 43. 1786 ई. में विधि चन्द ने नगरकोट के किले पर पुनः अधिकार कर लिया।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 44. 1786 ई. में कांगड़ा के राजा संसार चन्द ने नगरकोट के किले पर पुनः अधिकार कर

लिया।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 45. गुलेर राज्य की स्थापना धर्म चन्द ने की थी।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 46. गुलेर राज्य की स्थापना धर्म चन्द के बड़े भाई हरि चन्द ने की थी।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 47. जहांगीर ने कोटला के किले पर अधिकार करने के बाद किला पुनः गुलेर के शासक जगदीश चन्द को सौंप दिया।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 48. अकबर ने कोटला का किला जीत कर गुलेर के शासक जगदीश चन्द को सौंप दिया।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 49. जहांगीर ने गुलेर के राजा रूप चन्द को 'बहादुर' की उपाधि से सम्मानित किया।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 50. औरंगज़ेब ने गुलेर के शासक बिक्रम सिंह को मुगल सेना में मनसबदार बनाया।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 51. सिब्बा राज्य की स्थापना स्वर्ण चन्द ने की थी।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 52. दतारपुर राज्य की स्थापना दतार चन्द ने 1550 ई. में की थी।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 53. नूरपुर, कुल्लू से निकली एक शाखा थी।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 54. नूरपुर, कांगड़ा राज्य से निकली एक शाखा थी।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 55. नूरपुर राज्य की स्थापना 1295 ई. में जेठपाल ने की थी।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 56. नूरपुर राज्य की स्थापना 1095 में जेठपाल ने की थी।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 57. कटलैहड़ राज्य की स्थापना जसपाल ने की थी।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 58. चम्बा का शासक ललित वर्मन मुगल सम्राट अकबर का समकालीन था।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 59. चम्बा का शासक प्रातप सिंह मुगल सम्राट अकबर का समकालीन था।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 60. गणेशवर्मन चम्बा के राजगुरू थे।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 61. रामपति चम्बा के राजगुरू थे।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 62. चम्बा शासक जनार्दन के बाद चम्बा बीस वर्ष तक नूरपुर के अधीन रहा।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 63. चम्बा के शासक पृथ्वी सिंह को मुराद बख्श ने जहांगीर के दरबार में पेश किया।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 64. चम्बा के शासक पृथ्वी सिंह को मुराद बख्श ने शाहजहां के दरबार में उपस्थित किया।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 65. औरंगज़ेब ने चम्बा के शासक पृथ्वी सिंह को वहां के मन्दिरों को गिरा देने का आदेश दिया।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 66. औरंगजेब ने चम्बा के शासक चतुरसिंह को वहां के मन्दिर गिराने का आदेश दिया।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 67. कांगड़ा किले का अन्तिम मुगल सूबेदार सैफ अली खां था।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 68. बुशहर के राजा ने सहदेव पाल के समय कुल्लू पर आक्रमण किया था।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 69. बुशहर के राजा ने हस्त पाल के समय कुल्लू पर आक्रमण किया था।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 70. चम्बा के शासक जगत सिंह ने नूरपुर पर अधिकार किया।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 71. चम्बा के शासक जगत सिंह ने सुल्तानपुर पर अधिकार किया।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 72. सुकेत रियासत की स्थापना 665 ई. में की गई थी।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 73. सुकेत रियासत की स्थापना 765 ई. में बीर सेन ने की थी।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 74. मण्डी हिमाचल की सुकेत रियासत की एक शाखा थी।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 75. मण्डी रियासत की स्थापना संसार चन्द ने की थी।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 76. मण्डी रियासत की स्थापना साहु सेन ने की थी।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 77. मण्डी के शासक सूरज सेन ने सरकपुर किले का निर्माण करवाया।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 78. मण्डी के शासक सिद्ध सेन ने सरकपुर किले का निर्माण करवाया।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 79. गोरखों ने 1815 ई. में मण्डी के उत्तराधिकारी शासक को कांगड़ा के शासक संसार चन्द से मुक्त करवाया था।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 80. गोरखों ने 1806 ई. में मण्डी के उत्तराधिकारी शासक को कांगड़ा के शासक संसार चन्द से मुक्त करवाया था।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 81. बिलासपुर का रियासती नाम कहलूर था।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 82. बिलासपुर रियासत की स्थापना वीर चन्द ने 897 ई. में की थी।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 83. बिलासपुर रियासत की स्थापना वीर चन्द ने 697 ई. में की थी।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 84. बिलासपुर का राजा ज्ञान चन्द मुगल सम्राट शाहजहां का समकालीन था।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 85. बिलासपुर का राजा ज्ञान चन्द मुगल सम्राट अकबर का समकालीन था।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 86. मुहम्मद तुगलक ने सिरमौर के राजा भक्त प्रकाश के समय सिरमौर को अपना करद बनाया था।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 87. फिरोज़शाह तुगलक ने राजा भक्त प्रकाश के काल में सिरमौर को अपना करद बनाया था।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 88. सिरमौर का राजा मेदनी प्रकाश गुरू गोबिन्द सिंह का समकालीन था।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 89. किन्नौर एक समय रामपुर बुशहर का ही भाग था।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 90. रामपुर बुशहर का संस्थापक माही प्रकाश था।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 91. रामपुर बुशहर का संस्थापक प्रद्युमन था।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 92. बुशहर का राजा केहरी सिंह जहांगीर का समकालीन था।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 93. बुशहर के राजा हरी सिंह को मुगल सम्राट औरंगजेब ने छत्रपति की उपाधि दी थी।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 94. बुशहर का राजा राम सिंह अपनी राजधानी रामपुर ले गया।

उत्तर- ठीक।

4. 19वीं शताब्दी में हिमाचल की पहाड़ी रियासतें

प्रश्न 1. संसार चन्द का जन्म 1765 ई. में हुआ।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 2. सिखों की कुल 12 मिसलें थीं।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 3. कांगड़ा के किले पर 10 वर्ष तक जय सिंह

कन्हैया का अधिकार रहा।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 4. कांगड़ा के किले पर जय सिंह कन्हैया का चार वर्ष तक अधिकार रहा।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 5. झांझरधार का किला बिलासपुर के शासक धर्म प्रकाश ने बनवाया था।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 6. झांझरधार का किला कांगड़ा के शासक संसार चन्द ने बनवाया था।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 7. संसार चन्द तथा गोरखों की पहली मुठभेड़ 1801 ई. में महल मोरियां स्थान पर हुई।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 8. संसार चन्द तथा गोरखों की पहली मुठभेड़ 1806 ई. में महल मोरियां स्थान पर हुई।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 9. फतह चन्द कांगड़ा के राजा संसार चन्द का भाई था।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 10. मोहकम चन्द महाराजा रणजीत सिंह का सेनापति था।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 11. महाराजा रणजीत सिंह ने 24 अगस्त 1806 ई. में कांगड़ा के किले पर अधिकार कर लिया।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 12. महाराजा रणजीत सिंह ने 24 अगस्त, 1809 ई. में कांगड़ा के किले पर अधिकार कर लिया।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 13. 1809 में जसवां पर गोरखों का अधिपत्य स्थापित हो गया।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 14. जसवां का शासक वीर सिंह दस वर्ष तक अर्की में रहा।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 15. नूरपुर का शासक वीर सिंह दस वर्ष तक अर्की में रहा।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 16. सिक्खों की पहली लड़ाई के बाद जम्मू और कश्मीर का क्षेत्र रणजीत सिंह को दे दिया गया।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 17. सिखों की पहली लड़ाई के बाद जम्मू और कश्मीर का क्षेत्र महाराजा गुलाब सिंह को बेच दिया गया।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 18. भूप सिंह गुलेर का अन्तिम राजा था।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 19. सिब्बा का अन्तिम राजा राम सिंह था।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 20. दूसरे सिख युद्ध के बाद सिब्बा सिखों के अधिकार में आ गया।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 21. दूसरे सिख युद्ध के बाद सिब्बा अंग्रेजों के अधिकार में आ गया।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 22. महाराजा रणजीत सिंह और कांगड़ा के राजा संसार चन्द की 1809 ई. ज्वालामुखी में भेंट हुई।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 23. भद्रवाह के शासक पहाड़ चन्द ने 1820 में चम्बा को राज कर देना बन्द कर दिया।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 24. महाराजा रणजीत सिंह ने देसा सिंह को कांगड़ा का नाजिम नियुक्त किया।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 25. चम्बा के शासक चढ़त सिंह ने लगभग 36 वर्ष तक राज्य किया।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 26. कुल्लू का राजा विक्रम सिंह कांगड़ा के शासक संसार चन्द का समकालीन था।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 27. महाराजा गुलाब सिंह ने काबुल के अमीर शाहशुजा को बन्दी बना कर रखा था।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 28. महाराजा रणजीत सिंह ने काबुल के अमीर शाह शुजा को बन्दी बनाकर रखा था।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 29. रणजीत सिंह ने कांगड़ा के शासक संसार चन्द की गोरखों के विरुद्ध लड़ाई में सहायता की।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 30. 1804 में कुटलैहड़ सिक्खों के अधीन आ गया।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 31. 1809 ई. में कुटलैहड़ सिक्खों के अधीन आ गया।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 32. रणजीत सिंह ने 1813 ई. में गुलेर पर अधिकार किया।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 33. ध्यान सिंह महाराजा दिलीप सिंह का प्रधान मंत्री था।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 34. ध्यान सिंह महाराजा रणजीत सिंह का प्रधान मंत्री था।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 35. रणजीत सिंह ने 1809 में गोरखों को पराजित किया।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 36. अंग्रेज़ों की गोरखों के साथ लड़ाई 1809 में हुई।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 37. आंग्ल-गोरखा युद्ध 1815 में हुआ।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 38. अंग्रेज़ों ने 11 मार्च, 1862 को चम्बा के राजा को सनद प्रदान की।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 39. कुल्लू का सारा भाग 1815 में अंग्रज़ों के अधिकार में आया।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 40. कुल्लू का सारा भाग 1846 में अंग्रेज़ों के अधिकार में आया।

उत्तर- ठीक।

5. आंग्ल-गोरखा युद्ध (1814-15 ई.)

प्रश्न 1. लार्ड हेस्टिंगज़ के समय गोरखों की शक्ति कमज़ोर हो चुकी थी।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 2. 1801 ई. में गोरखों ने गोरखपुर पर अधिकार कर लिया।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 3. 1811 ई. में गोरखों ने बुशहर की सेना को पराजित किया।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 4. बटबाल और श्योराज आंग्ल-गोरखा युद्ध से पहले गोरखों के अधिकार में थे।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 5. अंग्रेजों ने रामगढ़ के किले पर तोपों से आक्रमण किया।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 6. जुब्बल के लोग भी अंग्रेजों के विरुद्ध हो गए थे।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 7. आंग्ल-गोरखा युद्ध में कर्नल आक्टरलोनी का अंग्रेज़ों की विजय में बड़ा योगदान था।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 8. संगौली की संधि 1814 में हुई।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 9. संगौली की संधि 1816 में हुई।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 10. आंग्ल-गोरखा युद्ध के बाद सभी पहाड़ी रियासतों पर अंग्रेज़ों का अधिकार हो गया।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 11. आंग्ल-गोरखा युद्ध के बाद शिमला क्षेत्र में अंग्रेज़ों का प्रभुत्व हो गया।

उत्तर- ठीक।

6. अंग्रेजों द्वारा पहाड़ी रियासतों पर नियन्त्रण

प्रश्न 1. सिखों की पहली लड़ाई लार्ड डलहौज़ी के काल में हुई।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 2. सिखों की पहली लड़ाई लार्ड हार्डिंग के काल में हुई।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 3. अमृतसर की सन्धि 1809 ई. में अंग्रेज़ों तथा रणजीत सिंह के बीच हुई।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 4. 1809 ई. में रणजीत सिंह की मृत्यु हो गई।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 5. 1839 ई. में रणजीत सिंह की मृत्यु हुई।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 6. 1839 से 1842 तक अंग्रेजों को अफगानिस्तान से युद्ध लड़ना पड़ा।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 7. अंग्रेज़ों ने 1849 को सिन्ध को अपने साम्राज्य में मिला लिया।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 8. अंग्रेज़ों ने 1843 को सिंध को अपना साम्राज्य में मिला लिया।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 9. महाराजा रणजीत सिंह की माता का नाम रानी जिन्दां था।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 10. ब्रिटिश सेना ने 20 फरवरी, 1846 को लाहौर पर अधिकार कर लिया।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 11. प्रथम सिख युद्ध के बाद लाल सिंह को राजा मान लिया गया।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 12. प्रथम सिख युद्ध के बाद दलीप सिंह को राजा मान लिया गया।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 13. प्रथम सिख युद्ध के बाद 1846 में सुकेत को सनद प्रदान की गई।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 14. सिखों का दूसरा युद्ध 1848-49 में लड़ा गया।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 15. दूसरे सिख युद्ध के बाद अंग्रेज़ों ने लाहौर का कार्यभार संभाल लिया।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 16. प्रथम सिख युद्ध के बाद 1846 में अंग्रेज़ों ने लाहौर पर अपना अधिपत्य स्थापित कर लिया।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 17. सिखों के दूसरे युद्ध के बाद मूल राज को काले पानी भेज दिया गया।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 18. सिखों की दूसरी लड़ाई के बाद अंग्रेज़ों ने अनेक पहाड़ी शासकों को जागीर देकर जागीरदार बना दिया।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 19. कांगड़ा के शासक संसार चन्द की 1760 ई. में मृत्यु हो गई।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 20. कांगड़ा के शासक संसार चन्द की 1823 में मृत्यु हुई।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 21. भूप सिंह सुकेत का शासक था।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 22. भूप सिंह गुलेर का शासक था जो रणजीत सिंह का समकालीन था।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 23. रणजीत सिंह गुलेर के शासक भूप सिंह को बाबा कह कर पुकारता था।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 24. सिखों के पहले युद्ध के बाद अंग्रेज़ों ने अजीत सिंह को कुल्लू का राजा मान लिया।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 25. कुल्लू पर अधिकार करने के बाद अंग्रेज़ों में ठाकुर सिंह को कुल्लू का राजा मान लिया।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 26. कांगड़ा को लैप्स की नीति के अन्तर्गत अंग्रेज़ों ने अपने अधिकार में लिया।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 27. बघाट को लैप्स की नीति के अन्तर्गत अंग्रेज़ों ने अपने अधिकार में लिया।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 28. दूसरे सिख युद्ध के बाद कांगड़ा अंग्रेज़ों के अधिकार में आ गया।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 29. कांगड़ा के राजा प्रमोद चन्द की 1851 में मृत्यु हुई।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 30. दूसरे सिख युद्ध के बाद लगभग समस्त पहाड़ी क्षेत्र अंग्रेज़ों के अधिकार में आ गया।

उत्तर- ठीक।

7. परिवहन एवं संचार व्यवस्था

प्रश्न 1. हिमाचल में छोटी रेल लाईन कालका से शिमला तक चलती है।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 2. हिमाचल प्रदेश के लिए पठानकोट से जोगिन्द्रनगर ब्राड गेज रेल लाइन है।
उत्तर- गलत।
प्रश्न 3. राष्ट्रीय राज मार्ग 13 शिमला जिले से गुजरता है।
उत्तर- गलत।
प्रश्न 4. राष्ट्रीय राजमार्ग 22 शिमला जिले से गुजरता है।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 5. कालका-शिमला रेलवे लाईन पर सबसे लम्बी सुरंग बड़ोग में है।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 6. हिमाचल प्रदेश में सबसे छोटा हवाई अड्डा काजा है।
उत्तर- गलत।
प्रश्न 7. हिमाचल प्रदेश में सबसे ऊँचाई पर हवाई अड्डा काजा है।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 8. राष्ट्रीय राष्ट्रमार्ग 20 मण्डी जिले से गुजरता है।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 9. हिमाचल में राष्ट्रीय राजमार्ग 88 की कुल लम्बाई 180 कि०मी० है।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 10. हिमाचल प्रदेश के लिए नंगल से ऊना तक बड़ी रेलवे लाईन बनाई गई है।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 11. हिमाचल पथ परिवहन की स्थापना 2 अक्तूबर, 1974 को की गई थी।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 12. हिमाचल के सोलन में सबसे बड़ा हवाई अड्डा है।
उत्तर- गलत।
प्रश्न 13. हिमाचल के सोलन में कोई भी हवाई अड्डा नहीं है।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 14. कालका-शिमला रेल मार्ग में कुल 63 सुरंगे हैं।
उत्तर- गलत।
प्रश्न 15. कालका-शिमला रेल मार्ग में कुल 103 सुरंगे हैं।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 16. भारतीय रेल विभाग का बिलासपुर-मंडी-लेह रेल मार्ग बनाने का प्रस्ताव है।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 17. हिमाचल प्रदेश में रेलमार्ग की कुल लम्बाई 192 कि.मी. है।
उत्तर- गलत।
प्रश्न 18. हिमाचल प्रदेश में रेल मार्ग की कुल लम्बाई 292 कि.मी. है।
उत्तर- ठीक।

8. हिमाचल में 1857 का विद्रोह

प्रश्न 1. हिमाचल प्रदेश में सबसे पहले विद्रोह की चिंगारी कसौली सैनिक छावनी में शुरु हुई।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 2. मेरठ में क्रान्ति का आरम्भ 11 मई, 1857 को हुआ।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 3. कसौली में क्रान्ति सेना का नेतृत्व मंगल पाण्डेय ने किया।
उत्तर- गलत।
प्रश्न 4. कसौली में क्रान्ति सेना का नेतृत्व भीम सिंह ने किया।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 5. 1857 के विद्रोह के समय पंजाब का चीफ कमिश्नर जॉन लारेंस था।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 6. महारानी विक्टोरिया का घोषणा पत्र 1 नवम्बर, 1858 को घोषित किया गया।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 7. 1857 के विद्रोह के समय गवर्नर जनरल लार्ड डलहौजी था।
उत्तर- गलत।
प्रश्न 8. 1857 के विद्रोह के समय शिमला के क्रान्ति के संचालन के लिए राम प्रसाद बैरागी के नेतृत्व में एक संगठन बनाया गया।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 9. 1857 के विद्रोह के दौरान शिमला में किशन सिंह के नेतृत्व में एक संगठन बनाया गया।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 10. प्रताप सिंह तथा वीर सिंह दो क्रांतिकारियों को 3 अगस्त, 1857 को फांसी की सजा दी गई।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 11. 1857 के विद्रोह का तात्कालिक कारण चर्बी वाले कारतूस थे।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 12. सैरी में क्रान्तिकारियों का नेता थाने का दारोगा बुद्ध सिंह था।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 13. बुद्ध सिंह को अंग्रेज़ों ने पकड़ कर फांसी की सज़ा दे दी।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 14. बुद्ध सिंह ने अपनी ही राईफल से स्वयं को गोली मार कर आत्म हत्या कर ली।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 15. गुप्त संगठनों के केन्द्र प्रायः मन्दिर, मस्जिद एवं गुरुद्वारे थे।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 16. 28 मई, 1857 को जतोग, सपाटू, कसौली तथा कालका के सैनिकों ने विद्रोह आरम्भ कर दिया।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 17. 28 मई, 1857 को जतोग, सपाटू, कसौली तथा कालका के सैनिकों ने विद्रोह समाप्त कर दिया।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 18. 'शेर दिल पुलिस बटालियन' का कमाण्डर विलियम हेय था।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 19. 'शेर दिल पुलिस बटालियन' का कमाण्डर कैप्टन यंग हस्बैंड था।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 20. मीयां मीर में विद्रोह 30 जुलाई, 1857 को शुरू हुआ था।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 21. अंग्रज़ों ने कुल्लू के शासक ज्ञान सिंह को राय की उपाधि दी।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 22. 1857 के विद्रोह के समय सिरमौर का राजा वीर सिंह था।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 23. कुल्लू में क्रान्ति का नेतृत्व वहां के राजा प्रताप सिंह ने किया।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 24. 1857 के विद्रोह के समय मण्डी में अंग्रज़ों ने वज़ीर गोसाऊं को स्टेट का रीजेन्ट बनाया था।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 25. 1857 के विद्रोह का पहला शहीद मंगल पाण्डेय था।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 26. कसौली का सहायक कमिश्नर कैप्टन ब्लैककॉल था।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 27. कसौली का सहायक कमिश्नर पी मैक्सवैल था।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 28. 1857 की क्रान्ति के समय शिमला का डिप्टी कमिश्नर कैप्टन ब्लैककॉल था।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 29. 1857 के विद्रोह के समय शिमला का डिप्टी कमिश्नर विलियम हेय था।

उत्तर- ठीक।

9. हिमाचल में जन अन्दोलन

प्रश्न 1. पहाड़ी राज्य बिलासपुर में 1930 में हुए जन आन्दोलन को डाण्डरा आन्दोलन कहते हैं।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 2. 1872 से 1876 तक सुकेत रियासत में हुए विद्रोह के समय वहां का मंत्री भगवानमल था।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 3. 1872 से 1876 तक सुकेत राज्य में हुए विद्रोह के समय वहां का मंत्री नरोत्तम था।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 4. पझौता आन्दोलन का नेतृत्व वैद्य सूरत सिंह ने किया।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 5. 1909 में मण्डी रियासत में राजा भवानी सेना के काल में किसान आन्दोलन हुआ।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 6. प्रेम प्रचारिणी सभा की स्थापना 1947 में हुई।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 7. प्रेम प्रचारिणी सभा की स्थापना 1942 में हुई।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 8. रत्न सिंह के नेतृत्व में चम्बा रियासत में जन आन्दोलन हुआ।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 9. रत्न सिंह के नेतृत्व में 1924 में सुकेत राज्य में जन आन्दोलन हुआ।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 10. कुनिहर रियासत के बाबू काशीराम 1920 में बेगार के विरुद्ध जन आन्दोलन चलाया।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 11. हिमालयन हिल स्टेटस रीजनल कौंसिल के प्रधान स्वामी पूर्णानन्द जी बनाए गए।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 12. हिमालयन हिल स्टेट्स रीजनल कौंसिल का कार्यालय सुकेत में बनाया गया।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 13. हिमालयन हिल स्टेट्स रीजनल कौंसिल का कार्यालय मण्डी में बनाया गया।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 14. सिरमौर प्रजा मण्डल के प्रथम अध्यक्ष भगवत सिंह थे।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 15. सिरमौर प्रजा मण्डल के प्रथम अध्यक्ष चौधरी शेरजंग थे।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 16. 1909 में डोडा वन के किसानों के जन आन्दोलन का नेतृत्व सिद्ध खराड़ा ने किया।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 17. बाबा काशीराम को पहाड़ी गांधी कहा जाता है।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 18. बाबा काशीराम को महात्मा गांधी ने पहाड़ी गांधी की उपाधि दी थी।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 19. बाबा काशीराम को प० जवाहर लाल नेहरू ने पहाड़ी गांधी की उपाधि दी थी।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 20. नौजवान सभा की स्थापना 1931 में की गई।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 21. नौजवान सभा की स्थापना 1928 में की गई।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 22. नौजवान सभा की स्थापना चन्द्रशेखर आज़ाद ने की।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 23. नौजवान सभा की स्तापना भक्त सिंह तथा सुखदेव ने की।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 24. गांधी-इरविन समझौता 1919 में हुआ।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 25. गांधी-इरविन समझौता 1931 में हुआ।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 26. पझौता किसान आन्दोलन 1942-43 में चलाया गया।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 27. बुशहर रियासत में बेगार आन्दोलन का मुख्य केन्द्र सुकेत था।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 28. रामपुर बुशहर में बेगार आन्दोलन का मुख्य केन्द्र रोहड़ू था।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 29. नालागढ़ के मंत्री गुलाम कादिर खां के विरुद्ध विद्रोह 1876 में हुआ।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 30. 1877 ई० में नालागढ़ में जन आन्दोलन हुआ।

उत्तर- ठीक।

10. हिमाचल में राजनीतिक दल

प्रश्न 1. हिमाचल प्रदेश का प्रथम मुख्यमंत्री ठाकुर राम लाल थे।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 2. हिमाचल प्रदेश के प्रथम मुख्यमंत्री डा. यशवंत सिंह परमार थे।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 3. ए. ओ.ह्यूम ने राष्ट्रीय कांग्रेस दल की स्थापना की थी।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 4. डा. यशवंत सिंह परमार 1952 से 1972 तक हिमाचल के मुख्यमंत्री रहे।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 5. डा. यशवंत सिंह परमार के बाद ठाकुर राम लाल हिमाचल के मुख्यमंत्री बने।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 6. स्वतंत्र पार्टी की स्थापना स्वतंत्रता से पहले हो चुकी थी।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 7. स्वतंत्र पार्टी की स्थापना 1959 में हुई थी।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 8. जनसंघ की स्थापना ने 1948 में की गई।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 9. जनसंघ की स्थापना 1951 में की गई।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 10. केरल तथा आन्ध्र प्रदेश में साम्यवादी दल काफी समय तक शक्तिशाली बना रहा।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 11. पश्चिमी बंगाल में कई वर्षों तक साम्यवादी दल की सरकार रही।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 12. हिमाचल में प्रजा सोशलिस्ट पार्टी ने भी एक बार अपनी सरकार बनाई थी।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 13. ट्रावनकोर-कोचीन में प्रजा सोशलिस्ट दल ने अपनी सरकार का गठन किया था।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 14. विशाल हिमाचल समिति का गठन 1950 में किया गया।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 15. विशाल हिमाचल समिति का गठन 1955 में किया गया।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 16. हिमाचल में लोक राज पार्टी की स्थापना 1967 में की गई।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 17. देश में आपातकालीन घोषणा 1975 में की गई।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 18. 1977 के चुनावों से पहले जनता पार्टी का गठन हुआ था।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 19. 1977 के चुनावों के बाद श्री अटल बिहारी वाजपेयी देश के प्रधान मंत्री बने।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 20. 1977 के चुनावों के बाद श्री मेरार जी देसाई देश के प्रधान मंत्री बने।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 21. 1977 के चुनावों के बाद श्री शांता कुमार हिमाचल के मुख्य मंत्री बनें।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 22. 1980 के चुनावों के बाद हिमाचल में पुनः शांता कुमार मुख्य मंत्री बनें।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 23. 1980 के चुनावों के बाद ठाकुर राम लाल हिमाचल के मुख्य मंत्री बनें।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 24. 1990 में हिमाचल के राष्ट्रपति शासन लगा दिया गया।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 25. 1992 में हिमाचल में राष्ट्रपति शासन लगा दिया गया।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 26. 1998 में भारतीय जनता पार्टी तथा हिमाचल विकास कांग्रेस ने मिलकर सरकार बनाई।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 27. 2003 में वीर भद्र सिंह हिमाचल के मुख्यमंत्री बने।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 28. 2007 में प्रो. प्रेम कुमार धूमल हिमाचल के मुख्य मंत्री बने।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 29. 2012 के चुनावों के बाद प्रो. प्रेम कुमार धूमल हिमाचल के मुख्य मंत्री बने।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 30. 2012 में कांग्रेस के वीर भद्र सिंह हिमाचल के मुख्य मंत्री बने।

उत्तर- ठीक।

11. आधुनिक हिमाचल का निर्माण

प्रश्न 1. हिल स्टेट्स रिजनल कौंसिल का अधिवेशन सत्यदेव बुशहरी के नेतृत्व में हुआ।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 2. शिमला की पहाड़ी रियासतों का समकालीन जुब्बल के भागमल सौहटा के नेतृत्व में हुआ।
उत्तर- गलत।
प्रश्न 3. शिमला की पहाड़ी रियासतों के राजाओं का सम्मेलन बघाट के राजा दुर्गासिंह की अध्यक्षता में हुआ।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 4. पहाड़ी रियासतों को हिमाचल प्रदेश के रूप में गठित करने की घोषणा शिमला में की गई।
उत्तर- गलत।
प्रश्न 5. पहाड़ी रियासतों को हिमाचल प्रदेश के रूप में गठित करने की घोषणा सोलन में की गई।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 6. हिमालयन हिल स्टेट्स सब-रिजनल कौंसिल 'हिमालय प्रान्त' के निर्माण के पक्ष में थे।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 7. 1948 में हुए सुकेत सत्याग्रह का नेतृत्व डा. परमार ने किया था।
उत्तर- गलत।
प्रश्न 8. 1948 में हुए सुकेत सत्याग्रह का नेतृत्व पद्म देव ने किया था।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 9. सुकेत रियासत की राजधानी सुन्दरनगर थी।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 10. 1948 में जालन्धर में चीफ कमिश्नर कन्हैया लाल थे।
उत्तर- गलत।
प्रश्न 11. 1948 में जालन्धर के चीफ कमिश्नर नगेश दत्त थे।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 12. 1948 में भारत सरकार के राज्य मंत्रालय के सचिव सी.सी. देसाई थे।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 13. शिमला की पहाड़ी रियासतों ने 8 मार्च, 1947 को विलय पत्र पर हस्ताक्षर कर दिये।
उत्तर- गलत।
प्रश्न 14. शिमला की पहाड़ी रियासतों ने 8 मार्च, 1948 को विलय पत्र पर हस्ताक्षर कर दिये।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 15. सिरमौर का राजा राजेन्द्र प्रकाश अन्तिम समय तक रियासत को बचाने में लगा रहा।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 16. सिरमौर के राजा राजेन्द्र प्रकाश ने 3 मार्च, 1948 को विलय पत्र पर हस्ताक्षर कर दिये।
उत्तर- गलत।
प्रश्न 17. सिरमौर के राजा राजेन्द्र प्रकाश ने 23 मार्च, 1948 को विलय पत्र पर हस्ताक्षर कर दिये।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 18. 1 अप्रैल 1948 को हिमाचल प्रदेश की विधिवत स्थापना हुई।
उत्तर- गलत।
प्रश्न 19. 15 अप्रैल, 1948 को हिमाचल प्रदेश की विधिवत स्थापना हुई।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 20. हिमाचल प्रदेश के पहले चीफ कमिश्नर पैन्ड्रल मून थे।
उत्तर- गलत।
प्रश्न 21. हिमाचल प्रदेश के पहले चीफ कमिश्नर एन.सी. महता थे।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 22. शिमला की 26 छोटी बड़ी रियासतों को मिलाकर महासू जिला बनाया गया।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 23. मण्डी और चम्बा को मिलाकर मण्डी जिला बनाया गया।
उत्तर- गलत।
प्रश्न 24. मण्डी और सुकेत रियासतों को मिला कर मण्डी जिला बनाया गया।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 25. बिलासपुर का राजा आनन्द चन्द भारत के साथ मिलना नहीं चाहता था।
उत्तर- ठीक।
प्रश्न 26. बिलासपुर का हिमाचल में विलय 1950 में हुआ।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 27. बिलासपुर का हिमाचल में विलय 1954 में हुआ।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 28. 24 मार्च 1952 को डा. यशवंत सिंह परमार हिमाचल के पहले मुख्य मंत्री बनें।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 29. भारत सरकार ने 1955 में राज्यों के पुनर्गठन के लिए आयोग बनाया।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 30. भारत सरकार ने 1953 में राज्यों के पुनर्गठन के लिए आयोग बनाया।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 31. 1953 में गठित राज्यों के पुनर्गठन आयोग के अध्यक्ष हृदय नाथ कंजरू थे।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 32. 1953 में गठित राज्यों के पुनर्गठन आयोग के अध्यक्ष सईद फज़ल अली थे।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 33. क्षेत्रीय परिषद के चुनाव 1952 में हुए।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 34. क्षेत्रीय परिषद के चुनाव 1957 में हुए।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 35. पहली जुलाई, 1963 को डा. परमार दूसरी बार हिमाचल के मुख्य मंत्री बनें।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 36. पंजाब स्टेट पुनर्गठन आयोग की स्थापना 1963 में की गई।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 37. पंजाब स्टेट पुनर्गठन आयोग की स्थापना 1965 में की गई।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 38. पहली नवम्बर 1966 को पंजाब के पहाड़ी क्षेत्र हिमाचल में मिला दिये गए।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 39. ठाकुर राम लाल के नेतृत्व में हिमाचल का पूर्ण राज्य बनाये जाने का आग्रह केन्द्र से किया गया।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 40. डा. यशवंत सिंह परमार के नेतृत्व में हिमाचल प्रदेश का पूर्ण राज्य का दर्जा दिये जाने का आग्रह केन्द्र से किया गया।

उत्तर- ठीक।

12. आधुनिक हिमाचल में समाज

प्रश्न 1. किन्नौर में 'हार' नामक विवाह को रीत कहते हैं।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 2. किन्नौर में 'हार' नामक विवाह को दुबदुब कहा जाता है।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 3. शिमला का मुख्य देवता महासू है।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 4. झूमर नृत्य हिमाचल का प्रमुख नृत्य है।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 5. छोहारा नृत्य बिलासपुर क्षेत्र का लोकनृत्य है।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 6. छोहार नृत्य महासू क्षेत्र का लोक नृत्य है।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 7. कुल्लू का दशहरा विश्व प्रसिद्ध है।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 8. सुन्दरनगर नलवाड़ का पशु मेला बैसाख के महीने में लगता है।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 9. सुन्दर नगर बलवाड़ का मेला चैत्र मास में लगता है।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 10. झांझर नृत्य मण्डी से सम्बन्धित है।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 11. झांझर नृत्य चम्बा से सम्बन्धित है।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 12. बाबा बढ़भाग सिंह का मेला जिला ऊना में लगता है।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 13. सुन्दरनगर का नलवाड़ मेला राजा भीम सेन ने शुरु किया था।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 14. सुन्दरनगर का नलवाड़ मेला राजा चेतसेन ने आरम्भ किया था।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 15. मार्कण्डेय का मेला कुल्लू जिले में लगता है।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 16. मार्कण्डेय का मेला बिलासपुर जिले में लगता है।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 17. मण्डी का शिवरात्रि मेला राजा मेहर सिंह ने शुरु किया था।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 18. मण्डी का शिवरात्रि मेला राजा अजबेर सिंह ने शुरु किया था।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 19. बैसाखी के दिन मण्डी में बिशु का त्यौहार मनाया जाता है।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 20. बैसाखी के दिन सिरमौर में बिशु का त्यौहार मनाया जाता है।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 21. चमरोली लोक नाट्य हिमाचल में प्रसिद्ध है।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 22. रावल नामक लोकनाट्य हिमाचल में प्रसिद्ध है।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 23. हिमाचल के मध्य क्षेत्र में बच्चे के जन्म पर गन्तूर रस्म को दसूठन कहते हैं।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 24. बाबा दयागीर का मेला चम्बा जिले में लगता है।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 25. बाबा दयागीर का मेला कांगड़ा जिले में लगता है।

उत्तर- ठीक।

13. हिमाचल की अर्थव्यवस्था

प्रश्न 1. खरीफ की फसलें मई-जून में बोई जाती हैं।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 2. धान का सबसे अधिक उत्पादन शिमला जिले में होता है।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 3. धान का सबसे अधिक उत्पादन कांगड़ा जिले में होता है।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 4. हिमाचल में शिमला में सेब का सबसे अधिक उत्पादन होता है।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 5. कपास पैदा करने में हिमाचल प्रदेश अग्रणी है।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 6. बिलासपुर में एशिया का सबसे बड़ा मत्स्य प्रजनन केन्द्र है।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 7. सुकेत और सांगल किन्नौर राज्य के दो प्रमुख व्यापारिक केन्द्र थे।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 8. पहाड़ी नमक की खाने मण्डी जिले में हैं।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 9. चम्बा चाय उत्पादन क्षेत्र है।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 10. कांगड़ा चाय उत्पादन क्षेत्र है।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 11. काला जीरा हिमाचल में चम्बा और कांगड़ा में पैदा होता है।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 12. काला जीरा हिमाचल में किन्नौर और लाहौल-स्पीति में पैदा किया जाता है।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 13. जिप्सम सिरमौर जिले में पाया जाता है।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 14. नीम्बू प्रजाति के फल चम्बा क्षेत्र में पैदा होते हैं।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 15. नीम्बू प्रजाति के फल शिवालिक घाटी में पैदा होते हैं।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 16. सोलन हिमाचल प्रदेश का प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र है।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 17. नाहन हिमाचल प्रदेश का प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र है।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 18. देवदार, ओक तथा स्प्रूस हिमाचल के वनों के प्रमुख वृक्ष हैं।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 19. चामेरा हाइडल परियोजना सतलुज नदी पर बनाई

गई है।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 20. चामेरा हाइडल परियोजना रावी नदी पर बनाई गई हैं।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 21. भाखड़ा बाँध की ऊँचाई 126 मीटर है।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 22. भाखड़ा-बाँध की ऊँचाई 226 मी० है।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 23. हिमाचल के सबसे बड़ी सिंचाई परियोजना सींगापुर नगर परियोजना है।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 24. हिमाचल में सबसे बड़ी सिंचाई परियोजना शाहनगर परियोजना है।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 25. चामेरा परियोजना मण्डी जिले में है।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 26. चामेरा परियोजना चम्बा जिले में है।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 27. जोगिन्द्र नगर जल विद्युत परियोजना हिमाचल की पहली योजना थी।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 28. कांगड़ा में कृषि विश्वविद्यालय स्थापित किया गया है।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 29. पालमपुर में कृषि विश्वविद्यालय स्थापित किया गया है।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 30. हिमाचल में पैदा होने वाली कुठ नामक बूटी इंग्लैंड, रूस तथा बैल्जियम को निर्यात की जाती है।

उत्तर- गलत।

14. हिमाचल की जनजातियां

प्रश्न 1. किन्नौरों को खस या खासिया भी कहा जाता है।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 2. किन्नौरा जनजाति में राजपूत तथा ब्राह्मण वंश के लोग शामिल हैं।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 3. किन्नौरों में लोहारों को कोली कहते है।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 4. किन्नौरों में जुलाहे कोली कहलाते हैं।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 5. गद्दी धौलाधार की तलहटी में बसते हैं।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 6. चम्बा के पांगी क्षेत्र में पंगवाल बसते हैं।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 7. लाहौलों में बहुपति विवाह प्रचलित हैं।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 8. गाय पालने वालों को गद्दी कहते हैं।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 9. गाय पालने वालों को गोचर्स कहते हैं।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 10. गुज्जर जम्मू क्षेत्र से आकर हिमाचल में बस गए।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 11. लाहौल-स्पीति में आलू, कुठ तथा काला जीरा आदि फसलें पैदा होती हैं।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 12. आज भी गुज्जर घुमक्कड़ जीवन व्यतीत करते हैं।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 13. चोरी के विवाह को लाहौली की स्थानीय भाषा में तमगस्तन कहते हैं।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 14. चोरी के विवाह को लाहौल की स्थानीय भाषा में भगस्तन कहते हैं।

उत्तर- ठीक।

15. हिमाचल की वास्तुकला

प्रश्न 1. कांगड़ा कला शैली की उत्पति मुगल शैली से हुई।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 2. कांगड़ा कला शैली की उत्पत्ति गुलेर शैली से हुई।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 3. कांगड़ा कलम का अत्यधिक विकास कांगड़ा के राजा संसार चन्द के काल में हुआ।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 4. शिमला में खुले पहले होटल का नाम पैवेलियन

था।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 5. वायसरीगल लॉज का वास्तुकार हैवर्ट था।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 6. वायसरीगल लॉज का वास्तुकार हैनरी इरविन था।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 7. कांगड़ा का ब्रजेश्वरी मन्दिर समतल शैली का है।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 8. कांगड़ा का ब्रजेश्वरी मन्दिर गुम्बदाकार शैली का है।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 9. सिरमौर का रेणुका मन्दिर गुम्बदाकार शैली में बना है।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 10. गोआ में बना गिरजाघर पुर्तगालियों द्वारा निर्मित पाश्चात्य वास्तुकला का भव्य नमूना है।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 11. शिमला का गिरजाघर रोमन शैली का नमूना है।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 12. शिमला का गिरजाघर विक्टोरियन शैली का नमूना है।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 13. विक्टोरिया मैमोरियल हाल बम्बई में स्थित है।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 14. विक्टोरिया मैमेरियल हाल कलकता में स्थित है।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 15. शिमला में डिप्टी कमीश्नर के दफ़तर की बिल्डिंग का नाम गैस्टन हाल था।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 16. शिमला के पंजाब का मुख्यालय 1909 में बनाया गया।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 17. शिमला के पंजाब का मुख्यालय 1871 में बनाया गया।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 18. वायसरीगल लॉज में रहने के लिए सर्वप्रथम लार्ड कर्जन आये थे।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 19. वायसरगिल लॉज में रहने के लिए सर्वप्रथम लॉर्ड डफरिन दर्म्पात आये थे।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 20. 'राजपूत पेंटिंग' नामक पुस्तक के लेखक आनन्द कुमार स्वामी थे।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 21. पहाड़ी चित्रकला का आरम्भ गुलेर शैली से हुआ था।

उत्तर- ठीक।

प्रश्न 22. पंजाब की सिख रियासतों में कांगड़ा शैली लोकप्रिय नहीं थी।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 23. भरमौर का शक्ति देवी का मंदिर काष्ठ मूर्ति कला का भव्य नमूना है।

उत्तर- ठीक।

TYPE-III

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें Fill in the blanks

1. हिमाचल का भूगोल

प्रश्न 1. क्षेत्रफल की दृष्टि से हिमाचल भारत का .... राज्य है।

उत्तर- 17 वां।

प्रश्न 2. हिमाचल के पूर्व में सीमावर्ती राष्ट्र .... है।

उत्तर- तिब्बत।

प्रश्न 3. हिमाचल में सबसे अधिक क्षेत्रफल .... का है।

उत्तर- लाहौल-स्पीति।

प्रश्न 4. स्पीति के .... खण्ड को शति मरूस्थल कहा जाता है।

उत्तर- काजा।

प्रश्न 5. ब्राह्म हिमालय को .... के नाम से भी जाना जाता है।

उत्तर- धौलाधार।

प्रश्न 6. .... पर्वतमाला हिमाचल के पहाड़ी क्षेत्रों को मैदानी क्षेत्रों से अलग करती है।

उत्तर- शिवालिक।

प्रश्न 7. चोलांग दर्रा .... हिमालय में है।

उत्तर- बाह्य।

प्रश्न 8. सतलुज नदी का वैदिक नाम .... है।

उत्तर- शतुद्रु।

प्रश्न 9. सतलुज नदी .... झील से निकलती है।

उत्तर- मानतलाई।

प्रश्न 10. सतलुज की सबसे बड़ी सहायक नदी .... है।

उत्तर- स्पीति।

प्रश्न 11. व्यास नहीं को संस्कृत में .... के नाम से पुकारा जाता है।

उत्तर- बिपाशा।

प्रश्न 12. पंडोह बांध .... नदी पर बनाया गया है।

उत्तर- व्यास।

प्रश्न 13. चन्द्रभागा का वैदिक नाम .... है।

उत्तर- अस्किनी।

प्रश्न 14. चिनाब नदी .... दर्रे से निकलती है।

उत्तर- बारालाचा।

प्रश्न 15. चन्द्र और भागा के मिलन से .... नदी बनती है।

उत्तर- चिनाब।

प्रश्न 16. रावी नदी का संस्कृत नाम .... है।

उत्तर- ईरावती।

प्रश्न 17. रावी नदी की सबसे बड़ी सहायक नदी .... है।

उत्तर- सिऊल।

प्रश्न 18. डल झील .... की झील है।

उत्तर- कांगड़ा।

प्रश्न 19. यमुना का शास्त्रीय नाम .... है।

उत्तर- कालिंदी।

प्रश्न 20. खजियार झील .... उपमण्डल में है।

उत्तर- डलहौजी।

प्रश्न 21. मणिमहेश झील .... उपमंडल में है।

उत्तर- भरमौर।

प्रश्न 22. पौंग झील .... जिले में है।

उत्तर- कांगड़ा।

प्रश्न 23. पराशर झील .... जिले में है।

उत्तर- मण्डी।

प्रश्न 24. भृगु झील .... में स्थित है।

उत्तर- कुल्लू।

प्रश्न 25. रेणुका झील .... जिले की प्राकृतिक झील है।

उत्तर- सिरमौर।

प्रश्न 26. तत्तापानी के चश्में .... तथा शिमला जिलों में हैं?

उत्तर- मण्डी।

प्रश्न 27. मणिकर्ण का गर्म चश्मा .... जिले में है।

उत्तर- कुल्लू।

प्रश्न 28. गोबिन्दसागर झील .... जिले में स्थित है।

उत्तर- बिलासपुर।

प्रश्न 29. गोबिन्द सागर झील सबसे बड़ी .... झील है।

उत्तर- कृत्रिम।

2. हिमाचल का प्राचीन इतिहास

प्रश्न 1. हिमाचल के प्राचीनतम निवासी .... थे।

उत्तर- मुंडा।

प्रश्न 2. त्रिगर्त जनपद को आजकल .... कहा जाता है।

उत्तर- कांगड़ा।

प्रश्न 3. त्रिगर्त का संस्थापक .... था।

उत्तर- भूमि चन्द्र।

प्रश्न 4. ...., त्रिगर्त राज्य का दूसरा नाम था।

उत्तर- जालन्धर।

प्रश्न 5. हर्षवर्धन .... का प्रसिद्ध शासक था।

उत्तर- कन्नौज।

प्रश्न 6. आठवीं तथा नवमी शताब्दी में त्रिगर्त को .... भी कहा जाता है।

उत्तर- कीरा।

प्रश्न 7. औटुम्बर देश .... और व्यास नदियों के बीच था।

उत्तर- रावी।

प्रश्न 8. औटुम्बर जनपद के निवासी .... के उपासक थे।

उत्तर- महादेव।

प्रश्न 9. कुलूत जनपद का संस्थापक .... पाल था।

उत्तर- बिहिंगमणी पाल।

प्रश्न 10. प्राचीन काल में कुल्लू के सामन्त राणा और .... कहलाते थे।

उत्तर- ठाकुर।

प्रश्न 11. ह्यूनसांग जालन्धर होता हुआ कुलुत तथा .... भी गया था।

उत्तर- लाहौल।

प्रश्न 12. चम्बा राज्य का संस्थापक सूर्यवंशी राजा .... था।

उत्तर- मरू।

प्रश्न 13. मरू ने राजाओं और ठाकुरों को अधीर करके .... नगर की स्थापना की।

उत्तर- ब्रह्मपुर।

प्रश्न 14. मणिमहेश का मन्दिर .... के राजा मेरू वर्मन ने बनवाया था।

उत्तर- चम्बा।

प्रश्न 15. साहिल वर्मन ने अपनी राजधानी ब्रह्मपुर से बदलकर वर्तमान .... में बनाई।

उत्तर- चम्बा।

प्रश्न 16. आज के चम्बा का पहला नाम .... था।

उत्तर- चम्पा।

प्रश्न 17. .... में कुलिन्द जनपद का वर्णन आता है।

उत्तर- महाभारत।

3. मध्यकालीन हिमाचल

प्रश्न 1. आठवीं शताब्दी से 12वीं शताब्दी के काल को भारत के इतिहास में .... काल कहा जाता है।

उत्तर- राजपूत।

प्रश्न 2. राजपूत काल में बहुत समय तक .... भारत की राजनीति का केन्द्र बना रहा।

उत्तर- कन्नौज।

प्रश्न 3. महमूद गज़नवी के समय नगरकोट का दुग .... के नाम से प्रसिद्ध था।

उत्तर- भीमनगर।

प्रश्न 4. महमूद गज़नवी के नगरकोट पर आक्रमण के समय कांगड़ा का शासक .... था।

उत्तर- जगदीश चन्द्र।

प्रश्न 5. त्रिगर्त का राजा जगदेव अपनी राजधानी जालन्धर से .... ले गया।

उत्तर- नगरकोट।

प्रश्न 10. जसवां राज्य की स्थापना .... ने की थी

उत्तर- पूर्वचन्द।

प्रश्न 7. मुहम्मद तुगलक के 1337 ई. में नगरकोट पर किए गए आक्रमण के समय वहां का शासक .... था।

उत्तर- पृथ्वी चन्द।

प्रश्न 8. फिरोजशाह तुगलक ने 1361 ई. में .... पर आक्रमण किया।

उत्तर- नगरकोट।

प्रश्न 9. तैमूर ने .... में भारत पर आक्रमण किया।

उत्तर- 1398 ई.।

प्रश्न 10. शेरशाह सूरी के दिल्ली पर अधिकार करने के समय कांगड़ा का शासक .... था।

उत्तर- धर्म चन्द।

प्रश्न 11. अकबर ने नगरकोट पर आक्रमण करने के लिए पंजाब के सूबेदार .... को भेजा।

उत्तर- हुसैन कुली खान।

प्रश्न 12. अकबर कांगड़ा की जागीर .... को देना चाहता था।

उत्तर- बीरबल।

प्रश्न 13. कांगड़ा का राजा त्रिलोक चन्द मुगल सम्राट .... का समकालीन था।

उत्तर- जहांगीर।

प्रश्न 14. जहांगीर के काल में .... में नगरकोट पर अधिकार किया गया।

उत्तर- 1620 ई.।

प्रश्न 15. शाहजहां का वास्तविक नाम .... था।

उत्तर- खुर्रम।

प्रश्न 16. कांगड़ा पर अधिकार करने के बाद 1620 ई. में कांगड़ा की राजधानी नगरकोट बनाई गई।

उत्तर- गलत।

प्रश्न 17. 1620 ई. में कांगड़ा पर अधिकार करने के बाद कांगड़ा की राजधानी .... में बनाई गई।

उत्तर- राजगीर।

प्रश्न 18. कांगड़ा का राजा .... मुगल सम्राट शाहजहां का समकालीन था।

उत्तर- चन्द्रभान चन्द।

प्रश्न 19. गुरू गोबिन्द सिंह ने .... में खालसा पंथ की स्थापना की थी।

उत्तर- आनन्दपुर साहिब।

प्रश्न 20. गुरू गोबिन्द सिंह ने .... ई. में खालसा पंथ की स्थापना की थी।

उत्तर- 1699।

प्रश्न 21. अहमदशाह अब्दाली ने 1759 ई. में कांगड़ा के शासक .... को पहाड़ी इलाके का प्रतिनिधि नियुक्त किया।

उत्तर- घमण्ड चन्द।

प्रश्न 22. .... ई. में कांगड़ा के राजा संसार चन्द ने नगरकोट के किले पर पुनः अधिकार कर लिया।

उत्तर- 1786।

प्रश्न 23. गुलेर राज्य की स्थापना धर्म चन्द के बड़े भाई .... ने की थी।

उत्तर- हरि चन्द।

प्रश्न 24. अकबर ने कोटला का किला जीत कर गुलेर के शासक .... को सौंप दिया।

उत्तर- जगदीश चन्द।

प्रश्न 25. जहांगीर ने गुलेर के राजा .... को 'बहादुर' की उपाधि से सम्मानित किया।

उत्तर- रूप चन्द।

प्रश्न 26. सिब्बा राज्य की स्थापना .... ने की थी।

उत्तर- स्वर्ण चन्द।

प्रश्न 27. दतारपुर राज्य की स्थापना दतार चन्द ने .... ई. में की थी।

उत्तर- 1550।

प्रश्न 28. नूरपुर राज्य की स्थापना 1095 में .... ने की थी।

उत्तर- जेठपाल।

प्रश्न 29. कटलैहड़ राज्य की स्थापना .... ने की थी।

उत्तर- जसपाल।

प्रश्न 30. चम्बा का शासक .... मुगल सम्राट अकबर का समकालीन था।

उत्तर- प्रताप सिंह।

प्रश्न 31. औरंगज़ेब ने चम्बा के शासक .... को वहां के मन्दिर गिराने का आदेश दिया।

उत्तर- चतर सिंह।

प्रश्न 32. कांगड़ा किले का अन्तिम मुगल सूबेदार

.... था।

उत्तर- सैफ अली खां।

प्रश्न 33. बुशहर के राजा ने .... के समय कुल्लू पर आक्रमण किया था।

उत्तर- हस्त पाल।

प्रश्न 34. सुकेत रियासत की स्थापना 765 ई. में .... ने की थी।

उत्तर- वीर सेन।

प्रश्न 35. मण्डी हिमाचल की .... रियासत की एक शाखा थी।

उत्तर- सुकेत।

प्रश्न 36. मण्डी रियासत की स्थापना .... ने की थी।

उत्तर- साहु सेन।

प्रश्न 37. मण्डी के शासक ने सरकपुर किले का निर्माण करवाया।

उत्तर- सिद्ध सेन।

प्रश्न 38. गोरखों ने 1806 ई. में मण्डी के उत्तराधिकारी शासक को कांगड़ा के शासक .... से मुक्त करवाया था।

उत्तर- संसार चन्द।

प्रश्न 39. बिलासपुर का रियासती नाम .... था।

उत्तर- कहलूर।

प्रश्न 40. बिलासपुर रियासत की स्थापना .... ने 697 ई. में की थी।

उत्तर- वीर चन्द।

प्रश्न 41. सिरमौर का राजा .... गुरू गोबिन्द सिंह की समकालीन था।

उत्तर- मेदनी प्रकाश।

प्रश्न 42. किन्नौर एक समय .... का ही भाग था।

उत्तर- रामपुर बुशहर।

प्रश्न 42. रामपुर बुशहर का संस्थापक .... था।

उत्तर- प्रद्युमन।

प्रश्न 43. बुशहर का राजा राम सिंह अपनी राजधानी .... ले गया।

उत्तर- रामपुर।

4. 19वीं शताब्दी में हिमाचल की पहाड़ी रियासतें

प्रश्न 1. कांगड़ा के शासक संसार चन्द का जन्म .... ई. में हुआ।

उत्तर- 1765।

प्रश्न 2. सिखों की कुल .... मिसलें थीं।

उत्तर- बारह।

प्रश्न 3. कांगड़ा के किले पर जय सिंह कन्हैया का .... वर्ष तक अधिकार रहा।

उत्तर- चार।

प्रश्न 4. संसार चन्द तथा गोरखों की पहली मुठभेड़ 1806 ई. में .... स्थान पर हुई।

उत्तर- महल मोरियां।

प्रश्न 5. मोहकम चन्द .... का सेनापति था।

उत्तर- महाराजा रणजीत सिंह।

प्रश्न 6. महाराजा रणजीत सिंह ने 24 अगस्त, ... ई. में कांगड़ा के किले पर अधिकार कर लिया।

उत्तर- 1809।

प्रश्न 7. सिखों की पहली लड़ाई के बाद जम्मू और कश्मीर का क्षेत्र महाराजा .... को बेच दिया गया।

उत्तर- गुलाब सिंह।

प्रश्न 8. .... गुलेर का अन्तिम राजा था।

उत्तर- भूप सिंह।

प्रश्न 9. सिब्बा का अन्तिम राजा .... था।

उत्तर- राम सिंह।

प्रश्न 10. दूसरे सिख युद्ध के बाद सिब्बा .... के अधिकार में आ गया।

उत्तर- अंग्रेजों।

प्रश्न 11. महाराजा रणजीत सिंह और कांगड़ा के राजा संसार चन्द की 1809 ई. .... में भेंट हुई।

उत्तर- ज्वालामुखी।

प्रश्न 12. महाराजा रणजीत सिंह न .... को कांगड़ा का नाजिम नियुक्त किया।

उत्तर- देसा सिंह।

प्रश्न 13. .... ने काबुल के अमीर शाह शुजा को बन्दी बनाकर रखा था।

उत्तर- महाराजा रणजीत सिंह।

प्रश्न 14. रणजीत सिंह ने कांगड़ा के शासक .... की गोरखों के विरुद्ध सहायता की।

उत्तर- संसार चन्द।

प्रश्न 15. .... ई. में कुटलैहड़ सिक्खों के अधीन आ गया।

उत्तर- 1809।

प्रश्न 16. रणजीत सिंह ने .... ई. में गुलेर पर अधिकार किया।

उत्तर- 1813।

प्रश्न 17. ध्यान सिंह .... का प्रधान मंत्री था।

उत्तर- महाराजा रणजीत सिंह।

प्रश्न 18. आंग्ल-गोरखा युद्ध .... में हुआ।

उत्तर- 1815।

प्रश्न 19. अंग्रेजों ने .... को चम्बा के राजा को सनद प्रदान की।

उत्तर- 1862 ।

प्रश्न 40. कुल्लू का सारा भाग .... में अंग्रेज़ों के अधिकार में आया।

उत्तर- 1846।

5. आंग्ल-गोरखा युद्ध (1814-15 ई.)

प्रश्न 1. .... ई. में गोरखों ने गोरखपुर पर अधिकार कर लिया।

उत्तर- 1801।

प्रश्न 2. .... ई. में गोरखों ने बुशहर की सेना को पराजित किया।

उत्तर- 1811।

प्रश्न 3. संगौली की संधि .... में हुई।

उत्तर- 1816।

प्रश्न 4. आंग्ल-गोरखा युद्ध के बाद .... क्षेत्र में अंग्रेज़ों का प्रभुत्व हो गया।

उत्तर- शिमला।

6. अंग्रेज़ों द्वारा पहाड़ी रियासतों पर नियन्त्रण

प्रश्न 1. सिखों की पहली लड़ाई .... के काल में हुई।

उत्तर- लार्ड हार्डिंग।

प्रश्न 2. अमृतसर की सन्धि .... ई. में अंग्रेज़ों तथा रणजीत सिंह के बीच हुई।

उत्तर- 1809 ।

प्रश्न 3. .... ई. में रणजीत सिंह की मृत्यु हुई।

उत्तर- 1839।

प्रश्न 4. 1839 से .... तक अंग्रेज़ों को अफगानिस्तान से युद्ध लड़ना पड़ा।

उत्तर- 1842।

प्रश्न 5. अंग्रेज़ों ने .... को सिंध को अपना साम्राज्य में मिला लिया।

उत्तर- 1843।

प्रश्न 6. महाराजा रणजीत सिंह की माता का नाम .... था।

उत्तर- रानी जीन्दा।

प्रश्न 7. प्रथम सिख युद्ध के बाद .... में सुकेत को सनद प्रदान की गई।

उत्तर- 1846।

प्रश्न 8. सिखों का दूसरा युद्ध .... में लड़ा गया।

उत्तर- 1848-49 ।

प्रश्न 9. कांगड़ा के शासक संसार चन्द की .... में मृत्यु हुई।

उत्तर- 1823।

प्रश्न 10. .... गुलेर का शासक था जो रणजीत सिंह का समकालीन था।

उत्तर- भूप सिंह।

प्रश्न 11. रणजीत सिंह गुलेर के शासक भूपसिंह को .... कह कर पुकारता था।

उत्तर- बाबा।

प्रश्न 12. कांगड़ा के राजा प्रमोद चन्द की .... में मृत्यु हुई।

उत्तर- 1851।

7. परिवहन एवं संचार व्यवस्था

प्रश्न 1. हिमाचल में छोटी रेल लाईन .... से शिमला तक चलती है।

उत्तर- कालका।

प्रश्न 2. राष्ट्रीय राजमार्ग .... शिमला जिले से गुज़रता है।

उत्तर- 22।

प्रश्न 3. कालका-शिमला रेलवे लाईन पर सबसे लम्बी सुरंग .... में है।

उत्तर- बड़ोग।

प्रश्न 4. हिमाचल प्रदेश में सबसे ऊँचा हवाई अड्डा .... है।

उत्तर- काजा।

प्रश्न 5. हिमाचल में राष्ट्रीय राजमार्ग 88 की कुल लम्बाई .... कि०मी० है।

उत्तर- 180।

प्रश्न 6. हिमाचल प्रदेश के लिए नंगल से .... तक बड़ी रेलवे लाईन बनाई गई है।

उत्तर- ऊना।

प्रश्न 7. हिमाचल पथ परिवहन की स्थापना 2 अक्तूबर, ... को की गई थी।

उत्तर- 1974।

प्रश्न 8. कालका-शिमला रेल मार्ग में कुल .... सुरंगे हैं।

उत्तर- 103।

प्रश्न 9. हिमाचल प्रदेश में रेल मार्ग की कुल लम्बाई .... कि.मी. है।

उत्तर- 292।

8. हिमाचल में 1857 का विद्रोह

प्रश्न 1. हिमाचल प्रदेश में सबसे पहले विद्रोह की चिंगारी .... सैनिक छावनी में शुरु हुई।

उत्तर- कसौली।

प्रश्न 2. मेरठ में क्रान्ति का आरम्भ .... को हुआ।

उत्तर- 11 मई, 1857।

प्रश्न 3. कसौली में क्रान्ति सेना का नेतृत्व .... ने किया।

उत्तर- भीम सिंह।

प्रश्न 4. 1857 के विद्रोह के समय पंजाब का चीफ कमिश्नर .... था।

उत्तर- जॉन लारेंस।

प्रश्न 5. महारानी विक्टोरिया का घोषणा पत्र .... को घोषित किया गया।

उत्तर- 1 नवम्बर, 1858।

प्रश्न 6. 1857 के विद्रोह के समय शिमला के क्रान्ति के संचालन के लिए .... के नेतृत्व में एक संगठन बनाया गया।

उत्तर- राम प्रसाद बैरागी।

प्रश्न 7. 1857 के विद्रोह का तात्कालिक कारण .... थे।

उत्तर- चर्बी वाले कारतूस।

प्रश्न 8. 'शेर दिल पुलिस बटालियन' का कमाण्डर .... था।

उत्तर- कैप्टन यंग हस्बैण्ड।

प्रश्न 9. मीयां मीर में विद्रोह .... को शुरू हुआ था।

उत्तर- 30 जुलाई, 1857।

प्रश्न 10. कुल्लू में क्रान्ति का नेतृत्व वहां के राजा .... ने किया।

उत्तर- प्रताप सिंह।

प्रश्न 11. 1857 के विद्रोह का पहला शहीद .... था।

उत्तर- मंगल पाण्डेय।

प्रश्न 12. 1857 के विद्रोह के समय शिमला का डिप्टी कमिश्नर .... था।

उत्तर- विलियम हेय।

9. हिमाचल में जन अन्दोलन

प्रश्न 1. पहाड़ी राज्य बिलासपुर में 1930 में हुए जन आन्दोलन को .... आन्दोलन कहते हैं।

उत्तर- डण्डार।

प्रश्न 2. 1872 से 1876 तक सुकेत राज्य में हुए विद्रोह के समय वहां का मंत्री .... था।

उत्तर- नरोत्तम।

प्रश्न 3. पझौता आन्दोलन का नेतृत्व वैद्य .... ने किया।

उत्तर- सूरत सिंह।

प्रश्न 4. प्रेम प्रचारिणी सभा की स्थापना .... में हुई।

उत्तर- 1942।

प्रश्न 5. रत्न सिंह के नेतृत्व में 1924 में ....

राज्य में जन आन्दोलन हुआ।

उत्तर- सुकेत।

प्रश्न 6. कुनिहार रियासत के .... 1920 में कंगार के विरुद्ध जन आन्दोलन चलाया।

उत्तर- बाबू काशीराम।

प्रश्न 7. हिमालयन हिल स्टेटस रीजनल कौंसिल के प्रधान .... जी बनाए गए।

उत्तर- स्वामी पूर्णानन्द।

प्रश्न 8. हिमालयन हिल स्टेट्स रीजनल कौंसिल का कार्यालय .... में बनाया गया।

उत्तर- मण्डी।

प्रश्न 9. सिरमौर प्रजा मण्डल के प्रथम अध्यक्ष .... थे।

उत्तर- चौधरी शेरजंग।

प्रश्न 10. बाबा काशीराम को .... कहा जाता है।

उत्तर- पहाड़ी गांधी।

प्रश्न 11. बाबा .... को प. जवाहर लाल नेहरू ने पहाड़ी गांधी की उपाधि दी थी।

उत्तर- काशीराम।

प्रश्न 12. बाबा काशीराम को .... ने पहाड़ी गांधी की उपाधि दी थी।

उत्तर- प. जवाहर लाल नेहरू।

प्रश्न 13. नौजवान सभा की स्थापना .... में की गई।

उत्तर- 1928।

प्रश्न 14. नौजवान सभा की स्थापना .... तथा सुखदेव ने की।

उत्तर- भक्त सिंह।

प्रश्न 15. गांधी-इरविन समझौता .... में हुआ।

उत्तर- 1931।

प्रश्न 16. पझौता किसान आन्दोलन .... में चलाया गया।

उत्तर- 1942-43।

10. हिमाचल में राजनीतिक दल

प्रश्न 1 हिमाचल प्रदेश के प्रथम मुख्यमंत्री .... थे।

उत्तर- डा. यशवंत सिंह परमार।

प्रश्न 3. .... ने राष्ट्रीय कांग्रेस दल की स्थापना की थी।

उत्तर- ए. ओ.ह्यूम।

प्रश्न 9. जनसंघ की स्थापना .... में की गई।

उत्तर- 1951।

प्रश्न 4. विशाल हिमाचल समिति का गठन .... में किया गया।

उत्तर- 1955।

प्रश्न 5. हिमाचल में लोक राज पार्टी की स्थापना .... में की गई।

उत्तर- 1967।

प्रश्न 6. देश में आपातकालीन घोषणा .... में की गई।

उत्तर- 1975।

प्रश्न 7. 1977 के चुनावों से पहले .... का गठन हुआ था।

उत्तर- जनता पार्टी।

प्रश्न 8. 1977 के चुनावों के बाद .... देश के प्रधान मंत्री बने।

उत्तर- श्री मोरार जी देसाई।

प्रश्न 9. 1977 के चुनावों के बाद श्री .... हिमाचल के मुख्य मंत्री बनें।

उत्तर- शांता कुमार।

प्रश्न 10. .... में हिमाचल में राष्ट्रपति शासन लगा दिया गया।

उत्तर- 1992।

प्रश्न 11. 2012 में कांग्रेस के .... हिमाचल के मुख्य मंत्री बने।

उत्तर- वीर भद्र सिंह।

11. आधुनिक हिमाचल का निर्माण

प्रश्न 1. शिमला की पहाड़ी रियासतों के राजाओं का सम्मेलन बघाट के राजा .... की अध्यक्षता में हुआ।

उत्तर- दुर्गासिंह।

प्रश्न 2. पहाड़ी रियासतों को हिमाचल प्रदेश के रूप में गठित करने की घोषणा .... में की गई।

उत्तर- सोलन।

प्रश्न 3. 1948 में हुए सुकेत सत्याग्रह का नेतृत्व

.... ने किया था।

उत्तर- पद्म देव।

प्रश्न 4. सुकेत रियासत की राजधानी .... थी।

उत्तर- सुन्दरनगर।

प्रश्न 5. 1948 में जालन्धर के चीफ कमिश्नर .... थे।

उत्तर- नगेश दत्त।

प्रश्न 6. 1948 में भारत सरकार के राज्य मंत्रालय के सचिव .... थे।

उत्तर- सी.सी. देसाई।

प्रश्न 7. शिमला की पहाड़ी रियासतों ने ____________ का विलय पत्र पर हस्ताक्षर कर दिये।

उत्तर- 8 मार्च, 1948।

प्रश्न 8. सिरमौर का राजा .... अन्तिम समय तक रियासत को बचाने में लगा रहा।

उत्तर- राजेन्द्र प्रकाश।

प्रश्न 9. सिरमौर के राजा राजेन्द्र प्रकाश ने ____________ को विलय पत्र पर हस्ताक्षर कर दिये।

उत्तर- 23 मार्च, 1948।

प्रश्न 10. .... को हिमाचल प्रदेश की विधिवत स्थापना हुई।

उत्तर- 15 अप्रैल, 1948।

प्रश्न 11. हिमाचल प्रदेश के पहले चीफ कमिश्नर .... थे।

उत्तर- एन.सी. महता।

प्रश्न 12. शिमला की 26 छोटी बड़ी रियासतों को मिलाकर .... जिला बनाया गया।

उत्तर- महासू।

प्रश्न 13. बिलासपुर का हिमाचल में विलय .... में हुआ।

उत्तर- 1954।

प्रश्न 14. भारत सरकार ने .... में राज्यों के पुनर्गठन के लिए आयोग बनाया।

उत्तर- 1953।

प्रश्न 15. क्षेत्रीय परिषद के चुनाव .... में हुए।

उत्तर- 1957।

प्रश्न 16. पंजाब स्टेट पुनर्गठन आयोग की स्थापना ____________ में की गई।

उत्तर- 1965।

प्रश्न 17. ____________ को पंजाब के पहाड़ी क्षेत्र हिमाचल में मिला दिये गए।

उत्तर- 1 नवम्बर, 1966।

12. आधुनिक हिमाचल में समाज

प्रश्न 1. किन्नौर में 'हार' नामक विवाह को .... कहा जाता है।

उत्तर- दुबदुब।

प्रश्न 2. .... का दशहरा विश्व प्रसिद्ध है।

उत्तर- कुल्लू।

प्रश्न 3. सुन्दरनगर नलवाड़ का मेला .... में लगता है।

उत्तर- चैत्र मास।

प्रश्न 4. बाबा बड़भाग सिंह का मेला जिला .... में लगता है।

उत्तर- ऊना।

प्रश्न 5. सुन्दरनगर का नलवाड़ मेला राजा .... ने आरम्भ किया था।

उत्तर- चेतसेन

प्रश्न 6. मण्डी का शिवरात्रि मेला राजा .... ने शुरु किया था।

उत्तर- अजबेर सिंह।

प्रश्न 7. हिमाचल के मध्य क्षेत्र में बच्चों के जन्म पर गन्तूर रस्म को .... कहते हैं।

उत्तर- दसूठन।

प्रश्न 8. बाबा दयागीर का मेला ..... जिले में लगता है।

उत्तर- कांगड़ा।

13. हिमाचल की अर्थव्यवस्था

प्रश्न 1. धान का सबसे अधिक उत्पादन .... जिले में होता है।

उत्तर- कांगड़ा।

प्रश्न 2. .... में एशिया का सबसे बड़ा मत्स्य प्रजनन केन्द्र है।

उत्तर- बिलासपुर।

प्रश्न 3. पहाड़ी नमक की खान .... जिले में हैं।

उत्तर- मण्डी।

प्रश्न 4. .... चाय उत्पादन क्षेत्र है।

उत्तर- कांगड़ा।

प्रश्न 5. काला जीरा हिमाचल में किन्नौर और .... में पैदा किया जाता है।

उत्तर- लाहौल-स्पीति।

प्रश्न 6. .... हिमाचल प्रदेश का प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र है।

उत्तर- नाहन।

प्रश्न 7. चामेरा हाइडल परियोजना .... नदी पर बनाई गई है।

उत्तर- रावी।

प्रश्न 8. भाखड़ा-बाँध की ऊँचाई .... मी० है।

उत्तर- 226।

प्रश्न 9. चामेरा परियोजना .... जिले में है।

उत्तर- चम्बा।

प्रश्न 10. .... जल विद्युत परियोजना हिमाचल की पहली योजना थी।

उत्तर- जोगिन्द्र नगर।

प्रश्न 11. .... में कृषि विश्वविद्यालय स्थापित किया गया है।

उत्तर- पालमपुर।

14. हिमाचल की जनजातियां

प्रश्न 1. किन्नौरों में .... कोली कहलाते हैं।

उत्तर- जुलाहे।

प्रश्न 2. .... के पांगी क्षेत्र में पंगवाल बसते हैं।

उत्तर- चम्बा।

प्रश्न 3. .... में बहुपति विवाह प्रचलित हैं।

उत्तर- लाहौलों।

प्रश्न 4. गुजर .... क्षेत्र से आकर हिमाचल में बस गए।

उत्तर- जम्मू।

15. हिमाचल की वास्तुकला

प्रश्न 1. कांगड़ा कला शैली की उत्पत्ति .... शैली से हुई।

उत्तर- गुलेरी।

प्रश्न 2. शिमला में खुले पहले होटल का नाम .... था।

उत्तर- पैवेलियन।

प्रश्न 3. वायसरीगल लॉज का वास्तुकार .... था।

उत्तर- हैनर इरविन।

प्रश्न 4. कांगड़ा का ब्रजेश्वरी मन्दिर .... शैली का है।

उत्तर- गुम्बदाकार।

प्रश्न 5. सिरमौर का रेणुका मन्दिर .... शैली में बना है।

उत्तर- गुम्बदाकार।

प्रश्न 6. शिमला का गिरजाघर .... शैली का नमूना है।

उत्तर- विक्टोरियन।

प्रश्न 7. विक्टोरिया मैमेरियल हाल .... में स्थित है।

उत्तर- कलकता।

प्रश्न 8. शिमला को पंजाब का मुख्यालय .... में बनाया गया।

उत्तर- 1871।

प्रश्न 9. 'राजपूत पेंटिंग' नामक पुस्तक का लेखक .... थे।

उत्तर- आनन्द कुमार स्वामी।

प्रश्न 10. पंजाब की सिख रियासतों में .... शैली लोकप्रिय थी।

उत्तर- कांगड़ा।

प्रश्न 11. भरमौर का शक्ति देवी का मंदिर .... मूर्ति कला का भव्य नमूना है।

उत्तर- काष्ठ।

TYPE-IV

बहुत छोटे प्रश्न-उत्तर Very Short Answer Question

1. हिमाचल का भूगोल

प्रश्न 1. हिमाचल प्रदेश का कुल क्षेत्रफल कितना है?
उत्तर - 55673 वर्ग कि.मी.।

प्रश्न 2. हिमाचल की स्थिति क्या है?
उत्तर - 30°-22'-40" से 33°-12'-40" उत्तरी अक्षांश तथा 75°-45'-55" से 79°-04'-20" पूर्वी दक्षांश।

प्रश्न 3. हिमाचल के पश्चिम तथा दक्षिण में कौन से राज्य हैं?
उत्तर - पश्चिम में पंजाब तथा दक्षिण में हरियाणा।

प्रश्न 4. हिमाचल प्रदेश के कौन-से जिले उत्तराखण्ड को स्पर्श करते हैं?
उत्तर - किन्नौर, शिमला और सिरमौर।

प्रश्न 5. कौन-सी नदी उत्तर प्रदेश व हिमाचल प्रदेश के मध्य सीमा बनाती है?
उत्तर - यमुना नदी।

प्रश्न 6. जास्कर श्रेणी को कौन-सी नदी काटती है?
उत्तर - सतलुज नदी।

प्रश्न 7. हिमाचल प्रदेश की स्थानीय भाषा में हिमनद को क्या कहते हैं?
उत्तर - शिगड़ी।

प्रश्न 8. हिमालय के मध्य क्षेत्र में स्थित धौलाधार पर्वत श्रेणी की औसतन ऊँचाई लगभग कितनी है?
उत्तर - 2,440 मी.।

प्रश्न 9. प्रदेश के बाह्य हिमालय या शिवालिक श्रेणी के अन्तर्गत कौन-सी पहाड़ियाँ आती हैं?
उत्तर - निचली पहाड़ियाँ।

प्रश्न 10. जास्कर पर्वत श्रेणी किन्नौर व स्पीति को किसेस अलग करती है?
उत्तर - तिब्बत से।

प्रश्न 11. ऊपरी हिमालय पर्वत श्रेणी कितनी ऊँचाई पर स्थित है?
उत्तर - 5,000 मी. से 6,000 मी.।

प्रश्न 12. हिमाचल प्रदेश की ऊँचाई समुद्रतल से कितनी है?
उत्तर - 450 मी. से 6,500 मी.।

प्रश्न 13. हिमाचल प्रदेश में बहने वाली सतलज नदी का वैदिक नाम क्या है?
उत्तर - शतुद्री।

प्रश्न 14. हिमाचल प्रदेश में चिनाब नदी को अन्य किस नाम से पुकारा जाता है?
उत्तर - चन्द्रभागा।

प्रश्न 15. हिमाचल प्रदेश में चिनाब नदी का प्रवाह क्षेत्र कितने कि.मी. में है?
उत्तर - 122 कि.मी.।

प्रश्न 16. व्यास नदी का प्रवाह क्षेत्र हिमाचल प्रदेश में लगभग कितने कि.मी. की लम्बाई में है?
उत्तर - 256 कि. मी.।

प्रश्न 17. 'रावी नदी' का अन्य नाम कौन-सा है?
उत्तर - इरावती।

प्रश्न 18. हिमाचल प्रदेश में यमुना नदी का कुल जल ग्रहण क्षेत्र कितने कि.मी. का है?
उत्तर - 2320 कि.मी.।

प्रश्न 19. हिमाचल प्रदेश में रावी नदी की लम्बाई कुल कितनी है?
उत्तर - 158 कि.मी.।

प्रश्न 19. हिमाचल प्रदेश की सबसे बड़ी कृत्रिम झील कौन-सी है?
उत्तर - गोबिन्द सागर झील।

प्रश्न 20. हिमाचल प्रदेश की सबसे बड़ी प्राकृतिक झील कौन-सी है?
उत्तर - रेणुका झील।

प्रश्न 21. हिमाचल प्रदेश में सबसे अधिक ऊँचाई पर स्थित झील कौन-सी है?
उत्तर - मणिमहेश झील।

प्रश्न 22. मण्डी नगर से लगभग 22 मील की दूरी पर स्थित पराशर झील की समुद्रतल से ऊँचाई लगभग कितनी है?
उत्तर - 3,000 फुट अर्थात् 900 मी.।

प्रश्न 23. कौन-सी झील मण्डी जिले में स्थित है?
उत्तर - कमरुनाग झील।

प्रश्न 24. हिमाचल प्रदेश की कौन-सी झील सात झीलों का समूह है?
उत्तर - लामा झील।

प्रश्न 25. 'काँगड़ा' क्षेत्र में स्थित 'डल' झील की ऊँचाई क्या है?
उत्तर - 2,500 फुट या 750 मी.।

प्रश्न 26. प्रदेश में किस जिले में 'रोहला झरना' स्थित है?
उत्तर - कुल्लू जिले में।

प्रश्न 27. सूरजताल व चन्द्रताल नामक झीलें हिमाचल प्रदेश के किस जिले में स्थित हैं?
उत्तर - लाहौल-स्पीति में।

प्रश्न 28. 'रिवाल्सर झील', प्रदेश के किस जिले में स्थित है?
उत्तर - मण्डी में।

प्रश्न 29. 'नाको' नामक झील हिमाचल प्रदेश के किस क्षेत्र में स्थित है?
उत्तर - किन्नौर।

प्रश्न 30. ज्वालामुखी नामक झरना प्रदेश में किस स्थान पर है?
उत्तर - बड़सर।

प्रश्न 31. सालोल गर्म पानी का झरना कहां स्थित है?
उत्तर - काँगड़ा घाटी।

2. हिमाचल का प्राचीन इतिहास

प्रश्न 1. हिमाचल प्रदेश की सबसे प्राचीन रियासत कौन-सी थी?
उत्तर - त्रिगर्त रियासत।

प्रश्न 2. प्राचीनकालीन हिमाचल की जानकारी सबसे पहले किस प्राचीन ग्रन्थ से मिलती है?
उत्तर - ऋग्वेद में।
प्रश्न 3. हिमाचल क्षेत्र में रहने वाली अनार्य जातियों का सबसे शक्तिशाली राजा कौन था?
उत्तर - शांबर।
प्रश्न 4. महाभारत के युद्ध में काँगड़ा के किस कटोच वंशीय राजा ने कौरवों की ओर से युद्ध में भाग लिया था?
उत्तर - सुशर्मचन्द ने।
प्रश्न 5. प्राचीन काल में कांगड़ा किस नाम से जाना जाता था?
उत्तर - जालन्धर।
प्रश्न 6. पूर्व वैदिकालीन शिवालिक घाटियों में निम्नलिखित में से कौन लोग निवास करते थे?
उत्तर - दस्यु।
प्रश्न 7. प्रदेश का सबसे प्रसिद्ध वैदिक कालीन आर्य राजा कौन था?
उत्तर - सुदास।
प्रश्न 8. प्रदेश के अनार्य राजा शांबर का किस आर्य राजा से कई बार युद्ध हुआ था?
उत्तर - दिवोदास से।
प्रश्न 9. प्राचीनकाल में चम्बा राज्य की राजधानी कहाँ पर स्थित थी?
उत्तर - ब्रह्मपुरा।
प्रश्न 10. हिमाचल में प्राचीन कुल्लू राज्य की स्थापना किसने थी?
उत्तर - विहंगम मणिपाल ने।
प्रश्न 11. हिमाचल में त्रिगर्त-काँगड़ा का संस्थापक कौन था?
उत्तर - भूमिचन्द।
प्रश्न 12. हिमाचल का कुलिन्द गणराज्य किस सदी में फूला-फला था?
उत्तर - दूसरी सदी ईसा पूर्व में।
प्रश्न 13. हिमाचल की किरातों व नागों को परास्त करने वाली आदिम जाति कौन-सी थी?
उत्तर - खस।
प्रश्न 14. राजसूय यज्ञ से पूर्व की विजय यात्रा के दौरान अर्जुन ने हिमाचल के किस गणराज्य की यात्रा की?
उत्तर - कुलिन्द।

3. मध्यकालीन हिमाचल

प्रश्न 1. महमूद गज़नवी ने काँगड़ा के किले और मन्दिर पर कब आक्रमण किया था?
उत्तर - 1009 ई. में।
प्रश्न 2. 1009 ई. में जिस समय महमूद गज़नवी ने नगरकोट पर आक्रमण किया, उस समय वहाँ का शासक कौन था?
उत्तर - जगदीशचन्द।
प्रश्न 3. 1540 ई. में शेरशाह सूरी के सेनापति खवास खाँ ने हिमाचल के किस स्थान पर विजय प्राप्त की थी?
उत्तर - काँगड़ा।
प्रश्न 4. 1572 ई. में मुगल शासक अकबर ने किसे काँगड़ा का जागीदार बनाया था?
उत्तर - बीरबल को।

प्रश्न 5. **मुगल शासक जहाँगीर ने नूरपुर के राजा जगत सिंह की सहायता से काँगड़ा के दुर्ग पर कब अधिकार किया था?**

उत्तर – 1620 ई. में।

प्रश्न 6. **काँगड़ा के किस शासक ने सभी पहाड़ी शासकों का संघ बनाकर 1588-89 ई. में अकबर के विरुद्ध युद्ध किया था?**

उत्तर – विधिचन्द ने।

प्रश्न 7. **किस मुगल शासक ने कुल्लू के राजा 'जगतसिंह' को 'राजा' की उपाधि से अलंकृत किया था?**

उत्तर – औरंगज़ेब।

प्रश्न 8. **सिरमौर राज्य के अन्तिम शासक का नाम बताइए।**

उत्तर – राजेन्द्र प्रकाश।

प्रश्न 9. **मुगल शासक जहाँगीर ने काँगड़ा के किले पर हिमाचल के किस रियासत के राजा की सहायता से अधिकार किया था?**

उत्तर – नूरपुर के राजा जगतसिंह।

प्रश्न 10. **जिस समय मुगल सम्राट जहाँगीर 1620 ई. काँगड़ा आया था, उस समय वहाँ का राजा कौन था?**

उत्तर – बालभद्र।

प्रश्न 11. **15वीं शताब्दी में काँगड़ा की प्रसिद्ध शाखा हरिपुर या गुलेर राज्य की नींव किसके द्वारा रखी गई थी?**

उत्तर – हरिचन्द और कर्मचन्द।

प्रश्न 12. **हिमाचल में जसवान राज्य की स्थापना किसने की थी?**

उत्तर – पूर्वचन्द ने।

प्रश्न 13. **कुटलैहर रियासत का अन्तिम शासक कौन था?**

उत्तर – ब्रजमोहनपाल।

प्रश्न 14. **गुरू गोबिन्द सिंह ने किस राजा के शासनकाल में सिरमौर की यात्रा की?**

उत्तर – मेदनी प्रकाश।

प्रश्न 15. **काँगड़ा जिले के नूरपुर उप-मण्डल का नाम ढमेली से 'नूरपुर' किस मुगल शासक के समय में पड़ा था?**

उत्तर – जहाँगीर।

प्रश्न 16. **हिमाचल के किस राजा ने नूरपुर राज्य की राजधानी 'पठानकोट' से 'घमेरी' स्थानान्तरित की थी?**

उत्तर – बासदेव ने।

प्रश्न 17. **हिमाचल में 1778 ई. में किसने सुजानपुर टिहरा नामक स्थान की नींव रखी थी?**

उत्तर – अभयचन्द ने।

प्रश्न 18. **सुप्रसिद्ध राजा संसार चन्द जो पहाड़ी क्षेत्र में विशाल हिन्दू साम्राज्य स्थापित करना चाहता था, कहाँ का शासक था?**

उत्तर – काँगड़ा का।

4. 19 वीं शताब्दी में हिमाचल

प्रश्न 1. **किस सिख सरदार ने सर्वप्रथम 18 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में काँगड़ा के पहाड़ी क्षेत्र पर आक्रमण किया था?**

उत्तर – जस्सा सिंह रामगढ़िया।

प्रश्न 2. **राजा संसार चन्द व महाराजा रणजीत सिंह के बीच ज्वालामुखी की सन्धि किस वर्ष हुई थी?**

उत्तर - 1809 ई. में।

प्रश्न 4. बिलासपुर के किस राजा ने 1809 ई. में गोरखों को काँगड़ा पर आक्रमण करने के लिए आमन्त्रित किया था?

उत्तर - महानचन्द ने।

प्रश्न 4. गोरखों ने काँगड़ा क्षेत्र पर कब आक्रमण कर लूटमार मचाई थी?

उत्तर - 1809 ई. में।

प्रश्न 5. 1850 ई. में मण्डी रियासत पर किए गए आक्रमण में सिख सेना का नेतृत्व किसने किया था?

उत्तर - जनरल बनतूरा।

प्रश्न 6. हिमाचल की 'सुकेत' रियासत का अन्तिम राजा कौन था, जिसने 'प्रिन्स ऑफ वेल्स अनाथ आश्रम' की स्थापना भी की थी?

उत्तर - लक्ष्मण सेन।

5. आंग्ल-गोरखा युद्ध

प्रश्न 1. गोरखों ने गोरखपुर पर कब अधिकार किया?

उत्तर - 1801 में।

प्रश्न 2. गोरखा सेनापति अमर सिंह थापा ने जुब्बल और धामी पर कब अधिकार किया?

उत्तर - 1810 में।

प्रश्न 3. 1812-13 ई. में अमर सिंह थापा कहाँ रहा?

उत्तर - रामपुर में।

प्रश्न 4. आंगल-गोरखा युद्ध में अंग्रेजी सेना के कर्नल डेविड आक्टर लोनी ने किस रियासत के राजा को अपने साथ मिलाया?

उत्तर - बिलासपुर।

प्रश्न 5. कोटगढ़ को किस गोरखा के नेतृत्व में गोरखों ने अपने अधिकार में लिया?

उत्तर - कीर्ति राणा।

प्रश्न 6. सैगोली की संधि कब हुई?

उत्तर - 1816 में।

प्रश्न 7. आंग्ल-गोरखा युद्ध के परिणामस्वरूप किसे क्षेत्र में गोरखा अधिपत्य समाप्त हो गया?

उत्तर - शिमला।

प्रश्न 8. आंग्ल-गोरखा युद्ध किसके काल में हुआ?

उत्तर - लार्ड हेस्टिंग्ज़ के काल में।

6. अंग्रेज़ों द्वारा पहाड़ी रियासतों पर नियन्त्रण

प्रश्न 1. प्रथम सिख युद्ध कब लड़ा गया?

उत्तर - 1845-46 में।

प्रश्न 2. अंग्रेजों तथा महाराजा रणजीत सिंह के बीच अमृतसर की संधि कब हुई?

उत्तर - 1809 में।

प्रश्न 3. महाराजा रणजीत सिंह की मृत्यु कब हुई?

उत्तर - 1839 में।

प्रश्न 4. पहली अफगान लड़ाई कब हुई?
उत्तर - 1839-42 में।
प्रश्न 5. सिंध को अंग्रेज़ी सम्राज्य में कब मिलाया गया?
उत्तर - 1843 में।
प्रश्न 6. मुदकी की लड़ाई कब लड़ी गई?
उत्तर - 18 दिसम्बर, 1845।
प्रश्न 7. फिरोज़शाह की लड़ाई में किस सिख जनरल ने विश्वासघात किया?
उत्तर - तेजा सिंह ने।
प्रश्न 8. सबराओं की लड़ाई कब लड़ी गई?
उत्तर - 10 फरवरी, 1846।
प्रश्न 9. लाहौर की संधि कब हुई?
उत्तर - 19 मार्च, 1846।
प्रश्न 10. भैरोंवाल की संधि कब हुई?
उत्तर - सितम्बर, 1846।
प्रश्न 11. दूसरा सिख युद्ध कब लड़ा गया?
उत्तर - 1848-49 में।
प्रश्न 12. सिखों का दूसरा युद्ध किसके काल में लड़ा गया?
उत्तर - लार्ड डलहौज़ी के काल में।
प्रश्न 13 मूलराज मुलतान का गवर्नर कब बना?
उत्तर - 1844 में।
प्रश्न 14. पंजाब को अंग्रेज़ी साम्राज्य में कब मिलाया गया?
उत्तर - 1849 में।
प्रश्न 15. सिखों के दूसरे युद्ध में चिलियांवाला की लड़ाई कब लड़ी गई?
उत्तर - 13 जनवरी, 1849 में।
प्रश्न 16. सिखों के दूसरे युद्ध में गुजरात की लड़ाई कब लड़ी गई?
उत्तर - 21 फरवरी, 1849 में।
प्रश्न 17. बिलासपुर के राजा को अंग्रेजों ने कब सनद दी?
उत्तर - 6 मार्च 1815 में।
प्रश्न 18. बघाट के राजा को अंग्रेजों ने कब सनद दी?
उत्तर - जून 1840 में।
प्रश्न 19. गुलेर के राजा भूपसिंह के मृत्यु कब हुई?
उत्तर - 1820 में।
प्रश्न 20. 1809 में जसवां रियासत किस के अधीन आ गई?
उत्तर - गोरखों के।
प्रश्न 21. कुल्लू के राजा अजीत सिंह की मृत्यु कब हुई?
उत्तर - 1841 में।
प्रश्न 22. अंग्रेजों ने राजा फतह सिंह को क्यारदा घाटी की सनद कब दी?

उत्तर - 1833 में।

प्रश्न 23. कांगड़ा के राजा अनिरुद्ध की मृत्यु कब हुई?

उत्तर - 1831।

7. परिवहन एवं संचार व्यवस्था

प्रश्न 1. हिमाचल के किस जिले में ब्राड गेज लाइन है?

उत्तर - ऊना में।

प्रश्न 2. हिमाचल प्रदेश में किन स्थानों के मध्य छोटी रेल लाइन की रेल चलती है?

उत्तर - पठानकोट से जोगिन्दर नगर तथा कालका से शिमला।

प्रश्न 3. पठानकोट-जोगिन्दर नगर, रेल लाइन पर कुल कितनी सुंरग हैं?

उत्तर - दो

प्रश्न 4. हिमाचल प्रदेश में नंगल से तलवाड़ा के बीच बन रही बड़ी रेल लाइन को किस जिले तक विकसित किया गया है?

उत्तर - जिला ऊना तक।

प्रश्न 5. कौन-सा राष्ट्रीय राजमार्ग शिमला जिले से गुजरता है?

उत्तर - राष्ट्रीय राजमार्ग-22।

प्रश्न 6. कालका-शिमला रेलवे लाइन पर सबसे लम्बी सुरंग कहाँ पर है?

उत्तर - बड़ोग।

प्रश्न 7. हिमाचल प्रदेश में किस स्थान पर हैलीपेड उपलब्ध है?

उत्तर - किलाड़।

प्रश्न 8. हिमाचल प्रदेश के किस हवाई अड्डे से केवल दिल्ली के लिए ही हवाई उड़ानें होती हैं?

उत्तर - काजा और रंगरीक।

प्रश्न 9. राज्य का सबसे अधिक ऊँचाई पर हवाई अड्डा कौन-सा है?

उत्तर - काजा।

8. हिमाचल में 1857 का विद्रोह

प्रश्न 1. कसौली की सैनिक छावनी में 1857 के विद्रोह की चिंगारी कब भड़की थी?

उत्तर - 20 अप्रैल को।

प्रश्न 2. 1857 के विद्रोह का आरम्भ कब माना जाता है?

उत्तर - 10 मई।

प्रश्न 3. दिल्ली में मेरठ के क्रान्तिकारी कब पहुंचे?

उत्तर - 11 मई, 1857 ।

प्रश्न 4. 1857 के विद्रोह के समय शिमला का डिप्टी कमिश्नर कौन था?

उत्तर - विलियम हेय

प्रश्न 5. कसौली की क्रान्तिकारी सेना का नेतृत्व किसने किया?

उत्तर - भीम सिंह ने।

प्रश्न 6. शिमला की पहाड़ी रियासतों में स्थापित गुप्त संगठन का नेता कौन था?

उत्तर - राम प्रसाद वैरागी।

प्रश्न 7. 1857 के विद्रोह के दौरान पंजाब का चीफ कमिश्नर कौन था?
उत्तर - जॉन लोरंस।
प्रश्न 8. 'शेरदिल पुलिस बटालियन' का कमाण्डर कौन था?
उत्तर - कैप्टन यंग हस्बैण्ड।
प्रश्न 9. मीयां मीर में विद्रोह कब आरम्भ हुआ?
उत्तर - 30 जुलाई, 1857।
प्रश्न 10. 1857 के विद्रोह के समय सुजानपुर टीहरा का राजा कौन था?
उत्तर - प्रताप चन्द।
प्रश्न 11. महारानी विकटोरिया का घोषणा पत्र कब घोषित किया गया?
उत्तर - 1 नवम्बर, 1858।
प्रश्न 12. महारानी विक्टोरिया के घोषणा पत्र की घोषणा किसने की?
उत्तर - लार्ड कैनिंग ने।
प्रश्न 13. किस वायसराय के शिमला में वायसराय निवास बनाने का आदेश दिया?
उत्तर - लार्ड लिटन ने।
प्रश्न 14. 1857 ई. की क्रान्ति के समय शिमला का डिप्टी कमिश्नर कौन था?
उत्तर - विलियम हेग।
प्रश्न 15. राजा शमशेर सिंह किस रियासत का शासक था जिसने 1857 ई. के विद्रोह के दौरान अंग्रेजों को आर्थिक और सैनिक सहायता देना बन्द कर दिया था?
उत्तर - बुशहर का।
प्रश्न 16. स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान शिमला पहाड़ी की किस रियासत में तीव्र असन्तोष फैला?
उत्तर - नालागढ़ (हिण्डूर)।
प्रश्न 17. 1857 ई. के स्वतन्त्रता संग्राम के समय कुल्लू रियासत के किस शासक को 'राय' की उपाधि मिली थी?
उत्तर - ज्ञानसिंह को।

9. हिमाचल में जन आन्दोलन

प्रश्न 1. प्रदेश के पुराने पहाड़ी राज्यों में सत्ता के प्रति विरोध प्रदर्शन को स्थानीय लोग क्या कहकर पुकारते थे?
उत्तर - दूम।
प्रश्न 2. 1859 ई. में रामपुर-बुशहर में बेगार के विरुद्ध संघर्ष हुआ था, इसका प्रमुख केन्द्र कौन-सा था?
उत्तर - रोहड़।
प्रश्न 3. 1862-76 ई. के मध्य सुकेत रियासत की जनता ने जिस मन्त्री के विरुद्ध किया था, उस मन्त्री का नाम क्या था?
उत्तर - नरोत्तम।
प्रश्न 4. नालागढ़ रियासत की जनता ने वहाँ के मन्त्री गुलाम कादिर खाँ के अन्यापूर्ण व्यवहार के विरुद्ध विद्रोह कब किया था?
उत्तर - 1876 ई. में।
प्रश्न 5. वर्ष 1942-43 में हुए 'पझौता आन्दोलन' का संचालन किसने किया था?
उत्तर - वैद्य सूरत सिंह ने।

प्रश्न 6. प्रदेश की सिरमौर रियासत के ऊपरी क्षेत्र 'पझौता' में किसान आन्दोलन कब चलाया गया था?
उत्तर - 1942-43 में।
प्रश्न 7. प्रदेश में पझौता आन्दोलन किसके विरुद्ध हुआ था?
उत्तर - अंग्रेजों के।
प्रश्न 8. प्रदेश की कुनिहार रियासत में किसानों ने प्रशासन के अत्याचारों के विरोध में कब आन्दोलन किया था?
उत्तर - 1920 में।
प्रश्न 9. राजा रुद्रसेन के कार्यकाल में सुकेत में जन-आन्दोलन कब हुआ था?
उत्तर - 1878 ई. में।
प्रश्न 10. प्रदेश की क्योंथल रियासत में भूमि सम्बन्धी आन्दोलन कब हुआ था?
उत्तर - 1895 ई. में।
प्रश्न 11. मण्डी रियासत के राजा भवानी सेन के समय में किसान आन्दोलन कब हुआ था?
उत्तर - 1909 में।
प्रश्न 12. कुनिहार रियासत के बाबू काशीराम और कोटगढ़ रियासत के सत्यानन्द स्टोक्स ने प्रदेश की पहाड़ी रियासतों में बेगार प्रथा के विरुद्ध कब आन्दोलन चलाया था?
उत्तर - 1920 में।
प्रश्न 13. प्रदेश में नालागढ़ नामक स्थान पर जन-आन्दोलन कब हुआ?
उत्तर - 1877 ई. में।
प्रश्न 14. प्रदेश में किस स्थान पर 1930 में भूमि बन्दोबस्त सम्बन्धी आन्दोलन हुआ था?
उत्तर - बिलासपुर में।
प्रश्न 15. चम्बा रियासत में कुछ लोगों ने 'चम्बा सेवक संघ' नाम से एक संस्था का गठन कब किया था?
उत्तर - मार्च, 1936 को।
प्रश्न 16. प्रदेश की धामी रियासत का प्रसिद्ध गोलीकाण्ड कब हुआ?
उत्तर - 13 जुलाई, 1939 में।
प्रश्न 17. धामी रियासत में 'प्रेम प्रचारिणी सभा' की स्थापना कब हुई थी?
उत्तर - 1942 में।
प्रश्न 18. वर्ष 1937 में सिरमौर प्रजामण्डल का प्रथम अध्यक्ष किसे बनाया गया था?
उत्तर - चौधरी शेरजंग।
प्रश्न 19. 1937 में चम्बा में हुए अग्निकाण्ड से पीड़ित लोगों की सहायता के लिए किस संघ की स्थापना की गई थी?
उत्तर - चम्बा सेवक संघ।
प्रश्न 20. सिरमौर में हिमाचल की सबसे पहली 'प्रजामण्डल' संस्था का संस्थापक कौन था?
उत्तर - पण्डित राजेन्द्र दत्त।
प्रश्न 21. 'हिमालयन हिल स्टेट्स काउन्सिल' के प्रथम सम्मेलन की अध्यक्षता आज़ाद हिन्द फौज के किस सुप्रसिद्ध सेनानी ने की थी?
उत्तर - कर्नल गुरुदयाल सिंह ढिल्लों।
प्रश्न 22. 'हिमालयन हिल स्टेट्स रीजनल काउन्सिल' का प्रथम सम्मेलन मण्डी में कब हुआ था?
उत्तर - 8 से 10 मार्च, 1946।
प्रश्न 23. 1939 में शिमला की पहाड़ी रियासतों के प्रजामण्डलों की एक बैठक में धामी रियासत की 'प्रेम प्रचारिणी सभा' का नाम बदलकर क्या रखा गया?
उत्तर - धामी प्रजामण्डल।

प्रश्न 24. प्रदेश में प्रसिद्ध मण्डी षडयन्त्र की वर्ष 1914-15 की घटना किसके परिणामस्वरूप घटी थी?

उत्तर - 1914-15 में

प्रश्न 25. 1946 में सर्वप्रथम किस व्यक्ति ने हिमाचल के पहाड़ी राज्य के निर्माण की माँग की थी?

उत्तर - ठाकुर हजारा सिंह ने।

प्रश्न 26. काँगड़ा जिले के किस व्यक्ति को पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने उसे पहाड़ी गाँधी की उपाधि दी थी?

उत्तर - बाबा काशीराम को।

प्रश्न 27. महात्मा गाँधी ने प्रथम बार शिमला की यात्रा कब की थी?

उत्तर - वर्ष 1921 में

प्रश्न 28. प्रदेश में 'भाई दो, ना पाई' आन्दोलन किस राष्ट्रीय आन्दोलन की शाखा थी?

उत्तर - व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन।

प्रश्न 29. इरविन-गाँधी समझौते पर हस्ताक्षर करने के लिए गाँधीजी शिमला कब गए थे?

उत्तर - 25 अगस्त, 1931

प्रश्न 30. हिमाचल प्रदेश में 'सुकेत सत्याग्रह' कब हुआ था?

उत्तर - 18 फरवरी, 1948 में।

प्रश्न 31. शिमला से भारत छोड़ो आन्दोलन का संचालन किसने किया था?

उत्तर - राजकुमारी अमृतकौर।

प्रश्न 32. गाँधीजी के सविनय अवज्ञा आन्दोलन में प्रदेश के किन स्थानों के कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने भाग लिया था?

उत्तर - शिमला व काँगड़ा।

10. हिमाचल में राजनीतिक दल

प्रश्न 1. कांग्रेस की स्थापना किसने की थी?

उत्तर - ए. ओ. ह्यूम ने।

प्रश्न 2. हिमाचल प्रदेश के पहले मुख्यमंत्री कौन बने?

उत्तर - डा. यशवंत सिंह परमार।

प्रश्न 3. हिमाचल प्रदेश में स्वतंत्र पार्टी की स्थापना किसने की थी?

उत्तर - आनन्द चन्द ने।

प्रश्न 4. डा. यशवंत सिंह परमार के बाद हिमाचल का मुख्य मंत्री किसे बनाया गया?

उत्तर - ठाकुर राम लाल को।

प्रश्न 5. जनसंघ की स्थापना कब की गई?

उत्तर - 1951 में।

प्रश्न 6. स्वतंत्र पार्टी की स्थापना कब की गई?

उत्तर - 1959 में।

प्रश्न 7. कम्यूनिस्ट पार्टी की स्थापना कब हुई?

उत्तर - 1925 में।

प्रश्न 8. हिमाचल प्रदेश में साम्यवादी दल की स्थापना कब की गई?

उत्तर - 1953

प्रश्न 9. प्रजा सोशलिस्ट पार्टी की स्थापना कब की गई?

उत्तर - 1952 में।

प्रश्न 10. विशाल हिमाचल समिति कब स्थापित की गई?
उत्तर - 1955 में।
प्रश्न 11. लोकराज पार्टी की स्थापना कब की गई?
उत्तर - 1967 में।
प्रश्न 12. श्रीमति इंदिरा गांधी ने देश में आपातकाल कब घोषित किया?
उत्तर - 1975 में।
प्रश्न 13. 1977 के लोक सभा चुनावों में किस दल ने सरकार बनाई?
उत्तर - जनता दल ने।
प्रश्न 14. 1977 के लोक सभा चुनावों के बाद कौन प्रधानमंत्री बना?
उत्तर - श्री मोरार जी देसाई।
प्रश्न 15. 1977 के हिमाचल के विधानसभा के चुनावों के बाद राज्य का मुख्यमंत्री कौन बना?
उत्तर - शांता कुमार।
प्रश्न 16. 1998 के हिमाचल विधानसभा चुनावों के बाद मुख्यमंत्री कौन बना?
उत्तर - प्रेम कुमार धूमल।
प्रश्न 17. प्रेम कुमार धूमल दूसरी बार हिमाचल के मुख्यमंत्री कब बने?
उत्तर - 2007 में।
प्रश्न 18. 2012 के हिमाचल विधानसभा चुनावों के बाद राज्य का मुख्यमंत्री किसे बनाया गया है?
उत्तर - वीर भद्र सिंह।

11. आधुनिक हिमाचल का निर्माण

प्रश्न 1. भारतीय संविधान सभा में हिमाचल प्रदेश का नेतृत्व किसने किया था?
उत्तर - डॉ. वाई. एस. परमार ने
प्रश्न 2. 15 अप्रैल, 1948 को हिमाचल प्रदेश में कितनी रियासतों का विलय किया गया था?
उत्तर - 30 रियासतों का।
प्रश्न 3. शिमला हिल स्टेट्स की 26 छोटी-बड़ी रियासतों को मिलाकर वर्ष 1948 में कौन-सा जिला बनाया गया?
उत्तर - महासू।
प्रश्न 4. बिलासपुर रियासत का हिमाचल प्रदेश में विलय कब हुआ था?
उत्तर - जुलाई, 1954
प्रश्न 5. हिमाचल के सारे पहाड़ी क्षेत्र को एक करके उसे 'हिमाचल प्रदेश' नाम कब दिया गया था?
उत्तर - 15 अप्रैल, 1948 को।
प्रश्न 6. शिमला हिल्स की 26 पहाड़ी रियासतों का विलय हिमाचल प्रदेश में कब किया गया था?
उत्तर - 16 दिसम्बर, 1947 को।
प्रश्न 7. 1948 में हिमाचल प्रदेश के लिए स्थापित की गई अल्पकालिक सरकार का प्रथम अध्यक्ष कौन था?
उत्तर - पण्डित शिवानन्द।
प्रश्न 8. प्रदेश का प्रथम डिप्टी चीफ कमिश्नर किस व्यक्ति को बनाया गया था?
उत्तर - पैण्ड्रल मून।
प्रश्न 9. हिमाचल प्रदेश का प्रथम राज्यपाल किसे बनाया गया था?
उत्तर - एस चक्रवर्ती।

प्रश्न 10. डॉ. यशवन्त सिंह परमार प्रदेश के मुख्यमंत्री कब बने?

उत्तर - 24 मार्च, 1952 में।

प्रश्न 11. प्रदेश के प्रथम मुख्यमन्त्री का नाम बताइए

उत्तर - डॉ. यशवन्त सिंह परमार।

प्रश्न 12. हिमाचल प्रदेश में विधानसभा के लिए सर्वप्रथम चुनाव कब हुए थे?

उत्तर - वर्ष 1952 में।

प्रश्न 13. हिमाचल प्रदेश को केन्द्रशासित प्रदेश का दर्जा कब प्राप्त हुआ था?

उत्तर - 1 नवम्बर, 1956।

प्रश्न 14. क्षेत्रीय परिषद् को हिमाचल प्रदेश विधानसभा में परिवर्तित करके लोकप्रिय सरकार की पुनर्स्थापना कब हुई?

उत्तर - 1 जुलाई, 1963 को।

प्रश्न 15. संसद द्वारा हिमाचल राज्य कानून कब पास किया गया था?

उत्तर - 18 दिसम्बर, 1970।

प्रश्न 16. श्रीमति इन्दिरा गाँधी ने लोकसभा में हिमाचल प्रदेश को पूर्ण राजत्व प्रदान करने की घोषणा कब की थी?

उत्तर - 31 जुलाई, 1970 को।

प्रश्न 17. 25 जनवरी, 1971 में हिमाचल प्रदेश को भारत का कौन-सा राज्य बनाया गया?

उत्तर - 18वाँ।

प्रश्न 18. हिमाचल प्रदेश को पूर्ण राज्य का दर्जा कब प्राप्त हुआ था?

उत्तर - 25 जनवरी, 1971 को।

12. हिमाचल का समाज

प्रश्न 1. हिमाचल के मूल निवासी कौन हैं?

उत्तर - काली, रेहाड़ और बाढ़ी।

प्रश्न 2. किन्नौर में 'हार' नामक विवाह को क्या कहते हैं?

उत्तर - दुबदुब।

प्रश्न 3. महासू देवता मुख्यतः किस जिले का देवता है?

उत्तर - शिमला।

प्रश्न 4. प्रदेश का प्रसिद्ध 'छोहारा नृत्य' किस क्षेत्र से सम्बन्धित है?

उत्तर - महासू।

प्रश्न 5. प्रसिद्ध 'झांझर नृत्य' प्रदेश में किस जिले से सम्बन्धित है?

उत्तर - चम्बा।

प्रश्न 6. प्रदेश में 'जागरा' नामक उत्सव पर विशेष रूप से कौन-सा नृत्य किया जाता है?

उत्तर - बिरसू नृत्य।

प्रश्न 7. प्रदेश का सबसे बड़ा पशु मेला नलवाड़ कहां मनाया जाता है?

उत्तर - सुन्दरनगर।

प्रश्न 8. सुन्दरनगर नलवाड़ मेला किसने शुरू किया था?

उत्तर - राजा चेतसेन।

प्रश्न 9. बिलासपुर जिले में कौन-सा मेला राज्य स्तरीय मेला घोषित किया गया है?
उत्तर - नलवाड़ मेला।
प्रश्न 10. प्रदेश में मण्डी जिले के किस मेले को 'राज्य स्तरीय' घोषित किया गया है?
उत्तर - शिवरात्रि मेला।
प्रश्न 11. मार्कण्ड मेला किस जिले में लगता है?
उत्तर - बिलासपुर में।
प्रश्न 12. बाबा बड़भाग सिंह मेला किस स्थान पर लगता है?
उत्तर - ऊना में।
प्रश्न 13. हिमाचल के किस स्थान का दशहरा विश्व प्रसिद्ध है?
उत्तर - कुल्लू।
प्रश्न 14. प्रदेश में किस स्थान पर 'पत्थर का खेल' नामक सुप्रसिद्ध मेला लगता है?
उत्तर - हलोग।
प्रश्न 15. प्रदेश में 'मण्डी शिवरात्रि मेला' की शुरुआत किसने की थी?
उत्तर - राजा अजबेर सिंह ने।
प्रश्न 16. किन्नौर जिले का कौन-सा महोत्सव 'फूलों का महोत्सव' के रूप में प्रसिद्ध हैं?
उत्तर - लोसर।
प्रश्न 17. कुल्लू जिले में 'देवी हिडिम्बा' की याद में कौन-सा उत्सव मनाया जाता है?
उत्तर - डूंगरी मेला।
प्रश्न 18. सिरमौर क्षेत्र में बैसाखी के दिन कौन-सा त्यौहार मनाया जाता है?
उत्तर - बिशु।
प्रश्न 19. प्रदेश में किस स्थान पर 'बूढ़ी दिवाली' नामक मेला लगता है?
उत्तर - निर्मड।

13. हिमाचल की अर्थव्यवस्था

प्रश्न 1. प्रदेश के कितने क्षेत्र में बागवानी की जाती है?
उत्तर - लगभग 21%।
प्रश्न 2. हिमाचल प्रदेश में सेब का सबसे पहला बाग किसके द्वारा लगाया गया था?
उत्तर - कैप्टन ए॰ ए॰ ली॰ ने।
प्रश्न 3. 1823 ई. में शिमला की पहाड़ियों में सर्वप्रथम किसने आलू उत्पादन शुरू किया था?
उत्तर - मेजर कैनेडी।
प्रश्न 4. प्रदेश में सन्तरों का उत्पादन प्रमुख रूप से कहाँ किया जाता है?
उत्तर - कुल्लू व काँगड़ा में।
प्रश्न 5. प्रदेश के किस जिले में सेब का उत्पादन सबसे अधिक होता है?
उत्तर - शिमला।
प्रश्न 6. प्रदेश का कौन-सा भू-भाग नींबू प्रजाति के फल उत्पादन के लिए सर्वोत्तम है?
उत्तर - शिवालिक घाटी।
प्रश्न 7. हिमाचल प्रदेश में पैदा की जाने वाली कुठ नामक बूटी का निर्यात भारत से बाहर किस देश में किया जाता है?
उत्तर - अमेरिका, कनाडा और फ्रांस।

प्रश्न 8. **प्रदेश में निम्नलिखित में से किस स्थान पर कृषि विश्वविद्यालय की स्थापना की गई है?**

उत्तर - पालमपुर।

प्रश्न 9. **मक्का का उत्पादन प्रदेश के किन-किन ज़िलों में होता है?**

उत्तर - शिमला, हमीरपुर और सोलन।

प्रश्न 10. **प्रदेश के किस जिले में धान का सर्वाधिक उत्पादन होता है?**

उत्तर - काँगड़ा में।

प्रश्न 11. **किन्नौर व लाहौल-स्पीति जिलों में निम्नलिखित में से किस खाद्यान्न का उत्पादन अधिक मात्रा में होता है?**

उत्तर - जौ

प्रश्न 12. **'काला जीरा' हिमाचल प्रदेश में कहाँ पर पैदा किया जाता है?**

उत्तर - किन्नौर व लाहौल-स्पीति में।

प्रश्न 13. **प्रदेश के चम्बा जिले में किस स्थान पर भेड़ प्रजनन केन्द्र खोला गया है?**

उत्तर - चूड़ी।

प्रश्न 14. **हिमाचल प्रदेश के चाय का उत्पादन प्रमुख रूप से किन स्थानों पर किया जाता है?**

उत्तर - मण्डी व काँगड़ा।

प्रश्न 15. **हिमाचल प्रदेश का प्रधान औद्योगिक नगर कौन-सा है?**

उत्तर - नाहन।

प्रश्न 16. **राज्य में नमक निकालने का कार्य मुख्यतः कहां होता है**

उत्तर - मण्डी।

प्रश्न 17. **हिमाचल प्रदेश के कुल क्षेत्रफल के लगभग कितने प्रतिशत भाग में वन स्थित हैं?**

उत्तर - 67%।

प्रश्न 18. **राज्य में जिप्सम कहां पाया जाता है?**

उत्तर - सिरमौर।

प्रश्न 19. **भाखड़ा बाँध की ऊँचाई कितनी है?**

उत्तर - 226 मी.।

प्रश्न 20. **हिमाचल प्रदेश की सबसे बड़ी सिंचाई योजना कौन-सी है?**

उत्तर - शाह नगर परियोजना।

प्रश्न 21. **हिमाचल प्रदेश में सतलुज नदी पर कौन-सी परियोजना बनाई गई हैं?**

उत्तर - नाथपा-झाकरी परियोजना।

प्रश्न 22. **चामेरा परियोजना हिमाचल प्रदेश के किस जिले में हैं?**

उत्तर - चम्बा।

प्रश्न 23. **कोल बाँध परियोजना किस प्रदेश के लिए हैं?**

उत्तर - हिमाचल प्रदेश।

प्रश्न 24. **हिमाचल प्रदेश में स्थित, सिखों के दसवें गुरु गोबिन्द सिंह के नाम पर बाँध के पीछे बने जलाशय का क्या नाम है?**

उत्तर - गोबिन्द सागर।

प्रश्न 25. **बासपा किस नदी की सहायक नदी है जहाँ बासपा हाइडल परियोजना शुरू की गई है?**

उत्तर - सतलुज की।

14. हिमाचल की जनजातियां

प्रश्न 1. हिमाचल प्रदेश की कौन-सी जाति सिन्धु सभ्यता की समकालीन मानी जाती है?
उत्तर - कोल, किन्नर और नाग ।

प्रश्न 2. हिमाचल प्रदेश की किस जनजाति को 'खोसिया' नाम से भी जाना जाता है?
उत्तर - किन्नर।

प्रश्न 3. प्रदेश की गद्दी जनजाति की बस्ती को क्या कहा जाता है?
उत्तर - गद्देरन।

प्रश्न 4. गद्दी जनजाति हिमाचल प्रदेश के किन क्षेत्रों में सर्वाधिक पाई जाती है?
उत्तर - भरमौर, चम्बा।

प्रश्न 5. हिमाचल प्रदेश के निवासी 'गुर्जर' किसके वंशज माने जाते हैं?
उत्तर - हूण।

प्रश्न 6. 'गुर्जर' जनजाति मुख्यत: किस धार्मिक सम्प्रदाय से सम्बन्ध रखती है?
उत्तर - हिन्दू और मुस्लिम से।

प्रश्न 7. प्रदेश की 'स्पीतियन' जनजाति को अन्य किस नाम से जाना जाता है?
उत्तर - भोट।

प्रश्न 8. किन्नौर जिले के 'लौहार' व 'बढ़ई' किस नाम से जाने जाते हैं?
उत्तर - चनाल।

15. हिमाचल की वास्तुकला

प्रश्न 1. किस वास्तु शैली पर मुसलमानी सभ्यता का प्रभाव दिखाई देता है?
उत्तर - गुम्बदाकार मन्दिरों में।

प्रश्न 2. कौन से मन्दिर शास्त्रीय शैली के मन्दिर हैं?
उत्तर - शिखर शैली मन्दिर।

प्रश्न 3. 'काँगड़ा कलम' का सबसे अधिक विकास काँगड़ा के किस राजा के काल में हुआ था?
उत्तर - संसारचन्द।

प्रश्न 4. इंग्लैंड की प्रमुख वास्तु कला शैली कौन सी थी?
उत्तर - विक्टोरियन शैली।

प्रश्न 5. विक्टोरिया मैमोरियल हाल का निर्माण किसके काल में हुआ?
उत्तर - लार्ड कर्जन।

प्रश्न 6. शिमला के क्राइस्ट चर्च में पहली प्रार्थना कब की गई?
उत्तर - 11 अक्तूबर, 1857।

प्रश्न 7. शिमला में खुले पहले होटल का क्या नाम था?
उत्तर - पैवेलियन।

प्रश्न 8. क्राइस्ट चर्च की आधार शिला कब रखी गई?
उत्तर - 1844।

प्रश्न 9. शिमला पंजाब सरकार का मुख्यालय कब बना?
उत्तर - 1871।

प्रश्न 10. भारत-तिब्बत सड़क का निर्माण किसने आरम्भ करवाया था?
उत्तर - लार्ड डलहौजी।

संक्षिप्त उत्तरों वाले प्रश्न
SHORT ANSWER TYPE QUESTIONS

2 X 5 = 10

1. हिमाचल का भूगोल

प्रश्न 1. हिमाचल प्रदेश की भौगोलिक स्थिति का वर्णन करें।

उत्तर– हिमाचल प्रदेश हिमालय के पश्चिम की ओर भूमध्य रेखा से 30° 22' 40'' उत्तर से 33° 12' 40'' उत्तरी अक्षांश तथा 75° 45' 55'' पूर्व से 79° 04' 20'' पूर्वी रेखांश के मध्य स्थित है। इस पर्वतीय राज्य का क्षेत्रफल 55,673 वर्ग किलोमीटर (अर्थात् 37,03, 286 हैक्टेयर)है।

प्रश्न 2. हिमाचल प्रदेश की अन्तर्राष्ट्रीय सीमा के बारे में लिखिए।

उत्तर–हिमाचल प्रदेश के पूर्व में सीमावर्ती राष्ट्र तिब्बत है। जस्कर पर्वत श्रृंखला हिमाचल को तिब्बत से अलग करती है। हिमाचल के पूर्वी छोर में किन्नौर तथा उत्तर में लाहौल-स्पीति ज़िलों की सीमाएँ तिब्बत के साथ लगती हैं। राज्य का किन्नौर ज़िला अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर है।

प्रश्न 3. हिमाचल की आन्तरिक सीमाओं का वर्णन करें।

उत्तर–हिमाचल के स्पीति की उत्तरी तथा चम्बा ज़िला की उत्तर-पूर्व की सीमाएं जम्मू-कश्मीर के लद्दाख के साथ लगती हैं। हिमाचल के पश्चिम में चम्बा, कांगड़ा, ऊना, बिलासपुर और सोलन जिलों की सीमाएं पंजाब से लगती हैं। हिमाचल के दक्षिण में हरियाणा की सीमाएं सिरमौर से और पूर्व-दक्षिण में उत्तराखण्ड की सीमाएं शिमला, सिरमौर तथा किन्नौर ज़िलों के साथ लगती हैं।

प्रश्न 4. हिमाचल के बृहद् हिमालय की स्थिति का वर्णन करें।

उत्तर–बृहद हिमाचल की सबसे बड़ी पर्वतमाला जस्कर पर्वत शृंखला है। यह श्रृंखला सिन्ध और चिनाव नदी तट के मध्य स्थित है। इस पर्वत श्रेणी की चोटियां समुद्रतल से लगभग 5400 मी. से 6300 मी. तक की ऊंचाई पर हैं। जस्कर पर्वत शृंखला भीतरी हिमालययी ध्रुव की मुख्य पर्वत श्रेणी है।

प्रश्न 5. हिमाचल के बृहद् हिमालय के प्रमुख दर्रों तथा गांवों का वर्णन करें।

उत्तर–इस पर्वत शृंखला के प्रमुख शिखरों व दर्रों में शिला, लियोपरजियल, शिप्पकी-ला, मनीरंग, मुक्लिा, रानी सं दर्रा, गुमरंग (खिमेकुल) दर्रा, घुनसरंग दर्रा, परांग-ला-दर्रा, तंगलंग दर्रा, हंगरंग दर्रा आदि शामिल हैं। इस पर्वत श्रेणी की तलहटी में गेटे, किब्बर, हिक्किम, तंगयुड, बंगथंग, चांगो आदि कम जनसंख्या के गांव बसे हैं।

प्रश्न 6. हिमाचल में किस खण्ड को शीत मरुस्थल कहते हैं? इस क्षेत्र में पैदा होने वाली उपज का वर्णन करें।

उत्तर–स्पीति की काजा खण्ड की अधिकतर भूमि रेतीली और निर्जल है। काजा को शीत मरुस्थल अर्थात् बर्फानी रेगिस्तान कहा जाता है। इस पर्वत श्रेणी की भूमि कृषि योग्य नहीं है, फिर भी यहाँ सूखे मेवे-बादाम, अखरोट, नेवजा (चिलगोजा), चूली के साथ-साथ अंगूर, कुठ, हॉप्स, काला जीरा, केसर आदि की पैदावार होती है। कुछ -कुछ क्षेत्रों में तो आलू और सेब की फसलें भी होती हैं।

प्रश्न 7. मध्य हिमालय की स्थिति का संक्षेप में वर्णन करें।

उत्तर–मध्य हिमालय पर्वत शृंखला को **पांगी पर्वत श्रेणी** अथवा **पीर पंजाल** के नाम से पुकारते हैं। इस पर्वत श्रेणी की चोटियां समुद्र तल से लगभग 5100 मी. से 5700 मी. की ऊंचाई तक हैं। यह पर्वत श्रेणी कुल्लू को लाहौल-स्पीति से अलग करने के बाद चम्बा ज़िला में बड़ा भंगाल की पश्चिमी सीमा पर प्रवेश करती है।

प्रश्न 8. मध्य हिमालय के प्रमुख दर्रे कौन-कौन से हैं?

उत्तर– पांगी पर्वत श्रेणी का मध्य हिमालय पर्वत के मुख्य शिखरों व दर्रों में मणिमहेश, दागनीधार, बड़ा कंडा, सुरला हुडन, सैचु, पदरी, चतर दर्रा, चेनी दर्रा, मरहू दर्रा, दराटी, छेबिया दर्रा इत्यादि प्रमुख हैं।

प्रश्न 9. मध्य हिमालय की कृषि उपज तथा अन्य उत्पादों का वर्णन करें।

उत्तर–मध्य हिमालय पर्वत श्रेणी में रावी और चिनाव नदी घाटियों की उपजाऊ भूमि कृषि योग्य है। यहां गेहूँ, मक्की तथा दलहनी फसलों की पैदावार होती है। इनके अतिरिक्त आलू, बादाम, अखरोट, खुमानी, आड़ू, पलम, नाशपाती आदि नगदी फसलें भी होती हैं। भांगी पर्वत श्रेणी की घाटियों में विभिन्न प्रकार की बहुमूल्य वन्य औषधियां पैदा होती हैं। इन वादियों में देवदार, रई, कायल, बान, बुरांश, मौरू, खरेऊ आदि वृक्षों के घने वन पाए जाते हैं।

प्रश्न 10. ब्रह्म हिमालय की स्थिति का वर्णन करें।

उत्तर–ब्राह्म हिमालय पर्वत श्रेणी धौलाधार के नाम से प्रसिद्ध है। धौलाधार पर्वत श्रेणी ब्यास नदी के बाएँ तट से शुरू होकर उत्तर-पश्चिम की ओर बढ़ती हुई कुल्लू और मण्डी के मध्य उस स्थान पर सीमा निर्धारित करती है, जहाँ से यह पर्वत श्रेणी बड़ा भंगाल को छोड़कर मध्य हिमालय के साथ मिल जाता है तथा पश्चिम की ओर मुड़कर सबसे पहले बड़ा भंगाल की पश्चिमी सीमा पर चम्बा को छूती है।

प्रश्न 11. धौलाधार पर्वत श्रेणी के प्रमुख दर्रे कौन-कौन से हैं?

उत्तर–धौलाधार पर्वत श्रेणी की चोटियाँ समुद्रतल से लगभग 4200 मी. से 5100 मी. की ऊँचाई तक हैं। इस पर्वत श्रेणी के प्रमुख दर्रें कुण्डली दर्रा, तलंग दर्रा, भीमघसूत्री दर्रा, जालसू दर्रा, ब्लेणी दर्रा, मनकियानी दर्रा, इन्द्रहार दर्रा, तमशार दर्रा, चोलांग दर्रा आदि आते हैं।

प्रश्न 12. शिवालिक पर्वत शृंखला के अन्तर्गत कौन-कौन से क्षेत्र आते हैं?

उत्तर–शिवालिक पर्वत शृंखला रावी के पश्चिम से यमुना के पूर्वी भाग तक फैली है। इस पर्वत श्रेणी में चम्बा जिला व डलहौज़ी व भटियात, कांगड़ा ज़िला में बांटा जाता है। रिहलू, नूरपुर, धर्मशाला, पालमपुर, कांगड़ा, ज्वाली तथा ऊना व हमीरपुर ज़िला का पूर्वी तट तथा सिरमौर ज़िला के पांवटा साहिब, नाहन, काला अम्ब, बिलासपुर का नयनादेवी, मण्डी जिला का जोगिन्दर नगर, मण्डी, सरकाघाट, सुन्दरनगर, सोलन ज़िले के नालागढ़ तथा शिमला जिला के ठियोग शामिल हैं।

प्रश्न 13. सतलुज नदी का संक्षेप में वर्णन करें।

उत्तर–सतलुज का वैदिक नाम शतुद्र दिया गया है। शतुद्रु नदी का उल्लेख महाभारत में भी मिलता है। सतलुज के अन्य नामों में मुकसंग, सम्पू, जुगंटी, सुमुद्रंग, सुतृद्रा आदि हैं। सतलुज नदी कैलाश पर्वत के दक्षिणी में मानसरोवर अर्थात् मानतलाई झील (तिब्बत) से निकलती है। यहां से यह नदी हिमालय पर्वत की उच्च शृंखलाओं में बहती हुई शिपकी दर्रा पर हिमाचल में प्रवेश करती है।

प्रश्न 14. ब्यास नदी पर संक्षिप्त नोट लिखो।

उत्तर–ब्यास नदी अथवा ब्यास ऋग्वेद में ब्यास नदी को आर्जीकिया कहा गया है। ग्रीक इतिहासकार इसे हिफेसिस पुकारते हैं। ब्यास कुण्ड पर ऋषि ब्यास की आश्रम स्थली होने पर इसका नाम ब्यास पड़ा। ब्यास नदी का वर्तमान संस्कृत सम्मत नाम बिपाशा है। ब्यास नदी ब्यास कुण्ड से निकलती है। यह कुण्ड पीरपंजाल पर्वत शृंखला के रोहतांग दर्रे पर समुद्रतल से 3,960 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है।

प्रश्न 15. सतलुज नदी की सहायक नदियों के बारे में आप क्या जानते हैं?

उत्तर–किन्नौर ज़िले में सतलुज के दायीं ओर स्पीति, रोपा, पंजुर आदि खड्डें सतलुज की सहायक नदियां हैं। किन्नौर में सतलुज की सबसे बड़ी सहायक नदी स्पीति है, जो खॉब नामक स्थान पर सतलुज के साथ मिलती है।

प्रश्न 16. ब्यास नदी की सहायक नदियों का वर्णन करे।

उत्तर–कुल्लू के पूर्व की ओर से पार्वती, पिन, मलाणा, हुस्ला, सैंज और तीर्थन ब्यास नदी की सहायक नदियां हैं। ब्यास नदी की सहायक नदी पार्वती है। यह भूईन में ब्यास के साथ मिल जाती है। स्पीति और कुल्लू की सीमा रेखा निर्धारित करने वाली शृंखला शुपाकुणी के पश्चिमी भाग से सैंज खड्ड निकलकर लारजी में ब्यास के साथ मिलती हैं।

प्रश्न 17. चिनाव नदी का संक्षेप में वर्णन करें।

उत्तर–चिनाव नदी चन्द्रा और भागा दो नदियों के मिलाप से बनी है। ये दोनों नदियां लाहौल उपमण्डल में बारालाचा दर्रे से निकलती है। चन्द्रा नदी चन्द्रताल झील से निकलती है, जबकि भागा नदी सूरजतल झील से निकलती है। यह दोनों नदियां बारालाचा दर्रे से विपरीत दिशा में बहती हुई लगभग 65 किलोमीटर का मार्ग तय करने के बाद तांडी नामक स्थान पर

मिल कर चन्द्रभागा नदी अर्थात् चिनाब नदी को जन्म देती हैं।

प्रश्न 18. चिनाब की सहायक नदियों की चर्चा कीजिए।

उत्तर–चिनाब नदी की सहायक नदियाँ सोनापानी, सेशू आदि हिमखण्डों से निकलती हैं। भागा की सहायक नदियां योच नाला, जस्कर चु, मीलंग, ग्यूलंग आदि हैं। चन्द्रभागा नदी की सहायक नदियों में मियार नाला भी प्रमुख है, जो उदपुर में चन्द्रभागा के साथ मिल जाता हैं। छेबिया और कालिछो नाले त्रिलोकीनाथ में चँन्द्रभागा के साथ मिलते हैं।

प्रश्न 19. रावी नदी की सहायक नदियों का संक्षेप में वर्णन करें।

उत्तर–रावी नदी की प्रमुख सहायक नदियां बुहुल तथा टुण्डा हैं। हड़सर में रावी के साथ मिल जाती हैं। हिमालय पर्वत श्रृंखला के कालिशा दर्रे से दूसरी बड़ी सहायक नदी टुण्डा निकलती है। यह नदी टुण्डा घाटी में बहने के बाद उलान्स में रावी के साथ मिलती है। रावी नदी के सबसे बड़ी सहायक नदी सिऊल है। यह भलेई के समीप तलेरू नामक स्थान पर रावी नदी में मिलती हैं।

प्रश्न 20. रावी नदी पर संक्षिप्त नोट लिखिए।

उत्तर–रावी नदी का संस्कृत शास्त्रीय नाम ईरावती है। यूनानी इतिहासकार एलैग्जैंडर ने रावी को हाईड्रायोट्स के नाम से पुकारा है। यह नदी धौलाधार पर्वत श्रृंखला के बड़ा भंगाल में भादल और टंट गुरु हिमखण्डों से निकलती है। रावी धौलाधार को पीरपंजाल से अलग करती हुई बजोल नामक स्थान में चम्बा जिले में प्रवेश करती है। चम्बा में रावी नदी प्रमुख नदी के रूप में प्रवाहित होती है।

प्रश्न 21. यमुना नदी का संक्षेप में वर्णन करें।

उत्तर–यमुना नदी का वैदिक नाम यमुना तथा संस्कृत शास्त्रीय नाम कालिंदी है। यमुना सूर्य पुत्री होने पर यम की बहन है। यमुना को स्थानीय बोली में जमना भी पुकारते हैं। यह नदी उत्तराखण्ड के कलिन्द पर्वत से यमुनौत्री नामक स्थान से निकलती है। यह नदी गढ़वाल जनपद से प्रवाहित होकर जौनसार -बाबर को पोषित करती हुई सिरमौर जिला के खोदर माजरी में हिमाचल प्रदेश में प्रवेश करती है।

प्रश्न 22. यमुना की सहायक नदियों का संक्षेप में वर्णन करें।

उत्तर–यमुना की सबसे बड़ी सहायक नदी तौंस है, जो यमुनौत्री पर्वत श्रृंखला की विपरीत घाटी से निकलती है। तौंस की दो प्रमुख सहायक खड्डें रूपीण और शुपीण जौनसार-बाबर के नौटवाड़ में मिलती हैं। यमुना की सहायक नदी तौंस सिरमौर जिला के पूर्ववर्ती नालों और खड्डों को साथ लेकर खोदर माजरी में प्रबल वेग के साथ यमुना में मिल जाती हैं।

प्रश्न 23. मणिमहेश झील पर संक्षिप्त नोट लिखिए।

उत्तर–यह झील से 100 कि०मी० की दूरी पर भरमौर उपमण्डल में स्थित है। इस झील की समुद्रतल से ऊँचाई 4200 मीटर है। इस झील का अनुमानित व्यास एक कि०मी० अर्थात् 2 हैक्टेयर हैं। यहाँ हर वर्ष कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर श्रद्धालु मणिमहेश यात्रा पर आते हैं।

प्रश्न 24. हिमाचल की खजियार झील का संक्षेप में वर्णन करें।

उत्तर–यह झील चम्बा से 27 कि०मी० दूर डलहौजी उपमण्डल में स्थित है। यहाँ खज्जीनगर का मन्दिर है। यह झील समुद्रतल से 1920 मीटर की ऊँचाई पर है। इस झील के अनुपम सौन्दर्य के कारण खजियार को हिमाचल का मिनी स्विट्ज़रलैंड के नाम से विभूषित किया गया है। इस झील का क्षेत्रफल 5 हैक्टेयर है।

प्रश्न 25. हिमाचल की रिवालसर झील के बारे में आप क्या जानते हैं?

उत्तर–यह झील बौद्ध, हिन्दू और सिक्ख तीन धर्मों की त्रिवेणी के नाम से विख्यात है। यह झील समुद्रतल से 1320 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। यहाँ प्रसिद्ध बौद्ध मेला छेश्रू मनाया जाता है। रिवालसर झील तिब्बती समुदाय में "छो पद्मा" के नाम से पुकारी जाती है। सन् 1685 ई. को गुरु गोबिन्द सिंह रिवालसर झील देखने गए थे। इसे तैरते टापू की झील भी कहा जाता है। इस झील का व्यास 3 हैक्टेयर है।

प्रश्न 26. हिमाचल की पराशर झील का वर्णन करें।

उत्तर–महर्षि पराशर के नाम से मशहूर यह झील समुद्रतल 2600 मीटर की ऊँचाई पर है। यह झील मण्डी से 40 कि०मी० की दूरी पर है। इस झील के साथ पराशर ऋषि का पैगोडा शैली से बना भव्य मन्दिर है। इस झील की परिधि

...भग आधा कि०मी० है।

प्रश्न 27. सुन्दरनगर झील का वर्णन करें।

उत्तर–सुन्दर नगर झील कृत्रिम झील पण्डोह नामक स्थान पर ब्यास नदी पर बांध बनने के कारण अस्तित्व में आई है। ...नदी के जल प्रवाह को नहरों व सुरंगों द्वारा पण्डोह के समीप सलापड़ नामक स्थान पर सतलुज नदी के साथ मिलाया ...है। यह हिमाचल की सबसे छोटी कृत्रिम झील है। इसकी लम्बाई 14 कि०मी० है।

प्रश्न 28. श्री रेणुका झील के बारे में आप क्या जानते हैं?

उत्तर–यह झील समुद्रतल से 660 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। यह झील नाहन उपमण्डल से 37 कि०मी० की दूरी ...है। यह हिमाचल की सबसे बड़ी प्राकृतिक झील है। इस झील का व्यास लगभग 5 हैक्टेयर है। इस झील के समीप ...शुराम के प्यार-दुलार की स्मृति बताई जाती है। यह झील हिमाचल प्रदेश का एकमात्र ऐसा देवस्थल है, जहां देवोत्थान ...कादशी (कार्तिक मास) से पांच दिन तक अन्तर्राष्ट्रीय श्री रेणुका जी का मेला मनाया जाता है।

प्रश्न 29. गोबिन्द सागर झील का संक्षेप में वर्णन करें।

उत्तर–यह हिमाचल में सबसे बड़ी मानव निर्मित कृत्रिम झील है । यह झील भाखड़ा बांध निर्माण के कारण अस्तित्व ...आई है। यह झील लगभग 1687 हैक्टेयर भूमि पर फैली है। इस झील की अनुमानित लम्बाई 168 कि०मी० है। यह ...त्रिम झील समुद्रतल से 673 मीटर की ऊँचाई पर है।

प्रश्न 30. मणिकर्ण चश्मे पर नोट लिखिए।

उत्तर–ये गर्म पानी के चश्मे पार्वती नदी के दाएँ तट पर हैं। इन चश्मों का (क्वथनांक) ऊबालांक 45° (C) से 97° ...C) तक है। इन चश्मों में गर्म पानी की कुल कठोरता 7.7 तथा स्थायी 5.7 आंकी गई है। मणिकर्ण गर्म पानी के चश्मे कुल्लू ...45 किलोमीटर तथा भुन्तर से 32 किलोमीटर दूर हैं।

प्रश्न 31. तत्तापानी के गर्म चश्मे पर संक्षिप्त नोट लिखिए।

उत्तर– ये गर्म पानी के चश्मे मण्डी जिला के करसोग उपण्डल में शिमला जिला के सुन्नी तहसील के समीप तत्तापानी में ...ते हैं। ये चश्मे सतलुज नदी के दाएँ तट पर समुद्रतल से 656 मीटर की ऊंचाई पर हैं। इन गर्म पानी के चश्मों की कठोरता 5.7 ...ी गई है। तत्तापानी गर्म पानी के चश्मे शिमला से 51 किलोमीटर तथा नालदेहरा से 30 किलोमीटर दूर हैं।

2. हिमाचल का प्राचीन इतिहास

प्रश्न–वैदिक कालीन जनजातियों पर संक्षिप्त नोट लिखिए।

उत्तर–वैदिक ग्रंथों में हिमाचल की दास, दस्यु तथा निषाद आदि जनजातियों का उल्लेख मिलता है। ऋग्वेद के ...नुसार दास, दस्यु, पिशाच, किरात, असुर, आर्जीक, गन्धर्व, गन्धार आदि हिमालय के पर्वतीय क्षेत्रों में आदिम कबीले थे। ...वैदिक काल में दास, असुर, व्रत्स आदि शिवालिक की पहाड़ियों में बस गए थे, जिन्हें आर्यों के साथ सामना करना पड़ा ...क्योंकि ये अनार्य जनपदों के कबीले थे।

प्रश्न 2. 'जन' से क्या अभिप्राय है?

उत्तर–प्राचीन काल में सर्वप्रथम परिवारों का उदय हुआ जो स्वयं को किसी पूर्वज विशेष की सन्तान मानते थे। ऐसे ...वारों के समूह को जन कहते थे। प्रत्येक जन में अनेक कुटुम्ब होते थे। अत: एक ही जाति पुरुष से उत्पन्न विभिन्न कुटुम्बों ...समुदाय का नाम जन था। शुरू-शुरू में इन जनों का कोई निश्चित तथा स्थायी स्थान नहीं था और वे एक स्थान से दूसरे ...न तक घूमा करते थे।

प्रश्न 3. खस जनजाति पर संक्षिप्त नोट लिखें।

उत्तर–पुराणों तथा महाकाव्यों में 'खस' जनजाति का उल्लेख भी मिलता है। इन लोगों का मूल स्थान खसदेश था, जो ...र-पश्चिम राज्यों तथा नेपाल के बीच स्थित था। वराहमिहिर को वृहत संहिता में कुलुतों को खस कहा गया है जो कुल्लू ...के निवासी थे । वर्तमान हिमाचल में खस जनजाति के लोग शिमला, सिरमौर, किन्नौर आदि में रहते हैं।

प्रश्न 4. प्राचीन काल में जनपद कितने प्रकार के थे?

उत्तर–प्राचीन जनपद दो प्रकार के होते थे–एक राजतंत्रीय और दूसरा गणाधीन अथवा गणतंत्रीय। अधिकांश जनपदों

की सत्ता क्षत्रियों के हाथों में थी। राजतंत्रीय जनपद में क्षत्रिय का नाम तथा निवासियों का नाम भी जनपद के ही नाम पर होता था। जनपदों में अन्य जातियों तथा वर्णों के लोग भी रहते थे परन्तु राजसत्ता क्षत्रियों के हाथ में ही रहती थी। जनपदों में कम्बोज, गान्धार, मद्र आदि प्रमुख जनपद थे। राज जनपद में जहां प्रभुसत्ता एक व्यक्ति में केन्द्रित रहती थी, वहां गणाधीन संघ में वह सम्पूर्ण गण में निहित थी अर्थात् गणतंत्र जनपदों में जनता शासन की भागीदार होती थी।

प्रश्न 5. मद्र जनपद पर संक्षिप्त नोट लिखिए।

उत्तर–मद्र जनपद का उल्लेख उत्तर वैदिक साहित्य में मिलता है। ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार उत्तर मद्र दूर हिमालय में उत्तर कुरु का पड़ौसी देश था। सम्भवत: दक्षिणी मद्र की सीमायें स्यालकोट के आस-पास कहीं रही हों। मद्रों की राजधानी साकल (स्यालकोट) थी, जो आपगा (वर्तमान अयक) नदी के किनारे स्थित है।

प्रश्न 6. त्रिगर्त राज्य की स्थापना किस ने की? त्रिगर्त के शासक सुशर्म का संक्षिप्त वर्णन करें।

उत्तर–त्रिगर्त का प्रथम राजा भूमि चन्द्र था। वंशावली के अनुसार 234वां राजा सुशर्मा था। उसने कौरवों के पक्ष में लड़कर महाभारत के युद्ध में भाग लिया था। महाभारत के युद्ध में कौरवों की हार के बाद सुशर्म चन्द्र ने कांगड़ा के नगरकोट में अपनी राजधानी स्थापित की और वहां एक किले का निर्माण करवाया। विष्णु पुराण में इस का उल्लेख औदुम्बरों और कुलतों के साथ मिलता है।

प्रश्न 7. ह्यूनसांग ने त्रिगर्त के बारे में क्या लिखा है?

उत्तर–ह्यूनसांग के अनुसार जालन्धर त्रिगर्त राज्य का दूसरा नाम तथा उस की राजधानी थी। उसके मतानुसार इस राज्य की पूर्व से पश्चिम की 167 मील लम्बाई और उत्तर से दक्षिण को 133 मील चौड़ाई थी। यदि ऐसा माना जाये तो जालन्धर राज्य के भीतर उत्तर की ओर से चम्बा , पूर्व की ओर से मण्डी तथा सुकेत और दक्षिण पूर्व की ओर से शतुद्र नामक राज्य भी शामिल रहे होंगे।

प्रश्न 8. पाल शासक धर्म पाल की उपलब्धियों का वर्णन करें।

उत्तर–बंगाल के पाल वंश के शासक धर्म पाल (770-810) ने छोटे-छोटे राज्यों को जीत कर अपनी सीमा पश्चिम तक बढ़ा ली। इस विजय के पश्चात् उसने कन्नौज के शासक इन्द्र युद्ध को हरा कर उसके स्थान पर चक्रयुद्ध को बिठाया और इस खुशी में उसने कन्नौज में एक दरबार किया, जिसमें अन्य राजाओं के अतिरिक्त कीरा, कुरु और मद्र आदि देशों के राजा भी थे।

प्रश्न 9. औदुम्बर गण का संक्षिप्त वर्णन करें।

उत्तर–औदुम्बर गण जालन्धर के निकटवर्ती था। महाभारत में औदुम्बरों का वर्णन मद्रों के साथ आता है। औदुम्बर देश कहीं रावी और व्यास नदियों की ऊपरी दूनों में स्थित था। पठानकोट व नूरपूर आदि भाग भी औदुम्बर देश में ही शामिल थे। औदुम्बर स्वयं ऋग्वेद के तीसरे सूक्त के रचयिता विश्वामित्र के वंशज मानते थे।

प्रश्न 10. कुलूत जनपद पर संक्षिप्त नोट लिखिए।

उत्तर–त्रिगर्त जनपद के साथ लगता कुलूत् नामक जनपद था। इस जनपद के एक ओर औदुम्बर देश था और दूसरी ओर कुलिन्द जनपद। यह जनपद व्यास नदी की ऊपरी घाटी में फैला हुआ था। कुलूत् जनपद का वर्णन रामायण, महाभारत, वृहतसंहिता, मार्कण्डेयपुराण और विष्णुपुराण में मिलता है, जिसमें इसे उत्तर दिशा में स्थित बताया गया है। ऐतिहासिक तथ्यों से सिद्ध होता है कि काश्मीर और त्रिगर्त को छोड़ कर कुलूत् सब से प्राचीन जनपद था।

प्रश्न 11. ह्यूनसांग ने कुलूत जनपद के बारे में क्या लिखा है?

उत्तर–ह्यूनसांग जालन्धर में चार महीने तक ठहरने तथा अध्ययन करने के बाद कुलूत गया। उसने कुलूत प्रदेश को जालन्धर में 177 मील उत्तर पूर्व की ओर कहा है, जो निश्चय ही आज का कुल्लू हो सकता है। ह्वेनत्सांग ने कुल्लू का घेरा 500 मील बताया है, जो आज की सीमाओं से कहीं अधिक है।

प्रश्न 13. कुल्लू के शासक भूपपाल पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए।

उत्तर : भूपपाल के समय सुकेत ने कुल्लू पर आक्रमण किया। सुकेत के इतिहास के अनुसार सुकेत के राजा का नाम बीर सेन था। जनश्रुति के अनुसार आज के मण्डी और सुकेत कहलाये जाने वाले भाग किसी समय कुल्लू राज्य के भाग थे।

सुकेत के राजा ने सेना लेकर परौल, लांग, रूपी, सारी और धुमरी पर आक्रमण किया। भूप पाल ने इस का विरोध किया, परन्तु लड़ाई में हार गया और बन्दी बना दिया गया। बाद में उसे इस शर्त पर छोड़ दिया गया कि वह सुकेत का राज कर देगा।

प्रश्न 14. प्राचीन चम्बा जनपद के बारे में संक्षेप में वर्णन करें।

उत्तर : चम्बा का प्राचीन नाम चम्पा या चम्पक था। पुरा लेखों तथा वंशावली के आधार पर इस की स्थापना छठी शताब्दी के मध्य में हुई मानी जाती है। ऐसा माना जाता है कि कभी चम्बा मौर्य, कुषाण और गुप्त साम्राज्यों के अधीन अवश्य रहा होगा।

प्रश्न 15. चम्बा के शासक मेरूवर्मन की प्रमुख उपलब्धियों का वर्णन करें।

उत्तर : मेरू वर्मन ने बहुत से मन्दिर बनाये। ये मन्दिर आज भी भरमौर में विद्यमान हैं। इनमें उल्लेखनीय मणिमहेश, लक्षणादेवी, गणेश और नरसिंह हैं। उसने सूर्य मुख मन्दिर भी बनाया था। उसने इस मन्दिर के कुशल संचारण के लिये भूमि भी दान में दी थी।

प्रश्न 16. चम्बा के शासक साहिल वर्मन की उपलब्धियों का वर्णन करें।

उत्तर : चम्बा के राजाओं में सबसे प्रसिद्ध और प्रतापी राजा साहिल वर्मन माना जाता है। उसने रावी की निचली घाटी को जीतकर अपने राज्य में मिला लिया और अपनी राजधानी को ब्रह्मपुर से बदल कर आज के चम्बा नगर में स्थापित कर लिया। इस राजा को गद्दी पर बैठने के पश्चात् ब्रह्मपुर की सेनाओं ने फिर से कुल्लू पर आक्रमण किया।

प्रश्न 17. चम्पा नगर की स्थापना किस प्रकार हुई?

उत्तर : एक बार जब राजा साहिल वर्मन निचली रावी घाटी में विजय अभियान पर था तो रानी, उसकी पुत्री चम्पावती और एक योगी चरपट नाथ भी उसके साथ थे। जब वे वहां पहुंचे जहां आज का चम्बा नगर है तो चम्पावती वहां के प्राकृतिक सौंदर्य से बहुत प्रभावित हुई। उसने अपने पिता साहिल वर्मन से वहां पर एक नगर बसाने का अनुरोध किया। राजा को भी यह स्थान बहुत पसन्द आया। इसके बाद राजा ने अपनी बेटी चम्पावती के नाम से इस नगर को बसाया और इसका नाम चम्पा रखा। समय बीतने के साथ इसे चम्पा से चम्बा कहा जाने लगा।

प्रश्न 18. कुलिन्द जनपद पर संक्षिप्त नोट लिखें।

उत्तर : कुलिन्द जनपद ब्यास नदी के ऊपरी भाग से लेकर युमना नदी तक हिमालय के पर्वतीय प्रदेश में फैला हुआ था। इसके पश्चिम में त्रिगर्त तथा कुलूत जनपद स्थित थे। दक्षिण में इनकी सीमा अम्बाला, सहारनपुर और सूगह तक थी। कनिंघम का यह मत है कि सूगह इन की राजधानी थी। पूर्व में गढ़वाल का कुछ भाग इसी जनपद में आता था।

3. मध्यकालीन हिमाचल रियासतें

प्रश्न 1. राजपूत कौन थे?

उत्तर - कुछ इतिहास कार राजपूतों को विभिन्न विदेशी जातियों का सम्मिश्रण समझते हैं। उनका मानना है कि छठी शताब्दी से पूर्व शक, कुषाण, हूण, गुर्जर आदि विदेशी जातियां पश्चिमोत्तर प्रदेशों में मार्ग से भारत के उत्तर-पश्चिमी भाग, पंजाब और वर्तमान राजपूताना में आकर बसने लगी थीं। धीरे-धीरे उन पर भारतीय संस्कृति की छाप पड़ने लगी और अन्त में हिन्दू समाज में घुल मिल गई। इन विदेशी जातियों के लोगों को, जो उच्च वर्ग के थे और जिनका व्यवसाय एकमात्र युद्ध ही था, क्षत्रिय वर्ण प्रदान कर दिया गया। यही लोग बाद में राजपूत के नाम से पुकारे जाने लगे।

प्रश्न 2. राजपूत काल से क्या अभिप्राय है?

उत्तर - सबसे पहले राजपूत राजपूताना में बसे। उसके बाद वे पंजाब, उत्तर प्रदेश और आगे बिहार तक फैल गये और अन्त में काश्मीर, उत्तर-पश्चिमी हिमालय तथा मध्य हिमालय की भीतरी घाटियों से बढ़ कर वहां के स्वामी बन गये। आठवीं शताब्दी से लेकर बारहवीं शताब्दी तक के इन चार सौ वर्षों के काल में भारत की राजसत्ता राजपूतों के हाथों रही। इसी कारण भारतीय इतिहास का यह काल "राजपूत काल" के नाम से जाना जाता है।

प्रश्न 3. मध्य काल में पहाड़ी क्षेत्र में क्या-क्या परिवर्तन देखने को मिलता है?

उत्तर - मध्य काल में जालन्धर-त्रिगर्त राज्य के बंटवारे से छोटे-छोटे राज्य जैसे गुलेर, जसवां, सिब्बा, दातारपुर आदि राज्यों का जन्म हुआ। इसी प्रकार कुमाऊं-गढ़वाल का विशाल कल्चयूरी राज्य भी बंटकर काली कुमाऊं, डोटी, अस्कोट आदि अनेकों ही छोटे-छोटे भागों में विभक्त हो गया। इस प्रकार जब बड़े-बड़े राज्यों की सीमाओं का खण्डन होने लगा तो मैदानी भागों से आये राजपूतों ने इन निर्बल और शक्तिहीन राजाओं को अपने अधिकार में लेकर बल पकड़ना शुरू किया।

प्रश्न 4. महमूद गजनवी के नगरकोट पर आक्रमण का वर्णन करें।

उत्तर - 1009 ई. में महमूद गजनवी ने नगरकोट के किले पर आक्रमण किया। उस समय कांगड़ा का राजा जगदीश चन्द था। वह किले की रक्षा नहीं कर सका और थोड़े से संघर्ष के बाद ही उसने आत्म समर्पण कर दिया। महमूद गजनवी यहां से बड़ी यात्रा में धन-दौलत लूट कर ले गया।

प्रश्न 5. महमूद गज़नवी के वंशज के सुलतान इब्राहिम के भारत आक्रमण का वर्णन करें।

उत्तर - 1059 ई. में गजनवी की गद्दी पर महमूद के ही वंश का "इब्राहीम" सुलतान बना, जिसने 1099 ई. तक शासन किया। 1070 ई. में उसने जालन्धर पर आक्रमण किया और उस पर अधिकार कर लिया। ऐसा लगता है कि 1070 ई. में ही कटोच राजाओं के हाथ से जालन्धर सहित मैदानी भाग निकल गया। उस समय त्रिगर्त का राजा जगदेव चन्द्र था। इस के बाद सुरक्षा के कारणों से वह अपनी राजधानी को जालन्धर से बदल कर पर्वतीय नगर नगरकोट ले गया।

प्रश्न 6. मुहम्मद गौरी के पृथ्वी राज चौहान से संघर्ष का वर्णन करें।

उत्तर - 1171 ई. में पृथ्वीराज चौहान ने दिल्ली के तोमर राज्य पर अधिकार कर लिया। 1173 में मुहम्मद गौरी ने गजनवी के राज्य पर अधिकार करने के बाद 1175 ई. से उसने भी भारत पर अपने आक्रमण आरम्भ किये। 1191 से 1192 ई. तक के काल में उसके युद्ध पृथ्वीराज चौहान के साथ भी हुए। 1191 की तराईन की पहली लड़ाई में पृथ्वी राज की विजय हुई, यहां तक कि एक बार तो मुहम्मद गौरी को अपनी जान के लाले पड़ गये परन्तु 1192 ई. में तराईन की दूसरी लड़ाई में पासा ही पलट गया और पृथ्वी राज लड़ाई में मारा गया। ऐसा माना जाता है कि घग्घर नदी के तट पर जो लड़ाई मुहम्मद गौरी के साथ हुई, उसमें कांगड़ा के कटोच राजा ने भी प्रतिष्ठा से अपना उत्तरदायित्व निभाया था।

प्रश्न 7. मुहम्मद तुगलक के नगरकोट आक्रमण का वर्णन करें।

उत्तर - मुहम्मद तुगलक ने 1335 ई. में नगरकोट पर आक्रमण किया। नगरकोट के राजा पृथ्वी चन्द्र की पराजय हुई और उसने मुहम्मद तुग़लक की अधीनता स्वीकार कर ली। सुलतान ने उसको संतुष्ट रखने के उद्देश्य से गढ़ उसी को ही लौटा दिया और वहां के सुविख्यात ज्वालामुखी मन्दिर को यथापूर्ण सुरक्षित रहने दिया। इसके बाद उस की सेना आगे बढ़ी और अन्य हिमालय प्रदेशीय राज्यों पर आक्रमण किया। इसे इब्नबतूता ने कराचल और कुछ अन्य लेखकों ने हिमाचल का नाम दिया है।

प्रश्न 8. फिरोज़शाह तुग़लक के नगरकोट आक्रमण का वर्णन करें।

उत्तर - दिल्ली के सुलतान फिरोज़शाह तुग़लक ने ज्वालामुखी मन्दिर के धन को प्राप्त करने की लालसा से उसने 1361 ई. में नगरकोट पर आक्रमण कर दिया। नगरकोट के राजा ने किले का दरवाज़ा बन्द कर लिया और एक सुरक्षित स्थान से वह लड़ता रहा। लगभग छ: महीने तक यह लड़ाई चलती रही। इसी बीच सुलतान ने ज्वालामुखी के मन्दिर को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया।

प्रश्न 9. शेरशाह सूरी के नगरकोट आक्रमण का वर्णन करें।

उत्तर - धर्म चन्द के शासन काल में शेरशाह सूरी ने 1540 ई. में दिल्ली पर अधिकार किया। इस के बाद ही उसने अपने सेना अध्यक्ष ख्वास खां को नगरकोट पर आक्रमण करने के लिऐ भेजा। कहते हैं कि उसने किले पर अधिकार कर लिया और मन्दिरों और मूर्तियों को तोड़ डाला। किन्तु लगता है कि वहां अधिक दिन तक उसका अधिकार नहीं रहा और कटोच राजा का इस पर पुन: प्रभुत्व स्थापित हो गया।

प्रश्न 10. अकबर ने मनकोट किले पर किस प्रकार अधिकार किया?

उत्तर - 1557 ई. में सिकन्दर शाह सूर ने पहाड़ों से उतर कर पंजाब में छापे मारने आरम्भ कर दिए। अकबर ने

फिर उस का पीछा किया, जिसके फलस्वरूप सिकन्दर ने अपने-आप को नूरपूर और पठानकोट के बीच स्थित मनकोट नामक दुर्ग में बन्द कर लिया। छः मास तक अकबर द्वारा मनकोट दुर्ग का घेराव करने के बाद सिकन्दर शाह ने आत्मसमर्पण कर दिया और मनकोट का किला अकबर के हाथ आ गया। सम्भवतः कांगड़ा के राजा धर्म चन्द ने अकबर के इस अभियान में साथ दिया था।

प्रश्न 11. अकबर तथा कांगड़ा के राजा जयचन्द के सम्बन्धों की चर्चा कीजिए।

उत्तर - 1570 ई. में ही जयचन्द कांगड़ा का राजा बना। किसी कारण अकबर जयचन्द के व्यवहार से रुष्ट हो गया और उसने राजा को दिल्ली बुलाया। उसने शाही हुक्म की तामील करने में ही अपना भला समझा और जाते समय अपने नाबालिग पुत्र विधि चन्द को अपने ही वंशज के जसवां के राजा गोविन्द चन्द की देख-रेख में सौंप गाया और स्वयं अकबर को मिलने दिल्ली चला गया। अकबर ने उसे बन्दी बना लिया।

प्रश्न 12. कांगड़ा के शासक विधि चन्द के अकबर के विरुद्ध विद्रोह का वर्णन करें।

उत्तर - जय चन्द की मृत्यु 1585 ई. के पश्चात् विधि चन्द कांगड़ा की गद्दी पर बैठा। उस समय मुग़लों के आधिपत्य से पहाड़ी राजाओं के भीतर एक असन्तोष की लहर चली आ रही थी। विधिचन्द ने इसका लाभ उठाया तथा उन को संगठित करके और उनका नेतृत्व करके मुग़ल शासन के विरुद्ध 1588-89 ई. में विद्रोह कर दिया। अकबर ने इस विद्रोह को दबाने के लिये अपने दूध-भाई जैन खां कोका को एक भारी सेना दे कर कांगड़ा की ओर भेजा। वह पठानकोट की ओर से कांगड़ा की ओर बढ़ा और सतलुज तक बढ़ता गया। पठानकोट और सतलुज के बीच वाले भाग के सभी राजाओं ने अकबर की प्रभुसत्ता को मान लिया।

प्रश्न 13. कांगड़ा के शासक त्रिलोक चन्द के जहांगीर से संघर्ष का वर्णन करें।

उत्तर - जब जहांगीर गद्दी पर बैठा तो उस समय इनमें कांगड़ा का राजा त्रिलोक चन्द था। जहांगीर ने गुप्त रूप से आदेश दिया कि त्रिलोक चन्द को पकड़ कर बन्दी बना लिया जाए। जब राजा को पता चला तो वह अपने दो तीन साथियों सहित वहां से भाग निकला। जहांगीर ने एक टोली को राजा का पीछा करने के लिये भेजा। इस सैनिक टोली की उससे आनन्दपुर के निकट कीर्तपुर में मुठभेड़ हो गई, जिसमें राजा त्रिलोक चन्द लड़ते-लड़ते मारा गया।

प्रश्न 14. जहांगीर ने किस प्रकार कांगड़ा के किले पर अधिकार किया?

उत्तर - सितम्बर 1617 में राजकुमार खुर्रम (शाहजहां) की सिफारिश पर जहांगीर ने सूरजमल को कांगड़ा भेजा। उसकी सहायता के लिये साथ में मुहम्मद तकी को भेजा गया परन्तु उस ने मुहम्मद तकी के साथ झगड़ा कर लिया। इस के पश्चात् सूरजमल ने सम्राट् के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। जहांगीर ने राजा विक्रमजीत के नेतृत्व में एक भारी सेना दे कर सूरजमल के विद्रोह दबाने तथा कांगड़ा के दुर्ग पर अधिकार करने के लिये भेजा। सूरजमल की हार हुई और वह वहां से चम्बा की ओर भाग गया, जहां उसकी 1619 में मृत्यु हो गई। इस के बाद मुग़ल सेनाओं ने 5 सितम्बर 1619 में कांगड़ा दुर्ग को घेर लिया। अन्ततः एक वर्ष दो मास के पश्चात् 16 नवम्बर 1620 को किला मुग़लों के हाथ में आ गया।

प्रश्न 15. कांगड़ा के शासक चन्द्रभान चन्द के मुग़लों के साथ संघर्ष का वर्णन करें।

उत्तर - राजकुमार चन्द्रभान चन्द 1627 में गद्दी पर बैठा। उस समय शाहजहां भी मुग़ल सम्राट् बन चुका था। चन्द्रभान चन्द ने मुग़लों के विरुद्ध युद्ध-अभियान जारी रखा। उस ने छापे मार कर नगरकोट में स्थित मुग़ल सेनाओं को परेशान कर दिया और मुग़ल क्षेत्र में लूट-मार करता रहा। वर्षों के छापामार युद्ध के बाद औरंगजेब के शासनकाल में दिल्ली से इस विद्रोह को दबाने के लिये एक भारी सेना भेजी गई और 1660 में चन्द्र भान चन्द पकड़ा गया और दिल्ली में उसे बन्दी बना लिया गया।

प्रश्न 16. कांगड़ा के शासक घमण्ड चन्द की उपलब्धियों का वर्णन करें।

उत्तर - घमंड चन्द ने गद्दी पर बैठते ही एक शक्तिशाली सैन्य दल का निर्माण किया और सेना में उस ने राजपूत, अफ़गान और रोहेलों को भर्ती किया। इसकी सहायता से उस ने कटोच राज्य के समस्त पुराने इलाकों पर अधिकार कर लिया। केवल कांगड़ा का किला बचा रहा, जो मुग़ल नवाब सईफ अली खां के अधिकार में रहा। इसके बाद उसने पहाड़ी राजाओं के साथ युद्ध छेड़ कर गुलेर, जसवां, सिब्बा और दातारपुर के राजाओं को हरा कर अपने अधीन कर

लिया। कुटलैहड़ पर आक्रमण करके उसके आधे भाग को अपने राज्य में मिला लिया। फिर कुल्लू के राजा टेढ़ी सिंह के विरुद्ध 1755 ई. में युद्ध की घोषणा कर के उस पर भी अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया।

प्रश्न 17. जसवां राज्य की स्थापना पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए।

उत्तर - 1070 ई. में सुरक्षा के कारणों से त्रिगर्त के राजा अपनी राजधानी को जालन्धर से उठा कर नगरकोट ले गये और पूरी एक शताब्दी तक संगठित रूप से शासन करते रहे परन्तु 1170 ई. में कांगड़ा के राजा पद्म चन्द के छोटे भाई पूर्व चन्द ने अपने भाई से अलग होकर होशियारपुर की जसवां दून में अपने लिये एक पृथक् राज्य की स्थापना की। होशियापुर का जिला प्राचीन काल में त्रिगर्त राज्य का एक ही भाग था।

प्रश्न 18. गुलेर राज्य की स्थापना किस प्रकार हुई?

उत्तर - एक दिन कांगड़ा का राजा हरि चन्द हरसर की ओर शिकार करने गया और जंगल में अपने साथियों से अलग हो कर और अपने घोड़े सहित एक कुएं में गिर गया। एक राहगीर ने कुएं के पास जा कर राजा को बाहर निकाल दिया। जब राजा का पता न चला तो उसके छोटे भाई धर्म चन्द ने कांगड़ा के सिंहासन को संभाल लिया और हरि चन्द की रानियां सती हो गईं। कई दिनों के बाद जब राजा हरि चन्द सही सलामत घर लौट आया तो उसके भाई कर्म चन्द के राजा गद्दी छोड़नी चाही परन्तु इस पर राजा सहमत न हुआ। इसलिये छोटा भाई कांगड़ा की गद्दी पर बना रहा और बड़े भाई हरि चन्द ने गुलेर में जा कर नये राज्य की स्थापना 1405 ई. में की।

प्रश्न 19. गुलेर के शासक रूप चन्द के जहांगीर से सम्बन्धों की चर्चा कीजिए।

उत्तर - गुलेर के सभी राजाओं में रूप चन्द बहुत योग्य और प्रसिद्ध था। इसके मुगलों के साथ बहुत अच्छे संबंध थे। मुग़ल सम्राट् जहांगीर ने जब 1620 ई. में दोबारा नगरकोट पर आक्रमण किया तो रूप चन्द ने भी मुग़ल सेना की कांगड़ा अभियान पर सहायता की। 16 नवम्बर 1620 ई. को उन्होंने कांगड़ा के किले पर अधिकार कर लिया। जहांगीर ने प्रसन्न होकर रूप चन्द को 1621 ई. में एक हाथी तथा एक घोड़ा उपहार स्वरूप भेंट किया।

प्रश्न 20. दातारपुर की स्थापना किसने तथा कैसे की?

उत्तर - दातारपुर की स्थापना 1550 ई. में दतार चन्द ने की थी जिसका सम्बन्ध डडवाल वंश से था। उस समय दतारपुर का क्षेत्र जिसे वर्तमान दसुआ के आसपास माना जाता है, किसी स्थानीय राणा के अधीन था। राणा ने अपने विरोधी से लड़ने में दतार चन्द की सहायता मांगी। दतार चन्द ने उसकी सहायता तो की परन्तु स्वयं राजा बन बैठा। उसने दतारपुर नामक नगर बसाया तथा उसे अपनी राजधानी बनाया।

प्रश्न 21. नूरपुर सहित भारत पर तैमूर के आक्रमण का वर्णन करें।

उत्तर - नूरपुर के राजा नाग पाल के काल में भारत पर तैमूर का आक्रमण 1398-99 ई. में हुआ। 10 दिसम्बर 1398 को तैमूर ने दिल्ली नगर में प्रवेश किया और पहली जनवरी 1399 को वहां से हरिद्वार और फिर शिवालिक की पहाड़ियों के आंचल से होता हुआ वापस लौटा। वह नगरकोट तक तो प्रवेश न कर सका परन्तु वह बजवाड़ा, दसूआ, पठानकोट, नूरपुर होता हुआ शाहपुर-कण्डी के पास रावी नदी को पार कर के लखनपुर, जसरोटा, सांबा होता हुआ जम्मू की ओर चला गया।

प्रश्न 22. नूरपुर के शासक जगत सिंह तथा जहांगीर के सम्बन्धों का वर्णन करें।

उत्तर - जगत सिंह 1619 ई. में नूरपुर की गद्दी पर बैठा तथा उसने 1646 तक शासन किया। उस समय वह बंगाल में था। जहांगीर ने उसे वहां से बुलाया और नूरपुर का राजा बना दिया। उसे 100 पैदल और 500 घुड़सवार रखने के मनसब से सम्मानित किया गया और उपहार में 20,000 रुपये नकद, एक रत्न जड़ित तलवार, एक घोड़ा और एक हाथी भेंट किये। फिर उसे कांगड़ा के किले के अभियान के लिये भेजी हुई सेना की सहायता करने के लिये भेजा। नवम्बर 1620 ई. में किला मुग़ल सेना के हाथ में आ गया। इसके बाद से जगत सिंह ने नूरपुर में ही रहना शुरू कर दिया।

प्रश्न 23. नूरपुर के शासक जगत सिंह के शाहजहां के विरुद्ध विद्रोह का वर्णन करें।

उत्तर - 1640 ई. में नूरपुर के शासक जगत सिंह ने शाहजहां के विरुद्ध विद्रोह कर दिया और शाहजहां ने माओकोट, तारागढ़ और नूरपुर के दुर्गों को 1641 ई. में विजयी कर लिया तथा जगत सिंह और उसके पुत्र राजरूप

तारागढ़ के किले में जाकर डट गये। मुग़ल सेनाओं ने जगत सिंह का यहां भी पीछा किया। बड़ा घमासान युद्ध हुआ और आक्रमणकारियों में से बहुत से मारे गये। नूरपुर और तारागढ़ के दुर्ग मुग़लों ने तोड़-फोड़ दिये। अन्त में जगत सिंह और उस के पुत्रों ने शाहजहां से क्षमा मांग ली और बादशाह ने अपने विशाल हृदय का प्रमाण देते हुये जगत सिंह को फिर वहां का राजा बना दिया।

प्रश्न 24. बंगाहल रियासत पर संक्षिप्त नोट लिखिए

उत्तर - बंगाहल राज्य की आधारशिला लगभग 1300 ई. में एक ब्राह्मण ने रखी थी और राज्य भार सम्भालने पर उसे भी राजपूत कहा गया। उसके पश्चात् 20 पीढ़ियों तक उसके उत्तराधिकारी वहां पर राज्य करते रहे। यहां का अन्तिम राजा पृथ्वी पाल सिंह था, जिसे 1720 ई. में मण्डी के राजा सिद्ध सैन ने बंगाहल पर अधिकार करने के लिये उसे मरवा दिया।

प्रश्न 25. कुटलैहड़ रियासत की स्थापना पर संक्षिप्त नोट लिखें।

उत्तर - कुटलैहड की रियासत जसवां की पहाड़ियों में फैली हुई थी। चौकी और कुटलैहड़ इसके मुख्य भाग थे। यह रियासत कांगड़ा क्षेत्र की सबसे छोटी रियासत थी। इस राज्य की स्थापना दसवीं या ग्यारहवीं शताब्दी में जस पाल ने की। उसने कुटलैहड़ और तलहटी के कुछ क्षेत्रों को अपने अधीन करके कोट कुटलैहड़ में रहना आरम्भ किया और बाद में इसे अपनी राजधानी बनाया।

प्रश्न 26. चम्बा के राजा प्रताप सिंह की उपलब्धियों का वर्णन करें।

उत्तर - चम्बा का राजा प्रताप सिंह बड़ा दयालु और धर्म परायण था। वह लक्ष्मी नारायण मन्दिर की मरम्मत तथा कुछ नये मन्दिरों का निर्माण करवाना चाहता था परन्तु धन के अभाव के कारण वह इस कार्य को करने में असमर्थ रहा। उसके काल में हालू गांव के पास ताम्बे की एक खान निकली, जिससे राजा को बहुत धन लाभ हुआ। राजा के आदेश पर प्राप्त धन से पुराने मन्दिरों की मुरम्मत और नये मन्दिरों का निर्माण कराया गया। इस के पश्चात् प्रताप सिंह और कांगड़ा के राजा के बीच लड़ाई छिड़ गई। इस में कांगड़ा के कटोच राजा की पराजय हुई और उस का छोटा भाई जीत लड़ाई में मारा गया।

प्रश्न 27. गुलेर के राजा दलीप सिंह के जम्मू तथा बसौली के राजाओं से संघर्ष का वर्णन करें।

उत्तर - गुलेर के राजा राज सिंह की मृत्यु के बाद इसका पुत्र दलीप सिंह राजगद्दी पर बैठा। उस समय वह छोटी आयु का था। इसलिये उदय सिंह को उस का संरक्षक बनाया गया। दलीप सिंह की बाल्यावस्था से लाभ उठाने के उद्देश्य से जम्मू और बसौली के राजाओं ने गुलेर पर आक्रमण कर दिया। गुलेर ने उदय सिंह से सहायता की प्रार्थना की। उदय सिंह ने सिब्बा, कहलूर और मण्डी से सहायता प्राप्त कर के जम्मू और बसौली की सेनाओं को गुलेर से खदेड़ दिया और नाबालिग दलीप सिंह को शक्ति प्रदान की।

प्रश्न 28. कुल्लू के राजा जगत सिंह की उपलब्धियों का वर्णन करें।

उत्तर - जगत सिंह कुल्लू के राजाओं में सब से प्रसिद्ध राजा हुआ है। जगत सिंह ने लग तथा सुलतानपुर के इलाकों को अपने राज्य में मिला लिया। जगत सिंह ने नारायण गढ़, श्रीगढ़ एवं हीमरी के किलों को अपने कब्जे में किया और बाहरी सिराज को अपने राज्य में मिला दिया। 1660 ई. में उसने अपनी राजधानी नगर से लाकर सुलतानपुर में बसाई। वहां पर उसने अपने लिये नया महल बनवाया और रघुनाथ का एक मन्दिर भी बनवाया।

प्रश्न 29. कुल्लू राज्य के पतन पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर - 1731 ई. में राजा जय सिंह कुल्लू का राजा बना। जय सिंह के साथ ही कुल्लू राज्य का पतन आरम्भ हो गया। जय सिंह का कालू नामक एक वज़ीर था, जो दयार का रहने वाला था। जय सिंह ने उस से किसी बात पर रुष्ट होकर उसे कुल्लू से निकाल दिया। अतः उसने लोगों को राजा के विरुद्ध बहका कर विद्रोह करवा दिया। जब मण्डी के राजा शमशेर सेन को इस सारी स्थिति की जानकारी हुई तो उसने कुल्लू पर आक्रमण कर के चौहार इलाके पर अधिकार कर लिया। इसके बाद जय सिंह लाहौर चला गया।

प्रश्न 30. सुकेत राज्य की स्थापना पर संक्षिप्त नोट लिखें।

उत्तर - सुकेत का नाम ब्यास के पुत्र शुकदेव के नाम पर पड़ा माना जाता है, जिसने यहां तपस्या की थी। सुकेत

रियासत की स्थापना वीरसेन नामक राजा ने 765 ई. में की थी, जो बंगाल के राजा लक्ष्मण सेन के वंशज से था। उस समय यह क्षेत्र भी छोटी–छोटी ठकुराइयों में बँटा हुआ था। इन्ही ठकुराइयों में से एक कुन्नुधार को वीर सेन ने अपना राजधानी बनाया। बाद में उसने **पांगणा** को अपनी राजधानी बनाया। चम्बा के मुशन वर्मा को भी वीरसेन ने शरण दी थी और उसका राज्य उसे वापिस दिलाया।

प्रश्न 31. मण्डी राज्य की स्थापना पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए।

उत्तर – मण्डी हिमाचल की सुकेत रियासत की ही एक शाखा गिनी जाती थी, क्योंकि इसके संस्थापक बाहुसेन का सम्बन्ध सुकेत से था। बाहु सेन सुकेत के शासक साहु सेन का छोटा भाई था। वह अपने भाई के साथ किसी कारणवश नाराज़ होकर सुकेत छोड़कर कुल्लू के मंगलां नामक स्थान पर चला गया, जहां लगभग 1330 ई. में मण्डी का मुखिया बन गया। यहां पर उसकी ग्यारह पीढ़ियां निवास करती रहीं।

प्रश्न 32. मण्डी के शासक सिद्ध सेन की उपलब्धियों का वर्णन करें।

उत्तर – 1678 ई. में गुर सेन के बाद **सिद्ध सेन** शासक बना। गुर सेन का नाजायज़ भाई जिप्पु सिद्ध सेन का मंत्री बना। उसके नियंत्रण में मण्डी शक्तिशाली बना रहा। उसने 1688 में दलेल, हटाल पर विजय पाई तथा 1690 ई. में सरकपुर में किले का निर्माण करवाया। सिद्ध सेन के काल में ही 1701 में गुरु गोबिन्द सिंह औरंगज़ेब के विरुद्ध सहायता की। गुरु जी की बहुत सेवा की तथा उनका आशीर्वाद प्राप्त किया। सिद्ध सेन ने मण्डी से दो मील की दूरी पर गणेश भगवान का मंदिर हो गई। जिसे 'सिद्ध गणेश' कहा जाता है। सिद्ध सेन ने लगभग 41 वर्ष तक शासन किया और 100 वर्ष की आयु में उसकी मृत्यु हुई।

प्रश्न 33. सिरमौर राज्य की स्थापना पर टिप्पणी लिखिए।

उत्तर – सिरमौर का हिमाचल की अन्य रियासतों में रुतबा बड़ा था। हिमाचल की रियासतों में इसका छठा स्थान था। सबसे पहले राजा राजस्थान से आने वाले राजा रसालु थे, जो जैसलमेर के राजा सलवान का पुत्र था। इसी राजा ने पुराने सिरमौर राज्य की स्थापना की थी। सिरमौर रियासत का नाम रसालू के भाई बुलन्द के पुत्र सिरमौर के नाम पर पड़ा था। शताब्दी के अन्त में सिरमौर की राजधानी सिरमौरी ताल थी।

प्रश्न 34. सिरमौर के शासक मेदनी प्रकाश पर नोट लिखिए।

उत्तर – राजा मेदनी प्रकाश गुरु गोबिंद सिंह का समकालीन था। बिलासपुर के राजा से अनबन होने पर गुरु जी सिरमौर के टाँका गांव में रहे और बाद में पांवटा साहब चले गये थे। राजा मेदनी के निमंत्रण पर वे नाहन भी गये थे। इस राजा के समय गुरु गोबिन्द सिंह व बिलासपुर के राजा भीम चन्द के मध्य, पांवटा साहिब से थोड़ी दूर भंगाणी में 168(ई. में युद्ध हुआ, जिसमें भीम चन्द की हार हुई। मेदनी प्रकाश ने ही नाहन में जगन्नाथ मन्दिर का निर्माण करवाया था 1694 ई. में 16 वर्ष तक शासन करने के बाद उसकी मृत्यु हो गई।

4. 19वीं शताब्दी में हिमाचल की पहाड़ी रियासतें

प्रश्न 1. जय सिंह कन्हैया ने कांगड़ा के किले पर किस प्रकार अधिकार किया?

उत्तर –कांगड़ा का राजा संसार चन्द कांगड़ा के किले को मुगलों के आधिपत्य से छुड़ाना चाहता है। इसके लि उसने सिख कन्हैया मिसल के मुखिया जय सिंह से सहायता मांगी। जय सिंह ने संसार चन्द की सहायता करते हुए कि को 1782 में घेर लिया। उस समय किला बूढ़े फौजदार सैफ अली खान के कब्जे में था। उसने थोड़े विरोध के बाद आत्म समर्पण कर दिया। उसने किला संसार चन्द को सौंपने से इन्कार कर दिया। इस प्रकार किला जय सिंह के अधिका में आ गया।

प्रश्न 2. कांगड़ा के किले पर संसार चन्द ने किस प्रकार पुनः अधिकार किया?

उत्तर – संसार चन्द के समय कांगड़ा के किले पर जय सिंह कन्हैया का अधिकार था और संसार चन्द किले व पुनः प्राप्त करना चाहता था। इसलिए उसने शुकरचकिया मिसल के सरदार महा सिंह से जय सिंह को कांगड़ा के कि से खदेड़ने के लिये सहायता मांगी। महा सिंह ने अपनी एक सेना दीवान दयाराम के नेतृत्व में कांगड़ा भेजी। राजा संस

चन्द ने कहा कि वह उसे सफल होने पर दो लाख रुपये देगा। छः महीने तक जयसिंह लड़ता रहा, परन्तु अन्त में जब खाद्य सामग्री समाप्त हो गई, तो उसने विवश हो कर किला छोड़ दिया। इस प्रकार से 1786 ई. में कांगड़ा का किला वापिस कटोच राजा के पास फिर से आ गया।

प्रश्न 3. कांगड़ा के शासक संसार चन्द को 'महाराजा' क्यों कहा जाने लगा?

उत्तर - कांगड़ा के किले को अधिकार में लेने के पश्चात् संसार चन्द की महत्त्वाकांक्षाएं बढ़ने लगीं। किले के महत्त्व को ध्यान में रखते हुए उसने एक भारी सेना का गठन किया। इस सेना की सहायता से उसने मण्डी, सुकेत, बिलासपुर, नालागढ़ आदि पर आक्रमण कर के उन पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया तथा उन्हें अपने दरबार में आने और कर भेजने को विवश किया। शीघ्र ही उसने उन राज्यों से भी कर लेना शुरू कर दिया, जो मुग़लों के अधिकार में थे। इस बात को लेकर चम्बा, मण्डी, कुटलैहड़ आदि में उसकी ख्याति दूर-दूर तक फैल गई। अतः संसार चन्द को महाराजा के नाम से पुकारा जाने लगा।

प्रश्न 4. संसार चन्द तथा बिलासपुर के बीच हुए संघर्ष का वर्णन करें।

उत्तर - 1795 ई. में संसार चन्द ने कहलूर -बिलासपुर के सतलुज नदी के दाहिनी ओर के भाग पर आक्रमण किया। रानी नगरदेवी तथा उस के पुत्र महान चन्द ने सिरमौर के राजा धर्म प्रकाश से सहायता मांगी। धर्म प्रकाश हिन्दूर (नालागढ़) के राजा रामसरन सिंह को साथ ले कर कहलूर पहुंचा। कांगड़ा और कहलूर तथा सिरमौर की संयुक्त सेनाओं के बीच युद्ध हुआ। धर्म प्रकाश लड़ाई में मारा गया और कहलूर की सेना को हार खानी पड़ी। संसार चन्द ने सतलुज नदी के दाहिने किनारे वाले क्षेत्र पर अधिकार कर लिया और झांझरधार पर एक किला बनवा दिया, जिसे उसने छातीपुर अर्थात् "कहलूरियों की छाती" का नाम दिया।

प्रश्न 5. कांगड़ा के शासक संसार चन्द तथा महाराजा रणजीत सिंह के बीच हुए संघर्ष का वर्णन करें।

उत्तर - कांगड़ा का शासक संसार चन्द कटोच बड़ा महत्त्वाकांक्षी व्यक्ति था। 1801 ई. में उसने रानी सदा कौर के राज्य के कुछ भागों को हड़पना चाहा, परन्तु रणजीत सिंह ने फतेह सिंह आहलूवालिया को साथ लेकर उसको भागने पर विवश कर दिया। दूसरी बार 1802 ई. उसने होशियारपुर और बिजवाड़ा पर अधिकार कर लिया। रणजीत सिंह ने इस बार फिर से उसे वापिस भगा दिया। तीसरी बार 1804 ई. में उसने पुनः होशियारपुर और बिजवाड़ा पर अधिकार करने का प्रयास किया परन्तु वह इस बार भी सफल न हो सका।

प्रश्न 6. गोरखों तथा संसार चन्द के बीच महल मोरियां के संघर्ष का वर्णन करें।

उत्तर - गोरखों के साथ संसार चन्द की मुठभेड़ 1806 ई. में महल मोरियां के स्थान पर हुई परन्तु गुलाम मुहम्मद के लाये हुये नये सिपाहियों के पहुंच जाने पर भी वह सफल न हो सका। गोरखे आगे बढ़े और नादौन पहुंच कर मण्डी के राजा ईश्वरीसेन को, जिसे संसार चन्द ने बारह वर्षों से बन्दी बना रखा था, कैद से मुक्त कर दिया। संसार चन्द को अन्त में विवश हो कर किले में शरण लेनी पड़ी। ऐसे में गुलेर का राजा भी गोरखों से जा मिला। चार वर्षों तक घेरा जारी रखने के बावजूद भी गोरखे किले पर अधिकार न कर सके। इन चार वर्षों में गोरखों ने कांगड़ा को तहस-नहस कर दिया।

प्रश्न 7. कांगड़ा के किले पर रणजीत सिंह का अधिकार कैसे हुआ?

उत्तर - कांगड़ा के शासक संसार चन्द के बढ़ते प्रभाव को देखते हुए अन्य पहाड़ी राजाओं ने संघ बनाया। इस संघ ने कहलूर के राजा द्वारा गोरखों को कांगड़ा पर आक्रमण करने के लिए आमंत्रित किया। 1806 ई. में गोरखों ने कांगड़ा में प्रवेश किया और 1809 ई. तक उन्होंने कांगड़ा के राजाओं तथा प्रजा को खूब पीटा। इन के अत्याचारों से तंग आकर संसार चन्द ने गोरखों को भगाने के लिए रणजीत सिंह से सहायता मांगी। रणजीत सिंह ने भारी सेना लेकर कांगड़ा में प्रवेश किया और गोरखों को नगरकोट से खदेड़ कर सतलुज के दूसरी ओर भगा दिया तथा स्वयं नगरकोट के किले पर अधिकार कर लिया।

प्रश्न 8. जसवां पर रणजीत सिंह का आधिपत्य किस प्रकार हुआ?

उत्तर - 1786 ई. में कांगड़ा के राजा संसार चन्द ने नगरकोट के किले पर अधिकार कर के अपने-आप को पहाड़ों का एक शक्तिशाली राजा बनने में सफलता प्राप्त की। संसार चन्द जसवां और दातारपुर पर भी अपना प्रभुत्व जमाने लगा।

अत: मजबूर होकर जसवां ने पहाड़ी राजाओं के साथ मिल कर संसार चन्द को कांगड़ा के किले में शरण लेने के लिये बाध्य किया। उस समय जसवां का राजा उमेद सिंह था। रणजीत सिंह ने जब 1809 ई. में कांगड़ा से गोरखों को भगाया तो जसवां भी उस के आधिपत्य में आया।

प्रश्न 9. भूप सिंह कौन था?

उत्तर - भूप सिंह 1790 ई. में गुलेर का राजा बना। वह गुलेर का अन्तिम राजा था। महाराजा रणजीत सिंह उसे 'बाबा' कह कर पुकारते थे। इस समय कांगड़ा के राजा संसार चन्द ने अपना प्रभुत्व जमा लिया, जिसके फलस्वरूप गुलेर भी उसके आधिपत्य में आ गया। इसकी यह नीति सब राजाओं को अखरने लगी। अत: उन्होंने एक संघ बनाया, जिसमें भूप सिंह ने भी सक्रिय रूप से भाग लिया। राजा भूप सिंह ने 1808 ई. में सिब्बा पर चढ़ाई करके इसे अपने राज्य में मिला लिया।

प्रश्न 10. सिब्बा रियासत पर रणजीत सिंह का आधिपत्य किस प्रकार हुआ?

उत्तर - सिब्बा1786 ई. से लेकर 1806 ई. तक कांगड़ा के राजा संसार चन्द के अधिकार में रहा। गोरखों ने जब 1806 ई. में कांगड़ा पर आक्रमण किया तो वहां एक प्रकार से अराजकता फैली हुई थी और इसी का लाभ उठाकर गुलेर के राजा भूप सिंह ने सिब्बा पर 1808 ई. में चढ़ाई कर के इसे अपने राज्य में मिला दिया। परन्तु 1809 ई. में जब रणजीत सिंह ने कांगड़ा से गोरखों को भगा दिया तो अन्य पहाड़ी राज्यों के साथ-साथ सिब्बा पर भी उस का अधिकार हो गया और दस वर्ष बाद उस ने इसे गुलेर से अलग कर दिया।

प्रश्न 11. रेहलू किले पर सिक्खों के अधिकार का वर्णन करें।

उत्तर - कांगड़ा पर अधिकार करने के बाद रणजीत सिंह ने देसा सिंह को कांगड़ा का नाजिम नियुक्त कर दिया। उस ने रणजीत सिंह की ओर से रेहलू पर अपना अधिकार जताया और सेना ले कर रेहलू किले को घेर लिया। चम्बा की सैनिक टुकड़ी ने डट कर मुकाबला किया। उधर नत्थू ने भी सेना को आदेश भेजा कि वे किले को न छोड़े। वह स्वयं महाराजा रणजीत सिंह के पास जा कर सिक्ख सेना को वापिस बुलाने का अनुरोध करने लगा। कुछ समय तक तो चम्बा की सेना मुकाबला करती रही परन्तु रानी ने जब स्थिति को बिगड़ते देखा तो किले को छोड़ देने का आदेश दे दिया। इस प्रकार रेहलू पर सिक्ख सेना का आधिपत्य हो गया।

5. आंग्ल-गोरखा युद्ध (1814-15 ई.)

प्रश्न 1. गोरखों के उत्थान का संक्षेप में वर्णन करें।

उत्तर - सर्वप्रथम गोरखों ने नेपाल से पश्चिम की ओर बढ़ने का प्रयास किया और इस अभियान में उन्होंने पहले कुमाऊं, फिर गढ़वाल और बढ़ते-बढ़ते 1803 ई. तक सतलुज तक के सभी पहाड़ी क्षेत्रों पर अधिकार कर लिया और यहां के छोटे-छोटे पहाड़ी राजाओं को राज कर देने पर बाध्य किया। इस कर के देने से कुल्लू भी अछूता न रह सका और गोरखों ने कुल्लू के राजा विक्रम सिंह से सांगरी के भाग को कर के रूप में वसूल किया। सम्भवत: वे इस कर को 1815 ई. तक तब तक लेते रहे, जब 1815 ई. को आंग्ल-गोरखा युद्ध के परिणामस्वरूप गोरखों को यह क्षेत्र खाली करना पड़ा।

प्रश्न 13. सिक्खों की पहली लड़ाई का क्या परिणाम निकला?

उत्तर - महाराजा रणजीत सिंह की मृत्यु के पश्चात् पंजाब में बड़ी अव्यवस्था फैल गई। इस के फलस्वरूप 1845 ई. में पहला सिक्ख युद्ध हुआ, जिसमें सिक्खों को करारी हार हुई। बाद में संधि हुई जिस के फलस्वरूप मैदानी भाग में जालन्धर दोआब और पर्वतीय भाग में सतलुज और ब्यास नदियों के मध्य का पहाड़ी भाग अंग्रेजों को मिला। लड़ाई की क्षति पूर्ति के लिए सिक्खों को एक डेढ करोड़ रुपया अंग्रेजों को देना तय किया गया।

प्रश्न 14. आंग्ल-गोरखा युद्ध के दो कारण लिखें

उत्तर - (1) गोरखा सेनापति अमर सिंह थापा ने सरहिंद तथा पटियाला क्षेत्रों पर अधिकार करने की अभियान चलाया। ये क्षेत्र अंग्रेज़ी ईस्ट इंडिया कम्पनी के संरक्षण में थे।

(2) गोरखों तथा अंग्रेज़ों के क्षेत्र की कोई निश्चित सीमा नहीं थी, इस लिए दोनों में संघर्ष होना अनिवार्य था।

प्रश्न 15. आंग्ल-गोरखा युद्ध का आरम्भ किस प्रकार हुआ?

उत्तर - नवम्बर 1814 ई. में अंग्रेज़ों ने गोरखों के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। शिमला के पहाड़ी राज्यों के शासकों और जन-साधारण ने गोरखों के दमन से तंग आकर अंग्रेज़ों को सहायता प्रदान की और अंग्रेज़ों ने इन शासकों को पुनः शासन प्रदान करने का आश्वासन दिया। मेजर जनरल रोल्ली गिल्लेस्पी के नेतृत्व में अंग्रेज़ी सेना ने सहारनपुर से आगे बढ़ना आरम्भ किया और देहरादून, क्यारदा-दून होते हुए कालगा किले पर अधिकार कर लिया।

प्रश्न 16. अंग्रेज़ों ने रामगढ़ के किले पर किस प्रकार अधिकार किया?

उत्तर - 16 जनवरी, 1815 को अंग्रेज़ों ने गोरखों के विरुद्ध बड़ा आक्रमण प्रारम्भ किया और तेज़ी से किए गए अभियान में डेविड ऑक्टर लोनी ने अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लिया। उसने पर्वत श्रेणी के पूर्वी, दक्षिणी और उत्तरी मार्गों को बन्द कर दिया। अमर सिंह थापा को रामगढ़ का किला छोड़ कर अपनी सेनाओं पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए विवश किया गया। तब अठारह पौण्ड के गोले दागने वाली तोपें अत्यन्त परिश्रमपूर्वक पहाड़ पर लाई गईं और रामगढ़ के किले पर दागी गईं, जिससे शीघ्र ही गोरखों ने आत्मसमर्पण कर दिया।

प्रश्न 17. सैगोली की सन्धि की प्रमुख शर्तें लिखिए।

उत्तर - 1. अंग्रेज़ों को गढ़वाल और कुमाऊं के ज़िले तथा तराई का अधिकांश भाग प्राप्त हुआ।

2. नेपाल से सिक्किम राज्य के समस्त अधिकार वापस ले लिए।

3. नेपाल की राजधानी काठमांडू में एक अंग्रेज़ रेज़ीडेण्ट रख दिया गया।

प्रश्न 18. आंग्ल-गोरखा युद्ध के दो परिणाम लिखिए।

उत्तर - (1) इस युद्ध से अंग्रेज़ों को गढ़वाल, कुमाऊं और तराई के अधिकांश भाग प्राप्त हो गए, जिससे अंग्रेज़ी साम्राज्य काफी विस्तृत और मजबूत हो गया।

(2) इस युद्ध के पश्चात् तथा सैगोली की सन्धि के फलस्वरूप गोरखों और अंग्रेज़ों में मित्रता स्थापित हो गई और अंग्रेज़ों को नेपाल से हमेशा सैनिक प्राप्त होने लगे।

प्रश्न 19. सिक्खों के पहले युद्ध के दो कारण लिखिए।

उत्तर - (1) रणजीत सिंह की मृत्यु के बाद सिख सेना शक्तिशाली हो गई, इसलिए दरबारी सिख सेना को युद्ध में उलझा कर सेना की शक्ति कम करना चाहते थे।

(2) 1809 ई. की अमृतसर की सन्धि के कारण सिखों तथा अंग्रेज़ों में तनाव बढ़ गया था।

प्रश्न 20. मुदकी की लड़ाई का संक्षेप में वर्णन करें।

उत्तर - लाल सिंह के नेतृत्व में सिक्ख सेना ने सतलुज नदी को पार करके फिरोज़पुर की ओर कूच किया। उधर अंग्रेज़ सेनायें सर ह्यू गफ के नेतृत्व में लुधियाना से फिरोज़पुर को बचाने के लिए चल पड़ीं। दोनों सेनाओं का टकराव मुदकी नामक स्थान पर हुआ। सिक्ख सेना के बहाव के सामने अंग्रेज़ दबने लगे परन्तु जिस समय विजय होने ही वाली थी, सिक्ख सेनापति लाल सिंह ने विश्वासघात किया और वह ऐसे आड़े समय में सिक्ख सेना को अकेला छोड़ कर युद्ध-क्षेत्र में पीछे हटने लगा। परिणास्वरूप अंग्रेज़ों की विजय हुई।

प्रश्न 21. सिक्खों की पहली लड़ाई में फिरोज़शाह की लड़ाई का वर्णन करें।

उत्तर - मुदकी की लड़ाई के पश्चात् अंग्रेज़ी सेनायें फिरोज़शाह नामक स्थान की ओर बढ़ीं, जो सतलुज से 12 मील की दूरी पर थी। इसी स्थान पर सर जॉन लिटस के नेतृत्व में एक और अंग्रेज़ी टुकड़ी सर ह्यू गफ की सेनाओं से आ मिली। 21 दिसम्बर के दिन दोनों पक्षों में फिरोज़शाह के स्थान पर एक भयंकर युद्ध हुआ। सिक्खों ने भी जान से अंग्रेज़ों का मुकाबला किया, जिससे अंग्रेज़ी सेना की स्थिति बड़ी गम्भीर हो गई।

प्रश्न 22. सिक्खों की पहली लड़ाई में सबराओं के युद्ध का वर्णन करें।

उत्तर - सिक्खों और अंग्रेज़ों में अन्तिम तथा निर्णयकारी लड़ाई 10 फरवरी, 1846 ई. को सबराओं के स्थान पर हुई। सिक्खों ने डटकर अंग्रेज़ों का मुकाबला किया और कुछ समय तक उनके होश उड़ा दिये। शाम सिंह अटारीवाला को छोड़ कर काफी सिक्ख सेनानायक विश्वासघात पर उतर आए थे। ऐसी स्थिति में सिक्ख सैनिकों की बहुत हानि हुई

और उनमें से 8 से 10 हज़ार तक मृत्यु के घाट उतार दिये गये। शाम सिंह अटारीवाला भी इस युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुआ। अन्त में अंग्रेज़ों की विजय हुई।

प्रश्न 23. 1846 की लाहौर की संधि की प्रमुख शर्तें क्या थीं?

उत्तर - 1. महाराजा ने सतलुज नदी के दक्षिण में स्थित सभी प्रदेशों पर अपना दावा छोड़ दिया और वचन दिया कि वह उनसे किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं रखेगा।

2. उसने ब्यास और सतलुज नदियों के बीच स्थित दोआबा के सभी प्रदेश और दुर्ग अंग्रेजी कम्पनी के हवाले कर दिये।

3. सिक्खों को युद्धपूर्ति के लिए लगभग डेढ़ करोड़ रुपये देने पड़े।

प्रश्न 24. सिक्खों के पहले युद्ध का क्या परिणाम निकला?

उत्तर - (1) सिखों को डेढ करोड़ रुपये का युद्ध का खर्चा अंग्रेजों को देना पड़ा, जिसमें से पचास लाख रुपये नकद दिए गए और शेष एक करोड़ के बदले सिन्ध और ब्यास के बीच के पहाड़ी प्रदेश जिनमें कश्मीर और हजारा भी शामिल थे, अंग्रेजों को दे दिए गए।

(2) अंग्रेज़ों ने पहाड़ी राज्य उनके राजाओं को वापस करने की अपेक्षा सतलुज और रावी के बीच के क्षेत्र अपने अधीन रखे और शेष राज्य जम्मू के महाराजा गुलाब सिंह को बेच दिये।

प्रश्न 25. भैरोवाल की संधि की प्रमुख शर्तें क्या थीं?

उत्तर - (1) लाहौर का प्रशासन अंग्रेज़ समर्थक आठ सिक्ख सरदारों की एक समिति को सौंप दिया गया, जो महाराजा दलीप सिंह के अवयस्क काल में कार्यभार संभालेगी। वह समिति लाहौर के रैजीडैण्ट के निर्देशानुसार कार्य करेगी।

(2) लाहौर में शान्ति व्यवस्था बनाए रखने के लिए स्थायी रूप से वहां एक अंग्रेजी सेना रखा जाना निश्चित हुआ। लाहौर सरकार ने इन सेना के व्यय के लिए 22 लाख रुपये वार्षिक देना स्वीकार किया।

प्रश्न 26. सिक्खों के दूसरे युद्ध में मुलतान की लड़ाई का वर्णन करें।

उत्तर - मुलतान अप्रैल के महीने से ही दोबारा दीवान मूलराज के अधीन हो गया था, परन्तु दिसम्बर 1849 ई. में एक अंग्रेज **विहश** ने मुलतान शहर पर घेरा डाल दिया। कुछ समय तक दीवान मूलराज डटकर अंग्रेज़ों का मुकाबला करता रहा परन्तु एक दिन अचानक एक गोले ने उसके सारे बारूद को आग लगा दी। इस भारी हानि के कारण दीवान मूलराज ने 22 जनवरी 1849 ई. को हथियार डाल दिये।

प्रश्न 27. सिक्खों के दूसरे-युद्ध में चिलियांवाला की लड़ाई का वर्णन करें।

उत्तर - यह लड़ाई 13 जनवरी 1849 को चिलियांवाला के स्थान पर हुई। यहां एक अत्यन्त भयानक युद्ध हुआ, जिसमें दोनों पक्षों को काफी हानि उठानी पड़ी परन्तु फिर भी फैसला कोई न हो सका। सिक्खों की इस लड़ाई में अनेक वीर व्यक्ति मारे गये और उन्हें लगभग 12 तोपों से हाथ धोना पड़ा।

प्रश्न 28. सिक्खों की दूसरी लड़ाई के क्या परिणाम निकले?

उत्तर - (1) इस युद्ध में सिक्खों की पूर्ण पराजय हो गई। इसलिए एक घोषणा द्वारा पंजाब को 29 मार्च 1849 ई. को अंग्रेजी साम्राज्य में मिला लिया गया।

(2) महाराजा दलीप सिंह की 50 हज़ार पौंड वार्षिक पैंशन नियत कर दी गई। कुछ समय पश्चात् वह इंग्लैण्ड चला गया।

(3) दीवान मूलराज पर मुकद्दमा चलाया गया। उसे दोषी ठहराया पहले उसे मृत्यु दण्ड दिया परन्तु बाद में उसका दण्ड घटाकर उसे जीवनभर के लिए काला पानी भेज दिया गया।

(4) खालसा सेना को भंग कर दिया गया और विभिन्न सिक्ख सरदारों की जमीनें उनसे छीन ली गईं।

प्रश्न 29. राम सिंह पठानिया तथा अंग्रेज़ों के बीच हुए संघर्ष का वर्णन करें।

उत्तर - 1849 ई. में रामसिंह पठानिया ने अंग्रेज़ों को फिर ललकारा। रामसिंह ने दो सिख रेंजिमेन्टों और पहाड़ी फौज के साथ शाहपुर के उत्तर पूर्व की ओर 'डल्ले की धार' नामक पहाड़ी पर मोर्चा लगाया। अंग्रेज़ों ने जनरल व्हीलर के नेतृत्व में भारी सेना लेकर आक्रमण किया। दोनों सेनाओं के बीच घमासान युद्ध हुआ और असंख्य योद्धा मारे गए। अन्त

...रामसिंह पठानिया की पराजय हुई। उसे पकड़ लिया गया और देश-निकाला देकर सिंगापुर जेल में डाल दिया गया।

7. परिवहन एवं संचार व्यवस्था

प्रश्न 1. हिमाचल के गठन के समय 1948 तक सड़कों की क्या व्यवस्था थी?

उत्तर : 1948 में हिमाचल के गठन के समय यहाँ पर कुल 290 कि.मी. लम्बी सड़कें थीं और इनके अतिरिक्त 300 कि.मी. लम्बी कच्ची सड़कें भी थी। प्रदेश के शेष भागों में या तो पैदल चलने योग्य रास्ते थे या खच्चरों के चलने योग्य थे। अतः यात्रा करना कठिन और खतरों से भरा होता था। राज्य में सड़कों की कमी लोगों के विकास में बाधक बन रही थी। इसलिए प्रदेश भर में सड़कों के निर्माण की मांग उठने लगी।

प्रश्न 2. हिमाचल में निर्मित किन्हीं दो पुलों का वर्णन करें।

उत्तर : 1) पांवटा में यमुना के ऊपर भी एक पुल बना है। यह हिमाचल प्रदेश को उत्तराखण्ड से जोड़ता है। यह हिमाचल प्रदेश में सबसे ऊँचा पुल है।

2) नादौन ब्यास नदी पर बना पुल सभी मौसम में प्रयुक्त होने योग्य है, जो बिलासपुर-शिमला तथा बिलासपुर और धर्मशाला को मिलाता है।

प्रश्न 3. हिमाचल में सड़क निर्माण का क्या महत्त्व रहा है?

उत्तर : 1) सड़कें बनने से अपने कृषि उत्पाद मण्डियों में ले जाने में सुविधा होगी तथा कृषि के लिए आवश्यक सामग्री को खेत में पहुँचाने में सुविधा होगी।

2) सड़कों के निर्माण से लगभग 50,000 लोगों को प्रति वर्ष काम मिला।

3) सड़कों के निर्माण से प्रदेश की आर्थिक व्यवस्था को ऊपर उठाने में पर्याप्त सहायता मिली है। हिमाचल प्रदेश के पहाड़ी क्षेत्रों में सड़क परिवहन जीवन रेखा का कार्य करता है।

प्रश्न 4. कालका-शिमला रेल मार्ग का वर्णन करें।

उत्तर : कालका-शिमला रेलमार्ग की कुल लम्बाई 96 कि.मी. है। इस रेलमार्ग में 919 पुल हैं। कालका से शिमला के बीच रेलमार्ग में 20 रेलवे स्टेशन हैं, जिनमें धर्मपुर, सोलन, कंडाघाट, तारादेवी, सलोगटा, समर हिल आदि प्रमुख रेलवे स्टेशन हैं। इस रेलमार्ग पर यातायात 1 जनवरी, 1906 को पहली बार प्रारम्भ हुआ था। इस रेल मार्ग पर कुल 103 सुरंगें बनी हैं, जिनमें सबसे लम्बी बुड़ोग सुरंग है। इसकी लम्बाई 1143.61. मी. है।

प्रश्न 5. पठानकोट-जोगिन्द्रनगर रेल मार्ग का वर्णन करें।

उत्तर : पठानकोट-जोगिन्द्रनगर रेल मार्ग हिमाचल प्रदेश की कांगड़ा की सुन्दर घाटियों तक पहुंचने का प्रमुख साधन है। यह रेलमार्ग 1926 में बनना आरम्भ हुआ था तथा तीन वर्ष बाद ही इस रेलमार्ग पर यातायात आरम्भ हो गया था। इस रेलमार्ग की कुल लम्बाई 113 कि.मी. है। इस रेल मार्ग पर जसूर, हरिपुर, पालमपुर, बैजनाथ, जोगिन्द्रनगर आदि प्रमुख रेलवे स्टेशन बने हैं।

प्रश्न 6. नंगल-ऊना रेलमार्ग का संक्षिप्त वर्णन करें।

उत्तर : नंगल-ऊना रेलमार्ग हिमाचल प्रदेश में एकमात्र ब्राडगेज रेलमार्ग है। यह रेलमार्ग ऊना को नई दिल्ली से जोड़ता है। इस रेलमार्ग की लम्बाई 16 कि.मी है। नंगल तक रेलमार्ग प्रदेश में नंगल से तलवाड़ा रेलमार्ग का निर्माण जोरों से चल रहा है। इसके बन जाने से हिमाचल में रेलमार्ग में और भी वृद्धि हो जायेगी।

प्रश्न 7. हिमाचल के प्रमुख हवाई अड्डों का वर्णन करें।

उत्तर : गगल हिमाचल प्रदेश का सबसे बड़ा हवाई अड्डा है। यह धर्मशाला के निकट स्थित है। प्रदेश में कुल्लू के भुन्तर में और शिमला से 25 किमी. दूर जुब्बर हट्टी (जिला सोलन) में तथा काजा व रंगरीक में भी हवाई अड्डे हैं। इसके अतिरिक्त सरकार हमीरपुर, मण्डी तथा बेनीखेत में हवाई अड्डे बनाने पर विचार कर रही है।

प्रश्न 8. हिमाचल के जल परिवहन का वर्णन करें।

उत्तर : हिमाचल की कृत्रिम झीलों में ही जल परिवहन की सुविधा उपलब्ध है। राज्य में मुख्यत: चार झीलों बिलासपुर ज़िला में गोबिन्द सागर झील, मण्डी जिला में पण्डोह झील, कांगड़ा जिला में पौंग झील तथा चम्बा जिला में चमेरा झील में जल परिवहन के लिए अग्नि बोट का उपयोग किया जाता है।

प्रश्न 9. हिमाचल के प्रमुख हैलीपेडों का वर्णन करें।

उत्तर : हिमाचल प्रदेश एक पर्वतीय प्रदेश है, इसलिए यहां हैलीपैड अर्थात् हैंलीकाप्टर उतारने के स्थानों का बड़ा महत्त्व है। हिमाचल प्रदेश में इस समय 57 हैलीपेड हैं तथा 12 नये हैलीपैड बनाये जा रहे हैं। हिमाचल के हैलीपैड़ों में बाहंग मनाली के पास, नाहन सेना अधिकारियों के तहत, अनाडेल शिमला, स्टींगरी ग्रेफ के अधीन, डोडराक्वार, किलाड़, किन्नौर, भरमौर पांगी प्रमुख हैं। सांगला, चम्बा, रंगरीक, डलहौज़ी में हैलीपेड बनाए जा रहे हैं।

प्रश्न 10. रज्जू मार्ग से क्या अभिप्राय है? हिमाचल के रज्जू मार्गों का वर्णन करें।

उत्तर : राज्य में यात्रियों को गाँवों में आर-पार ले जाने तथा सामान आदि ले जाने के लिए रज्जू-मार्ग स्थापित किए जा रहे हैं। इसका नवीनतम उदाहरण परवाणु के पास देखा जा सकता है, जिसका नाम टिम्बर ट्रेल है। पहाड़ी क्षेत्रों में जहां अभी तक सड़कें दुगर्म हैं रज्जू मार्गों का विशेष महत्त्व है।

8. हिमाचल में 1857 का विद्रोह

प्रश्न 1. 1857 के विद्रोह के प्रमुख कारण बताएं।

उत्तर : (1) अंग्रेज़ी सरकार के अफसर भारतीयों के साथ दुर्व्यवहार करते थे, जिसे भारतीय अपना अपमान समझते थे। इस लिए वे अंग्रेज़ों को भारत से निकालना चाहते थे।

(2) लार्ड डल्हौज़ी की देशी शासकों के प्रति नीति से शासक वर्ग रुष्ट था।

(3) अंग्रेज़ों ने अनेक पहाड़ी रियासतों पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया था। अत: वहां के शासक अंग्रेज़ों से स्वतंत्र सेना चाहते थे।

प्रश्न 2. 1857 के विद्रोह के लिए लार्ड डलहौज़ी कहां तक उत्तरदायी था?

उत्तर : लार्ड डलहौज़ी के समय में विजयों, लैप्स की नीति, समर्पण तथा कुप्रबंध आदि अनेक बहानों द्वारा अन्धाधुंध भारतीय प्रदेशों के अंग्रेज़ी साम्राज्य में मिलाए जाने के कारण भारतीय शासक तथा भारतीय लोग, दोनों अंग्रेजों के शत्रु हो गए। उन्हें अब अंग्रेज़ों की नीयत पर से विश्वास उठ गया और वे उनसे बदला लेने की तैयारियों में लग गये।

प्रश्न 3. 1857 के विद्रोह का तत्कालिक कारण क्या था?

उत्तर : 1856 ई. में एक नई प्रकार की राइफ़ल, जिसे एन्फील्ड राइफ़ल कहते हैं, का सेना में प्रयोग आरम्भ किया गया। इस राइफ़ल में भरने के लिए चिकने कारतूसों को प्रयोग में लाया जाता था। बन्दूक या राइफ़ल में चढ़ाने से पहले कारतूसों को मुंह से काटना पड़ता था। शीघ्र ही यह अफ़वाह फैल गई कि इन कारतूसों में गाय और सूअर की चर्बी का प्रयोग किया गया है। अत: हिंदू और मुसलमान सैनिकों ने ऐसे कारतूसों का प्रयोग करने से इन्कार कर दिया और जब उनसे ज़बरदस्ती की गई तो कई छावनियों में उन्होंने विद्रोह खड़ा कर दिया।

प्रश्न 4. मंगल पाण्डे की शहीदी का संक्षेप में वर्णन करें।

उत्तर : सर्वप्रथम 28 मार्च 1857 को 34 नेटिव इन्फेन्ट्री के एक देशी सैनिक मंगल पाण्डे ने चर्बी वाले कारतूसों का प्रयोग करने से इन्कार कर दिया और अपने दूसरे साथियों को अंग्रेज़ों के विरुद्ध हथियार उठाने के लिये उकसाया। अगले ही दिन 29 मार्च को जब सार्जेन्ट मेजर हसन ने उसे पकड़ने का प्रयास किया तो उसने उसे गोली से उड़ा दिया। बाद में मंगल पांडे पकड़ा गया और 8 अप्रैल 1857 ई. के दिन उसे फांसी पर चढ़ा दिया गया और बैरकपुर में स्थित दो फ़ौजी दस्तों को तोड़ भी दिया गया।

प्रश्न 5. कसौली में 1857 ई. के विद्रोह का आरम्भ कैसे हुआ?

उत्तर : हिमाचल प्रदेश में कम्पनी सरकार के विरुद्ध विद्रोह की प्रथम चिंगारी कसौली की सैनिक छावनी में भड़की अप्रैल,1857 ई. को अम्बाला राईफल डिपो के छः देशी सैनिकों ने कसौली में एक पुलिस चौकी को आग लगा दी। इस चौकी जल कर राख हो गई। घुड़सवार सैनिक जान बचा कर भाग निकले। उन दिनों कसौली सैनिक छावनी हिमाचल के पहाड़ी क्षेत्रों में ब्रिटिश सैनिक शक्ति का सबसे समृद्ध केन्द्र था। इस सशक्त केन्द्र में क्रान्तिकारियों ने आतंक फैला कर अंग्रेजों को प्रत्यक्ष चुनौती दी थी।

प्रश्न 6. दिल्ली में 1857 के विद्रोह का संक्षेप में वर्णन करें।

उत्तर : मेरठ से क्रान्तिकारी 11 मई 1857 ई. को दिल्ली पहुंचे और दो दिन के भीतर ही उन्होंने दिल्ली पर अधिकार कर लिया। मुग़ल सम्राट् बहादुरशाह द्वितीय को राज्य सिंहासन पर बैठा दिया गया और उसके भारत-सम्राट् होने की घोषणा कर दी गई। उसकी पत्नी ज़ीनत बेगम ने भी क्रान्तिकारियों को पूर्ण सहयोग दिया। तब क्रान्तिकारियों ने कश्मीरी गेट के निकट स्थित अंग्रेजी तोपखाना को अपने कब्ज़े में लेने का प्रयास किया तो वहां स्थित जनरल विल्लोवी ने लगभग तीन घंटे तक क्रान्तिकारियों का मुकाबला किया परन्तु अन्त में अपने-आपको असमर्थ देखकर उसने तोपखाना को आग लगा दी।

प्रश्न 7. मेरठ में 1857 के विद्रोह का वर्णन करें।

उत्तर : बैरकपुर की घटना के बाद मेरठ में स्थित लगभग 85 भारतीय सैनिकों ने चर्बी वाले कारतूसों को प्रयोग करने से इन्कार कर दिया तो उन्हें 8 से 10 वर्ष की सख्त सज़ा देकर जेल में बन्द कर दिया गया। क्रान्तिकारियों ने 10 मई वाले दिन अंग्रेज़ अधिकारियों को मार कर उन्होंने जेल में कैद अपने साथियों को छुड़वा लिया और दिल्ली की ओर प्रस्थान किया।

प्रश्न 8. शिमला में विद्रोह का आरम्भ कैसे हुआ?

उत्तर : 11 मई, 1857 ई. को मेरठ, अम्बाला और दिल्ली के विद्रोह का समाचार जब शिमला पहुंचा तो ब्रिटिश सेना के कमाण्डर-इन-चीफ जनरल जॉर्ज एनसन ने जतोग, स्पाटू, डगशाई और कसौली की सैनिक छावनियों के सैनिकों को अम्बाला की ओर कूच करने के आदेश दिए। देशी सेना ने अपने सेनापति के आदेश का पालन करने से इन्कार कर दिया और जतोग में तैनात नसीरी सेना (गोरखा रेजिमेंट) ने देशी सेना के सूबेदार भीम सिंह के नेतृत्व में जतोग छावनी और खज़ाने पर कब्ज़ा कर लिया।

प्रश्न 9. भीम सिंह के नेतृत्व में क्रान्ति का संक्षिप्त वर्णन करें।

उत्तर : सूबेदार भीम सिंह के नेतृत्व में कसौली की क्रान्तिकारी सेना ने जतोग की ओर बढ़ते हुए मार्ग में हरीपुर नामक स्थान पर ब्रिटिश सेना के कमाण्डर-इन-चीफ जनरल जॉर्ज एनसन के टैंटों को आग लगा दी और शस्त्र व सामान लूट लिया। (सायरी) नामक स्थान पर क्रान्तिकारियों ने दो ब्रिटिश अफसरों और भगौड़े फिरंगियों को धमकाया, उनकी तलाशी ली उन्हें अपनी खुखरी (गोरखा शस्त्र) दिखा कर डराया। क्रान्तिकारी सेना ने मार्ग में मिलने वाले लोगों से अंग्रेज़ों की सहायता न करने की अपील भी की।

प्रश्न 10. बुद्ध सिंह के नेतृत्व में क्रान्ति का संक्षिप्त वर्णन करें।

उत्तर : नसीरी सेना के कसौली से कूच करने के बाद स्थानीय पुलिस गार्ड ने क्रान्ति की बागडोर अपने हाथों में ले ली। छावनी के थाने के दरोगा बुद्धसिंह क्रान्तिकारियों के नेता बन गए। उनके नेतृत्व में पुलिस क्रान्तिकारियों ने सहायक कमिश्नर टेलर और कैप्टन ब्लैकॉल के आदेशों को मानने से इन्कार कर दिया। पुलिस क्रान्तिकारियों ने फिरंगियों को मारा और कसौली खजाने पर कब्ज़ा कर लिया। अब वे अंग्रेज़ों से लड़ने के लिए जतोग की ओर बढ़े। अंग्रेज़ी सेना ने जतोग की ओर बढ़ते हुए क्रान्तिकारियों का पीछा किया और कुछ सिपाहियों को पकड़ लिया। पुलिस क्रान्तिकारियों के नेता बुद्धसिंह ने अपनी ही पिस्तौल से स्वयं को गोली मार ली।

प्रश्न 11. जतोग में विद्रोह क्यों स्थगित किया गया?

उत्तर : 24 मई, 1857 ई. को जतोग की क्रान्तिकारी नसीरी सेना ने अपने नेता सूबेदार भीम सिंह के नेतृत्व में एक सरकारी बैठक का आयोजन किया। इस बैठक में कैप्टन ब्रिगज और डिप्टी कमिश्नर विलियम हेय द्वारा दिये गए

आश्वासनों पर विचार किया गया। दिल्ली, मेरठ और अम्बाला आदि स्थानों से कोई क्रान्तिकारी सहायता व सहयोग न मिलने के कारण जतोग की नसीरी सेना ने विद्रोह स्थगित करने का निर्णय लिया।

प्रश्न 12. जालन्धर के क्रान्तिकारियों की 1857 के विद्रोह में क्या भूमिका थी?

उत्तर : 10 जून 1857 ई. को जालन्धर के क्रान्तिकारी सैनिकों ने पहाड़ों की ओर कूच किया। 600 के लगभग क्रान्तिकारी सैनिक नालागढ़ तक पहुँचे और उन्होंने स्थानीय क्रान्तिकारियों के साथ मिलकर भयानक विद्रोह किया। इनके शिमला की पहाड़ी रियासतों की ओर बढ़ने की आशंका से अंग्रेज़ और भी भयभीत हो गए। अत: शिमला, स्पाटू, कसौली, डगशाई और कोटगढ़ को निरस्त्र कर दिया गया।

प्रश्न 13. अंग्रेज़ों ने क्रान्तिकारियों पर नियंत्रण करने के लिए क्या किया?

उत्तर : कसौली में केप्टन ब्लैकाल ने एक सैनिक दस्ता लेकर सभी संदिग्ध क्षेत्रों का दौरा किया और सभी क्रान्तिकारी अड्डों की छानबीन की तथा हर प्रकार के शस्त्र, विषैले पदार्थ आदि छीन लिए गए। अंग्रेज़ों ने कालका, कसौली, डगशाई, स्पाटू और शिमला में सुरक्षा के कड़े प्रबन्ध किए तथा क्रान्तिकारियों की गतिविधियों पर कड़ी निगरानी रखी। सभी सार्वजनिक मार्गों पर चौकियां स्थापित कर नाका गार्ड्ज़ तैनात किए गए। इससे क्रान्तिकारियों के आने-जाने पर प्रतिबन्ध लग गया।

प्रश्न 14. शिमला की पहाड़ी रियासतों में स्थापित गुप्त संगठनों की क्रान्ति में क्या भूमिका थी?

उत्तर : हिमाचल की पहाड़ी रियासतों में क्रान्ति के संचालन के लिए एक गुप्त संगठन भी बना लिया गया था। शिमला की पहाड़ी रियासतों में इस गुप्त संगठन के मुख्य नेता रामप्रसाद वैरागी थे। इस संगठन का मुख्य उद्देश्य जन क्रान्ति द्वारा अंग्रेज़ों को देश से निकालना था। अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए यह संगठन गुप्तचर भेज कर अथवा पत्रों द्वारा क्रान्ति की योजना और प्रेरणा का सन्देश लेना, जनसाधारण और देशी शासक वर्ग तक पहुँचाना था। संगठन के गुप्त केन्द्र प्राय: मन्दिर, मस्जिद व गुरुद्वारे थे।

प्रश्न 15. पहाड़ी रियासतों के गुप्त संगठनों पर अंग्रेज़ों ने किस प्रकार नियंत्रण किया?

उत्तर : गुप्त संगठनों से जुड़े पत्रों के पकड़े जाने से पहाड़ी क्षेत्र के मुख्य गुप्तचर नेता क्रान्तिकारी रामप्रसाद वैरागी पकड़े गये। उन्हें अम्बाला ले जाया गया और अम्बाला जेल में फांसी दे दी गई। संगठन के अन्य गुप्तचर भूमिगत हो गए और अंग्रेज़ों के हाथ नहीं आये। इसी दौरान दिल्ली, लाहौर, पटियाला और कांगड़ा में अनेक गुप्तचर साधु-संत और फकीरों के वेश में पकड़े गए। इस घटना के पश्चात् मन्दिर, मस्जिद और गुरुद्वारों पर विशेष निगरानी रखी जाने लगी तथा साधु सन्तों और फ़कीरों के आवागमन पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया।

प्रश्न 16. अगस्त, 1857 में शिमला के डिप्टी कमिश्नर विलियम हेय ने सुरक्षा के क्या-क्या उपाय किए?

उत्तर : 7 अगस्त, 1857 इ. को शिमला के डिप्टी कमिश्नर विलियम हेय ने सुरक्षा के अनेक प्रबन्ध किए। रियासत कहलूर (बिलासपुर) के 50 सशस्त्र जवान बालूगंज में तैनात किए गए। सिरमौर रियासत के 60 सिरमौरी सैनिक कुंवर वीर सिंह के नेतृत्व में बड़ा बाज़ार के निवास स्थान पर नियुक्त किये गए। बाघल, जुब्बल, कोटी, क्योंथल और धामी के शासक ने 250 और जवान शिमला में रखे ताकि आपात्काल में उनकी सेवाएं प्राप्त की जा सकें।

प्रश्न 17. मलौण के क्रान्तिकारियों ने किस प्रकार अंग्रेज़ों के हथियार और बारूद छीने?

उत्तर : 16 मई, 1857 ई. को कैप्टन डी. ब्रिगज़ ने अपना एक सहायक मलौण किले के शस्त्रागार से हथियार और बारूद आदि लाने के लिए भेजा। क्रान्तिकारियों को राजा द्वारा अंग्रेज़ों को हथियार और बारूद आदि भेजने की बात का पता चल गया। जब हथियार और बारूद लेकर स्थानीय सैनिक गार्द का दस्ता मलौण किले से बाहर निकला तो मलौण के क्रान्तिकारियों ने वहाँ के ज़मींदारों के साथ मिलकर उन पर हमला कर दिया और मुठभेड़ में हथियार और बारूद छीन व अपने कब्जे में कर लिये।

प्रश्न 18. नालागढ़ में किस प्रकार अंग्रेज़ों ने विद्रोह पर काबू पाया?

उत्तर : नालागढ़ के विद्रोह को दबाकर शांति व्यवस्था कायम करने के लिए शिमला के डिप्टी कमिश्नर विलियम हेय ने कैप्टन ब्रिगज को नालागढ़ भेजा। इस कार्य के लिए बाघल के राणा कृष्णा सिंह तथा बिलासपुर (कहलूहर) के राजा ने

हीराचन्द ने शस्त्रधारी सैनिकों को अंग्रेजों की सहायता के लिए नालागढ़ भेजा तथा कैप्टन ब्रिगज ने नालागढ़ के प्लासी किले में एक सैनिक दस्ता किले की रक्षा के लिए तैनात किया। कुछ सैनिक दस्तों को रियासत के मुख्य मार्गों और नौ घाटों पर तैनात किया, ताकि क्रान्तिकारी सैनिक सतलुज पार कर रियासत में प्रवेश न कर सकें। इस प्रकार 20 जून, 1857 ई. तक नालागढ़ के विद्रोह की विस्फोटक स्थिति पर काबू पा लिया गया।

प्रश्न 19. सिरमौर रियासत में जनसाधारण के असंतोष को किस प्रकार शान्त किया गया?

उत्तर : गाय और सूअर की चर्बी लगे कारतूसों के प्रयोग से यहां के सैनिकों में असन्तोष फैला हुआ था। सिरमौर रियासत के शासक से भी विशेष सहायता की आशा नहीं की जा सकती थी क्योंकि तत्कालीन राजा शमशेर प्रकाश केवल 11 वर्ष के थे। नाबालिक राजा की सहायता के लिए कुंवर सुर्जन सिंह और बीर सिंह को सहायक प्रशासक नियुक्त किया गया। इन दोनों प्रशासकों ने जन साधारण में फैले भारी असंतोष को विद्रोह में बदलने से पहले ही शान्त कर दिया, जिससे सिरमौर बटालियन की उत्तेजना भी कुछ कम हो गई।

प्रश्न 20. क्रान्ति की खबर से धर्मशाला में क्या प्रतिक्रिया देखने को मिली?

उत्तर : विद्रोह की खबर धर्मशाला पहुंचने पर डिप्टी कमिश्नर मेजर आर. टेलर ने पुलिस बटालियन की सुरक्षा से कांगड़ा किले में जाकर शरण ली। इसी के साथ जनसाधारण में असन्तोष, आवेश और आन्दोलन की भावना बढ़ने लगी। लोगों ने सरकार के आदेशों को मानने से इंकार कर दिया और कानून का खुला उल्लंघन करने लगे। स्वाधीनता की भावना से उत्तेजित आन्दोलनकारी दिन के समय धर्मशाल में कोलाहल मचाने लगे। अंग्रेज़ अफसरों को धमकियां दी जाने लगीं। जन-क्रान्ति की आशंका बढ़ने लगी।

प्रश्न 21. जालन्धर के क्रान्तिकारियों को कांगड़ा में प्रवेश करने से किस प्रकार रोका गया?

उत्तर : 7-8 जून, 1857 ई. को जालन्धर में '36-नेटिव इन्फैन्ट्री' और '61-नेटिव इनफैन्ट्री' ने भयानक विद्रोह कर दिया। इस विद्रोह के कारण कांगड़ा में डिप्टी कमिश्नर मेजर आर. टेलर से सुरक्षा के और कड़े प्रबन्ध किए। 12 जून, 1857 ई. को सतलुज, रावी और ब्यास नदी के घाटों में बन्द कर दिया और नौकाएं नष्ट कर दीं ताकि जालन्धर के क्रान्तिकारी सैनिक कांगड़ा में प्रवेश न कर सकें। नादौन, हरिपुर और नूरपुर में नदी घाटों पर पुलिस का कड़ा पहरा लगा दिया गया।

प्रश्न 22. सियालकोट में हुए विद्रोह का संक्षिप्त वर्णन करें।

उत्तर : 9 जुलाई, 1857 ई. को सियालकोट में '46-नेटिव इनफैन्ट्री' और 9-कैवेलरी सेना घुड़सवार सेना ने भयानक विद्रोह किया। गुप्त सूचना के अनुसार 46-नेटिव इनफैन्ट्री और कांगड़ा में तैनात 4-नेटिव इन्फैन्ट्री ने पहले से ही मिलकर परस्पर सहयोग से विद्रोह करने तथा लड़ने का निर्णय ले लिया था। विद्रोह के पश्चात् सियालकोट के 1000 से भी अधिक क्रान्तिकारी सैनिक कांगड़ा की ओर बढ़ रहे थे। इस भयानक परिस्थिति में देशी सेना द्वारा खुली बगावत की पूरी-पूरी सम्भावना थी।

प्रश्न 23. नूरपुर तथा कांगड़ा पर अंग्रेज़ों ने किस प्रकार नियंत्रण किया?

उत्तर : डिप्टी कमिश्नर टेलर ने 'शेरदिल पुलिस बटालियन' के 100 जवानों को बलपूर्वक साथ लेकर नूरपुर विद्रोह दबाने के लिए कूच किया। डिप्टी कमिश्नर टेलर के पहुँचने से पूर्व ही 4-नेटिव इन्फैन्ट्री के स्थानीय कमांडर मेजर ओंकी ने पूर्व सूचित आदेशानुसार देशी सैनिकों को हथियार छोड़ने के लिए सहमत कर लिया था। इस प्रकार अंग्रेज़ों ने नूरपुर व कांगड़ा के किलों को पूर्ण रूप से अपने अधिकार में ले लिया और देशी सेना को निरस्त्र करके स्थानीय क्रान्तिकारियों पर काबू पा लिया।

प्रश्न 24. चम्बा रियासत में क्रान्तिकारियों की गतिविधियों का वर्णन करें।

उत्तर : चम्बा रियासत में कड़ी सुरक्षा और मुख्य मार्गों को नाकाबन्दी के बावजूद सियालकोट, जेहलम और जालन्धर के कुछ क्रान्तिकारी सैनिक चम्बा में प्रवेश करने में सफल रहे और स्थानीय क्रान्तिकारियों के साथ मिलकर विद्रोह करने की कोशिश की परन्तु रियासती सेना ने स्थिति पर काबू पा लिया। सियालकोट, जेहलम और जालन्धर में आए देशी सैनिक क्रान्तिकारियों को चम्बा सरकार ने पकड़ कर अंग्रेज़ों के हवाले कर दिया।

प्रश्न 25. चम्बा में विद्रोह को रोकने के लिए क्या उपाय किए गए?

उत्तर : 9 जुलाई 1857 ई. को जालन्धर में 36-नेटिव इन्फैन्ट्री और 9-कैवेलरी घुड़सवार सेना ने भयानक विद्रोह किया। इन क्रान्तिकारी सैनिकों के चम्बा की ओर बढ़ने की आशंका से रियासती सरकार ने रावी नदी के नौ-घाटों की नावों को नष्ट कर दिया ताकि क्रान्तिकारी सैनिक चम्बा में आकर विद्रोह को बढ़ावा न दे सकें। बशौली घाट पर नाका गार्ड्ज तैनात किए गए। रियासत के सभी मार्गों की नाक़ाबन्दी कर दी गई। इसी दौरान राजा चम्बा ने कांगड़ा के डिप्टी कमिश्नर, मेजर रेयनैल्ल टेलर की मांग पर अपनी सेना के 300 जवान रावी, सतलुज और ब्यास नदी के नौ घाटों की सुरक्षा के लिए प्रदान किए।

प्रश्न 26. महारानी विक्टोरिया के घोषणा पत्र की दो धाराएं लिखें।

उत्तर : (1) विक्टोरिया घोषणा में भारतीय नरेशों को विश्वास दिलाया गया कि उनके राज्यों को ब्रिटिश साम्राज्य में नहीं मिलाया जाएगा और उन्हें पैतृक उत्तराधिकार के साथ-साथ दत्तक पुत्र लेने का भी अधिकार होगा।

(2) महारानी ने कम्पनी सरकार द्वारा दी गई सनदों और सन्धियों को स्वीकार किया और उन्हें कार्यान्वित करने का विश्वास दिलाया।

प्रश्न 27. विद्रोह में अंग्रेजों का साथ देने वाले पहाड़ी राजाओं को अंग्रेज़ों ने कैसे सम्मानित किया?

उत्तर : विद्रोह के समय अंग्रेज़ों की सहायता करने वाले देशी शासकों को विशेष रूप में सम्मान प्रदान किया गया और इनाम दिए गए। बाघल के राणा कृष्ण सिंह की राजा को उपाधि से सम्मानित किया गया था। उसके भाई जय सिंह को खिल्लत प्रदान की गई। धागी के राणा गोवर्धन सिंह को आधा नज़राना माफ़ कर दिया गया। क्योंथल के राणा संसार सेन को राजा की उपाधि से सम्मानित किया गया और खिल्लत प्रदान की गई। इसी प्रकार मण्डी, बिलासपुर, सिरमौर, जुब्बल और चम्बा के शासकों को भी सम्मान और ईनाम देकर सन्तुष्ट किया गया।

9. हिमाचल में जन आंदोलन

प्रश्न 1. जुग्गा आंदोलन से क्या अभिप्राय है?

उत्तर- जुग्गा आंदोलन में भाग लेने वाला व्यक्ति 'जुग्गा' (घास-फूस की झोंपड़ी) बनाकर उसमें बिल्ली, कुत्ता तथा गाय के साथ निश्चित अवधि तक बैठता और न्याय पाने के लिये राजा के आदेश की प्रतीक्षा करता था परन्तु निश्चित अवधि की समाप्ति पर वह उन जानवरों व पशुओं सहित जुग्गा में आत्मदाह कर लेता था। उसके पश्चात् उसका स्थान गांव का दूसरा व्यक्ति ले लेता था।

प्रश्न 2. दूम्ह आन्दोलन से क्या तात्पर्य है?

उत्तर- जब कभी राजा कोई ऐसा काम करता या भूमि कर लगाता था, जिसको लोग अनुचित और अन्याय पूर्ण समझते थे तो अपना रोष व विरोध प्रदर्शित करने के लिये गांव को छोड़कर पास के जंगल में चले जाते थे। इसे दूम्ह आन्दोलन कहते थे ऐसे आन्दोलन से सत्ता विचलित हो जाती और आन्दोलनकारियों की मांग पूरी करने का अविलम्ब प्रयास करती थी। सुलह-समझौता होने पर लोग अपने घरों को वापस आते और पुनः अपने व्यवसाय खेती-बाड़ी और दूसरे कार्यों को सम्भालते।

प्रश्न 3. 1877 में नालागढ़ जन आन्दोलन क्यों हुआ?

उत्तर- राजा ईश्वर सिंह जून 1877 में गद्दी पर बैठा। उसके समय में गुलाम कादिर खान वजीर था। उसने इस राज के शासन सम्भालते ही प्रजा पर नये कर लगाये और भूमि लगान बढ़ा दिये। प्रजा के लिये कर का बोझ असहय हो गया। किसान बढ़ा हुआ लगान देने में असमर्थ थे। राजा पर अनुनय-विनय का कोई असर न हुआ और वज़ीर ने कर व लगान कम करने से भी इंकार कर दिया। लोगों में रोष बढ़ गया और उन्होंने भूमि लगान देने से स्पष्ट इंकार कर दिया

प्रश्न 4. 1877 के नालागढ़ आन्दोलन का संक्षेप में वर्णन करें।

उत्तर- नालागढ़ में नये करों तथा बढ़े भू-राजस्व के विरोध में लोगों ने कर्मचारियों के काम में बाधा डालनी आरम्भ की। अशांति और गड़बड़ी की स्थिति में अंग्रेज सरकार ने हस्तक्षेप किया। शिमला से सुपरिंटेंडेंट हिल स्टेट स्वयं पुलिस दल लेकर नालागढ़ पहुँचे। जन आन्दोलन का दमन करके उनके नेता को पकड़ लिया गया और भीड़ के

...इधर-उधर भगा दिया। लोगों ने अपनी मांगें मनवा लीं और राजा ने अंत में वज़ीर को निकाल दिया और लगान भी कम कर दिया। बन्दी किये गये आन्दोलनकारियों को छोड़ दिया गया।

प्रश्न 5. 1878 में सुकेत आन्दोलन क्यों हुआ?

उत्तर- 1878 में रुद्रसेन गद्दी पर बैठा। उसने धुंगाल को वज़ीर बना दिया। उसने किसानों का भूमि कर बढ़ा दिया। इससे लोगों में असंतोष फैल गया। लोगों ने राजा से न्याय की मांग की, परन्तु राजा ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया। इससे वे निराश हो गये और वे आन्दोलन पर उतर आये। राजवंश के लोगों ने भी प्रजा को समर्थन दिया।

प्रश्न 6. 1878 के सुकेत आन्दोलन का वर्णन करें।

उत्तर- 1878 में सुकेत में भूमि कर वृद्धि के विरोध में लोग आन्दोलन पर उतर आये। जब स्थिति बहुत बिगड़ गई तो जालंधर के कमिश्नर ट्रिमलेट्ट सुकेत आया। उसने सारी स्थिति की जांच पड़ताल की। वज़ीर धुंगल को निकाल दिया और करसोग के आन्दोलनकारियों को हिरासत में ले लिया। लोगों ने प्रशासन से असहयोग की नीति अपनाई। दोबारा जांच करने पर राजा को 1879 में गद्दी से हटा दिया गया। आन्दोलन का नेता मियां शिव सिंह कांगड़ा से वापस आ गया। आन्दोलनकारियों की मांग पर लगान में कमी कर दी गई।

प्रश्न 7. बेगार से क्या अभिप्राय है?

उत्तर- किसी भी व्यक्ति को मज़दूरी या वेतन दिये बिना काम के करवाने को बेगार प्रथा कहा जाता था। इसके अन्तर्गत प्रत्येक परिवार से एक व्यक्ति वर्ष में छः महीने रियासत का काम मुफ्त में करता था। उन्हें मज़दूरी नहीं दी जाती थी और न ही रियासत की ओर से भोजन मिलता था। उच्च वर्ग के लोगों को इससे छूट थी।

प्रश्न 8. 1897 से 1902 के मध्य बाघल के भूमि आन्दोलन का वर्णन करें।

उत्तर-बाघल रियासत के राजा ध्यान सिंह के काल में अत्यधिक भूमि-लगान के विरोध में 1897 ई० से लेकर 1902ई० तक लोगों ने आन्दोलन चलाया। भूमि लगान में भारी वृद्धि के विरोध में किसानों ने आन्दोलन किये। बड़ोग गांव के ब्राह्मणों में गांव ने भारी जलसा किया और वे राजा के पास भी गये। अंग्रेज़ सरकार के हस्तक्षेप करने पर रियासती सरकार ने लगान में कमी करके लोगों को शान्त किया।

प्रश्न 9. 1905 के बाघल विद्रोह का संक्षेप में वर्णन करें।

उत्तर- 1905 ई० में बाघल रियासत का विद्रोह राजा विक्रम सिंह के काल में हुआ। इसका आरम्भ तो राज परिवार के अपने घपले से आरम्भ हुआ परन्तु बाद में क्षेत्र के सभी कनैत लोगों ने राजा के प्रतिनिधि, शासक और उसके भाई के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। लोगों ने बढ़ा लगान देना बन्द कर दिया। राज्य में अशान्ति फैल गई। अन्त में शिमला की पहाड़ी रियासतों के अंग्रेज सुपरिंटेन्डेट ने बाघल की राजधानी अर्की जाकर इसमें हस्तक्षेप किया और आन्दोलनकारियों को न्याय का आश्वासन देकर शान्त किया।

प्रश्न 10. 1909 के मण्डी के किसान आन्दोलन का वर्णन करें।

उत्तर- 1909 ई० में मण्डी के राजा भवानी सेन के समय में एक किसान आन्दोलन हुआ। राजा के वज़ीर जीवानन्द किसानों को डरा-धमका कर सारे अनाज का व्यापार अपने हाथ में ले लिया था और किसानों पर अनेक प्रकार के कर लगाए थे। ऐसी स्थिति में सरकाघाट क्षेत्र का शोभाराम 20 व्यक्तियों का शिष्ट-मण्डल तीन बार अपनी शिकायतों को लेकर राजा के पास मण्डी गया। राजा ने वजीर की बातों में आकर उनकी शिकायतों की ओर ध्यान नहीं दिया। अन्त में शोभाराम के नेतृत्व में 20,000 के लगभग किसानों का जलूस मण्डी पहुंचा। उत्तेजित किसानों ने तहसीलदार हरदेव और अन्य अधिकारियों को पकड़ कर जेल में बन्द कर दिया तथा थाने पर कब्ज़ा कर लिया।

प्रश्न 11. सिद्ध खराड़ा के नेतृत्व में डोडावन के किसान आन्दोलन का वर्णन करें।

उत्तर- 1909 में सितम्बर मास में मण्डी रियासत में एक जन-आन्दोलन बल्ह क्षेत्र में डोडावन के किसानों ने किया। वहां के किसानों ने रियासती सरकार के भूमि वन सम्बन्धी असंगत कानूनों के विरोध में प्रदर्शन किये और सरकारी आदेश मानने से इन्कार किया। इस आन्दोलन के नेता बड़सू गांव के सिद्ध खराड़ा थे। कुछ लोगों को पकड़ कर जांच करने के पश्चात् सजा दी गई। परन्तु उनका नेता सिद्धू खराड़ा भाग कर हमीरपुर चला गया।

प्रश्न 12. 1918 के नालागढ़ जन आन्दोलन का संक्षिप्त वर्णन करें।

उत्तर- 1918 ई० में नालागढ़ के पहाड़ी क्षेत्रों में चारगाहों तथा वन सम्बन्धी असंगत कानूनों के विरोध में जन आन्दोलन हुआ। राजा जोगिन्द्र सिंह तथा उनका वज़ीर चौधरी राम जी लाल इस आन्दोलन को दबा न सके। अन्त में अंग्रेज सरकार ने अपनी सेना भेज कर आन्दोलन को दबा दिया। सक्रिय आन्दोलनकारियों को जेल में डाल दिया गया। इस के पश्चात् लोगों ने रियासती सरकार से असहयोग की नीति अपनाई। विवश होकर सरकार ने लोगों की शिकायतें दूर कर दीं और कानून बदल दिये।

प्रश्न 13. 1924 के सुकेत आन्दोलन का वर्णन करें।

उत्तर- 1924 ई० में सुकेत के राजा लक्ष्मण सेन के समय में जनता से आवश्यकता से अधिक लगान लिया जाता था। बेगार प्रथा बड़े ज़ोरों से थी। 1924 ई० में बेगार, लगान और कर सीमा जब सीमा से बाहर हो गई तो आम जनता ने संघर्ष की राह पकड़ी। इसका नेतृत्व बनैक (सुन्दरनगर) के एक मियां रत्न सिंह ने किया। लोगों ने उसके नेतृत्व में कचहरी का घेराव किया। इस आन्दोलन में सुकेत के कई क्षेत्र के लोगों ने भी भाग लिया।

प्रश्न 14. 1926-27 के ठियोग जन आन्दोलन का वर्णन करें।

उत्तर- अकतूबर 1926 में ठियोग ठकुराई में राणा पदमचंद के प्रशासन के विरुद्ध जनता ने आन्दोलन किया। इसका नेता उसी का भाई मियां खड़कसिंह था परन्तु बाद में यह आन्दोलन शिथिल पड़ता गया और खड़क सिंह अपने परिवार सहित खनेटी ठकुराई में जाकर बस गया। 1927 में मियां खड़क सिंह ने खनेटी से ही पुनः इस आन्दोलन को चलाया। इस आन्दोलन को दबाने के लिये राणा ने अंग्रेज सरकार से सहायता मांगी। अतः डिप्टी कमिश्नर सैलिसवरी ने शिमला से पुलिस ठियोग भेजी। पुलिस ने मियां खड़क सिंह को गिरफ्तार कर लिया।

प्रश्न 15. गदर पार्टी की स्थापना पर संक्षिप्त नोट लिखिए।

उत्तर- सन् 1911 ई० में लाला हरदयाल भारत से भाग कर फ्रांस होते हुये अमेरिका में स्थित सेन फ्रांसिस्को पहुंच गये। 1913 ई० में उनकी पहल पर और 1857-59 के जन-विद्रोह की स्मृति में उन्होंने 'गदर' नामक समाचार पत्र आरंभ किया। उसी वर्ष अमेरिका में विभिन्न भारतीय समुदायों के प्रतिनिधियों के सम्मेलन में 'इण्डिन एसोसिएशन' नामक संगठन स्थापित किया गया और उसके प्रमुख नेता भी हरदयाल बने। शीघ्र ही इसका नाम बदल कर गदर पार्टी रख दिया गया।

प्रश्न 16. मण्डी षड्यंत्र क्या था?

उत्तर- गदर पार्टी के कुछ लोग जब अमेरिका से वापस आये और उन्होंने मण्डी और सुकेत की रियासतों के लोगों में अपने समर्थक बनाने के लिए कुछ कार्य आरम्भ किया। मण्डी की रानी खेरागढ़ी और मियां जवाहर सिंह उनके प्रभाव में आ गये। रानी ने धन देकर उन लोगों की सहायता की। दिसम्बर 1914 और जनवरी 1915 में गुप्त बैठकें करके य निर्णय लिया गया कि पुलिस अधिकारी और वज़ीर को मार दिया जाये और सरकारी कोष को लूटा जाये तथा ब्यास नदी पर बने पुल को उड़ा दिया जाये। इसके पश्चात् मण्डी और सुकेत की रियासतों पर अधिकार किया जाये।

प्रश्न 17. गांधी जी के प्रथम शिमला आगमन का वर्णन करें।

उत्तर- 11 मई 1921 को गांधी जी पहली बार शिमला गए। उनके साथ मौलाना मुहम्मद अली, शौकत अली लाला लाजपतराय, मदन मोहन मालवीय, लाला दुनी चन्द अम्बालवी आदि नेता भी थे। 13 मई को गांधी जी वायसराय लार्ड रीडिंग से मिले। अगले दिन गांधी जी ने लोअर बाजार शिमला के आर्य समाज के हाल में महिलाओं को सम्बोधित किया। 15 मई को उन्होंने पन्द्रह हज़ार से अधिक के एक जन समूह को ईद-गाह पर सम्बोधित किया।

प्रश्न 18. कांगड़ा में कांग्रेस आन्दोलन का संक्षिप्त वर्णन करें।

उत्तर- कांगड़ा के जो लोग कांगड़ा से बाहर काम करते थे, जब वे वापस अपने गांव आते कांग्रेस के कार्य चलाते और उन के जलसों में भाग लेते। इन्हीं सम्मेलनों में एक सम्मेलन 1927 में सुजानपुर के पास ताल में हुआ जिसमें बलोच सिपाहियों ने लोगों को बुरी तरह पीटा। इस मार-पीट में ठाकुर हजारा सिंह, बाबा कांशीराम (पहाड़ी गांधी), गोपाल सिंह और चतुर सिंह भी थे। इसके विरुद्ध पहाड़ी गांधी बाबा कांशीराम ने शपथ ली कि जब तक भा

स्वतंत्र नहीं होता, वह काले कपड़े पहनेंगे। कांग्रेस के आन्दोलन में बाबा कांशीराम और हजारा सिंह का योगदान बहुत महत्वपूर्ण है।

प्रश्न 19. हिमाचल के सविनय अवज्ञा आन्दोलन का वर्णन करें।

उत्तर- 27 फरवरी 1930 को गांधी जी ने देश में सविनय अवज्ञा आन्दोलन आरम्भ करने की घोषणा की। शिमला तथा कांगड़ा के कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने इस आन्दोलन में भाग लिया। इस के बारे में स्थान-स्थान पर जलसे होते रहे और जुलूस निकाले गये। इस सविनय आन्दोलन के लिये शिमला में लाला गेंडामल, डा० नन्द लाल दीनानाथ आंधी आदि लोग गिरफ्तार किये गये और उन्हें कड़े कारावास की सज़ा दी गई।

प्रश्न 20. हिमाचल को गांधी जी के व्यक्तिगत आन्दोलन ने किस प्रकार प्रभावित किया?

उत्तर- 17 अक्तूबर 1937 ई० में गांधी जी ने व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन आरम्भ किया। शिमला में इस सत्याग्रह में पं० पद्मदेव, कांग्रेस के प्रधान श्याम लाल खन्ना और महामन्त्री सालिग राम शर्मा के नाम अग्रिम थे। उन्होंने गंज में जन-सभा की और भाषण दिये। पुलिस ने पद्मदेव को पकड़ कर कैथू जेल भेज दिया। नवम्बर 1940 में कांगड़ा क्षेत्र में व्यक्तिगत सत्याग्रह के संचालन के लिये एक समिति बनाई गई। इस समिति में ठाकुर हजारा सिंह, पं० परस राम तथा ब्रह्मानन्द मुख्य थे। अप्रैल 1941 ई० तक कांगड़ा में व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन में असंख्य सत्याग्रही गिरफ्तार हो चुके थे।

प्रश्न 21. हिमाचल में भारत छोड़ो आन्दोलन का संक्षेप में वर्णन करें।

उत्तर- 7-8 अगस्त, 1942 ई० को अखिल भारतीय-कांग्रेस कमेटी की बम्बई बैठक में 'भारत छोड़ो आन्दोलन' को चलाने का निर्णय लिया गया। शिमला, कांगड़ा और अन्य पहाड़ी क्षेत्रों में ''अंग्रेजों भारत छोड़ो'' के सम्बन्ध में जलसे-जुलूस और आन्दोलन आरम्भ हुये। इस आन्दोलन के दौरान शिमला में भागमल सोहटा, पं० हरिराम, चौधरी भगवान चन्द, सालिग राम शर्मा, नन्द लाल वर्मा, तुफैल अहमद, ओम प्रकाश चोपड़ा, सन्त राम, हरिचन्द आदि आन्दोलनकारी गिरफ्तार किये गये। शिमला से राजकुमारी अमृत कौर ''भारत छोड़ो आन्दोलन'' का संचालन करती रही।

प्रश्न 22. 1946 की आन्तरिक सरकार की स्थापना पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए।

उत्तर- मई 1946 ई० में बर्तानिया से एक कैबिनेट-मिशन भारतीय नेताओं से बात-चीत करने भारत आया। भारतीय नेताओं, वायसराय लार्ड वेवल तथा कैबिनेट-मिशन की बैठकें शिमला में 5 मई से 12 मई 1946 तक होती रहीं। मुस्लिम लीग की हठधर्मी से इसे कोई अधिक सफलता तो नहीं मिल पाई परन्तु वायसराय लार्ड वेवल अन्तरिम सरकार बनाने में सफल हुये। अत: 2 सितम्बर 1946 को कांग्रेस ने भारत में अन्तरिम सरकार बनाई और 26 अक्तूबर 1946 को मुस्लिम लीग के नेता भी इस सरकार में सम्मिलित हो गये।

प्रश्न 23. सिरमौर प्रजा मण्डल के गठन पर चर्चा कीजिए।

उत्तर- अखिल भारतीय रियासती प्रजा परिषद् के प्रस्तावों से प्रभावित होकर सिरमौर में हिमाचल के सबसे पहले प्रजा मण्डल का गठन किया गया। इसके संस्थापक पं० राजेन्द्र दत्त थे। उन्होंने इसका कार्यालय नाहन के स्थान पर पांवटा में स्थापित किया। इसमें चौधरी शेर जंग, मास्टर चतर सिंह, सालिग राम, कुन्दन लाल, अजायब सिंह आदि ने सक्रिय भाग लिया।

प्रश्न 24. चम्बा सेवक संघ की स्थापना का संक्षिप्त वर्णन करें।

उत्तर- मार्च 1936 ई० में चम्बा रियासत में कुछ लोगों ने ''चम्बा सेवक संघ'' नाम से एक संस्था का गठन किया। बाद में यह संस्था राजनैतिक संगठन में बदल गई। अन्तत: ने इस संघ पर प्रतिबन्ध लगा दिया। परिणामस्वरूप ने अपनी गतिविधियों का केन्द्र डलहौज़ी बना लिया।

प्रश्न 25. धामी प्रेम प्रचारिणी सभा का संक्षिप्त वर्णन करें।

उत्तर- धामी रियासत के लोगों ने अपनी रियासत में सुधार लाने के उद्देश्य से 1937 ई० में एक ''प्रेम प्रचारिणी सभा'' बनाई। शिमला में कार्यरत बाबा नारायण दास को इसका अध्यक्ष और पं० सीता राम को मन्त्री बनाया। आरम्भ में इस का उद्देश्य सामाजिक और आर्थिक सुधार था परन्तु बाद में राजनैतिक प्रश्न भी सामने आने लगे और आन्दोलन की बात होने लगी।

प्रश्न 26. मण्डी प्रजा मण्डल का संक्षिप्त वर्णन करें।

उत्तर- मण्डी रियासत में भी 1936 में प्रजामण्डल की स्थापना हुई। स्वामी पूर्णानन्द इसके अध्यक्ष बने। इसके साथ राम

चन्द मल्होत्रा, बलदेव राम, हरसुखराय, सुन्दरलाल और मोती राम प्रमुख थे। बाद में कृष्ण चन्द्र, तेज सिंह निधड़क, केशव चन्द्र, पद्मनाथ और हेम राज भी प्रजामण्डल के सदस्य बन गये। राजा ने प्रजामण्डल की गतिविधियों पर पाबन्दी लगा दी।

प्रश्न 27. शिमला हिल स्टेट्स रियासती प्रजामण्डल की स्थापना का संक्षिप्त वर्णन करें।

उत्तर- पहली जून 1939 ई० को शिमला पहाड़ी राज्यों के लोगों के प्रतिनिधियों की शिमला में एक सभा हुई। इसमें राजाओं और राणाओं की गुप्त गतिविधियों को प्रकाश में लाया गया। लुधियाना सम्मेलन से प्रभावित होकर शिमला की पहाड़ी रियासतों की विभिन्न संस्थाओं ने एक संयुक्त संस्था बनाई, जिसका नाम "शिमला हिल स्टेट्स रियासती प्रजा मण्डल" रखा। इस संस्था की स्थापना में बुशहर के पं० पदमदेव और जुब्बल के भागमल सौहटा का विशेष योगदान रहा। इसमें पं० पद्मदेव को प्रधान और भागमल सौहटा को महामन्त्री बनाया गया।

प्रश्न 28. कुनिहार प्रजा मण्डल का संक्षिप्त वर्णन करें।

उत्तर- शिमला हिल स्टेटस प्रजा मंडल के नेता 8 जुलाई 1939 ई० को कुनिहार रियासत गये। वहाँ पर उन्होंने कांशीराम के साथ कई लोगों को प्रजा मण्डल का सदस्य बनाया। 9 जुलाई 1939 ई० को कुनिहर रियासत के दरबार भवन में कुनिहार के राणा हरदेव सिंह के सभापतित्व में "कुनिहार प्रजामण्डल" की विधिवत् स्थापना की गई। इस सभा में भागमल सौहटा और देव सुमन भी उपस्थित थे। इसके अतिरिक्त रियासत धामी, बाघल, पटियाला, महलोग के प्रतिनिधि भी इस सभा में भाग लेने आये हुये थे। बाबू कांशीराम को प्रजा मण्डल कुनिहार का संरक्षक नियुक्त किया गया।

प्रश्न 29. धामी प्रजा मण्डल पर संक्षिप्त नोट लिखें।

उत्तर- धामी रियासत की "प्रेम प्रचारिणी सभा" ने रियासती प्रजा मण्डल शिमला में शामिल होने की योजना बनाई ताकि उसे रियासती सरकार के दमन से बचाव में बड़े संगठन का संरक्षण मिल सके। इसी उद्देश्य को लेकर 1 जुलाई 1939 ई० को भागमल सौहटा की अध्यक्षता में शिमला के निकट कुसुम्पटी के पास कमाहली स्थान पर शिमला की पहाड़ी रियासतों के प्रजामण्डलों की एक बैठक हुई। इस बैठक में धामी रियासतों की "प्रेम प्रचारिणी सभा" को "धामी प्रजा मण्डल" में बदल दिया गया। धामी के पं० सीता राम को इस संगठन का प्रधान नियुक्त किया गया।

प्रश्न 30. धामी प्रजा मण्डल ने राणा धामी से क्या-क्या मांगें कीं?

उत्तर- 1. बेगार प्रथा को समाप्त किया जाये। 2. भूमि- लगान में पचास प्रतिशत कमी की जाये।

3. धामी राज्य प्रजा मण्डल को मान्यता प्रदान की जाये।

4. लोगों को नागरिक अधिकारों की स्वतन्त्रता प्रदान की जाये।

प्रश्न 31. धामी काण्ड पर संक्षिप्त नोट लिखें।

उत्तर- भागमल सौहटा 16 जुलाई को लगभग ग्यारह बजे शिमला से एक छोटे से दल को लेकर धामी के लिए निकल पड़े। जब भागमल सौहटा और उनके साथी धामी को सीमा के पास घनहिट्टी के पास पहुँचे तो रियासत के सिपाहियों ने सत्याग्रहियों के नेता भागमल सौहटा को हिरासत में ले लिया और धामी ले गये। जो लोग सत्याग्रहियों के स्वागत के लिए धामी के बाहर इकट्ठे हुये थे, वे राणा के निवास स्थान के पास पहुँचे। राणा ने भयभीत होकर भीड़ को तितर-बितर करने के लिये गोली चलाने के आदेश दे दिये। इससे वहां खलबली मच गई और बहुत से लोग बुरी तरह से घायल हो गये तथा दो व्यक्तियों की मृत्यु हो गई।

प्रश्न 32. हिमाचल हिल स्ट्टेस कौंसिल की स्थापना पर नोट लिखें।

उत्तर- सन् 1945 ई० के अन्त में उदयपुर में "आल इण्डिया स्ट्टेस पीपुल्स कान्फ्रेंस" का अधिवेशन हुआ जिसके पश्चात् प्रजा मण्डल को सुचारु रूप से चलाने के लिये जनवरी 1946 में "हिमाचल हिल स्ट्टेस रीजनल कौंसिल" नाम से एक संस्था की स्थापना की। इसके प्रधान स्वामी पूर्णानन्द बनाये गये और उनका कार्यालय मण्डी रखा गया। पं० पद्मदेव को इसका मुख्य सचिव बनाया गया और उन का कार्यालय शिमला में रखा गया।

प्रश्न 33. हिमालयन हिल स्ट्टेस सब रीजनल कौंसिल पर संक्षिप्त नोट लिखें।

उत्तर- 10 जून 1947 ई० को हिमालयन हिल स्ट्टेस रीजनल कौंसिल की बैठक शिमला के रॉयल होटल में हुई। 16 सदस्यों में से 11 सदस्यों ने बैठक में भाग लिया। इस बैठक में सदस्यों में मतभेद पैदा हो गये और छः सदस्य

एक अलग संगठन बना लिया। इस संगठन का नाम "हिमालयन हिल स्ट्टेस सब-रीजनल कौंसिल" रखा गया। इस नई कौंसिल के प्रधान डॉ० यशवन्त सिंह परमार चुने गये।

प्रश्न 34. 1947 के सिरमौर प्रजा मण्डल सम्मेलन का संक्षिप्त वर्णन करें।

उत्तर- अगस्त 1947 ई० में सिरमौर प्रजा मण्डल ने नाहन में एक बड़ा सम्मेलन किया। इसके मुख्य आयोजक पं० राजेन्द्र दत्त, डॉ० देवेन्द्र सिंह, धर्म नारायण वकील, पं० शिवानन्द रमौल थे। इस सम्मेलन में सिरमौर के राजा राजेन्द्र प्रकाश ने भी भाग लिया। सम्मेलन में हिमालयन हिल स्ट्टेस सब-रीजनल कौंसिल के अध्यक्ष डॉ० यशवन्त सिंह परमार को सभापति बनाया गया और उन्होंने राष्ट्रीय झंडा लहराया।

10. हिमाचल में राजनीतिक दल

प्रश्न 1. भारतीय जनसंघ की स्थापना का वर्णन करें।

उत्तर- भारतीय जनसंघ की स्थापना 1951 में डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने की थी तथा वही इस दल के प्रथम अध्यक्ष थे। पं. दीन दयाल शर्मा इस दल के प्रथम महासचिव थे। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी, पं. नेहरू के नेतृत्व में बने पहले अन्तरिम मंत्रिमण्डल में शामिल थे, परन्तु 1950 ई. में उन्होंने मंत्रिमण्डल से त्यागपत्र दे दिया और बाद में भारतीय जनसंघ नामक राजनीतिक दल बनाया।

प्रश्न 2. स्वतंत्र पार्टी की स्थापना पर [illegible] ट लिखें।

उत्तर- स्वतंत्र पार्टी की स्थापना स्वतंत्र भारत में दूसरे आम चुनावों के बाद 1959 ई. में की गई। इस दल के संस्थापकों में सी. राजगोपालचारी, के. एम. मुंशी, एन. जी. रंगा तथा मीनू मसानी जैसे प्रमुख कांग्रेसी नेता थे। हिमाचल प्रदेश में इस दल की स्थापना राजा आनन्द चन्द बिलासपुर द्वारा 29 फरवरी, 1960 ई. में की गई। हिमाचल प्रदेश में यह दल कांग्रेस के विरूद्ध एक सशक्त संगठन के रूप में उभरा तथा हिमाचल प्रदेश के विधानसभा के चुनाव में बिलासपुर जिले की चारों सीटों पर विजय प्राप्त की।

प्रश्न 3. कम्युनिस्ट पार्टी (साम्यवादी दल) की स्थापना पर नोट लिखिए।

उत्तर- भारत में कम्युनिस्ट पार्टी अर्थात् साम्यवादी दल की स्थापना 1917 की रूस की क्रान्ति से प्रभावित होकर की गई। 1924 में कानपुर में कुछ संगठनों का सम्मेलन हुआ, जिसमें साम्यवादी दल की आधार शिला रखी गई तथा 1925 ई. पू. इस दल की विधिवत् स्थापना की गई। हिमाचल प्रदेश में इस दल की स्थापना का पहला कदम अप्रैल, 1951 में उठाया गया जब मंगरोटू (मण्डी) में किसान सभा आयोजित की गई।

प्रश्न 4. प्रजा सोशलिस्ट पार्टी का संक्षिप्त वर्णन करें।

उत्तर- 1952 में समाजवादी दल तथा किसान मज़दूर प्रजा दल का विलय हो गया तथा एक नये दल प्रजा सोशलिस्ट पार्टी की स्थापना हुई। हिमाचल प्रदेश में इस दल की स्थापना कांग्रेस के कुछ नाराज़ नेताओं ने की थी। इस दल को हिमाचल प्रदेश में अधिक समर्थन नहीं मिला। परिमाणस्वरूप बाद में इस दल के सदस्य कांग्रेस पार्टी में शामिल हो गए। इस प्रकार हिमाचल प्रदेश में इस दल का कोई महत्त्वपूर्ण योगदान नहीं रहा। इस दल के समर्थन से ही 1957 में कांग्रेस ने सरकार बनाई थी। 1954 में तो त्रावनकोर को चीन (वर्तमान केरल) में इस दल ने अपनी सरकार का भी गठन किया था।

प्रश्न 5. विशाल हिमाचल समिति के गठन पर संक्षिप्त नोट लिखें।

उत्तर- विशाल हिमाचल समिति की स्थापना 1955 ई. में की गई। इस संगठन में जन संघ को छोड़कर अन्य सभी दलों के सदस्य शामिल थे। इस संगठन का प्रमुख उद्देश्य विशाल हिमाचल प्रदेश की स्थापना था। कुछ समय के बाद इस संगठन में शामिल कांग्रेस के सदस्यों ने एक अलग संगठन की स्थापना कर ली, जिसने विशाल हिमाचल प्रदेश की माँग का समर्थन किया। 1 नवम्बर 1966 में जब हिमाचल प्रदेश में पंजाब के पहाड़ी भागों को मिला कर हिमाचल प्रदेश का पुनगर्ठन किया गया तो विशाल हिमाचल समिति तथा विशाल हिमाचल संगठन का कार्य भी समाप्त हो गया।

प्रश्न 6. अनुसूचित जाति संघ पर नोट लिखें।

उत्तर- हिमाचल प्रदेश में अनुसूचित जाति संघ की स्थापना 1950 ई. में की गई तथा राम दास को इस का पहला महासचिव

बनाया गया। इस दल ने नवम्बर, 1951 में हिमाचल में हुए विधानसभा चुनावों में अपने 9 उम्मीदवार खड़े किये तथा 2 स्थानों पर विजय प्राप्त भी की। इस दल का मुख्य उद्देश्य अनुसूचित जाति के लोगों की उच्च जाति के लोगों से रक्षा करना था।

11. आधुनिक हिमाचल का निर्माण

प्रश्न 1. पहाड़ी प्रान्त बनाने की मांग कब तथा किसने की?

उत्तर - 21 दिसम्बर, 1947 को हिमालयन हिल स्टेट्स रीजनल कौंसिल का अधिवेशन सत्यदेव बुशैहरी के नेतृत्व में शांगरी रियासत की राजधानी बड़ागांव में हुआ, जिसमें भागमल सौहटा, स्वामी पूर्णानन्द, सदाराम, ठाकुर हरिदास, सूरत प्रकाश आदि नेता शामिल हुए। इस अधिवेशन में पहाड़ी रियासतों को मिलाकर पहाड़ी प्रांत बनाने की केन्द्रीय सरकार से मांग की गई।

प्रश्न 2. शिमला की पहाड़ी रियासतों के सम्मेलन में क्या मांग की गई?

उत्तर - 26 से 28 जनवरी, 1948 तक राजाओं और प्रजामण्डल के प्रतिनिधियों का सम्मेलन बघाट के राजा दुर्गा सिंह की अध्यक्षता में सोलन के दरबार हाल में हुआ। इसमें केवल शिमला की पहाड़ी रियासतों ने भाग लिया। इस सम्मेलन में सभी ने ''हिमालय प्रान्त'' और ''रियासती संघ'' के प्रस्तावों पर विचार किया। साथ ही चम्बा, मण्डी, बिलासपुर, सुकेत, सिरमौर आदि शासकों व प्रजामण्डल के नेताओं से बातचीत करने का प्रस्ताव भी रखा गया। इसी सभा में प्रस्तावित संघ का नाम ''हिमालय प्रदेश'' रखा गया।

प्रश्न 3. प. पद्म देव तथा डॉ. परमार का नये पहाड़ी प्रांत के निर्माण के बारे में क्या विचार थे?

उत्तर - ''हिमालय हिल स्टेट्स सब-रीजनल कौंसिल'' के सदस्य पं. पद्मदेव और डॉ. यशवन्त सिंह परमार रियासती संघ के प्रस्ताव के विरुद्ध थे। उन्होंने भी जनवरी 1948 को आल इण्डिया स्टेट्स पीपुल्स कान्फ्रेंस के संरक्षण में शिमला में बैठक की। डॉ. यशवन्त सिंह परमार ने इस बैठक की अध्यक्षता की और कहा कि उन्हें संघ का प्रस्ताव तभी स्वीकार किया होगा, जब सत्ता लोगों के हाथों में दी जाये और प्रत्येक राज्य को विलीन करके ''हिमालय प्रान्त'' स्थापित किया जाये।

प्रश्न 4. पद्म देव के नेतृत्व में सुकेत सत्याग्रह का वर्णन करें अथवा सुकेत रियासत पर भारत के अधिकार का वर्णन करें।

उत्तर - प. पदमदेव, शिवनन्द रमौल, डा. देवेन्द्र सिंह, स्वामी पूर्णाचन्द, सदाराम चन्देल, रत्न सिंह आदि सत्याग्रही समूह के साथ 25 फरवरी, 1948 को सुकेत की राजधानी सुन्दरनगर पहुंच गये। रियासत की फौजी टुकड़ी ने हथियार डाल दिये और राजा लक्ष्मण सेन सीधे दिल्ली चले गये। ऐसे में सत्याग्रहियों ने रियासत पर अधिकार कर लिया। अगले दिन केन्द्रीय सरकार की ओर से जालन्धर के चीफ कमिश्नर लै. ज. नगेश दत्त तथा धर्मशाला स्थित कांगड़ा के डिप्टी कमिश्नर कन्हैया लाल फौजी टुकड़ी के साथ सुन्दरनगर पहुँच गए और चीफ कमिश्नर नगेश दत्त ने सुकेत रियासत पर भारत सरकार के अधिकार की घोषणा कर दी।

प्रश्न 5. हिमाचल प्रदेश का जन्म कैसे हुआ?

उत्तर - 8 मार्च 1948 ई. को शिमला की पहाड़ी रियासतों के राजाओं ने विलय पत्र पर हस्ताक्षर कर दिये। भारत के राज्य मन्त्रालय (मिनिस्ट्री आफ स्टेट्स) के सचिव ने केन्द्रीय सरकार की ओर से पहाड़ी रियासतों के विलय से एक अलग प्रान्त ''हिमाचल प्रदेश'' के गठन की प्रक्रिया आरम्भ हुई। हिमालयन हिल स्टेट्स सब-रीजनल कौंसिल (परमाल पद्मदेव धड़ा) ने ''हिमाचल प्रदेश'' नाम का ही अनुमोदन किया। इस प्रकार ''हिमाचल प्रेदश'' का जन्म हुआ।

प्रश्न 6. चम्बा का हिमाचल प्रदेश में किस प्रकार विलय हुआ?

उत्तर - चम्बा के राजा लक्ष्मण सिंह अपनी रियासत को हस्तान्तरित करने से झिझक रहे थे। अत: चम्बा में प्रजा मण्डल सत्याग्रह पर उतर आये। राजा ने सत्याग्रह को कुचलने का पूरा प्रयास किया। अन्त में हतोत्साहित होकर भारत सरकार से पुलिस तथा सेना भेजने के लिये आग्रह किया। अत: सरकार ने पुलिस भेजी। सरकार ने राजा को विलय-पत्र पर हस्ताक्षर करने हेतु कहा और राजा ने विवश होकर हस्ताक्षर कर दिये।

प्रश्न 7. सिरमौर रियासत का हिमाचल प्रदेश में किस प्रकार विलय हुआ?

उत्तर - सिरमौर के महाराजा राजेन्द्र प्रकाश अन्तिम घड़ी में भी अपनी रियासत को बचाने का पूरा प्रयास करते रहे। उन्होंने सुझाव दिया कि सिरमौर में जनमत करवाया जाये, जिससे जनता की इच्छा का पता चल जाये। उनकी यह बात

मान ली गई और मार्च 1948 ई. को केन्द्र से वित्त सचिव इ.पी. कृपलानी नाहन पहुँचे। उन्होंने महाराजा सिरमौर के साथ नाहन चौहान में विशाल जनसभा को सम्बोधित किया और 23 मार्च 1948 ई. को विलय पत्र पर महाराजा राजेन्द्र प्रकाश के हस्ताक्षर करवाकर सिरमौर रियासत को भी हिमाचल प्रदेश में मिला दिया।

प्रश्न 8. नव निर्मित हिमाचल प्रदेश का प्रशासनिक ढांचा कैसा था?

उत्तर - नव निर्मित हिमाचल को केन्द्र शासित चीफ कमिश्नर्ज़ का दर्जा दिया गया। हिमाचल प्रदेश के अस्तित्व में आने पर एन.सी. मेहता हिमाचल प्रदेश के पहले चीफ कमिश्नर नियुक्त हुए और पैन्डूल मून ने डिप्टी चीफ कमिश्नर के रूप में कार्यभार संभाला। शिमला हिल स्टेट्स की 26 छोटी-बड़ी रियासतों को मिलाकर ''महासू'' ज़िला बना दिया गया। मण्डी और सुकेत की रियासतों को एक कर के मण्डी ज़िला का नाम दिया गया। चम्बा और सिरमौर के दो अलग-अलग ज़िले बना दिये गये। 1948 में इन चार ज़िलों में 23 तहसीलें बनाई गईं।

प्रश्न 9. बिलासपुर रियासत के हिमाचल प्रदेश में विलय का संक्षिप्त वर्णन करें।

उत्तर : बिलासपुर का राजा आनन्द चन्द आरम्भ से ही बिलासपुर के भारतीय संघ में विलय करने का विरोध करता आ रहा था। वह स्वतन्त्र कहलूर की बात करता था। राज्य मन्त्रालय के सचिव ने राजा आनन्द चन्द से दिल्ली और बिलासपुर में कई बार बातचीत की। अन्त में राजा ने 15 अगस्त 1948 को विलय पत्र पर हस्ताक्षर कर दिये और बिलासपुर को अलग से चीफ कमिश्नर अधीनस्थ प्रान्त बना दिया गया।

प्रश्न 10. हिमाचल में क्षेत्रीय परिषद् के चुनाव का वर्णन करें।

उत्तर : 1957 ई. में क्षेत्रीय परिषद् (टेरीटोरियल कौंसिल) के लिये चुनाव हुये। ठाकुर कर्म सिंह ने 15 अगस्त 1957 ई. को परिषद् के अध्यक्ष की शपथ ली। प्रशासन के सभी अधिकार उप-राज्यपाल के पास थे। प्रदेश के विकास कार्य तथा वित्त व अर्थव्यवस्था जैसे मामलों में इसकी कोई पूछताछ नहीं थी। लोग इस प्रशासकीय प्रणाली से सन्तुष्ट नहीं थे। अत: प्रजातन्त्र की पुन: प्राप्ति के लिये उन्होंने अपना शान्तिमय संघर्ष चालू रखा।

प्रश्न 11. पंजाब के पहाड़ी क्षेत्रों के हिमाचल प्रदेश में विलय का संक्षिप्त वर्णन करें।

उत्तर : भारत सरकार ने ''पंजाब स्टेट रि-आर्गेनाईजेशन एक्ट 1965'' संसद् में प्रस्तुत किया और इसके विधेयक बनने पर पहली नवम्बर 1966 ई. को कांगड़ा, कुल्लू, लाहौल-स्पीति, शिमला, नालागढ़, कण्डाघाट, ऊना, डलहौज़ी आदि क्षेत्र हिमाचल प्रदेश में मिला दिये। इस प्रकार इन क्षेत्रों के विधानसभा के सदस्य हिमाचल विधानसभा के सदस्य बन गए। इस प्रकार चिनाव रावी नदी से लेकर युमना नदी तक का समस्त पहाड़ी क्षेत्र एक होकर ''विशाल हिमाचल'' बन गया।

प्रश्न 12. हिमाचल प्रदेश को किस प्रकार सम्पूर्ण राज्य का दर्जा मिला?

उत्तर : मुख्यमंत्री डॉ. यशवन्त सिंह परमार के नेतृत्व में हिमाचल प्रदेश सरकार ने पूर्ण राज्य की मांग केन्द्रीय सरकार के समक्ष उठाई। 31 जुलाई 1970 ई. को प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने लोकसभा में हिमाचल प्रदेश को पूर्ण राज्य का दर्जा देने की घोषणा की। तत्पश्चात् दिसम्बर 1970 में संसद् में ''स्टेट ऑफ हिमाचल प्रदेश एक्ट 1971'' पेश करके पारित किया गया। 25 जनवरी 1971 ई. को प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने शिमला आकार रिज मैदान में हज़ारों हिमाचल वासियों के सामने हिमाचल प्रदेश का 18वें पूर्ण राज्य के रूप में उद्घाटन किया।

12. आधुनिक हिमाचल में समाज

प्रश्न 1. हिमाचल वासियों की वेषभूषा का संक्षिप्त वर्णन करें।

उत्तर– हिमाचल के पुरुषों के पहाड़ी लिबास में बुशैहरी टोपी और कोटनुमा ''लोइए'' का विशेष स्थान रखती है। अब अधिकतर मैदानों की तरह स्त्रियां, कमीज़-सलवार या विशेष अवसरों पर साड़ी और पुरुष कमीज़-पायजामा या पैंट-कोट पहनते हैं।

प्रश्न 2. हिमाचल के लोगों के आभूषणों का संक्षिप्त वर्णन करो।

उत्तर–हिमाचल के प्रसिद्ध आभूषण नाक के बाईं ओर पहने जाने वाला गोलाकार लौंग, नाक के दोनों नत्थूनों के मध्य भाग में होंठों की तरफ लटकने वाली मुरकी, तिल्ली, काँटे या बालियाँ हैं। सोने या चांदी का सिर पर लगाया जाने वाला ऊंचा गोलाकार

चक्र, चांदी के लम्बे बाजुओं में पहने जाने वाले चूहे, गले का चांदी या सोने का हार व पैरों में पहने जाने वाली पायल हैं।

प्रश्न 3. 'हार' नामक विवाह पर संक्षिप्त नोट लिखें।

उत्तर– हिमाचल के मध्य भाग में जब कोई लड़का मेले, किसी शादी आदि में से किसी लड़की को जबरदस्ती उठाकर शादी कर लेता है या लड़की लड़के के साथ स्वयं भाग जाती है तो इसे 'हार' विवाह कहा जाता है। ऐसी सूरत में लड़के के मां-बाप बाद में लड़की के मां-बाप से समझौता करके उनके लड़के द्वारा किये गए काम के कारण बेइज्जती की क्षतिपूर्ण के लिए 100 से 500 रुपये तक और बकरा आदि देते हैं। किन्नौर इलाके में ऐसी शादी को दुबदुब, चुचिस या खुटकिमा कहते हैं।

प्रश्न 4. 'रीत' नामक विवाह का संक्षिप्त वर्णन करें।

उत्तर–जब पति-पत्नी में अनबन हो जाती है और वे इकट्ठे नहीं रह सकते तो लड़की अपने मां-बाप के घर चली जाती है और लड़की का बाप पिछले पति को पैसा देकर बिना कोई औपचारिक तलाक लिए छुड़ा लेता है। उसे रीत कहा जाता है। दूसरी शादी करने की स्थिति में यह रीत दूसरे पति द्वारा दी जाती है अर्थात् रीत का सारा खर्च लड़की के होने वाले पति द्वारा दिया जाता है।

प्रश्न 5. हिमाचल में सिद्ध पूजा पर नोट लिखें।

उत्तर–प्राचीन समय में तपस्या व भक्ति में निपुण होने के बाद ही सर्वशक्तिमान व्यक्ति को 'सिद्धि' का अवतार कहा गया है। हिमाचल में प्रमुख सिद्ध मन्दिर देहरा में बालकरूपी, बाबा बालक नाथ (दियोट सिद्ध) सम्पूर्ण उत्तर-भारत में प्रसिद्ध हैं।

प्रश्न 6. हिमाचल में किन-किन देवियों की पूजा का प्रचलन है?

उत्तर–देवी को शक्ति पीठों के रूप में पूजने का प्रचलन प्राचीन काल से होता रहा है। हिमाचल में भी देवी शक्तियों की पूजा का इतिहास पुराना है। यहां भीमाकाली, नयनादेवी, ज्वाला जी, चामुण्डा देवी, बगुला माता, कुसुम्बा देवी, कामना देवी के अतिरिक्त काली दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती की पूजा भी प्रत्येक घर में की जाती है। नवरात्रों व धार्मिक दिनों में देवी की अराधना बड़े जोर-शोर से की जाती है। ज्वाला जी माता (ज्वालामुखी) के मन्दिर में रात्रि को कीर्तन होता है।

प्रश्न 7. हिमाचल में नाग पूजा का क्या महत्त्व है?

उत्तर– पहाड़ों में लाल रंग के सर्प की पूजा देवता का प्रतीक मान कर की जाती है। लोगों का अटूट विश्वास है कि यह लाल रंग का सर्प रूपी देवता उनकी धन-सम्पत्ति की रक्षा करता है। हिमाचल में नाग देवता के मन्दिरों में प्रमुख कामरू व माहुनाग (मंडी) देट व ज्मालिया नाग (कांगड़ा), नागनी देवी (नूरपुर), कंधारल-घूंड नाग (शिमला) बढुआ नाग (किन्नौर) चमाण नाग (कुल्लू), वासुकि नाग (चम्बा) आदि हैं। लोगों ने नाग के प्रति श्रद्धा स्वरूप 'नाग' रूपी मूर्तियां घरों व मन्दिर में स्थापित की हैं।

प्रश्न 8. महासू देवता पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर– महासू देवता को महाशिव का प्रतिरूप ही अंगीकार किया गया है। यह देवता एक देवता न होकर भोटू, पव्वर, वाशिक, चालहु नामक चार भ्राता-देवी का एक समूह है। महासू की पूजा लोगों द्वारा हर गांव व अपने घरों में ईष्ट देव के रूप में भी की जाती है, क्योंकि इसे शिव के रूप में ही माना जाता है। ये मुख्यत: शिमला ज़िला के ऊपरी क्षेत्रों का प्रमुख देवता हैं।

प्रश्न 9. हिमाचल में ऋषि पूजा के प्रचलन पर नोट लिखें।

उत्तर– ऋषि पूजा का प्रचलन भी हिमाचल में अतीत काल से चला आ रहा है। पहाड़ों में प्रवेश करने वाले प्रमुख ऋषि मार्कण्ड, ब्यास, वशिष्ट, शुकदेव, लोमष, श्रृंग, माडव्य, जमदग्नि तथा वाल्मिकी ऋषि आदि हैं। हिमाचल में ऋषियों से संबधित कई मन्दिर भी बने है। इनसें से प्रमुख बिलासपुर में मार्कण्ड व ब्यास ऋषि के, सुन्दरनगर में शुकदेव के, मंडी में माडव्य व लोमष ऋषि के, सिरमौर में जमदग्नि ऋषि के मन्दिर है। कुल्लू में भी श्रृंग व वशिष्ठ आदि के मन्दिर बने हैं।

प्रश्न 10. राज्य स्तरीय मेलों से क्या अभिप्राय है? हिमाचल के राज्य स्तरीय मेले कौन-कौन से हैं?

उत्तर–हिमाचल में कुछ मेले सरकार द्वारा अनुमोदित होते हैं। इसमें सभी सुविधाएं सरकार द्वारा प्रदान की जाती हैं। ऐसे मेलों को राज्य स्तरीय मेले कहा जाता है। इन मेलों में सरकार की ओर से समूची व्यवस्था प्रबंध, चिकित्सा सुविधा, कानून व्यवस्था, मनोरंजन किया-कलाप तथा दूसरी अन्य अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता तथा सांस्कृतिक कला कृतियों का आयोजन किया जाता है। इन राज्य स्तरीय मेलों में प्रमुख मिञ्जर मेला (चम्बा), शिवरात्रि (मंडी), दशहरा (कुल्लू), लवी (रामपुर) आदि शामिल हैं।

प्रश्न 11. रेणुका मेले पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर–रेणुका माता की याद में यह मेला ज़िला सिरमौर में आयोजित होता है। जमदग्नि ऋषि (परशु राम के पिता) का राजा सहर्स्वाजुन ने वध कर दिया था। इसके पश्चात् जमदग्नि की पत्नी रेणुका ने झील में कूद कर आत्महत्या कर ली थी। दूसरी मान्यता है कि परशु राम ने अपनी माता रेणुका का पिता जमदग्नि के आदेश पर वध कर दिया था। आज भी लोग हज़ारों की संख्या में कार्तिक मास में एकादशी के दिन मेले में आकर यहां पूजा-अर्चना करते हैं।

प्रश्न 12. बाबा बालक नाथ के मेले पर नोट लिखें।

उत्तर–यह मेला दियोट सिद्ध नामक स्थान में बाबा बालक नाथ (संयासी बालक) की चमत्कारी शक्ति को याद करने लिए मनाया जाता है। धारणा है कि बाबा बालक नामक का जन्म गिरिनार काठियावाड़ (जूनागढ़ राज्य) में हुआ था। यह चमत्कारी बालक तलाई बिलासपुर के आसपास भी घूमता रहा, जहां वह पशु–चराता रहता था। दियोट सिद्ध में बालक ने सिद्धि प्राप्त की। बाबा की याद में ही इस मेले में रोटियों (रोट) को श्रद्धलुओं में बांटा जाता है।

प्रश्न 13. सुन्दरनगर के नलवाड़ी मेले का संक्षिप्त वर्णन करें।

उत्तर–यह मेला 9 से 17 चैत्र (मार्च) तक मनाया जाता है। यह प्रदेश का सबसे बड़ा पशु मेला है। इस पशु मेले में ज़िला मंडी, कांगड़ा, बिलासपुर तथा हमीरपुर तक के कृषक बैल खरीदने आते हैं। राजा चेतसेन ने यह मेला आरम्भ किया और इसका नाम नलवाड़ रखा। यह मेला लिंडी खड्ड में एक किलोमीटर से ऊपर के क्षेत्र में मनाया जाता है। दूर-दूर तक खड्डें तथा आस-पास के क्षेत्रों में पशु–ही–पशु दिखाई देते हैं। पशु मेले के साथ-साथ अब सुन्दर नगर बाज़ार तथा आगे तक दुकानें सजती हैं।

प्रश्न 14. हिमाचल में दशहरा पर्व पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर–यह त्यौहार आश्विन के नवरात्रों के अन्त में मनाया जाता है। यह त्यौहार भारत में मनाये जाने वाले विजय दशमी के त्यौहार की तरह ही हिमाचल प्रदेश में भी मनाया जाता है। देश भर में हिमाचल में कुल्लू के दशहरे का विशेष स्थान है। यह मेला सात दिन तक चलता है, जिसे देश-विदेश से लोग देखने के लिए आते हैं।

प्रश्न 15. हिमाचल की नाटी नृत्य पर नोट लिखें।

उत्तर–हिमाचल के मध्य क्षेत्रों की देश प्रसिद्ध सामूहिक नृत्य नाटी है, जिसे शिमला क्षेत्र में 'गी' या 'माला' भी कहते हैं। नाटी में स्त्री–पुरुष, बच्चे -बूढ़े सभी लोग भाग ले सकते हैं। सभी एक -दूसरे का हाथ पकड़ कर पैर आगे-पीछे रखते हुए और गाने की लय के अनुसार शरीर के अन्य अंगों को हिलाते हुए नाचते हैं। खुले स्थान में लकड़ी का अंगीठा जला दिया जाता है और उसके चारों ओर नृत्य चलता रहता है। फटी-नाटी, देहरी-नाटी, बुशैहरी -नाटी, बाहड़ु-नाटी कड़थी-नाटी, लाहौली, बखैली, खरैत, गड़भी, दयोखल और जोण-नाटी आदि प्रमुख हैं।

प्रश्न 16. बुहाड़ नृत्य क्या है?

उत्तर–बुहाड़ नृत्य सिरमौर में किया जाने वाला प्रसिद्ध लोक नृत्य है। यह दीवाली या अन्य उत्सवों के समय 10-15 आदमियों की टोली द्वारा सामूहिक तौर पर किया जाता है। 4-5 आदमी हुड़की (वाद्य यंत्र) बजाते हैं और शेष डांगरों को हाथ में लिये गीत गाते हुये नृत्य करते हैं। इन गीतों में वीर-गाथाओं का वर्णन होता है। इस नृत्य में दाएं से बाएं तेजी से नाचा जाता है। मर्द पहले चलते हैं और औरतें उनका अनुकरण करती हैं।

प्रश्न 17. कायांग नृत्य पर नोट लिखिए।

उत्तर–कायांग नृत्य किन्नौरों का प्रसिद्ध लोक नृत्य है, जिसमें मर्द और औरतें अर्द्ध-वृत्त बनाते हैं। बाज को (यंत्र बजाने वाले) मध्य में खड़े होते हैं। पुरुषों की टोली का एक वृद्ध पुरुष और स्त्रियों की टोली की एक वृद्ध स्त्री नेतृत्व करते हैं। धुनों के अनुसार कदमों की चाल रखते हैं । जैसे ही नृत्य में गति आती जाती है, पूरा वृत्त बना लिया जाता है और प्रत्येक व्यक्ति अपने से तीसरे का हाथ पकड़ता है। टोली का नेता "हो" "हो" कहता है।

प्रश्न 18. करियल लोक नृत्य पर संक्षिप्त नोट लिखें।

उत्तर–यह मध्य भाग के शिमला आदि क्षेत्रों का मुख्य लोक-नृत्य है। इस नाट्य को खेलने वाले, बुलावा मिलने पर गांव में खुले स्थान में कहीं भी इसका प्रदर्शन शुरू कर देते हैं। इस करियाल लोक-नृत्य को बिलासपुर में स्वांग, मंडी में बांठड़ा और कांगड़ा में भगतु और इसके कलाकारों को क्रमशः करियालची, स्वांगची, बांटड़िए और भगतिए कहा जाता है। इनके पास अपने वस्त्र होते हैं, जिनका समय-समय पर पात्रों की भूमिका के अनुसार प्रयोग किया जाता है।

प्रश्न 19. अखाड़ा से क्या अभिप्राय है?

उत्तर–करियाला के मंच को अखाड़ा कहते हैं। अखाड़े में धूनी (आग की अंगीठी) जलाई जाती है। असली नाटक शुरू होने से पहले बाजकी ढोल, नगाड़ा, डामण, डौरु, कानल और रण सिंगा आदि बजाने के लिए अपना स्थान ग्रहण कर लेते हैं। किसी कमरे को या बाहर पर्दे लगाकर कलाकारों के लिए कपड़े आदि बदलने के लिए स्थान बना लिया जाता है। सबसे पहले एक कलाकार स्त्री के रूप में जिसे चन्द्रावली कहते हैं और दूसरा सिद्धा के रूप में बड़े ठाट-बाट से पर्दे के पीछे से दर्शकों के मध्य होते हुए अखाड़े में पहुंचते हैं। ये दोनों धूनी के चारों ओर नाचते हैं इसे अखाड़ा बांधना कहा जाता है।

13. हिमाचल की अर्थव्यवस्था

प्रश्न 1. शिवालिक पहाड़ी खण्ड का संक्षिप्त वर्णन करें।

उत्तर–शिवालिक पहाड़ी क्षेत्र समुद्र तल से लगभग 800 मीटर तक की ऊंचाई पर है। इस क्षेत्र में ऊना, हमीरपुर, बिलासपुर, कांगड़ा, सोलन, चम्बा आदि के ज़िले शामिल हैं। इसके कुल क्षेत्र में से 33% कृषि योग्य क्षेत्र आता है। इस खण्ड में प्रमुख फसलें गेहूँ, मक्की, धान, चना, गन्ना, सरसों आदि की हैं। आलू, अन्य सब्ज़ियाँ और संगतरा, आम-अमरूद, लीची, और नींबू प्रजाति के फल आदि भी उगाए जाते हैं।

प्रश्न 2. मध्य पहाड़ी खंड का संक्षिप्त वर्णन करें।

उत्तर–मध्य पहाड़ी खंड समुद्र तल से 800 मीटर से लेकर 1600 मीटर तक की ऊंचाई पर है। इस क्षेत्र में पालमपुर, रामपुर, शिमला तथा मंडी, सोलन, कुल्लू और चम्बा के कुछ भाग शामिल हैं। यहां वार्षिक वर्षा लगभग 180 सै. मी. तक होती है। मुख्य फसलें मक्की, गेहूँ, माश, जौ, सेम और धान आदि होती हैं। यह खण्ड नकदी फसलें पैदा करने के लिए उपयुक्त है। बेमौसमी सब्ज़ियों, अदरक और फलों में नाशपती, पलम, खुर्मानी और अखरोट आदि प्रमुख हैं। इस क्षेत्र में उच्च च किस्म के गोभी, मूली के बीज तैयार किए जाते हैं।

प्रश्न 3. हिमाचल के ठण्डा-शुष्क खण्ड पर संक्षिप्त नोट लिखें।

उत्तर–इसके अन्तर्गत लाहौल-स्पीति, किन्नौर जिले तथा चम्बा जिले के पांगी तहसील आते हैं जो समुद्र तल से लगभग 2700 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। इस क्षेत्र में लाहौल-स्पीति, किन्नौर, पांगी आदि शामिल हैं। पूरा क्षेत्र शुष्क जलवायु वाला है। वार्षिक वर्षा 20 सै. मी. तथा गर्मियों के मौसम में होती है। सर्दियों में यहां भारी हिमपात होता है। इस खण्ड में अच्छी किस्म के बीज आलू, सेब, अंगूर, बादाम, अखरोट, खुर्मानी आदि की काश्त की जाती है।

प्रश्न 4. हिमाचल में गेहूँ उत्पाद पर नोट लिखें।

उत्तर–हिमाचल में सभी पैदा की जाने वाली फसलों में गेहूँ का प्रथम स्थान है। इसे सितम्बर -अक्तूबर के मध्य में बोया जाता है और अप्रैल-जून में काट लिया जाता है। अधिक ऊंचे क्षेत्रों में केवल वर्ष में एक ही फसल पैदा होती है। राज्य में 38 प्रतिशत भूमि पर गेहूं की कृषि की जाती है। हमीरपुर, बिलासपुर, कांगड़ा, किन्नौर तथा लाहौल-स्पीति गेहूं उत्पादन के प्रमुख क्षेत्र हैं।

प्रश्न 5. हिमाचल में धान की फसल पर संक्षिप्त नोट लिखिए।

उत्तर–धान हिमाचल प्रदेश की एक महत्त्वपूर्ण फसल है। धान की कृषि 57. 3 पूरे सिंचित क्षेत्र के प्रतिशत भाग पर की जाती है। प्रदेश में केवल 6 प्रतिशत क्षेत्र में धान ऐसे क्षेत्रों में पैदा किया जाता है, जहां सिंचाई की सुविधा उपलब्ध नहीं है। लाहौल-स्पीति और किन्नौर ज़िलों को छोड़कर शेष पूरे प्रदेश में धान की खेती की जाती है। ज़िला मण्डी और कांगड़ा को धान के उत्पादन में विशेष दर्जा प्राप्त है। प्रदेश में धान का उत्पादन औसतन 1,202 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर हैं, जो समस्त भारत की औसत से अधिक है।

प्रश्न 6. हिमाचल में मक्का उत्पादन का संक्षिप्त वर्णन करें।

उत्तर–हिमाचल प्रदेश में मक्की निचले क्षेत्रों में बोई जाती है। राज्य में मक्की की कृषि लगभग 3.10 लाख हैक्टेयर क्षेत्र में की जाती है व उत्पादन लगभग 8 लाख टन तक पहुंच गया है। हिमाचल प्रदेश में मक्की की कृषि मुख्य रूप में कांगड़ा, हमीरपुर, बिलासपुर, मण्डी, कुल्लू व चम्बा ज़िलों में की जाती है।

प्रश्न 7. हिमाचल में आलू उत्पादन का संक्षिप्त वर्णन करें।

उत्तर–आलू और बीज-आलू की पैदावार के लिए हिमाचल अपना विशेष स्थान रखता है। केवल हिमाचल प्रदेश में ही बीज आलू की विभिन्न किस्में पैदा की जाती हैं। इसलिए इसे बीज आलू का घर कहा जाता है। आलू चम्बा, कुल्लू, लाहौल, शिमला, मण्डी और सिरमौर के ऊंचे स्थानों में पैदा किया जाता है। हिमाचल का आलू निर्यात भी होता है।

प्रश्न 8. हिमाचल में अदरक के उत्पादन का संक्षिप्त वर्णन करें।

उत्तर- अदरक मुख्यत: सिरमौर, शिमला और सोलन ज़िलों में बोया जाता है। हिमाचल प्रदेश में अदरक की खेती 2551 हैक्टेयर क्षेत्र में की जाती है। इस समय प्रदेश के नौ ज़िलों में अदरक की खेती की जा रही है। सबसे अधिक अदरक ज़िला सिरमौर में उगाया जाता है। इसके अतिरिक्त अदरक की खेती सोलन, बिलासपुर, कांगड़ा, मण्डी, हमीरपुर, कुल्लू तथा चम्बा ज़िलों में की जाती है।

प्रश्न 9. हिमाचल में बेमौसमी सब्जियों के उत्पादन का संक्षिप्त वर्णन करें।

उत्तर- हिमाचल प्रदेश में कांगड़ा में पपरोला, बैजनाथ, नगरोटा और जमानाबाद, सोलन में सपरून, कण्डाघाट, चायल, सिरमौर जिले में राजगढ़, शिमला में ठियोग, शोघी, घणाहट्टी, मण्डी में नगवाई, कुल्लू में बजौरा, चम्बा में डलहौज़ी, लाहौल में पटून आदि बेमौसमी सब्ज़ी उत्पादन के लिए प्रमुख केन्द्र हैं। हिमाचल प्रदेश में प्रति वर्ष लगभग 150 करोड़ रुपये की बेमौसमी सब्ज़ियों का उत्पादन होता है। हिमाचल प्रदेश को अब बेमौसमी सब्ज़ी उत्पादन के लिए ''ग्रीन हाऊस'' की संज्ञा दी गई है।

प्रश्न 10. कुल्लू में सेब उत्पादन के आरम्भ पर नोट लिखें।

उत्तर- हिमाचल प्रदेश में सबसे पहले सेब का बगीचा कुल्लू घाटी के बंदरोल गांव में लगाया गया। यह बगीचा सन् 1860 ई. के आसपास रिटायर्ड ब्रिटिश सेना अधिकारी कैप्टन आर. सी. ली ने लगाया था। ब्रिटेन डैविनशायर के कैप्टन आर. सी. ली ने सन् 1860 ई. को बन्दरोल में 250 बीघा भूमि खरीदी। इन्होंने इसी भूमि पर सन् 1870 ई. में सेब के साथ नाशपती, चेरी, पलम आदि फलों के पौधे भी लगवाए। इसके बाद उन्होंने बन्दरोल से कुछ दूर डोभी में 20 एकड़ जमीन खरीद कर सेब का बगीचा लगाया।

प्रश्न 11. शिमला में सेब उत्पादन के आरम्भ पर नोट लिखें।

उत्तर- शिमला में सर्वप्रथम सेब का बगीचा 1887 ई. में मशोबरा में एलैग्ज़ैंडर कॉऊट नामक व्यक्ति ने लगाया था। शिमला जिले में सेब की ब्रिटिश किस्म सर्वप्रथम एलैग्जैन्डर। शिमला जिले के कोटगढ़ में सेब का बगीचा सबसे पहले सत्यानंद स्टोक्स (सेम्युल इवांस स्टोक्स) ने लगाया। सन् 1918 ई. को कोटगढ़ानन्द स्टोक्स ने सेब की मीठी किस्म का बगीचा लगवाया। हिमाचल प्रदेश में सबसे अधिक सेब शिमला जिले में होता है।

प्रश्न 12. हिमाचल में अंगूर के उत्पादन पर चर्चा कीजिए।

उत्तर- अंगूर का उत्पादन शुष्क शीतोष्ण क्षेत्र, किन्नौर, लाहौल-स्पीति और निचले पर्वतीय क्षेत्र कांगड़ा, मण्डी, शिमला के निचले इलाके तथा सिरमौर की पाँवटा घाटी में किया जाता है अंगूर का पौधा बेल की तरह होता है तथा इसके फल गुच्छों में लगते हैं, विदेशों में अंगूर से ज्यादातर शराब बनाई जाती है। इन्हें ताजा फलों के रूप में तथा किशमिश तथा ताज़े रस के रूप में भी प्रयोग किया जा सकता है।

प्रश्न 13. हिमाचल में नींबू प्रजाति के फलों पर संक्षिप्त नोट लिखिए।

उत्तर- नींबू प्रजाति के फल सामान्यत: उपोष्ण देशीय क्षेत्रों में उगाए जाते हैं। यहां की जलवायु उनके लिए अत्यधिक उपयुक्त मानी जाती है। हिमाचल में शिवालिक घाटी के निम्न ऊँचाई के क्षेत्रों में उनकी पैदावार अधिक होती है। सन्तरा और विशेषकर नींबू प्राति के फल अपेक्षाकृत ठण्डे क्षेत्रों में भी उगाए जा सकते हैं। उत्तम प्रकार के माल्टे पैदा करने के लिए अपेक्षाकृत गर्म तथा शुष्क जलवायु अधिक अच्छी समझी जाती है। कागज़ी नींबू केवल उन्हीं क्षेत्रों में अधिक अच्छा होता है, जहां ओस का प्रकोप नहीं होता।

प्रश्न 14. हिमाचल में मधुमक्खी पालन पर नोट लिखें।

उत्तर- हिमाचल प्रदेश में मधु-मक्खी पालन कृषि के साथ-साथ किसानों का एक प्रमुख धन्धा बन गया है। लगभग 1500 किसान इस धन्धे में अब तक जुड़ चुके हैं, जिन्होंने लगभग 83 हजार मधुमक्खी छत्ते बना रखे हैं। बागवानी विभाग में भी मधुमक्खियों के 32 स्थान बना रखे हैं जिनमें 1500 मधु-मक्खी छत्ते बने हैं। हिमाचल का बागवानी विभाग किसानों के नये छत्ते बनाने के लिए प्रोत्साहित करता है तथा उन्हें मधु-मक्खियां भी देता है।

प्रश्न 15. हिमाचल के डेयरी उद्योग पर नोट लिखें।

उत्तर- हिमाचल में डेयरी उद्योग का काफी विकास हुआ है। इस समय प्रदेश में मिल्क फैड की 1759 दूध उत्पादन

कोआपरेटिव सोसायटियां स्थापित हैं। दूध उत्पादकों के अतिरिक्त ये सोसायटियां दूध इकट्ठा करती हैं तथा हिमाचल प्रदेश का दुग्ध विभाग दूध को बाज़ार में भेजता है। इस समय हिमाचल प्रदेश मिल्कफेड के 21 केन्द्र स्थापित हैं, जो प्रतिदिन 70 हजार लिटर दूध का शीतकरण करते हैं तथा 8 दूध के केन्द्र 85 हज़ार लिटर दूध को प्रतिदिन परिष्कृत किया जाता है।

प्रश्न 16. हिमाचल में पशुपालन पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर- हिमाचल प्रदेश के लगभग 90 प्रतिशत परिवार पशुपालन का धन्धा करते हैं। पशु पालन में भेड़ पालन सबसे प्रमुख है। सरकार ने भेड़ प्रजनन के लिए ज्यूरी (शिमला), सराल (चम्बा), ताल (हमीरपुर) तथा करछम (किन्नौर) में फार्म खोले हैं। जिला मण्डी के नगवेन में भी एक मेढा केन्द्र भी खोला है, जहां मेढ़ा की सुधरी हुई किस्मों की नस्ल पैदा की जाती है। कांगड़ा ज़िले के कन्टवाडी तथा मण्डी ज़िला के नगवाई में अंगोरा खरगोश फार्म भी खोले गए हैं। हिमाचल के लाहौल-स्पीति में घोड़ा प्रजनन फार्म भी स्थापित किया गया है।

प्रश्न 17. 1972 के भूमि सीमा निर्धारण एक्ट की दो धाराएं लिखिए।

उत्तर- (1) एक परिवार जिसमें पति-पत्नी तथा उनके तीन नाबालिग बच्चे हो, के लिए 10 एकड़ भूमि सीमा निश्चित की गई। इसकी शर्त यह थी कि भूमि सिंचित वर्ग की हो तथा वर्ष में दो फसलें उगाई जाती हों।

(2) यदि सिंचित भूमि पर वर्ष में एक फसल उगाई जाती है तो उसके लिए भूमि सीमा 15 एकड़ निश्चित की गई।

प्रश्न 18. हिमाचल के वनों में पाये जाने वाले वृक्षों तथा अन्य वनस्पति का वर्णन करें।

उत्तर- हिमाचल प्रदेश में देवदार, कैल, चील, रई, न्योजा देने वाली चील नुकीली पत्ती के वृक्ष पाये जाते हैं। न्योजा चील जिससे खाने का फल न्योजा मिलता है, किन्नौर में होती है। साल, बान, खडशु, बड़, पीपल, अखरोट, पापुलर, सेमल, तूहनी, जामुन और शीशम आदि चौड़ी पत्ती वाले वृक्ष हैं। वनों में स्वत: पैदा होने वाली जड़ी बूटियाँ भी पाई जाती हैं। जड़ी बूटियों में बणा, बसूंटी, बरया, वनख्शा, मुलहठी, पतीश, तेजपत्र, कड़ी पत्ता (गंधेला), कुठ, धूप, कक्कड़सिंगी, कडु, खैर से निकलने वाला कत्था आदि महत्त्वपूर्ण हैं।

प्रश्न 19. हिमाचल प्रदेश वन निगम का संक्षिप्त वर्णन करें।

उत्तर- निजी ठेकेदारों द्वारा जंगलों में काम करने से वन-सम्पत्ति का कई प्रकार से दुरुपयोग किया जाने लगा था। अत: 25 मार्च, 1974 से हिमाचल प्रदेश वन निगम की स्थापना की गयी। इसका उद्देश्य प्रदेश में वनों और उनकी सम्पदा का पूर्ण राष्ट्रीयकरण करके वनों पर आधारित उद्योगों का विकास करना तथा वन सम्पदा का विपणन आदि है। वनों के विकास के लिए वन उत्पादन अर्थात् विस्तृत रूप से वृक्ष लगाने और कई प्रकार के घास लगाकर चरागाहों का विकास करने के लिए सरकार ने कई योजनाएँ चलायी हैं।

प्रश्न 20. हिमाचल प्रदेश में चूने का पत्थर कहाँ-कहाँ पाया जाता है?

उत्तर- चूना पत्थर सीमेन्ट, चूना, कैल्शियम कारबाईट, रासायनिक खाद, कपड़ा उद्योग, चीनी कागज़ और स्टील उद्योगों में अलग-अलग मात्रा में प्रयोग होता है। सभी सीमेन्ट उद्योगों में इसका प्रयोग हो रहा है। यह ज़िला बिलासपुर, मण्डी, सिरमौर, सोलन, काँगड़ा व चम्बा में पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। बिलासपुर ज़िला में कोठीपुरा के आस-पास मैग्नीशियम वाला चूने का पत्थर पाया जाता है, जिसका उपयोग खाद बनाने के लिए नंगल की खाद फैक्टरी में किया जा रहा है।

प्रश्न 21. हिमाचल प्रदेश में चट्टानी नमक तथा खनिज पानी की उपलब्धता का वर्णन करें।

उत्तर- चट्टानी नमक हिमाचल प्रदेश के मण्डी में पाया जाता है। इसकी चट्टानें गुम्मा और द्रंग (मण्डी) क्षेत्र में विद्यमान हैं। यह नमक रवेदार पत्थर के रूप में पाया जाता है। खनिज पानी मनाली के समीप कालथ में झरने से उत्तम प्रकार का खनिज पानी मिलता है। ज्वालामुखी में कैल्शियम, सोडियम तथा आयोडीन युक्त पानी के झरने उपलब्ध हैं।

प्रश्न 22. हिमाचल प्रदेश में उद्योगों को कितने भागों में बांटा जा सकता है?

उत्तर- 1. वनों पर आधारित उद्योगों में लकड़ी, बिरोजे व जड़ी-बूटियों पर आधारित उद्योग आते हैं।

2. बागवानी पर आधारित उद्योगों में फलों की पैकिंग के लिए डिब्बे आदि बनाना, फलों को डिब्बों में बन्द करना, मुरब्बा या आचार बनाने और रस निकालने सम्बन्धी उद्योग आते हैं।

3. खनिजों पर आधारित उद्योग विभिन्न खनिजों का दोहन करके उनसे वस्तुएं बनाने के उद्योग हैं।
4. कृषि पर आधारित कृषि पर आधारित उद्योग आते हैं।

प्रश्न 23. हिमाचल प्रदेश में सीमेंट उद्योग का वर्णन करें।

उत्तर- हिमाचल प्रदेश में (सिरमौर) में 600 टन प्रतिदिन सीमेंट उत्पादन बरमाणा बिलासपुर में 1700 टन प्रतिदिन की 2 इकाइयां लगाई गई हैं। दाड़लाघाट सोलन में 8 लाख टन प्रति वर्ष सीमेंट तैयार किया जाता है। बागा (बलग) सोलन में 20 लाख 5 हजार टन प्रतिवर्ष उत्पादन क्षमता वाले सीमेंट का कारखाना है। अन्य सीमेंट प्लांट गुम्मा (शिमला), रुहांडा (मण्डी), सुन्दरनगर (मण्डी), अलसिंडी (मण्डी), बराह सिंह(चम्बा) आदि में भी हैं।

प्रश्न 24. संजय विद्युत् परियोजन का संक्षिप्त वर्णन करें।

उत्तर- संजय विद्युत् परियोजना किन्नौर जिले में हुरी गांव में भावा खड्ड पर कार्यान्वित की गयी है। इसकी तीन इकाइयाँ हैं। प्रत्येक से 40 मैगावाट, 120 मैगावाट बिजली पैदा की जा रही है। इस परियोजना में भावा खड्ड के पानी को 5.7 किलोमीटर लम्बी, 2.5 मीटर व्यास वाली सुरंग से ले जाकर 4.5 व्यास वाली सार्जशाफ्ट में डालकर 1410 मीटर लम्बी लोहे की शाफ्ट से बनी 1.5 मीटर व्यास की तीन शाखाओं में ले जाकर भूमिगत पावर हाऊस में डाला गया है।

प्रश्न 25. लारजी हाइडल परियोजना का वर्णन करें।

उत्तर- लारजी हाइडल परियोजना कुल्लू जिले में भुन्तर से थोड़ा दूर लारजी नामक स्थान पर व्यास नदी के पानी से कार्यान्वित हुई है। इसके अन्तर्गत 45.3 मीटर ऊँचा बाँध बाँधकर पानी को 15 किलोमीटर लम्बी और 8.5 मीटर व्यास वाली सुरंग से ले जाकर गिराया गया है। इससे 126 मैगावाट बिजली पैदा होगी। इस परियोजना पर 662 करोड़ रुपये व्यय होने का अनुमान है।

प्रश्न 26. नाथपा-झाकड़ी परियोजना का वर्णन करें।

उत्तर- यह हिमाचल प्रदेश की सबसे बड़ी विद्युत् परियोजना है, जिससे 1500 मैगावाट बिजली पैदा हो रही है। इस परियोजना पर 6,000 करोड़ के लगभग व्यय होने का अनुमान है। यह राज्य और केन्द्रीय सरकार द्वारा संयुक्त रूप से विश्व बैंक की सहायता से चालू की गई है। इसके कार्यान्वयन के लिए एक स्वतन्त्र निगम नाथपा-झाकड़ी निगम बनाया गया था, जिसे अब 'सतलुज जल विद्युत निगम' के नाम से नया नाम दिया गया है।

प्रश्न 27. कोल डैम परियोजना का वर्णन करें।

उत्तर- यह परियोजना सतलुज नदी पर डैहर से 6 किलोमीटर ऊपर को कोल नामक स्थान पर 163 मीटर ऊँचा राकफिल डैम बनाकर कार्यान्वित की जा रही है। 11.7 मीटर व्यास वाली 1 किलोमीटर लम्बी सुरंग द्वारा पानी सतलुज नदी के बाएं किनारे पावर हाऊस में गिराया जाएगा। इस परियोजना से 800 मैगावाट बिजली उत्पन्न की जाएगी। इसका [illegible] द्वारा किया जा रहा है।

प्रश्न 28. पार्वती हाइडल परियोजना का वर्णन करें।

उत्तर- यह परियोजना कुल्लू की पार्वती नदी के पानी से कार्यान्वित होगी। यह परियोजना तीन चरणों में पूरी होगी। इससे 2051 मैगावाट बिजली पैदा की जा सकेगी। पहले चरण में 750 मैगावाट, दूसरे चरण में 800 मैगावाट तथा तीसरे में 501 मैगावाट बिजली तैयार की जा सकेगी।

14. हिमाचल की जनजातियां

प्रश्न 1. जद से क्या अभिप्राय है?

उत्तर- किन्नौरों का एक राजपूत जाति समूह पूह के उच्च भागों में निवास करता है, जो बौद्ध धर्म का अनुयायी है तथा जिसे जद्द या जद कहते हैं। यह समूह तीन खानदानों में बंटा हुआ है।

प्रश्न 2. किन्नर जनजाति को मुख्य व्यवसाय क्या हैं?

उत्तर- किन्नर जनजातियों के लोगों का मुख्य व्यवसाय भेड़-बकरियां और घोड़े पालना तथा ऊन का व्यापार करना है। किन्नर लोग अब कृषि और बागवानी में भी किसी से पीछे नहीं। किन्नरों में कई लोग उच्च शिक्षा प्राप्त हैं और देश और प्रदेश में महत्त्वपूर्ण पदों पर आसीन हैं।

प्रश्न 3. किन्नर जनजाति का संक्षिप्त वर्णन करें।

उत्तर- किन्नौरों को खस अथवा खसिया भी कहा जाता है। किन्नौर विभिन्न जाति समूहों से सम्बंध रखते हैं। उनमें से कुछ का सम्बन्ध कनेत, खस, खसिया आदि राजपूतों से है। किन्नौरों में कोली जुलाहे, हल चलाने वाले 'हली' बढ़ी, नगालू आदि लोहार, तरखान, चांदी का काम करने वाले भी हैं। किन्नर जनजाति के लोगों का मुख्य व्यवसाय पशु पालना है।

प्रश्न 4. गद्दी जनजाति पर संक्षिप्त नोट लिखें।

उत्तर- गद्दी चम्बा के भरमौर क्षेत्र के निवासी हैं। ये लोग धौलाधार की तलहटी में भी बसते हैं। गद्दी लोग अपने क्षेत्र को 'गदरीन' अर्थात् गद्दियों की जगह या शिव भूमि कहते हैं। कुछ गद्दी लोग कांगड़ा में भी बसे हैं। इतिहासकार गद्दियों को मुस्लिम आक्रमणों के डर से पहाड़ों की ओर भागकर आने वाले हिन्दू लोग मानते हैं परन्तु वास्तविक गद्दी लोग अति प्राचीन और हिमाचल के मूल निवासी हैं।

प्रश्न 5. गद्दी लोगों का मुख्य व्यवसाय क्या है?

उत्तर- गद्दी लोग भेड़-बकरियां पालने का मुख्य व्यवसाय करते हैं। सर्दियों में ये ठंडे इलाके छोड़कर निम्न क्षेत्रों में अपने पशुओं समेत आ जाते हैं और गर्मी पड़ने पर पुन: ऊपरी क्षेत्रों में चले जाते हैं। रियासती काल में यही लोग पशु चराने के बदले में शासक को कर देते थे।

प्रश्न 6. हिमाचल की पंगवाल जनजाति का संक्षिप्त वर्णन करें।

उत्तर- हिमाचल में चम्बा के पांगी क्षेत्र में रहने वाले लोगों को पंगवाल कहते हैं। इनका व्यवसाय कृषि है। पंगवाल समाज कई जातियों तथा उपजातियों में बंटा है। पंगवाल समाज में औरतों को उच्च स्थान प्राप्त है।

प्रश्न 7. हिमाचल की लाहौले जनजाति पर संक्षिप्त नोट लिखिए।

उत्तर- लाहौल के निवासियों को स्थानीय भाषा में लाहौले कहा जाता है। ये लोग हिन्दू तथा बौद्ध धर्म के अनुयायी हैं। लाहौल जनजाति में मुख्य रूप से दो जाति वर्ग पाये जाते हैं-एक उच्च वर्ग तथा दूसरा निम्न वर्ग। उच्च वर्ग में राजपूत, ब्राह्मण, ठाकुर तथा राठी शामिल हैं, जब कि निम्न वर्ग में हाली, लोट तथा लोहार शामिल हैं। लाहौलों के मुख्य व्यवसाय व्यापार करना तथा कृषि करना है।

प्रश्न 8. लाहौल जनजाति के लोगों के मुख्य व्यवसाय क्या हैं?

उत्तर- लाहौल जनजाति के लोग मुख्यत: व्यापारिक प्रवृति के हैं। अधिकतर लोग अपने क्षेत्र की वस्तुएं बेचने के लिए दूसरे क्षेत्रों में जाते हैं। व्यापार के साथ-साथ कुछ लोग कृषि कार्य भी करते हैं। वे आलू, कुठ, ज़ीरा आदि नकदी फसलें पैदा करते हैं और दूसरे क्षेत्रों को भेजते हैं। शरद ऋतु में अतिशीत होने के कारण ये लोग अपने पशुओं के साथ निचले क्षेत्रों में आ जाते हैं।

प्रश्न 9. गुज्जर जनजाति पर संक्षिप्त नोट लिखिए।

उत्तर- गुज्जर हिमाचल प्रदेश के पशु पालकों की एक जनजाति है। अधिकांश गुज्जर जम्मू क्षेत्र से आकर हिमाचल प्रदेश के चम्बा, मण्डी, सिरमौर, बिलासपुर, शिमला आदि जिलों में रहने लगे हैं। ये लोग घुमक्कड़ प्रवृति के हैं तथा इनका मुख्य व्यवसाय गाय-भैंसों को पालना है। ये लोग अपने पशुओं के साथ ही एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते रहते हैं।

प्रश्न 10. स्वांगला जनजाति का संक्षिप्त वर्णन करें।

उत्तर- लाहौल उपमण्डल की पट्टन घाटी में स्वांगला जनजाति के लोग रहते हैं। चन्द्रा तथा भागा घाटी के वासी स्वांगला जाति के लोगों को मौन या मुंटसी कहते हैं। ऐसा माना जाता है कि स्वांगला ब्राह्मण हैं जो कश्मीर, चम्बा, किश्तवाड़ और जम्मू से आए थे।

15. हिमाचल की वास्तुकला

प्रश्न 1. हिमाचल में वास्तुकला की शिखर शैली का वर्णन करें।

उत्तर- शिखर शैली के मन्दिरों में छत से ऊपर का भाग काफी ऊंचा तथा पर्वत की चोटी के समान होता है। धर्मशाला के निकट मसरूर में चट्टानों से बनाए गए मन्दिर इस शैली के मन्दिर हैं। प्रदेश में नर सिंह के मन्दिर भी इस शैली के हैं।

प्रश्न 2. हिमाचल के वास्तुकला की समतल शैली पर नोट लिखें।

उत्तर- टीहरा सुजानपुर का नर्वदेश्वर मन्दिर और नूरपुर का ब्रजवासी का मन्दिर समतल शैली के मन्दिर हैं। इस

शैली में मुख्यत: राम और कृष्ण के मन्दिर हैं। इनकी विशेषता यह है कि समतल छत होने के साथ-साथ इनकी दीवारों पर कांगड़ा शैली के चित्रों को चित्रित किया गया है। स्पीति के ताबो, 'कानम' और 'की' आदि के बौद्ध-मठ भी इसी शैली के हैं और उनकी दीवारों पर भी चित्रकला की गई है।

प्रश्न 3. हिमाचल में वास्तुकला की गुम्बदाकार शैली पर नोट लिखें।

उत्तर- गुम्बदाकार शैली के मन्दिरों पर मुगल और सिक्ख शैली का भी प्रभाव पड़ा है। गुम्बदाकार होने के साथ-साथ इनकी दीवारें थोड़ी झुकी हुई होती हैं। इस प्रकार के मन्दिरों में कांगड़ा के बज्रेश्वरी देवी, ज्वाला जी, ऊना के चिन्तपूर्णी, बिलासपुर के नैणादेवी आदि के नाम लिए जा सकते हैं। सिरमौर का रेणुका मन्दिर भी इसी शैली से सम्बन्धित है।

प्रश्न 4. हिमाचल में नागर शैली के मन्दिर कौन-कौन से हैं?

उत्तर- हिमाचल प्रदेश में चम्बा में मणिमहेश, चम्बा के तीन विष्णु और तीन शिव के मन्दिर, लाहौल में त्रिलोकीनाथ, बजौरा (कुल्लू) में विश्वेश्वर महादेव, नगर में गौरीशंकर, निरथ (शिमला) में सूर्यमन्दिर है, जिनमें पत्थर से निर्माण कला का विकास हुआ है, प्राचीन नागर-शैली के मन्दिर हैं।

प्रश्न 5. भारत में औपनिवेशिककालीन वास्तुकला की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- (1) भारत में औपनिवेशिक कालीन भवन दीर्घ आकार के थे। उनमें विस्तृत खुले स्थान तथा सादगी थी।

(2) उनके भवनों में रोमन, गॉथिक तथा विक्टोरियन शैली का मिश्रण मिलता है।

(3) उनके भवनों में चूने, ईंटों तथा लोहे का अधिक प्रयोग किया गया है।

प्रश्न 6. भारत में विक्टोरियन भवन शैली के प्रमुख भवन कौन-कौन से हैं?

उत्तर- भारत में विक्टोरियन भवन शैली के भवन उन्नीसवीं सदी में बनाये गये। कलकत्ता और मद्रास के गिरजाघर, शिमला और लाहौर के केथेड्रल, कलकत्ता और मद्रास के उच्च न्यायालय भवन इसके उदाहरण हैं।

प्रश्न 7. कलकत्ता के विक्टोरिया मैमोरियल हाल का संक्षिप्त वर्णन करें।

उत्तर- भारत में पाश्चात्य शैली के आधार पर लार्ड कर्जन के शासन काल में कलकत्ता में 'विक्टोरिया मैमोरियल हाल' का निर्माण हुआ। विक्टोरिया मैमोरियल हाल में विक्टोरियन युग की वास्तुकला की कुछ विशिष्टताओं का समावेश था। कुछ कला समीक्षकों का कहना है कि ऐसा प्रतीत होता है कि विक्टोरिया मैमोरियल हाल इंग्लैण्ड से उठाकर भारत भूमि पर स्थापित कर दिया हो।

प्रश्न 8. दिल्ली की औपनिवेशिक कालीन वास्तुकला की प्रमुख विशेषताएँ लिखें।

उत्तर- भारत की राजधानी नई दिल्ली के निर्माण का कार्य दो प्रमुख वास्तुकला सर एडवर्ड लेटिन्स और इसके साथी सहयोगी सर एडवर्ड बेकर को सौंपा गया था। उन्होंने नई दिल्ली के जो भवन निर्मित करवाये, इनमें शैलियों का विचित्र सम्मिश्रण हुआ है। ये इमारतें अधिकतर पाश्चात्य ढंग की, विशेषकर इटालियन ढंग की बनायी गई हैं। कहीं-कहीं, जाली, छज्जा तथा छतरी देकर इनमें भारतीयपन लाने का प्रयत्न किया गया।

प्रश्न 9. औपनिवेशिक कालीन निर्मित दिल्ली के प्रमुख भवन कौन-कौन से हैं?

उत्तर- औपनिवेशिक कालीन वायसराय के राज भवन (वर्तमान राष्ट्रपति भवन) पर बौद्ध स्तूप के समान भारीभरकम गुम्बद लगा दिया गया। पार्लियामेंट भवन और सैक्रेट्रीयेट भवन में विशालता, दीर्घाकार, सादगी और आधुनिकता है। वायसराय के राजभवन के पीछे मुग़ल ढंग का विशाल, सुन्दर, उद्यान बनाया गया।

प्रश्न 10. शिमला में क्राइस्ट चर्च पर नोट लिखिए।

उत्तर- शिमला में क्राइस्ट चर्च की आधारशिला 1844 ई. में गवर्नर जनरल लार्ड हार्डिंग ने रखी थी। यह 1857 में बन कर पूरा हुआ था। इस प्रकार इसे बनने में लगभग 13 वर्ष लगे थे। इसमें पहली प्रार्थना 11 अक्तूबर 1857 में आरम्भ हुई थी।

प्रश्न 11. शिमला में वायसरीगल लॉज पर संक्षिप्त नोट लिखिए।

उत्तर- वायसरीगल लॉज का डिज़ाइन, वास्तुकार, हैनरी इरविन ने बनाया था। इमारत के निर्माण कार्य की देखरेख एफ. बी. हैवर्ट तथा एल. एम. सकलैन को सौंपी गई थी। इस भवन की वास्तुकला इंग्लैंड के पुनर्जागरण काल एलिजाबेथ प्रथम से मिलती है। भवन के बाहर हरे-भरे बाग हैं। इसके भीतरी भाग में बर्मा से आयात की गई सागवान, अखरोट तथा देवदार की लकड़ी पर नक्काशी का बेहतरीन कार्य हुआ है। भवन के सभागारों व कमरों में लगे फानूस तथा दीवारों में निर्मित लकड़ी की अल्मारियां देखते ही बनती हैं।

प्रश्न 12. हिमाचल में चित्रकला का जन्म कैसे हुआ?

उत्तर- विद्वानों के अनुसार पहाड़ी चित्रकला का जन्म जम्मू के पहाड़ी क्षेत्र बसौली में हुआ। उनके अनुसार सर्वप्रथम मुगल दरबार से निष्कासित कलाकारों का एक दल बसौली पहुंचा तथा उन्होंने वहां की लोक कला में परिमार्जन करके बसौली शैली का निर्माण किया। इसके बाद इसका विकास अन्य पहाड़ी रियासतों में हुआ।

प्रश्न 13. चित्रकला की कांगड़ा शैली पर संक्षिप्त नोट लिखें।

उत्तर- विद्वानों के अनुसार पहाड़ी कला का जन्म गुलेर में हुआ। 1780 ई. में जब गुलेर शैली अपने पूर्ण निखार में थी तो उसने कांगड़ा में प्रवेश किया और कांगड़ा शैली के नाम से प्रसिद्ध हुई। इस कला शैली को ही पहाड़ी कलम या कांगड़ा कलम भी कहा जाता है। औपनिवेशिक काल में पहाड़ी चित्रकारों का प्रधान स्थान कांगड़ा बन गया था।

प्रश्न 14. कांगड़ा शैली की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- कांगड़ा शैली भाव प्रधान थी, इसलिए कांगड़ा शैली के कलाकारों और नायकों से प्रेरणा लेकर चित्रांकन के विषयों को अत्यंत व्यापक कर दिया। उन्होंने पौराणिक नायकों और देवी-देवताओं की गाथाओं के साथ-साथ लोक गाथाओं और कृषक जीवन के दृश्यों के भी चित्र बनाए। उन्होंने राममालाओं को चित्रित कर संगीत और चित्रकला के अटूट सम्बन्धों को प्रदर्शित करने का प्रयास किया।

प्रश्न 15. कांगड़ा शैली का पतन किस प्रकार हुआ?

उत्तर- पंजाब में सिक्खों के पतन और अंग्रेज़ी राजसत्ता का आधिपत्य स्थापित हो जाने के कारण कांगड़ा शैली के चित्रकारों का राज्याश्रय विलुप्त हो गया। इसके बाद सन् 1905 में भीषण भूकम्प से कांगड़ा नगर और वहाँ के अविशिष्ट चित्रकारों का अंत हो गया। कांगड़ा शैली के जो चित्रकार नगरों में जाकर बस गये थे, उन्होंने अपने जीवन की आर्थिक और पारिवारिक समस्याओं के कारण अपनी चित्र-शैली को व्यावसायिक बना दिया।

प्रश्न 16. हिमाचल प्रदेश में मुग़ल काल में पहाड़ी चित्रकला के प्रभाव केन्द्र कहां-कहां थे?

उत्तर- मुगल-काल में पहाड़ी रियासतों में उस समय छोटे-बड़े कुल 38 कला केन्द्र थे। वर्तमान हिमाचल प्रदेश के क्षेत्र में जो प्रमुख कला केन्द्र थे, उनके नाम इस प्रकार से हैं: गुलेर, नूरपूर, टीहरा सुजानपुर, नादौन, चम्बा, मंडी, सुकेत, कुल्लू, बिलासपुर, अर्की (बाघल), नाहन, कोटला, जुन्गा तथा जुब्बल।

प्रश्न 17. हिमाचल की काष्ठ मूर्तिकला का वर्णन करें।

उत्तर- हिमाचल प्रदेश में काष्ठ अर्थात् यद्यपि लकड़ी की मूर्तियां मन्दिरों की लकड़ी की मूर्तियां दीवारों में बनाकर रामायण, महाभारत या पुराणों की कहानियों से दृश्य दिखाए गए हैं। ऐसे मन्दिर जिनमें लकड़ी की मूर्ति-कला का विकास हुआ है, भरमौर के लक्षणा व शक्ति देवी के मन्दिर, निर्मण्ड (कुल्लू) में दखणी महादेव, लाहौल में मृकुला देवी, मंडी में मगरू महादेव और मला में मानण के मन्दिर हैं।

प्रश्न 18. हिमाचल की धातु मूर्तिकला पर संक्षिप्त नोट लिखें।

उत्तर- हिमाचल के मध्य और ऊपरी भाग में प्रायः प्रत्येक गांव का अपना देवता है, जिसकी पीतल, चांदी और सोने की लघु या विशाल आकार की मूर्तियां हैं तथा निम्न भाग में देवी के मन्दिरों में धातु की मूर्तियां हैं। इस कला के अनुपम उदाहरण जुब्बल के हाटकोटी मन्दिर में महिषासुर मर्दिनी, चम्बा में लक्षणा देवी, शक्ति देवी, नारसिंह, गणेश, नन्दी, विष्णु, लाहौल में मृकुला देवी, कुल्लू में त्रिपुरा-सुन्दरी और सराहण में भीमाकाली की मूर्तियां हैं।

B.A. (1st Semster) Examination

HISTORY

(History of Himachal Pradesh : (1815-1972)

Paper : HIST-0620

Time : **Three Hours]** **[Maximum Marks : 50**

The candidates shall limil their answer precisely within the answer-book (40 pages) issued to them and no supplementary/continuation sheet will be issued.

परीक्षार्थी अपने उत्तरों को दी गयी उत्तर-पुस्तिका (40 पृष्ठ) तक ही सीमित रखें। कोई अतिरिक्त पृष्ठ जारी नहीं किया जाएगा।

Note : (i) Candidates are required to attemtp *five* questions in all selecting one question form each of the Section B,C,D and E and all the sub-parts of the questions in Section A.

(ii) Answer to the short questions carrying 2 marks (section A-Part II) in about 40 words each.

(iii) Answer to the questions carrying 8 marks (Section B, C, D and E) in about 800-900 words.

(iv) Candidates are required to give their answer in their own words as far as practicable.

(v) While answering your questions, you must indicate on your answer book the same question No. as appear in your question paper.

Section-A

(Part-I)

1. (i) When did Himachal Pradesh come a State?

हिमाचल प्रदेश पूर्ण राज्य कब बना?

(a) 25 January, 1971 (b) 25 June, 1964

(c) 7 July, 1982 (d) 1 November, 1956

(ii) When was Bilaspur merged with Himachal Pradesh?

बिलासपुर को हिमाचल प्रदेश में कब मिलाया गया?

(a) 1948 (b) 1936

(c) 1972 (d) 1954

(iii) When were many area of Punjab merged with Himachal Pradesh?

पंजाब के क्षेत्रों को कब हिमाचल प्रदेश में मिलाया गया?

(a) 1950 (b) 1952

(c) 1966 (d) 1968

(iv) What is the area of Himachal Pradesh?

हिमाचल प्रदेश का क्षेत्रफल क्या है?

(a) 64,128 sq. miles (b) 32,064 sq. miles
(c) 21,495 sq. miles (d) 12,480 sq. miles

(v) Bhimkot was the ancient name of :

भीमकोट किस किले का प्राचीन नाम है :

(a) Kangra Fort (b) Bilaspur Fort
(c) Nahan Fort (d) Kamlah Fort

(vi) Who was the Commander of Gorkha forces of Nepal which attacked the Himachal Pradesh?

हिमाचल प्रदेश में आक्रमण के समय गोरखा सेनापति कौन था?

(a) Zang Bahadur Thapa (b) Zoravar Singh Thapa
(c) Shakti Singh Thapa (d) Amar Singh Thapa

(vii) Which of Himachal State was annexed by East India Company under 'Doctrine of Lapse'?

लैप्स की नीति के अन्तर्गत किस हिमाचल की रियासत को ईस्ट इंडिया कम्पनी द्वारा अंग्रेजी साम्राज्य में मिलाया गया था?

(a) Baghat (b) Baghal
(c) Kehlur (d) Bhshahr

(viii) When did Raja Ranjit Singh conquered Kangra?

राजा रणजीत सिंह ने काँगड़ा को कब जीता?

(a) 1803 (b) 1809
(c) 1812 (d) 1815

(ix) Dhami firing event occurred in?

धामी गोलीकांड कब हुआ?

(a) 1839 (b) 1939
(c) 1942 (d) 1945

(x) Who was the founder of Mandi State?

मण्डी राज्य का संस्थापक कौन था?

(a) Bahu Sen (b) Vir Sen
(c) Arjun Sen (d) Vokram Sen 10×1=10

Part-II

2. (i) Write Name of Bara and Athara thakurais.
   बारह तथा अठाराह ठकुराइयों के नाम लिखिए।
   (ii) Define Reet.
   रीत क्या है?
   (iii) Write note on Hindustan Tibet road.
   हिन्दुस्तान तिब्बत सड़क पर नोट लिखिए।
   (iv) What are main sources of income of people in Himachal Pradesh? 4×2=8
   हिमाचल के लोगों के आय के मुख्य साधन के बारे में लिखो।

Section-B

3. Give an account of Early History of Himachal Pradesh.
   हिमाचल प्रदेश के प्राचीन इतिहास का वर्णन कीजिए।

OR

(अथवा)

What were the causes of Anglo-Gorkha War? Explain in detail. 8
एंग्लो गोरखा युद्ध के क्या कारण थे? विस्तार के वर्णन कीजिए।

Section-C

4. Explain the main conditions imposed by the British while granting sanad to hill chiefs.
   पहाड़ी राजाओं को सनद देते समय अंग्रेजों द्वारा क्या शर्तें लगाई जाती थीं?

OR

(अश्वा)

Assess briefly British's relation with Shimla Hill States.
अंग्रेजों का शिमला पहाड़ी रियासतों के साथ सम्बन्धों का वर्णन कीजिए।

Section-D

5. What was the role of Himachal Hill States in 1857 revolt? Focus your answer on main events.
   1857 की क्रांति के समय हिमाचल की रियासतों की क्या भूमिका रही? अपने उत्तर को मुख्य घटनाओं पर केन्द्रित करें।

OR

(अथवा)

Write an essay on begar system in Himachal hill states.
हिमाचल की रियासतों की बेगार प्रथा का वर्णन कीजिए।

OR

(अथवा)

Explain in detail the objectives of Praja Mandal movement in Himachal Pradesh.

हिमाचल प्रदेश में प्रजामण्डल आन्दोलन की उद्देश्यों का विस्तार से वर्णन कीजिए। 8

Section-E

6. Examine critically the Constitutional Developments in Himachal Pradesh till the formation of statehood in 1971.

पूर्ण राज्य की प्राप्ति के समय तक हिमाचल प्रदेश में हुए संवैधानिक विकास का आलोचनात्मक वर्णन कीजिए।

OR

(अथवा)

Explain the Socio-economic conditions of people in Himachal Pradesh from 1947 to 1971. 8

1947 से 1971 तक हिमाचल प्रदेस के लोगों की सामाजिक व आर्थिक स्थिति का वर्णन करो।